PAIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references.

Vol. II.

RY

5...

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Ledwer in Prabrit, Calculta University.

ఆశ్రికి

CALCUTTA.

----:e:-----

FIEST EDITION

manager I & I commence

All rights reserved

संकेत-सूची।

हेन कडान्ट. धीराहेर, (चळपुटाना,)

1 27	=	मन्दर ।
इ न्द्	=	प्रदर्भेट पातु ।
(Fi)	=	भवत्रं स मापा ।
(म्हें)	=	महोत-दिनि ।
च्य	=	वलंब दश मर्स्ड।
eri	=	क्रंपि-तन्त्र ।
475	=	क्रंधि-वर्डमत-कृदन्त ।
FE	=	कित्रह ।
स्त्रि	=	क्यि-सिंगच ।
₹	=	इल-प्रस्तन ।
(ह रे)	=	वृद्धिद्योगाची मागा (
वि	=	क्टि र् ग।
[₹]	=	देशी-सन्दर्भ
3	=	बहुंस्हाडिंय ।
Ś	=	ई हिंग ।
\$	=	पुँचिय दया न्युंसक्तिंग ।
इं न्द्री	=	इतिब दया संदिव ।
(3)	=	दैयाची भाषा (
247	=	देन्द पेंड दिस्स्य ।
4	=	रहुस्य ।
सह	=	सरियन्तरन्तः ।
मदि	=	मदिस्तकाद ।
मरि मूच मूक	=	स्ट्यट ।
T F	=	भृ द -ह दन्द्र ।
(司)	=	सर्ग रागः।
45	=	दर्शनय करन्य ।
নি	=	विदेश्य ।
(취)	=	हीत्तेनी संघा ।
₹	=	सर्वन ।
ۮ	=	संस्पर स्ट्या
€€	=	सर्सर पाद ।
स्त	=	स्टिंग ।
र्स्व	=	संदिर दर नहार्दिय।
रेड्	=	रेनर्प सन्दर

प्रमास-प्रन्थों (रेफरन्सेज़) के संकेतों का विवरस ।

संकेत । प्रत्य का नाम ।	संस्कृत्य मादि ।	जिसके झंक दिए गए हैं वह 1
र्मंग = मंगवृतिमा	इस्ततिकित I	
र्मत = भंतगहर्समो	 १ रोवल एनियाटिक सोमाईटी, खंडन, ११.०० 	
•	र भागमोदय-समिति, बंबई, १६१०	पत्र
मञ्जु = मञ्जुमनममं,	वेचीविलास प्रेम, महास, १८०१	गाया
ম্বার = ম্বিম্বনিবর	स्व संपादित, कतकता, संवर् १६४८	सावा
मपु = चणुमोनशस्त्र .	राय घनपतिमें हजी बहाइर, कलकता, संवन् १६३६	
मञ्ज = मणुनरोत्रवाहमरसा	 १ रोवल एसियाटिक सोसाइटी, खडब, १६०७ 	
	र मातमोदय-समिति, बवई, १६२०	98
मभि = मभिज्ञानसाकृत्तव	निर्धायसम्बद्धाः देस, वर्दाः, १६१६	. 23
चरि = व्यक्तिसरक	त्रिवेन्द्र संस्कृत निरिज ^६	
बाउ = धाउत्पन्नस्वाचनस्नो	९ जैन धर्म-प्रसारक सभा, मादनगर, संदन् १६६६	गाया
,	१ सा बालाभाई क्वलभाई, समराबाद, संदन् १६६१	
मार्ड == १ मात्रव्हरूया ,	इस्तविक्ति	
 मानस्थक-प्रवालुंबन्द्रः 	हों, इ. न्युकेन्-र्वपादित, राहप ित्न, १८६७	. প্রত
भावा = मत्वारांग सुत्र .	🗴 ९ डवन्यु, शति -सप्रदित, तार्पविय, १६९०	
	२ मानमोद्य-समिति, वंबई, १६१६	धुस्टम्प, बन्द
	शे त्वजीभाई देवराज संपादित, राजकोट,१६०६	n
बारानि = माच्याद्य-नियंति।	भागमोदय-समिति, अवर्डे, १६१६	49
भाव = भावरवकवर्ष	रस्तविका	भ्रध्ययन
मानि = भारतकृतिर्वति .	९ वरोविदय-जैन-पन्यमाला, स्नारस १ १ हस्तनिस्ति	
भार = भारतपानपहरूष .	सा, बालामाई कबलमाई, धमराबार, संक्षु १६६१ .	
ब्राप = भागस्तावार	माथिइवन्द्-रिगंबर-जैन-प्रत्यमाला, संबत् १६७१	· · ·
भाग = भागरवस्तुत	इस्तिविक्षि	
मास्त्र = , मन्द्रपनिरिटोश्च		
इंदि = इन्दिलगाजनसन्छ	सोमनिंह मालेक, बंबई, संतन् १६६८	गाया
इक = दि कंत्मंबादी देर् इदिर्	o सॉ हवन्यु किएकेन्-हन, लादप्रविष, १६२०	

के ऐसे नियानी बाने लगाओं में महायदि का ने सार-सूची को हुई है, साने ऐसे संस्करणों के हुए मारि के मंदी का उन्हेंन क्या के में में हुए मारी किए गया है, कोकि पड़क दूर अगर-सूची के दी मानेशीय अपर के स्वत को तुरूत पर करते हैं। उपर किसे किस उपरोक्त ने मंद्र देने की मानस्वकृत प्रति भी हुई है, बड़ी पर क्यों अग्य को पड़ी के मनुसर मंद्र दिर बार्ड, दियाने क्यान को मार्ट एक्ट पाने में नित्त करिया हो।

April 6 de de de de deser à	د المناج مغمليون ج	وسيد خرم وس
		-7
Secure section of Section	الاعاقاء المشاه أصميه أستعه الديايكيليك مدادات	************
	ه قد برس ما قصشما ه د ه ی	
,	and the standard of the standard of the	
graft is made graft to the a	garatutus.	
Annt & mandring by	enimen for my , eggs	·
About many trees a	mane carried	400.00
The first the same of	Lugs growing and specimen	37
dud by a forkulment dienke	grand satisfied	-
वर के नाइकार भावत	हेरकार सामग्री सुन्द हुम दश्रकार्यः ११६४	6,000
gang - militer getage	के को बला है है है है है जिसकी लाइ देव है	•
Taufer : Sand Cher Sand	क्षांत्राच्या है क्षेत्राग्रहें, क्षांग्राच्यान, केल है के के के क	****
Sala me fin eppelationality	a significate simily all some same last a	•
p.x + p.z.041	हिल्लाह बारमु व है गीरण	. 57
with a writer fam	Birkangk, tříchy, triety, 5 t. 5 t	Wheen
কাতে কাত্ৰ কাতিবিধি প্ৰয়ণক	and the second second second	
หรือ . หรือถ้าของต	 च. इ. स्थाप्त स्थापित् सम्बद्धीच्या का । इ. 	
स्टाप्ट : अ. १९८४ व	 का श्रेष काहण द्वार पुरुष क्षाप्त काल्यां का भी भड़ा 	,
क्षात् । क्षांश्राः औ	· erzi sat mam felten ne en	
मन्या पुरः मन्यास्य प्रदृशः	 का साम्याद प्रेम मुख्यत प्राच का दिल्ला, कर कार्ड, कहा 	/• ******
See the grant of the		
din gu fin		
WAR VII. IN CIT	* ,, ,, ,,	
	* pr	.,
मध्य केल स्वयं	ृश्रीती ह साध्या, सम्मी, सब्दू १६६८	. 74
tinter a to di	• • •	
Maria in Maria (+		. 77
६२ == ६२०११ष्ट्रापुरम् ६८ = ४४मध	का चारुष पेतनाया, सावन्यय, दश्दर चित्रज्ञान्त्रदारीका	. প্র
	at a month to out a complete and a	>4
मन = (१७१) ६ प्याप मात्र == मान्यवस्य		~
भारत = माण्यामार्थसमान्य	 हो एव् चेशेरीनगर दिश्वे हुन्ही एएन्ची, 	সে
with the state of	age Ar' dece	
इप = दुसारा प्रारंति	marries with marrie I firm as a	(Pr)
हुना = हुनाच्यारपरित	 र्यंद्वीयस्थानितः, १००० 	মুন
वुस्मा = बुश्तापुत्विध	स्वनंबादिन, शत्रवणा, १६१६	April 2
देन = एडिस्स्स	र्भागीति मार्रेन, पंदर्र, संस्कृतहरू⊏	and a second
गाउँ = गाउँपरी	• दर्दर्भागृत-निरित्र, १६६४	***
	and the control of the	

	[a]		
र्सहत । प्रत्य का नाम ।	संस्करण मादि।		जिलके मंद्र दि गए हैं वह ।
बच्छ = बच्छावार्यस्था	रस्तविविव	•••	व्यक्तिकार्
वस = मजपस्मार्च	स्व-धंपादिन, बलकता, संबद् १६७८	***	गोवा
द्रश्च = गरिवशित्रकारानी	राय धनातिशिह बहारू, कलकता, १८४१		н
या = + स्वयन्त्रायती	* १ डॉ ए बेबर्-संपादित, लागपित्रन, १८८१		•
	२ निर्धयमागर प्रेस, बार्माई, १६११		
तुः = गुरुप्तरकृष् स्मान	स्व-सपादिन, बलकता, संबद् १६७८	***	
पुत्र = गुरानुगवहुतक	मंवालाल गोव निराय, बम्बई, १६११	***	
पुना = पुरान्यकमान्य	मीमभिड मालेक, बर्म्स, संकर् १६६६	***	91
द्ध ≈ क्रमंदिवाज्य	षंशलाल कांत्रपंतरास, बनाई, १६११		,,
नोष = गीनसम्बद	मीमर्गिह मायेक बन्दई, संबद १६६६		
षा = बागवासनी	१ जैन वर्म-प्रवारक-समा, मावनवर, संकर, १६६६	***	pa .
	१ जा बालामाई बदलमाई, धमरावार, संबद् १६६		17
पा = प्रतिवर्ध	 एमियादिक सोमाइटी, बंबाल, बलकता, १८८० 		
बर् ६ बराम्बनि	इस्ततिवित		पातु ह
वाष = बाहरण	जिवेन्त्र-संस्कृत -गिरिष्	***	84
केंद्र = केंद्रान्त मध्य	मोनिहिं माले हैं, बस्यहैं, शंबर १६६२		शावा
e = nefreinft	देशवेर सालुनाई पु॰ फंड, बम्बर्ट, १६९०	***	बह्यस्कार
बर = वर्षश्चात स्टेड	बैन प्रमाहर बिर्डिय प्रेम, श्तराम, प्रवसाइति	***	नामा
को = अविशिष	मरमानस्य-जैन-पुन्तकः यकारकः संदत्त, सायराः, संवत् १	Lwa	96
क्षेत्र = क्षेत्रक्रम	ए म्नानिका		
क्षेत्र = क्षारांत्रभागम्ब	देववंद ठाउमार्वं पुर्णक्रेद्वार क्षंत्र, बस्ती, १६१६	***	प्रशिक्ष
बोरा = बीमनुगमनहरू	भंगनाल गोर्भनस्य, बस्बरे, १६९३	***	माचा
ALC: ME CONTRACTOR	হলবিনিশ	***	4.24
हि = देशका (काहरू)	447	***	
ā = tāa	***	***	
ड ः डरमपुर	भागमेहरा समिति कर्मा, १६१८-१६१०	***	हाच •

या करानीय है। बन्न के बाद या और बन्न के कींग भी जाई वाई के करता ' मा' दिया है वा अंगा केल कराया में है त्यापण या है। इस्ताप्त को त्यापण या है। इस्तापण को त्यापण की की कांग्राप्त की उत्तरेश मालूब की हैं। उसी मी इस बेट में काल दिखा मार्ग है और

क्रमण के पण दिए होंगे किया है लिये का लगा के हमी करने के हिम्मत का समस्त महित्त के हमा कर क्रमण में अपने किया है लिये का लगा के हमी करने के हिम्मत का समस्त महित्त के हमा कर क्रमण में अपने के हमी करने के हमी के हमा हमी हमी के हमी क्रमत के जो। क्रमत के जो। क्रमत के

के रक्तत वे बल्प है।

*	Again to the time	in reference design "	
			4-5-
	pt , a true	and water	
	Marie San San San	عدد ما مناه المناهدة المناهدة المارات ما	
	Burgar Burgan marke a berneus	Emiliada segiza Sital + 6 + 6	A ST. E.
	سيحصيوك مصحصا والواو	render of the A	
	to a towardown	ه و و و المنظ المعالم المسلم المنظ المنظ المنظ المنظ	*
	free of the months recognized	والمراجع المراجع المرا	
	F & milem	.4	***
	रे । राजस्यान	व केंद्र कुम्म प्रमाणक प्रांतमा, काल्यी, वह बंब	*
		९ कोळी ए झारिय, स्थली, १९७०	-
	Kr. i viertiganie	B	म~द
	the Lambe frage	क्षाच्या त्राच्यांच्या करणहे, त्राच्या	का प्राप
		المارية الششاء المارية المارية المارية المارية المارية	
	and a sugar sentar.	••	غانت. م
	erfo e errer festanten	ही पी तह का देश करहें, पर ४४	₹5. mg t
	Sim im Cambre Cirls	grad align	_
F"	tie a grainianto	h	
	देंग । इंगर प्रय	144-20 174 (CO	5 2
•	है 🖭 हैराभाषाण्य	4.46 + - 2.46 Let, 44.24	رجو پاڻج
	te mitten verreiche	restates	
a	t = इन्दर्भक्ती	५ सम्बद्ध प्रदेशकार्य, संक्ष्या, संबंध १६३८	. **
		क का बदापर साथर, रहे गया, कर नेर	
	यद == दारशंदिताः	बारता र सन्द्र गुन्द्रके, ब वर्षे कृत्य र	
**	भाग = भाग रहाल	१ देशविक क्यांक की, पान क्रमा, १६०६	
8		28 50 40	•
9-4-	पर् = प्रातृत्वर	4*	Argie
4-	धर्म क धर्मन्द्राप	सेंदन्ता पान-इन्बल, बादराय, १६९८	21
	षा = धान्यत्रह	विशेषात्र प्रम् कर्म	-
	मा = मान्यस्य	६ झा सम्यान्त्रेय ग्रंग, सावरात	হ'ল
10		५ माप्र देन पर्यन्त्रपति राजा, अमराहर, ५६७६	
٠,٠	रार ≈ ÷राधेशाध्यमपूर्व		
· · ·		ಕ್ಕಾರ್ನೆಗ	. द्य
	नि = निरमीद्य	16 វិគីម	. ক্রি
*		र प्राप्ते सन्दर्भिते, सन्दर्भित १६११	
20	निते ≈ नितंद्य	ए न्द्रिनिध	. द्ध
	पान = पानर्शम	वेदन्यवेन्त्रामधनाताः मास्तान्, प्रसम्बद्धन	. परं, य

के रण्डार के बारा, बहुत बीड़ के कराराजार प्रवास मी हो, बीड़ाएडू दूर मा के इस्तिविशियाका बाराजार ति, गा है। का स्मर्जार में जारे जा नावकीर प्राकृतकार सुत्रों के महत्त्व कर नावक प्रत्यों के जो नाम मीर कृती दिर गर हैं बड़ी बड़ा के हा। महिस्त नाम मीर कुलों है, इस बेल में बिट--कि बार रसे नावे हैं।

```
वृष्ट्रा क्ष्य सम्मा
                                                                [t]
                   44 = 444/A
                                                             र्वत्करण माहि ।
                                                      १ इलिनिम
                  A ALT IN A ALL MINES
                                                     १ जैन बात्मानन्द समा, भारतगर, १६१६
                 dal = daine
                 रेक = १४ महास
                A.L tallable . L.
                                                   जैन वर्ष - व्रवारक सभा, भारतगर, व्रवसानुभि
               रच = वर्भग्रंकोरहाक
                                                                                            ...
               AL = Ashed
                                                  स्यतिभि
                                                 बात्यानन्द्-जैन-गनाः, मानुनगरः, संदन् १६७४
                                                                                            ...
              43 = 44.54
              ALIA = ALIASA
                                                विकेट्स मासून गिवित्र
                                                                                           ***
             and - alload castell
                                                हम्त्री शिक्त
                                               मीमार्शिंड मालेक, बावहैं, संवन १६६९
             ALL = AAILISTALIA
                                                                                          ...
                                              ता बानाम है कहनम है, ममराबार, संबन् १६६३
                                                                                         ***
                                              १ जैन झन-प्रमास्ड महल, बार्ची, १६११
           tialing - tan
                                             १ मानवानन् कैन पुल्लक-प्रचारक-म हन, मानवा, १६३१ ...
          al mantantials
                                                                                       ***
                                            राज पनार्रिति शहार्य, कारण, मंत्र १६४०
          eni e didhid acid
                                            मानमार्व मिनि, सन्दें, १६१६
         41 - 2144LL- 24
                                           मीमगांड मानेह, बार्स, मान् १६६१
         १। - यहान र्वत्रीमसोऋती
                                                                                     ***
        AR - LIRANGE WALLEL
                                           मण्यान्त्व वैतन्त्राता, सचनगर, संदृष्ट ७४
       h - कामीटक् वर् कहत हरा ब्य
                                       • बी. बी त्यार कमी, भारतवार, गंदर् १६७३
       ha - roting
      he = helify
                                         र्ग, मार निर्म रूप, १६००
                                      . वर्षक्राहरू मामाइडो, समान, क्लाइमा, १६०३
      Le = Amilians
     वं = व श्रामात
                                       हेन थड़का मंदन, होगाबा, १६११
     tal = 24 Le-CLA
    I's = 2, 24, 5, Exturbe
                                       faregulary for 14
   क्षा क कल्यान्त्रम् हे वि स्टूब
                                      निवंशाना श्रंण, बाबई १६१.
   17 = 19 TEN
                                     विकास मान्यु मानिक
                                  . बस्य क्षेत्रहरू तहरू, १६१०
  the = Linkshiphian
                                 • श क्षेत्रभूतिः, श्रम १०(०
 24 = 2.4 - Market
                                 · तर शंकत बाजातं, क्यान, १६११
 gå = 1 deltadell
                                · तः बर्दान्तं बान्तं, स्वत्तात्, वस्तु अस्ट
EA = 4.44.4
                                  Selfering a ma a r. ama, 1818
   = MERIN
- 448-71 T
                                 State story hotel
                                                                          ٠.,
                                 بالمواجدا
                              * 1 farming say, ext. 417 1144
```

हरून वालका स्टा	والمستعد مسأر		وست د د د د د د د د د د د د د د د د د د د
			·
San " Samiganian	of the and mount in the state		
	والإعلا أساء المشتشرة المستبيرة والمستحدث فيسأ والإلا	-	-
Bult v Bullimann	e et pre trait state, 45 th		
Burd o Bredding	A home described they shad		
Bank . Bredichler Z.	the transfer of the control of		*
Sand of An white Section	from singer felia		; .
هما سمداهم فرمستمريستانم دد ساند	 अन् अस् तेष्ठानीः गोर्मादन, साम्बर्धाकृतः, १८८ हः 		
इत् सम्पराम्			
male o malendalis	grafatur		Sir Land
to e. melaridar	Emigran 90, 200; 45.44		773
this is they hold	9.		-
श्रीय वर श्रीनावस्थानियोग	go of whole		the fire
पुष्ट : गुरुगालग	कार्यादे क्षेत्रपूर्ण विदेशकृत्याच्या		7.1
सम्बद्धाः सम्बद्धाः	2 1 marre 20, 10 m. 25, 22 22		**
	क साल्ची अंजून के किल, कुर इ.स.		ye.
में र मीवर्गन यह	वार्गलक्ष्य दिशासा देश शतकारण, बावरे, १८७४		44
र्वेशा का श्रीशासका	· lacturer un, einf. er. L.	4.6	
श्याच 🖿 श्राहणगुर्गात्तवस्य	exercity, every, 4840		274
राष्ट्र का स्वीत्रकाराज्ञ	• क्षेत्र प्रवादश विदेश प्रमृश्तनात		
शेव = शक्त स्तीतृत	to to steet		
राष्ट्र = स्माप्तारी	भीवित् शारेष, सावर्ट, ५१ मा		47" 47"
स्पूर्ण = स्पून्यविष्यानिष्यमस्	स्वतं परिष्, यण्यन्, शंदर् १६ वट		p.
दरश = दाशहाग	ए विश्व साम्बर्ध, बराज, अन्याप		7:3
यर = द्याराग्या, गनाच	\$1.96.9649		ट हत
बर् = बर्ग्डरहिंड			
बा = बाव्यवसारमपुषाक्ष	विर्देशांका प्रेय, बन्दी, १६१६	,	द्व
याम = यागुगा र्थार	2 1816		
सि = सिमार्गीय	" 161¥	***	-
िक = किस्स्वेस	मादिक्रवर्नियायर-जैत-प्रत्यनाता, स्वतु १६७१		
सिंग = सिम्हपुर	स्यवनादित, कत्रकता, संबत् १६७६		धुसस्य, मन्द•
fer = feregnitzen	स्रांगिति कारा, गर् १६०६-७६		नाथा
ति = शिराशह मान्य	स्य-मनादिश्, सराहत,संग्र-मनगु १४४१		24
सूर = दश्यात्रया	निरंपरागर प्रेम, सम्बर्ध, १८६६		13
वेदी = वेदी (इप	निर्देशका प्रेम, बन्धी, १६१६		49
षे = वैगानगर	रिद्धन है जीतनाई पंडेत, मनसवार, १६२०		गाथा
थ = शहरीनिक्सति	दे-ला- प्रनाधात कंट, बन्ध्, १६१६		मृत-गामा

```
राहेत । सन्यस्य मार्थ ।
                                                               [ 2 ]
                                                              र्धस्करण मादि ।
              करं = कर्मानाक्ष्मित
                  = समराङ्क्यद्व
                                                 • बार्व्ह संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरिन, १६ १६
              स = संबंधगुन्ती
                                                    एनियाटिङ सोमाइटी, बंगाल, बलहत्ता, १६०८-१३
             मंत्रि = संदिशकार
                                                   निजनाई जीवामाई पटेल, अमराबाद १६२०
                                                  १ इस्तविश्वित
           मंत = कुरचंत्रको
                                                  र सत्त्रन क्रेन दियान्टिती, स्तस्ता, १८८६
                                                  १ मीनमिंह मार्चेड, बायर्र, संबद् १६६८
          सथ = संवादतभाष्य
                                                                                               •••
                                                  र बाह्मानन्द्र-जेन-सभा, मामनगर, संतत् १९७३
          पंच = सान्त्रियक्ति (हेनक्त्रपुर-कृत)
                                                 €स्त्रितिस्त्र
                                                                                              ***
                                                 ९ जैन-हान-प्रमारक-मंहल, बार्क्ट, १६९९
         सवा = धंवरमहरूको
                                                १ बात्यानन्द्-जैन-पुस्तक-प्रवारक-प्रकृत्य सामग्र, १६११
                                                                                            ***
        महि = सङ्ग्रिक्यमस्य
                                              १ जैन धर्म प्रसारक-समा, मावनगर, संवन् १६६६
        स्व = छलदुमार्वारित्र
                                              स्व-संगादित, बनारम, १६<u>१</u>७
       स्त्री। यह वाहेग्रामीहिका
वाह्य
                                           * बॉ एच् कंडोबी-सपादित, १६२१
      रम = हमशाय<sup>†</sup>गापुर
                                             वैन पर्म प्रगारक-समा, माकनगर, संबत् १६७६
     क्रम = सम्भागित
                                            मानमाह्य समिति, बम्बई, १६१८
    ged = birdhalen destill
                                            बैन धर्म- वारक-वमा, मानगर, वंदन् १६६१
    वर्ग = वाद्याग्रेशाहरहाक
                                                                                       ٠..
                                           घवालाल गोतर्पनसम्, बदर्स, १६१३
    र्मा = रिल्यादाउनमाव
                                                                                       ***
                                          बहरी कुनीतात क्लमान, बार्स, १६ १६
   द्याव = स्वंदर्शा
                                         लगंबरिन, स्तासा, मंदन् १६४८
   इव = द्वामनदृद्धि
                                                                                      ...
                                         भागमत्त्व समिति, सम्बर्दे, १६१६
   क्ष = कुम्द्रीवरिष
                                                                                     ...
                                          स्व-मंत्रादित, बनात्व, १६१८-१६ ...
  देश = ह्यानांत्रां
                                                                                    ***
                                         चैन विदेश-माहित साम्र-मता, बनारा, १६१६
                                        ९ मीमिनेह माथड, बाबरे, मंबर १६३६
da = debadit
                                       रे आस्योहद्यानित् सम्बद्धे, १६१७
      = HISH
                                      दे ल्ला - पुस्तक्तार क्षेत्र, सार्व, १६२३
स्कृत = स्कामानाम्
                                                                                  ***
च देवत्य यहा-साम्रक
                                      निरंकामा देव, बार्ट, १८६६ ...
                                     विकास संस्था है कि
                                                                                 ***
                                  े १ वीं मार् मिन्सीरिंद १८००
ष्ट = विकास कार्याला व
                                    रे बार्ड संस्कृतिहरू, १६००
                                   ferianne in, and, 18-1
```

क

क पुषिते । प्रश्न क्षां-साण का प्रस्न व्यवस्थान लिया प्रधान-पान बाप है। (प्रात: प्रामा) १ ३ प्रधा : (डे १, ६६) । ३ तिए हुए एप का स्वीप्तक, " विन कां से पर्ने "(धारम) इंटन पर्नी, जार (स १९९): ४ गुप , (गु ९६,४४) । हेन्से आल्हा वा देगोः विस्तृः (सटट,सटा) । बड़ द्वि [काति] रिक्ता "त मेर्न" वड़ीस क्रीसमेड" (श्या)। अति[कि] वित्य, वर्रेएर, भीगमि बाव दुल्मां, विकां अदारम् दियोगमुं (पडम ३४,३७)। 'अग्र रि [पिय] बनिस्य,क्ट्रीपर, (हे १,२४०) । हि म ['चित्] स्टेग्र , (टाप्ट ३) । ेन्य वि ('ध क्तितार्थों, कीन संस्थाका है : (विसे १९७) । विद्या 'बय, बाह वि ['पय] क्टेंग्ह : (पटम : १, १६ : टगः पट्ः इमाः हे ५,२४०)। 'विम्न किपि] र्क्टाइ : (काल, महा) । 'बिट वि ['बिघ] हिन्ने प्रशाकाः (भा)। बद म [बदा] कर, स्थियमा ? "एकडी उन मामी यगनारं कड सु उन्मरह ? " (सा =+3)। स्ट ६ [कपि] यन्त्रा, वात्रा ; (पाछ)। 'दीख पु' ['डीप] इंगर-विगेष, बानर-इंग्ड ; (पटन ४४,९६)। दिय, ध्येष पु [ध्येज] १ वानर-द्वीर के एक गला का नमः (पडम ६,⊏३)। २ फर्जुनः (हे२,६०)। 'दृस्तित] ९ स्वच्छ प्रादाग में प्रवानक बीज-सी का दर्गन ; २ वाला के ममान विहत मुँद का इपना ; (सग३,६)। प्रदेशी कवि = कदि ; (गडट ; सुर १, २०१। 'अर (मर) पुं[कवि] क्षेष्ट द्वि; (विंग)। 'मार्का[रूख] क्विन्य, क्विम्न; (पर्)। "राय पु [साज] १ थेर क्वि;

.(निग) 1 २ "गडडवरी" नामरु प्राष्ट्रत कान्य के कता

शक्यतिराज-नामरु कृति ; "झासि क्र्रामङ्घो वयाहरासो नि

इत्र पुं [क्रियिक] सर्गेडने बाता, ब्राहरू ; "किर्गेती

समा होड, विकिस्तेनी य बालिमी" (इन् ३६, १४)।

दर्भक दर्भकम्पर् }ुं [दे] निस्म, गमुद्द ; (दे २, १३) ।

इस्रय न [कीनय] बस्ट, इस्म : (बुसा; प्राप्र)।

यहजा प्र [यहा] का, जिन नमा ? . (गा ६३= बडान्स रि [दें] योग, बन्द , (हे ५, २३)। यहर् हें [बबीन्द्र] के बंब , (महर)। महमान्य माँ [महिकास्य] उल्लेखाः, वेर्गेतः (या \$22 11 यहर्मों सो [कैस्सी] राज कार्य में एक गर्ने , (पटन 28,39 11 यहस्य पु विवित्य] ९ प्रशः चित्र, क्रेय का चंद्र, र पल-शिश, चेंथ. वेंथा ; (शा ६४९) ; याम वि[यतम] सूत में में बीत ता ? (हे ९, ४०; सा ११८ 🚉 कहपटा (मर) म [कदा] रा, रिन नमर ? (नन)। बदर ६ [बदर] इस-स्मितः "मं परम्पतादित हा दगरोदी दक्षिणमन्त्रि" (श्रा १६) । कारच न [कीच] कार, वृतुर ; (हे १, १११) । कररविणी सी [कीरविणी] क्सीती, क्सीती। (क्सी)। षडन्यास वुं [कीन्यास, श] १ स्वतास-न्यात पर्रत विर्मय ; (पाम ; पडम १, ४३ ; पुना)। २ मेर पर्रंत : (निय ९३)। ३ देव-सिरोप, एक नाम-राज ; (जीव ३)। 'स्तय ९ ['शाय] महादेव, शिव ; (उसा) । हेर्ने षहलामा मी [मैलामा, 'शा] देव-विशेष की एक गर्ज-धानी; (जीत ३)। **महत्त्व्यक्तर पुं[दे]** स्वच्छन्द-चारी बैत; (दे २, २६)। कड्चिया सी [दे] बन्तन-विगेत, पोस्तान, पोस्तानी , (गाया १, १ डी-पत्र ८३)। कइस (भा) वि [कीहश] हैना ; (कुमा)। कर्रया (इत) देवी करआ; (द्या ११६)। कईवय देनो कर्घयः (पडम २८, १६)। कर्रस ९ [कर्चीश] धेट कवि, टक्न क्षि ; (पिंग) । कईसर वुं [कवीस्वर] उन्म कवि : (रमा) । कड वुं [कनु] यह ; (कम्)। काउ (भा) म [कुतः] कतं है ; (हे ४, ४५६)। कडश वि [दे] १ प्रधान, सुरुष ; २ चिन्ह निगान ; (दे २, १६)। कडच्छेभय वुं [कीक्षेयक] देट पर वैद्या हुई तहवार ; (ह १, १६२ ; पर्)।

परब्रह्मो" (गहर ५६७)।

२६२ बजड म [दे कडुद्] दमा कजह = बहुर ; (पर्)। पाइअसइमहण्णनी। कतरता) पु [करिया] १ तह देश का राजा ; २ पुर्मा मजरच } बुर बंग में टन्यन, १ वि बुर (देश या बग) काओ म [कन] करो, किंग स्थान में ; "बमें में सवन्य स्ननं वाना , ४ वृह हैंग में उत्पन्न , (प्राय , नाट, है १, १(२)। कवोल देगां कवोल , (म ३, ४६)। फउल म [दे] १ वरीय, गोद्य का वृत्रं , (द २, ०)। बाह् म [हे] किमने ; " कह पह निविधात ए सा बाउल न [कोल] नानियह मा का प्रकृति प्रन्य, कीला-पनिवद् बरोरः । १ वि मान्ति का उपासकः । है वास्त्रिकः " कंक पु [कडू] १ वर्ष्त्र निनेष ; (कल १, १, मन को जानने बाला, ४ वान्भिङ मन का बनुवाबी । १ ४)। २ एक प्रकार का मजरून और तीवण लोग ४६०); ३ इत-सिंग्य, १ इक्कम्पालनस्य " विगमिरजनमदापमुर् समायनमसोप्पराष्ट्रा ॥ (उप १०३१ टी)। 'यस न ['यद्र] बात-गयचे विषय गधर्राह कुमानि तुह बरतस्वारीको " एक प्रकार का बाल, जो उड़ना है , (वेशो १०१ लोह पुन [सीह] एक प्रदार का लोहा, (उर हु। कडलब बेली कडरच, (चंड)। हुता २००)। यस देगो पस, (बाट)। षाउसल न [फौराल] कुगनना, रतना, हुनियारी , (ह कंटर १ कहूनि] इन-विगेर, नागरना नामह मोरि, बाउद्देश [दे] निन्य, सरा, हमेगा , (दे १, १)। वांकाड पु [बहुट] बर्म, बनव , " रामी बाबे महददीन काउद पुन [काउद] १ बैत के बने का बन्नाह , १ नकेंद्र रेंगे "(पत्रम ४४, २१ ; मीप)। ध्य बरीर राज-विद । ३ पर्यन का मनगान, टॉब , (हे कंकडहर दि [कहूदिन] स्तव बाला, वर्मन : (स ११६)। ४ वि प्रशान, सुन्त्र , कमाहुम } व [काइटुक] दुनेव माण, उत्तर ह " ब्लिनियमहुरतनोनलन्लवंगस्डस्थिनावेम् । कंटडुंग) वाति, वो कभी पन्ता ही नहीं, "हंतरुणे नहेमु रम्जमाना, रमना माहदियवमहा " माजा, सिन्द्र न उनेह कम्म नाहार। "(नव १)। वंक्षा न [कडूण] हाय हा मानग्य-विगेन, केन वेना कडुन्ह । (बाबा १, १७)। काउहा मी [काकुम्] १ दिना , (जमा)। ३ सोमा, कंकनि १ [कड्किनि] याम-निगेर (राज)। कार्ति , हे काम के पुण्या की माला , व हम नाम की वंकितिहस पुंची [काइतीय] साधात वंग में उत्पन एक रागियो, १ साम , ६ निर्मेश कम , (हे 1, ३१)। कार) म [इने] बच्च, विभिन्न, नित् , "क्या मो क्वन कारण हैं। कोई शावीरामध्येत (इस्मा १६) कारण हमा)। स्वारमध्येत काल काम वहरू कंकर १ [कडून] १ नायक्ता नामक घोष्ण । १ म की एक जाति । हे पुत्री करणा, करा भैनारने का उपस्प (441, 4)1 कंकराम १ [हकरास] काँद क्षीर की एक जारी " वाजा बना मीन ब महिल्ल सक्तपासका रिक्का। क्या काम विस्तृ । भी चेस क्यों क्या जासी " कंकाल न [कडुाल] बनडो भीर सम रहिन सरिय-१ र "कालमाए" (था १६), " वह सहावधार रों म [कुन] बरा से ? (मावा, टब, स्वव २६)। महत्ते बोल्यमाने " (बाबा २०, दे २, ६३)। म कि [दे] कि तेल्ड, "बालून कर्जाल क कार्यस ९ [कड्डावंश] कम्पनि वितेष, (पन्न ११)। करिताल क्या करितल , (मुस ११६ । उमा ।। कंदेनि वृ[कहेलि] स्मोह वल ()

 क्केल्सि हैं | है कड़े लिसे | मनावहत : । वे २० १३: सा ४०४ ; सुरा ५४०; ३६३ : हुमा १। कंत्रोड न [हे पके है] १ क्लानिकान, हर्नेत, एड प्रस्पादी स्वजी, जो दर्शी में हो हाती है, १ व २, ४ ; ঘটা। ২৭ ডেলফাল, ইবলি কাডেলেরি; । के १, २६ : यह ।। संक्रोल २ [काट्रोल्ट] २ दर्देल, जोतर-वंकी का प्रक्र बाहर केद : २ म् इस इस दा फल : "सर्व्योदान : र्देश्चर्न में बेले भी (हा १०३१ हो ।। इस्ते कश्कील । याँच स्ट [कार्क़्] बारत, वीज्या । इंग्छ : (हे 写"轻气",\$20 14 श्रीवण न [फारुक्षण] नेच देखे .। धर्म २ ।। र्मना की [काङ्सा] १ यह, मिनाय: (स्म १, ९४). २ इस्सीन, हृदि : । सम ।। ३ इस्स दर्स ही बाद स्थार दर्जी सार्वित स्व स्मदस्य द्या स्ट स्वीतः (चर : । पीट १। "मोहिपाल्ड न ["मोहनीय] वर्ज-लिंग; (सर्ग । । र्षोय वि [काट्सिन्] चहने बटा; (बाबा ; यहट ; कुर ९३, २४३ है। कॅलिप्र वि[काङ्कित] १ मीटवित। २ बार्का युक्त, बाह बाहा : (टब; स्य) । गॉनिर वि [काङ्क्तितृ] वहने बहा, बॉबरावी ; (का ११: मुत १३०)। र्षनामां स्वं [है] बच्ही-क्रिय, हॉस्सी : (एच १) । र्षातु कीत [काइन्तु] ९ घान्य-विशेष, द्योपत ; (ट. ० . देव, १)। २ बन्ही-दिशेष : (स्टा १)। षंगुलिया सी [देकङ्गुलिका] जिल्लीका ही एउ पहें, मारात्मा, जिन्मनिक में या उनके महरिक तह का क्द मंदि क इस्म; (धर्म २)। र्षेचन इं[काञ्चन] १ इट-किरे: १ स्टब्स्वट गय और () दा अभावी) । व मुख्यों, सेरा ; (इस)। जिन्न पुरी क्रीय का च एक्स्प कार, (मंद) । कुड न [कुट] ६ र्यस्टन्यम् वस्त्राप परंदे सा पर मिल्ला, (स अ) । अ देव जिल्ला-सिरोप: (सन 19 11 अस्वर प्रतिसाम्ह किला: (स. म.)। केम्बर्ट में [केतको हिलाईमोद हम 11 हिलाय र [तिसको १२ सम्बद्धियारो इत्याद स्वयः (१३) । त्यल र [स्थल] व्यक्त-व्यक एवं सर : । इन १ ।

'बलापान न ('बलानक) चैंगनी तीवीं में एक तीर्व बानम ; (गव) । सेल पुं ['दौल] मेर पर्रत (इस्)। बॉचणमा वुं [काञ्चनक] ६५वंट क्रिये ; (सम २०)। २ कान्यतर पाँत का निवासी देव ; (जीव ३)। क्षेत्रणा सी [कञ्चना] स्त्रम स्थल एक सी : (पह 9. x) 1 कंबजार हुं [कञ्चनार] इल-रिवेष : (पटन १३, ४६) कुमा)। क्षेत्रपियार्था[काञ्चनिका] स्वतःसताः; (क्री.)। क्रीचा (पै) देखा करणा ; (प्राप्त) ; कवि) को [काञ्चि, ञ्चो] १ व्यतपन्यात एक देश; पाँची (कुन)। २ वहीं-मेनदा, क्रम का मानूनों : (प्रज्ञाः) इस्यनम-स्थात एक स्यः ; (स्या ४०६)। काँची भी हि] सुरात है सुँह में रहती जाती लीते ही एह बटबाराः चीतः ; (हे २, १)। केंचु १९ं[कञ्चुक] १ मो हा मनाच्यद्द वस, क्षंबुझ रिली : (पल ६, ११;पम) । १ संन्वह, मैं की कंत्रती; । विने २११०)। १ वर्न, करब ; (ब्या ६, ३३)। ८ इस-विशेष ; (हे ६, २६,३०)। ४ वस, द्वाहा ; "तो दिल्का त्या (तय्हें), मेई-बह होदर्ग सरीगामी" (पटन ३४, ६४)। र्याञ्चर वं [कञ्चुकिन्] १ प्रन्तापुर वा प्रतीहार, परगावी; (बाबा १, १; पडम च, ३६ : सुर २, १०६)। २ सींव , (विसे २४९७) । वे यव, तब ; ४ वराइ, वना; इक्किन, क्राइन में होने बाता। एक प्रदार का करना, होन्हरी । 🐧 दि जिसने स्वय पारंग स्थित हो दह ; (ई r, = (3) (कंबुश्च वि [कम्युक्ति] बन्द्र बडा ; (रूग : दिसा १, २) । कंसरज ५ [कम्बुकीय] मनारा क प्रांदर ; (सर 99, 99) 1 कंचुरव्जंत वि किञ्चुकायमान् इन्युट्ड कर माराग कृतः ; "गेर्मपर्वसुरुवदेतन्त्रमत्ते" (सुर १८३) । क्या देशे क्या (भेष ६०६ कि २४२२)। क्युंगि देशे क्युंड : (ना) : क्षंत्रस्था क्षं [क्षञ्चस्का] ध्वरं, यतं. (इस्) । बोहुन्सी न्वं [दें]हर, सरस्य

है हैंगे चल की हैंड साल है कह कार-साहर

(料の) (村田田の い

केंद्र पुं[दे] १ केन, फीन; २ वि दुर्बट: ३ मिल्ल, केंद्र देशों कहेंद्र: (गत)। पाइअसहमहण्याची । च्यांडाञ्च देनो कंद्रका (का १४=)। कडु देखी कडु: (सुम १, १)। ं बंडडउनेन देखें केटडउनेन ; (गा ६० म)। केंडुअ मह [कण्डूय] नुबबना। वृंद्रमाः (हे १, कंडरा पुंच [काण्डक] देनी कंड = कर्टः (प्राचा ; १२१ ; ब्व)। बंदुम्पः (नि ४६२) । वह-ा महम्)। २६ मेचन-प्रेसि किरेवः (बुट ३)। २६ र्षांडुञंत ; (गा ४६०) ; कंडुअमाण; (प्रासू २८) । इत नाम का एक बाम; (बान १)। देखी केंड्य । फडुम पु [कान्दविक] हतवाई, मिग्रई वेपने बाता : कांद्रणान [कायडम] मंदि वरीनः को मारः करना, "शवा वितेष्ठः, कम्मे बंदुयस्य जन्नष्टंतरवयनंतरीः?" (मानम्)। द्यक्तरः ; (धः ३०)। केंद्रभ } वृं [कन्दुक] गेंदः (दे ३,१६ ; राज)। कंडपंडचा को [दे] स्वतिस, प्राप्तः (दे २,०४)। कंड्य पुन [क.ण्डुक] हेनों कंड = स्टब्ट नम कंड्य १७ केंडुक्तुय वि [काण्डर्जुं] बाय की तरह सीची ; (स हत्तावितेष , मलामें का बैन्द एल ; " तुस्मी मूदारा मुदे, रक्तवार व इंडमी "(टा =)। अस तबीब, सन्डा. कंडुयम वि [कण्डूयक] सुजाने वाला ; (मीर)। बन्द ; भ कामन्ति कंडमाई, स्वानिद्वीतिन काम्यक्तं " (सुर कंडुयल न [कण्डूयन] १ सक्ती, सान, पना, रोत-बिगेर ; २ सुजवाना ; "पामागाहिक्स जहा, बंदुक्त षांडरीय ५ [कण्डरीक] महास्य गडा का एक पुत दुक्तनेत सूरम्म " (म १११ ; तत २६४ दो : गडड)। पुरुष्तिक का छोटा मार्ज जिसमें करें नह देनी बीला का कंडु स्य हेर्ने कंडुयस , " महंद्रवर्षीं " (पह २, १— पतित का काल में दमका त्यारा का दिया था ; (राप्य ९, कंडलि] माँ [कल्ड्रिका] गुरः, बल्डमः (नि ३३३; कंडुर ९ [करडुरः] स्वाम-स्वान एट गन्ना, जिसने वामचन्द्र के मार्ड भाग के माय जैनी दीजा ही थी; (पटम यंडलिया (ह २, ३= ; कुन)। कंडवा माँ [कण्डवा] बाद-किरेव : (गय)। केंडू स्त्री [करुडू] १ स्तरसहर, स्टब्साना ; (यासा १, फंडार मह [उन् + सू] सुरता, ठील छात का होह १))। २ मंग-विग्रय, पाना, साहः (पासा १, ९३)। केंद्रइ सा [कपडूनि] कार देखी; (गा ४३२, मुर २, " रूमं दुवं इह प्रमानको जमन्त्र, हे देहरीन्नायद्वीवरद्वरद्वास्त्रा कंडूड्ज न [कण्डूयिन] सुन्तरना ; (सुम १, ३, ३ ; एत्डे पंडर पटमं इसर्गरासंगं, वंडारिक्रण पमनेर पुनी हुईमी" (क्यू)। कंडुय हेन्से कांडुब्र≃इन्ह्य् । इंह्युर ; (महा)। वह--लंडाकेली भी [काण्डवल्लो] कल्ली हिंछ, (स्टर ९) । कंडिअ वि [काण्डन] सन्द्र-पुपग किया हुमा; (हे ९, कंडूयन वि [कण्डूयक] गुरवाने वराः (इ.४,१)। बंडुयण हेली बंडुयण; (इर १४६ : इर १४६ ; कंडियायण २ [कप्डिकायन] वैशाली (विहार) का एह केंद्र ; (स्त ११)। कंड्यय देली कंड्यम ; (मना)। ें डेल्प वं [काण्डिया] १ काण्डियामीत का प्रवर्गक कंडूर वृ[हे] बर, क्ला; (हे हे, हे)। र्राप्तिके हैं व क्वारी कारिकार बोब में दलाल है है ह कंडून हि [कंड्रुल] सत्र बड़ा, कर-युक्त हम)। प्य-सिंद, दी मण्डल मोत्र की एक साम्ब है, (क्र s— ' कर्त दि [कार्ल] रे स्टेश, इत्याः (इसा)। १ ं ^३६०)। ायल ९ [ायन] व्यक्तान्त المُمْ كُونُ الْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الْمُوتِيعِ الْمُوتِيعِ الْمُوتِيعِ विकिया । यह १० । स्वर्मः (प्रमः। ४ दव-विगेषः । पुल्यः १६)। १२ वर्ति, स्त (६४) १,११।

विकार कि. दुसा दूसा . (यह । । वाहममहमहक्कारी। म [करता] । मा, मारो । (मेर ३, १४ , मार A the St. LE & all all with ' (42th पुन बाँउ (जी ह)। र मूल, जह ** ** * * ********** (***); क प्राप्त कार्यक है। स्थाप, पर्यप्त (पास)। टर-वित्रव . (वित्र) I कोंद् वृ [कडान्द्] कार्निहेय, परामन ; (व

11. 14t 3 family could can !! * FT + P [* TE 4] T TE, TE 19 1 91 9, 736) 1 १ र व. तीन्त्र क्या । ३ इर वस दी राज्य की महत्रक (कर्मा कर १३) र महिला कर ३.

कार्यमा भी [माइनना] मेरे स्मा में नि वंत्रज्ञ १ (कार्र) १ व महेर, धनंगः (व १)। ४ हर्_{र १ म}ा मन्द्र द्वे वह क्या । तह सिर कामांबीयह बाम्यादि , "वंदाने कृत्राद्वण्" (परि (4) Tyn (du) mi in (4) म ातः । मिन् हेन होतः । मासः सहर

१)। १ तेर विगय , (पर ०१)। पर क्षात्र . १ वि काम तुक्त, कामी १ (वृह् १)। कृषि व [कारित] के प्रशंकात प्रथम । वे सात, वंतरत है [कान्यं] कर्लन मक्त्रों। (या न कत्विति वि किल्युनित] कामी(तिक । कन्तर्य का उ 1716 TEN ENTE (\$7.7); वंतियव वृहिकान्यविक] १ सत्राह काने कत्रा

ALK) 3 (AMA) NI 4. W. B. 12 (W. S.) प्रमृत्ये के । विश्व प्रमृत्ये सम्बद्धाः सम्ब वतेत . (और, नव)। १ मानव-माय वर्ग को एड व (वल्ड ३, १)। १ झन्य बरीरः मानः बर्म में प्रा इ. १. १. विस्ता का व्याप्त विस्तास का विशा करान बाता . (पान २०)। वृति काम गवः 1 9- 1 11

वंदर व [कन्दर] १ वस्त्र, हिस्स, (कावा १, १)। Alledo to (andless at) talend in क तीन तीन (ज्या भार कार का)!

क्या व [वव] छाव बन्ता, वा बिल्लुमा] गूल, पूरा (से १, ११ , १. Brand as any are manufacture and ha and desired the first of the first वंडर वृक्तिवर्ष है १ सन्तर्भ ११, ११, १ । (मृत्र ४)। * It 1 [4 mile] 27 mil 107 mil 1 यक है। वर्ग वर्ग के के है। 4424[\$] \$104 (\$2,4)!

entry lead to retain the 12 ALSEL & CASSES | at di Soul And the adolf and to the fine doth ter anima mere f. 4112.1612 11

TTT TO STATE OF THE STATE STATE A will a said 3 am that . wh. I am was base from as as \$1 a make dad . ungittatte. 41 [434 4 444] complete at 300 #" # n-f(); Anital & [Almilan] half firt ada ha Eller Compression to the and the forest the time to the time. वर्षत् । [कांत्र्यः, वर्षित्रेणः] श्रीत्रवस्य राज्या Wing of men

सीता वि (बाल्सि | गेरने बला; (मर्वि)। र्वेदी मी [दे] मुता, बन्दर्वियः (देव, १ १) बोंडु हुंगी [करहु] एवं प्रश्न का सम्म. किसी हरा दौर: राज्या जाना है, ही दा : (विका ६, ३ : सूच ६, १) । र्कद्धार्च (यस्ट्रक) ६ स्टः (प्रकः स्टम्स्टः ही १९)। व दल्याने किया : (एका ९ ।। बंदाय है [बान्दविक] स्थारं, निर्दे देवने राजा. (\$ 2. Y5 : £, £\$) 1 कर्ना देनी क्रिया: (गर)। केंद्रु । है । देशे कोटोटु : । पान : वर्स ३ : स्या । । **बंदोरप** देनो क्षेत्रक , (सून ३०) ।। महिद्देश न दि है ने न समन । १ दे २,१ : बाव : पहु : गा ६७१ ; हन्य ६६७ ; बर्ग् ; महि 🕽 १ षंघ देवे विघ=न्यत्य : । तद : कहा ३६ १। योगमा मो [यनदार] इंडा, स्टान : (राष्ट्र : सूर १, \$88: FF 2 13 बंधार दु हि | सम्बद्ध संग्र का संग्रह सक 1 37 9 चीप मह [यहरू] मीला, जिल्ला । इस्तार हो है है, ६० 🕽 । रह—प्रोपेन, बोपमाण, १ मनः रम 👔 हाह विकित्तीत । मे ६, ६८ : ६६ : ६ : १ : प्रमे रहा 🖳 र्षकाचितः (सर ३३३ । बांद १ [बारद] क्रमीर्द, चन्त्र, रिक्स, 132 : करिया १ हिं । पित्र, मुल्लीक हर है के, के . सोरम र [सम्प्रत] १ व्या, १००० : । और ५ ० रर लिंद । 'यात्रिक ['यातिर] रस्काहरूका केर दार , । बहु ६ । मंदि ६ [मन्दिन्] के लेनाना , व्याप् । वंदिन दि विकास दिया हुए 👉 हुए 😘 वीता है [मनिष्टु] होने हर १६ १ १६६ १ हरें 经前条款 电电流管 परिना रि [पन्यवर्] होती हाल, ब्रोन्स, वित्रासम्बर्धाः कार्यस्यक्ति ब्राह्मिकाम् सुर्वे । उत्तर् १ हो १३ परिचात् [कारियाव] १ स्थानस्य नका प्रस्तवाना माण्डिकारमञ्जा स्वर् ३०० व प्राप्त हेरा का ल्या, एष, प्रश्न हे । बुन्हें को स्कृतिक, प्रसाद, १६३ एक ५

1 6 352 11 क्षेत्रं देले क्षेत्रा । क्या १ हि किए (३२,६३)। बंदर पुर [करवर] १ हर्मा, उने हारू , । मान : म्य) (३९ स्थमन-दत्त्त्त्वः दश्योः (गर्व) । इ.स.चे. सर्वे का रामग्र, सरका; (दिस ६,०)। क्षेत्रा की [करुवा] की, सहवी ; ' तिने सरवाहरी, स्थिति इयम्पर्दे बद्धे " । युर्ग ३६६ । । क्वि) मां किया, स्वा) १ वर्ष, इत्ये। १ क्यों । लेल-बीट, इस् सैंग में हुए में गरी उसे तहते. (四层部11 संबुद्ध विस्तु के गर्मः (सर ६, ८)। १४म नम रा एक द्वीप : (पहल ४४, ३६) - ३ परित-निर्मातः (पहल ४३, ३२)। ४ म् एट देश-विनन , (स्प्र २२)। स्मीय न [प्रेंच] एड देव तिसनः । एस ११)। क्षीय ५ किम्बीड कि-सिंग, । राज्य १४, ४. क्षेत्रंय पि [काम्येज] ब्याद का में इत्तर ; (न कॅमार दुर् [कामोर] इन रम रा एर प्रीय हैंगे. ंते के इस पद्रार्थ जनमात [जिल्लान्] इट्सन बला (बुमा): इस क्राइट (कोम्राक्षाः स्वतंत्रस्य (पर् स्रोस ६ [ब्रोस] १ गरा राज्य हा एर छन्, भीरता हा ज्युत (प्राप्त ६, ४) १ अस्तार सिंग, स ३, ३---वर अस्त । ३ कील, तर प्रशास की पातु । ংবাং ১ ∞ বং ১১২ (মান ১ বিন] द्रार्थित होत्र २०, इत द्रार्थित ['दर्ग] क्रमानिक, १ व. १ व्याप्त अवत् । स्वयास्य ५ विक्ति विक्ति । इ.स. १९ व्यक्तिया ५ | संदारण हिना विद्या विद्या । बांस र [बांस्य] १ एए हिए, रॉल १ एर्ट्सार, रे र्याज्यस्थितः । ४ जनस्ये द्वारम् स्वानः, १४ %। म, क्रांतर क्षा क [सम] राव्या । बेंग १०: पत्ती, पर्यं गी [पादी] भेल का कर हुए चंद्रीयाद , जाप (३.६) [ব্ৰেছ] লোহালালোলান লোহ

क्य दि [पन्न] १ इनुस् वार्स , १ सुग्न, स्वेष .

करात १ [दे] करा, तह को निर्मा ता अने में को का का को निर्माण तम अने में को का का का को निर्माण की का का का की का का का का की का का का की का का का की का का का की की की की की की की की की الاعتفاء

الله عند المنادية | عندالمنادية | المنادية المن

#(24 1 (41/2 4) + 431 - 514/ 443-41 14

* 1. 1 * 4.4 4.4 4.4 4.4 5.5 11

When we [whose] > THE COLUMN TO SEE SEE ne estut volt Lats das ! (sim)!

कड़ है। कड़ है। मेल सहक स्ट्रह है करते हैं के कुरह है। ALS I Shitwal we had all silvery after fine attel. (de . ? व रव रिकास है। जान करने कारत जा का सुन है। Bed in many emple that a long of

44 pg 44 14 g 44p 44g 44g

भारत की मुख्य किए। का का का का का

AST (MANE) RENDERED AS JOHN F F 70

In [ment] is a ser on to the second section of the second s

a [equal to] ear an

elecni recentar

the same

٠٠٠ ... ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠

all established

कामिन्दा साहिकोत्पन हिल्ला है तर रहत हा साम

هوديم هر [هدهاسة هإدهكانية] هنا هدينة

ति। १ तेनावान, रोन प्रस्त , (बार ४)। वयकार हि [कर्त्रा] १ कार, परा; (यम। क्

६८ : माना हर, पाम ११, (६)। १ मना, कल् । रीज, जनाह । (किस १, १) । Y सर्जेन, साने साह।

(अस ह, ३३)। १ लिए, निवि: (वस)।।

वता र वर वह हुया वसन , (आवा १, ४,१)। करकतार | व [में] क मेरन, बराब । (रे ने, 10)।

कर हरोग १ [क हरोन] जारे उगलेबी रूप में उपन

करवतानुभा को [कर्कारका] १ ह मागा बाली व हमा था मात्र, "बररायुका वा प्रश्निमहेंडा " (मा

करिक १ [कालिक] बीराव में बने क्या वार्रात्व व

क्रमाहत व [क्रमांक] क्या क्रमांक । द र जा

docto with the manufact of their manufact.

Mak at 1 (4 % be) . 2 m 2 det

Ash th And th .

120 FE, 7 9 370 1 500 /1 Attack as a seal of the last of the

water of when and that of us with वकराष्ट्र व [बार्टाट] माचामा , बर्चम, बर्चम, बर्चम, क्षकां की [क्षकां देवी] बहर वा तम, बहान क

का विकास मा दिल्ला है स्थान (यह १, ११)।

कारतियाम है। [कार्टमन] स्थाना वाह माहि , (का

<u>; 5</u>

35

सक्ताह वि[दे] हेन, हुट : (हे २,११ ; इन ; क्रमण (सर्दि)। करमहोगी मी है निर्मा, मोर्स ; (दे २, ६६)। कवन्तर है दिने कवनसः (४६)। शक्ता हेने बच्छा=स्टा ; (पम ; गया ६, ३ ; स 99. 229) 1 काबाड हं [दे] १ करमर्थ, विग्वेग, टब्बेग : १ हिटाट, दूस से मटाई ; (दे २, ३४)। करबायल हुँ हैं | हिटार, दूर का निया, दूर की सटाउँ ; 2, 22) 1 कस्य म हि सुन्य विदर्भ, रूप ; (दे २, २ ; पर्) । कारन्य (दें) देनों काल ; (प्राप्त) । कारच न [काच] श्रव, गीगा : विवर्ष माणिको व सर्व महार पहर्शमारी (इस्)। करुवंद दि [बृह्यमात] रेडिट क्या बटा : (सुम ६ 2, 5)1 संस्थान में दि कि इचन, इस्टा मन्द्राः र इदन हो सवाच, बहुक केंद्र स्वतः हाहक स्वतः ह्रम बहु तिर्दे एक प्रकार का बाबार गुरुवरों में जिनके किया। बहरें हैं ; "मुने करका प्रमान किल्पनेका" (नवे)। शस्त्रवार हुं [है] स्तर, हुई ; (सूच ८८)। बारवाहर्गी मी [बारवायनी] देवे-विरोध, बारी ; (व (to 5 > कस्वायम है [काल्यायन] १ स्वतंत्र-स्याद श्री-विरोधः (हार १०)। १२ हीरेड येंडडी राज-स्वरूड रोड : ३ पुर्व : हा रोड में हात्मर: (दा अ-पड ३६०)। कच्चायणी मी [काल्यायनी] रहेरी, हैंगी; (राज)। कारिय म [कारियत] इन मही का सुबक सम्बद्ध ,—: प्रस्तः र संगठः ३ अभितायः ४ हर्यः (वि २०५) हे 2, 254, 252 }1 कच्यु (भर) उस देखें (है 4, ३३६) । कस्पूर हुं [कर्जुर] सन्तरि विशेष, बहुर, बार्टा इतर्राः (5.50)1 कस्बोत)ईर [कस्बोतक] रङ्गिर, पाताः कस्बेल्य र्रे(प्राप्त १०२, १२० ; सी ; सुर २०१)। बाल्य है [बाहर] ६ बीम, बाल्मी : २ हम, बीहर : (सर ३,६)। ३ तुर, प्रयः, ४ गुण्य तुरः, ३ वर्ण्यः, टा : ६ इक बार्टे बटा बंग्ट ; श्राप्ट स्टेन्ब

इनस्यमः : महायी हो बीवर्ते हा देते ; ६ वर्त्य, बाहु ; १० व्ह-व्रक्षाः ११ कत्राः व्रेजीः १२ इर द्वाराः ६३ बन्निकिये, राज्य : ५४ विमेतह इत: ५१ में ही वीतः १६ सर्वो द्यास्य ; १० दर्जय देशः (हे १, 30)1 करछ हुं वृ [करछ] १ स्तरप्रधान हेर, जो प्राज इट मी 'इन्फ' रम हे प्रतिद्व है; (परम ६०, ६४ : दे २, ६ टो 🕽 । २ वडप्राय देग, बड-बहुद देग; (याचा १, १---स्ट ३३ ; युमा)। ३ इच्छा; टीरेंट ; (सुर २, १६)। ४ इस बरेगः की वरिका; (बुना: बाबा ६ ३)। ३ सहाबिहेंद्र वर्ष में लिएत एवं निवय-प्रदेग ; (य २, ३)। ६ तम् हिनग ; भौतारहेर् बन्दे, बस्तरें राहमात्र परात्री' (रा. १७१)। अनहीं हे बट में बेटिट बन ; (सर)। म सरवान् म्हानदेव बारह पुत्र : (मास्त)। । सम्बन्धिया का एक राजा: १० इन्छ-तिवय का कविकायक इत ; (अं४)। ११ पर्यार्थी प्रदेश : १२ गवा गरेतः हे उपन हे स्वीत हा प्रदेश : (दा ६=६ हो)। १२ छन्द-विरोप, दोपक छेद का एड मेर : (तिन)। किंड न किंट) १ मन्यान-हमह दक्षम्बर पर्वतं का एवं गिताः १ इच्छ विद्या ह तिनावह वैराटप प्लैट के दक्तिरोक्त पार्ववर्षी हो हिन्तु : (इ.६)। ३ चित्रहर पर्वत दा एवं शिका (इ.४)। "हिष्य हैं [विषय] इच्छ इंद्राह्म गहा ; (स्वि)। 'दिवर हुं ['विषति] इन्छ देश हाईरकः (सति)। कच्छनावर्द मी किच्छकावनी विहानित का छ। एक विक्य-प्रदेश ; (हा २, ३) । कच्छही की [है] क्योंचे, होनेंचे, क्यों ; (रंना— 8)1 कच्छम इं[कच्छम] १ हर्न, छहमा ; (पर १, १; राज ६,६)। २ रह, मस्त्रीरेप ; (सर ६२,६)। "रिनिय र ["रिट्रिन] एउनस्य शाएर होन, बहुत को तरह पर्वते हुए इन्दर कामा : (हुई के ; हुना)। कच्छनी में [कच्छनी] १ क्यानी, हों। १ बद्धिः (नद्दः ६)। १ नग्दः देशः (राज 5,50)1 《安徽策》(27,3)1 कच्छर है [है] पर्द, क्षेत्र, बहुँम ; (हे २, २)। कन्छरो मी [कन्छरी] हुन्छ-दिनेत्र ; (रूप १००५० ₹**२)** [

```
कन्छन (भए) पु [कान्छ] स्वनाम-प्रमिद्ध देश-निराप ,
                                                        पार्मनद्महण्णनो ।
               क्रव्या देखे कव्यम , ( पत्रम ३४, ३३ , दे १, १६७ ;
                                                                  उद्देख ; " न य माहेह मस्जन्नं" (प्राप् :
              कच्छत्री हंगो कच्छमी ; ( हुह ३ )।
                                                                 १ कारण, हेंग्रे; (वन २)। ६ नाम, कार
             बन्धर देशे बन्धम ; (वाम)।
                                                                   "बन्ध परिचितिबङ्, महरिमकङ्गाम हिया
             बट्डा मी [बह्मा] १ विमान, मन, (बाम १६, ४०)।
                                                                  परिवामह मनाह बिया, कृत्वारमी विहित्रमेल ?
             े जो बच्चन, हाची के केट पर बीचने की राज्यू, " उपी-
             विषयं " (तिस १, २००व २१, सीप)। ३
                                                               ैजाण नि [ कि ] कार्य को जानने काना : ( उर
                                                              ैसेण वुं [सेन ] बनीन जन्मपिंशो-काल में उन्यन
            होन, बगन , (मग ३, ६ । प्रामा )। ४ श्रेनि, पट्टिन,
                                                             व्यात एक इतकर-तुरम् , ( सम् ११० )।

    बमान्त स प्रपृत्तिक प्रपृत्तास्त्रको दुवन्त रावनासियाः

           हिल्म मन बच्छामा कलतामा " (त ७)। १ बस
                                                           काजमाउद पु [ दे ] मनर्थ ; (दे २, १७)।
          पर कोरने का कम ; (मा १८४)। ( कनानकामा,
                                                           करममाण में [कियमाण] में दिया जाता हो
                                                            "कात व कातासाठ व कारासिस्तं व पावन" (सम १
          मान पुर, (स ०)। ७ नंताय-कोटि; ८ स्वर्गा-
                                                          काउसल व [ काउसल ] १ कावल, सुनी, १ मन्त्राव, सुन
         चान । द पर की मीन, १० प्रकार , ( है ३, १० )।
       करुणा भी [करुण ] बडि-मेलला, बमर का वाम्रुल ,
                                                          (इया)। ध्यमा स्वी [प्रमा] प्रसंगनन
        (शम)। वर्ष की [कनी ] देनी कल्छनायाँ
                                                          कर्र-इस की उत्तर दिशा में नियन एक पुन्मीकी; (बीर १)
       (४४)। व्यक्तिहर (वनीकृत) कानिस कर
                                                        करमलास्य हि [करमिलत ] १ बाजल बाला; १ सम्
       में निका मानूद वर्गन का एक विस्ता . ( वक ) ।
     करुपु भी (करुपु ) १ सम्बन्धे, नाम, रोग-विशेषः (प्राप्त
                                                       कारतांगी स्वी [कारताही ] कारत गृह, शेर के कर
      १८)। १ नामको उनमा काने वाली मंत्राच, क्रीन्टक्तु।
                                                       रता जाना पान, जिल्ली कारत हरता होता है, क्रांडी,
     ( कर १, १)। कर, कर नि मिन्। ताब तेन बाता,
                                                      ( संत्रा वावा १ १ - वत्र ( )।
                                                     कडबला स्वी [कडबला] इंग नाम को एक उत्परितं,
     ( राज ; रिशा १, ४) ;
   कच्छुहिया मी [ दे कच्छणदिका] क्योदी, क्योदी,
                                                   करताताव मह [मुह्] हरना, बूडना। "माउनतो स्मवा!
  कड़िम में [वे] १ सिंग, किसी रियों की बात बद्
                                                    एवं ते बाबाए उर्थ विनियेख प्राप्त है, उबरहरि वा यादा हुआ
                                                   लावेह " ( बाबा २, ३, १, १६ )। वह -काउतारावे
कर्मुतिम वि [कर्मुनिन] व्यात, स्टिन, (ब्रामा
                                                   माण । ( आवा ३, ३, १, १६ )।
                                                 बाजलिय हेनो बाजलाय । (से १, १६, गाः)।
बाब्युने को [ ते ] क्षांत्रब्यु, वर्गाव, ( ते १, ११ )।
                                                कातार हे इहि ] १ विचा, मैला , १ तथ वर्गेर क
कब्रुत १ (कब्रुल) क्यांक्रिय (क्या १ -व्य
                                                कारतावय है समूह कृता, क्षतात (है है, 11, त
                                                Jat: 465 'a 36x 1 g (' 86' #2) !
काजिय नि [कार्यिक] कार्याची, अमेजिनाची, (स
                                             क मोचन वुं [कार्योचन ] मननी महावहों में एह वह छ
हा रेगा बच्छे . (शबू नर् )।
क्यों को [है] कोते, बनते, (ब्बा-हे),
व ति [ बार्य ] १ जो हिरा क्षत्र बहुर १ बार्व बीय,
                                            कामबाल न [दे] सेवात, एक प्रवार की चान, जा क्ल
प्रिंग का तह . ( ह १, १४)। ४ अगेका,
                                             सरों में सकती है। (दे र, =)।
                                           कहि (मा) म [कहरे] इन मनी वा योजक मन्तर,-
                                            ी सामार्थ , कियान , कहीं वर्षात्र साहत है वर्ष
                                           Read BA . 31" 1
```

'' कटरि मानु मुविपानु, कटरि मुहतमत पर्यन्तम '' (धम्म १९ टी)। कटार (भा) न [दें] छुगे, चुग्छा ; (हें ४, 1 (488 चट्ट मह [इन्तु] बाटना, चेटना । क्टड; (मनि)। मंह---कहि, कहियि, कहिय ; (रंगा: मनि ; निंग)। कह वि [हता] दादा हुमा, छित्र ; (दर १८०)। कट्टन [काम्] १ दुःसः ; २ दि कल्ल-हारकः, कल्ल-हार्योः ; (निंग)) बहुर न दि] सन्द, अंग, इददा ; " से बहा वितय-दृशे इ वा विपापाहे इ वा " (मनु)। - कहारय न [दे] हुने, जन्त-विशेष : (म १४३)। सहारी न्वी [दें] जुरिहा, छुर्ग ; (दे २, ८)। कहिन वि [कर्तित] बाटा हुमा, देवित ; (पिंग) । कट्टु वि [कर्स्] इनां, करने वाला ; (पर्)। कट्टु इ [एत्वा] राहे; (रामा १, १; रूम ; मग)। सहोरत ९ [दे] बटोग, पाला, पाध-विरोप ; " तमी पान्हें क्रोडणा क्ट्रोग्या संक्ष्मा नित्यामी य द्विकांति " (निष् १)। कट्ट व [कप्ट] १ दुःख, पोड़ा, व्यया ; (वुमा)। २ पार ; १ ति. बण्ड-डादक, पाँडा-कारक ; (ह २, ३४ ; ६ •)। हिर न [रेगुह] बटपन, बाट की बनी हुई चार-दिवारी ; (सुर २, १८९)। कहन [काष्ट्र] बाट, टबर्टा; (बना; सुना ३४४)। २ पुं राष्ट्रपट नगर का निवासी एक स्वताम-रादात भेटी। (भावन)। किस्मंत न [किसांन्त] एवड़ी का कार-न्तना; (भाषा २, २)। 'करण न['करण] म्यामह-नामह एहत्य हे एह येत हा नाम; (क्य)। 'कार वुं [कार] कार-कर्म है जीविक बताने वाता; (करू)। 'कोलंब पु ['कोलध्य] इस की गाया के नीव मुक्ता हुमा मत्र-माग ; (मनु)। 'खाय पु ['खाद] र्बट किंग्य, पुण: (छ ८)। इन्ट न [इस्त] ग्रा को बाह, (मञ्)। पाउया की [पादुका] बार का तुना महाकै । मनु (। । पुरानिया मह [पुत्रलिका] क्लुक्ली क्यु । पेड्या मा [पैया] भगवर्णका का स्वर्ण करून के तक हुई काइन दो स्व (इबा महु २ [मधु] पुन

मरम्ब ; (बुमा)। भूल न [मूल] दिवत धान्य, जिसका दो दुकदा समान होता है ऐसा बना, संग मादि मन्म ; (बृट १)। हार हुं [हार] बीन्द्रिय बन्तु-विशेष, चुड़ बीट-विशेष : (जीव 1) । हिएस वं ['हारक] क्टर्ग, तक्ट्हारा ; (मुता ३८६)। कट्ट वि [इप्र] वितिरित्त, यागा हुमा ; " ग्रीग्डुमई (पंप-क्ट्रील्ला अंघरे य मीना य " (मीच १३६)। कहुण न [कर्षण] मार्झ्सर, श्रीवाव : (गडड)। कहा माँ [काप्टा] ९ हिगा ; (मन 🖛)। 🕫 हर, मोना; " स्वटस्य महो परा बहा" (धा १६)। ३ बात का एक परिमाप, बाग्रगह निमेप: (वेंड्)। ४ प्रध्यं ; (सुब ६)। कट्टिंग शुं दि] चन्तानी, प्रतीहार ; (दे २, १६)। कट्टिम वि [काष्ट्रित] काट से मंस्कृत मीत बर्गेर: (प्राचा ર, ર) ા कट्टिण देनो कडिण ; (नाट---मालती ६६)। कड़ वि [दे] १ जीत, दुर्बल; २ मन, विनष्ट; (दे 2, 29)1 कड वि [कड] १ काउ-स्थत, गात ; (दादा १, १--पत्र ६४)। २ तृप, यातः ; २ चटाई, बास्तरप-विधेषः ; (य ४, ४--पत्र-२७१)। ४ तक्डी, यटि ; " तेनि च बुदं खयालिद्रुहडपत्साग्दरंगनिवाएरिं " (बपु)। ४ वंग, बाँमः (विना १, ६; ठा ४, ४)। ६ तृप-किरेप ; (टार, र)। अ दिला हुमा काष्ट्र; (माला २, a, a)। 'च्छेज्ज न ['च्छेच] क्ला-किरोप: (बीन; जंद)। 'तडन, (तट) १ कटक का एक मता; २ मतद-तत ; (पाया १, १)। पूर्यणा स्त्री [पूनना] व्यन्तरी-विशेष ; (विशे २१४६)। कड़ वि [कुन] १ किया हुमा, श्तापा हुमा, राष्ट्र : (मग ; पन्दे २. ८ ; दिस १, १ ; कन ; सुन १६)। २ युन-विरोष, सञ्जुन ; (द्य ४, ३)। ३ चार की संख्या; (न्म १, २)। जिन विता स्मापुन, उन्न-ति का समय, धादि युग, ९००८०० वर्षे का यह युग हता है: । ग्राद् ३ ।। जुम्म पुं [युग्म] सन गाँग-विशेष, बार हे नाग दने पर जिनमें कुछ भी गोप न बचे निमाराधि (हा ६ : -जुम्मकड्जम्म ५ विगम इतयुग्म] र्राज-विजय (स्य ३४, ५)। जिस्सक-

```
રેકર
                     लिओय [ 'युगमकत्त्र्योज ] समिनिसीव, (मण ३४, १)।
                                                           पाइअसइमहण्णयो ।
                    रामतेमोग ९ [ युगमञ्जोज ] राजिनीकः ( मन
                    १४, १)। ज्ञुम्मदावरताम वृं [ज्यमदावरतुमा]
                   मीन विसंप , ( मण ३४, १ ) जीचि हि [ "पोणिन ]
                                                                                           [ a,33
                                                                   कड़म क्ष [कड़क] १ करा, बनव,
                  १ हर-दिन (जिन् १)। १ मोगर्न, क्रानी (चीर
                                                                   विशेष, (शाया १, १)। २
                                                                   " अन्तरम् सम्मामनं होही करनेमन ते स
                  भेटमा)। वे तस्त्रीः (नित् १)। वाह्य
                 [ 'यादिन् ] गुर्छ हो नेगार्विह न मान हर कियों ही नगई हुई
                                                                  ज्यामानं " ( उर १६६ टो )। १ वर्षन
                मनन कला, जकका लचारी, (सम १, १, १)।
                                                                 ४ पर्रेन का मन्य मान , ४ पर्रेन की सम मूर्
                पर 3 [ गदि ] देनों जीति, ( मन, बाना १, १—
                                                                एक माम , " गिरिवं रूरव उगावियमतुरतिस् "
               का ur)। देशों करा=हन।
                                                                वक् १, १, वादा १, ४; १=)। जिल्ल
             करमान्त पु ( हे ) शीवातिक, वावित्त , ( हे र, १६ )।
                                                               का स्थान, (कृद १)। = पु देग विगेय, (का
             बाहमानी सी (है) बाह, गता, (हे र, ११)।
                                                               वन ११)। हेवी कड्य।
            कहरम व [ के ] स्वाति, वारं, (वे व, २२)
                                                            कडच्यु स्त्री [ है ] क्यों, कमवी, होई ; (हे
            कडरम हि [बद्धित ] बत्तव ही तह लिया, (हे
                                                            कडण न [कद्व] १ मार शलना, हिना । ( हन
                                                            नास करता, हे मतन ; ४ पाप ; ४ पुद , १ वि
          केंद्रसम्ब व [ दे ] बीमारिक, माजिल । ( व २, ११)।
                                                            मानुवार (हे १, २१७)।
         कहेगर व [कहरूर ] हर, लिला, (हम १२६)।
                                                          कदण म [कटम ] 1 मर को छन , र बर पर छन छ
         करन न [२] नूनी, कर-विशेष, रे साला , (दे रे,
                                                         कडणा त्वी [कटना] पर हा सन्पर-निरोप ; (व
       कहनर न [ वे] दुगला मूर्ग मादि उत्तरकः (वे १, १६)।
       कर्षनामित्र में (दे) सारित, विस्तारित, विस्तारित, (दे १,१०)।
                                                       कड्यों स्वों [कडनों] मेवला, "वुग्निरिकारिगीन
      कर्ष व [काराम ] बाय-विशेष , (विमे अट हो )।
                                                        वंश्यक्तास सिरिमणुहरनि" ( पुना (१४ )।
      करमुम न[दे] व व्यवपीत-मन्द्र वात-निनंद, र वर्षे का
                                                      कडनला लां दि ] वाहे वा एक प्रवार वा हरिया, इ
                                                      एक पार बाला और बढ़ होता है। (वं २, १६)।
    बहुत देनी बहुत , (बाट-नवा ६०)।
                                                     कडचरिम [दे] देशं कडतरिम , ( भनि )।
    कडकड़ा को [काकड़ा ] व्यक्तक-गरः विशेष, कर-
                                                    कड़द्रित वि [ दे ] १ जिल, बटा हुमा । १ व जिल
    का मचान, (म २६०) मि ६६८, नार-मण्या १६)।
  क इकटिम में [काइकटिन] किन्ने बर बर मात्राज
                                                  कडव्य इ [ दें, कट्य ] १ वपूर, निस्, बतार, (हेर
   विवाही का. अर्थे , (कुर १, १६३)।
                                                   १३ ; बहु , महा , मुता ६३ , सबि निक ६४)। १
 करणहर में [काकजावित्र] काना मानाव करने
                                                  क्षत्र का एक मात्र, (दे रे, १३)।
                                                कड़व देखे कड़वा (सुर १, १६३, वाम वार, क
करकम १ [कटास ] ब्याल, किया चित्रम, सक्युक्त
                                                En 968, 28, 28); E dret, fire, (5
(5, m'n tr #87, ( 94; m 9,2), 377 8 ) ]
                                                ह)। १० प्र बाजो हेन का एक राजा. ( महा )। "
alled or [alibid] end dall steam
                                               भी [ विश्वती ] राजा बटड की एड कन्या , (बहा)।
(मर्व)। मन् करक्मीव (मर्व)।
                                              कहतह वृह्विहरू ] बर-कर मातात्र, 'केश्वर भाग
रेक्यन व [करामन ] ध्यन ध्यन , (वर्षे )।
                                              इत्यक्ताव (१ व ) इत्यात्रीन्त्रात्वा ( वात ६ १, ११)।
िमात हि [ कराहिन ] । जिन का करान जिल
                                            कड़वड़िय हैं [ के ] कामनेव हिराबा हुमा, पुनावा हुए,
( ta ( (a) ) ( ta 828 ; ( ta ) )
                                             े में कृतना कार्यात्व विदेश में पविद्रा विशेष । पूर
                                           S. THE WELLES
```

कडली माँ [दे] मनगन, मताए ; (दे २, ६)। कड्ढ पुंषिटम् । प्रच-विशेषः (दृह १)। कड़ा की दि विदी, निक्ती, जंबीर की लड़ी : "विपटक-बादश्दामं सदश्यमा निस्धिमा तने।" (स्या ४९४)। कडार न [दे] मातिक, मन्या : (वे २, १०)। कडार है [कडार] १ वर्ग-विनेष, तमझ वर्ग, भूग रंग : र वि परित बर्ग बाला, भूग रंग का, महमैला रंग का : (पान्न: स्वयं ७७ : सरा ३३: ६२)। भड़ाली मी हि कटालिका] पोई के मुँह पर बाँदने का

एक उपसम्य ; (मतु ६)। कड़ाह १ किटाह । कहाह, लोहे का पान, लोहे की वडी बड़ाही; (अनु ६; नाट - मच्छ ३)। २ इज-विरोध ; (पटम १३, ७६) । ३ पाँतर की हर्डी, सरीर का एक अवयव : (पराप ५)।

कडाहपाहतियम न दि देने पार्के क मन्दर्भन, पार्थों को धुमाना-तिरामा ; (दे २, २४) इ

कडि स्वी [कटि] १ कम, बटी ; (बिरा १, २ : मनु ६)। १ इलादिका मध्य मागः (जं १)। 'तड न ितद्री १ कटो-नड ; २ मध्य माग : (गय) । 'पट्टय न [पहुक] धीती, बस्ब-बिडेग : (दूर ४) । 'पत्त न पित्र । मार्गाद एल की पनी; १ पतली कमा; (मतु १)। 'यल न ['तल] वडी-प्रडेश ; (सर्व)। 'स्ट वि ['दीय] देखे कडिल्ट (दे) का १ स प्रर्थ। 'बट्टी की ('पट्टी] इसर का पत्त, कमर-पत्ता: (प्रश ३३१)। "बत्य न ['बन्ब] धाता, क्रम में पर्नने का करहा, (द २, १०)। 'सुच न ['सूत्र] क्या का प्रान् वग, मेखडा, (सम १८३ ; बागू)। हिल्ब वुं हिस्त] कमर पर रसा हमा हाय : (दे २, ९३) ।

कडिय वि [कटिन] १ वट-वटाई ने भान्छदिन ; । इत्य)। २ सट में संस्कृतः (आवार, २,१)। ३ ' एक इसी में मिला हमा ; "पणबीटपडीटच्डाएँ" (भीप) । कडिश वि [दे] प्रांतिन, सुर्गा हिवा हुमा; (पट्)। कडिलम पुं हि । क्या पर रक्त हमा हाथ : (प्रम् ३२,५७) । २. इमर में क्या हमा भागत . (ट २, 3 3 1 1

महिन रहा केलिस, । गाय ६, ६ हा-५व ६ । । कडिभिन्त न दि रिश्तर है एक अग में हमें बान्त कुछ 9 3) 1 37.5

कडिल्य वि [है] १ जिन्महिन: निरिज्य ; (दे २, ४२ : पर्)। २ न कटी-यस्त्र, कमर में पर्तने का यस्त्र, पीती बगैरः ; (दे २, ४२ ; पाम ; पट् ; सुप्ता ११२ ; कम् : भित्र : विसे २६००)। ३ वन, जंगत, महकी :

"मंसामनक्रिक्ते. संजीतियोगनीगनकारणे । कुमहत्रपद्माप तुमं, सन्याही माह ! उत्पन्नी ॥"

(पड़न २, ४१ ; वन २; दे २, ४२)। ४ गहन, निविद्य, मान्द्र: " मिल्लिभिन्लायाक्टिल्लं " (दप १०३१ दा : ट २, १२: पड़ी। १ मानोर्गाद, मासीस; १ पुंदीवारिक. प्रतीहार ; ७ विरक्ष, रात्रु, दुरमत ; (दे २, १२ ; -पर्)। = कटाह, लोहे का बडा पान: (प्रोप ६२)। ६ टसरग्य-विग्रेप : (दस ६)।

कडी देशों कडि ; (मुग्र २२६)।

कडु) पुं किटुक । १ कड़मा, निष्क, रम-विशेष : (हा कड्यो १)। १ वि विता, विक रम बाला; (स १,६१: बुना)। ३ मनिष्ट; (फह ३, १)। ४ दाहरा, मर्पेकर ; (पाह १, १)। १ : पर्यः, निन्दुर ; (नाट---रूना ६६)। ६ माँ, बनस्पति-विशेष, बुटकी : (हे २. 988)1

कडुब (जी) म [हस्वाती वन्के : (हे २, २०२)। कडुबाल वृं[दे] 'फ़रा, फर : (हे २, १७)। होटी मञ्जी ; (-दे २, १० : पाम)।

कडर्य वि किटकित । १ वर्डमा विवाहमा। दुष्तिः (यहर)।

कहर्या सी [करकी] क्ली-विगेप, बुटेकी; (परा १)। कडुच्छय भुमी (है) देशी कडच्छु : " धूर्वहरूच्य . कडुच्छु | हत्या " (सुग ४९: पाम : निर ३, १ , यन्म कडुच्छ्य 🕽

काड्याञ्चिय वि [दे] १ प्रत्य, जिल पर प्रतार किया गया हो बह , (दर प्र ६ १)। व स्परित, पीड़िन, "मा य (बारपाडी) कुमारपटारकडुदाविया भागा परम्मुटा कया " (बहा)। ३ देगदा हुआ, परस्य: र नारं विषद् में फ्रमा हमा , । मनि)।

कड्डर् । जी । वि { कट्ड्न } स्ट्रा दिया हुमा . (गर)। कडेबर व (कलेबर) गांग इत 352 1

```
कड़ तह [हुन्] १ शीवना । २ वण वस्ता।
                                      पार्मतह्महण्याने ।
    रेमा करता । इ काता । १ तकारण करता । कहता ,
    (र १, १८०)। बर्ज्यान्त, महमाण, (ग
                                               कण ९ [कण], वण, वंग; "
    (= » वहा )। क्तार कड्डियतंन, कड्डियताण ,
                                               न सानक्" (मार्च ३६)। २ विद्राण
   (#1, 11 (, 11 , 100 1, 1)) 115
                                               ا ك ١ ( د درده ) * دروا والصفه
  कड़िरत, कहेंड, कड़िय कड़िय (सह),
                                              ( साम् ) । १ मह विगय , महाविध्यायक
  , ect 5 amiant .. ( dat )' migg! ( & fan)!
                                              र, रे-वन ४७)। ६ तगहत, मोहन,
 १ - महेका, (या स्त्रा)।
                                             ण वनिकः । (भावा २,१)। = विद्वा
करि १ (कर्म) भोवान, साहर्भन् , (उन १६)।
                                             रम" (पाम)। "इम वि विष्
                                            (वास)। कुट्टम व [ कुण्डस] स
                                           हैं एक अस्य बन्तु , "बगाउ क्रम बानण
```

कड़िया न [कर्याण] १ भीवान, साठांस , (-नुस २६२)। भ कोरन कारा, सामग्रह, (उर १ १७३)। क विषय की [कर्याना] महर्मन, (जा १ २००)। क द्वाचित्र वि [करिन] श्रीवसवा दुसा, बाहर निरुवसवा a [la [& int] & man' with \$m . (dec 1's)! कड़ीकड़ म [कार्याकर्ष] मीकाल , (वस १६)।

वर नव [क्यू] , बाव काना : व्यानना । हे मान्तु नाम बाना। बाह, (हें र, ११०)। क बहुमान, (श रहा)। मात्र वर्ष गित्रह हे र कार्टम[्]रावृत्र । जुला १३०). कडोम्पाल (११११)। हर्के - भ धीवा

133

ष्टबहरूदेन वि [षष्टकहायमान] व्यव्य मनाव विभिन्न में [विभिन्न] व ज्याना हुमा व मेन सम्म हिन्ता । हैक. - ब्रुटेश कर्ने प्रियमी संदर्शमी करे अध्ये !! (भारक, मेच १८० हुना गाई)।

करिया के [है] करें, बात्रत निगंद, (है है, है। है। बहिन [में [बहिन] १ व्हेंन, बंधा, बार, करा, विकास } (कह , , , दम्र)। १ व स्व-क्रियु । (mai 4 ' 6 ' 5 | 1 | 5 mi' ani (26 5 ' 5) इर्फ में [बहार] र क्ला कर , क्ला र स्

14 MH 6. 45 MA. (43H 35" 93)! इत्र व [क्वत्र] भार छन्न, क्वत्र छन्। छन्। (\$ 5, \$12) | or width (my to \$10 arm.) an we [and] name one. ' dan . 5 4 - 515] !

वसो " (उन १२)। "पुपलिया मी [" माजन विरोध , कविक की बनाई हुई एक साथ स्पू

रे, १)। भारत हु भिक्ष] देगोरिह मा बा वर्षे । (राज)। विति को [यूनि] हत (जा १३४)। 'वियाणम व ['विनातक] कवार वियाचरा । (पुरत्र २०। १६)। 3 [संतानक] देशों कणग-संताणवः (॥ दिइ[शर्] बैराविह मन का पत्नीह की, १९६४)। 'यवण वि ['क्कीणं] विवृत् (978) कार्य वृहिक्ता] स्टा, मानात , (ता ह १०

काणाकी ३ [बलांबिकेतु] हम नाम स्म ए कणापुर व [कलकियुर] नगर विगेष , जो महत्त्व ह नाई क्रमह को गमपानी थी , (ती)। कणार वृ [कार्णकार]क्षर, कार्णानीयाः। कार्यास्त्र १ [रे] गुड, नाना , (र २, ११,1 कवा को [रे] नग. कवा. १११. कर्णाम व [कन्द्रम] वास्त्र का ग्रह प्रदान

क्रमकृष्ण १ [क्रमकृष्ण ॥ स्था ॥ क्रमक्राम्कण सह [दे] क्रम क्रम सावाव स्थ auffe,1 (334 gf. 55 11 al. attan (121 (121) STANT 1 [STANT] COL

्णक्कणिञ्ज वि [स्थणक्यणित]क्म-क्म भावाद कहा, (कम्)।

पाग देखी कण ; (कम 1 णग(दे) देनो कणय=(दे);(क्ट ६,२)। पाग पुं किनक] १ ब्रह-विशेष, ब्रहायिन्झयक डेव-क्रिये ; (दा २ , ३---पत्र ७७) । २ वेद्या-मन्ति उद्येतिः-पिट , जो बाजाम से पिरता है ; (बोच ३९० मा; जी है)। " रे बिन्दु ; ४ शताका, मलाई ; (गज)। ४ पृतक द्वीर ्र श क्रियानि देव ; (सुरज १६) । ६ विल्व यूझ , बेल की - बड; (टना) । ७ वृस्दर्ग, मोला: । सं ६०; जी ३)। 'क्लैन वि ['काल्ल] ५ वल्ट की तग्द चनस्ता : (भाषा २, ४, ५) । २ पुंडेब-विशेष ; (देल)। 'कुष्ट न ['कुर] ९ पर्नन-किनष का एक जिन्तरः (बं४)। ., १९ं स्वर्णभग गिमा बाद्या पर्वत ; (बाँव १)। केंद्र -3 ['केंतु] इस नाम का गृक्ष शजा ! (शाया 1, 1४)। 'गिरि पुं ['गिरि] १ केंक्र पर्वतः ३ स्वर्ण-प्रज्ञाः - पर्नेतः (भीर)। 'उम्हय ९ [ध्वजः] इस नम इर गक गजा: (पंचा ४)। 'पुर न ['पुर] नगर-निगय, (निर २, ६)। 'प्यम पु ('प्रम) हेर-किनेप: (सुझ १६)। 'पासा स्त्री ['प्रसा] ९ देवी-विरोप, २ ' इत्तावर्मसूत्र " का एक इस्वयंत्र : (गया ३.१)। 'फुल्डिय न [पुण्यत] दिवनें मोने के पूछ छगाए गर्द हों ऐसा बस्त्र ; (निकृ माला स्त्री [भाला] १ एक विदाय की पुत्री; (दन ६)। २ एक स्वनाम रूदान मार्थ्या ; (मुर १६, ६०)। 'ग्ह पु ['नय] इस नान का एक राजा; (छ २: १०)। लिया स्त्री [लिया] चर्नेस्ट ह रोम नामक लोकपल-देव की एक अध-महियी : (टा ४, १ -पत्र २०४)। 'वियाणग पुं ['वितानक] ग्रह-निर्शेष, महाविद्यायर देव निर्शेष; (द्य २. ३—पत ७०)। 'संनाणग ९ ['संनानक] प्रद्यत्येष, प्रहारिहायक दन-किरोप ; (हा २, ३--पत्र ३०)। विचलि सी [चिलि] १ मुक्त बा एक मानपण, मुक्त के मिटमी में बना मानुष्य ; (मंत २०)। २ तः दिनंष, सुद प्रकार की तारवर्षी ; (क्रीन)। ३९ द्वीप-विशेष ; ४ म्मुर किंग, (बंब ३)। 'विलिपविभक्ति मां ।'विलि-प्रविमक्ति] नाट्य का एक प्रकार: (राव)। विकास पु [विलिमद] सन्तर्वि ईत का एक फॉरएपुक देव ;

(र्जत ३)। 'बलिमहामद् पुं ['बलिमहामद्र] स्त्र-बावलिया-नामरः मनुद्र का एक अधिष्ट यह देव ; (जीव १)। 'विलिमहाबर १ विवित्महाबर) करकारतिक नामक म्मूर का एक प्रविष्टता हेन; (र्जन ३)। "चिलिया पुं[ीयलियर] १ इस नाम का एक दीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; ३ कनक बतिवर समुद्र का अधिग्राता देव विगंप ; (वीत ३)। "विलियस्मह पुं ["यिलिय-रमद्र] बनकावतिवर द्वार का एक मधिपति देव; (जीव ३)। "विलिबरमहामद् ९ ["विलिबरमहाभद्र] कारावितवा-नामक द्वार का एक मधिष्ठाना देव: (जात ३)। 'विलि-चरोमास ९ ['व्यलियरायभास] १ इत नाम कः म्हद्वीतः; २ इत्त नाम का एक सनुदः; (जीत ३)। 'विलियरोमासभइ वुं [प्रियलियरायमासम**इ**] बनश-विविधायमाम द्वीप का एक अधिष्टाता देव ; (जीत-३)-। ावल्चिगोभासमहामद् **९ं [**ावलिवरावभासमहा-सद्] कनदावतिवयवनाम द्वार का एक मधिप्राता देव; (जीव ३)। **ीवलियरोमासमहावर पुं** ियलिवराव-मासमहाचर विनक्षतिक्षाः भाव-समुद्र का एक प्रधि-ष्ट्रजा देव ; (जीव ३)। **ीवलिवरीमासयर** हुं एक मधिग्राता देव; (जीव ३)। "विक्री सी विक्री] इंखो भवलि का १ता भी २रा भर्ष; (पत २७१)। देखो कणय≃ध्नदः।

कणाता की [कनका] १ मीम-नामध गन्नमेन्द्र की एक कप्य-महिशी, (द्रा ४, २—पत ४०) । २ क्सॉन्ट्र क मीम-नामक लोक्या १ की एक कप्र-महिशी (द्रा ४, १)। ३ 'गायाव्य-मध्या' स्वय का एक कप्ययम, (गाया २. १)। ४ जुटू जन्तु-विगेष की एक जानि, चनुशिन्द्रिय जील-विगेष ; (जीव १)।

कणगुत्तम ९ [कनकोत्तम] इत नाम का एक देव : (दीव)।

कणय पुंदि है] १ पूर्वो की इच्छा करना, भववस २ वाग, गाग, "मिलिंडसक्टपन्तोता—" (पटम ८, ८८; एक: १, १; दे २, १६; पाम)।

कष्णय देशो कष्णग≔कनरे, (झोय ३१० मा; प्राप् ११६; हे १, २२०० ; टब; पाम ; महा; दुमा)। कि पुंगला जनक के एके माई कानम ;(पटम २०० १३२)। टंगकरा का इस नम का एक सुनट ;

```
का नहीं ने जामने ] कर्म निर्मेष निरम होता के को ने निर्माणका होती कि मोर्से
का नहीं करता करता है ( ( तान ) ) विशेषका है कि निर्माणका होती कि मोर्सेस
कार्या ( वस १,१) | करता है है है कार्सेस
                                                                                                                                                                                                                                                                                              THE I SELECT COME TO 
                                                                                                                                                                                                                                                                                त्र कार्यात क
                                                                                                                                                                                                                       The state of the s
                                                                                                                                                                                           त्र कार्य करता है। विशेष करता करता करता है। कार्य 
                                                                                                                                                                             The second of th
                                                                                                           Crayes for at their (era some s, 1)
                                                                                                  मान्य के क्षित्र होते । असे १९०० हिन्दू के असे १९०० हिन्दू के स्थाप के स्थ
                                                                               4,2 ( 34.3 ) ( 3 4.2 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 ) ( 3.4 )
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             कांतर व [कांत्रिय ] कांतर का गर
                                said to feel be said the said fillers of us and
                                     and the state of t
                       (81 fel) (811/1/18 (811/18))
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     कार्तिको को कार्निको नार्ने मान वो वृत्त
              gu et me att. ( M.dal ) !
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         कारिया ( (कार्टिया ) हिन्म, क्वारी, (ब्रः
```

कामिय १ [कार्तिक] । कार्तिक मण (व \$ 27 AUG 87 OF 2007 (PAT \$ 1, 1, 1) |

सेने हैं तह स्पूर्व मीर्वहें हर से पूर्व भी कर नेता, ।

हासिया को [हिलिका] नगर नेतर (सं

कामग्रा था। कामग्रा | कामग्रा हर भा कामित्रा की कार्यका है।

(witted) | \$ Silver by being the state of t

क्षित्रकृतिक [वि] श्रीति । स्मृत salled los by the sall sall

16071

and a (stad) stad self (da 1 , 1) 1 5

also 1 (4) east 41/45' 11)!

and at [bal] sith, given scale ! some

Series from Season (the Sec.)

emalogaliere car (ale.

al en eleci (est)!

```
त्य गृह [कर्यू ] भारत करने, प्रान्ति । क्या ;
- [8 5, 5=1)1
   न्य म [ फुत: ] ब्हां में ? ( पर् )।
   न्य म [क्य, कुत्र ] ब्हाँ ? (बहु; हुका, प्रान्

    १२३)। রিম [चित्] स्टी, ভিরী কারে। (মান্তর)

   इस : है ३, ६३४ - ।
 ाल्याति [काच्या] १ वटने बेन्य, वदलेयः; १ वज्य
   रात्र केर ्र ट ८ र—ल १८० )। ३ सम्बर्तिः
   विशेष , ( गड ) 1

    त्यंत देशों कह = रपन्।

   त्यमाणी मी [कमनमानी] पर्ज में होने वर्जी क्लाजि-
   रिराप ; । पण १--पण ३४ )।
   ह्यात्या, हो [ फस्तुरी ] काना , हीत हे तीन में
   रम्पूरी विद्यान हाने बाई। सुपरियत बन्तु , ( ह्या
    १४०,स१३६ हम् )।
   स्पर्व [दे] १ उत्तर, एत ; १ कीट, दुर्वत ;
    (97.)1
   रह्मा हेरने बाइण = शहर , (हुमा )।
    हरती दर्ग षायसी , (पान ५— ५० ३१ १)
   सहस्या गर्न [दे] पाले शिवेष , बहु , हीरी ; । पण
    1 72 23 }1
    रहम १३[ गर्दम ] १ इडा, इंच , (पट ६,
    हर्मम १४)। २ देव लिए, गव नर-गव ; (भर
    1.271
    गरमिश्र वि [कार्रमित ] यह इन्द्रुत , बॉच दारा ; (से
     * , ** , #72 } 1
    ण्डमिस ६[दे] सीदा, सेंगा, (३६,५४) ३
    बन्त रणे बण्या = बर्गे, ( सु ५, ५, १) हा १, ५०६,
     गुरं ४२४ , परम १९ हो , हा । ४ , १ , १ , गुरं । ६६ ३
     रम। प्रयंत्र कृतियां का का कार्यः
     (==11
    मास्त्रदेशकार्गः भाषाप्रदेशकाः । हसा १३
    पन्नगार्थ [प्रायका]सन्द, लार्ट, हर्न्य (त्र
      1 . 489 500 };
    कर्रना ६५ करमा । स्व ३ १४४ (एक)।
     बस्ताद्वे एए बण्याद्व 🚬 🖋 🕏
     षरमानिय है। दिहें दिलाहरू सरहरू ए हालाई हाल
```

```
कर्म्नोग्ह वुं [ कर्पींग्य ] एक प्रकार को निवित्र , धनार्थ
 का एक प्रकार का बहुत ; (गाया १, १ ) ।
वस्तुन्छड (स्व ) ई [कर्ष] द्यान, ध्वरोतिकः
 (कुम्स)।
कलेल्य हेचे कण्णिबार ; ( हुना ) ।
कमीटो (है) हैये कण्णीट्या ; (पप्र)।
बन्ह देनी काप्ट् ; (सुत ४२६ ; रूप )। सह न
  [सह ] दैन मधुमें के एवं कृत का नाम ; ( राम )।
कपिंजल वृं [ कपिञ्जल ] पीन-क्रियेन-१ वातर , १
  रींग पत्ती : (पह १,१)।
कपूर देनो कप्पूर : ( धा २३ )।
 काष कर [हारू] १ समर्थ होता । २ बन्तन, कम में
  लला। ३ इटना, हेन्सा। स्था, स्था; (स्थः;
  मा: तिया) वर्म --क्षियामा; (हे ४, ३५०)। हा --
  कराजिङ्ज, ( मन १ )। असे -कवावेङ्ज; ( तन्
  १०)। क् -कपार्वत, ( निर् १०)।
 कप्प वह [ बल्पयू ] १ बरना, बनना ।  १ वर्गन बरना ।
  ३ इत्यतः बरगा। यह-स्काप्रेमाण, (तिरा ५, ५ )।
  मह--कप्येक्सन, ( १वर १ )।
 बार्च वि [ब्राय्य ] बहुद रोप्य, ( देश १२ )।
 कार्य ५ [ करूर ] १ बाउर्नेतीय, इसे के दो राज्य युवापी
  मित समय, " बम्माय बनियमणं बारि बम्पेत्रम् । तियोगं "
   ( मन्दु ६८, इसा ) । १ राज्योस स्थि, महराज, ( हा
   ६)। अगम्बरीकोर, (विने १०३४; मुण ३२४)।
   र करूप प्रमुख इत्रहार, (बार ४० 🏿 ४ हेर्से हा स्टाप्त,
   बारा देश-दाप: (सर्व ६, ४, दा १; ९० १) 💸 बारद देश-
   रोड़ नियारी दश, दैसानिए दब, (राम १)। अवसर
   भिष्य मनोन्द्रभिष्ठ पार को देने बाला कुल, बारा कुल
   (हरा)। = शक्ष-शिव, "१ क्रीलेश्यक्तां क्रारित्या
   (पान ६,४३० ६ मेरिसन,स्यन, (सुर ५) । ५० सका
   कर बा एर करी, ( राज ) । ५५ दि रहाई, राजियान,
   ( गारा ५,५३ १) - ६२ स्ट्रा, ट्रस्ट - १ स्वरुगार्व "
     बावा पर १,२ /१ | हुपु स्थ } राज्य स्था
   ंबर र )। द्वि मी [ नियति ] गाप्ता का गाउँकर
   स्टूटन । १९६ — द्वित म [स्टिका] «
   नहीं सीहर, या । अन्यादी दूर्ण है।
    हुँग्हर् स्ट्रा के स्टब्स नार (सार १३
    कराहरणा कुल द्वाः । इदः ।
```

```
कला-वस, ( साम् १६८ हे हे, पर )।
                      िस्यो ] हेती, रोजनी, (य ३)। द्वार, द्वार
                                                            वार्थान्द्रमद्वाको ।
                      इ दिम् ] क्लानम, (यग ६, मता)। वाका वु
                                                           त्र्यो यो | कल्याम् वृ [कार्याम् ] १ स्ट
                     [ पास्प ] कन्य-रवः (पीरं, पुना १६ ) । पास्ट
                     न [ मामून ] जैन मन्बर्गान्त्र, (ना )। रामा पु
                    [ वस ] क्लारत, (वस १, ४)। वहिमर व
                                                                    कलामित्र १ [कार्गामाह्य]
                   [ ायनंसक ] १ जिल-निगव, १ विमन क्यों देव किए.
                                                                     प्रवाति। (अर्ग)।
                  (तिर)। 'यहिमया त्या [ ावनीसका ] केन यन्त्व.
                                                                   काणानिय । [काणानिक ] राज ह
                  विरोष, जिनमें कन्नावनमह देव-विमानों का करन है,
                 (राव, कि १)। विदेशि वु [विद्यान्] कन
                                                                  कलामों मी [कर्मामी] में बा क्य
                 रह, (इस १३६)। साल ३ (साल ) दन
                                                                 काणिया हि (कार्निया ) । हीया विश्वीत (
                हैत । (जा १४२ शे) साहि ३ [ मादिन् ] हन.
                                                                 edical white it she will be more to
               हत, (यम १६६)। जिल व [ सूत्र ] धीनारह
                                                                 मानं कृति कामकृत्यमं बहदू . ( जिन १.१ )।
              स्वाति-विगक्ति एक जैन मन्त्र , (इल, इन)।
                                                                विदेश होड्डिका ( स्थाप १ ) । व व्यक्ति
              न श्चित्र] १ हान-विरोध, १ बाव-विरोध (साई)। गर्देश
                                                               मूम १, २)। १ जिल, बाता हमा , (तिर
             उ [ तिर्वात ] जरान जाति के देव-विराय, में बेरड कीन
                                                              कलिय हि [किंगत] , सनुसः, संशित्र,
             मदार दिमान के निवामी देव, (पण्ड १, १, पण्ड १) ;
                                                              १३०)। १ साम्यु अस्पर्ता । सन्त १, सः
            मा इ िका विशे को जानने बाता. (क्न.
                                                              हे प्र वाताब, क्षानी नागू, महि वा मरानामा "(म)
           मीर)। यह चित्र हुनो, राकनेत मान,
                                                           कलिया भी [कलियहा ] तेन परवर्गामण, स
           ( 四月 9, 2 );
         कार्यतः ४ [कल्यान्तः]
                                                          कालूर व [कार्य ] कार, मुगाल का मेंग, (अ
                                                           4 '21 4 ( 1 24 ses ) !
                                 प्रत्य-काल, सहार-मान्य
       कालक वृश्किलंड ] १ कारा, कन्त्र, (काम ११, १८)
                                                         कत्योवम वृ [कायोवम ] १ कमान्य । १ स
        हता १४४ स १८०)। ई बाब, कर्ज वारास
                                                         बारह देव सत्त बागी देव , ( क्या ११ )।
       करनहा, (पण्ड १,३)।
                                                       कत्योग्ययका व [कल्योग्यम] आर गमा , (ना =
      करपडिस नि [कापटिक] निचुक, मीम्बर्गाः, (बाला १,
                                                       कत्योयचित्रमा भी [कःपोपपतिका] सन्दर्भ
    कारपडिश्व नि [ कापटिकां ] कप्टो, मानावी ; ( वासा १,
                                                     कारकाल के [ कर्माल ] इस बाम हो गर बनायी हर
   कत्पण न [करपन ] वेदन, बाटना , ( सुना १३०) ।
                                                    करक्षा इस्से क्योड - हमर । सरः
  काराणा सी [काराना] १ तका, निवाल , रे प्रकास,
                                                   कारताइ [दे] क्यां काताइ (यम)।
   निमपा : (निंदू १) । हे कल्ला, निमल्य , (निम
                                                  करम व िक्स कि माने हिना पान पान व
1(११) ।
करणणों भी [करणों ] करणों, हेवों . (एड १, १ | मेक्टबर करणां . (चा १) ।
करणां में में स्वर्णां . (चा १) ।
करणां में स्वर्णां स्वर्णां स्वरंग . सर्वर्णां
                                                                                              P1.
                                                 काराइ | कि [कार्यह ] र समय सम, रिलाम
विता १, ४, व १०) / ,
काराम ३ [कार्यः] मन्त्रा, काराम, विता की सामग्रह्म,
                                                 # ( All and 3 5 ) | 5 de dat # 4
                                                                                               114
                                                                                             .
                                                                                             474
क्रप्परिज वि [ दे ] शाहित, चींग हुमा , ( र ३,२०, वस्स
                                                                                            t.
                                                                                           Eig .
                                             कन्तुर हे वि [ कर्तुर ] १ क्सा, व्यास
                                                                                           est.
                                            कन्तुरम । ( गुउउ अल्ब .
                                                                                           €r<sub>jq</sub>
                                                                                          (è,
```

ŝ

13

(۵

कञ्चिमित्र वि [कर्जुवित] सनेत वर्ग वादा, नितन्त्रमा विद्या हुसा : "वेहर्जनित्रज्ञित्वज्रस्मीयरं " (मृता ४४); " सन्मिद्देनाचात्रिकत्त्रहावित्यवञ्चित्रमा " (कुस्सा ६ : पदम २४, १९ १।

कम (झा) देखा कक ; (यर्)।

क्रमान्स्य न [दे] बयाज, स्थायः ; (शतु १ ; उदा)। क्षमान्य [क्रम्] १ घडता, प्रवे टटना । २ टन्संबन क्यातः १ श्रमः केटना, प्रस्ताः १ होनाः। "स्थाने-वि विस्त्रमित्सोः न क्यात्र ज्ञासे संस्त्रन्थं " (विषे २४६); "न एथा टबार्यनां क्याः" (सं २०६)। वट—कर्मातः (से २, ६)। ह—क्रमणिङ्झः ; (सीर)।

कम सर्व [काम्] चाहना, बान्छना । चवह—कप्रममाणः (दे २, २४) । ह—कप्रणीयः (सुन्न ३४; २६२) ; कम्म , (गावा १, ९४ टी—पत्र १==)।

कस पुं किस] १ पार, पग, पाँव ; (सुर्ग १, क्)। १ पानपा, "निवञ्चक्रमागवाओ विष्टमा विश्वाओ स्थल हि-स्त्राओ" (सुर १, २०)। ३ अनुरुन, परिवादी; (गड्ड)। ४ सर्पदा, सीमा ; (टा ४)। ४ स्थाय, फेंग्डा ; "अविभारिस क्संग करिस्स्रीटे" (स्थल २९)। १ नियम ; (डूड १)।

कम वुं [बलम] थम, धनाबद, क्लान्नि ; (हे २, ९०६; हमा)।

कर्मञ्जु र्जुन [क्सण्डलु] चंन्यानियों का एक निश्ची या काळ का पात्र ; (नितः, १ ; पाह १,४ ; उर ६४८ टाँ)।

कमीय पुंत [कायनच] शंद, मस्तक्वःहीतः शरीर ; (हे ९, ९२६ : प्राप्त : युना)।

कामंद्र पुंदि] १ वहाँ को कलगो; २ किंग, स्थाती ; ३ वलंदर : ४ सुख, सुँह ु(दे२, ४४)।

कमड) पुं [कमड, का] १ नायन किनेव, जिल्हा मग-कमडम) बान् पार्यनाय में बाद में जोता या कींत जो सर कमडम कर देख हुमा था (गति २१)। २ कुर्म, कच्छा (पाम)। १ वींग, बींग ; ४ सन्दर्की कत; (रे १, १६६)। १ न मैत, नतः (नितृ १)। १ मध्योमां साएक पात्र ; (नितृ १ ; मोत्र १६ मा)। ७ माध्योमां साएक पात्र ; (नितृ १ ; मोत्र १६ मा)। ७ माध्योमां सी पहनने सा एक सन्त्र ; (भोत्र ६७१ ; हुइ

कसण न [कसण] १ मनि, यातः ; १ प्रानिः (मानृ ४)।

कप्रणिया सी (कप्रणिका] टास्त्, इता । (हुई ३) । कप्रणिक्ट वि[कप्रणीवन्] द्वा वडा, द्वा परता हुमा; (कुट ३) ।

कप्रणी सी [कप्रणी] इत, उपल्यः (हुद ३)। कप्रणी सी [दे] ति.श्रीय, गोटी; (दे २, ≈)। कप्रणीय वि[कप्रमीय] सुन्दर, सते.हर; (सुन ३८ २६२)।

कमल पुं[दे] १ किट. स्थाती ; २ पटत, शेतः ; (हे २, १४)। ३ सुन, सुँदः (हे २,१४ ; पट्)। ४ इन्चि, सृतः "तत्त्व य एगी कमती;स्त्राव्यहरियीए संगमी क्ष्णः" (सुर १६, २०२ ; हे २,१४ ; भएः इत्यः ; मौतः)। ३ कटतः, सगदाः ; (पट्)।

कमल न [कमल] १ कनत, पर्म, प्राविन्द ; (कान : बुमा ; प्राम् ७१)। २ बमताल्य इन्द्रायो का निंहायन; ३ मंन्या-विरोप, ' इमलार्ग ' को चौरसी लाख में गुराने पर जो मख्या लब्ध हो वह; (जो २)। ४ छन्द-विगंप; (तिह्म)। १ पुंकमजल्य अन्त्राणी के पूर्व जन्म का निता : (गाया २)। ६ थेप्टि-निगेष : (सुरा २७६)। ७ विद्यत-प्रतिद्व एक गण, भन्न्य मन्तर जिनमें गुरु हो। वह गय; (पिग)। = एक जान का चानज, कलन; (प्राप्त)। विस्त पुं िक्स दिन नाम का एक यज्ञ । (सुर)। "अय न ["अय] विशायने" का एक नगर ; (इक्)। जोणि पुं [योनि] बमा, विचाना ; (पाम)। 'पुर न ['पुर] विदावने' का एक नगर ; (इक)। 'प्यमा की ['प्रभा] १ कोल-नामरु पिनाचेन्द्र की एक ब्रन-महिभो: (टा ४, ९)। २ ' इना धर्मद्रथा ' सूत्र का एक अध्यक्तः (गावा २)। 'यन्यु पुंचिन्यु । १ सुर्य, गति ; (पडम ७०,६२)। २ इस नाम का एड गज्ञ; (पञ्च २२,६८८)। "भारता स्त्री ['मारता] पेतनतुर सगर के राजा अनन्द की एक रानी, मगरान् अजि-तनाय की मातामही-काडी ; (पडम ४, ४२)। 'रय पुं रिज्ञमः विस्तर का पनगः (पाम)। विडिमय न [विर्वमक] ब्यडा-नमर इन्हारो वा प्रायाद; (गावा २)। 'सिरी मी [धी] ब्यटानामः इन्हानी की पूर्व जन्म की मना का नाम ; (पाया १)। 'स्ट्रिसी स्क्री सरक्षों दिन क्षम की एक गर्ना (तर ३५०

```
टो)। 'सेणा मी [ स्नेना ] एड गत पुत्रों, (मूरा)।
                                                    पार्असङ्गहण्णयो ।
                भिन्नः, भाग पु [ स्कार ] । कारणी का समूह । १
               मातर, हद बसे बलासव, (में १, २६, बच्च)।
               थिंड मोल १ [ थिंड] मन परन में ना मन
                                                             िकरणा ] वर्म-निपयुक्त बन्धन , जीत-मण
              <sup>रन, (न ३, त ६३)</sup>। ोमण व[ीमन]
                                                            (सन ६, वं)। "कार नि [ कार] नंछ
             मधा, निरामा , (पाम , दे ण, १२)।
                                                           १९, ७)। तिशिम वि [किलिय] व
           कमला भी [ है ] इतियों, मृगों , (वास ) ।
                                                          कात कान काने काना, (टन ३)। क
           यमया मी [कमला] १ लम्मी, (कम, नुग १७६)।
                                                          ['स्कान ] कर्म-प्रत्ना का नितः, (कम्म १)।
            रे गतन की एक कनी , ( पत्रम ७४, ६ ) । रे काल-
                                                         करं (यह)। भार व [ कार]।
           नामह रिजाबन्द की एक बाय-महंपी, इन्हाको-किरोब , ( रा
                                                         बर, निन्दी, (नावा १,६) हेनी कर। जेगा १ वि
           .1)। ('हामामंद्रमा' त्व का गढ मन्त्रमन्
                                                        नाम्बन्त महान (कम्म)। हाण न [स्त
         (गवा १)। १ व्यक्तिम् (तिव)। आर
                                                       कारणामा (पाना)। °हिंद सी ['स्मिन]
         १ किए ] पनाइक धनी . (मे १, २६)
                                                       कर्म-प्रत्यों का सक्त्यान-पमन् , (सग् ६,१)।
       क्रमिटियों भी [क्रमोटिनी] वरिननी, क्रमन का बाउ
                                                      वि मगाने जीव (भग १४, १)। 'विमेग
                                                     िनिरेका ] कर्म प्रतनों की नवना-विनेद , ( मा ।
       'मप } मह [स्त्रम्] गीता, मा जाता । कनकर,
                                                     चारव इ [ धारव ] व्याक्रक मीच ए क्र
      कमयस ( पर्), कमला, (हे ४, १४१ , असा )।
                                                    (बड़)। विस्तिः इया सी [विशास्त] ह
     कमारों स [ कमता ] का ने, एक एक करके ; (सुर 1,
                                                    द्धितों स जीव-परेशों म १०वन्त्रण, (स्र १,1)
                                                   विस्ति व विका क्यं-मधान वृत्य - १ हरीम, !!
    क्रमित्र वि[रे] इलानंन, पान व्यवा हुमा, ( ४ ९,३ )।
                                                  (विष १, ४,१) , रे बहुतस्य हाने बाने बचुत ह
   क्रमेंद्रम ) देशी [क्रमेलक] इर, देश, (प्रथ, वर १०३५
                                                  राजा बोहा (स रे, १ -पन १११)। पा
   वस्तात (श. वर ३३)। मी-भी, (त्र १०३१ हो)।
                                                 व [ प्रवाद ] जैन प्रत्याम-विगेर, बादमी प्रः
  काम कर [ हा ] हरावा हाता, चीर-कर्न हाता । कामह
                                                 थे()। वेष १ किया के ब्रह्मा के हर
   (हे र, वर, वर्)। कु कामल, (इसा)।
                                                विगता, क्यों से बात्ना का बन्धन , (बन्)
 काम वह [सूत्र्] मंत्रत काता। काम्य, (क्ट्र)।
                                                भूमम ति [ भूमिक ] सम्भूम में उत्पन्न (
                                               १)। भूमि सी (भूमि) कांत्रान गुरे
काम हमा कम=क्रम्
                                              वेत क्या (बी १३)। भूमिय हवा भूत
कम्म इन [कर्मन्] १ जैनहरण हान हिना जाता
                                             (कल १३)। भूमिय वि [ म्मित] हैं।
H 37 ( T 4, 4, 5, 5, 54 9, 9) 1 2
                                             सं क्या (स है है जिस कि एका है। साथ
हत्त्व, हार्ल, हार्ल, (त १, हाता)। "काना
                                            िमास विभाग मार (या १)। भाग
परवा " (ति १४२) । हे ती दिया केन कह
                                           ्रमायक ] मान निर्मेष, बार गुन्ता, बार रसी, (प
व्यक्तमान बार्डाना (वित् १०१६, ३०१०)।
                                           यति जि । कां से उपम तत बाता १६
के स्थान, जार पर पूना बरोग प्रशास नाता है।
                                          कर्मों का क्या हुमा सुगीत-रिमय, कार्यण गरंग, १५ ६)
कर है ( क्या है)। ( संबंधि साथ,
                                          रे, 1)। या मी [जा] मन्त्राव व अन्तर [
The fellin at .. (42 3 3 3 4 East
                                         बेलो बुट्ट, बाजूबब , (बाद )। लेलमा मं हिर
र्वन मार्ग = इमेर-मान नमक्रों
नमक्रों
                                        क्य होता होने बच्चा केंद्र हो परिवास , ( सव १९,1)
म्म (ब्ला,स)। कर में किलो
                                        विमाणा हो विमाणा के अल्लाम ( कर्
الا تعدي أخالد تعد (مصع) الصع
                                       क्षत्रमुक्ता (वस्र) । वाह सं (याहित) व
                                                                                 T.
                                      रें ही मा हुउ मानने वाला , (गत्र)।
                                      ितियामः ] १ कां कांक्सा कांक्स > व्यार
                                                                                14.3
```

AT THE BAR A STATE OF

(ł,

['संबन्सर] टीटर प्रदेश मुद्द ५० छ। 'साला की [शासा] १ कामाना ; १ हम्मार हा घटति बर्ने क स्पन्त । इट १)। 'निद् र्ष [निद् कर्मण, मिन्से : (प्राक्त)। विज्ञीय [विजीप] ९ क्षांतर ; २ क्षांतरी रा केंद्रे सी क्षम बददा कर निलादि प्राप्त करे करा माउँ (छ ३, ६)। दिश्य न ['दिन] तिस्से भगी पत्र हो गुण स्थापन :: ([सन ८.४ । 'प्रान्य पु [पर्ये] न प्रायं, नहींव व्यापन करने वाहा : । पर १ १ । व्याप्त देली बाह : 1 3000 11 **घम्म वि [फार्मण] ५ वर्न-नवर्यः, वर्न-उत्प, वर्म-**निर्मित, वर्म-मय, १ व वर्म पुरुषतों व हो बन हामा एड इस्पाल नहम शरीर, जो मदान्तर में भी बादमा है सप हो गहरा है : (हा ६, कस्म ८)। १वर्म-विगेष, कर्मर गरीर का हेतु-मृत कर्म : (कम्म २, २१)। ३ रामीग्-गरीव का व्यापन , (काम ३ ९४ ; काम ४)। कम्मत्य न [कर्मचित्र, कार्मण] इतः हेर्गः , । पदम 902, {= } } बस्मंत ९ [हे कर्मान्त] १ कर्न-स्थत हा हागाः । सच्चा सुद्रा १,२)। २ वर्ष-प्यात, काम्याताः (ह १,३०)। यामान वि [कुर्यम्] १ हडान्त राजा हुमा , २ हडाम, र्राप्त । हुम ।। साला म्हा [शाला] इहा पर इस्तुर झाँद महादा हाता हो दर स्थात (तित् =)। कम्मग न [कर्मक,कार्मक, कार्मण] उन्हा कम्म≃ क्टमंग हार, में प्रमाश्य स्था 🕽 क्रमण न शिमेण १ कर्म-स्व तर्गत १०० । र मीपप, मनव मादि है हुए। महरू-बर्गाहरू-उदारक मादि क्यें इस १३८ ई सु१००० गारि व [कारिन] शमर इस्ते बन : (स्व ६ ६० जाय १ यग) बार्य-प्रदेश राष्ट्र १ १ १ कस्मण ह [भोजन] अज्ञ ह्र कस्मम् पाटन कम = इन्। क्रमय उन क्रम्मर (स्ट ३८ (रमात्र सर्व [इप+मृत्] उत्तर शर । असार F 1, 151 98 कम्मवण २ (उपभोग) इस्तर क्रम ने रहा कस्मम वि[क्रमप] । होन्स १० स سيست دد د د

करमा के [कर्मनू] दिन, व्याप . (हा ६, ६--५० 390)1 कम्मार ५ [कर्मार] ६ होहर, हेरहरर : (विन १४६=)। २ प्राम-विशेष ; (भाव १)। कस्मत) दि [कर्मकार,कि] ६ होतर, चारतः (ह क्रमारम (३३० ; ब्राँग ४, ६४ टी)। १ कारीनर, कस्मारय) निर्मातः जैतः ।)। कस्मारिया मां [कर्मकारिका] मां-र्नेस, रागी. स्पाह३०)। कस्मि । व किर्मित्] एमं हरने वाटां, मन्यामी ; कस्मिश्र) " धवरम्बार्य दम रामेगा स्ट्रा पादहारीमी । मं,क्षे जो १मरणहस्मि मरगक्ती मुख्या " (ना ६६४)। २ राय वर्ज करने वाला : (नुम १, ७;६)। कस्मिया स्वा [कर्मिका, कार्मिका] १ मन्यान ने हन्यन्त्र होने बातां बुद्धिः (गाया १, १)। १ प्रजीप क्रीनेप, प्रदीगढ वर्म : (मग 🖽 दम्हल न [करमल] पप ; (गड) । करहा म [कम्मान्] को, दिन दाग्य ने ? (मीर)। क्रमहार देनो बीमार ; (हे २, ३४)। 'जन ['ज] इता, कुर्वन : (इसा)। कारितृश १ दि । सामी, सामाद्यार १ वे २, ८)। कारहीर देखी कीमार : सुद्रा १८२ , वि १२०: ३११)। क्य पु [क्स्च] केंग, बाल (हे १, १३३ , हुमा १) क्य ९ [क्रय] सर्वता । शुरू ३ ८९ । क्य बन कड़े - हर अब हुन अब् १० इक्क, उन्न वि [कुक्य] पुरस्मानी, सम्बर्गाण सर्वे स्वार्थः । **कश्च ग**ार्थः । कड़त वि[काय] हम्यं, व्यवस्थाः राज्य -, २ करणा चि [करणा] ब्रन्थ'या हरान्यम पुरा करा । किशा वे हिन्यो इतार्थसम्बद्धाः सुरुष्ठाः सर्विते के - बास्त इत्योन्त्र । या व ब्राइत स्थल कर्णा, प्रयुक्त इस्ते । कि १६०० ता १० ५ १ ५ इस कि । भूगमः अस्तरम-दाद्यम्य-द ४,८४० द्व[ा] हेर) व्यक्तित्व रक्षेत्र[ग्र] हाइक्स से से से इंडिंग के इंडिंग के देश हैं।

```
हिं।
वास्त्रमहि बारह हैस्स, जात का
                                       मसंस्ता (ह भट)। स्त्रीति है। ब्राह्म स
                                     करे कार कि है उसम की है। करने करता , ( कर्क
                                                                                                     वार्असर्महण्याची ।
                                    भा)। वमुना को किया। हत्त्वम, व्हामकरी,
                                  tonam, (myce), rafa [ m] stead
                                                                                                                   मनापनि : (वज्य ६४, १०)।
                                 Wind, out wind ( an . 224 23 ) )
                                                                                                                करोग देना कामंत्रः (है १, १३६ ;
                                क ने देशों कार्न्य : (काल १, है १,
                              the of a streament thought samp
                                                                                                            करोतेय वि [कर्रियन] मतहन, वि
                            (केट (क) स्वारंग ३३ मान्य)। यमित
                                                                                                           कार्त्तम हेना कल्युम, (बल)।
                          ी प्रात्त्वति । र गण्यति सम्बन्धाः व रिका विश्वते व्यव
                                                                                                          करत ३ (कामका) । इस-रित्र ह
                         इस (करा स्त्री) यहिन्द से शिव
                                                                                                          कार कर, जिल्ली कर, पदानारों , " यह
                        $ [4] 1 2 mar (4m 18)) 1 marked
                                                                                                        वनन्त्रीक विश्वादित । (किन १३६ ने)।
                      (रहता) वहित्ताम को [ सनिहनिका]।
                                                                                                    कराजा ( कर् ) करत हात ( (१४)
                     2. Let (4.2. 4' 5) 1 4 Let 4. 55 42 (5)
                                                                                                   क्याहेड [क्याहित] हम नाम हा मुठ का
                         कित्ता है। बिल्लाम् । काल वेतन
                  ** $7 $1 $7, (MR $, $, MR $, 11 12
                                                                                                करण न [ कारून ] हिंता, मार हालमा, ( हे ९, १
                कार के किया कि कार कि कार कि कार कि कार कि कि कार कि कि कार कि कार कि कि कार कि कार कि कार कि कार कि कार कि का
                                                                                              कराम कह किन्द्रांत है के करन, क्षेत्र क
               कार्र (तर ), मान्यु मान्यु ( मान्यु का ] ।
                                                                                              क्लाको (बान ट रा) । बाह कार्याचार
             First and and $1 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10 $7. 10
           A standard and standard of the
                                                                                              (45)1
                                                                                          करायका व [ कर्यक] हैगानी, हैगान हरता, हैगा,
           १९११ ए । १ जिल्लामा पूरा की की जाता है जिल्ला
           दर्भा हिम्मा विकास विकास
                                                                                       कत्रमाना मां [कर्मना ] जार रेगां, (
       strate Cory the Day (m. D.)
      वित् वित्रो किम दिवा भी
                                                                                   क्यान्यम । [ क्यानित ] हेगल हिसा हुमा, हे
       भ राद्य बनामानिय है वनमानिय
     43 61 ME 44 ( (411 ) 3 / 1 AIM 3
                                                                                कता है किया | करे में म होता ( प रवत )।
     And the land where there a the last of
                                                                               क्रमा वि क्रिका | या में व क्षेत्र ? (ह रे, १८))
     विकास है। कार्य विकास के किस का
                                                                             रेस्र) । रेन की की रेन ( रेना १०)।
  [ 544 | 44 (54 ) te) !
                                                                          कारत है [ क्षेत्र ] है साह के हमा है ।
  The Canal Comments of the
                                                                          " erring, $77, ( e 7, 11 . );
                                                                      ( Same ] 1 and 62 and ( San 158 .
Sabel of 110 and 85 4 4
                                                                    कारित क्षा श्री क्षिति क्षेत्री क्षा करत (६)
                                                                    $3, 45.0) | FRIDING $ [ MINI
A 44 (MAN) St. 3 ( MAN)
                                                                 THE REAL PROPERTY OF THE PERSON AND PARTY. 15
Sea | Line & ME WALLE AND
                                                              the late of a state of the same
```

har), they . I may S. A. MONINELLA

रयबाड पुं [शुक्रवाकु] पुक्रुट, बुक्टा, सुर्व ; (गड्ड) । त्यवाय वुं [शुक्रवाक] बुक्टूट, बुक्ट्रा, सुर्गा; (पाम) । प्रयस्ता न [कदशन] यगद मोहन; (दिवे १३६)। प्यसिद्दर श्री दे दे कुद्दा, सुर्गा ; " क्यतेहराय सुम्मह मातावों मति गीतन्ति " (वस्ता ७२)। स्या म [सदा] यह, दिन मनप ? (छ ३, ४ : प्रान् 166) 1 त्यार् म [कहापि] दमों मों, दिली सनय मीं; (टका) । ध्यार्, म [यहाचित्] १ किमी मनप, कमी : (हवा ; रपाईं रूप)। " मह मन्त्र्या क्यांडे " (सूता १०६. रयाई े पि उरे 11 २-वितर्द-यांतर अध्यय: " नरेनि यस्पार्तन " (सग ११)। ध्याण न [क्रयाणक] देवने केंग्य बन्तु, क्रीयाना : ८ (दरष्ट १३०)। त्यार पुंदि] बनवार, कृता, मैला; (डे २, ११ : मवि) । स्याबि देखी कयाइ=क्दानि ; (प्रायु १३१)। स सद (हः] करना, बनाना । वर्षः; (हे ४, २३४)। म्ब-कर्ना, कही, कहीम, करिनु: करेंनु, मदानि, मदानी: (हे ४, १६२; बुमा; मग; सन्त)। मनि--काहिइ, चाहाँ, बरिन्छइ, बरिहिइ, बार्ट, बाहिन्हि; (ह १,६; नि १३३; पुना) । कर्न -कारड, कीए, करिएड; हे ८, २६०) वह-कर्रन, करित, करेंन, करेमाण : (ति १०६ : ग्यम ७२ : से २, ९१: मृ २, २४० ; स्त्रा)। श्वक्--कब्जमाण, कीर्यंत. कीरमाण ; (ति १४० ; बुमा ; गा २७२ ; रवार ==)। मह-करिता, करिताणं, करिट्टण, काउं, काऊण, काइचं, कट्टू, करिब, किया, कियाचं ; (इन : द्य ३ ; पट्: कुमा : मग ; भनि ४९ ; सुभ १, ९, ९ : भीत)। इंह-काउं, करेत्तप: (दुमा; मग = १)। ह--शरणित्ज, करणीय, करियव्य, करियव्य. कायन्त्रः(इत १०: पर्: स ११: प्राप्त १४::: इमा) । प्रयो-स्थाविङ, स्थाविङ; (पि ११३: ११२) । हर ई [कर] १ हल्द, हाव; (हा १, १४; प्राप्त ६७)। २ मरस्ट, बुँगी ; (टा ०६≈ टी ; सुर ९, ४४)। ३ कि.ए. मंगु : (हा ५६ न टी; हुमा)। ४ हाथी ही | गुँद : (इना)। ६ बरहा, ग्रिडा-इटि, बोटा; "ब्रस्थ-टामदिवर्रक्सडमें " (पडन ६६, १६)। 'साह वुं [प्रह] १ हाथ है प्रदेश करना : " दश्मरसम्बद्धनिका

चम्मिन्हो " (वा १४४,) । ३ प्राधि-महग, मादी ; (गत्र)। ये पुंक्षि] नतः (सप्रभः)। फेह पुंत किरफह] १ सक् (हे १,३४)। १ हर-किरेप : (पटन ००, ==)। 'लावव न ['लावव] बटा-विनेष, हम्न-लाकः (कय)। "चंद्रण न ["चन्द्रन] बन्दम का एक दोत्र, एक प्रकार, का गुलक समना कर, बन्दन क्रमा ; (बुह ३)। करअडी) यो [दे] स्वत क्य, मेटा काहा; (दे ३, करबरी 🕽 १६) । करवा मो [करका] रन्या, मंत्रा, निडाश्वर्ट ; (मगु 1 (73 करहरूरी की हि | गुक्त एक, मुखा पेह ; (दे २, १४)। कर्रक पुं [दे करङ्] १ भिद्धा-गाव; (६ २,६६; गडः)। २ मर्गाट एस : (दे २, ११)। करंक हुन [करडूर] १ हही, हाह ; " कर्रकवयमीलये स्नायन्ति " (सुरा १०४)। २ मनिय-पन्तर, हाइ-पन्तर : (टर ७२= टॉ) । ३ पानदान, पान वगैरः रखने की होती पती: " तंबोलक'क्वाहियीमी " (कम)। ४ हर्शमों का देग; (सुर ६, २०३)। करंज यह [मञ्जू]: नोहना, फोहना, दुस्हा करना। क्षंद्रहः (हे ४, १०६)। करंत पुं [करञ्ज] बृत्त-विगेष, करिण्जा ; (पला १ ; दं १, १३ : सा १२१)। करंड हं दि देशक त्यह, समीत्यवा : (देश, =)। करॅंजिथ वि [मग्न] तोहा हुमा ; (इसा)। करंड १ वृं [करण्ड, कि] १ वरगड, डिब्बा, देटिका ; करंडरा } (एड १, १ ; आ १४; स ४, ४)। करोहिया सी [करिण्डका] होता डिब्स : (दास १, ७ ; मुत्त ४२=)। करंडी सी [करण्डी] १ डिबा, पेटिश ; (धा १४)। २ व्ही, पात्र-विरोध ; (टर १६३)। करंड्य न हि] पंट के पन को हों। (पद १, ४---एव ७= } । कर्तत देखे कर≖ह । कर्रव हैं [कारब] इही और ा-हेमा एट साय अब, इप्योदन 💥 ६ १४ ; हम 335)1

. .

```
करंत्रिय वि [करवितन ] ब्लाग, सबिन, (उता ३४;
                                                       वाङ्गसङ्गहण्णाः ।
              करकट पु [करकछ ] स्व नाम का एक परितायक, वाप्य-
                                                                 करडूय व [दे] वाद निगंप ; (शिर)।
              करवाडु ३ [करवाबडु] एक जैन बहुर्थि, (बहा
                                                                 करणे न [करण] १ शन्तम ; (सुर ६ गृह
                                                                 १ मासन, वजापन क्यार ; (इसा)। ।
            करकड़ ति [ वे कर्कर, कर्कट ] १ वटिन, वहा, (टेवा)।
                                                                 भाषतः ( उसा )। ४ हिन, स्था, विग्रन,
           करकड़ी स्वी[दे करकड़ी] विवहा, विन्सीय क्व
                                                                ४ . सुर ४. २४१ )। १ साम्ब्र निर्मात, मारस्य
            निरोष, जो प्राचीन काल में बच्च पुरुष को परनावा जाना था ;
                                                                रे. १, विते १६३६)। ६ ज्यान, उत्तरण, (
                                                               ६६६)। ७ ज्यायात्वय, ज्याय-व्यामः ; (जप १।।
           (बिस १, र-पन २४)।
          करकार ३ [क्रकाच] करण्य, कगत, व्यात, (एक्
                                                              द नोर्व स्कूरण ; (टा ३, १ — पत्र १०६)। इस
                                                             गाम-प्रमिद्ध का बातशादि काल , ( प्रत १, १११)।
        करकार व [कारकार ] 'कर कर' माराज्य ( कावा १, ६)।
                                                             निर्मिष्, असीवन ( माषु १ )। 11 जन, होत
         चुंड वर [ शुक्ड] हककीर, (क्का १—का ४०)।
                                                            (मार्व)। ११ वि. जो निया जाय बर ; ( हेर १
       करकारित वु [करकारिक] यह विशेष, महाविद्यावक वेंड-
                                                           है)। १३ करने माला, (इसा)। 'रहियर दुन्ति'
                                                           बेत का वानक, (भवि )।
     करम इं किएक ] १ करका, मोला , (धा २० , मोल
                                                        करणमा स्वी [करणमा ] १ मनुगन, किया , १
      रे (१) (भी १)। र वानी की कत्रशी, नत-बान, (बन्
                                                         उत्तन : ( वासा १, १ - वत्र १० )।
     रे : भा १(, तुना ३३६ ; ३६४)। देखों करय=
                                                       करिय त्यों [ दे ] १ स्प, बाहार , ( दे १, ७)
     ETE |
                                                        १०६, ४७६ , बास्)। ३ साइम्य, समान्या ,(स
   बरपायल ३ [है] वितार, युर को नवाई . (हे रू.
                                                       रे अनुहरस, बहुत हरना । (गउड़)। ४ :
                                                      वर्गाकार, ( उप प्र १८१ )।
 बारह ३ [ है ] मगरिय मन्त को लाने बाला मादास, ( मच्छ
                                                     करियाझ देखी करूका।
                                                    बर्विज्ञ वि [ वे ] ममान, स्वृत्त , "मयग्रनवर्ताः
बाह व [बाट] १ बाह, बीमा । (वर १, १४)।
                                                    किलेख प्रामधीन्य निर्माण व अस्तुमन्य" ( ह !!
 र हाथों का माहन्त्रम् । (त्रा १३६ : बाक्) । ३ कार-
                                                   "बयुक्तविल्लेख महावारनेल सहरत" ( व १११)।
विषेषः (विहृद्ध)। ४ क्यान्यस्तुः, १ क्यीत्रस्ताः
                                                  करणोत्र इमो बर=५।
े गिरमिट, सरह ; ७ पालंडों, नाटिन्छ , ८ शाह निलेख ;
                                                 करपत न [ करपत्र ] कानन, करप , ( निग्न १, ।
                                                बरम 3 [बरम] केंद्र, उट्ट , (वह 1, 1, वा
दे व [ है ] १ ब्यान, संर , २ ति ब्ह्या, विश्ववार,
                                               करमो स्त्री [करमी] १ उट्टो, स्त्रीचेंट, (श्रेर)।
                                               यान्य अस्त का एट बंदा पान : ( हुर २ , क्य )।
हो स्त्री [ है ] बार्ना—१ एवं मध्य का कान्त्र हुए.
रित-किरोब, करहे, इ असर, सम्पा; व बाच-सिराव;
                                             कतम वि[द] चीव, दुवंब , (दर, ६, वर्)।
                                            करमंद्र व कितान् ] पत काला इस-रिशेन ; ( mm
अ[करहिन ] हाथी, हर्मा , (तर ३, ६६ , त्रा
                                            करमाइ व [करमाई] वृत्त-विशोध, बनोस, (क्ल
त्वा [देवरडो ] वाजनीयांव , "क्रामन काडोन्"
                                          करमरी जो [दे] हर हर स्वी, वीदी : ( द २, १२,
                                         करम देशों करम ; ( उन परेच टो , कान १ ; इसी,
```

To fa

```
गर्यदी स्त्री हि ] मन्दिम, रेटा का गठ, (दे ३,
   1 ( =6
  रत्यर इट [कारकराय ] 'स्ट-स्ट 'झावाज स्टना ।
  · वह---वरपर्यत्तः ( पदम ६४, ३४ ) ।
  जरह हुं [ कररह ] छल-चिनेष; ( विंग )।
 ारित )म्या (कहरित, स्त्री ) । प्राचा ; २ :इरिंग की
  प्रान्ती ∫एड जार्नि, ३ हाथी का एक कासायः (हे
   १, २२• : वृना )।
   रख के [ है करक ] ज्ञ-पात्र, "पान्तिस्ताट नीर"
   पाएरं पुच्छियो " (सुरा २९४; ६३१ )।
   प्रचंदी की [कामन्दी] टरा-किये, एक जार क
- = = ; ( = = = 1 ) 1
   हायनिया का [करपाविका ] उत-पत्र-किंप;
   (अर १२)।
   हत्याल १ (करवाल ) गर्य, करवर ; (पाम : सुम
   6011
   हर्मीयमा स्त्री [ है, करकिका ] पल-पन क्टिप ; (सुग
    e== ) 1
   हाचीर पुं [काचीर ] इल-किरेप, क्लेर का गठ;
    ( चंद्रदे )।
   रुग्सी [दे] देशं कडसी ; (हे २,१०८)।
   क्षण्य हुं [ करम ] १ कट, टब्टू ; ( पटम ४६, ४४ ;
    पाम ; हुना ; हुना १२०)। २ हुनंबी इन्य-किटोप ;
    ( गहड ६६= ) ;
   हार्ह्ख न [ कारहुक्ख ] छंड-विगीप ; (-पिंग ) ।
   करहाड १ किरहाट देश-दिराप, बरहार, शिटा बन्द,
    मैनक्ट ; ( गउर ) ।
   करहाइय वं [करहाइक ] १ जल देवी। २ देल-
    क्लिप : " बन्दाद्यवित्ताः चन्त्रज्यसंनिवेनक्य " ( स
    252 ) 1
   बराही देखें करभी । ३ इस नाम का एक छन्दः( सिंग )।
     'रह वि चिह ] क्रेंट-स्तार, स्ट्री पर स्तारी क्राने वाला:
     (मरा)।
   कराइणी की [है ] शतन्मदी बुद्ध, सेमद का देह ; (है
     3, 5≈ )1
   कराइल्ट 💲 [कगइल्ट ] स्त्रव-स्वत एव गडा ;
     ( नी ३० ) 1
```

करान्द्र वि [करान्द्र] १ इन्ला, और ; (म्लु ४)। २ इन्तुनिन, जिल्हा दोन सम्बा भीर बहर निरुता हो दह : (गडद) । ३ मयनक, सर्वेक्ट ; (बन्द्) । फाइने बाहा; k विक्रीत ; (से १०, ४१)। ६ व्य-बह्त ; (के ११, ६६)। । वि इस नाम का विंडह-देश रा गर्जा: (धर्म १)। करान्ड मह [करान्डय्] १ शहना, डिट श्रमा । २ विश्वमित करना [करालेह ; (में १०, ४१)। करालिम वि [करालित] १ इन्तुन्ति, तस्वा और दर्हिनेंग्वे दौन बाला; (से १२, १०)। २ व्यवदित क्या हुमा, मन्दराह बाहा बनाया हुमा ; (से ११, ६६)। ३ मर्थेटर बनाया हुमा ; (इ.म्)। करात्टी न्हीं [है] इत्तन, दौत गुद्ध करने का काम्य ; (हे २, १२) । करावण न [कारण] क्यांना, यनताना, निर्मापन : (मुपा ३३२ : यम्म कटी)। कराविय वि [कारिन] बग्रवा हुमा ; (न १६४ ; मदा)। करि पुं [करिन्] हाथाँ, इन्ती; (पाम ; प्रान्त १६६) । 'घरणद्वाप न ['घरणस्थान] हाथो को बाँधने का डीत- पत्रज्ञुः (पाम)। "नाह वं िनाय । १ ऐगावए, इन्द्र सं हाथी: २ उन्त्र हस्ती; (स्ता १०६)। चिंधण न चिन्धन हाथी परहने का गर्न ; (पाम)। मयर वं भिकर | इत्र-हन्ती ; (पाम)। करित्र । देखे कर्≕का करियन्त्र । करिया मी [है] महिंग फोलने द्य पात्र ; (दे २, १४)। करिएव्यड ; (अप) देनी कायव्यः (हे ४, ४३= ; करिएब्बर्ड 🕽 हुना; पि २१४)। करिन देशों कर ≕ह । करिणिया) मी [करिणी] इत्सित, इदिनं, (नहा : करियों रिहम २०, १३ ; सुन ४)। करिण वृं [करिन्] हाथां, हलां ; "रे दुः ब्रीसाहन ! कुजाय ! संसंतहुत्रहगहरोत " (हम ६ हो)। करिता कारतामं }ंदेते कर≕ह। करिट्ट्प करिमरी [है] हेर्न करमरी ; (ग ४४; ४४)।

```
करिल्ल म [रे] १ वंशाह्बर, बाँव वर क्षेत्रक, रनीवी |
                                                                                                                                               -पाइअसङ्महण्यायो ।
                                           भूम में सम्बन्ध होने वाला १स-विशेष, निसे बँद साते हैं ,
                                         (दे १, १०)। १ बरेवा, तरकारी-किमेष ; " वाल-
                                      वीमारस्ट्रमताप्रगीनक्षरित्वसंन्त्रं " (वित्र २६१)।
                                                                                                                                                                      करेंडु प्र[दे] इन्ताम, निर्मातः, सरदः (दे
                                      । भार, करतः ( म्लु )। ४ द क्यीर-वृत्त, क्यीतः
                                                                                                                                                                      करेणु इं [करेंगु ] १ हम्मी, हाथी ; १ इसे
                                     (बर्)। ६ वि बनाइन्स के समान, ध हाला से बेब
                                                                                                                                                                       "क्षों केम्" (हे र, ११६)। र मी, हिम
                                   क्रिन्तिक्रियमात्राहुन्त्वात्व " (गउड )।
                                                                                                                                                                     (हेर, ११६ ; खाया १, १; छर ५ ११६)। ५
                              करिस देगो करू = श्रू । व्यतिष् , (ह ४, १८७)।
                                                                                                                                                                   दिता ] मधात यस्त्री ही एक भी। (छ।
                               क-करिसंत. (प्र.१, २३०)। संह-करिसिया,
                                                                                                                                                                  'सेना ली [ 'सेना ] देनी पुत्रोंनन वर्ष, (जा।
                                                                                                                                                            करेणुमा स्ता [करेणु] हरूको, हरिनो ; (व
                        करिस वु [कर्य] । माउवंग, वॉनाव । र निवेतन,
                                                                                                                                                           करमाण / देवां कर = ह।
                         मानत्व। । भाव-किंग्द, का का बीवा दिन्या
                                                                                                                                                         करेग्राय ∫
                                                                                                                                                        करेवाहिय वि [करवाधिन] सकका हे वीन
                   करिस देनों करीस ; (हे १, १०१, पास) ;
                   करिसमा वि [ कार्यक ] बेती वरने बाला, हपोबल ; (बत
                                                                                                                                                    करोड इ [ २ ] १ नातिहर, मतिएर । १ बाद ।
                                                                                                                                                      रे शम, वेत । (दे २, १४)।
              करिमाण व [कार्यण ] १ व्योषात, मावर्थण । १ काम्बा,
                                                                                                                                                 कारोडम वु [ दे ] बात-विरोध, ब्होरा ; ( निष् १)।
                वेनी बाना ; रे द्रांग, बेनी , ( कह १, १ ) ;
                                                                                                                                              करोडिय व [करोटिक] क्यांतिक, निवृत्त
           करिमय रंग करिसम् (तम १, ३६० ज १,
                                                                                                                                                (माया १, ८ नम् १६०)।
                                                                                                                                          करोडिया }त्वी [करोटिका, दी] । इस, सं श
        करिमायण इंन [कार्यापण] निक्स निर्मेत , (निनं
                                                                                                                                        करोडी ) एक पाल, कांस्व-पाल लिए ; ( मन्.।
                                                                                                                                          ११ : वास ) । १ स्वतिहा, पानहान ; (बाद :
    कतिनिद् (मी) वि [कार्यित ] १ मार्क्यन । १ काला
                                                                                                                                       हों— कर ४३)। ३ मिटी का एक जान का पार (है
                                                                                                                                      ४ बराल, विचा-शात्र , ( वासा १, ८ )। । हर्ने
कारिनिय है [करित ] दुरंग हिम हुमा ( हाम ३, ३)।
                                                                                                                                     हर देखाय . ( हे रे, १८)।
करोर ३ (करोर) इस लिए, ब्रोह, क्रोहर (ज
                                                                                                                                करोडी ह्या [ है ] एक प्रचार की कोटी, चुर अनु की
करीम इ[करीय] बताने हे लिए त्रानास द्रमा गोहर,
                                                                                                                             केळ वह [कळाऱ्] १ वंस्वा काना । १ प्रावत हर
                                                                                                                              रे जानता । ४ प्रदेशनता । १ तरम्य सत्ता । इर
रेण तेले कडुण , (तन्त्र ११; वृत्र ११६), "उत्त्रह
                                                                                                                          (हेंद्र सेंह, वर्)। व्यवति, (विकास)
वामचं शामका कारत व मानुस् "( बरा )।
                                                                                                                         भी काम (ति १११)। धर्म ध्वेमक
या श्रा (करणा ) दग, एक के इंग को स करने
                                                                                                                        १०१६)। वह- कल्लात्, (पुत्र ४)। दवह-कल्लि
                                                                                                                     (जा १४)। संक्र कल्डिया, कलिया,(व
एस है [ बराणांकित ] किए कर करता की वह हो
                                                                                                                   क्षेत्र १८२)। ह— कल्लाम, कल्लाम, (१
                                                                                                                  ( 13 17 :55)
हि [बर्राचिन्] बरुवा बर्ज बजा, वहण्युः (वण्)।
                                                                                                             कला विल्ला है। बाद क्लीहर ; (वास )। १।
                                                                                                               HERE AT 15 ( MIN 1, 15 ) 1 2-21-4 Lin 18-4-4 Lin 18-4-4
                                                                                                             कर्ता (कर १६)। अ कर्तम, क्षेत्र, कारा . (र
                                                                                                             १३०)। १ बाल्सिया, बीत का, महा . (४)
                                                                                                           होता है जिल्ला है।
विकास क्षेत्र के किला क्षेत्र
                                                                                                         ( 10 to 10 t
```

में महुर ; (पाम)। 'यंड वि ['कण्ड] कोडित, शेक्ट : (क्या)। विद्यो देनो करही : (मुर ४, ४=)। हिंस है दिस रिक पत्ती, गतनीय (रूप; सहय) । कलंक पुंक्तिलङ्क) १ हाम, दीय ; (प्राप्त ६४)। १ सारक्र, बिन्ह ; (बुना ; गड़ड)। बर्मक एक बिलड्य | बर्मका बन्ता । बर्मका (मी)। ह-कर्लक्षियच्य ; (सुर ४४८ ; ६८१)। कलंक दं हि । वॉन, दंग : (डेर, म)। र वॉन की बनाई हुई बाहु : (राया १, १८)। कलंकण न [कलङ्कम] क्टॉस्न रम्मा : (पा =)। कलंकर वि [कलङ्कल] अवस्थव, प्रमुप : (और : संदा)। करनेकबर स्वा [दे] वर्ति, वाद, कींट बादि के परिचान स्यान-परिधि ; (हे १, १४)। कलंकिञ वि [कलङ्कित] क्टंबिन, रामी : (हे ४, x3=) 1 कलंकिन्द वि [कलंडि्कन्] क्लंब बला, हजी; (कलः नि १६६)। कर्लंद पुं [कम्बस्द] १ कुराइ, एनडा, गंग-पात्र : (उना)। २ जाति संभावं एक प्रकार के मतुत्रा ; (डा ६--- पत्र 38=)1 कर्लय हुं [कद्म्य] ९ इस-विशेष, बीर, क्रम का बाउ : (६१,३०; २२२;ग;३०; बगु)। खोरन चिंदि । अस्त्र-दिगेष : (विता ९, ६---पत्र ६६) । 'चीरिया स्त्रां ['चीरिका] तृप-तिरेप, क्रिका मध माप मति तीन्य होता है ; (जीत १)। 'बालुया स्त्री [चालुका] ९ इत्य हे पुण हे बाह्य करती वर्ती: ९ नरह की मही; "कर्नका मुक्तार दहुदपुर्थी क्रयोंत्रही" (उन 92)1 बर्ल्यु म्ह्री हि वर्न्डी-विधेष, बाँडिया; (ई.२,३)। करतेतुम न [कदम्यक] स्ट्रम्यन्त स्ट पुरंप : " प्राग-इनव्हेंबुमं सि वहुन्द्वियोमहूर्वे " (इस)। कर्त्रद्रमा [है] हेनी कर्त्र ; (परा ५ : हव ४)। करांतुत्रा स्त्री [कररायुका | १ करन्य पुरा के समन मांत-पीटक ; १ एक गाँव का राम, उहां पर मणवान महा-बीर की काटहरूओं से सुतया था : (राज) ।

कलकर हुँ [करकड़] १ केलाट, स्टास्ताल ; (आ १४)। २ व्यक्त गहा, सरा भारादा; (मन ६, ३३ ; राय)। ३ वृता झादि से मिध्नि जन; (निरा १, ६)। फलकल मह [कलकलायुं] 'इत-वद्' माराज कला। वह—कलक्लत, कलकलित, कलकलेत, कडक-लमाणः (पन्द १, १ ; ३ ; भीर)। कलकलिय न [कलकलित] होताहत हाना ; (वे ६, 38)1 यळक्त देतो कडक्स≃क्टात : (गा ७०२)। फलचुलि पुं [करचुलि] १ इबिक्नियेंप ; २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंदा ; (विंग) । कलण देखें करण : "तंस्ति ब्ह्येंस होस सुरतंक्यां " (मञ्जू =१)। कलण न [कलन] ९ शब्द, प्रताब; १ संख्यान, गिननी; (विते २०२=)। ३ घलग करना: (सुरा २४)। ४ जानना ; (सुरा १६) । ६ प्राप्ति, प्रहुण ; " जुने बा स्वतंत्रकताकत्तर्यं रमयायग्त्रुमस्य " (धा १६)। कल्पा नते [कलना] १ इति, रुगः : " दुर्गः देःप-दमं गिद्रवरश्रद्धवाशंद्रदिल्वं वर्माच " (श्रा) । २ षात्व कृता, लगाना : "मानग्रे शिरितंडरॉक्डलपा " (क्नू)। कलणिङ्य देखे कल≕ध्यम् । कलत व [कलत्र]स्त्रों, मार्पा ; (प्राप्त ७६)। कलबोय देखे कलहोय ; (भीर) । कलम हंनी [कलम] १ हायों का बना ; (दाण १, १)। १ वदा, बाटक ; " टबनमु मनवर्तमञ्जनदंगा-बहासमूहदुमं " (हे १, ७)। कलनिया स्त्री (कलिमका) हायी वा स्त्री-वद्याः (गापा १, १--पत्र ६३)। कल्यम ई [दे कलम] १ चेंग, कला ; (वं १, ९० ; पाम : माना)। १ एक प्रकार ह्या तथन नतन ; (तना; अं २ : पाम)। कलमल हैं [कलमल] १ वेट वर मेंत्र : (हा है, है)। २ वि दुर्गन्य, दुर्गन्य बाह्य : (इस महे हे) । 🤄 कलय इंको कालय; (हे १, ६०)। कलय हुँ हि । महुँव इल ; । सेना, सर्वाहर ; (देश, ६४)।

बत्यव पु [बत्यार्] मानार, मुख्यक्ताः , (पर्)। कलगदि वि[दे] १ वस्टि, कियान , रे स्वी कृत-विशाय, पाडरो, पाडल , (दे १, ६०)।

कल्याज्ञल न [दे] पोटन्तेष, हाउ पर लगाया जाना कल्पल देशां कलंकल , (हे २, २२०, पास ,

कलयदिर हि [कल्दकलायिन्] स्नास्त कले वाना , ! कारम्ब्हाणीं भी [कारम्ब्हाणीं] इस नाम ना एउ छन्हें , बतराह में [बानरह] १ वीर्व और मास्मिन का समुदाय ,

"पाइरजान रहेना सुन्तेमनुनवमनित्र बसान" (पदम ११८,)। 'क्लकल केंन्योज्ञिक्' (पत्रम १६, ६६)। २ गर्न-वेटन बर्म । रे गर्न क सन्वयन क्य वन-निकास (गाउँड) । ४ बारा, बावह, बर्म , (गाउह) ;

मललिय वि[कलिया] क्रीमन, डोव वाला हिया हुमा, "मानानार नहिरमलियह पर मेलालक्नोलियहारा" (पढर) । नलियंक पु [कलिविष्ट्क] वित्त-विगेष, कटक, बौरिया

कत्त्व स्व [हे] तुम्बीनाम , (ह २, १२ , वह) । स्टाइ वु [बालह] बनेग, सगदा, (टव , बीर) ; कलाह क्या कल्प्स , (डब, पडम ४८, १८)।

फारह म [है] तनकार की स्थान ; (है के, है , वास) ह कारह यह [करहाय] मगद्य काता, लंबाई काता | कह-कटहत, कल्टमाण; (कम २८, ४; सुता ११;

बलाने ३ [बल्या] १ क्तरा, पश्च, (ज्या, वाना १, १)। व स्कापक छन्द्र का वक संद्, छन्द्र किरोय, (शिय)। कलनिया माँ [कलसिका] १ जिस वस : (मलु) |

६ बार बजाना ६ ७ स्वर-तान (पड्ज, स्वस्म बारे स का क्षाम)। = पुन्धानाम (मूहम, मुस्सादि स्मिति स का हत्व)। ६ सम्माल (मर्गल के नील का हन)। १ चृत क्या । ११ जनवार् (तोगों के नाव मातार-गण काने की निधि)। १२ पीते का लेखा ।। महार (बीग्रह मतने को सीनि)। १९ गांग-किन। ॥

रह-पतिहा (१४१ हामा-विद्या)। १६ पार-मण १७ पान-विधि (जनवान ह गुण-रोप वा क्षत)। १८ बस्त्र-निधि (बस्त्र हे सजावर हो रीति)। १६ विषयनिर्ध १० शक्त-किंध । १९ मार्था (छन्द-क्रिये) बनान हो छी। २९ बहेतिहा (क्लिंट के लिए बहेलिया-गुरासव कांश श मागपिटा (दन्द-विसेष) । २० गाया (प्रन्य विशेष)। ध गोनि (छन्द्र-विमेत्र)। २६ ब्लेड (बलुन्दुर्ग छन्द्र)। २० हिना

वृष्टि (वॉरी के बाजूरन को बमास्थान योजना)। १८५४ वृत्ति । १६ वृत्ते-वृत्ति (नुगनित्र वृत्तार्थं कारे हं

रोति)। ३० कामरन-विश्व (कामूरणों को नजस्र) १९ तरवी-परिक्रं (स्ते हा मुन्दर बनान हो सीरे)। ^{३२} सी-नसव (सी क गुपागुम चिंदो का परिवर)। १३ पुरम्मस्य । ३४ मध्यस्य । १४ गत-सम्ब रें(गो तस्त । ३० दुरहट तस्त ।)= Gरत्यः।

ŧŞ.

trj

14

वींदी, रजन , (गड़ड़ क्ष्ट्र १, ४ ; गम)।

बला बी [कला] १ भग, माग, माना , (र मनव का सुरम मागः (निव २०१८)।

का मातहवाँ किया ; (प्रान् ११)। ' ү क विज्ञान ; (क्या, राम, प्राम् १११)। सुरुव

के सुन्य बहनर और स्वी-योग्य कता के सुन्य व हैं , " बावनर्ग कता " (शतु) ; "बचारिकार

वुनिमा ' (बास् १२६)। "चत्रमदिकतापंत्रिया" (१, ३)। प्रशन्ता थहे, -१ विक्सिन। १

गणिन । ३ विज-कला । ४ माट्य-बला । १ मान, गर

बलहरण न [बलहन] मगश कना , (३१)। रेह राज्याचा । इ. मनि वचना । ११ मण जरा

ल्याम वर्गा कल्यह=कनहात् । कनहार्णद् (सी), (नाट)। ११ - कल्यामंत् ; (ना (०)) (स्नमीचा)। २२ काक्षेत्र तथा (स्नमितः न्दादम त [बन्नदायित] सनद बना, समानदर, भगेता)। हरे कान्युनिया (शह बनानं और मजाने हैं रीति)। ४४ स्टम्यायाः मान् (मैन्ययां माण्)। व दि हि [कारहित्] मगवारहेत (दे १,१४) । नगर मन् । ४६ बार (ग्रह्-बार का परिवान)। ४१ रोय व [बलपीत] १ तुनम्, नेता , (नव)। ३ प्रतिकार (प्रदों के बर-गान बंगा कर कर

वित्रिक्ति ।

गराब्युः । १२ गरान्थ्ः । १३ युद्धः (सन्तयुद्धः) । १४ दुवानियुद्ध (सङ्गाहि सम से दुद)। 💸 दक्षितुद्ध। १७ मुहिन्द्र । १= बाहुन्दुद्र । १६ स्तान्दुद्र (६० इपुन्मास (दियान-सुबद्ध गाम)। ६९ त्सन्त्रतः (सर्व-शिका शास)। ६२ धर्हेंद्र । ६३ हिम्प्र-पाक (बॉर्ड) बनावे की गीति)। ६४ छार्य-बाक । ६४ मृत्रकीग्र (एडडी सून को फरेक प्रधार कर दिखाना)। ६६ वस की हा । ६० गाँउदा गेड (यूत-क्रियेप)। ६८ पत-व्हेप (अनेर पत्रों में अनुह पत्र का देवन, हस्त-उत्पत्र है। ६६ इट-स्ट्रेप (स्ट ही तरह बन में देव सरने साहन)। उन नदीव (सरी हुई बातु को लि कन्ट क्लानः)। अ निर्देत (पातु-माग्य, रमयय)। ३२ गङ्ग-स्त (राष्ट्रशास). (वं १डी;स्य 🖙)। धुरुपुं ['गुरु] क्याबार्य, विदायनावर, जिल्हा ; (सुरा १४)। यन्यि वृं िचार्य हिन्दो इहील प्रयं: (याचा १, १)। विर्केश विनी कि स्टाबर्टी सी। १ एड पनिना मीत् हा ३६ ; पीत्र)। 'सबण्य न [सवर्ष] सम्बन्धिये . (इ. १० १३ कलाइया में [कलाचिका] प्रशेष्ठ, बोर्ग में तेसर मरितरा तह हा हत्त्वापत ; (पाम)। कलाय ९ [कलाद] ग्रेनाम हर्तांग्य , (पर ५, १ . राय १, ८)। फलाय ९ [फलाय] पन्यन्तिगेष, रोत पन, महा ; (22,1,131)1 बलाव ५ [बलाप] ९ स्मृत, जन्मा : (हे ९, २३९)। ६ मसुविन्छ ; (सुरा 🖛)। 🗦 मार्गर, द्वार, दिल्ली सारा नवीर जाते हैं; (दे २, ९६)। ४ काउ का मानुष्य , (मीर ५० सलावग र [माटापक] १ चर रत्योतं श्री ग्राज्यास्यतः। २ मीपा का एक मानगर ३ (कार २, ४)। बलावि पुन्ते [बलावित्] स्तु, संत, (अ 30年前)| बरि ६ [करि] ९ कर, म्पह , (इस ; इस् ६४)। र हुएकिय, स्टिन्युः ; (झ न्यार्)। रे परिवर्शिया (से ४४) । ४ प्रथम मेर, एसिय ५३). हिस्स, मंद्रमा ; (स्थार ६ ०, ३; व्या १म, ४) । ६ इ. ५५ ; " हुए करों " (राष्ट्र) । "धीरा, 'घीरा ५ ['मोड] दुव्पर्यात चिहर, (स्य ६०, ४, छ ४,३) ४

'ञोयकडहुम्म १] 'ञोजकृतपुरम] युन-गशि-विगेष, (मग ३८, १)। "बोयकलिओयं पुं ["ओडकः ल्योज 🛘 युन्न-गनि विगेष; (मग ३४, ९)। 'ओजनेओप पु विजेजन्योज] युन्म-गति विनेष ; (मग ३८, १)। योयदावरञ्जम ९ [°ञीजदापरगुग्म] क्य-गरिः क्रिये : (सम ३४, ९)। "कुँड न ['कुण्ड] तीर्थः क्यिप ; (तो ६४)। जिस न [भूम] बतियुग : (नी२१)। किल पुं [दे] गर् , हम्मन ; (दे २, २)। किटिय वि [किन्दित] १ हुक्त, महित; (पन्ह १,३)। र प्राम, रहीत ; ३ ज्ञात, विजित ; (वे २, ४६; राम)। कलिअ देखें करा= रहप्। कलिय हुं [दे] १ नहत, न्यीता, नेवना : २ वि. गर्विन, गर्व-युक्त ; (दे २, ४६) । कवित्रा मी [है] मनी, मेरेडो ; (ई ३, ४६)। कलिबासो∫ कलिका] प्रविद्यति पुनः ; (पामः ग ees 11 कलिंग ९ [कलिङ्गः] १ देश विनेत, यह देश उद्गास दिवयं की मोर योजनये क मुजने पर है ; (पड़में ६८, ६०, मोर ३० मा ; प्रमु६०)। २ वर्तिम देशे हा गहा : (विंग) । इसे शिलिच, (स १३०)। कलिञ्ज ९ [कलिञ्ज] स्ट, नदर्ध ; (निर् १३)। फलिंज २ [दें] छहां दहता , (हे २, ११)। कलिस्य] १ इन रा पत-ति। १ ^१ धनिके बंग्हमरी" (यन्य १)। १ स्पीतहर्गः; (सर =, 2) [कलिल र (कटिंड) क्या पर पहर बाद एक प्रधा क क्रांन्य दहर . (राम १, १ ; भीर) ; कालिम र [दे] कमर, रम , (हे २, ६) । बल्फि वि[बल्फि] एर, ब्ल, हर्नेट, (राम) । बल्हम हि बिलम है। देल, दमन्द्रम, हमन्द्रम (है १, १६४ : प्रत्य १९६ : स्मृत्य १, ११६) । त्र मानिय ज्ञामप्रतिष्ठ नद रही में हम रन , र ब्राह्म) (काद्यमा देगी बकामा : १ गाउ) । बाहुम्र हि [बाहुर] ९ सॉन्ट, माराउ : "र्वानरेप्टरी" र्वति १,१,८६६) । अस्य पा, देश, देश, अस्तर्यक १३३ : यस) ४

```
ण्युमीका हि [ च्युपीरन ] ग्रीन क्रिया हुगा ; (उत्त) ।
                                                                ्ष्यातः । बन्तारः वं [बन्यारः] स्वातः स्म स्म स
               कतर १ [२] १ बहाल, ब्राट्स्यन्त्रस, १ वि क्रांत.
                                                                                                      कतितं म [करते ] का तिन, कत को ; (मा १०१)।
             वेजीवर व [बाजेवर ] महीत, वह, ( माउ ४= , शिंग)।
                                                                                                      कन्दुम वं [कन्दुक ] होन्दिव जीव विगेर, बीट वो स
            कतेमुर व [कतेमुक] नृत-कार ( नृष १,१)।
           करा व [काम ] १ दर, यह कुमा वा मागामी स्ति,
                                                                                                     बन्दुरिया [२] देना कुन्हरिया, (शब)।
            (१म , काम १, १, १८, १३)। १ शब्द, मलाम,
                                                                                                   बच्चेडव कु [दे] कतंत्रा, प्रानराता । ( बांव ४६४ त)।
            रे महार तिकते ( किंगे ३००२ ) । व माराध्य, दिसीवना,
                                                                                                 कन्तरोहस्य वु दि ] दमनीय हेल, गौर, (भाषा १,४१)
           and frame, ( sa seek )s & mind date !
                                                                                                बल्लोडिया (१) ता बल्लोडी , (बार)।
         किया १३ ६ वि बोग्या, रामजरिय , (स. ३, ३३ व
                                                                                               बन्योल व (बन्योल) सम्म, कर्म (।
         त्ताः। त्या सम्बद्धाः (त्त्वः १६)।
     कराम्बन १ (कारमच्चे ) करा, माधीका, जनपान ,
                                                                                            बल्लीक वि दिबल्लीक मान पुरमन । (दे र
   winder to [4] to dies, miles ; & faculty,
                                                                                           ब्यानियों में [ब्यानेनियों] गरी, (ब्यू)
                                                                                          कालार व [कहुनार] सहर दमन, (तल
 कामा के (१)का, तक , (१६,१)।
कार्या में के किया कार है। वर्गात, हर मेंत्र
                                                                                        करित्र क्यों करित्र , (या ८०१)।
* Toron 5 . 4 } ( for 1 , 1 man 2 , 2 = ) 1 2 x/n.
                                                                                       क्तोंड १ [ १] क्मात, काशा (११,८)।
Sec. 18 24 ( 211 , 27 );
                                                                                       कानोडों मो [है] कानो, बींटना, (हे १, ६)।
मान के (बामान ) र वेन, सम्ब, बेर, "मान
                                                                                      कत्र कर [कु] वातात्र कार्ता, मध्य कार्ता। क्या;
कार्यम् । व प्रकार सम्बद्धानाम् । ( वर १०० ) स्था
24 116 91 8 (MM, MM. (MM $000))
                                                                                  करारव वि [कावित ] करार वजा, क्षेत्र, (ह
भवत का (वर्)। व दिन सामन का पूर्व मह
क्यविया वी [क्यविका] क्यांक्स, १४७, (त्त्र)।
का है। १ कहा है के व ( का) १ देव किन्ते । काईहे व [कारट ] बार्च कांचे ( तार में
हत्त्व । क्षण्यास्य क्षण्यास्य स्था क्षण्याः क्षण्याः स्था क्षण्याः । व्याप्तः स्था स्था स्था स्था स्था स्था स
100 mg " ( 777 tes ) ,
4 [ miles ] same talent as ( dall
                                                                        [ [ and [ be and ] ' ( but ) !
and the state of t
                                                                      क्वर्षित्र विवासिक्त है दे वस किया । ( प्राप्त का स्था ।
                                                             सम्बद्धित के [ कर्याच्या ] कृष्टि सन्दर्भः ( के ।।
                                                                  क्षत्र है [क्ष्यू] र्टर् (वल म, र, इन
```

्यत्रप कृष्टियाय] को कार ; (कि. १, १ ; फल | सवित (हि.) धनः उत्तः ; (वे २, ६ , पम)। 44, 33 : 97F 11 यस्य = [हे] क्लानि-विरोद, मृत्तिराज ; (ह २, ३)। क्यां में [क्यां] ज्यानम, विमाल . (उस : बेसी १८३ है। मग्रह मा विवयम् । इन्त, हर्द समा । सारेड , (गहर)। वर्ष-वर्तरहरू : (गहर)। स्वर -यव्यक्तितः । सुर २०११ च्छ -ऋविक्रिण 🔑 (स्टइ) । कवल १ [कवल] इन्स्, बान्स (स्व ४ , बीन)। कायलग न [कायलन] इन्ल, नलग ; (इस ६०० : स्र ४३१)। क्यलिय वि विस्त्रित । इति, महित ; (१ मः सु र, ९४८ , हर १२५; ३५८) । कवित्या माँ [दे] इन का एक इतरुपा; (माप २)। कार्याच्या) स्टं [है]पप-विशेष, गुर् कीरः पराने का साहत, क्यांच्या हेहाइ, इन्द्र 'दान्तिया य निमें कातिहाए क्यांन्सम्बर्ग " । संबर्ग १२० ; विशा १, ३)। इक्स्) पुन क्रिपाट हिन्दु, दिनकी, (गटट ; क्रीन ह क्यान्द्रीया ६२०)। कबाद र [कपाल] १ गोर्स्स, हिन की हट्टी ; "हरह-विमहाती" (पुरा ११२)। २ पट-काँगु निज्ञा-राष्ट्र । ब्राचाः हे १, १३९)। समास १ हि । एड घटन का जुन, धर्महरूपा ; (वे 3, 8)1 यवि हेर्यः कर्≕धिः ; (सुर ६, २४६)। कवि पु[कवि] ९ बदित ब्यंते बला: (सुर १, १८; मृत ४६२ ; प्रमु ६३)। २ गुरू अह-विरोध ; (स्ता १६६)। त्ति व [त्य] र्याल, बीत; (स. ६, १९)। दबं कह=स्ति। कवित्र र किविक हिल्म ; (पान ; हुन २५३)। कविज्ञत हैनो कपिज्ञत ; (झान २)। विकरहु)दर्श कड्कच्छु ; (ऋह २, ४ ; भा १४ ; विगच्यु ∫रे १, २६ ; जीव ३)। विद्व देशों महत्य ; (क्या १ ; दे ३, ४४)। हिंचड र [दें] पर का बैठता कॉलन ; (डे २,६)। हवित्य देखें कारय ; (हा १०३१ हो)।

र्राविषस्यु रेको कर्कस्यु ; (न २३६)।

कविल ५ किपिन है १ वर्ष किया, स्वारंग, राजदा वर्ष, (डा १)। १पनि-विते (कर १,४)। ३ र्मन्य मा का प्रवर्गत सुनि-विशेष ; (प्राप्त ; प्रीप)। ह गर राज्या महर्षि ; (दन न)। १ इस समग्र गुर रामुदेश ; (राजा १, १६)। । गहुका छन्द-विनेतः (सन्त १०)। अस्तारंग चा, सत्मैनारंग दा: (पत्न ६. ३० ; में ०, २२)। भिन्दी [भी पृक्त प्राचारों का नाम: (हास) कविलडोला माँ [दे कपिलडोला] हर उल्ह-विरोप, जिसको युक्तगरी में "सामाक्ष्मी" कहते हैं: (जी ५८)। कवितास देवी कहलास : "देवि होता विद्यानीत. विविन्निमा बडा" (इस)। र्कावलिय वि [कपिलित] कीत संवास दिया हुमा; क्षेत्र में में मित : (गड़ड़)। कविष्मुद न [दे] पत्र-विरोध, सहाही: (यह १)। कविस दं [कपिरा] १ वर्ग-विरोप,हा हार्याता रंग, बहारी, इन्स्पेत-निधित वर्ष : २ वि. क्यीग वर्त बला ; (पाम ; यहड) (कविसान [दे] शर, नय, महिंग ; (दे १, १)। कविसा न्त्रा [दे] मर्वत्रपुर, एक प्रकार कां जुता; (2 3, 8); कविसायण द्वा किपिसायन | मद-विदेय, गुर का दाक्: (प्राप्त १३--पत्र ४३३)। कविसीमग । ईन [कपिशीर्षक] प्रत्या दा बदानाग ; कविमीसय है (कींग ; याचा १, १ ; राव)। कवैन्द्रय हेतो कविन्द्रय ; (टा २-नाव ४१०)। क्रवीय वृं [क्रपीत] १ व्ह्ल, पंचा : (गड़ा ; विशा १, a)। २ मेच्छका स्थिप; (पदम २३, a)। ३ न् कुमारड, कोइडा ; (नग ११)। कवोछ ५ [कपोष्ट] यत, यतः (हुन ३, १२० ; 表 4, 张敖) 1 कच्च न [काव्य] १ द्वित, द्वित्व; (शु४,४; बहु१)। २ई.व्हर्बिक,ग्रहः(स ३,४३)। ३ वि वर्णवेद, न्यान्वेदा; (हे १, ०६)। दिन्त्वि [ब्रिन्] इच्च बडा; (हे २, १४६)। कल्य न [कल्य] मंत्र ; (सुर ३, ४३)। कव्यड देखे कव्यड ; (मनि)।

```
;
                   468
       7
                  बन्ताड ४ [ हे ] रतिब हम्न, राहिना हाय, (हे १,१०)।
i
                                                        पाइअलहमहण्णयो ।
                 ब्रेट्याय वु [ब्रेट्याद् ] १ राज्य, विभाव ; (पत्रम ७,
                  १०, देर, १६, स २१३)। २ वि. कल्या मीन
                                                                 कसर उन [दे कमर]
                  रानं वाला , ( पत्रम २२, १६ ) , ३ मारा माने वाला ;
                                                                 "कल्डुम( ? क )गगमिभुमा
                 (979)
                                                                 क्ष्म " ( श्र इ-्या १(६ )।
               कत्याल न [ने] १ वर्म-स्वान, कार्यालय ; २ व्ह, कर,
                                                               कमरकक कुन [दे:कमरतक]
                                                                समय जो मन्द होना है बहु, ध मा
              कत्त सह [क्यू ] १ ता माना । १ करता, रिन्ता ।
                                                               (हं ४, ४११, हुआ) । १ उन
               रे गतिन हम्मा । स्मृति , (कल १३)। स्टब्स्
                                                                "तं विविभिद्दम तं पीतुम लावा ते.।
              कसिस्त्रमाण, (जुण (१४)।
             कस पु [करा ] कर्न-कट, बादुद्द ; (कह १, ३ , बादा
                                                                सम्भानि काह् ! मगबिलानियाइ क
                                                            कसञ्चन [दे] बाल, मातः, १
            कस ३ [कर ] १ काहि, का क्या, " वान्येक्टोह
            तुर पान्य सम्मानुकानं " (तुरा ३८६)। १ कर्माटी
                                                             वे अनुर, ब्यास : (वे २, १३)।
                                                            " हिरक्रसञ्जाल विवद्शेहरवण होलव स्मिनंतर
            हा पन्तर ((पाम)) है जि दिनक, मार कालने
                                                           दे रे, ११)। १ कहेंग, पहल; म
           बाला, दार मारन बाला , (दा ४, १)। ४
                                                           ब्युनरातामस्त्रकम्बाह्मं " (गउइ)।
          इन, मंतात, मन, नक्त् ; (रून ४)। ६ न कर्न, कर्न.
                                                         कसा स्रो [कसा, कमा] वर्म-स्रोट,
          उत्ला क्षेत्रम् का मनो श कर्न " (तिने १२२८)।
          'बह वह व ['बह ] क्योंटो का क्या , ( मह ; वा
                                                          (विसा १, ६ , हुना १४६)
                                                        कमा देखे कासा , (वह )।
         (१६) इत १, १८)। विह तुन्नी [विहि] को की एक
                                                       कलाइ नि [कारायिम् ] १ क्याय वय बाला
         वर्तनः (क्ला १)।
       कामहं भी [दे] पतानिगेर, मानवनार्ग काण्यी का पत
                                                       बाव-बाया चीम बाला , ( पगळ १८ , माबा )
                                                      कलाइअ वि [कपायिन] अस देयो । (
      काराह (वे) हेम्से कहूं=कर, (हे ४, ११०, आर)।
     कानह वृहि ] काना, हुवा ; ( काव ११० )।
                                                     कसाय सक [कसाय ] नाइन बरना, मारना ।
     कामण वृं हराज ] १ वर्ग निया, १ मि इञ्च वर्ण वाता,
      काला, स्वाम , (हे १, ४१ : ११० : इना )। "पत्तर
                                                    कत्नाय १ [काराय ] १ माप, मान, मात्रा और
     इ [ पत्त ] इन्त क्ल, की क्लाता , ( क्ला )। सार
                                                    (विने १२२६, इ. ३)। २ रम-विनेष,
     इ[ मार] १ इम-क्रिय ; १ हरिंग की एक जाते .
                                                    ( दा १ )। ३ वर्ष-विनेष, लाल पीला रह्य,
                                                   ११)। व काय, कादा, १ वि करेगा स्थाद ।
    (बार-मुच्छ ३)।
  क्सण वि [क्रम ] महा, तब, वर्ग . (हेर, पर)।
                                                  ( क्यांव रंग वाता , जुगन्थ), जुगनुरात , (हे
  कमणिमा पु [ह] बनमा, बन्दान का बार माई.
                                                  1(.)
                                                कसार [दे] देखे कांगर , (भी )।
 कमिन्य हि [ हरिणन] हाना हिना हुमा ; (पाम)।
                                                कस्तिम व [करिशका] प्रवेद, यापुक, "मया ह
कममीर देश कादीर । ( पत्र ६०, ६१)।
                                                महत्तेम क्रिम बाउत " (प्रयो १०=)।
कमार द [ है ] माम हैन . ( व है, व , मा क्दर् )।
                                              कतिया को उत्तर देशो , (सुर ११, १३०)।
                                              कतिया ही हि ] बत-विगेष, प्रात्मवाग नगह कर्म
भाग मानाम्ब्रहानं, तांव हु सीवानं का(१ ह )नावनः
                                             कसिट (वे) उन्हें कहें=इट , (पर्)।
                                            कसिण वस्त कसणानाम करा
```

```
सेर ) पुन [कडोर, क] जर्ताय वन्द-विशेषः (गडटः
सेख्य 🕽 फर १ 🕽 ।
स्स पुंदि विद्यः, कर्मन, बद्धाः (हिर, २)।
स्साय न [ दे ] प्रान्त, इरहार, मेंट; (३ २, ९२ )।
म्मच पुं ['कार्यप ] १ वंश-किनेष: " बन्नवर्तमुननो'
(बिरु ६४)। १ रूपि-बिगेय: (अनि २६)।
ह मर [ क्यम् ] कहना, बालना । नहहः ( हे ४,२ )।
सम्-बन्दा, पहिन्दा ; (हे १, १८०; ४, १४६)।
यह-फर्टन, कहिन, बडिमाण; ( स्वय 👐 ; सुर
११, १४= )। बरह-क्ट्यंन, कहिरलंन, कहिरलं
माण: ( गत ; मुर १, ४४ ; या १६००; मुर १४, ६४)।
मंश-फांडिउं, कहिज्ञण ; (मरा ; कन ) । ह-कह-
पिछत, कहियम्ब, कहेयम्ब, कहपीय; ( तुम १, १,
 १ ; मुर ४, १६२ : मुत्र ३१६ : ( फर्ट २, ४ ; मुर
 72, 930 } 1
नह सह (भयम्) स्वाय करना, जरातना। स्टब्स्
 (पर्)।
फह ९ [काफ ] बक, शर्तनस्य बाद विशेष, बस्तम ;
 ( वना )।
फाइ देशी काई; (हे ९, २६; पूना; पर्)। 'काहबि ।
 देनो कह-कहिप : ( गड़ड ; इर ७२० डी ) । 'बिदेसी !
 कह-पि: ( प्राप्त १९४; १४९ )।
फहुआ म [ कार्यवा ] वितर्ध मीर भाषय मर्थ को बतलाने
 बाला मन्दर : ( से ७, ३४ )।
पार्ट म [ कायम् ] १ हैमे, सिन नग्ह र (स्थान ४४ ;
 इसा )। २ स्पों, स्थितिए ? (हे १, २६ : पट् ;
 मरा )। 'कर्ट्षि म [ कर्यमिष] सिनः तरहः (ना | कहु (क्राः) म [ बुनः ] कां से, हैं (पर् )।
  १९६ )। 'बहा मी [ काशा ] राय-द्रेव का उत्पत्न
  बरने बानों क्या, विष्या , ( प्राया ) । खि, खी प्र
  [ चित् ] शियो तरह, कियो प्रकार हे , (धा ९० , ८४
  क्रोक्टों)। विस्त[अवि] क्रिये शहर (यह≡ो।
 महबद्ध ६ [ बाहकह ] इसाइ-बालकर, सुर्यो का जाय
  1 5 2 3 1 T 2 841 677 (
 परंपद मा [ वत्यहर्य ] कृत का गा कराज । इन्
  बहदित
              पुणुष ६ <u>।</u>
 बराबर्ड्ड वृष्ट्रिक्टक्ट १८८ व १७५
  बर्ग ५ [ सम्बर्ग ] - स्टबर न
   ् बद्धनाय । हर ५०,५
```

```
कहण न किथन दियन, टरित ; (धर्म १)।
कहणा की [ कथना ] कप देती; (भन २; उप ४६०:
 {E=) [
कह्य देखे कहरा ; (दे १, १४६)।
सहल्य पुंत [ दे ] वर्षर, मध्यर ; ( मंत १२ )।
कहा की किया किया, वर्ता, हकील ; (पुर १, २६०;
 कुमा: स्वन ५३)।
कहाणग)न [कथानक] १ क्या, वर्ना; (धा १२;
कहाषाय रेटा १९१६)। २ प्रसंत, प्रस्ताव ; " कर्य से
 नामं बाद्विपिति बद्राप्यविनेतेष" ( म १३३ ; १८८ )।
  ३ प्रदोजन, कार्य : "बहाएवविष्टेंग्ड समागमी पाटलावहं"
 ( 정 본=는 ) 1
कहाच वर [ कथय् ] बहलाना, बुलनाना । बहानेह :
  ( मरा )।
बद्धावणार्षु [कार्यापण ] निस्का-विशेष ; (हे १, ७१ ;
  ६३ ; बुमा )।
कहाचित्र वि [ कथित ] बहलाया हुमा : ( सुरा ६६ ;
  Yka) [
कहि ) म [ पत्र, कुत्र ] बर्टा, दिन स्थान में ? ( दश:
कहिआ (मग; नाट ; बुमा ; ट्या )।
यःहि
कहिला दि [ कथियतु ] बदने कडा, नापदः ; ( मन
  18)1
कहिय दि [ कथित ] कथित, उप. ( टा : नट ) ।
 कटिया मी किथिका किया, करानी : ( दर १०३१
  रों )।
 करेंड वि [ दे ] तरद, दान : ( दे १, ११ )।
 बद्देस इंदो बहिस् ; ( ट ४, १ ) ।
 बाइज हि [बायिक] शर्मानिक; श्रांतनांक्याँ , (ध्रा
   ३४ , प्राम्य है ।
 बाइबा । मो [बायिको ] ९ गर्गत-मदार्थ (स्ता, गर्गत
 बाह्या १६ जिले बाहर
                           द्वा १ १ वस्तु १०, स्व
   * s } * s == 4-18===
                       # tt.
                                    १ स्व, द्याद,
    क्षाप्रकार हार हो रूप
 बार्रदी मा (बावन्दी ) इन राम ६ एवं रगरी, विद्या
 बाह्यां व (है) र व वात स्त
```

```
पाध्यसदमहण्ययो ।
                                                                                      B115-415
att
                                                   कार्कदिय हैं [कार्कन्दिक ] एक जैन मार्च ; (हम)। इ
काई मो [काकी ] बीए वी मादा ; (विश %, ३)।
                                                   काकंदिया स्ती [काकन्दिका] नेत पुरिन्नों रे ए
काउ सी [ कापोली ] शेश्या-विशेष, ब्रात्मा का एक प्रकार
 हा परियास . ( भग : भाषा ) । 'होसा बी ('स्टेर्या ]
                                                     गावा ; ( कथ )।
                                                    कार्कादी देखे कार्रवी : ( साथा १, ६, ठा ४, १)।
 ब्रान्स-परिलास विशेष , ( सम ; स ३, १ ) । 'छेस्न्य 🎚
                                                    काकणिदेनो कामणि : ( निग १, २ )।
 [ 'सेश्य ] कारोन केम्या वाला , (याण १० ; मग )।
                                                    काकलि देवी कामलि : ( टा १०--पत्र ४३९ )।
 'हेस्सा देलो 'हेसा , ( पणा १७ )।
                                                    काम देखाँ काचः ; ( दे १, १०६ ; प्रान् ६० )। ताः
काउं देशो कर≈% ।
                                                     संजीवगनाय ९ ["तालसंजीयरुत्याय ] बहाईर
काउंबर पु [ काकोद्रम्बर ] नीवे दसी ६ ( राज ) ।
                                                     स्याय ; (सा १४२ हो)। "तालिस्म, "ताकीय र
काउंपरी सी [ काफोदम्बरी ] बोविव-विनेष , "निवंब-
                                                     [ 'लालीय ] बेन बीए का धनकि मागमन मीर नहेनी
  र्श्ववंबरशार्ववरिवेति---" ( तथ १०३१ टी ; परण १ )।
                                                     का अवस्थान विस्ता होता है ऐसा अनिर्मात सनद, मेर
 काउकाम दि [ कर्ल काम ] बरने को बाइने बाला, (ओप
                                                     स्वान् कियो कार्यं का होता ; ( प्राक्षा ; ४ ६, १६)।
   124 );
                                                     'थल न [ 'स्थल] देश-विशेष, ( हे १, १०)। 'एउ
 काउद्वायण न [कायोद्वायन ] उचारन, दर-स्थित सुनेर के
                                                     3 [ 'पाल ] इप्र-विशेष , (राज ) । 'पिंडी र्र
   रारीर का शाक्यण काता ; ( खाया 9, 9 4 ) ।
                                                     [ 'पिण्डी ] अथ-रिवड , (आना २, १, ६)। पर
  काउदर ५ [काकोदर] गाँप की एक जाति , (पन
   2, 2 %
                                                     काव=धार ।
 काउमण दि [ कर्ल् सनस् ] वरने की बाद वालाः ( दर :
                                                    कार्गदी देशो कार्गदी , ( प्रतु १ )।
                                                    कार्याण की [रे] १ राज्य ; " बनोगनिरियों हुनी वर
   ला ४० : गं६० )।
                                                     बायइ बागणि " (जिमे =११)। १ माम का है
 बारडरिस्त पु [बारपुरूप ] ९ खराब बादमी, मीथ पुरुष 1
   र कारा, कापीक पुरुष : ( गड़ड़ : सर म, १६० : सपा
                                                      दक्षणाः (भीप)।
                                                    काराणी देशो काणिणी; (भारण, राण)।
   163 31
                                                    कागर ५ [ काकार ] बीवाम्थ उत्तर प्रथम , ( मर्च ) !
  भाउत्पर g [ दे ] वह, क्युवा ; ( हे १, ६ )।
                                                    कागलि । स्त्री [काकनि, स्त्री] १ मुहम योग-स्त्री
  काउसमा )पु [कायोग्समी ] १ शीर पर ६ मधन
                                                     ब्रायस्त्रो । स्वर-विगय , ( मुग्र ४६ , तप प्र ३४ )। १
  करडरूमार) का स्थाप , ( उन २६ ) । १ नावित किया
                                                      वेबी-विशेष, संगवान् अभिनन्दन की शायन-देशी, (वर २०)।
   का स्थाप , ३ भ्यान के लिए गरीर की निज्यालया , (पड़ि)।
                                                     कारिणी स्त्री [काकिणी ] १ वीडी, कपर्टका. ( ३१ %
  बाफ्र वेशी काड , ( हा १ , वस्स ४ , १३ )।
                                                      ३, त्व, था १८ ही )। र बोन की डो क सून्य की 😘
  काउंपा / देशो कर कर ।
                                                      निस्त्रा , ( उप १४१ ) १ - ३ रन्न-दिशय ( सम १३,
  बाउली र्र
  कामीद्र देशे काउद्र : ( स्थम £=) ।
                                                      उप ६=६ दी )ा
  बाओली स्था [ बाकोली ] बन्द-क्रिय, बनस्पति-शिव,
                                                     कामी स्था [काफी] १ कीए से मारा । न
    (971 1) 2
                                                       ९ विधा-विशेष , ( जिसे २०६३ । ।
   बामीयम् १ [ कामीयम् ] नगरी शहमा , (मूच २, ६) ।
                                                     कार्योणंड पु [काकोनन्ड] इम नाम श्री एक व्याप्त
   काओसमा रंग काउममा , ( वर्ष ) ।
                                                      <sup>4</sup> बिन्द्रा कामशास विकास महिस्तरीय त ना
   काकः पुरिकातः है १ कीमा, बावन , (अनु ३) । २
                                                       ( 934 3v, sq ) 1
     बद-विलेख, ब्रह्मीरायक देव विगय, त्या १,-१ --यम ४=)।
                                                      बराया वि [ बराया ] करना, गमान, । नुगः 🙃 🗥
     "जया ब्या ( जिल्हा ) कम्प्रति कियेत. वस्मेनी, धृषवा.
                                                      काण वि [दे ] १ मन्दिर, राजा
     ( बतु ३) । दश कास, काय≔शह ।
                                                       क्ष्माया हुमा । 'खभाय पु क्षिप्रची चुराई हुई वर्ग र
   भावद्रा पु | भाकन्द्रश्च | एक बेन गर्दर्भः (देशः) ।
                                                      सर्वादना , ( सूरा ३ ४३ , ३४ ८ ) (
```

ा सामित्य) मार्ग [है] हेरी मार्ग मे हाला करण , पार्मासित्यम् (द २,२४, मंद) १ (पार्मास्त्रमा) पार्म में सामा केद । मान्म प्रमाण में सामा] १ कर्य केरण (पार्म । १ सामा करण , १ म्यू मीर) । पार्मिय पु [है] मिला जनगीत वृद वृद करणा दे १, १६ (वे) पिराजी मी [है] मीरामा, १ हे १, १८ (व्याप्त मी हिं] मीरामा, १ हे १, १८ (व्याप्त में - मिरामा मी [स्वीप्त मीरामा कर्य में कर्याम होसामा कर्याम पुष्टा मार्ग में सामा हो मीरामा कर्याम प्रमाण प्याण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमाण प्रमा

> कृत दमा काम्यस् (१ प्राप्तः ६ । कृतम् दमा काम्यस्य (१ प्राप्तः १ प्रम्यः १

ম (বিজ্ঞান) প্রত্যা করনে রানালার । এ প্রত্ লোলার । প্রত্যালালালার বিশ্ব প্রত্যালালালার বিজ্ঞান প্রত্যালালালার । বিজ্ঞান কর্মান প্রত্যালালার । বিজ্ঞান কর্মান ব্যব্ধ

र्ज क्रिया के क्रिया हे क व्यः विकासी हु कमार्थः (दिवं १३) हुत ५ [युता] व्हे किंद : (केंद्र) । उत्तर र्वा स्वत है सर्वताल किए / जंब र १। उन्हरी सी [ध्यता] इस सम् की स्वतिस्य , । जिस्क कार हिंदी स्थिन कियानार्थः स्टाप १ । द्विप द्विष्ठित्र १ देन महर्षे न पनमा िहा है। चार १६९ १४ व वर्ष सुनिर्मी का एक हुए। (रहे । पास र [स्वस] पिरानी र पर सा ेक्कर ें। द्वारणीयी [ˈदारिनी] वित्र कर क इसे राजी विक्रानीय : विक्रा ४, १३३ है। दिला र दिया किया है। धार राहिस, देवा [देव] १ मन्त्र वर्ता जवासम्बद्धः । १ ल देश प्रकार समास्त्र । स्वयु १३ विस् ইনিক বলপুন হালী বী । কলে বে আমাহ ⊊িআছে ९ द्वर्याचीच । द्वार । १ क्षार्य, रामपुर कथा विकासक कि [विकासक] किलाविकार (४००) द्राव[द्रा]शायकशाला विभागना । १० **बाद्ध (प्रदा** धा क्रिक्टी हो। १९३० काम ५ (मर्सा) का लिए, का जिल्हा हा कि । राष्ट्र १० सरायपा र सामार हे सामार emental and the PALL FO entern energy of the first for the second second second े दर्द के किया कर कर क

[रिस्त वुं विषय] जो पुंजीद वर्म का मनुका करता बढ़; (बुमें ५, ५, ५, ३ डी)। प्यम प्र प्रमा] इन शाम का एक पर्वतः (डा १०)। मोड्य पुन्तं [स्कोटक] प्राप्तः क्षेत्र । सी--डिया: (रंगा । माम पुं [मास] मन्युनानव ; इत्समं सार्च हिस्सा " (दिशा १, १: २, n अ, ६)। भामिणी हा [मामिना]। भिंती, ग्रींकी, (इस १, १)। मिग है । स्वा क्राम्म को एक जति, (जंद)। रिसिमी राश्चि । प्रतय गावि, प्रतयकातः (गडर । चाहिसम न ायतीसका] देश-विमान विरोध, बालां देवी का विमान ; गाया १)। याह वि [यादिन्] जनत की काल-त मानने बाला, समय कोही यह बुळ मानने बाला ; मंडि)। बासि वुं [चर्षिन्] माना पर बानने हा मेर ; (हा र, ३--- पत्र २६०)। संदीय पुं ् संदीप] प्रमुर-विगेश, विदुगमुर ; (माक)। समय ५ [समय] समय, बला; (तुल =)। समा र्ग निमा निमय्तिमेष, ब्रास्ट-स्य मनयः (और) । मार पुं [मार] एवं की एक जाति, काला मण; "एक्की । बाह्यनारो रा देइ गेतु पर्वाहरावलंती " (गा ६६)। सीप्ररिय र् ["मीकरिक] व्यवसन्त्रात एक क्याई ; माह)। 'गार, गगुर, गयर न ['गुरु] स-न्यि इत्य-विरोध, जो धृत के दाम में छाया जाता है : गावा १, १ ; हम ; होर ; गडद)। 'यस, 'स [ायम] ठींह की एक जाति ; (१ १, २६६ ; मा ; प्राप्त ; से म, १६)। असर्विमयपुत्त पु स्यायैशिकपुत्र] इस राम का एक देन सुनि को संगतान गर्वनाय की परम्यग में थे , (मग)। ारंजर पु [कालप्रकर] १ दश-विगेप , (पिन)। १ पर्वतिहास , १ भावम 🕕 हेर्स काल्डिस । ालक्ता यह [दे] १ निर्मर्तना इरमा, स्टहारमा । । निर्वासन करना, बाहर निकाल दना । "ती तेरा र्गप्य भण्या, विग ' पुना कालकवरियक्त मने, ता सा गेमेरा साइ तर्यनमुह, सङ्कालंब नंग इस न हाइ ता बाह दस्त्रीय , दे काला तच्छीत, पुनर्विष्टनका विद्या विद्यान रे वर्षमा सुरा ३६६ , ८०० ान्यक्त हुन [कालाक्षर] १ इत्य इत, इत्य हिन्ह : वि सन्परिक्षितः "सालक्ष्यर्म्पविषयः विस्तिसः

वे विवरीतमारिक्त " (गा =s=)। कान्त्रवरित्र वि [दे] १ टालच्य, निर्मत्वंतः १ निवासित . " तहति न विस्माह दलहो मधाहरलदाए संगम. तनी कातक्वरिको विद्या " (सुरा ३००); "ती विद्या वानेयं कनस्मित्रों " (स्या ४८८) (कालकवित्र वि [कालास्टिक] प्रवर-तान वाता, मिलितः "में तुम्हारां मध्यारां मध्ये भई एउटा कालक्वरि-धो "(यम्)। कालग । पुं [कालक] १ एक प्रतिद जैनावार्यः (पुरक कालय । १४६; २४०) । १ श्रमा, मनगः (गात) । हेती काल ; (स्वा; टा ६८६ ही) । कालय वि [दे] धृर्त, हम ; (दे २, २=)। कालबहु न [है, कालपृष्ठ] घनुर ; (ई. २, २=)। कालत्रेसिय पुं [कालवैशिक] एह वेग्या-पुत्र ; (उन २)। काला की काला | १ म्याम-वर्ष वाली ; १ तिस्कार काने वाली; (बुमा)। ३ एक शन्द्राणी, चनेरन्द्र की एक परमनी : (स ६, १)। ४ बेम्या विनेष : (हन १)। कालि पुं [कालिम्] विहार हा एक पर्वन ; (ती १३)। कालिया मी [दे] । गरीर, देह; २ कालान्तर; ३ मेप, बाग्सि; (दे २, ६०)। ४ मेप-मन्ह, बाइल ; (पाम)। कालिया की [कालिका] १ देवी-विशेष ; (सुप्त १८२)। २ एक प्रसार का नोसानी पदन (दय **०२**= ही : गाया १, ६)। कालिंग वुं [कालिङ्ग] १ दंग-विगेष ; " पना का-तिगडेनजो "(था १२)। २ वि कतिहम देश में उत्पत्न , । पडन ६६, ११)। कालिमी माँ [कालिङ्की] बन्हो-त्रिमेप, त्रवृत्र रा गाउ , (क्रम १ ।। कालिजण न दि] राज्यित, स्थान स्मातः सः परः . व 3, 36) (कालिजणी की [दें] जरा दया । दे २, २६)। कालिजर पु ने कालिङ्जर 🕽 + इन किरोप , (पिन) । वर्तन-विशेष , । उन १३)। । न वंगन-विशेष ; ्यञ्च ४८,०। । त्यं स्थान विराप , (ती ६)।

```
माहर हि [ दे ] १ गु. कमत । २ रम, पूर्व, ( दे १, हिन्दू क्यों [ इति ] स्पे, दिस, तिस्त ,
               काहर वि [कानर ] राज्य, रायोंन, क्षानीन , (हे १, ।
                                                                 वा)। 'काम न ['कर्मन ] १ कान, हर
              काहल कु [काहल] १ वाम मिन , (म १, ६६,
                                                                ११)। १ बार्य-हाला (भाग १८,१)।
               भीत , बहि )। र मञ्चल माताज ( क्यू र, र )।
                                                              विं व [किस्] कीन, करा, क्वी, जिल्हा, इस,
             काहरा मी [काहरा] गाउ-स्थित, महा-क्रका,
                                                               बाजना और समूच्य को बनतान बना राजा (है।
                                                               है, इन, वर् , इसा , तिस १, १ : लिए।
            काहली मा [ हे ] नरवी, वुननि, ( हे ३, ३६ )।
                                                              बुज्लान मानियां बाउ मानवंश किमानिः (१
           काहल्यों त्यां [दें] १ तर्ष करने हा पान्यादे , १ ना,
                                                             उपा स [ चुनः ] नव तिर, मिर क्या ? ( रा)
            जिम पर पूरी बरीर पत्ताचा जाना है . ( ३, ६६)।
                                                           विकत्ताव्यया देशो किकायव्यया , ( सक्त्र्
          काहार द [ रे] ब्हार, धानी कोर दोने का बाब करने बाना
                                                          विकास वृ[विकान्] मा नम र त न
         काहावण वु [कार्यायण] निक्डा-किरोव ; (हे २,०१ ,
                                                         सिंबर 3 [ किटूर ] कीन, बहा, दन, (ह
                                                          ११३)। भाषा वु (भाग्य ] १ वर्गण, ल
        काहिय वि [काधिक ] क्या-बार, कर्यं करने वाता ,
                                                         रे मच्चुर, निच्यु . ( मच्यु १ )।
                                                        विकरी स्त्री [ किड्करी ] रूपी, नेवानी ;
      काहिल वृ[दे] गातल, काला, त्यी—हा,(वे
                                                       विवायन्त्रया भी [जिल्लीस्थना] सा ह
                                                        वानना। मृह ति [ पृष्ट] कि हर्नच विन्तुः, तम
     काहिन्तिमा स्वी [दे] तवा, जिन पर पूरी बादि पद्यका
                                                       भीवडा, बहु सनुन्य जिले बहु न सुन्त परे हि स
                                                      वाय , (यदा)।
    काहीहराण न [कारिप्यतिहान] प्रमुख्यार की मासा से
                                                    विकिस वि [ के ] महेर चन , ( ११, ११)।
                                                    कितियमङ नि [किस्न्यमङ] इस्तरा, व
   काहिय [कदा] कर, किन तावत है (हें २, ६६, अन
                                                    विमे कह व स्था पट हि क्या किया जाय , ( ह
                                                  किकिणिया लो [किडिणिका] गुर रही
  काहेंख स्वो [ दे ] गुन्वा, ताल स्ती , ( दे ३, ११ ) ,
 कि देखीं कि ; (ह १, २६, १३)
                                                 किंकिणी स्तो [किंदिणो] इस स्ता
कि तक [ क ] दाता, कताता, "डुन्डिव काले" (सिन
 स्र-)। कार-किरबंत, (स १,६०,३,
                                                विजितिह ९ [ विद्वितिह ] वृत्र कोह कि
                                                 बीन को एक जानि , (राज)।
केस देशो काम ध्वरून ; ( काम ६२६ , प्रासू १६ , प्रास्
                                               किंच म [किंडच ] समुख्य पानक मध्यम् हो
                                                भी। (सर १, ४०, ४१)।
भ देखां किय=हप , (षर् )।
                                             किंचण न [किंच्यन] । स्था-राण, स्तो,
र्जन में [कियन्] किलां; (स्व)।
                                              रेप्ट्रि)। रमका हिन्दा (सर्।
मंत देखें करांत , (मन्तु १६)।
                                            किंचतिय वि[किञ्चिर्धिक] स्व गर
गडिआ ह्यों [एकाटिका ] गवा वा टल्का साम
                                           विजिन्न म [ किञ्चित् ] मत्य, हिन्न, म'डा (1
                                          किविसम्ब है [किडियन्सात्र ] स्वस्त स्
```

विभूग ति [किन्यदुन] रह का, पूर्व प्रव (भीत)। किमान पुं [किसान] स्वन्युन, गान का वीतर मह क्रिजनक हुं [क्रिज्जनक] पुरानेतु, प्राप्त . (गापा 3. 3 11 किंजक्य पु हि] जिल्लान किया का पेट् ; (दे के, क्षिणेट् (मी) म [कि.मिट्म्, कि.मेनन्] व्य क्या ? . (पर्; एसा)। विन म विजन) परनु, र्रोजन (सुर ६ ३)। किंगुण को किंगुण : (गर)। क्रिंदिय न [क्रेन्ट्र] १ दर्नल का सन्य-स्पन ; १ ज्यो-ति। में इन्द्र लाग पाला; पीवा, गादशी और दमशी स्यान, " शिवपरणरियक्ति, " (सुरा ३६)। किंद्य पु किन्द्क विन्दुक, ग्रंट ; (भ्रवि)। किंघर पु [है] छोटी मजरी ; (दे २, ३२)। बिंतर १ [किन्तर] १ व्यन्तर देशों की एक व्यति ; (पर १. ८) । २ भगवान् धर्मनायको के शासन-दर का नाम ; (मंति =)। ३ वर्मन्द्र की स्थ-मेना का क्रमिति तेदः (डा४,९)। ४ एक इन्द्रः (डा२, ३)। ४ दव-गन्धर्व, देव-गायन ; (कुमा)। ९ किएड किया है काउ जिल्ला बहा एक मधि ; (जीव ३)। किनगी मी [किन्नशी] दिला देव की मी : (दुना)। किंपय वि [हैं | इस्ता, शहन ; (दे २, ३९)। किंपाग ९ [किम्पाक] ९ इल-विटेप : " हुनि मुहि वि-य महरा विस्ता विकासम्बद्धान् । पुन्त ३६२ और); २ न उन्हा फ्ल. जो बन्दने में भीर स्वाद में स्नदर परन्तु सन में प्राच का समाहरता है। "विवयस्तीसमा विस्ता " . 27 49 432 , किये म [किसपि] हुए सं (सम्हर्ष क क्रिप्रिम : क्रिप्राय) । बस्त्य दवा को एक जाति । क्षत्र । । शह इस्त हिस्स केहा इत्त्र हा उत्त ा केर यह असंबद्ध ह विकास का दुस्त है। के ह राज्या राष्ट्रीराने इव 💎 हा 🗸 ९ -वह ३०० करा किएर किया का का का का किएक क बीए 'हरका बहु' हाला है। (हाखा) क्रियोच वे के कियानन केर तथा भूता हुआ। ह क्रिमेल्ड प**्रक्रिमध्य**्रकर प्रज्ञात (बहु रूप)

मगः(द२६)। बिंत्त्व र विंत्तुन दिनिश्चिर एर निर्माशमः (解 3350)1 किन्त्र हुं [किंगु के] १ पडारा सा पेट, टेब, टार : (सुर < द }। २न्पडाय का पुत्र: (है १, ३६. =1 11 किविकोडि पुंहि] सर्व, सौर ; (हे २, ३१)। किविकंधा मां किन्किस्या] नगंभिक्ता ; (मे १४, 28) 1 किरिकेंबि पु किल्किनिय] १ पर्न विर्णय : (परण ६, ४४) । २ इम नाम का एक गता; (पडम ६, १४४; १०, २०)। पुर न ['पुर] नगर-विशेषः (पहन ६. ¥8)1 किञ्च ६ [कृत्य] १ करने येत्य, वर्नव्य, करन : (सुरा रहे हैं : बुना)। १ वन्हनीय, पूजनीय ; 'अ निहुटमा न पुरमों नेव दिच्चाय सिट्टमा " (दन १) । ३ पूं एहन्य. (सुम १, १, ८)। ८ स् शास्त्रीतन मनुन्यत, किश इति: (भाषा २, २, १ ; सुम १, १, ४)। किन्न्यंत वि [पृत्यमान] १ किन विया जाता, कुटा बाता : २ पीड़िन दिया जाता, सनाया जाता ; (गर)। किश्चण न [दे] प्रचातन, धंना ; " इत्यिक्दंबरा छन्नर्-द्युव्दर्ग दिञ्चर्ग च पोनर्ग" (चाप १६ ---पप ३२)। किह्या मां [हुन्या] १ काटना, वर्नन ; (इन १ ३४६) । किया, बाम, कर्म : ३ दन बगैर की मूर्निका एक भेद ब्राइनिने, ब्राइ: ४ राम-विनेष, महामारी का रोग. 1 # 3 992 6 किद्या उने कर≠ई। किल्बिक (कृति) । नगर्यम इत्या: भन्म: क्ष बंद्र ३ मुक्तिय माजाय ४ क्षीनाम मन्त्र । १ १,५२, = प्रः पाउरण । प्राचरण) नगहर रिव हर पू (बर) स्थार कि 200 किथि ह कियथिया देशका स्व स्व इर ३३८ र किन्छन्द्रिन्छ्] - इतः कः

```
र हि. कार-माज्य, कर-पुष्ठ , (हे १, ११८)।
             निषि हु ग म, मुक्तिन म : (मु ८, १४८)।
                                                   वार्असङ्ग्रहण्यागे ।
           कि जा ति [के य ] गांधन केत्व, " मन्जिन हिंग्यान बा"
                                                             मिंग, (मन ह)।
          केरजंत देखा कि = है।
                                                            विनेष , (मन €)।
          हिन्ता है [ इन ] हिना गता, निर्मित . ( रिन ) ।
                                                                                <sup>कुमह</sup>र न
                                                           Pin, (m E),
          ह नह [ कीत्रंयू ] १ म्लाख कम्बा, स्तुनी कम्बा । १
                                                                               I E EELS
                                                          िम्म ( गम ६)।
         कर्णन राजा । ३ वहना, बालना । दिस्त, विदेश,
                                                                               याज व [
                                                          विमेष . (मम ६)।
        (धाला, मन)। वह-विद्धमाच, (निव्दर्भ)।
                                                                              'विंग न [
                                                         विमान ( शत ह )।
       सर-विद्वस्ता, जिहिता: (ज्य रह, रूप)।
                                                                             निहेन शि
                                                       हिद्वियायम् न [ इःस्वायम् ] रेर विमन
      हेर-किट्टिमय, (क्म)।
     किंह मीन [किंह] १ यानु का मक, मीन, ( का ६३०)।
                                                     किंदुनसम्बद्धिमम् न [ कृष्ट्रानसम्बद्धाः
     र रंग निरोष , (ज ६, ६)। ३ तेल, थी बतेत स
                                                      का गृह वेद-शिनन, दर-मान , (मन ६) द
    मैत। मी-ही, (मा १३)।
                                                    किडिव [ किटि ] सार, नमर । (हे १, २४१
  किहण हेती किसण , (हुए है)।
                                                   किडिकिडिया मी [किटिकिटिका] मूर्ग
  किहि मी [किहि ] १ क्रमीमन्य किए, विभाव सिरेर,
                                                    बाहात ; (शादा १, १ - १४ ४४ )।
  . म्युव्यक्तिहोतः मयुक्तमोत्व्यक्तिमका विद्यो » ( वेच 12,
                                                  किडिम वु [किटिम] रेत-निर्मेष, एक वण हा क्
किहिय वि [कोर्नित ] १ वर्नित, प्रमन्ति , (मूस ३,
                                                किडिया मी (दे) विद्वारं, छाता इतः (म १८३)
                                               बिट्ट यह [ बीट्ट] मालमा, कीम बग्ना। बह-सि
                                              किंदुकर व [ कीडाकर ] कोश नगक , ( मीर )
                                             बिहा की [कोडा] १ कोडा, यन, ( विशा १, ०)
```

()) र प्रतिशादिन, स्थित , (सुम २, २ , तो ७)। किहिया सी [कोजिका] कन्योनेकिंग् (राज्य 1) किहिल न [किहिल] १ ननी, वालों , निन वादि का तैत रहित पूर्ण (कानु)। २ एट यहान का मृत् नृत्ता,

किही बेलां किह = किह । विद्यास्य वि [किन्ह्योरन] माम्य में विना हुमा, एस हार , मैंने मुख्यें मादि का किए कालें जिन जाता है जन नग्ह मिना हुमा , (उर) ,

विष्ठ वि [वितरह] क्रेंग-तुष, (वग है, है, जीत है)। विह वि[इट्ट] जाता हुमा, हन-विस्तावित, (कृ 12, है (, मा है, १) । १ न देव-निमान विशेष, ध ने देश निरिक्ट निर्मित्समध्य मन्त्र हिर्द (१६) बार्बन्न्य सर-कार्यं उसमा सिमाना देवनाम् उत्तरमञ्जाः " (सम् १६)। किटि मां [हाएं] १ काम, १ मीबाद, मार्थिक । ३ देव-वितन किएत (मा E)। कुछ न [कुट] दर-मिन्द-किंद्र (गम ६)। भोस न [भाग]

कर्माकृषाः (स १० - पत्र ११६)। किहाविया भी [क्षीडिया] कील-एकी, बातक नेत चेर कारने वाली नहें , (वादा १, १६ - वर १११) किहि वि [हे] १ संभाव के लिए जिनका एकात स्व वामा जार कह, (का १)। १ त्यकि, वह, (किटिया न [किटिन] गन्यानियों का लह राज, जो है का बना हुमा होता है ; (मग , ;)। हिया मह [को] साहिता। विषय . (हे १, ११)। बह - वे हिन्नं हिनावेमाले हव बादमाने (

१)। कियंत, (सुम १६६)। यह - कियं (ति १०३)। यता - विमात्तः (ति १११)। किया है [किया] १ कांक किट, कांक को काल (बड़्ड)। रे मान-महिन, रे माना पान, (पुण १०० क्ला-किन्न (क्लाह) जात न [जुका] क्लिक्न केल किल्ला केल किल्ला कियास मि [दे] शोधित निवित्त (प्राप्त ।) । । । किषण न [बन्नण] हिन्ना स्त्रोन

```
केणिकिंग बार [किणिकिणयू] कि कि आगात | किण्हा देनी कण्हा ; ( रा. १. -- वर्ग १११ ; इस्म ४
कृता। कृ-किणिकिणितः (की)।
किणिय वि [ प्रीत ] दिना हुमा, खीरा हुमा : ( चुन
X3X ) 1
किंपिय पूं [किंपिक] १ सहस्र की एक जाति, जो
 द दिल बनाती भीर बहाती है :
                             ३ हे १ र समी
 इतने का बाम करने वाली मुख्य-जाति ; " विरोधा व
 बालमां बनिनि" (पेंचू)।
किपिय न किपिन विद्यानिक (गप)।
किणिया मा [ किणिका ] होटा सेट, पुननी :
    " प्रस्ति सई अद्वितिस्तियुजनस्वितियर्गेनिन्छा ।
      महिएक्षक्रमहोष्ठक्षविमाहा कहि हिँदेति "
                               ( 4 120 ) ;
किणिम मर शाण र ] राजा र सना, नेब रूना । विकि
 नड ; (निंग । ।
किणो म किमिति देशो, वित तिए? (दे २ ३५ :
 हे २, २९६ ; यम ; सा ६० ; महा हे।
किएम वि विर्मित १ उन्हेर्न, तुर हुमा; "दाद-
  क्षित्राच बहुदर्शयम् (सुर १०६)। १ लिए, बँका
  हुमा (१ व ६ ) १
किएमा १ विरुप्य रे १ पट बन्हा इन्त-तिनेत, जिन्हे दाम
  क्याहि (सहद: क्राचा )। २ स् सुग-बीज, सिन्त-
  यह द दील, दिन दा तक दरश है : ( इन १ )। सुरा
  मी स्वा विषयन्त के प्रतिकारी हो मीता.
  (यहरू 🕠 ह
 बिष्पी हि है । समान् सहसम् । इ.२, ३० ०,
 किएयां म किन्स प्रमापत समय (उर ।
 विषयार त्या फिनरा ३ ५ रूप इस .
 किएपा के किएमें दिया कर का कि लिए स्मान्य
   tazen den ilifazio el dolle
 বিজয় দ কিব্| এল লাল লাল্য নাম্য
   ate in the contract of the contract of
      8 - Jan . 1
  कियर क्षेत्र ।
```

क्रिक्टर र है हैं । इसके क्रा

```
1 ( 5 8
किनव प्रे किनव दिनस्य, दुससी : ( दे ४, = )।
कित्त डेवो किह=इंतर्य । मित-हिन्द्रम्मं : (परि )।
 मंह-फिनइसाण : ( १व १११ )।
कित्तण न [कीर्सन ] १ न्हाम, म्हुनिः "ता य हितुन्त
 मॅनि किलाँ" (प्रजि ४; मे १९, १३३)। २ वर्णन.
 प्रतिसद्द्यः ३ कथन, द्वतिः ( तिमं ६४० : गडडः युमा । ।
किनवारित्र देखं कनवीरित्र : ( ग्र = )।
कित्ति मा किति । १ यग, कित्तं, सुत्वाति : ( मीत ,
 प्राप्त हरें : ०४ : =२ )। २ एक विद्या-देवी: ( पटम ०.
 १८१)। १ देनतिन्दर् की सरिहासी देशी; ( स २, १--
 पत्र ७२)। इ डेब-प्रक्रिम विगेश ( गाया १, १ डी - पद
  ea)। १ न्तरमा, प्रशंसा ; (पंच ३)। ६ नीलरन्त
 पर्नेत का एक मियर ; ( जं ४ )। अ मीयर्न देवलेल की
 एक देवी; (निर)। मधुंद्रव नाम का एक दैन सुनि,
 हिमंड पम पांचंब बजंबब ने दोला टी यी : ( पडम २०,
  २०४)। 'कर हि किर ] १ यगस्य, स्वाति-राग्यः
 (यय १, १)। २ ई सन्तान् झाहिनाय हे एह पुर
  का कम ; ( गत ।। चंद पुं चिन्द्र ] हा तिगर.
  (धम्म)। धम्म पुंचिन दिवस का एक गता .
 (इंग)। यर इं[ घर ] १ हा दिना ; (तंडु)।
  २ एट जैन सुनि, इसंग बज्रंदर क गुरू; (पाम २०,२०४) ।
  पुरिम ६ [ पुरुष ] हर्ति-प्रयत्न पुरुष, बार्नुद्र बर्गरः ,
  (इ.६)। सवि नित्र शिनियुषा मिनी
  [ सर्वा ] ९ वट जैन साला, बाट ) । २ इद्रान यर
  र्टी राष्ट्रियोग रहे १६०० व वि दि हो सानि छ।
  ವರ್ಷ ಕೇ
 विलि का (होंने ) पर्न, त्याः पुर क्रमण कारन
  ें इ.स. यात्र वात्र कातार
 क्रिनिम अक्रिनिया । बन्धः न्यः
 क्रिलेय वर्षिमित्र राज्य प्राप्त र स्टब्स
       The state of the state of
    ÷रापः, ७ स्थाउनः
 विनिया । वियम् । ५५
 बिस्त ः विस्तृतः 🖟
 विष्णाद कर कारण । ।
```

```
4 1/2 425 Marie 425 Marie 18 3 102)1
                      निति दुगम, मुन्डन मा (न्रट, १४८)।
                                                            I think manit !
                    किन्न में [कंय] माहित इत्यु व करित्र हिरामान क
                                                                     fit (mz);
                   विस्तात देशों कि = है।
                                                                    frig. ( my 1 ) ;
                                                                                         THY .
                  वितिम वि [ इन ] हिना गता, विभेन . ( वित्र )।
                                                                    fing
                                                                                         Tit #
                                                                           ( FR : ) ;
                  किह मा [क्षीतंय] १ स्ताम करता, रहुरी करता । २
                                                                                        4 لندل
                                                                          1771)1
                  वर्णन करना । ३ वटना, बातना । दिवह, दिश्व
                                                                   Fin 1 142 ) 1
                                                                                        ियम् न
                 (यावा, सम्)। वह -विद्याल, (विश्वः);
                                                                  fora (mail
                                                                                      [FT 5 4 [ F
                 गर-विहरना, जिहिना, (का रेट, का)।
                                                                हिट्टिकाम्ब व [ इन्ट्रमानवं ] का नेतन
                हरू—किहिसव , (१ग)।
               किह मान [किह] १ यन वा मन, मैन, ( रा ६३०)।
                                                               विद्वारमञ्जासम्बद्धाः व [ पूर्वारमसम्बद्धाः
               र रंग किंग्यु , (क ६, ६) ६ रे तेंच, वो क्वीर का
                                                               का तह देव तिमान, देव भरत । यम १ वि
              मैन। भी-द्वी, (मा १३)।
                                                             बिहित हि हिलि | तुरा तथा । ह १ सा
            किहण दता किसण , (६८३)।
                                                            किल्लिकिटिया था [किल्लिकिटिका] स्र
            किहि वो [किहि] १ क्योगमानिय किया गिर
                                                             Mars 2 1 chair 1 ' 4 dd 34 11
            " ब्राव्यक्तिक्षेत्रः क्षात्रमानाम्यक्तिकाले विद्यो " ( वेष १३,
                                                           विद्या वृहिक्ति है। में निम्म ल्या सन
                                                            (महम् ११ मग ।।।
          विहित्र हि [कोर्नित ] १ कॉर्ने, उत्तरित ; (वृत्त ३,
                                                          विदिया भी [ के ] शाहर, जारा हम , । म हा
           १)। र प्रतिशिवित् विवित् (गुम २, २ ; स ०)।
                                                         हिट्ट बट [बर्रिट] गानना क्षण छना। सन्ति।
         किहिया को [कोटिका] कण्यके किनेव । (कण्य १)
                                                        किंदुकर वि बिनेडाकर | बान्। राग्य (बीन)।
       किहिल व [किहिल ] १ वर्गी, सालों , जिल मारि का
                                                       विद्वा सी [कोडा] १ काम २२ (मा १,३)।
        तीत गहिन चूर्ण, ( क्राणु ) । १ एट बहार का गृह गूण,
                                                        कान्याकृत्याः, ( स १० -१४ ८१.
                                                      हिद्दाविया की [कोडिका] धान-पः।
      किही देखी किह निहा।
                                                       वजन्दर काने बच्चो सह । ( वच्चा १, १।
     किहीकम् वि [ किह्हीरुव ] बाएव में निवा हुमा, कस
                                                     किहि वि [ दे ] १ मंत्राव के 'लग जिमका गहर
      कार , जैव मुख्यं कादि का कि उनमें जिल बाता है जा
                                                     वाबा आहे का , (बा ३)। ३ व्यास, ६
     तरह मिना हुमा , ( उर )।
   बिह ति [स्तिष्ट] स्तेग-तुकः (सत् ३, १, अतः ३)।
                                                   निद्विषा क [ किडिन ] पन्यारीमा ४। ४६ रव.
  किंद्र वि [ शत्य ] जाना हुमा, रेज-विसालि ; (तर ११,
                                                   हा बना हुमा होना है , ( नग .
   है (, मा है, है)। हज देव विमान स्थित, "में हेवा
                                                  किया सह [करें ] सर्गाता । १६वर् (१०)
   मिरिक्क मिरिसमध्ये मन्त्र विर्द (१६) बातानाव स्थ
                                                  क - वे किया विकास्ताम एवं सन्ताम
  ल्लांडमार्व विमान इंदनाए उपलब्ध " (मा देह ) ।
                                                  1)। कियंत , (प्रा रेट्र । । नह
किटि मी (रुप्टि) १ कांग, १ शीवान, मारांख । ३ देव-
                                                 (विश्वा)। यस विवास . प्रा
 विमान विरोध , (सन १)। कुट व [कुट]
                                               Tam 3 [ fam ] , winfac, un .
देव-शिमाम-विमेष , (सम हं)। धीसन व धिष्यों
विकामान्त्राचीत् ( तम ह ) सत्त व [ सुतः] निमानः | कार्याः व रूप्तव्याः ( कार्याः
                                               (गडः)। १ मान-मान्य, ३ माना १४ मा
                                             कियास्य हैं [ दें ] कॉमिन, विमृति । पाम
                                            Bulled of Bulled | Break to the total
```

```
भागारण- विस्तु
                                                  पाइअसहमहण्यामे ।
            चितिया कर [किचिकियम्] कि कि मासद (किच्हा केने कच्हा ; (कार, १—१० वर्ग ; क
            त्म । का -विणिकिणिन, (केंद्र II
            भिष्य हि [बोन] हिन् हुम, स्टीह हुम . (स्ट
           rie) į
                                                          िनाव हुँ [ किनव ] द्नस्त, तृष्णी : ( हे ४, = )
           इंदिन हु [किविक] १ सहस्र की एक करी, को
                                                          किन देशों किह्नहोंनेत्। सर्व-हिन्द्रमाः (पर्ट
          कि स्टें के स्वति हैं;
                                                           <sup>मॅ</sup>ह -किनाइसाम : ( पत्र १९६ )।
                                    3 ) 1 3 1000
          निने के कम बने को सुक्त-वर्ण , " हिरिका ह
                                                         कित्तव व [कीर्नन ] १ न्त्रव, म्हुन, "क र हिन्
          ालको दलिखा । पंत्र )।
                                                          सीत किसी (सीते ४ ; में १९, १३३ )। २ को
         भीष ह [कियान] कार किये : ( राज )।
                                                         श्रीतातम, वे काम, दक्तिः ( विसं ६४० ; गडरः दुमा ,
         हिन्या में [किनिका] हेट चंड, दुन्में :
                                                        कित्तवास्त्रि देशं कत्तवीरित्र ; ( छ ८ )।
           " इस्लेंद्र में महिल्लीसीयुक्तिहरिक्तीसाम् ।
                                                        किलि मां किलि ] १ का, केलि, मुख्यति ; ( मीत
             मिल्लाक्तराव्यविकातः स्टिनि हिन्तु ।
                                                        प्रमृ कहे : अप ; महे ) । दे एक विकालीकी ( प्राम अ
                                                        9 69 ) [ 3 केमरिन्ट की क्रिकेट को देखा ( दा १, ३-
       हिष्म मह [राष्ट्र ] होता समा, तेव सका । हिर्दिः
                                                        पत ७२)। ४ देव-महिना विशेषः (गाया १, १ दी- पत्र
       न्द्र . ( न्दर . ,
                                                        त्रे )। १ न्तान, प्रसंस ; (१५३)। ६ नेतान
      हमो प्र[किसिनि] क्यें, किन हिए? (देश ३५)
                                                       पर्वत का एक मिल्स ; (वं ४)। अ मेरियम देवजोड की
      ह ३,३१६ प्रमास्य स्थान्त
                                                       िह देवी; (लिट)। = पुँ इन समका एक बैन सुनि,
      हत्या वि [क्रीर्य ] १ उन्होंने, तुर हुमाः विस्तृ-
                                                      बिसके पन पांचवे बजरेव से दोना की थी ; ( पडम ३०,
      क्लिक ब्हेर्नाइक (स १०१)। व किर, देश
                                                      २०१)। 'कर वि[कर] १ काल्झ, स्वतिकरहः
     群、 まもり
                                                      ( रच १,१)। १ दु मध्यम् साजिमायकं एक दुन
     क्षण्या हु [किण्य ] ९ वट बटा हल-किंग, हिन्से ट्रस
                                                      का हम ; (गत ।। चंद् ५ [चन्द्र] हर किंग :
     हरू है (राउट काला)। १ में मानकी है सिन्
                                                     (यम)। घम्म इं[धर्म] इन नाम का एक गरा ,
    रत व दोह, हिस का हर कार है : ( दल १ )। सुरा
                                                     (देन)। यर ६ विस् ] १ हर-विसंद ; (देहें)।
    मं [ सुरा ] क्य-इस र प्रति स्वे हुई सीता;
                                                     १ एट बैन मुन्, हुत्तर बल्डेड के एक; (पान १०,१०१)।
    ( == 1
                                                     पुरिस्त पु [ पुरुष ] क्टीन-प्रधान पुरा, प्रमुदेव बर्गाः ;
                                                   (इ.६)। महि[मन्] कर्निनुदा भई सी
   केंद्रज हि [ हे ] राज्यान, राज्यान ; । हे २, ३० ) ।
                                                   मिनी ] १ एह जैन नाव्यं, (माट)। १ मारत पन
   केटरां म [किनम् ] प्रस्तवह प्रस्तवः (दर्व )।
                                                   बर्ती की एक मीत (इन १३)। 'य वि [ही काभेक,
  केटल इन किनर : वं १ ; रप: इट)।
  केटच्या हा [ काम् ] क्यां, क्यों का, क्या ? परिण्या तका
                                                  कान्यः ( मीर )।
                                                 कित्ति को [कृति ] वर्न, वनद्राः 'कुटे क्रम्टाच करकिन'
  Er 47 ( 184 2, 5-42 902 ) 1
                                                  त् ( स्त्र महि । सा १४० ; सामा ६४ )।
 किन्तु ह किन्तु देश मही हा मुक्ट बाल्या :--१
                                                किलिम वि[इत्विय] क्लाक्स, न्वडीत (पुर २८;
  क्त , १ किहें , वे सहस्य ; ६ स्थल, स्थल : १ विक्रान्त
                                               कित्तिय हि [कोर्नित ] १ इक्ट, स्थित, "स्थितिहिस्स-
किएह क्यों कपट्ट ; १ ता ६३ : रामा १,१ ; उर ६,
                                                हिसा" (पर्टें)। २ ज्यांनिद्र न्डाफिः ; (ड २,४)।
                                                े स्थित, प्रतितितः ; (तेतुः)।
किएह = [दे] १ बर्गाट काहा; ३ संदेद काहा; (दे
                                              कित्तिय ति [कियम् ] हिन्नः , ( यहः )।
                                              किन्त हि [ क्लिन्त ] मर्च, गंजा ; (हे ४, ३३६ )।
                                              किन्द्र देखें कण्ड ; ( इस )।
```

```
मिति दुन में, मुन्तिल में : (कुट, १४८)।
                 ES-3E ($ 1, 15C)!
                                                                                वाह्यसद्महण्याची ।
       किस नि [ क्षेप ] राहिन केल्यू व महिल्ल हिल्लान वार्
                                                                                                 स्तिन, (नम ६)। केलच न [ध्यत]क
                                                                                                                                                    [ किस्त-किया
     किंग्जंत देखें कि = है।
                                                                                               िम्म , (मम ह)।
   किज्ञिध वि [ एन ] विशासवा, निर्मिन , ( विशा )।
                                                                                               निमेप , (मम ह)।
                                                                                                                                  ध्यम व [ अव] रेगी
  किंद्र मह [ क्षीनंयू ] १ खाना नम्ता, त्त्रुपी कम्ता । २
                                                                                             विमेश , (वम ह)।
                                                                                                                                  येक्का न [ 'वर्ष ] हिन
   वर्णन बन्ता । हे बहुना, बोलना । हिंदब, निहेंब,
                                                                                            विमेष, (मम ह)।
                                                                                                                                 °िया न [ श्रुत ] तिन
  (माचा, भग)। वह-विद्याच (विश्वः)।
                                                                                           िमान , (गम ह)।
                                                                                                                              सिंह व [ शिन्द्र] एक श
 गर-विहरता, किहिला, (जन रह, क्ला)।
                                                                                       बिहियायम न [ इन्ट्यायसं ] देव विमान विगेष, (न
हेह-किहिसव, (का)।
केंद्र अंत [किंद्र] । पातु का सक, मैल , (जब १३२)।
                                                                                     हिंदुचरवद्भितम् व [कृष्ट्युचरायनसङ्क ] स्व वय
र रंग विगय . (क १,४)। ३ मेल, यो क्वींव क्य
                                                                                     का वृद्ध देव-तिमान, देव-मान , (सम ६) ६
                                                                                  किंद्रियु [ किहि ] ब्राग, मझा : (हे १, २६१) ।
रण हेगो किलाण , (१२३)।
                                                                                  किडिकिडिया मी [किटिकिटिका] गूनी हा
हे थी [किहि] ने फ्रांसिंग-विगेष, विभाग विगेष,
                                                                                  भावाव । ( वादा १, १ -वम ४४ )।
(इ. विनेहीम् स्राप्तायः मूर्यावसम्य विहो " (येव १२,
                                                                               किडिस वु [किडिस ] रत निर्मेष, एक तान द्या ना र
                                                                            किडिया मी [ हे ] निर्देश, जहां हुन । (म १६२१)।
िति [कोर्निम ] १ वर्षान, यगनिन, (गूम ३,
                                                                           किंदु घट [ कोडू ] श्वतना, श्रीस करना । कह - किंदु न
   र प्रतिगादिन, स्थिन , ( मझ रे, १ , टा ०) ।
मी [कोटिका] बनव्यनि-विशेषः (काम १
                                                                         किंदुकर वि[कीडाकर]क्षेत्रा-कारक (धीर)।
                                                                        किंद्रा सी [बाह्य] १ बीम, मन, (शिमा १, ४)। १
[किहिल] १ करों, मागों, जिन बादि का
                                                                        वान्यावन्याः, ( स १० - वर् ११६ )।
पूर्व , ( मणु )। १ एक प्रकार का गृह कुछ,
                                                                     निहायिया भी [मीडिका] कील-पानी, बालह से
                                                                      वत-प्रत् काने बाता शर्षे , ( वादा १, १६ - वर १११)।
केंद्र वहा ।
                                                                  किटि नि [ है ] १ गंबाग के लिए बिगवा ल्वान स्वन में
[किट्डोहन ] मापन में निता हुमा, न्या
                                                                    वासा जात कर . (बर ३)। ३ स्वतिर, वह . (ब्रु
र्ष माहि का कि उनमें मिन माना है जा
                                                               हिटिया न [किटिन ] गन्यानियों का गक बाव, ओ की
च्हें] बनेग-तुक, (भग १, १, अंत १) ;
                                                                वा बना हुमा होता है ; ( मग ०, ६ ) ;
मिता हुमा, हत-विहानित, (सुर ११,
                                                            किया नह [को] गगीला । किया . (ह ०, ११)
)। १ न देव सिनन शिष्य, भ से देश
                                                              वह — है किले डिमार्नेमाने हव बाद्यान " ( मद्र :
हर मान हिंद (१६ ) कानुस्मान मार-
                                                            १)। किर्णन, (नता १६६)। नह किर्णिसा,
रेरिनण टाराम्मा " (नम ३६ )।
                                                           (ति इत्ते)। यहा विकासः (ति इस्ते)।
स्थेन, र मीनार, मन्थेस । र जेव-
                                                        हिन है [किन ] । कांन किह, कांन की किन्ती.
/[جور] و عن ا( تا الله
                                                        ( 432 ) | $ 4101-1024 $ 414 44 ( 431 ) **
(तार)। याम व (योग) | दिवाय व (क्षण्य) किस्ता, वर्गात, वर्गात,
(1) 27 3 [ 37 ] hara | East 50 [ East (27, 27, 27, 12)]
```

काणाकण - किन्ह] किणिकिण मक [किणिकिणयू] किए किए भागात | किएहा देखें कएहा ; (टा ४, ३—४व १४१ ; कम्म ४ किणिय वि [मीन] दिना हुमा, स्सीत हुमा . (सुत किणिय हुं [किणिक] १ महुन्य की एक जाति, जो है विदित बनाती और बजाती है ; 3)। २ रस्ती बनाने का काम करने वाटी मनुष्य-जाति , " विधिया ह बग्नमां बन्तिति " (यंबु)। किणिय न [किणित] वाय वितेष : (गय)। किणिया सी [किणिका] छंटा कोडा, कुननी . " मन्त्रिय महः महियानिर्मायागुष्यन्यकिरियवीनिरन्ता । महिराजाकुमडोच्छायनिगदा बद्धि हिंडनि " किणिस नर [शाण ३] नीका क्रमा, नेत क्रमा । स्थिन किणो म [किमिनि] क्यों, किन लिए? (दं २ ३१; है २, २९६ ; पास : गा ६० , नहा)। किरण वि [क्रीणें] १ टव्हेंगं, तुर हुमा; "टातु-चिन्तः बर्द्दर्शनस्त्रः (मुत ४०९)। २ निम, पेंद्रा क्तिएण पु [किएच] १ फल बाला वृज्ञ-दिनेच, जिल्ही हारू बन्ता है ; (गड़ड ; ब्राब्त) । २ न. सुग-बीत, विग्न-उत्त के बीज, दिन का दार बनना है : (टन १)। सुरा मी ['सुरा] जिल्ला क फल से बनी हुई महिरा; (गडः)। किष्ण ति [दे] गोभमान, गडमन ; (डे २, ३०)। किएमं इ [कि नम्] प्रनायंद्र झन्त्रयः (दश)। किण्णर देखीं किनर : (जं १ ; गय : इक)। किरणा म [क्यम्] बसी, बसी का, बेम ? "किस्सा छडा किन्त पना" (निस २, १—पन १०६)। किन्तु म [किन्तु] इन ब्रश्नों का सुबक् क्रम्बय;---१

किनच पुं[किनच] युनस्य, जुमार्ग ; (हे ४, =)। कित्त देखें किह=शेतव्। अवि—क्रिन्डम्नं : (पटि)। गंह - कित्तहत्ताण : (पय ११६)। कित्तण न [कॉर्भन] १ स्टापा, म्तुनिः "का यः जितुनम र्मीत कि.की" (कि.ब.४; में ९९, १३३)। १ वर्णन. प्रतिसडन; ३ कथन, स्तिः; (विम ६४० ; गडड; कुमा)। कित्तवास्थि देवां कत्तवास्थि ; (छ ८)। किति मां [कोतिं] १ वन, वीति, मुख्यति ; (मीत ; प्राम् ४३ : ७४ : सर्)। २ एक दिया-देवी: (पटम ५, १९९)। ३ केमरिन्डर की अधिराजी देवी; (टा २, ३— (79=0)1 पत्र ७२)। ४ दव-प्रतिमा विरोप, (गामा १, १ टो - पत्र ८३)। ४ ज्लाचा, प्रशंमा ; (पंच ३)। ६ नीलपन्न पर्वन का एक निगर ; (जं ४)। अ मीयर्म देवलोक को एक देवी; (निर)। = qं, इस नाम का एक जैन सुनि, जिनके पान पांचने बनन्य ने दोना की यी ; (पडम २०, २०१)। 'कर वि [कर] १ यगस्त्र, स्वानि-कारकः (गाया १, १)। २ ५ मणवान् मादिनाथ के एठ पुन का माम ; (गत)। चंद् प्र[चन्द्र] द्रा निगेन ; (धन्त)। धम्म वुं [धर्म] इत नाम का एक गज़ा; (इंम)। घर पुंधिर] १ हर दिनंद; (नंदु)। र एक जैन सुनि, इसर बलाडेब के रुक्त; (पडम २०,२०१)। पुरिस्त पु [पुरुष] कीर्नि-प्रधान पुरुष, वामुदेव बनेगः ; (ब ६)। म वि [भन्] कीने नुका भई औ मिनी] १ एह जैन नाष्ट्रां, (बाह)। २ व प्रश्न चक ब्तीकी एक और (टन १३)। असि [द] कोनिक, यगन्दर ; (यीर)। कित्ति को [शति] वर्न, वनदा, 'कुने झन्दाय कवितनी य" (कात्र = ६३ ; गा (४० ; वण्ता ४४)। कितिम वि[छटित्रम] बनावदो, नस्तीः (हुनः २८: हरत ; १ बितर्द ; ३ सप्टरम ; ४ स्थात, स्थल : १ विकल्पः कित्तिय वि [कोर्तिन] ९ उरण, दक्षिन, "किनिसंदिसन किएह देखी कपह; (गा ६३; गाया १,९; उर ६, हिया" (पटि)। २ प्रगतिन, ज्लाबिन ; (दा २, ४)। े निस्तिन, प्रतिसादिन ; (नेंदु)। किएहन [दे] १ वर्ताः स्पन्नाः २ संबद्धः स्पन्नाः (दं कित्तिय वि [कियन्] किला ; (गडर)। किल्ल वि [क्लिट्रल] बाई, गाँडा ; (हे ४, ३२३)। किन्द्र देगी कण्ड ; (क्य)।

```
कियाड वि [ है ] स्पतिन, मिरा हुमा , (पड्)।
               किञ्चित न [किञ्चित ] १ वाप, वानत , (यह १,
                                                        पार्ञमङ्गहण्णात्रो ।
                रे)। र मान , ब्यामार्थं च स बीवरामाच विस्तित्रण (म
                                                                किसुण म [किसुन] इन मर्थों का स्वर प्रत
               २६३)। ३ पु वालहाल-स्थानीय दन-वानि , (सम |
              13, १)। ४ वि महित, १ काल, तीय ( ( २१ ३)) । विश्वीसम्बन [ वे किस्सिन ] वरन, जान, ( राज
              ( वारी, दुष्ट : ( धर्म ३) । च नतुरं, निमनता,
             (班)1
           किञ्चिसिय वु [किल्यियिक ] १ चाम्बात स्थानीय देव-
                                                             किम्मीर वि[किमीर] १ ब्वर, क्या, (वास)।
            वाति, (य १,४—एव १६२)। १ हेन्स केंग्यारी
                                                             पु रासम-विशेष, जिमको मीम्प्यम में माना वा , (व
           मापु , (भग )। ३ वि मामा, मीन, (मुख १, १, ३)।
          ४ पार-पत को भागने वाला हरिड, वंतु वरीर ; (वाला १,
                                                             ११७) । ३ वंश-विग्रेर, "बाया किमीरवर्षे " (१मा)
                                                           क्रियन्थ हेर्गा क्रायम्थ , ( मनि )।
          1)। १ मागः चेटा वस्ते बाला , (धीव)।
        किञ्जिसिया भी [कीन्यियको ] १ मानता किसेन, वर्म
                                                          कियान देशों कर्मय ; ( स पर्ट हो )।
                                                          किया देनां किरिया; "हर नाम निमाहीन "(१६
        प्रत्योग की निन्दा काने वी आहन , (पर्म १)। २
                                                          ९०४) , " मनगणुनानी सन्ती पन्नविक्तां विवादनों के "
        हेकन केंग-पानी माधु की कृति , ( मय ) ।
                                                          ( का १६६ , लिंगे हेहद ही । कर्य )।
      सिम ( घर ) म [ कराम् ] क्वों, केंने ? ( हे ४, ४०१);
                                                        कियाणं देखा कर = ह ।
     किमण देशों किएण ; ( बाका )।
                                                       कियाणमा व [कायाणक ] विभवा, करियाना, वसने रोग
    हिसान्त्व वृ [किसान्य ] हुए-किंगेन, किंगने हुन्द का समास
     में इतथा या घोर शाप लगने ले जा भर कर धनगर हुंचा
                                                     किर व [ में ] गूबर, गूबर, ( र र, र० । वर् )।
     明:(原見り):
                                                     हित स [ किन्तु ] इन सवी का नुबढ़ सदाय | १ मना
   विसि ४ [ शसि ] १ सुर मोर, बीट-विकेट, (पक्ष १,३ )।
                                                     बना ; १ निम्बर , १ हेर्ड, निनिवन कारवा , ४ क्यां
   १ केर में, पुत्रनी में और बवानंत्र में उत्पन्न होता अन्तु-बिराद,
                                                     अनिक मर्थ , १ महिष , १ मनीह, मन्य ; ० मंग्द
   (को १४)। ३ शीन्त्रव बोट-विशेषः (कद १, १ —का १३)।
                                                    समेह । (है के १०६, वह । ता १३६ , प्राम् १७;
  'यन [ज] इतिनानु सं उत्पन्न कर्त्र, व्हानावसमाई व,
                                                    दम १)। ७ वाद-पूर्ति में भी इमका प्रवाग दोना है,
 वितिष तु गुबा" (पयना )। "तान , यात वु (राम]
                                                   ( 907 0, 04 ) 1
 किनियों बारंग । (बस्म १, २०; है १, ३१., एक १,
                                                 किर सह [क] १ देख्या । २ क्यारना, प्रेताना । ३
४)। रासि ३[ राशि ] कन्न्नीनीवाव, (काल
                                                  विराता। वह किरत , (मे र, ६८ , १४, ६७)।
1-44 11)1
                                                किरण कु [किरण] किल, गीम, हमा , ( कुछ
र्गामपायमण 🌂 देशो जिमिहरयमण ; (१६)।
निराप्तय व [किनिराह ] क्यानुमा दान , ( गावा
                                               किरणिक्ट, वे [किरणायम् ] दिन्य बाना, नवः
मेण वि [हमिमन्] हमिनुष्यः , "विन्त्रिष्ण्यः निर्मान्यः ।
                                             किराह } व [कितान] १ कतर्व उत्तरीयाव (
                                             किराय) १४८)। १ मेरा, एक जगती जानि (5
                                              2' ga 1 des ' 241 364 ' 6 3' des ) !
राय वि [ दे ] बाजा में रच ; (दे ३,३२),
                                           किरि 3 [किरि] मातु का मानाज "कथा किर्मान
रायमण न [दे] बॉलन क्य ; (के कु. १३)।
                                            कर्या हिनील करना जिलील तिकाल सह।"(वज्रम : ११३)
[बिमु] इत सवी का मुक्त सम्बद्धा कर है।
                                          हिरियु [हिरि] मुक्त, सम्म , (नार )।
1 t fam, + fait; ($ 1, 220; fin);
                                         बिदिसिया } मं [दे], क्लोम्सीनंता, एक पान म
                                         हितिहितिया देशे का वर्ष हुई बन् मा, > इन्ल,
```

भेरित्तण देयो कित्तण , (माट---माल ६०)। केरिया गी [किया] १ किया, ऋति, व्यापार, प्रवत्न ; (सम २, १ : टा ३, ३)। २ शासीक्त मनुद्रान, धर्मा-नुष्टान : (सुम २, ४ : पव १४६)। ३ मावव स्था-पार; (सग १७, १)। ४ द्वाण न [स्थान] वर्म-यन्थ का कारण ; (सुध २, २ ; माव ४)। वर वि ['पर] प्रतुरान-तुगत ; (पर्)। 'चार वि [चादिन] १ झास्तिक, जीवादि का झस्तिन्व मानने वाला ; (टा ४, ४)। ३ केवल किया से ही मोचा होता है एंसा मानने पाना ; (गम १०६) । 'विसाल :न ['विशाल] एक जैन प्रन्यांग, तरहवाँ पूर्व-प्रन्य , (यम २६)। शिरीह वुं [किरीट] सुदूर, गिरा-मृपग ; (पाम)। विशेष्ठि पुं [किरोटिन] प्रजन, मध्यम पाण्डव ; (केनी 963) 1 पित्रोत वि [प्रतित] विना हुमा, गरीहा हुमा ; (प्राप्त) । किरीय वे [किरीय] १ एक स्टेब्ड डेग; १ डवर्में उत्पन्न म्लेच्छ जातिः (राज)। किरोलय व [किरोलक] फ्ट-विगेष, किरोलका बल्ली का प्रतः ; (दर ६, ४) । बित्र हेती बित्र≕विड ; { हे १, १⊏६ : बरहर : इमा) । किलेत ६ [यत्यान्त] विस्त,धान्त ; (पर्) । बिल्डेंड म [बिल्डिक्ड] बॉन का एड चान, जिन में गैदा रपैगः को गाना विदाया जाता है ; (उदा) । चित्रवित्र प्रव [चित्रवित्राय] 'क्ति कित्र' प्राचात्र चन्त्र, र्देशन । " बिल्लिक्ट वर गहरियं । सन्दिर्वकिविविविविव (472)1 फिलक्तिराह्य व [किलकिलाचित्र] 'किलकिल' । घर्वन, रपं-भ्यति ; (भारम) । षित्रणी सी [दै] क्या, वर्षा ; (४ १, ३९)। विन्यम ४६ (वन्स्) बरान्त होता, रिम्त होता। विरामकः (बार्) । विरामन्तिः (बारा ६२)। रह--किल्लांत ; (१८५४()। - विज्ञानक्का न [मीजाग्यक] इय नाम का एक छना-नाम ; (SE): किटाइ है [किटाह] हा का क्षिण किए, मन्दें ; हैं 1, 12) 1

किलाम सङ [बलमय्] क्तान्त कता, तिन्त कना, ग्लानि दन्यन्न कम्ना । किलामम्ब ; (पि १३६)। वह-किलामेंत : (भग ६, ६)। इरह-किलामी-व्यमाण ; (मा ४६)। किलाम पुं [बलम] पर, परिथम, ग्लानि ; " रामिराजी में कितामों " (पडि; विमे २४०४)। किन्टामणया यो [घटमना] विन्न कृता, ग्लानि स्त्यन्त करना : (सग ३, ३)। किलामिय वि [यलमित] गिन्न किया हुमा, हंगन हिया हुमा, पीडिन: " तम्हाकिलानिमंगा" (पडम १०३, २२ : सर १०, ४८)। फिलिंच व [दे] छोटो सक्षी, सर्गी का दुवहा । " इनिवागोहण्यं किलिचिमिन दि अविदिग्ने" (मत १०३ : पाम ; दे २, ११) । किलिंबिय न [है] कर डेगो ; (गा ८०)। किलिन देशी किलित ; (नाट--पच्छ १४ ; वि १३६)। किलिकिंच भक्ष [स्स्] स्मय करना, श्रीहा करना। विलिशियह : (ह ४, १६८)। किलिकिकिक न [रत] रमण, बीहा, मंगीम । (१मा) । किलिकिल बर [किलिकलायु] 'किर क्षित्र' बावाब कामा । यह-विस्तिकितंत ; (स १०११ ही)। किलिकिल न [किलिकिलि] इय नाम का एक दिवापा-नगर ; (इव.) १ किलिकिलिकिए इसी फिलकिल। यू -किलिकि-लिफिलंत ; (पडम ३३, =) । किलिगिलिय न [किलिकिलिन] 'फ्रिन फ्रिन' प्राप्तत बरना, हर्ष-दोतह ध्वति-विदेश ; (स. ३४० ; १८५) । बिलिष्ट वि [क्लिप्ट] १ बरेग-दुबर, (३९ ३६) । १ बर्टिन, दियम : ३ बरेग-जनकः : (प्राप्तः हे ४, ५०६ : 31) (बिल्डिय रेग्डे बिल्फ्नि : (म्दन म) । विजिल दि [बन्हम] सन्दर्भ संबद्ध (प्राप्त, यह ; * 1, 148) 1 बिलिनि मी [बल्ति] रचन, इन्सार (१४४): बिजिन रि [बिजन] महें, गंग : (१ ५, ५०) : ર, ૧૦૬) ા बिलियम देले किएम्स । विश्वनार (चित्रक)। शर-विज्ञिते ; (वे ६०६० ; १९,४०)।

```
विलिमित्र वि [ दे ] श्रीवा, तस्तु ( दं २, ३१ )।
                                                       वार्यमहमहक्राजी ।
              किलिय देगा कीव, (बर २, में ४३)।
              किलिम घड [बिल्स्स्] वेड वाना, वह जाना, ई मी
                                                               हिविद्वी भी [रे] १ हिरण, गर्माहर,
                                                                                        [किलिमियः
               होना। यह-किलिसंत, (वड्म ११, ३=)।
                                                                दिला भौगत ; (वे २, १०)।
             किलिम देवा किलेस, "मिन्कमन्यांवाण, हिन्नमन्त्र-
                                                              किविण केनी किवण ; (है १, ४१ ; ११=; ह
                                                               तुर है, ४४, तामू ११; वाह १,१)।
            किलिसिय है [बलेशिन] मायाप्ति, क्लेम-यास , (म
                                                             किस ति [ हता ] १ दर्गन, स्थिन , ( ता ११1)
           किल्सिसं देशो बिलिस = वित्तव् । दितिच्याः । (व्हर,
                                                              41311 , ($ 9, 180, SI Y, 8) !
                                                          किसंग वि [ बनाह ] पूरंत गानि बन्ना (व ११)
           ल )। कृ—किल्मितंत , (बाट—बात ३१)।
         किलिस्सिम वि [क्लिप्ट] क्लेग-प्राप्त, क्लेग-पुष,
                                                           किसर व [बुबार ] १ शतान-विशेष, विशे, बचा व
                                                            इत की क्यी हुई एक साथ बीहा है तिबही, बका ही
        किलीण देवां किलिएक, ( मृति )।
                                                           रान का मिन्न माजन-निमय , (है १, १०८)।
        किलीय देनों कीय : (स ६०) ;
                                                         किसर देगो केसर , "बाम देवराना क्रम" (ह १,101)
       किलेस ३ [क्लेंग ] १ वेद, यहावदः (धीर)। १ इ.स.
                                                         किमरा की [कुरारा] निका, काउनन सर्ह
                                                      | मोजन विशेष , (हैं १ ११८ हिं १, ८८)।
        पींडा, बाबा, ( पडम ११, ४६ , ताल १० )। ३ दुस
        का कारण ; ४ वर्म, गुमातुम कर्म , (कृर १)। चिर वि
                                                        बित्मल वर्गा किमालय , (हे १, श्रह । इना )।
                                                     किमलाय वि [किमलियन] महर्मन, नवे मन्तरण
       िकार ] बतेग-जनक , ( बडम ११, ७६ ) ।
     किलेसिय वि [क्लेशित ] इ ने दिना हुमा, (इर ४,
                                                     किसल्य कु [किसल्य] १ त्ल बर्च । (था।
    किल्ला देखों किहा; (में ११);
                                                       र केमन क्ली, (जी ह)। "मक्ली विमन्त्री
    किय है [ रूप ] १ इस मान कर एक कृषि, स्थानार्थ ; ( हे
                                                      उपन्याची स्वन्धी विद्यों (पण १)। म
     १, १९८)। "मामसम्मानां गीव विदुर दोसं अपहर
                                                     सी [ माला ] हन्द्र-विजेश , ( मंत्रि १६ )।
    सडवी कोच (१ सडीचे किने ) मानस्थाम" (बाला 1,
                                                   किसा देवा कासा, (हे १, ११०)।
    16-44 600)1
                                                   बिसाणु ३ [हमानु] १ थारि, बहैन, धामा १ । १
  कियं ( घप ) देशों कहं। ( दमा )।
                                                    वितेष, वित्रक इस , १ तीन की सम्प्या , (ह
 कियण है [ रूपण ] १ गरीब, रह, दीन । (सुम १, १,
  रे । मच्च ६०)। र शिद्ध, निर्दन । (बहु १, १)।
                                                 किसि मी [ इपि ] मेनी, बाम, ( विमे १६१३,
  रे बंजूल, सन्ताना ( वे २, २१ )। ४ क्लीन, कावर,
 (सम १,१)।
                                                किसिम नि [ इसिन ] दुवंतमा-प्राप, हमता-पुष
किया मी [हपा ] स्या, मेसवानी ; (हे १, १२८)।
थन्न वि [ थन्न ] हपा-मात, दमातु ; (वज्य ६१,४७) ।
                                              किसिस नि [ कपित ] १ निर्नितन, रेमा दिश हुन
कवाण दुन [ रुपाण ] सहम, तक्कार ; ( क्वन १६८ ;
                                               कोता हुमा, हुन्द्र , हे सी वा हुमा , ( हे १, ११=)
                                              किसीयल पु [ क्यांबल ] कर्वक, विमान 'पान व
म्बालु नि [ हपालु ] स्वानु, दवा करने बला ; ( काम
                                              'यन्नं मस्मानि क्रिमीवना पुनि'' (था १६
                                            किसोर पु [किसोर] बाल्याकचा क बाद र सम
विड न [ है ] १ सर्विहान, मन्न साह बस्ते हा स्थान ;
                                             बाला बालक ; "सीहनियोगान गुहामा निवस पुर
वि सतिहान में जो हुमा हो बह ; (वे दे, ६०)।
                                             fr1)1
                                           किसोरी स्त्री [किसोरी] इमान, महिना
```

िक्रिक्त के क्रिक्रिक्≓स्य क्रिक्त का मुक्त में हैं, ह

मित^{्र} होते कहे। यन्त्रस्य सम्हतः राजन्तः ।

कीज की कीच - क्यूबार

कीम है [क्षिक्ष] केंग्र केंग्र का राह्ण सहस्थे सीसम हे जिसेस्ट के स्टब्स्ट जिल्ला कर र रहते. क्षा: व सीम, स्टीप सामा

कींस्त्र देने कीन्स्र ८ केंगे १४४)

<mark>कीर केरे किट्</mark>कॉप्टर की-विल्ल (केरक) चींद्र हु [बॉस्ट] र बॉस, बहुर ब्लु ८ । इसे । क्षेत्री, स्वित स्तु रोज की । ज रो बीहरू है [बीहरू] सेंब बरा बेंबरहर : 4=...

कीरमान किरोप्त किरोप्त के किरोप्त किरोप्त चीरपार्ट् चीटम[े] सेने चीराज्येयः नयः सा बीटर में [बीटर] मेरे के सन्दर्भ राज्य गर्म

बाह्य प्रश्ने किहार सुर्भ कर र

मोद्धारिका जेरे किट्राकिन । सर्व , बाहिय की बिहिना किरिया बीटी सु २५ E In ,

मीटिया [मीटि] क्राप्तिः स्टाल्यक्तिः हे

करिय तथ है जो है जरे जर है के किए के किए हैं है है, ಿಪ್ಪ " ಪ್ಲಿಧಿಸಾ . ಕ್ವಸ್ಕ್ ಜನೀ ಟಿ कीपास र्जिनार जिल्लाक पार्यस्य स्था किस्तार जिल्लाकी स्थापित स्थापित कीय के [कॉस] के सीच हमा बीट दिया हुए , ' स्व

स्थित स्थाप प्राप्त स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य रिक्ति साम्बर्गेः सार्वाः विस्वयान्तिः ता में अनुस्थ हैं। विकास नेद्र में जिल्ला हैं स्कोन केराह्म_{र स}्वार १ अनेह विका मेर में कि एके के मेर्ड के कि मेरानीम्बर

कील :[कीनक] केंद्र के कार्या के नगर केंद्र की की की की की कार के ना कर नीमने समार्थाः इत्यास्त्रे । जन्म स्

जिल्ला, इसमें को चिटियाँ महास्थारी িন্দে মূল মূল্লিড স্বরু (

कीय की विकार के सम्बद्धा अस्तर स्थान र्यसम्बद्धीः ' यस गु १ द्वे च्या १ .

की है है की है दूर हैन : । है मान : स र

कीत हुँ कीता व जिल्लीय, स्कार जिल्ला के र्यार के कार्य, इ.स. रायोग के में माना, - 교교 (1. 2급) (

चीनेंद े देखें कर≔ह:

कीन्स है | कीन्स | स्व-मित af एक एम एम एक कारिक देने केरिक : (सा देश्य , मा व) कीरी में [कीरी] सिन्न्यं, के के दी सिंग ; कि 4 5 E . 1

कील प्रव [कीरह] दीव समा, विस्ता: कीरह, [बार्व : कु कीलंड, कुरियमाणः सु ६,१२६ वि २८० । नक् नोतिना, कीतिकमा न मुख्य में में मार्ग बाल देशे सील: सब

बीतम स[बीद्रव [स्ट्रा केट: मॉर': बिर्ह भी विकेर करे हैं। स्टब्स की की की िन्द्रस्य मुज्ञ 🗟 🛊

कीरमान महिन्दांच महिन्दोंना । जाने २३२ 🗽 कीर्याका की है। स्थापनी से है है है है। कील मा

कीस्य की हिंदे हैं करूबा, इसीक अस्त ३० ॥ कीला की किला है एक समा में जिल बार उसके नुष्य क्रिकेट के मुद्रदर

मिलाकी <mark>मिला किला कर कर क</mark> क्षा कर के बाल है जिल्हें बेंग बने सालाह है है। बीरान के बिरान्य गीर क्या ला हा स्था सब कीराहित है [कीराहित] रोजन्त क रत 45I);

बीटबार के बीटक होते करता। राज ५ हा। क्रीस्टब्स्ट के ब्रिटिएक विसेश से १, १ % arms.

कुनपुद्धान [करियुक्ति] काम-कुमेशा , भनंतर्शन व नयगाइयाच मनियारकम्कामिद् मणियं। कुन्दुइर्दः (नुपा १०६; पडि)। कुक्कुप्र तु किक्कुट १ । तुक्कुट, सुर्ग; (गा ४⊂२ , उवा)। २ बनस्पति-विरोध , (मण १४)। ३ विया द्वारा विया जाता हुम्त-प्रयोग-विरोध , (वर १)। भिनय न ['मांसक] १ मुर्ग का मोन , १ कीजपूक वनव्यति का तरा . (मग १६) । कुषकुड वि [दे] मत, अध्यन , (दे २, ३७) । कुपकुड्य म [कुमकुटक] देनो कुमक्यय , (सुम १, ४, १, ५ ही) । कुक्कु दिया | भी [कुक्कुटिका, टो] दुक्दरी, मुर्गी ,

कुषकुडी (याया १, ३ । विचा १, ३)। बुजबुद्धेसर न [बुजबुद्धेश्यर] तीर्थ-बिगेव ; (ती १६)। कुक्कुर ५ (कुक्कुर) इना, भाव । (पत्रम ६४, ८० , मुद्रा १७०) । कुषकुरु पुं [वे] निवर, समूद , (दे ३, १३)। कुमकुस हुं [है] धान्य मादि का जिलका, भूँगा ; { है ३, रेंद्र । इस १, २४)।

हुनकुह् वु [कुषकुम] पत्ति-विशेष , (भउड) । कुषिल [हे कुक्षि] देती कुब्छि; (दे २, २४, और , म्बद्ध ६९ : वद ३३)। बुमाहि पु [कुंबाह] १ बदावह, हठ , (उप करेरे टी) । ९ जल-जन्तु विशेष , " बुग्गाहगाहाइयजनुर्गङ्खा " (सुरा (11)

कुछ दु [कुछ] स्तन, धन ; (हमा)। क्षच्य न (कृष्ये) १ हाइो-मूँछ , (वाम: मनि २१२) । ३ तय-विगेप ; (पण्ड ३, ३)। देखे कुच्छम । क्राव्यंपरा मी [क्रुचंघरा] दार्ज-मूंढ, भारत काने काली ; (भ्रोप = ३ मा) ।

कुछ्या) देशी मुख्य ; (भाषा १, १, १ : शल)। वृता समाया जाना है ; (उन्ह ३४३ ; इमा)।

हुदस्य 🕽 २ दूर्गा, तृष-निर्मित तृत्विका, जिगसे दीताल में कृत्यिय नि [कृष्विक] एशं-भूंड पता ; (कृर १)। बुन्छ सद [बुरस्] फिन्हा करना, विश्वासना । ह---कुच्छ, कुच्छणित्रज्ञ ; 46 3, 3) 1 ँ र योष-विशेष : 2.00 क्रिम्स

कुन्छम ५ [कुन्सक] बतन्पनि-रिशेष (सूम १, १)। कुन्छणित्रत्र देशो कुन्छ=त्रुग्। " प्रत्नीत कुन्मीन मामानं मरसमित्रवं दि " (धा २०)। कुच्छा सी [कुरमा] तिन्दा, गुगा, जुगुमा; (पीप ४४४,

बुच्छ हेगो बुच्छ=हुन्ग् ।

अ ३२० टो)।

कुब्बिड पुन्नी [कुक्षि] १ वहर, केट ; (हे १, १६ ; तर, बरा)। ३ मञ्चलोग प्रशुत का सनः (प्रीर)। 'किमि पु ['कमि]'उरु में उत्पन होता बीहा, हीना जन्तु-चिर्मेष:: (क्ष्य १)। "धार प्र ['धार] १ बहाब का काम करने करता. मीकर : " वृत्तिवारागकनवान वस्तवयंत्रनानावादावावादानाः " (वादा १, ८-५५ १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का क्याचारी ; (गावा १, १६)। 'पूर इ ['पूर] दत-पूनि ; (बर ४) । 'येयना सी [येदना] दार का राग-किंग्य, (जान १)। सार

पुन ['शाल] रोन-विरोप , (शाया १, १२, विरा १, १)। कुन्स्डिमरि वि [कुसिम्मरि] एक्जपेटा, पेट, स्वामी: "रा नियचरित्रकृष्टिं (१ व्छि)भूतिए ! " (रोगा) । कुव्छिमई सो दि. कुस्मिनी विभिन्ने, बायल-नग. (दे २, ४१ , ११)। कुच्छित्र वि [कुस्सित] सराव, विनिद्द, गरित : (१वा ७.सवि ।।

कुबिकल श[दे] १ श्री का विस्त, बाद का दिए ; (रे २, २४) ६ ६ द्विद, विवर ; (पाम)। कुच्छेभय दु [कासियक] तलकार, सर्ग , (दे १, १६% 47)1

बुज वृं [बुज] इत, वेह ; (अ १)। कुजय १ [कुजय] यमारी, ज्यानेत, (सूध १, १,१)। कुप्रज वि [कुप्रज] १ वृष्या, वामन , (तुरा १ , कर्प्) ! १ पुन् पुरुष-विशेष ; (वष्ट) ।

कुरतय है [कुष्तक] १ इस-विरोध, गल्यक्रिस, (पत्रम ४२, ⊏; कुमा) । २ न् उस इस का पुष्टा, "वंगेर्ड क्रमवास्त्रीत् (हे १, १८१)। कुरुष्ट सक [क्यु] कोच करना, गुप्सा करना । कुप्सा र

(दे ४, ११० ; वर्)। कुट सक [बुट्ट्] १ क्टना, पीटना, ताहन काना । १ काटना, वेहना । ३ सर्म करना । ४ उपालक्स देना ।

मनि-नुष्ट्यस्यं , (वि ६२८) । यह-नुष्टितः (मृर ११. १

```
ग्लाहः (सुर १३, ⊏१ )।
   कुटुण न किटुन ] ९ देवन, दर्शन, भेदन ; (भीत)।
१ कृतस्, ताइसः (हि.४, ४३= )।
🗠 बुटुणा सी 🛭 बुटुना 🕽 शारीन्द्र पोश; ( सुन्न १, १२) ।
   कुटुणी की [ कुटुनी ] १ मुक्त, एक प्रकार की मेटी उकड़ी,
    बिसं पास्त भारि भप्र कृटे जाते हैं : ( ६६ ९ )।
   दरी, कृतनी, दृष्टिनी : ( रंगा ) ।
   कुटों की [दे] गीरी, पार्वती ; (दे २, ३४)।
   कुट्टाय पुंदि ] पर्मकर, मेंचो ; ( हे २, ३० )।
   कुट्टिन देखी कुट्ट=ट्र३ ।
   कुटि निया देनी कोट निया ; ( गज )।
 ं कुट्टिय [ दे ] इसी कोट्टिय : ( पाम )।
   कृष्टिणी हो [ कुष्टिनी ] कूटनी, इती ; ( बार्ग ; रंका ) ।
   कुट्टिम देखे कोट्टिम=ब्रुटिन; (नग न, ६; गय;
     जीव है है।
   कुट्टिय वि [कुट्टिन ] १ ह्या हुमा, वाहन ; (सुन
     १४ ; ब्ल. १६ )। १ क्रिन, देखि : ( ब्रू. १ )।
   रुद्ध के [ कुष्ट ] १ पनारी क बहां बेची जानो एक बस्तु ;
     (बिने २६३ ; मह २, ४)। २ गेन-बिरोप, बोह ;
     ( बव १ ) ;
    क्ट इं [कोष्ट ] ५ टडर, पेट , "बदा दिन हुरूगर्य मंत्रमूत-
     विजाना । वेद्या हर्रात संतिह", पति ) । २ क्रेस
     इन्ट, यन्यमरने दादश माजन , (पद २, १)।
     बुद्धि वि बिद्धि । एक बन कानने पर नहीं मूलने
     बला; (पद २,५)। देखें कोट्ट, कोट्टग ।
    इट वि [क्रष्ट] १ स्रवित, स्रवितन ; २ न् साब, अवि-
     राम-राज्द ; "टटर्ड बुद्दंबर्डि पेक्टंड्र ब्झानया इन्य" ( सरा
      ₹80) [
    हुड़ा मी [ हुप्रा ] इसडी, बिन्दा : ( बूट १ )।
     कृष्टि वि [कुष्टिन, ] ३३ रोग कता , (सुरा २४३ ; १०६)।
```

१)। पर्-कृष्टिज्ञंन, कृष्टिचमाण: (सा

३४० : प्रामु ६६ : राय) । संह-कृष्ट्रियः (मग १४,

कुटु पुन [दे] १ इ.ट. हिला : "दिल्ली दशदाई बुध्यरि

मदा र्यायवंति" (मुत्रा ४०३) । १ नगर, गहर, (सुर

१६, =3)। 'बाल वुं ['बाल] इंडकड, नक-

बुट इं [बुट] परा, बुस्स , (बुस २, ७)।

कुड पुं [कुद्र] १ पड़ा, ब्लाग ; (दे २, ३४ : मा २२६ , तिने १४३६)। २ पर्तन ; ३ हार्या वर्गनः का बन्धन-स्थन; (राया १, १—५३ ६३)। ४ इड, पेंड़; " त्रुविवन्द्रिंडमंडियहुडम्मो " (हुना ४६४)। किंड पुँ ['कण्ड] पात्र-त्रियेष, घड़ा के जैला पात्र ; (दे २, २०)। 'दोहिणी सी ['दोहिनी] घट-पर्न दूध देने बाली ; (गा ६३०)। कुडंग पुन [कुट्टू] १ इन्य, निरुन्य, तना बगैरः से टराहुमाम्यान ; (ना६⊏० ;हेसा ९०६)। ५ वैन. ँ जंग्ड ; (टर २२ ॰ टा) । ३ बाँच की जाली, बाँस की बनी हुई छन : (बुद १)। ४ गहर, कोटर ; (साह)। १ वॅग-गइन ; (राजा ६, ८ ; वृमी)। कुडंग इंन [दे, कुटडू] तना-प्रह, तना में दश हुमा परं ; (देर, ३० : महा : पान्न : पट्)। कुडँगा मी [कुटडूर] लवा-विगेष : (पडन ४२, ७६)। कुडंगी को [दे कुटड्डो] बाँच की बाजी : " एक्टाइफेल निर्वाटका बन्छडंगी " (महा ; सुर १२, २०० ; डपें पृ ₹=9) ! कुईव देनो कुर्दुव ; (महा ; गा ६०६)। कुड्य देखे कुड ; (भावन : सुम १, १२) F . कुडमो मी [कुटमी] छेटी प्रतस्य ; (स्म ६०) । कुड्य न दि] एता-पृह, लवा से मान्छादित घर, कुटीर, भौतहा : (हे २, ३७)। कुड्य हुन [कुटज] इत-विगेष, दुरैया ; (पाया १,६; फरा १३; स १६४), "इडवें रहह " (हुना)। कुडव हुँ [कुडव] धराज नारने का एक मार ; (राजा १, ७ : दर पृ ३३०)। कुडाल देखे कुहाल; (दश)। कुडिज मि [दे] द्या, रामन ; (पाम)। कृतिमा मा दि वाह का विशः (दे १, २४)। कुडिच्छ न दि] १ बाह का दिद ; २ उटा, मोतदा । ३ वि सस्ति, लिन : (दे २, ६४)। कुद्दिल वि [कुटिल] दर, देदा ; (सुर १, २० ; २, ==) ; कडिलविडल न [दे कुटिलविटल] हनि निज्ञा; (गत्र)। कुडिल्ड न दि] १ डिट, दिवा; (पाम 🚜 कुञ्ज, सूबहा ; (पम)।

```
२१८
                  इन्डिक्स में हिंदे क्रिक्ट ] कृतित, देश, कर , (दे रे, / बुदार ३ [ इजार ] कृतरा, रागा , (
                 इंडिप्यय दम्में कुलिख्यय , (रात्र)।
                वृद्धी मां [बुद्धी ] छोटा वह, मोतवा, बुटोर, (क्या १२०,
                                                                  इटाउप व [२] मनुगमन, गंद जना, (
               उदार व [ युद्धार] कोंगस, वृद्धां . (हं र, ३६४ ;
                                                                इन्टिय वि [दें] हा, मूर्ग, कामक , "हा
             कुदोर न [दे] बाद का दिह, (दे १, १४)।
             इंड्रम इ [वे ] काल, कालों हे का हुमा का , (बरू,
                                                                 पुणो पुणो द्वारिकारियोग्य " (सर १, १८१)।
                                                               कुण वह [छ] रामा, सनना । इत्तर, राग्
           उद्धेय न [ बुट्टम्य ] परिवन, परिवर, स्वजन-वर्ग ; ( टबा ;
                                                               (सन , महा , जुहा ३२०) । नह-जुणन,
                                                              माण, (मा १६६, मा १६, १११, मचा)।
                                                             इत्यक्तः वृ [ इत्यकः ] कालाने निर्मेषः (का १-
          इ.हुंबर ३ [इस्तुस्यक] १ कम्पनि क्रिंग्, पनिनी ;
           (मता १ - पत्र ४०)। १ कर-निर्माद, "स्टाइतगर्य-
          करें य बंदली य बहुकर " (तत ३६, ६८ का)।
                                                           इन्द्रव व [कुणाव ] १ हाहा, नन-मारिः ( वम ; वा
        उड्वि ]वि[ उड्डिम्प्न, क] । इस्कड्क, कार्य,
                                                           . र वि दुर्मन्त्री . (हे १, १३१ )।
       उड्डिम ) र वनवं बाता, बर्गह , (वतर)।
                                                          इवाल १व [इवाल] १ देश-नित्र , (बाव १,=,
        सक्तरीं , सामाजीवासीतंक सावकर देखिका , (कार )।
                                                          वर ६०( वी )। १ प्रतित स्थापत समाह ---
      इन्हेंबीम न [वे] सल, समील, मैनुन , (बह्)।
                                                          ( निमं द{१)। निया न [ निगर]
     उद्भाग वृहि ] जल-मण्डक, पानी का मेरनः (निवृ १)।
                                                         उत्तेन , " मानी हुणाणनपंत्र " ( मया ) ।
     बहुबक वृद्धि वता-रह , (वह),
                                                       कुषाला मी [कुषाला] इन नम भी एक मार्ग
    कुद्धिवस न [दे] गुण, संत्रीम, सैंचन , (दे १, ४१)।
   इंडुल्लो (क्ल) मी [इटो] इटेला, मोहरी, (इला)
                                                     इति । १ (इति ) । स्मारिका, हैंदे
   वह अन [ वह्य ] १ मिति, मीन ; ( प्रमा ६८ है , हे
                                                    क्रियिस है सनुत्र ( पत्रम १, ३० )। १ ज
                                                     बिगका एक हाथ छाटा हा सह , वे किनाडा एक ५
     " बाज नवानि वाज गर्वाति वाज नवानि गविनीए ।
                                                    हीं, मन्त्र , (कह रे. १-वह ११० माना)
                                                   कुणिमा मी [दे] शीनीता, बाह का हिंद,
       पटमध्विम दिमहर्चे हुई। लेहारि किमतिमां "
उद्द न [ वे ] मान्वरं, काँत्रक, उत्तरक, (वे २,३३,
                                                 कुणिम पुन [ देकुणप ] १ सब् पुनस्, पुरस्, (१०
                                 (m to=);
                                                  रे)। र मान्। (स.४.४ मीर)। । सदन
हरिनिज्ये हैं [ वे ] यह नोशा, टिक्टनी , ( वे वे, वह )।
                                                 विनेत , (सम १, ६, १)। ४ तत का तत, व
रिवेचणी लां [ रे कुरपलेपनी ] क्या, नवी, नवीज्ञा,
                                              बुणुकुण मह [कुणुकुणाय ] गीन सं बार तन व था
हाल व [दे] हैं का काना विन्तु सम् (उन्न)।
                                               कर्ष भागात्र काना । वह उत्पुक्तवंत (मा ) १०१)
                                             कुण्हरिया औ [ दे ] बनव्यनिविधंव
प्त [दे] । सावी हुई क्यु को स्नोत में नाना ; (दे
(र , या १०३)। र छीना हुई बीज को हुआने
र, बानिय मेंने बला, (वे व, (व))
                                            कुनती भी [दे] मनोरय, बाम्छा ( ३ ३, १
                                           इत्तव कु [ इतुष ] १ तेत की। माने हा का। १
                                            (दे ६, १२)। त्यां कुउमा
                                         कुल विशेषका वस्तर
```

·

```
कुत्तन दिक्तक हिंग, इतागः (विग ९,९-पत्र
कुत्तिप पुंची [दे] एक जान का बोहा, चतुमिन्द्रय जन्तु-
 क्षितः 'कादिव कतिव विच्दः' ( मार १७ : फ्रा ४३)।
कर्त्ती मो दि विभी, पृष्टी : (र्मा)।
मुत्या क ( कुछ ) पहां, दिल म्यान में ? ( दनर १०४ ) ।
ब्रान्य देशे कहा। शत्यनिः ब्रान्यमः ( गा ४०१ म )।
कुत्वज म कियेत ] महता, मह जाना ; ( वर ४ ) ।
मुत्यार त हि ] १ किम ; (इ. ११)। २ केटर,
 यह दी पेत, गरा ; (सुत २४६) । ३ सर्व वर्गाः वा
  बिहु; ( इर ३६० ही )।
कुटध्य वं [ कुम्म्युस्य ] बाध-विशेष ; ( गय ) ।
कुत्युंमरी मां [ कुस्तुस्यरी ] बल्यति-किंग, धलेगी :
  (यस्य १--यत्र ३१)।
 बुत्युह पुन [ कीम्नुम ] मीन-विशेष, जो बिन्यु की छाती
  पर रहता है ; (हैसा २४०)।
 कुत्यह्यत्य न दि }र्नावी, नाग, इजारवन्द : (दे १,
  2=)1
 कुदो देती कुछो ; (हे ९,३५)।
 कुद्द वि [ दे ] प्रमृत, प्रतुर ; ( ते २, ३४ )।
 कुरूषा वंदि राज्य, गमा ; (हे २, ३८)।
 कुद्ध पं कोट्स । धान्य-विशेष, कोटा, केट्स ; ( सन्य
   9231
 सुद्दाल वं [ सुद्दाल ] १ भूमि कोईन का सायन, बुदार,
   हरागे; (सुना ६२६)। २ वटा-विशेव ह (बं२)।
 कुद वि [ जुद्ध ] कृति, श्रेष-पुक्त ; ( महा )।
 कुष्य मद (कुष् ) की करता, गुल्ला करता। कुर्याः ;
   ( दव : महा ) । वह --कुणांत : ( भुत १६७ ) । इ-
   कुण्पियस्य : ( म ६१ )।
  कुण मह मापू ] बातना, बहना । कुन्यरः ( मवि ) ।
  कुष्प न किष्य रे सुकर्ग और बीदी की छोड़ कर अन्य धानु
   मीर निर्देश कीर: के बेने हुए गृह-उतकरण ; "लाहाई टव-
   क्को कुल्ली । बृह १ , पटि ।।
  कुएरढ ९ हि रे १ गृहाचार, धर हा निवास ; २ सनुदाबार,
    सदाचार , ( दे ६, ३६ - ,
   कुष्परः न[दे]सुरत इ.सम्ब विया जाता दृदय-दाहरू-
    वर्षात्रः भन्नेहाच ४, पहाचारः । स्मा, हॉमा, इटहा, ह
```

कुष्पर वं [कूर्पर] १ क्होचि, हाथ वा मध्य माग; २ जातु, धुटना : ३ म्य का अवदव-विमेष : (वं ३)। कुप्पर १ कियेर दियों कथार। भीत की पात, भीत की जीर्च-मोर्च घर: "एवामी पाइलाबंद्रकपरा राज्यिनीमी" (शहर) । कुप्पल हेको क्रीयल : (ति २०७)। कुष्पास पुं [कूर्पास] कन्तुर, बीनती, जनानी कुनी ; (हे १, ३२ ; कम ; पाम) । कुल्पिय वि [कुपित] १ कृपित, रुद्धः २ न, संघ, गुल्माः "कुरिनर्य नाम कुल्मियं" (द्वाव् ४)। कुष्पिस देवो कुष्पास : (हे ९, ७२ : दे २, ४०)। कुचर वं विखर निगवान, मल्लिनाय का गामनाविशावक बन्न : (पत्र २७)। क्वीर प्रिविर रे क्विर रे क्विर, दत्त-गज, धनेग: (पाम: गरड)। २ मण्यान् मल्लिनाय का गाननाथिशाना यत-बिर्मप: (संति मा)। ३ कान्यनपुर के एक गामा का नान; (पडम अ, ४६)। ४ इस नाम का एक थेगुं; (दा ७२८ टो)। १ एक जैन सुनि ; (कंस्र)। 'दिसा १ (दिशा) दना दिगा : (हर २, ८४)। 'नयरी मी ['नगरी] कुनर की राजधानी, मलका ; 1 (PTP) कुदेरा मां (कुरेरा) जैन साधुनाय की एक गाला ; (क्यं)। कुल्यह वि [दे] मूतर, कुन्ज, बामन ; (था २०)। कुल्यर वं [कुबर] वैधनत के एक पुत्र का मान; (मंत ४)। कुमंड वं [कुमाण्ड] देव-विशेष झांबाति; (शर,३—प्रम ८)। कुमंदिद पुं [कुमाण्डेन्द्र] रन्त्र-विशेष, कुमाण्ड देवी का खामी: (य २,३)। कुमर देखे कुमार ; (ह१,६७; द्या २४३; ६४६; दुमा)। कुमरी देखे कुमार्रा; (इप् ; याम) । कुमार पुंकिमारी १ प्रयम-वयं दा यालद, पाँच वर्ष तर का लड़का; (टा १०; गामा १,२)। र पुरस्त्र, गड्याई पुरुष ; (पण्ड १, ६)। ३ मगवान वासुरूप का गाननाविष्टाना यस ; (मॅनि २) । र लोहकार, लोहार ; "चवंडमुद्रिमार्टेहिं कुमार्गिहें कवं विव" (इन २३)। ६ क्रानिकेय, स्कट ्र्याम)। ६ गुक्त पत्री , १ पुरस्वार ; मिन्यु नड: ६ बुझ-विरोप, वस्य-बुझ; (हे १,६०।। १० झ-विदाहित, बद्रायणं, (सम ४०)। गाम ९ [ब्राम] ब्राम-विशेष , (माचा २,३) । पाँडि

चीर, दुसुश स अग दुवा दन , (पर्नेट ६ ४)।

'पाभा भी ['प्राप्ता] इस नम के एक पुरवरिशी , (प्राः)। "यण व [सन] प्रपुग नगरी के सम्प बा एक जर्मन, (जी ६९)। तिम ३ [तिकर] स्मृत-

11 . 1१)। सम्मात (शुल्म) व्यक्तियनशिक्ष (सन् ३६) । 'पुर न ['पुर] नग-तिगर, (इट) ।

कम्द्र तेमी कुमुशः (४६) । देव-किन तिरीयः, (सम

(अ४) १६ एक नएरी , (दीन) ह क्सूर्यों मां [क्म्दिनी] १ चन्द विश्ली क्मल का पेट; (कुमा, रंभा)६ ६ इम नाम की गृह गर्नी , (टर १०३१ री (डि

क्ष्मी में भारतन्त्र पाने बाला, ७ नागव श्रीति बाता, (से ५, २६)। वेली सुमुद्र। कुमुम'ग व [कुमुदाह] सब्दा-विगेष, 'मरावसव' को बीरागी खान्य में गुर्गन पर जो शब्दा सच्च है। बहु (बोर)। कमात्रा सी [कुमदा] १ इन नाम की एट पुरवरियों .

मर, (जो ९) । ६ जिल्ला-निरोप ; (टा≂) । ६ वि

र महावित्रह-वर्ष का एक विजय-यूगल, ममि-प्रदेश-विशेष . (टार, २-- पप ८०)। ३ न यन्द्र-निकामी कमन , (शापा १, ३--पत्र ६६, मे १, ३६) । वर्मस्या-विशेष, क्मुदाइय की चौरामी लाग में मुनने पर जो मन्या खब्ध हो

क्रमारिय १ किमारिक देशाई, शौनिष्ट . (६९ १)। क्रमारिया भी क्रिमारिका देशो क्रमारी: (वि३६०) । ब्रामारी भो विमारी] १ प्रयम वय की लडकी ; ३ व्यक्ति बाहित कन्या ; (हे ३, ३१)। ३ क्लप्यति-विगेर, पीटु-भागी . (पव ४) । ४ नवमरिल हा : १ नही-विशेष : ६ जम्पू-द्वीप का एक मान, ७ कनम्बनि-निर्मेष, व्यागाजिया . = मीना ; ३. वडी इलाफी ; १० वन्न्या करही की लगा , ११ पश्चि-विनेषः (हे ३,३२) इ कुमारी भी (दे कुमारी) गीमे, पार्वनी , (दे २, ३६) । कुम्भ प [कुम्द] १ इन नाम का एक बानर ; (म१,३४)।

'धास दुधियों [ल्ड जैन गात् (इन्त) (धान्य दु ['पाल] विक्रम की बारद_ी गनाब्दी का गुजरात का एक मप्रमिद्ध जैन गंजाः (दे १, ११३ टो)। कमार १ दि] क्याँर का महाना, भाग्यिन मात्र . (हा २.९)। क्रमारा सो [क्रमारा] इत नाम का एक गनिवेत ; "तमो मता क्रमागार गनिवेम गमो" (भावम)।

320

पुं ("तन्दिन्) इय नाम वर एक सोनार , (धातम) । वुस्द्य देनो वुस्थंग : (इक्) ।

(ब्रीर) ।

1011211

वय १०११) (

पत्ति-वियोग , (जीर १) ।

(पञ्च १३, ३६)।

क्सद्य न [क्सद्यः [त्य-स्थितः (स्म १,१]। शमन्दी भी दि विली, बन्हा , (दे र, 1६)। कुम्म ९ [सूर्म] बच्छा, क्यूबा ; (यम)। मार्थः ("ब्राम] सगर देश के एक गँउ वा तान, (मण ti) बुस्मण नि [दे] स्तान, मुग्ह , (हे १,४०)। कुम्माम वु [कुरमाय] १ शय-विरोध, डीवर, (म ३६६ ; पट २, ४) । २ में डामीबा हमा मृत्ये यान्य : (पद ३, ६--पत्र ९४८)। कुम्मी बी[कुर्मी] १ मी बद्दम, रूप्यी । १० की सन्ता का नमः; (प्रात १९, ६२)। 'पुन प्र ['पुरे हो हाय करेंचा इस मध्य का एक पुरुष, हिम्से हुन्ति गरें

कुम्ह पुर [कुर्मन्] देश-विरोप , (हे १, ७४)।

a); देशस्यिर, (निष १)। कुरवया भी [दे] कल्डी-विगेष (पला १--पत्र गर)

कुय व [कुछ] १ लल, धन । २ वि. निर्मितः (१

कुर्रेग पु [कुरङ्ग] १ नग को एक जानि । (३३)

२ बोर्ड मी स्व, हरिय , (एन्ड् १, १, १८४)। 🔻

र्थी, (पाष)। "चछो मी ['श्ली] र^{पित्र}ी

बैसे नेप सम्बद्ध भी, मुख नाभी भी , (बाम २०)। हुरेट्य ९ [कुरण्डक] इन-मिन, निवर्गाः (र

कुरकुर देवी कुरुकुर । वह -कुरकुराईन , (भा

बुरव १ [कुरकः] बनम्यनि विशेष, (पाना १-पत्र मारे

कुरर ९ [कुरर] कृत्य-वर्ता, उन्होंग , (यह ५)र

बुररी सी [बुररी] १ दूरर वर्त की साता , १ वर्ड अन्य का गृह भेर . (शिष्ठ)। . मणी, सर्गा ।श्रेमी)।

कुरत्य वृं [कुरत्य] १ इस, बान , 'सनस्थानीर होते'

'अन्तद्वमामता भइम्'यदा ' (मुग २० एम ।

कुरस्ती को [बुरस्ती] १ कमा का कर लटा - मार्ग १

कुरवय पु [कुरवक] उस पित्र उद्योग

या ४०, विकेश्व , संदर्भ, हमा १००

२४)। २ दुस्य पत्तिको, 'दुर्शयस्य न-- गर्नी

कुरती श्री [दे] क्यु, जनक , (द भ, १० ।।

4.0

The files of being the first of ينوا المع والمجتبع : المعادة ا बुक्त सह [कु] सरव करत, र्रेन्ट् केन्द्र । र्रेन ين المنظم المنابع المن कुरुल्यान [कुन] वयन व राज्य, वेंग् का प्राप्तः ; TI F [] TET TITE WITH THE TO SEE SEE SEE १ हुंब (पुरु) १ प्राप्त केला महारेष, को कला आपन के कुरुप्रकृते कुरु ; (पान ११८, ८३ ; स्ति)। 8: (+ m 8, = , 24) 1 3 miner with a का रूप रूप हुए . (र्ज १६)। ३ क्यां सूर्य प्लाप. कुरुविद है [कुरुविन्द] १ मोन विनय, राज्य को गर कुरुवा हेती कुरवयः (जुर ३०)। (दर्भ) रक्षणमञ्चलक्ष्यः । स्वेरः । ४ क्षतिः (वहर)। व क्षत्रिकाः (वणा १ : पर केती का बेर में क्यांन करतीय , । यह ११ प्राप्त ٩, ٢---- ١= ١١ ، ﴿ وَيُوْجَرُهُ عَبِينَ عَبِينَ أَبُورُ اللَّهِ لِمُوْدُ 'अर्ग केले जमा, जमा, (पर् ।। जीन क्वेन, क जंग हेर : अन्तिक वेश्वन वारा पुरस्ति । (क्रीर) । ₹ ['होत्र] व फ़िल्म के पण के एक मैकाल, जहाँ केंग्य भ्यन के [यर्न] भूत निता : (कन)। के प्राप्त के नाम हुई थी , ३ जुरु देश के सम्पन्त , कुलविद्या मो [कुलविन्दा] इस नम हो हि बीला. * trang an : 中で: デリン 電子 9 [電水] स न्या कार्यात (यून माना)। वर्षा क्यां (पदम १४, ३=)। िया] कुरू का का सहे दर । की - वात. वाती, कुर्तीयम्स [हे] हेर्गः कुरुचिन्तः ; (पाय)। बुर के [बुरर] १ जून, बंग, बाने ; (प्राम् १०)। २ (१३,३१)। जनम व जनम देतृह वंगः (ज्यः) । । दनवन, कुन्यः ; (ज्यः (हर्देश) विश्व क्षेत्र (सर्वे क्षेत्र) व्याहित (स्वय) 33) 1 《 中西中国 中原 : (中下 3, 2) 1 岁 市河。 कुरूर (स. १८३ : सहरू) | जिस ३ [उस] (स्वा = , स ४,१ ॥ १ गृह सम्बर्ध ही संस्था। क्रान्त्र का क्षेत्र के कार्य : (त्रा व संग्रा) उत्त, हर्रा (इस ; सुम ९, ४,९)। व्यक्तिया मर्ड मी [मनी] ब्राह्मण कहन्दी की प्रशनी : । सम मार्च व (काला । । ह उद्योगः जान्य क्षेत्रक समय केंद्र । (काला १० , इह) । (ह १, ३३) । रहते)। साम वृत्तिमात्री कर कर कर मात्रा । क भी बहुत्विति । के के के के के के उल्लाह (पूर्व) प्रवंत, प्रवंत्राणः (गरह)। क्रम प [कम] क्लाबर, बंग-सम्मा का नियम : (मी हुरुकुरा मं (कुरुकुर्या) ९३ व्य प्रस्कृतः (क्रीर कर का का का सर , (हा ९०)। किंडि र्क (क्रोटि) वर्ष क्रीन, (स्त १४९, य हुमहुम कर [कुमहुमाद] प्रम हुं भवत करा, हुन ं क्यम का का भारा)। सा ST. 222. ST. 22. (C. 77. 1. 1 25. 3 [新] 河东水南南南南。明京水平 क्षा किल्ला किल्ला कर दुर्स्तात्रम् वर्षेत्रः वर र स्वार्थित स्वार्थित है। जी रूपण संवर्षित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स् 12 - 12 - 24 - 25 11 - 25 12 -The grant of the g [H] [F] --- [F] [F] कुर्यात्र हे कुरक्षी करण विकास कर । कुर्यात्र विकुरको कुर्यात्र विकास कर ।

कुरर रा सुत्र स

```
कुळीच पु [ कुळाचा ] इन नाम का एक मनार्व रेग, १ उर्द
है। फिन्ह हे बुलीन, सनहान बन का, ( भारा १, १ )।
स्थार १ [स्थायिर] थर मापु , (४वृ)। दिणवर
                                                    ग्हने वाली जाति ; (सुम २,२)।
५ [ 'दिनकर ] दुत में भ्य , ( कम )। देख ३ [दिए]
                                                  कुलकुत देवी कुरकुर ( बजुद्रार ; ( मनि ) !
रून प्रशासन, कृत में भगू. (कात)। "देव पु ["देव ]
                                                  कुरुक्त पु[कुरुक्त ] १ एक म्लेक्ट देश ; १ उम्में के
न क दश्ता । ( कन्त ) । 'देवया मा [ 'देवना ] नाव-
                                                    बाला जाति : ( वन्ह १, १ ; इक ) !
ररस ( मा १२०)। देवी मी [ द्वी ] यत-देवी,
                                                  कुरुडा को [बारडा ] ब्दीनशास्त्री भी, प्रको 🗗
(पुरा (०१)। 'प्रस्म पु ( धर्म ) कुलापार, ( ठा९० )।
                                                    1=4)1
 पञ्चम ५ [ परेन] परन-दिशार. ( गम १६, हस ४३ )।
                                                   कुळ-ख पुत्री [कुळस्थ ] मन्त-वितेष, कुनकी; (ग्र)
 द्रत पु [ 'पुप्र] रग रक्त पुर , (३१ १) । 'वादिया
                                                    ३ ; वाया ९,६ ) । मा---"त्या; (धा ९०) ।
मारिका ] प्रचंत्रकरता, (सुर ९,४३, देश
                                                   कुलहमान ५ [दे] ब्ल-स्टर्ड, ब्ल वा रण र
 १०६) ( भूनमा व [ भूपण ] १ वंस का दोगन वाला,
                                                    की असरोजिं; (दे ९, ४२; मवि )।
 र एक कारी नगरन्, (पान २६, १९६)। 'सय प्र
                                                   बुन्कर पु [बुन्तर ] १ वसि-रिगंव ; (यद १, १)।।
 िमर् ] १त कः भीनान , ( टा १० ) । भावहरिया,
                                                    एड पता; ( ३१ १४ ) । १ बृरर पत्ती; ( सम 1,51)।
 महत्तरेया थः [सहस्तक्षित] पूर्व में प्रशन की,
                                                    e मार्जार, विशाल , ' बहा कुत्रद्वणायम्य विषये डेंग्य
 बहुत्व का मुन्तिसा । (नास st.) मान्य ) । "य दना "आ ;
                                                    भयं" ( एम 🗸 ) र
 (क्या १६८) । रोग पू [ रोग ] कृत व्यापट राग ,
                                                   कुलय दवा कुष्ठम ; ( आ १ )।
 (ज ६)। व्याप्त [ 'पनि ] सपत्रों को मुन्यि, प्रथम
                                                   कुल्ल्यंत्रह सी [रे] चुन्ती, कुद्धा , (रे १, १६)।
 मन्दर्भ ( सुरा १६०, ३३ ३५ ) । 'यंन पू [ 'वेरा ]
                                                   कुरुताण देशा कुलारू , ( राज )।
 पुन बन बंग, बंग, (तम ११, १०)। विम पु चित्रप्रो
                                                   कुलाल पु [ कुरवाल ] कुरमदार, कुरमार , (पास ; हार्ग),
 इन में इन्यन, बन में समार , (मग ६,३३)। व्यक्ति
                                                   कुलाल वृ[ कुरहाट ] १ माओंग, विमाद ; १ वर्ष
 सक् १ [ वर्षसक्त ] १न न्म, धून-रंगदः ( कप ) ।
                                                    M7: ( 80 2. 6 ) 1
  बष्ट सा [ 'बाद ] पुनील भी, कुनाइनान , ( शाव ह ,
                                                   वृत्तियात पु [कुत्वाद्वार ] कुल में कर्नक समाने 📆
 भ ३००)। 'रायणमा वि [ न्यंपरन ] ५१%, भारतान र
                                                    युग्यारी : ( 📰 १, १--वत्र १८३ ) ।
 दुर ६८ , (हीए) । 'समय ६ ('समय ) क्लाक्ट ,
                                                   कुलिक | १ [कुलिक ] १ उशेनि नाम में प्र<sup>ति</sup>द्व
 (सूत्र १, १, १)। भिलाप [शील] ध्यन्तर्यः
                                                   कुल्यि } क्यान, (सम १८)। रन एक प्रश्नी
 (नुकारक, नं १९६)। सेट्याका [फीलका]
                                                      87 , ( PK 1, 1 ) i
 ६ व वर्ष व में महर्त हुई नहीं, अध्यानमधानि विशेषा असी ,
                                                   স্থাতিব ন [পুতৰ] ৭ খান, নিলি ; (বুল 1,5,1)<sup>1</sup>
 क्षीवाम गुलाइ' ( सुरा ६०० )। 'हर व [ सुद् ] हिन्-ू
                                                     १ निही की काई हुई मीन, ( बुद १, का )।
  तुर, रिशाबर कर , १, १०, १२१ , मूल ३६४, मा ब्रोहिश ।
  'इंडॉफ रे. [ 'इंडिंप ] मान बुल की नवर्ष बबताबर !
                                                   बुलिया की [बुलिका ] मीन, दूरर . ( ६९ र )!
                                                   कुल्डिर पु [कुल्डिर ] मेर बतेर बनह रागि में रहर्ष है.
  सार्वका यान कान कामा (श ४,५) । पेया व ( पेया ) ।
  पड़ी द्राक्ष, बीवा ( यम १६) निवार वृ ( निवार )
                                                    ( 939 90, 906 ) 1
                                                   कृष्टि खरा वृश्चितिको वरियोजक का गर भर अपने <sup>क्रिय</sup>
  कर्मण ब्रम्मप्रमाने बना ग्राम विवास ( मा १ )।
  भिष्य कृष्टि के दिन् कर की सकत के सर्व , ( या )
                                                    का में हो रहका कार्या का निजय करन कार्य

 ) : प्रत्य वि [ प्रत्य ] एक्या कच्च सेन सेनेन

                                                   कृतिका कुत (कृतिका ) यस, प्रत्य का मुख्य मान्। 😘
                                                                                            . 14 5
  रण , ( जुल १, ६ ) ।
                                                     बा ११० टी)। निषात्व पु [ निनाद ]
 बुलका १ [ कुलपूर ] इत रत राज्य राजा : + प्रत
                                                                                             # 14 t
                                                     इते अज्ञ का एक सुन्द , १ ५४० वर्ष, १,
   = 0, 42 ) ;
                                                     िसंदर है ज्या अन्य की जानक
                                                                                    ¥24 >
```

And and affent all 1

13....

355

पा का वह मान जिल्ले एई/सम्बद्ध माने जाते हैं ; (पाद कुरोकोम ([कुटीकोश] पहि तिरोप: (पर ५,१— ' 42 =) 1 · बुरुरीय वि [बुरुरोन] स्त्रम कृत में स्थ्यन्तः (प्रायु ३९) । बुन्तीर वुं [बुन्तीर] जन्तु-विरोध: (प्रमः दे २,४१)। - कुर्नुस मह दिह, सर्वे] १ ज्लाना । १ स्तान करना । एंड-- "मन्द्ररम्मा कुर्नुनिक्रण मा द्रारा रिघुमी मिनियों (सा ४०६) । हुन्दुक्किया वि [दे] १ जना हुमा, "विग्हाविगारदुक्किय-कायहा " (मनि)। कुम्ल हुं [है] ९ डीसा, क्या, ९ वि, बायमर्थ, बगस्त, ३ दिन्द-पुण्ड, जिस्स पुँड कर गदा है। वट: (दे २.६९)। हुम्बर बह [कुर्टु] कुरना । वह —"मार्ग्य स्वयाग वर्त मुक्यपुररारसारकारुकु लेंबबलंद्वेयासुदं " (पदम ४३, 1 (30 कुरन्यदर न [कुरुयपुर] २०० विरोध : (मंदा) । कुन्स्ट न [दे] १ तुन्हों, युन्हा; (३ २,६३) । १ छेता पान, पहुंबा; (के २,६३; पाम)। हुन्स्ररिय ५ [हे] बान्द्विद, इतकाई, मीन्द्र्य बनाने बाता; (\$ 2,×9) { कुम्सरिया स्वी 🛛 दे 🕽 इलकाई की दुकान; (मानम) । कुरूरा मी [कुरुया] १ जल की बीक, मारियी; (बुमा; है -१,७६) । २ नदी, कृष्मि नदी: (कप्) । कुन्याम पुं [कुन्याक] संविदेश विशेष, मन्त्र देश का एक गाँव; (काम) । कुल्टुडिया मी[कुल्टुडिका] वर्ष्टना, वहाँ; (नुम१,८,२)। कुरन्दृरिय [दे] देना कुरुहरिय ; (महा) । कुरह ई [दे] थलाड, नियार ; (ह २,३४) । कुयणय न [दे] एइट २७, लक्डा ; (शव)। हुबलय न [बुखलय]१ नीडोन्पड, हम रंग हा हमड ; (पाम)। २ चन्त्र-विद्यमी कन्न हु; (धा २०)। ३ बनड, पर्न ; (गा १)। कुविंद पुं[कुविन्द] तन्तुबय, बपद्या दुनने बला ; (सुरः 🏣 । यामी मं 🕻 वासी] बली-सिंग : (१७) ५- यज्ञ ३३ । (कृषिय वि [कृषित] इ.द्र, जिल्को सुन्या हुमा दे। 🕫 : पर ६.९ सुर ६, ३, हेका ०३ ; बालु ६४) s कुषिय स्त कुण=इन्द्रः क्ट्राह, मुक्तक्र्रः)। भारा ः [मारा] विजैश प्रादे एहेरकार एउने की कृष्टिया,

1 (FSP FP--- 4.P बुवेषों मी [बुवेषी] नम तित्त, एक जत का हवियार; (मह १,३--पर ४८)। कुचेर इसो कुचेर ; (महा)। कुट्य सह [क, कुर्च] करना, बनना । कुन्छ ; (मग)। भूश-कन्निया; (पि ४१०)। वह-कुर्यन, बुरुप्रमाण ; (मेंत १४ मा : शादा १,६)। कुम्त ९ न [कुमा] १ तृग-शिंग, दर्भ, डाम, बाग ; (दिश १,६ ; निवृ १) । १ पुंडामर्था गम के एक पुत्र का नास ; (पत्रन १००, २)। 'यग न ['स्म] दर्न पा सन माग जो भन्दन्त संकरा होता है; (उत ७ / । 'गानयर न [ीप्रनगर] नवा-किंत्र, विहार का एक नवा, राजपूर, जो झाजकत 'राजनिर' नम से प्रतिद्व है; (पड़म १, ६=)। 'लापुर न ['प्रपुर] देवी प्रीक मर्थ; (सुर १, (१) । हिंदु स्थितं] मार्थ देश-विगेर; (सन ६०) हों)। हि वुं [रियं] मार्च देश-विशेष, हिनकी गहरानी शीर्यपुर या : (१६) । °न न ['कन, १४न] मालाय-विगेर, एट प्रशार का विजीता ; (गाया १, १--पत्र १३)। 'त्यालपुर न ['स्थलपुर] नगा-विगेश: (पडम २१, १६)। महिया की [मृत्तिका] हाम के माय कहा जानी निर्मः (निष् १८)। बर्धः विराधिता द्वेत-सिर्मः; (मगु)। कुम्सणान [दे] नेमन, बार्ड करना; (दं २,३६)। कुसल वि [कुप्रान्ट] १ निपुण, चतुर, इस, प्रानित ; (माना; गामा १, २)। २ न, मुन, हिन; (गय)। ३ पुल्स ; (पंचा ६) । कुसला श्री [कुराला] नगरा-विगेष, विनेता, प्रयोध्या ; (यावन)। कुसी मी [कुशी] टाँड का बना हुआ एक हथियार ; (==, 2)1 कुर्मुम पुन [कुसुन्म] १ वृत्त-विरेश, बन्न, कर्र ; (ग = -पत्र ४०४)। २ न इसम का पूर्ण, जिसका रग बनगरी, १ अ.२ १३ ३ रगरी में ३ १ था ५० १ १ बुःस्ंभित्र वि (कुसुभित) उत्तम स्व कर , (ब्राहर)। कुर्मुभिन्द हुं [दे] विद्वन, इंडर न्यतावर कि (०) कुर्मुनी स्वी[कुसुरनी] ३व-कि । इन्स र ४४ - इन

,व्यय पुं [कुतुव्रत] क्रम्बन्तिः ; (दन ३६, ६८) । ्र पुं [दे] भोगांनितिय, गुन्दर, एर जनका हर्ने बा , इं ; (इं.२,३६)। 😮)ई बुद्धेट, क] १ यमन्द्रार दरदाने वाला मन्त्र-्रद्रम र्नेनन्ब दि हान ; "बुनंदविद्यानसदारजेती न गच्छई ्रां तिस कारे" (इन २०, ४६)। २ मामाराह, ्रशिक्षिकोत्रः 'तेतु न विन्त्रक वर्षे मारहारोगे गर्वि (पन परे: हुद १)। रता मी [युद्धदका] बन्दर्रालेश किरानु ; (स्त ४)। ग न [फूजन] ९ सम्बक्त राज्य ; १ वि. ऐसा मधाज रबडा ; (स २, ३) । गया यो [कुजनता] क्डन, मध्यक रुप्द ; (स ्र' स [कृजिन] मायक माराजः (महा : सा ३,४५)। ाया की [कृत्विका] दुरदुर, दुरदुरा, पर्न का दुर-ुः (कि १४६०)। मह [कुज़] मध्यक गम्द्र बरना । कृताहि ; (चार)। वह-कृतंतः (से २६)। 🍧 घन [फुजित] सन्दर्भ महाद , (कुनाः में १६)। हुं[दे कृद्र] पग, प्रोंग्रे, जल ; (दे १. ४३ ; ; दन ६ : सुम १, ६, ३ १। प्ति शिट रे प्रमान्य छड-तुत्र, मृशः "कृरदुत-रारे" (परि)। २ भ्रान्ति-जन्म बन्तुः (सर ७, । ३ मापा, बपट, छन, दगा, घीरता ; (सुरा ६२७)। ग्ह , (तन १)। १ पीहा-जनह स्थान, दुःगोत्पाटह १; । सूम १, ४, १; ३१ ६); ६ निवर, टीव ; (छ ६ ; रेसा)। ७ पर्तकानस्य साय , (वं ३)। गायनद क्षण-विदेश, मान्ते का एक प्रकार का काल : म १६ १। करन्तु, गर्मिः (जिन् १, १)। आदि बारिन्] धीरेराज, दगर्गर ; (सा १२०)। हर् पु [आह] धीर से जीती को पीरने गणा : षा १. १)। मी-भगहची ; (सि. १, १)। सन [जाल] पीर को बाड़, कीरी; (उन १३)। ॥ मी [नुया] मूळ राष, बन्तवी राष्ट्र (हर ाउः (विरा1,≂)। भिन्नोगई[मिरोग] मगाः(मन ४)। हिंद्द[सिंख] १ जनी दुने के हल्लामा जुन्क अमा कर का देनेवाओं (

42

करना: द दसरे के नम से मुटी चिही वर्गेरः तिसना: (परि ; टकः)। वाहि वुं [चाहिन्] वेत, बतांतर्रः, (माव ६)। 'सबख न ['मास्य] मृटी यहाटी; (पंचा १)। 'सक्रिय वि 'साह्मिन्) मृद्धं माद्यां देने वाता; (था १०)। 'मविमञ्ज न ('सास्य | मर्श ग्वाही : (हुम २७४) । 'सामिल मी ['शास्मलि] १ एव-श्रिप के माद्यार का एक स्थान, दहां यरट-जातीय देशों का निवास है: (सम १३: द्य २,३) । २ नग्ड स्थित गृज्ञ-विद्येत : (इन २०)। ीमार न [ीमार] १ नियर के माद्या वाला पर; (हा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुमा घर; (माचा २,३,३)। ३ पर्वत में लुड़ा हुमा घर ; (निवृ १२) । ४ हिंगा-च्यान ; (हा ४,२) । ीनारसाला मी [ीमारशाला] पर्यन्त्र वाला घर, पट्यन्त्र करने के जिए बनाया हुमा घर ; (रिपा १,३) । विहस्स न [शहरप] पावण-मर यन्त्र की तरह भागा, कुषत दालमा ; (मग १४)। कृडग देनो कृड ; (भारम)। कृष्ण बह [कृष्णयू] मंकृषित होना, मंद्येय पाना : (गडर)। कृष्णिञ्ज वि [कृष्णिन] संश्चेत्र-प्राप्त, संश्चीत्रतः ; (सडः) । कुणिय वि दि देश विद्याल, बोहा विला हुमा ; (६ २, m) 1 कृष्णिय पु [कृष्णिक] गता धेरिह क पुत्र : (मीर)। कृष घट [कृज्] मन्यत्व मातात्र करता । वर--कृषंत, कृपमाण: (मीर २९ मा: विराध, १)। कृष पुष्टिय 🕽 १ कृत, बुँमा , (सटट) । २ मी, तैल क्येतः गर्यने का पात्र, शुद्रुपः; (गापा १,१--पत्र ६= ; मीत)। दिहुदुर १ [दिईर] १ कृत का मेहर ; १ वर मुद्रम की माना पर छोड़ बारर न गरा हो, मनार : '(उर t v= डो)। देगी कृष । कूर हि 🛮 बार 🕽 ९ निर्देश, निरुप, तिरुद्ध ; (पान् ४,३)। ९ ब्लंबर, रीह ; (राज्य ५,८ ; सूत्र ५, ०) । १ ई रक्त का शत रूम का गृह सुन्छ ; (साम ४६,३६)। कृत व किरों साथ भोरत, हि १,४३) । भाइम, भाइद्रम ९ (शहूबा) एवं हेर नहीं ; (मार्च । स्व म)। ा 'पास न ['पारा] एक प्रशास की संप्रशीपररते । कुर्र क [ईपन् [चील, कन्य, (हे २,९२६ ; यह्) । कृतिबिटड न दि । नोटन शिक्त, साफ (लिंद ; (बाइन) । कृति। [मृत्ति] १ निर्दे कृतियानः १ निर्दे दीक्षा राष्ट्र ; (वस् १,३) ।

कुल न (दे) मैन्य का फिला माण, (वे २,४३, से १६ कुरद व [कुरद] तर, दिनाग , (पाम , खाना १, १६)।

33.

पमग प भायक] एक प्रशार का बन्दस्य जो दिल्ले पर गरा हो सन्तर वर मीजन वरना है : (और.)। 'यालग, 'यालप १ ['यालक] एड बेन मुनि , (बात.

4"Y) |

कृत्रकार मी [कुल्डूचा] नही, नीर को ताइने काली मरी (विनी १२०) ।

कृष पुत्र [ते] १ पुरुष्ठे भीत्र की सात्र में जाता , (हे १, (२, गम १/२ बुर्म्भ मांच का छुनाने बाजा, छीनी हुई माप का लक्ष्में करेर करवादित लेने बाला , "तर्ज सा

 प्रश्नी प्राप्तमार्थ हो ब्रामी --ार्च मनु देश । अंद-(र वी व मण्ड वान बाग्डरीण बाउरीण करने, बार्स बागुरेंबे सम्बद्धिताना प्राप्त परिवर्षता । ते अक्षेत्र स्टब्स्ट सामार्गस्य

६४ तः हालसागाच्याह, तम वां सर्व देशा व तुमं वर्गा कृत अन्त्रकार १९९१ रिहेम विश्वितानि" (बावा १, ११ -त्व ११४)। "रागरेंग इतनारा" (उत ६०० टी, व

t. (1) : । १ [१प, क) १ १२ ३ मा, नर्ग, (प्रण् ४३)। कृपत है र स्वर्ण १, इस्स, (बन्सा ३२, व्या ह ४१६)। णुपप । क्रम्ब का मन ब्यान, क्यों पर सह

र्रंत मन है , (धीर, शपर १,८) । जुरा भी जिुटा कुन्तुन, रेह्ना, (१९,६३,८०) । अहितकातु [क्षापुष:] ५ ६१ दर मंगद, ६ मागल मनुष्य, जो महता वर 8 5 5 57 4 5 m 8 . (Sm 3) 1

बुधा १ [बुधक] त्रणे कुथ-हर, (त्रक ११)। क्काल प्रीय हर देन होते , (यह ३)। भूतर कुर कुर्मा के अल्ला का यह सन्तर, प्रश्ना धः मृत्र अन्त , "वर्षात्रदाधानुवार" (सारा १, ६०-वर

१००)। १ व्यक्त मार्च की का नह सरवा, बुक्तवा, (4 10, 50) **प्र**हर (दे) बलका,(४२, ४३)।

কুমির ব [কুমির] জন্ম কলে , শত হারি কুমু না

स्पर्वे (क्यों: ब्रह्म (क्या १०८) । कृति वृद्धिक देश क्षत्र महत्र के महत्र

(FR):

कृषिय हि [दे] मोध-स्वावर्त ह, बुगधी हुई बीव है ह क्षर उमें खेने बाता, (काया १, १≒—पन २३१)। १४ को शात करने वाला; (बाया १,१)। कृवियासी[कृषिका] १ होरा का। (३१ ०१०६)

२ छोटा स्नंद-पात्र . (राज्र) । कृती भी [कृती] अपर देखी; " एवामी प्रमाहोप (उप ७२८ टो १।

कुलार ५ [दे] धर्मसर, धर्म जैमा स्वतः गर्र "कूगरन्भं रामां" (दे २,४४ । पाम)। कुर्देड पु [कुन्साण्ड] स्कल्प देशें को एक क् (क्यू 1, ())

के नड [बारे] रिजना, मरीरना । यह, बेमर ; (रा)! के ति कियन् किला दिला म ['विने हितन समय में १ (अंत २४)। 'विन्यं म ['विनां] हिन्ते गमव नह हैं (पि १४८)। 'क्रियरेण देनों 'निर्दे (शि १४२)। दूर व (दूर] क्लिन पर ! "बर्र ! पूरी लंडा है " (पाम ४८, ४७)। "महालय वि [महार्ग हिका बहा है (बाक ९,८)। "प्रहातिय हि (मा

हितनी बडी शदि बला , (पि १४६)। कें अह पू [केकर] देश विगेष, जिलता आपा मण हो और साथा बाग जनपर्व है, शिल्यु हेग हो मेंस व दस . (१६) । "हपइमर्ड च ब्रानियं मनियं" (ग १, तन ६० शि । १ केलरे की [केमकी] दल लिय, दल्ला दा दल , (हर ₹ 4, ₹ 8 } 1

िका बचा रे (फाल २१)। "महिद्वित है। महिद्दी

केमस (१ (केनक) १ दल स्मित, ४१२८ स ^{तला, इन्हें} देशक)(गार)। १ व हत्तानुल, हारा ह र (122) 1 1 fazz, fama, | 31 1+ 11 बैज़िट देशो बैखिट । वर्ष १६। । केल्यकात करभय=रेशा ("ब ६माण b.स. तारा) केंग्रा को [बें] राष्ट्र सनी , (१ १, ११ जा नार्र)

केंब्रान्यु [केंब्रान] १ चर या . (या १ " भानगान, नगणा, । पाम , मा १३० । वैज्ञास्त्राच्य वृद्धि वर्गातमः वरम ६ रा क्षेत्रानित्रा सी [क्षेत्रानिका] च र र 🗥 🚜

केंद्र पुंकितु] १ घन , पताना ; (सुन २२६)। २ प्रह बिरोप ; (सुरज २० . गडड) (३ चिन्ह, नियान ; (भार)। ४ नुत्रा-सूत्र, गर्देशा मृता ; (गड्ड)। सिल न भित्र किन्दर्भ मही जिनमें बन्न वैदाहा सहता हो ऐसा देव-विमेरः (आव ६)। मई को (भनी] हिन्तेंग्ट और विंपुरपट की अध-महिवी का नाम, इन्टार्गा-र विगेर: (भग ५+, ४ ;ग्राया २) । [°]माल न [माल] वैशास्य परंत का स्थितहमनाम का एक विद्याद्या-स्था : (इ.स.) । केंड पुंहि विन्द्र, बाँहा : (दे १, ४४)। फेडम 🕽 पुँ [फेतुका] क्लाल-इतम क्लिप ; (सम ७९ ; केडय हिर ४, २-- गत २२६)। केंजर पुन [केयर] १ हाथ का मानूपण-विशेष, मह्गह, पादान्द : (पाम ; मग ६, ३३)। २ मुं, दिनाय सनुद्र चा पत्रज्ञ-कलगः (पर २०२)। केंद्रय पुं [केयुव] हतिया मनुह का एक पानाल-कलम ; (5%): ,केकाय मह किट्टाय्] 'के कें' मात्राज करना । वह-- "पेच्छड् तमा जहाति केंकायंत महाराष्ट्रिय " (परम ४४, ६४) । . में मुझ देवो किंसुझ (कुमा)। केस (को [केसपा) १ राजा दगरवादी एक रानी, केका दे-ग दे सजा दो कन्याः (पडन २२, ९०००: टाष्ट ३०)। र भारतें वामुदेव की माना ; (सम १४२)। ३ भारत-विदेह के विमीपण-वामुदेव की माना ; (भावन)। केक्य पुं [फेक्स्य] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन बाहुलीह प्रदेश के दक्षिण की झार नथा सिंधु देश की मोमा पर स्थित दै; ९ इस देश का रहने वाला, (पळ, १, १)। केक्य देश का शजा; (पटम २२, ९०००)। केकिसिया सी [कैकिसिका] गवर की माता का नाम ; (परम ७, ६४)। केका मां किका] मनु-गण्ड। ख ९ दिय] नपूर का भावास, सपुर-वार्गा (गाया ५.३ पत्र २४)। केकाइय न [केकायित] स्यूर का शब्द दुवा ३६)। केनकां दवा केकां । पदम १६, २६ 🕫 केंक्कमी सं[कीकमी] स्वत वासना । पत्न ५०३, वैतकाह्य दस केकाह्य: समा ः :--पत्र ६४)

केमई उस केकई । प्रत्म ५,६४,३०,५८४)।

फेसाइय देवी फेकाइय : (शत) : फेल्झ वि [क्रिय] वेचने की बीत ; (छ ६)। केड) पुंबिटमा । इय नाम वा एक प्रतितानुत्व केदब र ग्राजा ; (पडम १,९४६) । २ देख-विगेप ; (ह १,२४० ; दुना)। 'रित वुं ['रिषु] श्रीहरण, नागदण ; (दुमा)। केलिय) वि[कियन्] किता? (हे २, १६७: दुमा; केलिए (पर्महा)। केलुळ (भर) जार देखाँ; (हुमा ; पर् ; हे ४,४००)। पेट्यु (कर) ब्र [कुत्र] वहां, दिन जगह ? (हे ४,४०१) । केइड डेगो फैलिझ ; (हे २,१६७ ; प्राप्त) । केम । (भा) देखे कहुँ; (पर्; हे४, ४०९; केम्य र् ४९=)। केय न [केन] १ गृह, घर: २ चिड, निशानी : (पत ४)। केयण न [केतन] १ वरु वस्तु, टेड्री चीत ; १ चॅगरी का हाथा; (टा४, २---गत २१८)। ३ संकेत, र्मकत-स्वान ; (वत्र ४) । ४ धनुप्रको मृठ ; (इत ६) । १ मज्ती पकरने की जाल ; (स्म १, १, १) । ६ स्थान, जगह ; (आवा)। केयय देखी केकपः (मुत्रा १४२)। केर) वि [दे संयन्धित्] संयन्धां वस्तु, संयन्धां चीतः; केरय∫(स्वन १९;हे ४, ३१६ ; ३७३ ; प्राप्र ; मवि)। केरच न [करेख] १ इमुर, मंत्रद कनत ; (पान ; सुपा ४६)। २ केनद, कपट ; (हे १, १६२)। केरिन्छ वि [कीइस्त] हैमा, विम नग्ह वा ? (ह १, १०६; प्राप्त : काल) : फेरिस वि [फीट्टरा] देवा, दिन तग्ह का ? (प्रामा)। केरी सी फिकटो दिन-विगेप, क्रीर का गाउ : "निवेब-बीरिकरि--" (उप १०३१ टी)। फेल देखे कपल=हरूल ; (हे १, १६७)। केलास्य वि [समारचित] नास्तुक दिया हुमा; (बुमा)। केटाय वह [समा + रचय्] मनारचन करना, नाफ कर टीइ करना । केलायइ , (इ ४, २४) ; केन्द्राम है [केन्द्राम] १ म्बनाम-प्रविद्ध पर्वत-विराध . (से ६, ७३ : गटः, कूमा)। २ इस नाम का एक नाग-गात ; (इक्)। । ३ इत्र नाग-तृष्ट्यां माताम-पर्वतः

(टा४,३)। १ मिटी वाल्ड तग्हवा पातः (निर १, ३)। देतो कइन्डाम । केलि देतो कयति : (क्या) । केलि 🔾 स्त्री [फेलि, 'स्त्रो] १ कोडा, वेल, गम्मन; (बुमा; केली पाम, कप्)ा २ वरिहास, हाँसी, टाः (पाम: भीप)। ३ काम-कोडा: (कप: भीप)। "आर वि ['कार] कीश करने गला, विनोदी : (बण्प)। "काणण न ["कानन] श्रीदोधान, (कप)। "किल्ड, 'गिल दि ('किला । विनोदी, कीवा-प्रिय : (सपा ३१४)। २ व्यन्तर-जानीय देव-विशेष , (सुपा ३१०)। ी स्थान-विगेष , (पडम १६, १७)। "अअण न िभयन] कोडा-एड्, दिलाम-पर ; (कप्प) । °विमाण त ["विमान] विलाय-बहल : (रूप)। "सञ्जय न ["शयन] काम-राज्या : (अप्य)। "खेउजा सी िशायमा] काम-गयमा, (काम्)। केली देशों कपली ; (है १, ११०)। केरी भी [दे] प्राफ्ती, कुलटा, व्यक्तियारिकी की , (दे 4, 77) 1 . . फेरडीगिस्ट वि [कैस्टीफिस्ट] केसोविस स्थान में अन्यन्त, (934 44, 90)] किया देनों के"; (अगः काग १७--पत्र १४१, विते र⊏११)। की वँ (इस) देखें कहैं , (हमा) ៖ केयर्य रि [कियन्] किला? (सम १३४ : जिरे (१६ हो)। केयदृद्ध दु [कीयले] वीतर, अन्द्रीमार , (बाझ ; स 254,8 8,2031 केयड (मर) वेना फेलिम , (हे ४, ४०० : बुमा)। केयल [कियल] १ मंत्रण, म्यहाय : (हा १, १ : थीप)। १ मनुगम, भदिनीय: (मण ६, ३३)। ३ गद्र, सन्य बन्तु से स-निभिन्न, (रूग ४) । ४ मर्गा , परि-पूर्व (तिर १, १)। ३ मनन्द्र, मन्त-रहितः (सिन ay)। ६ व इप्त-शिव, मर्बवत हान, अव, मावि वगैर सर्व बन्तुचोर का रूप्त, सर्वतताः (तिमे प्रमण)। 'कारण हैं। [भाग्य] परिष्टां, सर्राः, (छ ३, ४) ३ 'पाप्त न कित] मर्जेओर इन, मंदर्ग हान , (टा २, १)। 'णाणि, 'नाणि वि ['क्रानिन्] १ व्यन-इन क्ला, सर्थ, (क्ला, क्रीप)। २ प्रशासक

हक्तः (पा ६)। "पणाण, 'नाण, 'न्ताम' °णाण: (विषे ८२४: ८२६: ८२३)। र न ["दर्शन] परिपूर्ण मामान्य बीध : (कम्म ४, ११) केथले म कियलम किंवल, पश्त, मात ; (न्यः । ६३. महा) । केवलाञ्च सङ [स्वमा+श्म] मागम्म कान', गुरु का केवतामदः (६६)। केवलि वि [केवलिन्] बेवल शन बाला, मर्नेड : (म "परिस्तय वि [पाश्चिक] १ स्वयत्रह, १ , ज्ञिता, हो का. (शग ६, ३१)। केयलिश वि [केयलिया] ९ केवलहान वाला . (अर) २ परिपूर्ण, महर्ण , " सामाइम केवलियं पनाचं " (k 36=9 }1 केवलिय वि [कैवलिक] ५ केवल हान से स्थान ^{तर} बाला; (द १७)। २ केवलि-प्रोक्षः (सुप्र १,^{१।} ३ केवल-क्रांनि-सबस्थी, (टा ४, २)। ४ न केरट ! सर्व्य हान : (भाव ४) (कैयलिम न [कैयल्य] केरत क्षान ; " केरतिए सर्ग (सन ६७ दी : सिमे ११८०)। केस्त पु[केंगा] केत, बाल , (उप ⊍ा टो , ^{हा} १६)। 'पुर म ['पुर] वेतात्रय वर स्थित एक रि वर-नवर , (१६)। 'लोभ दु ['लीख] केटी । उन्मूलन , (भन : फह २, ४)। 'खाणिस [धाणिज्य] केश वाले जीवों का व्यापार ; (व ६ १। "हत्य, "हत्थय पु ["हस्त, "क] हैं पारा, समारिका केरा, संभा बाल , (रूप्प । पाम)। केस देतो किलेस , (उप ५६० टी, यम ११)। केमर ९ [क्स्पीर्वर] उन्त की, धेर की , (1 ण्यदरी] [केमर पुन [केंसर] १ पुल रेणु, किशन्त (है ६० ; दे ६, ९३)। र सिंद बगैर के स्वत्थ का केमरा (से १, १०, शुरा २१४) । १ प्र वी इस , (कल्, सरह, पास)। रन इवस्य एक द्वरान, कारिफन्य नगर का एक उसन . (३१ ** ६ फल-निगेत _स (राज)। ६ मुतर्छ, म∺ा ^{उ. ह} बिगेंब , (ह १, १४६)। = पुण-विगर 2222) 1

एक बहुन, देश, अशोत उत्पर्धियो-काल के प्रश्ने से

हैसरा रो [बेसरा] १ लि की के स्कटा कर बली दी सहा : विकास के सीमाने हैं। (जासू ३१ : महार : ١ (ستمة थेमिरि ५ विस्परिम्] ५ लिए, बन्गाए, बर्गाएव , १ इत अभ्यादी , में या दश्वाचा १, ४ ११ वे द्वर्तनिया, रीज्यान परि पा नियंत्र एक बद : १ मा १०४ । ३ ३ हार्राज्ञेच, भारतीय का स्टुर्व प्रतिसम्बेद , (सम १४८) । 'एट पु (दिह देश-विलेप , (रू. १)। पेमिरिया थी (फेमिरिका) एक बार्व का गाउँ का " इस्टा , । अस । दिल ११३० हो । । षेमिरिक्ट हि [फेमरयह] केन दला . (यहा) ह प्रमध मा (फेम्सी) हमा केमरिया . " निःहर्गुटिय-प्रताप्त्राप्तानयंत्रामीययाण्याः । साद्याः ९, ६ न्यस 998) 1 केमच पु [प्रजाय] ५ कां ज्यानी गण , (गम । । ने श्रीकृत्रम यामुद्रप्त, नामायगाः (शहद) । यैसि रि [मलेशिन्] क्लान्स, विल्यः (सिन 395611 केंग्सि पुंकिति । १ एड जैन सुनि, सरवान पार्थनाय के नित्यः (शयः, सरा । १ अन्य-विरोधः, अभाके सर यो पारम करने बाला एक देखा, जिसको श्रीकृत्या ने आग याः (सुदा १६२ । । केमि ९ं [केशिन्] इसंकिम्बर ; (पटन ०४, २०)। येमित्र वि (क्रिशिक) केश कला, बल युक्त । क्ये-'आ; (सूम १,४,२)। केर्म्सा मी [केर्सा] गातवे वायुंटव की माता ; (पडम २०, 9=0)1 'फेम्मी मी ['फेप्री] केन बन्ती मी, "विकासनी" (उक्क)। चेमुत्र केरो किसुब ; (हे ५, २६ ; ८६)। भेह (मा) वि [कीट्टम्] बैना, स्थि नग्ह का ? (मंदिः पहुँ ; हमा) । बैहिं (घर) प्र लिए, यप्ने : (इं ८, ६२४)। केमय न [केनय] बार, बच्च , (हे १, १) वा ११४)। कोअ देखें कोक: (द २, ४३ हो)। कोश देनां कांच , (गदर)। मा को दंद स्याद्ध । कोशास मर [यि+कम्] दिल्ला गोलना । कोमान्ड (R 4, 968)

कोबामिय है। विक्रमित । हिर्मात प्रकृत है। हम , मोरल दें [मोबिल] १ रेपर, रिर १ (रहा १, ४) दर १३ , स्वल ६५) । २ इत्र का तुरु मेर , (विमी ४ 'सम्बद्ध हो । सम्बद्ध । सम्बद्धिः स्थितः देशम्बर : (१०० 93. - 47 \$23) 1 कोरला की [कोकिला] को-बंबर, तिरे : "मेर्टर पंचन सर^{ात} (क्रम् : पास)। कोरला मी है | बंधरा, यह व मंगर (दे २, ४%)। कोडमा मा दि] गतहा का भीत, कर्मपति : (दे १. ४= : पम)। कोडन कि किनुक र इतात, मार्च कन केले रा योज्य किनिहार: (स्र १, ११६)। १ कारवर्र, लिसा ; (बर १) १ ३ डग्गर ; (सम) । ४ उत्मृत्रा, उन्कर्य : (पंचर ५) । ४ इति-दोशित में रक्षा के लिए क्या जाता महो तिहरः कता मरामाद्रि प्रयोग : (राप ; ब्रीट, विश १, १ ; पट् १, १ ; धर्म ३) । १ गीनाप बार्टि क लिए हिरा जाता स्त्रान, विस्तापन, धूप, होस वर्षेगः क्ष्मं : । दश्च १ : गाया १, १४) । कोड्स)देश कुजरूल , (हे ५, ११० ; १०१ ; १, क्रीडहल्य हिंह ; बुना ; प्राप्त) । योउद्दल्जि वि [कुनुद्दलिन्] उत्दर्श, बीतुरी, इत्दर्श-िय: (बुना)। कोऊरल । देवी बुऊदल, (बुना ; वि६५)। कोउङ्ग्य 🕽 कोंकण वृं [कोडूण] देन विषेष ; (स ४१२)। क्रोंकणम ९ [क्रोंडुणक] १ मनार्य देग-हिंगर : (इस)। २ वि टन देश में गहरे कहा; (कह १, १; विने 9492 31 कोंच वं | क्रीक्च] १ इन नाम क एक प्रनार्व देन ; (पर १, १)। १ पति-विरोष ; (छ ०)। ३ द्वीर-विरोप ; (ती ४१)। ४ इन मान का एक अपूर (क्सा)। ध वि. हीत्य देग का निशानो : (पन्ह १, १)। 'स्यु पुं [विषु] इतिहेस, स्वस्त, (हुना) । 'यर पूं ['यर] इन सम का एक होता । बाह्य)। बीरम पुन [बीरका] गर् प्रश्न का उल्लाब ्ड २०० देवा कोंग**्र** कांचिंग संक्षित्रका देश

- कॉलिय सि [दुन्सिक] आहुन्तित, सहिता, (फह	कोक्किय रि [स्थाहन] माहन, बुताया हुम' , (मेरी)
1, Y) I	कोरकुर्य देशो बुररुरम, (श्यः मीर)।
कोंद्रश्य न [दे] १ फार्रा नंबन्धी नुवता , १ शतुनाहि	कोग्रुध्म देखे श्रीग्रुध्म । वह-कोग्रुध्ममाण (५
र्तिन संस्था गुक्त, "व्यवने बोटनकृत्य" (स्रोप २२९	1111)1
m-) (कोचण न [दे] मनीह हित, भूठो भनाई, दीपनार्थी
मोतार कुट (हे १, ११६ हि)।	(दे व. ४६)।
कींद्र राग क्षेत्र , (हे १, २०२) ;	
मीड 1 [मीरड, गीड] का लिल , (ब्रह) ।	कोच्चिय पुत्रो [दे] गैसह, नवा गिर्म । (🖽 🕻)।
वीटारेर वेडा. (तक)। मैनगपु [सिबहः]	। कोच्छ न [कीरस] १ गोत-विरोप; १ पुनी, कीनगर
ल्डका-ल श्रदानम (<u>०</u> १३)।	में उत्पत्र (राष-वर १६०)।
माहारमा १ (मृतहारक) परि शिरेड, (सीर) ह	कोच्छ दि [कांस] १ द्विनांकपी, उस हे समप्र गर्म
भेज रिमा म' [रे] ६ मापर करतु-रिगाः, गाही, महारित्,	। बता; १ न डस्ट्यस्य ; " गणियायाग्य रेस्स्य
1 4T 4T (\$7, 2+)	च्छ)हम्बी" (वास १, १—पन (४)।
चौडिम दृ[दे] यम निकारो नागों से पृट का का छत से	कोच्छवास पु [दे बुज्सभाष] बाह, हीवा, वास,
रोड का से रेन्ड बन रेन्डे कला , (इ.स. ह≒) ह	^{वि} न सनो मक्ताहरमा बाहिजन३ दोन्छभासम्म" (उत्त)।
चर्डियां दर क्टियर , (जल २, ६.) इ	कोच्डिमय दयां बुञ्जीमय , (हे १, १६१ , इसां , ११)।
कार्याची इ.स.कार्रियर , (राज) ।	कोउन देशा कुउन , (इल) !
महरणम्ह, (१९, ५५६)।	कोरमण न [दे] सी-रहन्य, (६ २,४६)।
4'2"11 [4] 101, 100, dafin 120	करेडक्रय देना कुडक्रय : (काश १,८ - एव १११)।
के कि १ वि इन्द्र, उत्तर, विकासित, (देव, ।	कारबारम रि [दे] माएरिन, पूर्व दिया हुमा, मार्ग 👫
म ^{रित} देश क्षेत्र, पाने ५, ७ सम् ६, ६≈)।	(41)
年*中マチザギ! (何で 5. 52 - 49 55 5 1 。	कोज्यिमि वि वि वि वस दशा, (१ ६ १०)।
E.A. 1 [ALE] J GELE SAL " (& C" 15) ! 5	करदुम पुन [दे] हाय न धारत अल , "हादुनी अनुनि
44, -4 - , (44) [(2.42) 4.0 AND CAN 1
काकनिय प्रशासि किन्द्राध्याः, मामार्थः, मामारिकाः,	कोह वनो हुइ=इर्। इनक् कोहिश्जमाण, (मनमे।
[\$4 3, 3 }1 44 =787, (≥12 5, 3 =98 £2] a	गढ़ - कोहिय , (और ३) ।
स समा न [समानह] १ वन इत्तर , १ वश्यात्र ।	कहन [दे] १ नगर, शहर , (१२, ४६)) - १ की
(404 4 444 44) \$	धिना, दुर्गे ३ (माना १,८—वव१३४ ल ३०, मू १
कोकामिय [दे] इन कोवकासिय इ(कर ९, ४००	उँग ३१२) । बाल वृ [चाल] शताल, नाम वर्षः
44 m2) }	(44 415) I
चीनुरव १० नुस्तुरम् , १ श १ ~वर २४९ हे ।	केंद्रिया मी [बुह्यनियश]तिन शीर का नार्व में
KAK W [SLAK] den ' BLES STE STE I STEEL .	अध्य , (बज्र १,०वर ११०)।
2 3 41 57 11 57 - 274 - 1 /	कोंद्रम पु [कोंद्राक] १ वर्गेट, वर्ग , (आका १३)
- #f =#"#fCf + #f / 2" →Etermy (#f)	६ व हर करो स स्थान स न्यान कर । चित्र कर करका
रंग्यम १ (रंगरम) शनवशहर हाँह	केट्रावर्शकोष्ट्रा साम्बद्धाः १४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
er: mrs s ;	केंद्रकेंग १ (कोहबार) देश अस दर गर श्रेस करें
श्चेष्यांस्य (ते) दश श्चेत्रांस्य , (द. १, १०)	pate 2 46 pet 184 +14 +
	,

[काचिय-काः ग

(=)1

```
कोहा माँ हि] १ रॉले, पर्दरे ; (ह २,३३--१,१००) ।
 २ व्हा, सर्वेत ; (डा ६६६) ।
कोट्टिय है दि दिया, मैंब, बहाद : (ह २,८०)।
भोद्वित हिन्दि । स्टब्स्य मृति ; (राया १३०) ३
 करनेंद्र अंतर भेंद्री ही अंतर : (हेंद्र) 13 मूर्त तर ;
 (सु ३,१००)। ४ एवं का करेब तहा बाहा का; (स्वर)।
  १ मीला, महो : १ स्माबी सन ; ३ बनार वा पेड् ;
  (81-111:27) (
कोहिम वि (इतित्रम ) बनदर्श, बनच हुमा, म-हर्क्त ;
  (बदन ६६,३<u>६</u>) 1
केंद्रिल १६ किंद्रिकी हुए, सुनर्ग, सुनग : (गड ;
कें क्रियां र १६ – ज ६६ : ६६) ।
कोंद्री मी हि दे देत, बेहत ; १ हिम्म सम्हरा ; (३२,
केंद्रईम 🕾 [दे] हम ने माहा बन; "बोहने छन्हा
  तेल्या दि १, ८३ ()
 केंद्रुम प्रदर्शिम ] केंद्र करा, रहा करा। केंद्रुप्त :
  (F C, 5€=) 1
 कोर्ट्यामी में (कोर्ट्यामी) देश हरिन्स की एट
  गानाः (क्याः (
 मीह देशे ब्रह्=हर : (सर १६,६ : स्टर १, १०)।
 की है । देनी बुद्द = की ; (यद १, १ ; स ३, १ ;
 कोहर (पष्ट)। १ काश्रामित, कारमारित, (मीर
 कोंद्रप रे २००, दर १० । ४ झलगढ, कोली: (इस ४,६;
  टर (महो । ४ चैय-विरोध ; ( राया २०१) । विवाद न
  िगार दिन्द सर्वे श्राप्त : (सैंद, श्राप्त)। १
  सम्बद्धारम्, समहाम , भगाया ५, ५३ ६
 कोहुम 🕾 (कोष्ट गाम) मन्द्र गर, सन्दर, १५३८ २, ३):
 कोहि दि (कुन्टिन) कुन्नी : (मण) ।
 कोहिम के (कोलिका) हंद कंद्र सर् स्तर (हर)।
 कोटु इं[कोटु] भार, नियम, (पर्) ।
 कोडंड देने कोडंड . म १४६) ।
  कोडंडिय इंगे कोईडिय (हम)।
  कोइंदर दि] इहं, इल, इट देर, ३)।
  कोडय [दे] जेन कोडिज रण।
  कोडर र [कोटर ] स्वयं इत हा पता नय, दिला,
```

```
($243)1
 कोडल हुँ किन्स्) पनि-स्थित ; (गव) ।
 कोडाकोडि क किराकोटि । क्याकी, कोट् हो
   क्रोड्से हुन्ते पर बं. संस्था तथा हो बहु : (सन १०४ ;
  क्त : इत )।
  कोडाल १ (कोडाल ) १ रेक्किंग रूप्य ने रूप :
   २ न योज विगेष ; (क्रम्) ।
 कोडि माँ (कोटि) १ नंत्य किंग, कोड, १०००००० ;
   ( राया १,८; हुर १, ६७; ४, ६१ )। २ सप्र-मार्ग, प्रार्ग,
   नेतः (न १२,१६ : पार्म) । ३ मंग, दिनाग, साग :
   'न्यिक्सो पही होत् बदनशेदिनिवि" (स्व ३६ :
   ब ६) । कोडि देनो की डाकोडि: (कुर २६६) । यद
   ति [बद्ध] कोट्नेक्स यदाः (का ३) । भूमि सी
   भिनि दि देन तर्व : (वी ४३)। ''तिला मी
   िमिला रेफ देन रोग ; (पान ४८, ६६) । की म
   शिल्पी बरोडों, बरेब छाड़, (मा ४२०)(देनी कोडी।
 कोडिय र [दे] १ हेटा निशेश पर, एपु राज :
   (इ.२,८०) १२ हुं, तिगुर, दुईन, कुलादिंग ; ( यह ) ।
 कोडिय ५ [कोटिक ] ५ एक देन सुने : (बन्द) । २
   দ্রু রীল দুলি-বরা ; (ছানা ; রা ১) ১
 कोडिएम ) न (कीपिडन्य ) १ उस नम का एक नगा :
 कोडिर )(स ६८-दों)। २ वन्ति गैन की गया का
   দুহ নীৰ ; (হন)। ই বুঁ বীবিদন বীৰ ভা ভৰবীৰ
   कुष: ४ दि, बॅरिक्स-रोजीय; (ग्राप-पत्र ३६०: हम्) ।
   १ दें एक तुनि, यो शिस्त्विच मिन्न या; (कि १६४२)।
   ६ मारिनियुरिका शिक्ष, एक जैन सुनि ; (क्रम्ये) । अ
   रोज्य-दर्भ हे पन दोदा ऐसे दमें पौर में जुम्मी का
   कुः (स १८ वे)।
 कोडिन्ता मी (कॉस्डिन्या) बीरेज्य मोर्च मी: (स्म)।
 कोडियर ई [है] दिन हाने, हानोंने ; हिन, रक्त
   पट्टे ह
  कोटिन्स देनो कोहिल : (गाउ)।
कोदिन्द हैं [कोरिय] इन नव है पर की, बाहर
   मुनि : विवाद : साए। ह
· कोटिन्छ न [की<mark>टियक] शरहर-ज</mark>्लेर संस्थास ,
```

कोडी देशों कोडि, (उर, ग्र.३,९; बी३०) 1 करण न विसरणो विभाग, विभाग ; (पिंड ३०७) । 'प्यार न िनार दिन नाम का साम्छदेश का एक नगर, (ती ६६)। 'मानमा सी('मानस्या) गान्धार वाम को एक मूर्य्या ; (हा ७-पन ३६३)। धरिस न [वर्ष] ताट देग र्वा राजगती, तगर-शिंग ; (इक, का १०४)। "वरिनिया मां (चिपिका) जैन मुनि-गण को एक माला ; (कप)। "सर पु " इपर] करोड्-पनि, बंहीस, (सुपा ३) । कोडीय न [कोडीन] १ इस नाम का एक गांव, जो कीन्त्र गोंत्र की एक मान्ता स्ट है, १ वि इस योज में उत्पत्न . (टा ७---पत्र ३६०)। कोईयि देनो इन्डयि (टा३, १—पत्र १२६)। को इंप्रिय ५ [कोटुरियक] १ इट्टब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का सुन्दिया, (मग)। २ बाब-प्रचान, गाँव का बंश चारमी, (फंड् १,६--यन ६४)। १ वि. बुट्टबर्मे सन्दर्भ, क्ट्रम्ब से संतरप रंगले वाला, बट्टम्ब-मबन्धी , (सहा, জাধ ३)। कोड्सम हं [कोड्यक] मन्त-विगेष, बोहर की एक जाति । (शत्र)। कोडु[दे] देखां कुटु; (दे १,३३ ; न ६४१ ; ६४९ ; है ४, ४२३ ; बाबा १, १६~~नत्र २२४ ; उप ⊏६३ <u>:</u> मवि । कोड्स देनो कोट्ट्स ; (दूना) । करोड्सिश्च व { रन्त } रन्ति कोश-विशेष ; (कुमा) । कोट्टिप 🛚 [दे] শুসুহলী, শুসুথী, রুস্থলিলা, (রুম ৩(৯ হী)। की हु रे पुं [कुछ] राग-विगेश, कुए राग; (पि ६६; बाया कीद्वर्शिश्च १३ श्रा २०)। कोदि वि [कुछिन] कुछ रंग मे प्रस्त, कुछ-रोगी ; (भाषा) । कोडिक) वि [कृष्टिक] इप्र-गेगी, वृष्ट-शम्स, (कह २, ६ ; कोडिय (पिरा १,७)। क्रोण वि [दे] १ काला, ग्याम वर्ग बाला ; (दे १, ४१) । १ मूं सपूर, तकड़ी, बर्ट्स (दें २, ४६ ; निवृ १ ; पाम)। ३ बीगा बरीर- बजाने थी संघडी, बीचा वादन-दवड, (जीत ३)। कीण }ुंत [क्रीण] दोश, क्रम, क्रम स स्ट स्ट साव, बतेपास (सडड ; दे द, ४६ ; र्या) । करोपात्र पु [करीजार] राह्मम्, फिराम 🕫 (फांड) ह कोणातम (कोनातक) अतक पदि-स्तिप , (क्ट् 1,1)1

कोषा दो सी [दे] गे.हो, गोर, (हर ९) । कोणिन) वुं [कोणिक] राज श्रीतर का पुर, रा छा, कोणिय (धंद:शाबा १. १ : मग्र : टा) ! क्षीणु मी दि] सेना, रना ; (१ १, २६)। कोण्य पुरिकोण | शुर-कोल, धर का गरमण ; (१९ 48) L कोत्य व [कीत्य] मुक्त के रंग ने जिलान हैं। (गज) : कोतुहल देशे कुत्रहल ; (शल)। कोत्तर्जहा को [दे] शब पगरते दा मगर, पात-हिरी (दे २, १४)। कोसिन । [कीनुकिक] हीनूरी, बृतुरवी, (गा १ म) कोत्तिम पु [कोश्रिकः] १ भूमि-गदन वरने वाता वर जन्द , (सीर) । २ व् ल्ड प्रकार का सरु , (स ६) । कोरय देनां कीच्छ = धीत । कोत्यर व [दे] १ किन्दः (३२,१३)। १ ^{हे}ं बहुवर , (मुता २४० , लिथू १४)। कोरधल ५ [रे] १ इगून, हेप्र, (६ १,४=)। १ हारा बेता; (न १६२)। "कार्य भी ['कारी] मनगे, केंद्र-विंग (55 1) 1 कोत्युम) ६ [कीम्लुम] वानुरंत के वर्षा स्मर्ग । बोर्ट्युह { मनि ; (नी १०, प्राप्त, महा, गा १४१ कोशम कद १,४)। कोन्ड १ [कोन्पड] वसुर, वनु, वार्तुंद, वाप , (१ 1 (10 कोरंडिम | देलां कु-इंडिम ; (ज १ , रूप)। कोदहिय कोनुमग देगो कोनुसग ; (भग ६, ७)। करेद्य देखे बुद्ध , (मनि)। कोइाल देखें बुद्दाल ; (पत्र १, १-४म १३)। कोहालिया मा [कुदालिका] छोटा कुगर, कुगरी (Per 1, 3) i कोच ९ [कोच] इस बाम का एक राजा. जिसन शर्मा मरत के शाय जैन दीजा ही थी ; (पत्रम 🖘, ६ । कोण देवां कुष्प≔दृष् । क्षेत्रम् , (तार)। कोष्य ९ [दे] भवगव, गुनाह , (द २, ४४)। **कोप्प** वि [को**प्य**] द्वेच्य, धर्यानिहर, "मधायज्ञानार (₹% 1, ₹) |

बेपर ह [कुरे] १ काम सम्बन्ध : (मेर १६६ सा : वृत्ता ; ते १, १२४) । १ तो वा जिला, स्तु तेत : (क्रीप ३०) : बीरो में [बीरो] चिन्हीं : (सन १,५०)।

कीमा विश्व कामक विकित्तीयः (क्षेत्र क्षेत्र)। कामग्रक र कोनद दि [कोमद] स्तु, मुस्तर ; (वी ६० ; राष्ट ;

कोमार थे [क्रीमार] शहर हे हंज्य राजे यह, क्राप्रामेक्स () विक १, ४१) । १ क्राप्रामेक्स ; (प्रकृष्ट हैं हुन्दर हैं हुन्दर (हे हुन्दर)। र्श-रिया, भी ,/ स्थ ११)। निष्य र मिला देशर शक्तिलेश जिल्ले बल्ही ह न्त्रवाक्ष्यां इस्ते हैं : (वित् १, १-४० वर्ष)। रोसारी मी [सीमारी] विषालीहेव ; (राज्य ४, ६६० : कोहाया के [कोहतिका] बेहरू बहुते के हर हैने. री त्या की मुक्ता के क्या करते उसी की . (जिस

5821 171 कोमुई में दि दिनेन, को ने हीन : (दे र, ४०)। चेतुरे में [चीतुरी] १ नव्ह ह्य के विर्मा : १ हे थू ४८): १ वलिया, वीक्षी , (क्षीय , सम्म १९ ही)। वेदस्याचाची सुद्रास्त्रोत् । (स्ट्राव ३६, ९०० हे) । ४

केंद्र के हिंदे ; त्य)। निहाई [निहास] रक्षा, रहे हैं। स्म १९ हैं है। सिस्पद हैं। सिही-न्त्रव र जना-जित्र ; वि ३६६ / ।

कोमुहिया देशे कोमुख्या ; र गाम १, k--न्य १००<u>)</u> । केंनुही देशे कोनुई कीनुई : (गुरु १, १ %)। चौपदग । हुँ दि । सर्वे से हा दर्भ दा ब्लाहम क्षेत्रक्ष्य रेजकर-क्षेत्र : र राजा १, १३--त्व ११६)। बीदबी में [दे] में हे माहण बरह ; (हु है) है कोगा है [कोगड़े] परिन्हीत ; (गर १, १-वर म) रोग्ट रेहे (कोन्ट्र के) १ स्ट-विहा (एक)। कोरेस्स) १२ इत रामक स्तुत्व्य (स्तीत) राज का पर सम्भाः (सर १): ३ दोन्छर एक साहुतः,

FE 4.7 ; \$ 4); बोग्य) ज़ [बोगक] स्तंत्रप्रक दुस्त, यत के बत्र कोरब शेरिको । भवन्ति क्षेत्र जन्तः (ब

कोन्छ हेर्न [कोन्छ]। सुन्तर में सन्त ;(स ११२ ; इ. १)। १ केंग्यनंत्रेय ; १ ई प्रवर्ध यान र्स्त गरा स्टब्स : (देव ४)।

कीरव्यापा में [कीरवीया] इत रम के पान रम के एक कुर्योग : (ब १)।

केंदि] इने केंद्र : (गय 1, 1-ना 18; (इ.स. ; प्रत्म ४२, स. ; मीतः इतः)। -कोम हं [है] होता, होड, रहा ; (हे १, ४४)।

कोम पुं[क्रोड] १ सम्म, स्मार; (पर, १, १-पर प; स १३१)। १ इन्हरू, चेता ; " चेत्या-" (घटः)। कोल इंकिले १ केन्स्रिकः (सन ६८,६६)। २ हुन, बाहर्कटः (सह ३६)। ३ हुन, रूप्त, हुम्प; (इस ३१० को : राजा १, १; बुना ; नाम)। ४ मुलि के ब्राह्मत का मृद सम्बुः (पाद ६,६---पन ४)। १ म्बर्काः (सम १)। श्लामकेल रीव यति ; (प्रापु ४)। १ वर्ग-तृत्व, वैगवा यात्र ; म म् वर्गान्तत, वैर_ा (स्त्र १, ५ ; सर १, ५०) । "पारा व (पाक्क) नयानीया, यह अञ्चलका सारम् या र्मा है, ब्लूबर द्विय में है ; (र्म ४१)। पाछ ६ [पल] देशीयोग, करोल्ड का लीकाल ; (रा ३, १-वा १०३)। सुन्य, सुबह 🛱 [रातक] ६ बहा मुख्य, सम्म की एक बाति, बंदली बगह ; (ब्राक्त ২, ৭, ১) ৷ ২ নিয়ন ছবা; (নায় ৭৭) ৷ মা---क्तिया: (सम १६)। वित्त हे वित्तन] बाह, राहरी ; (स्त ३६)।

केंन है [कींन] शांचिय हाला, ट्रन्सिम स ब्युवादी : १ राविक्ट पर है संबन्द गर्मी बारा ; " होते क्को सन्दरी स्वापनी (इस्): वेन सर्वत-रंबर्द ; (ब्ल ६, १०) । जुल्म व [चूर्य] हैर क क्षा, के क लहा: (तर ४,६)। द्विप [प्रत्यिक]के के हीज ; (का १, १०) (बोर्डड हं हि] सिन, स्थाते ; (हे २, ४६ पर)। २ ल, भ: (देन, ८०)।

कीर्वद हैं [कीरुव] इन के राज्य के स्था हुए। यह 不:(理题)

केन्द्रीयो में [क्षेत्रों, केनकों] रेट करेंग में ; (* * *) 1

(गत्र)।

332 कोडी देनो कोडि; (उर; स ३, १, जी ३०)। करण न [°करण] निवास, निवासन ; (चिड ३०७) । °णार न िनार] १४ नाम का गोरउदेश का एक नगर, (ती ४६)। भातमा भी भातमा गान्धार धम की एक मूर्व्यना ; (रा ७-- पत्र ३६३)। विरिमन [चर्प] साट देग र्ग सज्ञानी, नगर-विनेद ; (इक्; पर १७४)। 'वरिसिया मी ["चरिका] जैन मुनि-गव की एक शासा , (क्य) । 'सर पुं['प्रवर] क्लंड-पनि, क्लीम, (मुना ३)। कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम 🟗 एक गांव, जा कीन गोत को एक जाना रूप है ; ६ वि इस गोत्र में उत्पत्न , (टा ७---एत ३६०)। को इं.चि देलो कडिय ; (टा३, १—पत्र १२४) । कोडुँनिय ५ [कोटुम्बिक] १ शुटुम्ब का म्बामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुलिया; (भग)। २ बाम-प्रधान, गाँव का वडा झाउमी, (कह १,६---एन ६४)। ३ ति, बुटुम्बर्मे सन्दर्भ, पुरुष से संबन्ध रूपने वाला, बुटुम्ब-संबन्धी ; (सहा, জীব ३) 1 कोडूमग ५ [कोडूपक] अन्य-विशेष, कोडब की एक जाति : (राज)। कोडु [दे] देखें कुट्ट; (दे २,३३; न ६४१; ६४२; हें ४, ४२२ ; बाया १, १६—यत्र २२४ , उप ८६२ , मवि)। कोड्म देलो कोट्टुम ; (दुमा)। कोर्डुमिम न [रत] श्वि-बीड़ा-विशेष , (धुमा) । कोड्डिय नि [दे] इनुरती, इनुधी, उन्धरिता, (डा ज्यूद्ध टी)।

को ह (ई [बुन्छ] रोग-विरोध, बुग्र गय, (वि ६६, बावा कोदि वि [कुछिन्] कुछ शेम में ग्रम्त, कुछ-रोगी ; (ब्राचा) ।

कोलार्जका को [रू] दाव प्राप्त का मण्ड, प्रवर्तना (\$ 2. 9v) 1 कोत्तिम हि [कीनुकिक] बीनुरी, पृतुली, (व 🕬 कोत्तिम पु[कोश्रिक] १ मूचि-शक्त दाने रहा 🖰 प्रत्य , (सीं) । २ व् तृह प्रहार का स्यु; (स्र.)। कोरय देना कोच्छ = दौत । कोत्थर व[दे] १ शिज्ञव (६२,१३)। २ ^{हेर} बर्बर , (मुता २४० ; निष् १४) : कोत्यल पु [है] १ इमून, क्रेंग्र, (६ १,४८)। १ कर्नर येता; (न १६२)। "कारा मी ['कारी] समरी, केंद्र-विरे (5E 1) L कोत्युम) द [कास्तुम] वानुरेत के वसम्बर ह कोत्युह { मणि : (ती ९०; प्राप्त ; महा ; या ११). कोयुम १ कइ १, ४)। कोदड ५ [कोदण्ड] धतुः, धतुः, हार्मुड, चपः, (^{हा} 1(}? कोदंडिम १ देवो कु-दंडिम ; (अं १ ; इय)। कोइडिय कोट्टसग देग्वे कोड्ससग ; (मग ६, ७)। कोद्य देशो बुद्य ; (मनि)। कोहाल देनो कुट्सल ; (पह १,१--१४१३)। कोदालिया सी [कुदालिका] होता कुरा, कुणी, (तिस १,३)। कोच पु [कोच] इस नाम का एक सजा, जिसने र^{हरी} नरत के नाय जैन दीज़ा की थी_र (परम ८१, ४)। कोष्य देनां कुरप⇒पृप् । दोष्पर्; (नाट)। कोप्प पु [दे] बनसप, मुनाह ; (दं २, ४१)।

कोप्प वि [कोप्य] देव्य, अर्थानिकः ; "सकोपार्यस्ता

(978 9, 1) (

कोणाटो सी [दे] गंदी, गोर, (हुर १)।

कोणिय∫(घत, राज १, ९ ; सम , ८३)।

कीणु सी [दे] नेगा, रेगा ; (दे २, २१)।

कोतुहल रेगी कुऊरान ; (रात)।

कोणित हुवुं [कीणिक] सज प्रेटिस स पुर, हा हा

कोण्य पु 🔁 कोण 🛚 गुड-संग, पर का एट भग , 🕮

कोत्रज्ञ [कीत्रज्ञ] मुस्ट के रंग में निपन्त ही।

कोडिक) वि [कुछिक] कुप्र-रोगी, कुप्र-प्रम्न, (प्रह् २, ६ ; कोडिय मिता १,७)। क्रोण वि [दे] १ कला, स्वाम वर्ण वाला : (दे २, ४६)। १ १ं सरूट, तहरी, वर्ष्ट; (दे १, ४६ , निवृ १ ; पाम) । । बीमा क्षीर: बजाने श्री सकड़ी, क्षेत्रा-बाइन-इकड़, (जीव ३)। कोण १५न [कोण] दोन, क्रम, वर दा एक मान, क्रोणस (गउट टेर, ४१ ; रंगा)। क्रोणय ९ [क्रीलय] ग्रेस्स, विगान : (पास) । क्रोणारम ([क्रोनारक] अतन पद्मि-निगेप , (फर् 1,1)1

कोड र्री, १३ : था २०)।

होत्पर इंत क्रियर १ हापका सन्य नगः (भीत २६६ मा ; जुमा ; है १, १२४)। २ नहीं का जिनाम, सह देंग : (फ्रीय ३०) । होदेरी मां [काँदेरी] विधानिया; (पटम ७, १४३) । होनग) इं [कोमक] पील-विटेप ; (वंद ; कीर) । होमगक) क्षोमल वि [क्षोमल] स्टु, मुहमार ; (जी ९० ; पाम ; ं कृत्यू) I प्रोमार वि [क्रीमार] १ कुमार में संबन्ध स्पने वाला, वृत्रार्भवन्यी ; (विरा १, ७१)। २ इत्रार्ग-पंदन्यी ; (पाम)। १: (इमारी में इप्पन; (दे ६, मा)। र्या-निया, 'र्या ; (मग ११) । न [भृत्य] दैदक गाय-दिगेर, दिसमें बाउचें के 'लक्ष-पान-पंतर्या वर्षन है; (विस १, ७--पन ७६)। भेमारी मी [कीमारी] दिवा-वितेष ; (परन ७, १३०)। भेमुर्या की जिम्मेदिका दिल्ल करेंद्र की एक नेनी, को सम्बद्ध की सुकता के समय बहुई जाती थी ; (विने 9838:)1 होसुई या [है] एतिन, बंहें मां एतिन ; (हे र, ४=)। ्र केसुर्रे सी [कीसुर्दी] १ सन्द शत की एनिसा : (दे ५, ४८)। २ चन्द्रिश, वॉर्ज़ा ; (भीन ; गम्म १९ टी)। र इस नाम की गुरु नगरी ; (पदन ३६, ९००)। ४ कीर्नंद की पूर्णिता; (गय)। 'नाद प्रं [नाध] बन्द्रमा, बाँद ; (यस्म १९ डो)। "सहस्रय हुं ["महो-, समय] स्तव-विशेष ; (वि ३६६) । रोमुदिया देखें कोमुख्या ; (गाया १, १---४३ ९००) । रोमुदी देखी कोमुईं≔रीपुरी : (शाया १,६ २)। ग्रेपचग 🖟 (हैं 🕽 । रहे हे संग्हुण करहे का यह हुआ। ग्रेयचय ∫प्राक्तम-कियेतः (राजा ५, ९३—यत्र २२६)। रीयबी की [दें] हई है का हुमा कहा ; (हुई ३)। गेरंग हं | कोग्डू | पीन-किंग ; (पत १, १--पन =)। शेर्ट) वु [कोएप्ट, क] १ इस-किंगः (पम)। गेरिंटग∫ २ न् इस नाम का म्युब्च्छ (मतीच) शहर का एट राजन: (स्त १)। ३ डीन्टर इत दा पुन ; (पह ५,४ ; ई ९)। भेग्य) पुन [कोरक] फटोन्ड इह "मुहट, फट के क्टी; गेरव रे (पम)। " बनारि बेरवा फरका " (हा ४, १--यत्र १=६) र

कोरख पुंची [कीरख्य] १ कुल्बन में उत्पन्न : (क्न ११२ ; छ ६)। २ की व्यक्तीकीय ; ३ प्री फाळाँ यर-दर्ती गजा बद्धद्त : (जीत ३)। कोरव्याया मी [कीरवीया] इन नम ही पर्त प्राम ही एक मुद्धाना : (य ०)।) देखे कीर्दा ; (याचा १, १--पत्र १६ ; कोस्टिय { इ.स ; पडन ४२, = ; भीन ; दता) । कोर्रेट क्रोन्ट पुं [दे] र्याता, ने.क. गडा ; (दे २, ४६) । कोल पुं क्रिडेड] १ समर, बराहः (पन् १, १-पत्र ७; म १११) । २ दन्तर्य, केला ; " केलीक्य--" (गटट) । कोल ५ [कोल] १ देग-विशेष : (पत्न ६८, ६६)। ६ पुण, बाह-कीट; (सम ६६) । 🗦 गुरु, बगह, सुमग; (उर १२० दी : गाया १, १; बुमा : गाम)। ४ मृतिक हे बाहार हा एट जन्तु ; (पन्द १, १--यत्र भं)। १ भन्य-विरोप ; (धन्म १) । ६ मनुन्य की एक जीव जाति ; (मातू ४)। अ दर्धी-युत्त, वैग का गछ : ज न बङ्गीनक्त, बैर ; (इस ६, ९ ; मग ६, ९०)। "पाग न पाक नगर-विशेष, उहां श्री-इपनदेव कावान का महिर्हे, यह नगर दक्षिण में है ; (नी ४६)। पाछ १ (पाल दिन-विशेष, बर्गान्य का लोकात : (दा ३. १--- पत्र १०७)। 'सुणय, 'सुणह पुंची ('शुनक) ९ वहा गुकर, सुमर की एड जाति, जंगती बगह : (आवा २, १, ६)। २ गिद्यमं बुनाः (मल ११)। मी---'गिया; (फल ११)। 'वास झं ['वास] बार, तबही ; (सम ३६)। कोल वि[कील] १ मध्य व्यादस्य, तन्त्रिह स्त हा मनुवादी : १ तानित्रध मत से संबन्ध रखने वाला : " कंली यस्यो करण यो नाइ गस्यो" (६२२)। ३ न् वदा-कट-मंदन्यी ; (नग ६, १०) । "चुण्य न ["चूर्य] वैर का का, के का सन्दु; (इस ६,९)। दियन [पिस्थिक] बैर की सुन्ति ; (नग ६, १०)। कोलंब पुंदि किए, स्थली; (देर, ४०, प्राप्त)। २ रह, धर ; (हे २, ४०)। कोल्य हैं [कोलम्य] इस ही गाना है न्या हुमा प्रप नता; (मनु १)। कोलिंगियों मी [कोली, कोलकी] रंत-उर्जन मी ; (बाहु४)।

333 कोडी देनो कोडि ; (स्त ; स ३, १ , जी ३०)। "करण न ["करण] तिभाग, विभवन , (पिड ३०७) । "धार न "नार] इस नाम का गोरउ देश का एक नगर, (नी ६६)। भातमा सी (भातमा) गान्धार श्राम को एड मुर्च्छना : (इ. ७—१२ ३६३)। "वरिम न ["वर्ष] साट देश र्बा राजपानी, नगर-विगेत ; (१४, पत १७४)। 'यरिसिया मी [विर्यिका] बैन मुनि-गत नो एक शाखा ; (इप्य)। 'सर पु ["गपर] कंगड़-पनि, कंटीम, (मुता ३)। कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गात, जो कीनर गोत की गरु गागा रुप है , २ वि. इस गोत्र में उत्पन्त ; (य ७--पत्र ३६०)। कोड्चि देन्तं इड्चि ; (स ३, १—१२ १२६)।

को इंडिय दु [कोटुस्थिक] १ दुरुव का स्वामी, परिवार का म्बामो, परिशार का मुर्जिया, (भग)। २ बाम-प्रयान, गाँव का बडा ब्राह्मी, (कह १,६—पद६४)। ३ वि कुटुम्ब में अल्बन, रुट्रन से संबन्ध ,शाने वाला, कुटुस्य-संबन्धी , (सहा, ৰ্মাৰ ই ।। ीडूमग ९ [कोटूपक] अन्त-विगेष, कोटत की एक श्रति । (राष्ट्र) । तोइ[दे] देलां लुइ, (हे २,२६; न ६४१; ६४२, हें ४, ४२६ ; वादा १, १६--वत्र १२४ ; उप ८६१ ; मवि)।

होड्स देनो कोट्ट्रस ; (बुसा) ।

तोडुमिम न[रत] रति बोब-विशेष ; (धुना) । নীস্থিয় বি [ব] কুনুংলা, কুনুগ্রী, কন্দনিসা, (রম ৬६= टी)। तोइ हेद [बुन्छ] राग-प्रियेत, बुर राग, (वि ६६; बाबा होड र्री, १३ ; आ २०) इ होदि वि [कृष्टिन्] दुए गेम से सम्म, बुए-गेमी ; (साका)। मेडिक १ रि [बुग्रिक] बुग्र-बंगी, बुग्र-मन्त, (क्ट्स २, ६ ; तिहिय विता १,७)। रोण वि [दे] १ कता, स्थम वर्ण बल्ता ; (दे १, ४६)। र पुंतरूर, लक्डी, मर्टिं (दे १, ४१ , नितृ १ , पत्म)। > बीला वरीर: बागने 🗷 लकड़ी, बीला नाइन-इनड, (अीन ३)। १

गेष ≀प्न [कोण] दोव, सथ, वरदा ल्इ. शांव, होगम ' गड़ है २, ४१ ; रंगा) 1 होजय पु [कीन्य] गत्त्व, विशाव ; (श्रम)। होपालम र् [कोनाञ्च] अनक विद्यक्तिमः, (क्यू 1,1) 1

कोषा दो थाँ [दे] गंड़ी, गोट, (हर १) । कोणिज) पुं [कोणिक] राजा धेरिक वा पुत्र, सरीर कोणिग}(भन, गावा १, १ ; महा; दर)। कोणुं माँ [दे] लेगा, ग्ला ; (द २, २६)। कोण्ण पुद्कोण | गुरुकोण, यर का एक सर ; (*) 1 (38 (113)

कोतव व [कीतव] मूक के ग्रंस के निपन रि कोनुहल देखा कुऊहरर ; (बान) । कोल लंका सो [दे] टार पगुरते का सण्ड, पवर्षा (दे २, १४)। कोसिम दि [कीनुकिक] दीन्दी, श्रुटनी, (य । ग कोत्तिभ पु[कोत्रिक] १ भूमि-सयन छने रत र प्रस्य , (सीर) । २ व एक प्रकार का सरु , (ग्राध) । कोरय देशं कोच्छ = हीन । कोत्थर व [दे] १ विज्ञान । (३२,१३)। १ हे गह्वर , (मुता २४० , निष् १४)। कोरधल ५ [दे] १ कुगुल, कोए, (६ २,४८)। १ कर् वैवा, (व १६२)। "कारा सी ['कारी] मारी, हेंट्र-रि" (इर 1)। कोत्युम) ३ [कीस्तुम] वासुरेत के वद्याना व कोरधुद् रिच ; (नो १०, प्राप्त , महा , ना ११

कोयुम कह १,४)। कोदंड ५ [कोदण्ड] धतुन, धतु, बार्चंद, वन, (98)1 कोर्डेडिम) देखे कु-इंडिम , (त १ , हम)। कोदंडिय कोट्सम देखे कोट्सम , (मग ६, ०)। कोद्य देशो बुद्य , (मनि)। कोहाल देखे कुहाल , (पण्ड १, १--पत्र १३)। कोदालिया सी [कुदालिका] बोटा काए 👯 (श्वि १, ३)। कोच वृ[कोच] इस नाम का एक राजा, जिनन राजी बात के साथ बैन दीज़ा श्री थी ; (पड़म =1, 1)! कोण देखां कुष्ण=कृष् । दोव्यर , (तर)। कोप्प पु [दे] समाथ, गुनाह , (दे १, ४१)। कोप्य वि [कोप्य] देव्य, मर्गानिस्त , "मर्गायम् (**₹₹ 1,** ₹) |

देवा ए (हुने) १ रवण स्वस्य: (क्री भेड़ मा प्राप्त के ५,५४०) है। ऐस्प्री मा जिल्ला, क्र, तेत : (क्षेत्र ३० है। रिर्म के [कींदेरी] रिप्त-निष, (पान १,५८) । । कोन्ज्यीम के [कीन्दीया] इन्तन के पान क्रम के निर्मा रे पृष्टिमक द्वित्र किंग्री (संत् ; स्रीर)। मिटरि [बोमर] गर्, स्कार : (जी५० : पम : रन्ते हैं। मार ५ [बीमार] १ इसा में राज्य राजे हारा, [मार्जवर्या , (जिस्त, १९) ६ - १ दुमरीनायर्था ; ্বিচ)। ১;:রুলেটন ডকন, (ইব, ⊏৭)। **ई'--**रिया, 'री, (अग ९४)। जिल्ल 1 [भूत्र] रेवर रामानिक रिप्ती करने के क्रमक्रमकार र्याच है ; (सिर ६, ४-८७ ४३)। मिनी मी [कीमारी] शिय-विहेद ; (पटम ७, ९३३)। मुद्रया मी [कीम्हिका] श्रीतृत्र बाहुदेव की एक मेरी, री हता की मुक्त के रामा कहाँ जाते थी; (सिंह 1826 :) (मुर्द गाँ [है] एर्गम, बंद माँ एर्गम , (हे २, ४=)। मुर्दे की [कीमुद्दी] ५ तरह शह की इतिता : (हे ३, रे (म)। १ विज्ञार, विज्ञी , (भीर , प्रम्म १९ टी)। र इस समाची सुद्दासरी ; (पड़स ३६, ५००)। ४ र्निंद के हिंदा , (रप)। 'नाहड़ [नाथ] ल्डम, बीट , (यम १९ डो) । महस्त्र हैं [मही-सय] इलार्निंग , (ति ३६६) । मुहिया हेले कामुहया , (गाया १, ६--वर १००)। मुद्दी देशो को मुद्दी=हैं हुई। (गाया १, ५ २ १। यक्षता) ६ [दे] महिने हो हो कार्य का बनाहमा यत्रय) प्रातस्य-शिव : । याचा ५, ५० −५व ५१६) । ययो सं [दे] सं देलरा हमा द्वारा ; (दूर)। भंग ५ [कोगडू] पीन-सिरंग ; (गद ६, १—या =)। भंट) दु [कोरप्ट, कि] ९ इल-विरोप, (यम)। र्देश रिन इस नम का स्युब्ब्ड (सबीव) यहां का हराकः (सा१)। ३ दोल्यः इत शपुनः; पह ६,४, ₹१)I ग्य) कु [कोरक] फ्टोन्स्टर मुस्ट, फर की क्टी; रय) (१६)। भवताति केला फल्का (ह , ५ -- यत्र ५=६)।

मोख्य हो [मीख्य] १ इन्डर में राजन ; (रू १९२ (इ.स.)। व कीम्याओचीय (वेर्यु माहरी राष्ट्र दर्ग गण ह्यात: (जीव ३) । एक्ट्रेंट (४१)।) हेर्ने कीर्यट ; (एच १, १-४३ १६ ; कास्टिय (क्य ; राम ४०, ८ ; में १ इए)। कोल है [दे] प्रेया, लेड, गण ; (दे १, ४४)। कोल हुं [ब्रोड] १ दमन, स्टह, (फ्ट १, १--पर ५) म १११) । २ उपस्य, केया ; " केटीस्य--" (महद) । कोल १ [कोल] ६ देव-कोर ; (रहम ६८, ६६) । १ दुर, बाह-बंद: (सम् ३०) । 📑 शूरर, साठ, गूमा; (इत ३२० डी : याचा १, १; बुस : यम)। ४ मृतिक के ब्राहर का एक प्रत्युः; (परा १, १~-पर ४)। ४ क्रमक-रिरोप ; (प्रम्म ४) । १ सद्भाव को एक नीत जतिः;(ब्राप्४)। श्यारीशस्य, वेश्यायाउः,≒ न बर्गानल, बैर ; (इस १, ९ ; सप ६, ९०) । "पाम व [पाक] नग-रिरोप, वहां भीरापटेर सारान् का मिन है, यह नगर हरिया में है ; (तो ४६)। पान्य ९ [पाल दिन-सिरे, परीन्य का लीकान ; (दा ३, १--पर १०७)। 'सुपाय, 'सुपाद इंगो ['शुनक] ६ बहा मुख्य, मुम्प को एक जाति, जंगली बगाई ; (झाला २, १, ४)। २ शिद्यगे दुन्तः (प्रत्य ११)। सी-'पिया ; (एच ११)। "वाम 🔄 ["याम] बल, तद्दी ; (सम ३६)। कोल हि [कोल] ९ गाँव वा दरम्ब, नान्यवाना का महुदायी : १ तिनित्रद्र मत से संस्त्य रमने बाला : " कोली यन्त्री बन्त्र शी शक्त सम्बो" (इस्)। १ न, बहर-छत-नंबन्धी , (नग ६, ६०) । खुष्यान [खूर्या] वैर का वर्त, के का सन्दुः (इत ६,६)। हियम [ास्थिक] देर की छुड़िया ; (सप ६, ५०)। कोलंब ६ [दे] क्लि, स्थली ; (दे २, ४५ पम)। २ हह, पर ; (दे २, ४३)। कोलंब है [कोलस्ब] इट को राज का नगा हुमा पत्र नग;(मनु १)। कीरुगियां मा [कोरो, कोरको] रोत उत्तर मा ; (भावुर)।

विदी-के

333 कोड़ी देमां कोडि , (उर , ग्र ३, १ ; जो ३०) ! "करण न ("करण] विभाग, विभागन , (पिड २०७)। "णार व िनार] इम नाम का भारत देश का एक नयर; (नी १६)। 'मातसा भी 'मातसा) ग्रन्थार श्रम को एक मूर्छना ; (रा ५-या ३६३)। विस्तित विषे विषे विष् की राजधानी, नगर-विरोध : (इस, यन १०४)। "बरिसिया सी ["चर्षिका] जैन मुनि-मण की एक शाखा , (रूप)। 'स्टर प ['१३र] बरोड-पनि, बोटीय, (सुरा ३)। कोडीण र कोडीन । १४म नम दा एक गांव, जो कीन्म गोत्र को एक मान्ता रूप है , २ वि इस गोत्र में उत्पन्न , (शण-पा ३६०)। कोडं विदेशो कुडियि । (हा २, १--पन १२६)। कोइंदिय पू [कोटश्यिक] ९ बुटुम्ब का स्वामो, परिवार का म्बामो, परिवार को मुन्तियां, (भग)। २ बाम-प्रयान, गाँव दा बडा आदमी, (क्ट ९,६-पन ६४)। ३ वि. ब्ट्रस्य में अन्यत्र, मुद्राव में गंबरथ ,गगने वाला, बुद्राय-मंबरधी ; (सहा, লীব ই)। कोड्सग ५ [कोट्स्क] भन्त-विगेप, बोदव को एक जाति (गत)। कोइ [दे] देनो कुटु; (दे २,२३; न ६४९; ६४२; हे ४, ४२२ ; वाया १, १६--पत २१४ , उप न्दर : मिंगे। कोड्म देशो कोट्डुम ; (पुना)। कोड्मिश्र न[रत] श्री बीद्य-विशेष , (हुमा) । कोट्टिय 🛮 [रे] बुजुल्मी, बुजुधी, उन्बर्गल, (उन ज्यू दी)। कोंड्र) पुं [बुद्ध] रोग-विगेश, बुद्ध गय, (वि ६६: वाया कोड र १, १३ : भा २०)। कोदि वि विष्टिन् देश रेश ने बन्त, बुद्र-गेमी ; (धाबा)। कोडिक १ ति [कृष्टिक] कुए-रोगी, कुए-प्रान्त, (क्षष्ट ६, ६ : कोडिय (विश १,७) १ कोण दि [दे] १ कला, स्थाम वर्ण काला, (दे २, ४६) । १ पु हरू, संदर्भ, बर्टि; (दे २, ४६ , नितृ १ , पाम) । । बीला बनैरा बक्त की लक्त्री, बीचा बाहत उन्हा, (बीप ३)। कोण । दून [कोण] कोन, सन, बर ना एक मान: क्रोणम भागतत है २, ४१ ; रंगा) । कोजय ९ [कीलच | लक्षम, विशास 🕫 (पाम)। कोपालम ई [कोनारक] क्रतक धीव-स्तित , (क्ट्

1,1) [

कोणिन) वृं [कोणिक] गता धेनिक 🖩 पुर तार्वा कोणिय (संत, नाम १, १ ; मन ; रर)। कोणु मां [दे] समा, ग्या : (दे १, २६)। क्रोण्य पु [दे क्रोण] गुरुकोल, वर का लक्ष्मन (१) 48) 1 कोतवन [कीतव] मूल्ट के रेस में जिल्लाह (गर्न)। कोन्हल देखे क्ऊडल , (बाल)। कोत्तलंका सो [दे] हाम पगरने का मणा, पण्णा (\$ 3. 9Y) I कोत्तिम वि [कीतुकिक] कीतूरी, उतुर्ली, (द (¹⁾ कोतिम १ [कोप्रिक] १ मूमि-गयन काने रहा है प्रन्य , (भीर) । २ व एक प्रकार का स्तु, (प्रः)। कोरथ देखां कोच्छ = बीच । कोत्थर व [दे] १ विज्ञान ; (६२,१३)। १ ८ बहुबर , (मुप्ता २४७ , निष्टु १४)। कोत्यल ५ [दे] १ इगूल, केए, (६ १,४=)। १६४ बेता, (त १६२)। "कारा मी ["कारी] मनी, केंट्री (दृद्द १) । कोत्युम) इ [कीलुम] वापुरत के लाला कोत्युद्द { मिन : (नी १० , प्राप्त , नदा , मा ।। कोधम) एह १,४)। कोदड एं [कोदण्ड] बतुन, बतु, कार्म क, वन, (" 15)1 कोदंडिम } देलो कु-दंडिम , (ज ३ , हण)। कोददिय कोटूनग देखे कोटूलग , (मग ६, ३)। कोइय देशो कुइय , (मवि)। कोहाल देखो कुद्दाल , (पह १, १ - पत्र १३)। कोहारिया सो [कुहारिका] छोटा हरी, हर्न (शिक्ष १, ३)। कोष पुँ [कोष] इस नाम का एक राजा, ज़िलें र बरत के माय जैन दीजा हो थी , (परम =2, 1) कोण देनो कुरप=३५ । कोप्पर , (नाट)।

कोण्य वृ [दे] अपराप, गुनाह , (द २, ४१)। कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, प्रश्नीवितर, व्यक्तीपवर्ष

(रह ९,३)।

```
प्पिर इंत क्रिपेरी १ हायका मध्य मान : (और
१६६ मा : एना : हे १, १२४ )। २ नहीं का दिनाग,
ह. वंर : ( क्रीय ३० )।
विरी सी किवेरी ] विद्यान्तिरेषः ( परम ७, १४२)।
मिग ) पुंक्तिभक ] पाँच-विशेष ; ( अंत ; और )।
ीमगक ∫
मिल वि [कोमल ] मह, मुहुमार ; ( डॉ ९॰ ; पाम ;
: 57% ) 1
 मार वि [कीमार] १ व्यार है नंदन्य स्वने वाडा,
 सार-संबन्धी ; (विरा १, ७१)। १ दुसारी-संबन्धी ;
रंपाम )। ३::इसारी में उत्पन ; (दे ९, ८५)।
 र्ग—पिया, 'री;( मन ११ )।
<! भित्य विदेश गाम-विशेष जिल्ली बाउको के
ाकत-पान-मंदन्यी दर्गन है : (तिस ६, ७--पन ५६)।
: मारी मी [ कीमारी ] दिया-तिहेद ; (पटन ७, १३०)।
 मुख्या साँ [ कीमुद्दिका ] श्रीकृत्य बासुदेव की एक भेरी,
 पै त्या की सुकता के समय यदाई दाती थी ; (विसे
 1836 ; ) 1
 ्सुई को [ दे ] एरिंका, कोई की एरिंका ; ( दे २, ४=)।
. /सुर्रे मी [ फीसुदी ] १ राष्ट्र स्तु को हरीना ह ( दे २,
  ८)। २ पन्टिया, पाँदनी ; ( भीर ; यस्म ११ टी )।
 रंडम नाम की एक नगरी; (पटन ३६, ९००)। ४
्रितंद दो एतिंगा; (गय)। 'नाहर्ष ['नाय]
  न्त्रना, चाँद ; (धन्म ११ टो )। 'महसव १ ( महो-
ू सब ] इन्तर-विशेष ; (वि ३६६ )।
  मुदिया देखें कोमुख्या ; ( राज १, १—१३ १००)।
 ृष्ठुरी देखी कीमुर्द=रीदरी : ( एका ९, ९ २ )।
  यवग ) पुं [दे] की से संहुए इसके दा बना हुआ
  षचय∫प्रकल्प-किंग्र ( राज १, १०—व्ह २२६ )।
  यबी सी [दे] हई है नग हुमा बाहा ; ( बूह ३ )।
   रंग हुं [ कोरटू ] पति-किटेप ; (पट ६, १—पत्र =)।
  रंट ) दं [कोरण्ट, कि ] १ इस-विदेवः (प्रम )।
ें रेटरा∫ २ में इस नाम का न्युटच्छ (सरीद) यहर का
   इटाइन: (वर ९)। ३ क्टेन्ट्रक इट वा पुत्र:
ि पर १,४, ई१)।
ं एवं ) प्र [ कोरक ] फ्ट्रेन्टर्ड हुनुट, छट के क्टी;
 ं रख रे(प्रमा) । भें बताते केंग्या फन्का रे (ट
   , ९ —पत्र ६=६ ) ।
```

```
कोरव्य पुंचा [कीरव्य ] १ ब्हर-बंग में इत्यन्त ; (सम
 ११२ : स ६)। २ कीच्य-गोत्रीय : ३ वं मार्ट्यो चर-
 दर्वी राजा बद्धदन : ( जीव ३ )।
कोरर्ज्ञाया मा [ कीरवीया ] १न नम ही पर्व प्राप्त हो
 एक मुच्छना : ( टा ० )।
         ) देखे कोर्ट; (गया १, १-पत्र १६;
कोरिटय
         िक्यः पटन ४२, दः सीतः स्वा र्रा
कोर्रेट
कोल पुं दि ] प्रता, नेत्द, गडा ; (द २, ४६)।
कोल पुं [क्रोड ] १ समर, बराहः (पह १, १—पत्र ७; म
  १११ ) । २ रन्तर्ग, केता ; " केर्तक्य--" (गउट ) ।
कोल पुंकोल । १ देन-विजेप ; (परप ६=, ६६ )।
  .
२ दुर, बफ्-बीट; (सम ३६ )।      २ शुरु, बगह, सुम्रा;
  (टर ३२० टी : गाया १, १; बुमा : पाम )। ४ मृष्टि
 के बाद्यर का एक अन्तु; (पह १,१—पत्र ७)। १
 बस्य-विरोप ; (धम्म १) । ६ मतुन्य को एक नीच
 जाति ; ( ऋावू ४ )। ७ वर्सी-वृत्त, वैर का गाछ ; ⊏
  न् बरसं-क्रद, बैर ; ( इस १, ९ ; मग ६, ९० ) । "पाग
  न ['पाक ] नगर-विग्रेप, जहां श्रीन्हपमदेव मगवान् हा
  महित् है, यह नगर इजिए में है ; (नी ४१)। पाल
  वुं ['पाल ] देव-विगेष, यहोन्त्र का कोकाल ; ( य ३,
  १—५३ १०७ )। 'सुणय, 'सुणह ऐसी ['शनक]
  ६ वहा मुख्द, सुमर की एक जाति, जंगती बगह ; ( माना
  २, १, ४) । २ शिखरी इताः (फल ११) । सी—
  'णिया : (फ्य ११)। विश्वास 🔄 िवास 🕽
  बारु, तक्दी ; ( सम ३६ )।
 कोल दि [कोल ] १ मदि बा टरक्ट, तन्त्रिः स्त वा
  मनुवादी : १ तन्त्रिक सत से संबन्ध गतने वाला : " बोली
  धम्मी बन्त की नाइ कमी" (बन् )। ३ न, बहर-कत-
  नंदन्दी; (नग६, १०)। खुप्म व [खुर्फी | वैर
  का चर्न, दैन का सन्यु; (इन ४,९)। हियन
  [ास्थिक] देर की दुव्या ; ( मग ६, ५० )।
 कोलंब पुं[दे] किन, स्पर्छा ; (देश, ४५,९६)। २
  हह, धर ; ( है २, ४३ )।
कोलॅब हूँ [कोल्प्रव] इस हो गाम का नमा हुमा मन
  स्पः;(म्नुः१)।
 कोटनियां मां [कोटां, कोटकी ] बेट रहीर मां ;
  (মাৰু ৮) ৷
```

333 कोडी देनो कोडि; (टा; ग्र.३,१, बाँ३०)। करण न [करण] विभाग, विभागन , (पिड ३०७)। 'णार व [°नार] इस नाम का सांस्टदेश का एक समर, (ती ६६)। भातमा सी (भातमा) गान्धार बाग को एक मुर्चना ; (रा ७-- पन ३६३)। विस्मिन [वर्ष] सार देग वी राजधानी, नगर-दिशेष ; (इस, पर १७४)। 'वरिन्यिया मी ["चर्षिका] जैन मुनि-मध को एक गापा , (क्या)। °मर पु ['इयर] कराइ-पनि, काटीम, (पुता ३)। क्रोडीण न [क्रोडीन] १ इन नाम का एक नाम, जो बीन्य गोत्र को एठ गाना रूप है, १ विद्या गोत्र में उत्पत्न , (टा ७---पत्र ३६०)। कोई. विदेशो कुड विः (ब १, १—पर १२६)। को डुँदिय पु [कोर्दुस्थिक] १ बुट्टम्ब का स्थामी, परिवार का जीव ३)।

स्थामी, परिवार का मुलिया, (भग)। २ वाम-प्रयान, गाँउ का बहा ब्राइसी, (कह १,१--व३६४)। ३ वि. बुदुम्ब में अच्छा, बुद्भव से संबन्ध रगले वाला, बुद्धम्य-मंबन्धी , (शदा, कोडून्सम पु [कोशूपक] सन्त-त्रिमेष, कोदर की एक जाति । (राज)। कोड़[दे] देखं कुड़; (दे २,३३; स ६४९, ६४२, हें ४, ४१६ ; वाया १, १६—यत्र ११४ ; ३४ ८६१ , मवि) । कोडुम देखे कोट्टुम ; (वृमा)। कोड्मिम न रत | श्त बोध-विशेष , (बुमा) । मोडिय [[दे] इनुरुगो, इनुधी, उन्हर्मिश, (उर अहम दी)। को हु रेड़ [इप्त] रोग-विशेष, इप्त शय, (पि ६६, बाया

कोडर्र १, १३ ; आ २०)। कोढि वि [कुष्ठिन्] दुए रोग से शस्त्र, दुए-रोगी ; (बाबा) । कोडिक १ वि [कुष्टिक] इप्र-गंगी, दुप्र-प्रस्त, (क्यू १, १, कोडिय विश १,७)। कोण दि [दे] ९ काला, स्थाय वर्ण काला ; (दे २, ४६) ९ पू सबुट, सबड़ी, मर्छ। (दे ९, ४६ , निवृ १ , पाछ) व बीगा वगैर: बजाने की शबड़ी, वीथा वादन-द्वड, (जीव कोण) पुन [कोण] दोन, बन्न, कवा एड क्रोणग । (सउइ , दे २, ४१ ; रंभा) ।

क्रोणय पु [कीलच]राक्षम, पिराच ; (पाम) कोणालम पु [कोनालक] उत्तक्त पदिनी 1,1) (

कोणिसः । (संत्र, नासः १, ९ ६ मनः , ३४) । क्रोणु मी [दे] नेपा, रंगा ; (र र, र१)। कोण्य पृद्धिकोषा] या रोत्त करा समय,

1

et) i कोतरव[कीतर] मृत्र के रेस ने जिल्लाह (सत्र) । कोनुहरु धने। कुउरुतः , (रूपः) । कोल जंडा सो [दे] राज गाउँ का मण्ड, राज्य (T R. 9Y) E कोसिम ft [कीतुरिक] कीहरी, प्राप्त, (व ! कोतिम पु [कोतिक] १ भून गल धने हर्

प्रत्य , (ब्रीत) १२ व गृह प्रदार का ना , (प्रत्रेत कोरच दना कोच्छ = बीन । कोत्पर न [दे] ९ स्थिन ६ (६१,९३)। र ६ थर्वर , त्युता २४० ; निवृ १४)। कोत्यल पु [दे] १ दुगूल, क्षेत्र, (इ १,८८) १ वैता, (स १६२)। °कारा मी ['का-^०' (57 1) 1 कोरयुम ५ [कीम्नुम कोरधुह मनि । (नी १ कोशुम कोदंड ٩٤ कोन

कोयर-कोलीयमा 🕽 कोला कु [कृति] ६ हमका सन समा ; (सेन १६६ मा ; हमा ; हे ५, ५२४) । १ नदी पा जिनाग, तद, तीर ; (भीष ३०) । कोर्रेस सं [कोर्रेस] रिप्ट-सिंप; (परम ७, १४६) । कोमग ो पु किमका | प्रज्ञ-स्टिप ; (भेद ; भीर)। कोनगकः । कोमदरि [कोमद] एइ, मुख्या ; (जी १० ; पाम ; E-1) 1 कोमार ६ [कीमार] १ इसर में राज्य रहने बाहा, वृक्षानांकाकी ; (किर १, १९) । १ वृक्षानांनांका ; (पान)। ३::इसरी में ठाफन; (देश, ⊏९)। मा-निया, 'मा; (सम १४)। 'सिच्च न भिन्दा वैद्यव शास-निहेद, दिनमें बादनों के ल्लन्यान-गंगर्था वर्णन है ; (तिस ६, १--पर १६) । कोमारी मी [कीमारी] रिप्र-शिंहर ; (पटन ७, ९३७)। कोमुत्या को [कीमुहिका] श्रीष्ट्रज्ञ वासुरेव की एक भेगे,

में उच्च ही मूचन है समय बजर्द जाती थी ; (विने 9826 ;) 1 कोमुर्द सी [दे] पृथित, बोर्ड मी पृथिता : (दे २, ४=)। ि फोर्मुर्र मा [फीर्मुद्री] ५ सन्द इतु की पूर्णिया : (वे २, भ=)। २ पन्द्रिश, पॉडनी ; (भ्रीत ; गम्म १९ टी)। ं ३ इस नाम की एक नगरी ; (पटम ३६, ९००)। ४ र्देनिंग की एरिया; (गय)। 'नाह दें ['नाय] घन्त्रमा, चाँद ; (घम्म १९ टा)। भहस्मय पुं [भही-ं स्वय] उत्पद-विशेष ; (वि ३६६) ।

कोमुद्दिया देखे कोमुद्दया ; (राजा ६, ४—यत्र ९००) । कोमुदी देवं: कोमुई≈दीनुराः (रहवा १, ५ २)। फोयबग) इं [दें] कर से भी हुए काई का बना हुआ कोपचय र्रप्राक्तम-स्टिपः (साम १, १३—पत्र १२६)। कोयबी सी दि | स्टंटेसग हमा काहा ; (सुट ३)। कोरंग ९ विगेरडू विजिन्हिंग ; (पर १, १-पत =)। ्र कोरंट) हुं [कोरण्ट, कि] १ इट-विरेप; (प्रम)। कोर्टरा∫ २ न इस शाम का न्तुब्ब्ब (नडीव) प्रहर का | 🗸 एक स्वतः (सत्र ९)। ३ क्टेक्टक युत्र कापुनः ; (पद् ९,४ ; सं १)।

कोरय १ कुं [कोरक] क्टॉन्प इह मुद्दुत, क्ट की बटी; कोग्य ∫ (प्रम.) । "चनाति केन्द्रा फननाः" (ट. ८, १--पत्र ५=६) ह

कोग्व्य दुंगी कीग्व्य 🕽 १ इंग्लंग में उपन्य : (🖘 १४२ ; इ. ६.)। २ डीम्स-संबंध ; ३ पुंचारती यह-र्को गता बदाल : (र्क्स ३) । कोरब्बीम के [कीखीया] हा नम के पहन हम के एड सूर्यांस : (छ ०)। योग्टि) इंग्ये कीर्ट : (गया १, १—प्रत १६ ; क्य ; परम ४१, ≕ ; मीर ; इस) (कोर्ट कोल पुं[दे] बीना, नेह, गता ; (दे २, ४)। कोल पुं [फोड] १ सम्म, साह; (पत १, १---पत ७; म १९१) । २ जन्मर्य, फंला ; " फेलीस्य—" (गउद) । कोल हुं [कोल] ९ देग-विरोध ; (पान ६८, ६६)। २ पुन, बार्र्जाटः (सम ३१) । 📑 शूरन, बगह, सुमाः; (दर ३९० टी: गाया १, १; धुना ; पाम)। ४ मृपिष्ट के बादर का एवं जन्तु; (पर, १, १--पन ४)। १ भन्य-विरोध: (धन्म १) । १ सनुत्र को एक नीप जाति ; (मातृ ४)। अ यहानिया, बैर का यात्र ; = न् बद्यां*नात,* बेर_ं (दय ६, ९ ; सय ६, ९०) । **"पाग** न ['पाक] नगर-विगेष, जहां श्री-एशनंदर मगरान् का मंदिर है, यह नगर दक्किय में है ; (ती ४१)। 'पाल वुं [धाल] देव-विगेर, धर्मेन्द्र का क्षेत्रतत ; (रा ३, १-- पत्र १०७)। 'सुप्पय, 'सुप्पद पुंसी [श्रानक] ९ वहा मुक्त, सुमर की एउ जाति, जंगती बगद ; (माचा २, १, १)। २ नियम हुनः (पण ११)। मी-'णिया; (फल ११)। 'वास क्लं ['वास] बार, टबरी ; (सम ३६)। कोल वि [कील] १ मदि द्यादगम्ह, तम्बिक स्तादा-मनुवासी : १ तानिवह मत से संबन्ध रगने वाला ; " होती धन्मो बला यो माइ रम्मो" (बन्)। ३ न, घरा-बल-मंक्यी ; (नग ६, १०) । 'खुण्ण न ['खुर्ण] वैर बादर्ग, देग बासन्यु; (दम ४,५)। दियन िंग्स्थिक] देर ही गुड़ित ; (मग ६, ९०)। कोलंब वुं [दे] किए, स्थाती ; (दे २, ४७; पम)। २ रह, घर ; (दे २, ४०) । कोलंब ५ [कोलस्य] इत ही शाया रा नमा हुमा प्रप्र मत्पः (म्लु १)। कोटगिणों मां [कोटों, कोटकी] ऐत् जरीय मी ;

कोलधरिय वि [कौलगृहिक] इन-गृह-मंबन्धी, फिन्गृह-सबन्धी, फिन्गुह से संबन्ध समने वाला , (टना) । कोलक्ता सी दि] धान्य रसने का एक गरह का गर्भ ; (झावा २, १, ७)। कोलर देनो फोटर ; (मा १६३ म)। कोलय न [कीलच] ज्योन्ति गाम में प्रशिद्ध एक कना, (विषे ३३४८)। कोलाल 🛮 [कोलाल] १ कुम्मधर-मबन्धी , १ न विही कापात्र; (उता)। कोलालिय ५ [कोलालिक] मिही का पन वेचने वाना, (कृह २)। कोलाइ १ [कोलाम] गाँव श्री एड जाति ; (एन ९)। कोलाइल ९ [दै] पत्ती का मावाज, पत्ति-गण्द; (द ₹, १०)∤ कोलाहल पु [कोलाहल] तुमृत, शोग्युत, रीता, बहुत दूर जाने वाला मनेक प्रकार का चन्युट राष्ट्र , दि ३, ६०, हेका १०६ , उन ६) । कोलाहलिय 🖪 [कोलाहलिक] बोलाहत बाला, गोग-गुन बाला , (परम ११७, १६)। कोलिअ ५ [दे] होती, तन्त्रवाव, बपड़ा हुनने शाला :

(देर,६६, यदि: म्व२, उप पृ २१०)। २ जाल का कीड्रा, मस्था , (दे ९, ९६ , पांच , था ६० _इ आव ड ,

बृह १) । कोलित व [दै] बल्बुइ, स्वा; (दे २, ४६)। कोलीकप दि [कोडीस्टन] स्वीहन, भंगीहन , (गरह) । कोलीण न [कीलोन] १ हिंदरन्ती, डोड-मर्ना, जन-धृति, (मा ३०) । ६ वि. वंश-प(परागन, शुन्तकम से आयान : र रूप कुल में रूपन्न , ४ तान्त्रिक मन का अनुवासी . (मार-महावी १३३)।

कोलीर न [दे] शाल वंग का एक पशर्व, कुरविन्द , "कोलीररनगवनेमं" (दे १, ४६) ।

कोलुक्या व [कारण्य] दश, मनुस्मा, करवा, (निवृश्त्र)। 'पडिया, 'बडिया सी ['प्रतिष्ठा] घनुष्टच की प्रतिष्ठा, (न्दि, ११) ।

मोप्फ प्रन [दे] बोवना, जनी हुई सब्बी बा दुबहा , (निपू १)। कोल्टर न [कोल्टरिंग्र] ९ वर्षन्य, बुग़लन ; (पिंड) ।

१ नगर-विशेष, (माप ३)।

कोल्स्पास न [कोल्स्पाक] इतिच देश का एवं कर बदा थी ऋपमदेव का मन्दिर है ; (ती ४४)। कोल्लर ९ [दे] छिन, स्थाली ; (६ १,४०) । कोल्सा देखे कुल्सा, (१मा) । कोल्हाम देखे कुल्हाम ; (मंत्र) । कोळ्याप्र व [कोटलापुर] श्रीतन देश का एवं स्प (शी३४)। कोळ्डासुर १ [कोळ्डासुर] ११ वय वा एवं रेप. (dî (v) i कोळ्युग [दे] टेनो कोल्हुम ; (वर १; धूर १)। कोन्हाहरू व [दे] क्त-विगय, बिम्बीक्त, (१६,१६)!

कोरहुम वु [दे] १ श्यात, नियार ; (द २, ६४ , वर्ष पडम ७, ९७ , ९०६, ४२) । २ छोल्हु, चानी, इन स्य निदालने की कत , (दे १, ६१ ; मग)। कोय ९ [कोप] शंध, कुन्मा ; (रिस १,६ ; प्रामु १३१)। कोयण वि [कोपन] कं.थी, कंत्र-युक्त, (पाम, सुन १००) सम ३४७ , स्त्रम ८१)।

कोवासित्र देनों कोश्रासिय, (पाम)। कोचि वि [कोपिन्] कोरी, कोप-युक्त , (गुरा १०), भा २०)। कोविम दि [कोविद] निरुव, निश्चन् , मनिक, (मार् मुत्र १३० , १६२) ।

कोबिम वि[कोपित] १ कृद्द किया हुमा। ६ 🛱 दांप-पुष्त किया हुमा , "बहरी किंग दाही बायरति मी काविय क्यण्" (उस) १ कोविद्या मी दे] श्याली, मी-सियार , (१ १, ४६)।

कोविजार पुं [कोविदार] इत-किंग , (कि ११) कोविणो भी [कोपिनी] धान-पुक्त भी , (आ ११) कोस ५ [दे] १ इगुम्भ रग से एक रम , १ स्तुर, प्र^{क्र} शाया , (दे २, ६१) । -

कोम पु [कोश] कोग, मार्च की सम्बाई का पीनन, है मेन ; (रूप , जो २१) १

कोम पु [कोश, च] १ सत्रजा, भवता, (वादा १,११६ पत्रम ६, २४) ६ २ तन्त्रगर को स्थान , (सुम १,६) ३ इट्सन, "कानकोशन " (नुसा) । र 55° बजी , (बड़र)। ६ गोल, क्लाब्सर, "ना मुर्ग्सन्तर कोगविद्दियम्मर्रनदंनकरणस्रं " (मुत्रा' ३० ; गउँ)। ।

दिष्य-मेर, का सोहं का स्पर्य वर्षेर. गपथ , ' ए-य मी

. 66.

(यज्ञ २२, ४४)। १ इ.स.च देश का शहा ; ४ दि, केंग्रन देश में दल्लन; (इ. १, १) । १ चुर न कोसरा मां [कोमला] १ नली विरोध कर्नाप्य कर्तीः [पुर] भवाज्या न्यांगः (झन्द १)। परम २०,२८ । । १ असी.सा. ग्राम्य, बेलाउ नेया । ोमिनिय वि [कीरानिक] । बेन्स देश में इन्स्ल, व अन्तर्भा इंत्यु देश मंद्रक्षे ; (सम १०, =) । में टन्मन, क्रयंज्यानंदर्गा ; (वं २)। कोसिन्तिन व [हे कीरोलिक] जन्त, मेर, उररणः (हे 2, 93; 57; 57-7-7-7-7-7-1)] क्रोमित्रा मां [हेर्काग्रिका] जन हेर्स ; (हे र,

9E; = 90, =0) 1

कोसल्य न [रे] प्रान्त, मेंट, टरहर ; " न पुण्डाप्रेयल्य क्रवरण क्रीयवं कृतास्म " (महा)। कोसज्ज्या मी [कीशज्य] लिएक, बनुगरे, "हर मन-र्नेतर्कसन्त्रमा च संस्कृतिका इवारि । (सुरा ६०३)। कोमल्टा मा [कीराज्या] राजमीय गम दी मनः (टा महा ; सुरा ४९३ : १९७ ; सरा) ।

कोसिन्स्य न हि कीशनिक] नेंट, ट्यहाः (७२, १३: कोसा मी [कोशा] इन तम की एक प्रतिद वेण्या, जिल्ह इतं हैन महर्षि श्रीस्पृतना मुनि ने निर्वेद्धाः मत्र मे बर्तुः मंन दिया था; (सिंत ३३)। कोलिण वि [कोप्या] योडी गम ; (जल-वेली)। कोसिय न [कीशिक] १ म्ह्यूयका गाँव किंग ; (प्रीन ४९; य ३६०)। २ वृत्ते नहत्र का गतः (चंद ५०)। ः पुंटनुरु, पूर, रून्युः (पमः, मार्थः १६)। करकोतिक जनक हुँछ निय सर्वे, क्रिल्डों सगतन् ध्रीमहर्वन ने प्रवेशित किया बा (ब्राह्म)। १ वृत्त-निरोप ; १ इन्द्र ;) नहुनः

= कंगाप्यल, सद्भवनी ; ह प्रीति, ब्रह्मुणा ; १० इस तम का एक राजा; १९ इस नाम का एक प्रमुर; १९ हुर्व को परहले बला, मार्गहर ; १३ कलिय-नार, माना १४ ज्यहनार ग्यः (हि १, १४८)। १४ इत तम व गृह नरन ; (सर्वि)। १६ पुर्मी, बीरिक मेर्स हम्मन, इंग्लिइ मोतिल ; (इ. १-एम १६०); मी क्रोसिया मी क्रोशिका] १ मान्दर्भ द्वी एड नर्दर (१ २ इस रूप की एक विषयर गुरु कर्या; (पटम १, १

३ बना ह जुना ; "इमिन्स डास्पिरेमोहरी इन्हों में (म १२३)। देखें कोसी। कोमियार ३ [कोशिकार] १ इंटर्निंग, रे क्षेत्रः (कर १,३)। १ न रेशमी वसः (८ ४ कोमी माँ [कोगी] देशे कोमिया ; (छ k, عدم): عين عبد محمد الخصير المراجد कोसुन हि [कोसुन] कून नंकने, कून का ब

HERTH ST. (152) 1 क्रेनिय । व [क्रोडीय] १ निर्मे क्रम, निर कोमन्त्र न किंग्रन्थ किंग्रन्थ किंग्रेट (क्ना किंग्रेट किंग्र किंग्रेट किंग्र किंग्रेट किंग्र किंग्रेट किंग्र किंग्रेट किंग्रेट किंग्रेट किंग्रेट किंग्रेट किंग्रेट किंग्रेट

124	यार् अस र्मह ण्यः	यो ।	[योह—क्योर
तोह व कोच] गुन्म, कीर ; (यर २ मा; तोर व कोच गुन्म, कीर ; (यर २ मा; तोर व गुन्म गुन	1 जोहर 1 1 जोहर 2 2 2 2 3 3 3 3 3 3	ती वनो कोरही, (ह १, ९१) न्यां को हिंदी , (ह १, ९१) न्यां को हिंदी , (ह १, ९१) न्यां को हिंदी , (ह १) दे हे हि [कोरिया, तार १) न्यां हंगो कोरही , (ह १) दे हे हि [कोरिया हिंदी हे होने हे हंगो केर, (ह १, ६६) हे हंगो केर, (ह १, ६५) हे हंगो केर, (ह १, ६१) हे हंगो केर, (ह ११) हे हंगो केर, (ह ११)	कन-पात लिंग, (१६ क्रोप-कामारी, युर्ज कुर ६)। (ठव ७६= डो)। चार १४)।
and the second second			

इस निरिपाइमसङ्ग्रहण्यवे कवाराहमङ्ग्रहण्यो दनमो तर्गगोः नमलो ।

```
333
                                             मार है [ महिर ] केंग्र किया, मेर क मार ; ( माला ;
                                 पार्जनहम्हरन्त्री ।
                                              सर्रि [साहरि] सहित्यस्थिकार्गः (हे १, ६०)
                                                तस्य [है] रेलं सामः (स ४, ४—त १०१ रो)।
إلا ] م المستحد عليه الميشر عدد مناسر عدد في ا
                                                1158 9 [ 1942 ] Harry Stage 18 3219 4; ( 1194;
जून : जून 🕦 १ व म क्रमण, क्रमण : म सहस्त्रित
The ($ 3, 123; 27); $ 6, 129)1 3
                                                 सरा मेर [ शुरू] १ लूमा हेल, रा हे रिता हेल ।
क्तिर है (हिंदे ३४४३ )। निर्दे [नी] १ वर्ले ह
                                                    २ मरः बजुरित बन्ता । जाग्नाः (हि ४, १४४: उना )।
ग्याः (तमः , १ व, १०)। व महत्यं की सह जनीत
के रिक्ट के कर में करण में राज्य करने हैं, विकास करने हैं।
                                                   मात्र हि [ है ] बर्जुकाः "मार्ग्यकार्णकारण
 (क्या १६)। देलं स्वय = स्ता। श्वाह को [ वर्षि ]
 के कारणान्ति । १ वर्षे विकास की कारणान्ति हैं। कारण
                                                     क्लाल (मुर्दे दे ने मेरे क्ला )।
                                                    शाउर न [ ह्यार ] क्लान्यनं, ह्याना ; (हेटा १=६)।
  हैं; (इस्म ३, ३, ज्य ११) । आमिणी शी
                                                     तरहर की [मानुर] में देतेत है निस्ता मनु गाँद :
   [ नामिनी ] विकर्तनीय, जिलेर प्रमाय हे झारण में
                                                       (हुन) हिन्दू १६)। व्हाहिनाय न [काहिनक]
   क्ला किए के सहस्त है , ( बास 3, 9 kb ) । 'पुणक
                                                        जन्मी का एक प्रधार का पान ; (वित्र १४६४)।
    » [ عليم ] مدهد ما يستر ما مدين ( عدد ) ا
                                                       नर्शत्यवि विषये क्ष्मिः (पानः हा १)।
    बार वि [ स्वयित ] १ लय बटा, बाल बटा । ३ लय रेग
                                                        सर्वास्त्र है [शारित ] मिल्ल, मुन्तिल, बर्ग महिल विस
      बला, क्यबंती ; (स्ता १३३ ; १०६ )।
                                                         राजीत्म मि [लगुरित] गर्मिंद्रम् विस्त्य हुमः (निवृश)।
     स्तर्य वि [सिंपन ] व्यंत्र हर्म्यू वृत्र ( मेरेर : व्यंत्र )।
      सहस्र वि [स्वचित ] े ब्याम, क्षेत्र र विकास
                                                          न्तररीक्य वि [ रापुर्ताहन ] नीर बनेट की लाह विका
        franci (* 9, 953; $7; A 99¥) !
                                                               भक्तमीरको य रिटीटमी य खडरोस्सा य मनितिमी ।
       सहस्र वि [ सादित ] १ स.स. हुम, हुन, हन्त्र १ (यम )
         म २१० ; उरहर्ष)। २ माजली ; वस्य हैति
                                                                क्लोहि (स बोर्स, कासरीय मुख्यदे बेला) (टाव) ।
                                                            हिया हुमा ;
                                                            खभीयसम ९ [ स्यापराम ] उठ नाग वर दिनाग भीर
          र कराया। स्त्रमी क्षेत्र महत्त्वा करवाकार व
           होर (स १९४)। ते संस्थ, संस्थ।
                                                              क्रयोवसमिय वि [स्रयोपरामिक] १ वर्षासम है इन
           भगार्त व देन्द व न म एते नवमा हेवड सम्मा ( देव
                                                                ज्ञानम्बन्धी , (सम १८६ ; हा २,१; मग।। २ व
            स्राप्त वि [सर्थित ] स्य-ज्ञान, कृत्य, भ्यंत्रीनद्यास्याय-
                                                                 परास । सर्वे द्वार २१ ३४ । ।
                                                                संस्था ३ (है) पनाग रह . (तं ६३).
             स्टब्स ५ [ हे ] हेव इ.स्ट्रेंब . ट्रं ( - यव २ ३६ )।
                                                                 संगार १ [सदूत ] र स संगत भेरत र
              मात्र १९ [सायिक] . जन व्यन्तर जन्मूलन , मा कि न
                                                                   अत्राची का नीतार्ष केत के ति नुत्ति, तिसकः व
               स्त्रता । त्रा । स्त्रा स्त्रा क्रम्परवर्गनः स्त्रापः ।
                                                                   गवा निवगंत्र ने सम थ ( में , गड़ ने
                  मण्डी। वृद्धि स्वाम स्वाम्य स्वामस्वर्थः, स्वामे
                                                                    करानिया, नैराट हा तर करा, ज मार्थिय
                 मद्भार्थ शहर वाला : वसी लगा म इत्यास " वस्तासम्बद्धः
                                                                    हनम सं प्रनित्र है ;। "
                                                                   संचमः [क्ष्] १ संचन १ सा में राग
                               चित्र : १८० व्यक्ति । १८० व
                                                                      (भी )। "डा गरेंग तुर्गमतुर्गम तुर्गमूं, मा संव
                  मान न [ क्षेत्र ] मान च न्यान क्षेत्र वन (ति १९ )।
                                                                      टवं" (मुत्तं १६=) '
                   तर्या मं [स्रदिका] सर्वका स्वाहुमार्केट,
                       क्षेत्र स्थानार् स्थानका
```

=]

बाइपट्ट ५ [सापडपट्ट] १ व तकार, जुमारी, (विर ६०) लंचिय वि हिए देश नीना हमा ; (स ६०४)। ३ १ पूर्त, हम, ३ मन्याय से स्परहार काने वाता, (वि ।,।। वरा में दिया हुमा : (अवि)। खंडरकरा वं [शयदरहा] १ दागापातिक, दंगर स्तेत भक्षी सफती समझ होता, (कृप्)। (शाया १,१ : कह १,३ : भीप) । १ गुल्हान, ही मंत्र वि [स्त्रज] संगध, पड्य, लला : (म्या २०६) । बनल करने बाला : (बाया १,१ : विमे १३६० , मेरी)। संज्ञण व राष्ट्रजन रे १ पति-विगेष, सन्जरीट : (दे १. र्रोडच न [स्वाण्डच] इन्द्र का बन-विरोध, जिनसे गर्)। २ इस-विरोप : "ताङ्वङमञ्ज्ञसंज्ञासुक्वयस्यहीर-ने जनाया बनुजाया जाना है , (नाट-विद्यो ११४)। क्ष्ममंत्रीं (म १६६) । क्षेत्रा को [क्षण्ड] मिन्नो, चीनी, मक्स्र ; (मोर १०) स्त्रेज्ञण पृद्धि । करेंग, कीच, (द २,६६,पास)। र्वडा सी [सण्डा] इन नाम की एक विचाधर-कन्या ; (स"। , ६ काजल, सामल, सभी, (≡ ४,२) । ३ माडी के पहिए खंडासंडि म [खण्डरास] इस्ते इस्त, साली, के मीतर का काला कीच. (पण्य १७ -- पत्र १९४)। (ता ; वाया १,६) । 'डीकय वि | 'एन] उसे उप मंजर पुंदि] सुना हमा पेह; (दे २,६८)। किया हमा : (सर १६, ४६)। लंडा भी रिक्टा किन्द्र-क्रिय , (सेंग)। खंडानणिशंचण न [नग्डामणिकाञ्चन] १४ ^{वत्र ह} संक्रिय (विश्वित) जो शगरा हमा हो, पराश्व . एक निपाधर-नगर ; (इन्ह)। (407) खडायत्त व [व्यवहायर्स] इन नाम हा एक निर्देश र्श्याद्र मध् मिण्डाय् ने मोदना, दुवदा बन्ना, विच्हेद करना । नगर : (इन्ह) । नाम, (हे ४,१६०)। बन्ह--स्वंडिउलंत, (स ५३,३६, संडारंड वि [सण्डलण्ड] दुस्ते दुस्ता विश हिं। नता १३४) । हरू - संदित्ताय, (उत्त) । हः -व्वंद्रियन्त्रः (समार्थः)। (क्ष पश्च हो) । संदित्र पु [स्विटिकः] छात्र, निवायी ; (घीप)। संद्र प्य विषय है १ द्वारा, धरा, हिस्सा : हि १,६७, खंडिश वि [खण्डिन] किन्न, विक्रिन, (ह १, ६३। ^{वर))} इसा) । ९ वीनी, मिली : (दर ६,८८) । ३ वस्ती का एड व्वंडिज पु [दे] १ मागथ, विहर-पाटक , व मि प्रविति हिला; "जिया--" (नव)। "घडम 🖫 ["घडक] निवारण काने को अग्रहम : (दे १, ५=)। भिनुह का अल-पान, (काया 9, 9E) । "व्ययाया सी रांडिमा मी [राणिक्या] स्था, द्वा , (प्रति १९) ! [प्रशास:] नैनाइव परंत को एक नुसा ; (श २,३)। लंडिआ सी [दे] नाव-विरोप, बीम यन का नाप , (व भेष प [भेद] विच्देर-निरोध, परार्थ का एक सन्द का 24)1 प्रवास्ताच, पटेंक हुए वह की तरह शुक्तावाद : (अम ६, खंडी की [दे] १ अध्दार, छोटा एन इए . (बावी b e)। 'मन्दर्य 🖭 ['मास्टकः] निश्चा पात्र , (शासा ९, १८--पन १३६) । २ किने का जिल, (यामा १, १-१६)। मी म जिल दिशा द्वरत, कार-कार : (पि 1 (20 FP १९६)। भिय देनो भिय: (य १०) १ क्षेत्रुक्ष व [दे] बाहु वनय, दाथ दा प्राभूगय-विगेष : (वि मोक्त व [दे] १ मुनर, शिर, सम्बद्ध , १ हाथ का करका, 159)1 मप्रनाम , (र २, ६८) । र्मन देखे खा । संदर्ध की दि] मनते, कुनता , (र २,६७) s र्णत वि[शाल्त] चमा-मोत, चमा-पुक, (३१ १९० ई. **मंद्रा व [स**ग्टक] गिया-शिष , (ग्र.६ , १६) । ৰুণা; মহি।। मंद्रण व [मार्डन] १ विच्छर, अन्त्रन, वचा । (बावा १. स्तंतच्य नि [इस्त्वच्य] समा-बाग्य, मारु क्राने *साम*ध्र ^{(क} इ. इ.काल, चल्च क्लैंग का हिलाका सलग करना . ₹=, #(₹) ("मध्यद्गुषापुं गिरुक्रमें" (गुण १४) । ३ वि. शाम करने र्वाति सी [ह्वान्ति] समा, क्षेत्र का सभाव, (क्ल, क्षेत्र बला, बगर , (सुत ४३१) । शाम् ४८) । नडमा को [नपडमा] विन्देश, विनाय, (हम, निष् १)। संति रंगो मा ।

```
S. P. Parkers
                                                                                    33.6
                                          क्षेत्राल वि [स्कल्यमत् ]स्टन्य बाता ; (स्ता १२६)।
                               पार्यसहमहण्यायो ।
                                           क्षंत्राचार पुं [ स्वल्याचार ] हावनी, मैन्य का पराव,
                                             जिचिः: ( सामा ४, = ; म ६०३ : मरा )।
[स्कल्ट] १ क्लीक्स, महादेवका एक पुत्रः (देव,
                                            स्वीय वि [स्किन्यन्] म्बन्य बाता ; (मीत)।
क्रायः रामा १,९ एव १८)। २ राम का इन नाम
क् हुमर : ।पटम १७, ११)। कुमार ५ किमार)
                                             क्षेत्रीचार पुं[रे] बहुत गम पाता की भाग ; (रे रे।
                                             संघी मी देनों संघ ; ( मीर)।
क्षेत्र हुले : ( वव )। 'साह पुं [ 'अह ] १ स्कर
इसनः स्वन्तवनः (तं १)। १ ज्वानिकारः ; (सन १,
                                               खंप मह [सिन्ह] निज्वता, जिल्ला। नंगा ; (मर्वि)।
।। भह ५ [ मह ] स्टूल का उत्तर ; (राज १,१)।
                                               श्चीपचाय न [ रे ] बम, करहा : "बहुनविधमनतमहल नवणव-
सिरी की [ श्री ] एड बोर केंनरने की मार्च का नाम ;
                                                लंग प्रिम्म विना, यंगाः (है १, १८०); २, ५
हेदग े पुं [ स्कल्पक ] ९-२ इस देखा । ३ एड हेन
संदय) सुने , ( ख : मा ; स्त ; सुन ४०= )। ४ एड
                                                  इस्मिन्द्र वि[स्त्र-मिनाडित] नर्म हे बीवा हुमा ;
 क्लिबाजर, जिसमें माजान महर्वेर इत्या पाँउ में जैन होजा
                                                   लंगारच न [स्नम्मादित्य] गूर्वर देश हा एक प्राचीत
 संदित पुं[स्कान्तित ] एक प्रत्यान देनानार्य, दिनने
                                                     क्रान्, जो साजकर 'लमन' नाम से पनिद है : (तो २३)।
   मुना में देनामों को हितिबद्ध किया; (गब्छ १)।
                                                    खंबाला व [स्त्रस्मालात | यन्त्रे हे बीरता ; ( एक
  नांच इं [स्वल्च] १ प्रतः प्रवस्त प्रतः हा हिन्छ ;
    (बन्त ४, ६६)। व म्यूर, विकार (विन २००)।
                                                      सदस्तरम पुन [त्रे] मृत्री हुई मेही ; (गर्म २)।
     ्रेकन्या, होय; (बुमा)। ४ पेट कायह, उहाँ है
                                                      क्रान ५ [ झहरा ] १ प्यु-क्लिंग, तहाः ( डा १४= ;
     ज्ञान निहल्ली है ; ( कुन्त ) । ६ छन्द्र देशे । (दिश) ।
                                                        ल्लु १,१)। १ इस त्यसार मन : (१११,३४;
      करणी मी [ करणों] मानीमी के पहले का टर-
                                                         म १३१)। चेमुबा मी [चेमु]हर्ग, नाह ; (१म)।
       इस किंग :। कंग १७०)। मन वि [मन्] नरूप
                                                          पुरा मी [ पुरा ] दिस्तान ही स्वतान में नाती ;
       बना, (रामा १,९)। वीम पु विमा निका
                                                          ( इ. २, ३)। 'बुरी मी [ 'वुरी ] स्वल हो मर्व
        ही जिनका बील होता है जिला करती बतेरा गठ; ( अ
         १,२)। सालिषु (शालिम्) व्यन्तः ह्वां हो
                                                          ब्राला प्रशिव्हित् क्रिक्ति क्रिक्ति हेता : (क्रिक्त )।
                                                           स्वतिमा पुँ दि ] सानग, गाँव का मुन्तिया । (१ ३, ६६
         संयोग ९ [ हे इंडल्यामि ] स्पृष्ट वर्ष्टा ही हाराः (ह
                                                           समार्ति में [ महूरि ] सिंह वर्ष की मार्ग किए :
, ;
          संग्रमम ५ ( हे ) राम, मुझा, बहुः (हे हे, अ१ )।
                                                             समाहि वि [है] व सार्वात, पूर्व-महरा : ( स्रोत
           श्चिममी मां [वे] न्ययं निः, हार्यः (वर्)।
                                                              11 ) 1 2 things market ( $14 36 1
            मंत्रपटि मां [३] ह्य, हुआ । (३३, ३९)।
                                                               ः जिल्लाः ( संस्कृतसः ( दृः १ )।
            संघय देशों संघ ; (हिंग)।
                                                               बाच मह [बाच्] १ एवन बान, प्रवेत बान ।
             मंचा पूर्मी करवर ] होता, होहा (हर )। की-पाः
                                                                कर देंग्ली सर्वे : (हेंद, नंद)।
                                                               सचित्र के सामन्त्रित्त । का ।। इति
              नंपर्योः मां [रे] स्वयम्यः हाय, मुद्राः (यः)।
                                                                 TINTE ( ] [ ] 40, 27, 4, 47, 17, 18 3.
                संघार प्र.व. [क्क्स्वार] हर्त्यक्ताः (पटन हर्त्य
               संचवार हमा संघावारः ( महा )।
                                                                सक्ति है [है] महाने
                 तंपार कर संपायर ; (क्ल ६६, ३८ ; महा, कि
          :/
                    .....
```

```
स्वास पुरियर्त देवच-विशेष ; (स वर्रक्ष) ।
भाग वि [ सार्व ] १ माने ग्रीम्य वन्त्र, (कड १, १)।
 ६ स साच-विरोध , (भवि ) ।
मञ्ज वि [ स्ट्रय ] जिन का तथ किया जा सक्र बहु (बहु)।
खडतंन देवो स्ता ।
स्वत्रतम् देशो खडत≃नायः (सन १६)।
शराज्याण देखे स्वा ।
नाज्ञय हेनो साज=नताः (पत्रम ६६, १६) ह
गश्चिम नि दि । जीलं, सत्त हुमा ; १ उरातव्य,
 प्रियको इलह्या हिया थवा ॥ वह : ( दे २, ७८)।
स्पश्चितः (धर) निश्चिमान । जो साया गया हो
 बद ; (सन्।)।
गाउँ भी [ गर्ड ] गुजनी, पामा; ( राज ) ;
बाइम् पुं [ बाहुँ र ] १ नाजुर वा वेड, (बुमा , उन ३४)।
  ६म मन्यान : (परम ४९, इ. द्वा ६७) ।
 माजूरी मी [ लर्ज़्री ] शजूर का गाउ, (पाम, प्रणा १)१
 न्यप्रतीम पु (दे ] नचन : (दे २, ६६ )।
 मातीम पु [ मारीन ] हाट-किए, तुन्तु : ( सुरा ४७ :
  काचा 4, < }।
 माइब [वे] १ तीमत, बती ; (६९,६७) । १ हि
  महा, ध्रातः । ( प्रमा ५ -- पत्र ६० , जीव ५ ) ।
  पुं भिष्यी मारे अल की बर्गा, (अग ७, ६)।
 शहरी व [रे] हाबा, भाषा दा अलाव , (दे २, ६८) ।
 सहय व [ शहबाह ] १ शिर का एक आयुप, ( बुआ )।
   १ बग्रहाँ का पाया वा पारी : ३ शावनिक्तात्मक भिक्ता
   भौगने का एक पात्र । व सांन्त्रक मुझ-विशेष :
     "रन्यर्प दरान, व मुप्त कुलं कारीर व्यांग ।
      मा शुर मिर्ने बाचय, बाला शाक्तिमी आवा"
                               ( बाजा रूद ) ।
 अट्रमण्ड ५ [ अट्रप्राप्तक ] अवदना-नामह कृषिती का
   वद अधारणा , "राम बाइन स्वनायना पुरश्य सह-
   क्ष्मराजिएने बार् पनियासमात्र केत कावा उत्तरप्रति" ( ल
   E( )1
  बद्दा की बिहुबा किए, उन्ता, समाई, (बुत ३३०,
   है 1, 121 }। मन्द्र १ [ मन्द्र ] बिनारी की प्रवत्त
   हे के बाद है उर व सकत हो हर , ( हुई ५ )।
  वरिष } [ दे व्यक्तिः] शत्यः, मेन्निः, स्मारं, (श
  श्रीप्रकः १ (=१ , मूब १, १ , ६ १, ०० )।
```

खड व दि [तृस् धान : (दे २, ६०; १न) शहरू वि दि । मंद्रचित्, संदोष-प्राप्त : (१ ६) खडेस न [पटरू] छ. संग, वेर के वे छः मग-कृत्यु ब्यासम्य, ज्योतिन, स्टर्, निरुक्ता 'विमि छहों अंगों का जानकार : (वि २६३)। बाइकक्ष्य पुन [बाइत्कृत] बाहर देना, व्यक्ति सकता, निरुती वगैरः का भावात, ' क्डमो निमुखिमो तनी" (मुगा ४१४)। व्यडक्कार प्रशिव्यटकार है जार देखा: (इ. ११ fix co) 1 खडिकमा] मी हि निस्की, छोडा है^त। र्वे सहा , हे २, ७१)। सहसह र् [शहजह] देत्रो साइसह , (१३) सडसडम है:[है] होता और समा ; (राज)। राष्ट्रणा श्री [दे] गैया, गी (भा ६३६ म)। सडहड ई [राटसट] साँख्त रोगः हा मारा त्सार ३ (सुपा ६०३) इ शरहरही की [दें] जन्तु-किंग्य, गिलहरी, गिल्ली. (हे यक्रिय देनो लड्डिस , (शा (८१ धा)। शक्ति देनो शिलिम : (ना १६१ म)। रादिया सी [कटिका] सही, शहरों को लिसने में क (स्प्)। शही भी [खटी] अप देवी ; (प्राम)) व्यक्ता मी [वे] मीचिक, मोनी , (वे १, ६८)। लक्ष्म मह [आविम्+मू] प्रदा होता, रापन वि सदस्दिति , (नगरा ४६)। शर् क [स्र] मर्न कता। नार: (ह ४,५॥)] न[दे] १ व्यापु, हाती-वृष्ठ, (दे १, ।।? व्यकृतः । याम) । १ वडा, महान् ; (विमे रश्या है। ३ गर्न के भाकार माला , (उपा)। लकृत्यों (दे) १ साति, प्रावस, (देव, धः)। २ चर्नत का मान, वर्गत का वर्ग, (३२,६६)। रेगे नग्राः नग्राः (सुर २, १०२, स ११२।) १३ , था १६ , स्ता, उला २ ; पंचा ⇒)। व्यक्तिम वि [सृद्दित] जिनका बार्न किया गण र ब

लहरूवा मी [दे] देश, भाषत , " सर्वयः व वर्ग

(कुमर) ।

ā" (34 1, 3=) [

```
337.
                                  TOTAL ( TT , TITE ; ( TT 12 ) $1) |
                     पार्झमह्मह्रुकायोः।
                                  न्यामा पुं [ रामक] में र तमक वेरी होने वारी ;
                                   (राया १,६८)। व्यापाण न ( असमा) मंद त्यानः (राया
                                    ्. १=)। मेह पं[ भेष ] करीत के म्लून मा बला
7]
( Toronto, or : ( = 323 ) 1
٩] ١٠٠٠ ١ ١٠٠٠ (١٠٠٠ ) عبر ا
मन १ सम् र ज्यान, महत्यक्तीन की । सुन १६ ३१
भागान्त्र नामान्। ( मन्त्री । वर्षे
                                     स्तन वि[स्तात्र] १ व्यक्तिमंदर्याः, व्यक्ति वाः ; २ तः
भा ) कर्या केंद्र करेंद्र हैंद्र सम्बद्ध (E ?.
                                      क्रांत्रपूर्व, क्रांत्रपूर्व ; "क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र
े करा रूम १३१। जोड द (स्त्रीतिन)
नं का (नम १,१,१)। मंगु दे
                                      मनय दं [ है ] १ मेर गोर्ड बना ; १ मेप लगा बेरी
क्लं बता । ३ म्हर्निंग गहुः (मा १२,६)।
ु दि १९८१। या की [हा] की, वर्ग,
                                       व्यति दुर्मी (अधिन्) नीने हेनों; 'क्लेंग मेरे उन इंन्स्राहें,'
यत ) मा [ ख्वायताय ] , मा जन मयत
                                        स्त्रित कुर्ज [ स्रप्तिय ] महत्य हो एक जति, सर्जा,
इतावर ) करता । अस्तर्याति ; पहल ३६, ६३ )।
                                          शक्त्यः (सिंगः इस्तः हे ३, १८४: प्राम् =०)।
                                           कुंडमान १ [ कुण्डमाम ] नगः दिगेप, ब्हा ग्रेमरा
ता (४ [ खतक ] नंदर करण , ( म्हल १, १= )।
की देव का जनम हुमा या : (मा ६, ३३)। कुंडप्
ज्ञान (खनन) जेल्ला (प्रत्य = १, १०, ८४ पु २३९)।
                                           त [ कुण्डपुर ] ख़ाँक ही मर्प ; (माबा २, १४, ४
                                             विद्या मी [विया ] धर्विया ; (सुम २,१)।
क्षा क्षेत्र व्या = क्षा , क्षित्र , इत् ।।
इत्तय दि विवतक ] नाइने विकार (हे ९, =१)।
                                           स्वनिर्णा हेर्डी [स्वियाणी] स्विय जाति ही
वणायिय वि [वानित ] गुरुषा हुछः, (दुरा १४९, महा):
न्निकां[स्ति] सन् कराः (मुर ३४०)।
                                            निराणी ) (<sup>दिन</sup> ; रूम )।
                                            和获有限了·西斯斯( 133, 13; 西斯·
स्यानित ( स्वतित्र ) गणने क प्रत्य सन्ते (ह र, र)।
                                              टापृ १६२ : मा ; मनि )। २ प्रतुर, बहुत ;
 व्यक्तिय वि [ अधिक ] १ क्ला-दिक्या, वरानीय ; (विने
                                              नवरुक्तवले त्राप्त विचा नेव मुहलातिल (मार्च
   १६ १२ ) । २ वि. कुम्मार बला, इस्स-र्यक्त से गरिव ; "जे
                                               हेर, १० : एवं २ ; हुर ४)। ३ विरात, बड़ा
   कुले हिर करते वर्गन्य इस हुत् वंदर्शकों (एक्स = हो)।
    चार दि [ चाहित ] नर्व परार्थ की कर दिल्या मन्ते
                                                ३०१: स ३, ४)। ४ म होता, बल्दी ; (१
                                                १,६)। द्वाणित्र वृ.[ द्वानिक] स्व
मन्त्र
   कुला, देख्यात का अनुवादी । काला ।
    मिन्य द [ विनितः] हुइ हुइ हुइ
                                                स्वयं [है] इसे खण्ण रिम ।
     मगुमा मं ही ज्या कर रख, ज्यांक रंग र १०० व.
     मणी उसे मिया . उस
                                                सन्तराणं स्व सण=क
                                                 वन्तुअ [हे] स्तं वण्गुअ रम
                               $ 3 · $ 2 · .
      म्बुमा म [३] त्र व्हा हा ल
                                                  क्ला १ (क्ला) महार को कि
                                                    इस्टरम् इत्र व स्ट्रास्टरं इत
                               33.00
       विष्य है विस्य के विष्य
                      33 .. 23
                                                    云野 東州
       वण्यु उन नाणु
        मस्युव र दि स्याणुर र र र र र
                                                               , 去新 下班
         => 1
                                        . =: ==
           · 下午下午下午 - 下午 · ·
```

- 4

```
नागर) हि [है] त्य, क्या, हिन्दूर, (ह है, ६६,
                                                    पाइमसद्दमहण्णयो ।
             राम गर [ सत्त् ] १ लगा काना, ग'ह बचना । १ सहत
             राजा। भन्त , ( उत्तर दर्ग महा )। सर्व -महिनास ,
                                                             [ 'न्वार ] निविताषारी माथु या माध्यी । (श
             ( बर्र )। ह- कामियार, ( जुल हेक्च, उन वहट हो,
                                                           लय वि [ स्वात ] साहा हुमा ; ( पत्रम (१, ४१)
            पा र. १६०)। वह-माम् ( शहे )। सह-
                                                           बया ३ [ क्षत्र ] १ लय, प्रतय, विनाग ; (भा ११,
           शतायामा, शतायमा, (की, कान्)। हरू
                                                           रे सेव-विरोध सत्र-बरमा । (सहस्र ११)। 'बा
          ami[145] ! (4.4)!
                                                          िकारित्] नाता-कारक। (हुम १६१)। क
         रमा हि [ काम ] । उत्तर, काल, व्यक्ति बाहतो न
                                                          माल १ [काल] प्रत्यक्त ; (मने, हे ४, १॥)
         नमा सवता हि केन्द्र ( वय हर ह नाम )। ह नम्द्र
                                                         िता प्र[ास्ति] प्रत्यकात की माग ; वि १६ वर्
         P'swe . ($ 1, 10, 20 480 , 411 8);
                                                         नाणि वृ [ कानिन् ] बन्तहानी, प्रीपूर्व हर हर.
       नामा १ (सम्बर, स्टब्स्) गरुवी हैन वार्ड, (जा ह
                                                        वर्षेत्रः (विमे ६१८)। समय वृश्चिमय] हा
                                                       काल , ( लहुम १)।
      नाम व[ स्टान, सामन ] र उत्तर , (ब्र १ , हिन्
                                                     वस्त्रेक्ट वि [ संपक्त ] नाम-साहरू , (वाम १, दा.
      ्रे कारण, वास्ता है अन्त्र कारण, (अ १०००वि वास्त क्षेत्र) विषय है कारण स्वतंत्र कार्र क्षेत्र कार्र कार्र कार्र
                                                    व्यक्तकर वि[शयानकर] नात बाकः (१००१
    नामप हेना नामान . ( अप्यू हें ( र. उन वर्ण्ड, सम्पू ४०) ।
   कता के [सवा] रे र्राप्त, व्यंत, व्यवश्रमाताः
    (का का)) द कर का समय, सार्थन ( ह द
                                                   २०)। २ विशास, विशा कन से माहारा में बनते रा
   १-)। या श भाग । मान, रा, भागे , (बर्ग
                                                   बनुन, ( कुर ३, ८८, कुस २८० )। राव वृ[ सा]
   भाग । भाग । भाग विष्कृति स्थान
                                                  विवापाने का नामा , ( युवा ११०)।
  ( पर)। करडी घर ] १ वर्ग करक, र बाजू
                                                नवर वेना नहर=नित्र , (अन १३ । द्वा १६३)।
 #4. ( TO (11 ),
                                               वयात हुन [ ते ] बम-मल, बाँग का बन , (मने)
व्याप्तवा हे १६ (स्वामा ) व्यापः, वर्गः व्यापः,
                                              वर बह (क्षर ) १ माना, ट्यहना । २ नप्र हाना ।
हराहित विकित्तिन विके किया हुया । ( ह है,
                                             err fa [ err ] 9 ferge, ern, and, ern, (gr 1,1
                                              है है, क्या, वास) है है बुधी वर्तम, वास , (वल है)।
Manual [ 4] + 427, 827, 3 44 81 27
                                             9300 $4, 00) | $ 9 BOT-FATTY. (FIT) | 11
Bend 8: 424 ( $ 5' 12 ) !
                                            िल का तेल (शाय कार)। बंद व [ बार] मा
FE ME . ( 45) 1
                                           कीर की सामा (21, 4)। कोट व [ काम]
me [ 62 ] as an 'as en ' was ! (42) !
                                           व्यवसा प्रविधी का श्रम कार्य मन लिया होता।
E MH . ( TH ) | E MENT OF SE
                                          काम व [ क्येन् ] कियाँ सवह संता के क्ये हर
[m. 41, 10 /1 777 ] [ 773 ] #2-
                                         रा दम क्षेत्र, क्षेत्र, वंगा , (युग ३०, १) क्रियर
एक, बरानका क्य वस्ति विति ।
                                         [ बार्यत्र ] १ मिनून वर्ष बात कर १ स
                                        ******* ( #17 $1= ) | ***** 9 [ fer
Bed ] 2 m. ed , sales 8 d die ( 25
                                        वरं, पूरव , (र्रंग । यम) । दूसमा र [ युग्म ] ।
other beating the parties of 1
                                       तम् वर वह विकास समा, मा रत्य स वर्ते का स
An 145 ' in 25' 12 ) ! Manda.
                                       10. 10) | Apr ] [ Apr ] 11. 12. 14. 61.
                                     204 . (70 111, 000) 1 farmy 1[ free,
                                     श क्ष श का श कह नुत्ता , त्राम तह । . , मू
                                    I[ na] 1 Ref 2r fma
```

य निर्मा; (४९६,१)। मुद्दी मी [भूमी] १ बाद-विरोद, (प्राप्त ४ ४, २३; ह्या ४०; भीत) । २ न्युंत्र रही; (सर्)। यह दि [नर] । जिल्ले कर्ते; (मुक्त ६०६) । २ पु इप सम का एक जैन राष्ट्र (सह) । 'सन्तय = 'स्वेतक हैतर का तैत ; (क्रोप ४०६) । 'मायिया को ['शायिया] लिनिकीर ; (फा ३६)। 'स्मर वृं 'स्वर | रामधर्मिट देवों की एट जरि ; - (== ? =) 1 मा रि [क्षा] दिनगर, क्रवामी : (जिने ४१०)। मार्ट मह मिर्पट्यू] १ धून्यामा, निर्मानी काना । १ मेंप्रहार । मर्गडा : (मूक्त १६)। मारंद वि [माराद] १ पृष्टाने यदा, तिल्हाक: १ राजिन काने बाता : ३ मधुबि परार्थ ; (स ४, ९ ; सूच et) 1 मर्देश व [मर्द्धन] १ निर्मर्थन, पण महत्वः, (वर १)। २ प्रेग्सा : (फ्रीप ४० मा) । न्तरिया मी [स्तर्पटना] जल देनी ; (मीर पर) । मगड नर [लियु] हेम्ला, योज्या । मंह--नवर्पडिविः, (मुरा x31 } नाइ हुं [नार] एवं जान्य महाम-वाति ; "मद वेदार म्मदेदं हिर्दितं हर्दम्म बगरवियस्म" (सुर ३६२)। मरदिश दि दि] ५ मल, स्या ; २ सल, स्या ; दि १, 35) 1 नगडिय वि [लित] क्लिके तेन किया गया हो वह, पेता हुमा ; (भोर ३३३ हो) । मापा न हि दिएंट कीर: की कटक-मन ठाडी; (ठा४३)। माय हुं [हे] १ कांक, तैला ; (मंत ४३८) । २ एहु; (सप १२, ६)। चग्हर प्रद [काम्बराय्] 'ख-ख' मनात इन्ता । दह---चव्हरेत : (गरह)। म्बर्गहिस पुं दि] पेंत्र, पेटा, पुत्र का पुत्र ; (हे २, ०२)। ं नरा मी [मरा] इन्दु-किंग, तरह की तरह सुब है च्हते राटा बन्तु-विरोध : (बीत १)। मरिज वि [है] मुक्त, स्ट्रिंग , (१ २, ६३ , मवि)। मिरिया सं (दे) नैकाली, दानी : माप ४३०) ।

मरिमुञ १ हे मरिगुक] इन्दर्भित (धा २०)।

वर्ष्टी मं [सरोष्ट्री] इतं वरोदिता (स्व १ ।

कान्य ति [दे] १ क्ष्रि, क्षेत्र ; १ म्युट, विस की क्रीया: (देश, ग≂)। मरोहिका को [मरोष्ट्रिका] लिकिनियः (स्व ३६)। सन्द कह हिम्बलु | ९ पड़ना, विस्ता । १ मृहना । ३ रका । महद्र ; (प्रारं) । बह-नवर्णत, खरमाण ; (मे २, २७ ; या ६४६ : सुरा ६४३) । खल वि [खल] १ हुईन, भवन नहुन्य ; (सुर १, १६)। दन् पन नाफ काने का स्थल ; (विश १, ८;था १४)। पृति [पू] गते को शह करने वाला ; (हमा ; पट ; प्रत्या) । मन्द्रम वि [है] रिक्त, गाडी ; (ह २, ७१) । गरक्तल प्रव [कलकताप्] 'स्त-क्त' प्रावन कना। गंद्रक्तंद्र; (वि १६८)। मन्दर्भाडिय वि [दे] सन्, उन्तन ; (दे २, ६७)। खलण न [स्वलन] १ नीचे देखें ; (प्राचा ; से =, ११ ; ना ४६६; बख्या २६)। शरूणा मी [स्वरूना] १ विर जना, निरन्त ; (६ २, (४) । २ दिगधना, सन्दन ; (मीत प्रस्काति, रकारतः ; "होत्या पुरते, य सन्दर्ध केनि उद् प्रतन दन-एक्नी (दर ३३६ दो)। खलमंटिय वि [दे] चुन्य, चोन-इम ; (नवि)। सलहर) पुं निलवल] नहीं है प्रवाह का माताब ; "वह-खलहरू मारवाहियाँच दिनिहिन्छत्रं करतहरान्ते" (पुर 2, 99; 2, 48)1 मला मह [दे] नगर धरना, नुधनन धरना। "दाराजि न्दरो स्टलाइ य" (परम ३४, ६३) । न्वस्थित वि [स्वस्थित] १ रहा हुमा; १ मिरा हुमा, पतिन; (हर, ७३; पत्र) । १ न् मन्त्रप, छुतह; ४ मृह , (5 9, 2) 1 मलिय वि [मलिया] यत है मान, यति-स्वितः (* x, 90) 1 स्रविण [स्रवित] १ दगम ; (पाम)। १ स्रवेलप का एक दोन ; (पन १)। बलिया का [बलिका] वित्र कौरः का वैदनशि वुर्गः (चुना ४९४)। खरियार स्ट [सर्वा+ह] १ नेपन्द्रा कर, पृत्यानः । २ समा । ३ इस्टब इन्स । महिमानि, महिमानि , •सुप्राप्**३० स** €६८),

```
सप्पर) हि [दे] स्त, स्ता, हिन्दा; ( हे ९, ६६ ; /
                                                                                                      पाइत्रमहमहण्याती ।
           ų
                                 सपुर ( गाम )।
                               सम ग्रह [सम् ] १ समा करना, माठ करना । १ महन
                                हता। यम् ; (का टो, महा)। क्रं-यमाता;
                                                                                                                     ['न्वार] गिवितानानी सातु या सामी
                               (मिर्न)। ह-समियान्त्र, (मुना रे०४, उन पर्ट हो,
                                                                                                                  ध्य वि [ नान ] मारा हुमा , ( पत्रम ( ),
                              म ४, १६०)। प्रवाच्यावर , (सर्व)। संक्
                                                                                                                 स्वय ३ [ स्वय ] । चय, मजय, विमाग ; (म
                             समायाता, समाविता, (की, कात)। हरू
                                                                                                                  १ शेय-विगेर, सत्र-बहना । (सहस्र १४)।
                            वमानियस्य ; (क्य) ।
                                                                                                                िकारित् ] नाग-साम्हः (सुन (११))
                        नम वि [ इसम ] १ उचिन, केल्व, "त्रविन्त्रं बाहारों व
                                                                                                                बाल वु [बाल] उत्तव कात ; (सते, हैं र,
                         हमी मच्या विक्येते" (वब १४ : वाम )। २ समर्थ,
                                                                                                              िमा व [ 'मिन ] वत्तवन्यतः की माना ; (म ।
                        गोरमार (११,१४; व्यह्द , समा ३)।
                                                                                                             नाचि वु [ कानिन् ] बेन्डरनी, परिपूर्व ह
                     नमा ९ [समक, शतक] तस्वों जैन वाउ; ( राष्ट्
                                                                                                            म्बंह ( वित्र १९८ )। समय १ [ मारा ]
                                                                                                           1 ( & ALD ) : ELD
                   हामचा व [ हारण, हामचा ] १ उत्हाल, (बुद १, निवृ
                                                                                                       सर्वर वि [सरकर] नाग-बारह, (ग्रा १:
                    १०)। १९ काची केन वार् , (स १० नम
                                                                                                    क्यंतकर वि[स्रयान्तकर] नाग-साह; (स्र
               रामय हेनो लामर , ( बोर १(४, ३२ ४६६(; मन ४०))
               नमा को [समा] । श्रीकों, सूच ; क्ल्यूक्समामारो
                                                                                                   नयर पुत्रो [ससर] १ प्राह्मरा में बलने बाता,
               (5ता रेग्ट)। १ क्षेत्र का समात, वाल्या, (हे १,
                                                                                                    २०)। २ विधापन, विधा बल से बादान में
               १८)। वा ३[ चिनि ] गमा, देर, मुत्री ; (बर्म
                                                                                                  ख्या, (डा १, ८, डा १४०)। रावडा
             १६)। मानव ३ िसाम्य नियु कर्त, सन्ते।
                                                                                                 वियापनों का राजा , ( शुना १३४ ) ।
           (वर्ष)। हरव[ घर] १ वर्षन् कार, र वास्
                                                                                             नवर हेता सहरा अवेहर , (इन १३ । इस १६३)।
          इन , (इस ११६);
                                                                                            वयान प्र [ है ] वश्चल, बीत स का , (तरे)
       वनायणया हे हर्त [ समणा ] काना, मार्च भीवना .
                                                                                           कर यह [ बार् ] १ मरना, टक्टना । १ नह रेना। १
      समायणा } (मा १०,३ । राज)।
     समापित हि सिमिन ] कड हिला हुमा, (हे ।
                                                                                        सर वि[सर] १ किन्द्रा, स्वा, पान, स्ट्रा, (इ.६)
                                                                                         दे है, ४८, पास) । हे दुस्ती गरंस, गया .
  वामकामा १ दि हो । समन्, वहाई । १ मन बर दुन्त
                                                                                        234 ft' xx) 1 5 8 20-4-4935' ( 4
    रे करणात स संस्था , (११, ३६)।
                                                                                       नित्र का तेल , (बाल ४०६)। बांट न [ क
सय देवा सव। वस्त ; ( बर्)।
                                                                                     कीर की सामा ; (2 रे, व)। बंद न ।
संय बद [ दित ] यन बना, नर हेना । नम्ब । (वह) ।
                                                                                    विन्ता श्रीवती का श्रवम काला-प्रशासित
स्य क्षेत्र सन्। (४॥)। हे सहस्य तह जैस
                                                                                   काम व [काम्] कियाँ प्रवेष बांबा हो ह
व के हमा, (बंद, तर)। सम्बद्ध [ सम्ब ] अनेन
                                                                                  ही ऐसा हम्मू निजूत पंचा , (त्या १०४)। हां
में बा राज ; बरा बजा (क्या)। वार व [ चिनि ]
                                                                                [क्रीप्त] १ मिन्न क्रम क्रम क्रमा, १।
                                                                               रतामान्त्रह , (बांच ११८)। किरण १ [ह
व [सत् ] १ जम् वर्ष । जमम्बर्ध व अम्म (जा
                                                                              दर, पुरव , (तिम । तव) । दूसवा व [ दूरवा]
Service and the second of the service of the servic
                                                                             नाम का एक विज्ञापर राजा, जो राज्य का बर्गर था।
11, gr (12; gr 13, 21) | Part 397
                                                                            10, 10) | Agr 4 [ ARC] +1111 47 81
                                                                          क्षा : (पता १६, ०००) । जिल्लाय ३ जिल्ला
                                                                         हम नाम हा राख हा एक मुनर , (बाम १६, १०)। ही
                                                                        3[ Ba] 1 Ent part 1. [ Pall ] 2
```

```
र 'का नितन्ती; (पष्ट् १,४)। 'सुही स्मृ ['सुखी ] १
- : बाय-विशेषः, (पत्रम ६०, २३; हुना ६०; मीत) । २ नहुंबक
    दानी; (बा १)। यर वि तिर ] १ किंग करेर;
    (सुत ६०६)। २ पुंद्रम नम का एक दैन गच्छः (गत)।
    'सत्मय न [मंत्रक ] दिव का नैव ; ( फ्राँप ४०६ )।
    'मावित्रा मां [ 'शाविका ] हिनि-विकेष ; (इस ३६)।
हमर पं [ 'स्वर] प्रमाधार्मिक देवों की एक जाति :
 र (स्व ३६)।
   मर वि [ क्षर ] विनन्त्रर, बल्याची ; ( क्लि ४६० )।
  'सर्ट मह [ सरण्ड्य् ] १ घृत्काल, निर्मर्त्ता कला। १
    सेन कामा। बर्द्या ; ( मुक्त ४६ )।
्र सरंद्र वि [सरपट ] १ युन्हारने याता, तिस्हारह ; २
    टातिम बाने वाला : ३ मशुनि परार्थ ; (डा ४, ९ ; मुख
-- 1 88 ) 1
् मिर्देश्य व मिरप्टन ) १ निर्वर्त्वन, पर्य मायर; (का १)।
 ा १ देग्याः (सीय ४० मा )।
   महिराम मी [ महरदमा ] कार देखी ; ( मीय ७१ )।
🕝 म्हण्ड मह [लिप] हेम्हा, पेक्ट । .मेह---खर्यडिपि; (स्ता
  " X48 )
 र्भाषात १ विषय रेण्ड ज्ञास्य सनुस्य-जाति । "बह केराह
     सन्देवं विनिष्टं इहिंस बाराव्यवस्ता" (सुरा ३६१)।
ा सर्वाडिन्न वि [ दे ] १ सन्त, स्टा; २ सन्त, स्टा; (दे २,
     35 ) 1
   मगडिय दि [स्ति ] स्मिती हेर किर गरा हो रह. पेता
  ्रिमा; (क्रीय ३७३ टी)।
१ ' 'बराम न हि] यहन कीरः की कानक-मा दानी; (दा४,३) ।
 ं बार्य हुँ [दें] ९ वर्जहर, लैंहर ; (मीर ४३८) । २ सहु;
     (भग १२, ६)।
   <sup>(क्</sup>वाहर सह (क्वान्यराय् ) धरान्या' साहत काल । वह---
     ग्याहर्गन : (गडड) ।
   रसर्वेद्रिय हुँ [दें] एँज, एंज, पुत्र का पुत्र ; ( हे २, ४२) ।
  ंगरा मी [सरा ] इन्दु-क्टिंप, न्यूल की तर सुक्र से करने
     राता बन्द्र-स्ट्रिय ; ( बीत २ )।
   ्मरिप्र वि [ दे ] सुन्न, सॉल्न ; (१ २, ६० ; स्पे)।
   - मर्गिया माँ [ दें ] नीस्तरों, इन्हें : (मोर ४३२) ।
```

गरिसुम ६ [दे गरिशुका] बन्द-लिय ; (धा २०)।

🗸 गर्हा मो [मरोद्री] देती बरोहिमा ; (पर १)।

खरूर वि दि] १ कटन, कटार : २ स्थापुर, विक्रम और र्ज्ञ : (देर, ण=)। मरोडिंबा की [सरोडिंका] डिविकिये : (स्त ३६)। खल कर [स्वलु] १ पड़ना, गिरना । २ मूलना । ३ रका । खदर ; (प्राप्त) । वह—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; या ६४६ ; सुत ६४१)। खल वि िवल 🛮 १ हुईन, प्रवन म्तुन्य ; (मुर १, १६)। २ न घल सार करने का स्थान ; (विरा १, ८; धा १४)। पृति प्रिकृति को साम करने वाला; (कुमा; पर् प्रत्या)। सरहम वि [है] रिव, यांनी ; (ह १, ७१)। खलक्खल मह [खल्यलाय्] 'शत-तत' माराज रूना (ग्रेटकारेइ; (ति १६८)। खलनंडिय वि [दे] मन्, उन्मन ; (दं २, ६०)। खलप न [स्वलन] १ नीवें देखी; (झावा; से =, ६६ ; या ४६६; बज्जा २६)। खरणा मी [स्वरुवा] १ विर जना, निरन्त ; (ह १; ६४) । २ विगयना, मन्जन ; (मोप ७==)। ३ मटहायन, रकातर : "होत्या पुरां, य सन्तर्य कोनि ज्यु झन्त वस-रस" (स ३३६ दी)। शत्यनिवयं वि दि] चून्य, चौन-प्रतः (मिर्ने) । खलहर) वृं विलवल | नरी के प्रवाद का माराज ; "यह-खलहरू । सपकदिर्पतां दिनिदिनिक्तवं करहदरान्दो" (स्ट 2, 44 : 2, 26 } 1 ब्बला यह दि । स्वाद हरना, दुहरान हरना । "दारादि राष्ट्री रव्हाइ य" (पञ्च ३०, ६३) । श्रालिम वि ि स्पर्शलिक है १ रहा हमा; १ मिम हमा, पतितः (हर, ७०; पन्न) १३ व् कलाय, छलाहः ४ सतः (5 9, 2) 1 व्यक्तिप्र वि [यक्ति] सर वे मान, गर्न-गर्ना; (* Y, 90) 1 श्रद्धिय [श्रदित] १ ट्राय ; (श्राम)। १ शरोन्ख क्षा एक देश: (पर १)। चलिया मी [चलिया] दिए चौरः का नीदनीत हुई; (चुरा ४१४) I शिल्या सर [सर्वास्त्रः] ९ तिन्दार कर, प्तार । १ सन्। ३ उत्तरकार । स्टिन्स्न, स्टिन्स्टें (सुर ३३०, ५ स६)।

```
382
                                                  [ 'स्वार ] शिवितावयी मात्र या मात्री : (मा १)-
स्रपर) वि दि ] स्थ, मना, निश्चर, (दे २,६६,
                                                 स्त्य वि [ स्वात ] बाहा हुमा , ( पान ११, ४९)।
लप्पुर∫ प्रम )।
                                                 न्त्रय दु [ क्षय ] १ चर, प्रतय, विनाग ; (मग ११, १९)
स्तम सक [क्षम्] १ चमा करना, मारु करना । १ गहन
 इ.स्ना। समइ , ( उत्तर ⊂३, महा )। अर्ज —खर्सिम्बइ ,
                                                   २ शेग-विदेश, शब-बदमा । (सदुम १३)। 🐃
 ( भवि )। इन्—रामियव्य, ( नुरा ३०४, टर ४९⊂ टो,
                                                   ['कारिन्] नाग-कारकः (मुग ६४६)। 'बन
                                                   भारत पु [ भारत ] पत्रव-रूप ; (मरि.हे स् <sup>१०</sup>.
 सुर ४, १६७ )। प्रयो-समानद , ( मनि )। संह-
                                                   "निय पु [ विन ] प्रत्य-कात की मण ; (न १६ म
 लमावर्ता, लमाविता ; (पि , रात )। ह--
                                                   'नाणि पुं [ 'ज्ञानिन ] कानहान', पीगर्व हराए
 लमावियध्यः ( १८४ )।
                                                   लंबः (सि ११=)। समय व ['समय] हा
एस वि [ शम ] ९ उचित, योज्य , "सकितो बाहारो न
 हमो मधना 🖟 पत्येउ" ( पश १४ : पान ) । १ समर्थ,
                                                   बत .( तक्षम १)।
                                                  संदेकर वि [क्ष्यकर ] बाग-बारकः; (पत्र ५००
 शक्तिमार्; (दे१, १७; उर ६६०, सुपा ३)।
स्तमग पुं[श्रमक, श्रूपक] तस्त्रो जैन सञ्ज, (उन प्र
                                                    EE, 38 ; 375 == 1 ) 1
                                                  व्यवेतकर वि[क्षयान्तकर] वज बण्ड ; (ग्रें
  ३६२ , भोष १४० , मन ४४ )।
 स्त्रमण न[क्षपण, क्षमण] १ उपकान ; (कृद १ ; निवृ
                                                    900)1
                                                  खबर कुको [सचर] १ भाडाम में बतने बडा, न्ही, [1
  २०)। २ ९ हस्सी जैन सन्तः (सं१० -- अत
                                                    २०)। २ विद्याचर, विद्या बल से बाहारा में करने र
  19Y)1
                                                   स्त्रयः ( सुर २, ८८; सुरा १४० )। श्राय ३ [ 'टा
 समय देती जमय , ( मोप १६४; उप ४८६; मन ४०)।
 समा सी [ क्षमा ] १ प्रथिती, भूति : "उञ्चरक्रतास्तरी"
                                                    विद्ययमें का राजा ; ( नुपा १३४ )।
  (सुपा १४८८)। १ क्रोध का कमान, शान्ति ; (हे २,
                                                  वयर देखे खड्राज्यदिर , (प्रत ११ । तुस १६३)।
  १८)। 'यह इं[ 'पति ] राजा, रूप, भूरति ; ( वर्न
                                                  खयाल कुन [ दे ] बंग-जल, बाँस का बन , (मी)।
  १६)। 'समण पु शिमण ] मापु, ऋषि, मुनि ;
                                                  स्तर थक [ क्षर ] १ माना, टएका । २ वट हेना। 🕅
  (पिंड)। "हर ३ ["घर] १ पर्वन, पहाड़ ३ साधु,
                                                   (胸 vet)
                                                  बर 🖟 [बर ] १ निद्धर, स्वा,'परम, ब्योर, (मुर ६)
  सुनि : (सुपा ६९६)।
                                                   दे २, ७=, शाम) । २ पुन्नी, गर्म, गर्मा; (पद १,1
 समायणपा ) स्वी [ क्षमणा ] स्वाना, नादी बरैयदा :
                                                   पत्रम १६, ४४) । ३ पु धन्द-विगयः, (शिव)। <sup>१३</sup>
 स्तमायणा (मग १७, १ : राज)।
 स्तमायिय औ (शमित ] सक किया हुमा; (है ३.
                                                   तित का तेत ; (क्रांप ४०६)। 'क्रंट व [ 'क्रप्ट] ग
                                                   कौरः की साला ; (स १, ४)। 'कोड व किंगा
  १४१ : समा १६४ है।
                                                    राज्यमा पृथिती का प्रथम कागड -मग-रिरान, (बीप)
 लामक्लम पु [दे] १ संशान, लडाई; १ मन का दुख:
                                                    कम्म व [कर्मत्] जिनमें अनेक जीनों की वि
   ३ वरबाताप का मीमाम : (दे १, ७६)।
 क्य देशं सच: सम् ; (वर्)।
                                                    ही ऐसा काम, निन्तुर घंधा ; ( सुना १०१ )। कामित्र
                                                    [कर्मिन] १ निःपुर कर्म करने शताः १ कर्माः
 स्य बढ़ [ दित ] सब पना, नट होना ।   सदह ; (वड़) ।
                                                    दानडपारिक ; ( मोथ २१= )। 'किरण पु [ विर्व
 खय देखें खना; (याम)। ३ माश्रय तह देश
                                                    स्वं, नूरवः (पिवः स्ववः)। 'दूसमा पु [दूरामः] १
   पहुँचा हुमा; ( से ६, ४२ )। राष वुं [ राज ] यति-
                                                    नाम का एक विदापर राजा, जो रावण का नरीई था :
   मों का राजा; गरह-पत्ती, (यम)। वह प्रति
                                                    १०, १०)। नहर पु [ नसर ] सगर उन्त रें
   गरुष-पत्ती ; (सं ११, १०) ह
                                                    प्राची ; (नुश १३६; ४०४) । 'निस्सण पु निस्ति
  सय न [सन ] १ तय, यह ; "सःसनेत व सर्" ( अ
                                                    इय नाम का राजक का एक सुनद , (पडम ४६, १०) । है
   पर= रो )। २ वितर, बरादा हुमा, "मुखमोल बीउसमी"
                                                   उं[ 'सुख] १ मनार्थ देग-विगेष ; १ मनार्थ देश<sup>हर</sup>े
   (भा १४; सुध ३४६; सुर १२, ६९)। भेपार वंसी
```

पाइअसद्महण्यवी ।

मिना-स

या निवानी; (पए १, ४)। सुती की [भुगी] १ नाव-दिनेह, (परम १०, २३; नुता ४०; भीत)। र नावेपक दानी; (यह १)। यह वि [निर] १ विनेष कट्रोग; (गुता ६०६)। र पु इस नाम का एक जैन सक्द्रः (सज)। स्मन्य न [क्योडक] निल का नैल , (भीष ४०६)। भाविका सी [हायिका] निलि निनेष ; (सम ३६)। क्यार पुं[क्यार] प्रमाणार्मिक देवी को एक जानि, - (सम १६)।

सर हि [सर] हिमन्या, प्रत्यायों ; (विमे ४४०) । सर्गट सक् [स्वरण्टर्यू] ९ धृत्कास्ता, निर्भत्येना करना । ९ मेन करना । सर्वत्य ; (मूज ४६) । सर्गट वि [स्वरण्ट] ९ धृत्कास्त्रे बाला, निस्न्यस्क ; ९ स्वतिम करने वाला ; ३ प्रमुखि पहार्थ ; (ठा ४, ९ ; मुक

४६)। म्बर्टण न [स्वरण्डल] १ निर्मर्त्यन, पराव मायपः (यव १)। २ प्रेरणाः (स्रोप ४० मा)।

म्बंटणा सी [म्बरण्डना] करा हंगी ; (ब्रोप ७५) । म्बरड मक्ष्मियों सेफ्ना, पोतना । मंड-स्वरहियि; (मुका ४९४)

खरह थुं [स्वरट] एक जान्य मनुत्य-जानि ; "मह केणह सरहेतं किंगितं हर्दास्य बरुग्वरियक्त" (सुरा २६२)। स्वरहित्य वि [दे] १ एक, स्था ; २ मन्न, नट ; (दं २, ८६)।

न्वरिष्ट वि [लिप्त] जिनको लेप किया गया हो बह, पोता हुमा ; (बीच ३५३ टी) ।

श्वरण न [है] पपूल कीरः की काटक-मय टाली; (टा४,३) । स्वरुप पुं [है] १ कर्मकर, नीवर ; (भाष ४३८) । २ राहु; (सव १२, ६)।

न्यस्य प्रकः [स्वरस्वराय्] 'राग-मा' भावान करना । वह---न्यस्ट्रांत ; (गडर) ।

श्वरहिद्य युं [दें] पीन, पाना, पुत्र का पुत्र ; (दे २, ०२) । श्वरा सां [स्वरा] जल्तु-विशेष, नकुत की तरह सुत्र के चलने बाला जल्तु-विशेष ; (आंत्र २) ।

चरित्र वि [दे] मुक, असित , (द २,६२ ; अवि)। चरित्रा स्रो [दे] नीकार्ता, दार्मा ; १४१२ ९३८)। व्यक्तियुज १ [दे खरितुक] कट-विगय , (आ २०)। व्यक्ति स्रो [खरोपूर्व] इन्त्रो स्वगोद्दिशा (यव्य १)। चरान्य वि [रे] १ वित्र, क्यंर ; २ व्यपुर, विपन और केंचा ; (हे २, ण=)। चरोटिया मी [चरोटियका] तिपि-निर्मेष ; (गम ३६)। चरत मह [स्वारु] १ यहना, विवना । २ भूनना । ३ रचना । यतद ; (प्राप्त) । वह—चर्यलंत, व्यलमाण ; (से ३, २७ ; गा ४४६ ; सुप्ता ६४१) ।

श्याल वि [श्वाल] ९ दुर्जन, क्ष्याम मतुत्य ; (सर ९, ९६) । २ न. भान मारु करने का स्थान ; (विश ९, ८; ध्य १४) । पृ वि [°पू] राने को सारु करने वाला ; (बुमा ; पड़ ; प्रामा) ।

सल्हरम वि [हे] रिक, गाली ; (३ २, ७१)।

खलकावल मरु [चालकालाप्] 'रात-रात' मात्राज करना । योतकातीह ; (पि १६८)।

सारकंडिय वि [दे] मत, उन्मत; (दे २,६७)। सारकंग न [स्थलन] १ भीषे देतो; (धाया;से ८, ६६; या ४६६; या ४६)।

खालमा सी [स्वलस्ता] १ तिर जाता, निवतन ; (दे २; १४) । १ तिराधना, अञ्चल ; (भीप ७५८८)। ३ अवस्तायन, स्वायद ; 'दिराजा गुणो, मा खन्नप' करित जङ्ग अस्त यस-राज्य' (छप २३६ टी)।

शास्त्रभरिय मि [दे] चुन्म, कोम-प्राम ; (मिन) । बरलहर] पुं[बरलमल] नदी के प्रपाद का बावाज ; "बर-बरलहर] माणवाहिणीयां दिगिदिनियुव्यंतान्त्रहरासहां" (पुर ३, ११ ; २, ४४)।

खला बर [दे] सराव करना, तुस्तान करना। "तायवि खलो सताइ य" (पटम ३५, ६३)।

कारिक वि[स्प्त्रिति] १ व्याहमा, २ तिसाहमा, पतिः; (६ २, ७७ ; पामे) १ ३ न् मप्राप, गुनाह; ४ मूल; (से १,६)।

खिलम वि [मिलिया] सत से म्यात, सति-सचित; (दे ४, १०)।

खिलिण [खिलित] १ लगाम ; (पाम)। २ कायोत्सर्ग का एक दोप ; (पप १)।

खिट्या सी [खिल्का] तित गीरः का तेल-सहत चूर्छ;

(मुग ४९४)। एवटियार मध् [खटी+कृ] १ निरम्बर काना, धृत्वाना। २ टाना। ३ उपदव करना। खलियारीन, खलियारीन, (मुग २३०,म ८:=)।

। गतियार-ग

353 पाइअसहमहण्णयो। मन्त्रियार पु [गर्येन्डकार] निम्मार, निर्वनीता , (पत्रम सल्टार्सा[दे] वर्म, यस्म, साल , (देश, ((te, 116) i पाम] । गलियात्रया न [ब्वलीकरण] निम्म्बर , (पत्रम ३३,≤४) । र्मालयारणा मी [मलीकरणा] बन्चना, लाई, (स २०)। राजियागित्र हि [रालोहन] १ निम्नून ; (पउम ६६; २)। १ रन्ति, हमा हुमा, (म २८)। गरित है [स्यान्तिन्] ध्यानना वरने नाता , (वाजा **१८ । का)** ।

गानी मी [दें सारी] जिन-विज्ञा, किन कीर का संबंद-र्गल पूर्व , (इ.स. ११ . पुरा ४५१ , ४५६) । राजीश्य रण' शिलियारिश ((पर ४४) १ रम्प्रीकर पन्त सरियार दल्लीक्ष । समीहेर्ड । (स

९०)। दर्म -क्लीप्रगेवह, क्लोडिशक्द, (स रूद , सक्त)। रहरीण व [मन्दीन] तथा वस्त्रिण, (पुता ३३ , स ६ ३४)। ६ भी दा दिनार, "राजीशर्माय समामे" (निरा १.१ --77-91) | नम्ब म [नार्यु] १४ मन्ते वा नवक भागत ,--- १ मार-

बरम, तिरुपर , (श्री २) । २ पून , तिर । (श्राचा) । र पार√र्न हीर बाहद वा माशा क हैनए और इपटा प्रयोग र^{भारे}, (मचा, ५० ५०) । विशाय{क्षेत्र }शा पा अभी भी व दिन वर वाव , (वह ८) । मार्थित पुरि] र मनी वें प, वर्गिन वेंग् (स र, रू---

रप राज्]। २ मिली रिल्ल, कृतिहर, (३९ 3011 सम्बित्रत्र विहि १ वर्ग वेन संवर्गाः, १ उत्तराज्यसम्ब धा इन नम धा ल्ड मध्यान , (३०१०) । सापुर व [कारुक] कुन्द, गाँव का अध्यक्तवा ; (हिस बहुत्र म [रे] १ वट वट हैं ते हे हिस्स_{ने} (के दे

a.) १ १ मान, वेशन, "प्राप्त मान्यसंत्रा सीमा प्रभावत संबद के दा का है। इ १ 3=) (साम्द्रम ([है] १ मार्चन, महत्र कुन, १ प्रम् हर्र 974 pt 1 1 44 , 425 क्रिकेट त्या स्टब्स का स्टि

· 14 .

बक्ताड वेयो बक्तीड (तिव् २०)। सन्दिरा भी हि] मंत्रत ; (दे १, ४०)। सन्दिहङ (भा) देशो गासीड ; (हे ४, १८६)। बस्त्सी भी [दे] निरं का कह चमका, जिसमें केन दें? होता हो । (मात्रम) ।

च्यन्तरीड पु [म्यन्त्राट] जिपके जिन पर शत म हैं, कर वंदना ; (हे 1, ४४ ; वृमा)। बस्स्टुड पु [बास्टुड] इन्द्र-विगेष, (पाण १—पर ११)। क्षय गढ (श्राय) १ साम काना । १ पानना, गी कानाः २ उल्लंकन कानाः। संबद्धः (उर)। स वंति ; (सव १८, ७) । कर्म-सविकाति ; (गर्)। बह-रायेमाण: (बाबा १, १=)। गंह -लराग गविस् . सबेसा, (मग १६ ; सम्य १६ ; मीप)। राख पु [दे] १ शम हत्त्र, बावी हत्य ; २ गर्दम, गणा (\$ 1, 40) 1 न्यवस हि [क्षपक] १ माश करने वाला, जब करने कर

६ पुतास्वी जैन सुनि ; (उप ; साव ८८) । १ धा

थेशि में भारत, (बस्म १)। 'सेंडि मी ['ग्रेपि]

चारम-कम् कर्मों क माम की परिपादी : (मग ६, १११ 295 114) (नपडिश्र नि [वे] स्मर्तनन, स्कानन पाग , (द ६, ११) व्ययप्य] व[शायण] १ शय, नग, (त्री)। श्यक्तव र हात्ता, प्रचेत् । (ब्रह्म ४, ३१)। १1 वैन मुनि : (तिमे १६=१ : स्रा अस)। न्यय १ [१] म्हल, इता, (११,१०)। नवप देशी नवग ; (शम २६ , धारा ५३ , धाना)। सर्वातित्र वि [दे] इस्ति, कृष , (र २, ०१) i बक्छ पु [बायज्य] सम्बतिम , (शिर्म क्ष न्द्र दी)। नकार्या[क्षणा]गरि, स्तः। ज्ञादः तः श्रवण्या, दिसे , (अ १, १ , १ অবিসাধি (হাণিব) ৷ ইলগণৰ, ২০ ধ্ৰা (6 80, 27 1 2 TEFAT 1 17 344 बर्ज्य पुट्टि है । बच्च हर बॉबर हाल । राजन

कार्य च [कार्य] राज्य १४४ (राम)

45.25

```
मञ्जूर-मार्जा ]
रायुर हो। पायुर, (प्रिट ३८)।
क्तानुस्य = [ त्रे ] सुना, मुँह ; ( त्रे ७, ६= १।
राम कर हिं नियम, ति प्राम्त नगर , दिनो।
 सम पुर [राम ] १ मन र देश सिन्द, रिन्हुस्यम के
  उस में तिल्य इस रूम का एक प्लाही मुहर ( पटम :=
   ६६)। १ हेर्ना, स्त्र हेरा में बहुत केरता महत्त्व, १९०० ९ -
   हमाम ९ [ ममाम ]पंग्ल व राल, दर्गन, गरा,
    स्वमुद्दान बार दिं। अस्ता, रिताहरमा, रिता पहना । वह
                                               राज-
     स्तमक्ति व [३] व्याप्त, स्ता । हुव व [ सूत्र ]
       ब्यापुत बना हुआ (१ १, १०० )।
      क्तार होते कामर = रेबार ; ( क्रें ३ ; म ८०० )।
       विसियं देश वर्षय = ग्रीयतः । हे १, ९६३ )।
       व्यस्तिय न [ कस्मिन ] हेत किंग्य. वर्षेनी, (है १, १८२) ।
        मिन वि [है] लिए हुमा , (मुर २८१)।
         क्तमु ए हिंदे केन किन, पम । गुलाती में ध्यम ,
           ( 40. ) 1
          का, देनों व्य , ( ह है, १ )।
           महत्त्वर रेगी क्रायर , । क्रीन : विर १, १ ।।
           महयरी मी [सर्वरी] १ वीलनी, बना पती। व
             विद्यासरी, विकास की की , ( छ ३, १ )।
            मा ) मह श्वादी मना, मोजन स्थल, नवार युग्ला। गह,
             सात्र) गामा , माट ; (हं ४, २२= )। मीर , (सा
               ३३०: मरा) । सर्व-वर्गेटः (हे ४,३३=)।
               स्न - नास्त ; ( हा )। वह - नंत, स्वयंत, स्वयंत
                माण , (कर १८ ; बदल २०, अर ; विस १, १)।
                "मंत्र निमत्र बहु व महीत, पुर्णित स्रीत निमित्र सर्व !"
                 (क १८)। क्तर्य-म्बर्जन, स्वरज्ञमाणः ; (पान
                  २२, ८३; सा २८=; पट्टम १२, =१, =२, ८० )। हेर्डू-
                  मात्र ति [स्यान ] प्रतिह, निप्रतः, (टा ३२६ ; १२३;
                   स २१ ; ३ २, ६० )। 'क्रितीय वि [क्रीनिक]
                    इसर्बं, इतिमन् : (पड़म ३, ८०)। जमिन
```

[यजन्] वहीं कर्षे ; (पटन १, =)।

(1年;福) [

साय वि बादित] सुन, चीत्रत, "सर्वासन् - " (ता

```
शात्र हि [ बात ] १ एवं हुम, ३ न एवं हुम ज्या-
  इवः " सम्मेदगड्ड " (उन्ते )। ३ जन में जिन्ह
  क्ली की की के की मान कि की जी
   मान स्प ने मुरी हुँ पीता ; (मीत)। १ गाँह
   स्राह को [स्रानि] गर्र, विल्ला ; (मुर २३१)।
   नार को [ न्यानि ] प्रोच्य, नीर्न ; ( गून ४२१ : र
     1 ( , , ,
    नार [रे] रंग्ने मार्डः (क्रीर)।
     लाइम देनी लाइम = जातिह ; (तिन ४६ : २९३४ :
      माइय वि[माहिन] गया हुमा, मुक्त, महित ; (प्राप
       ब्बाओं मी [दे व्यक्तिका] यहें, पीमाः (दे २, ०३
         पाम : मुन ४०६ ; सन ४, ३ : पन १, ४ )।
         शहर म [ है ] ६ -- व वत्य दी गमा मीर पुतः गण
          इस्य वा स्थान इत्याप , (सा १,४; इता)।
         नाइम देले स्वास्त्र = न्त्रांदिरः ; (मृत्ता ५४९)।
          श्राहम न [ श्राहिम] मतनाहत पहा, मीत्र बोतः त
            चीतः (ज्य ३३: छ ८२: क्रीर)।
           बाहर वि [ स्मादिर ] महिन गल्ल मंगर्याः (हे ११६ व
           वाग्रेयमम ) हमा वन्नेयममिय ; (मुम १
            नाजोचमनिय र् १८८ ; ग्ल्य २३ )।
            म्बाइडअ वि [है] प्रनित्तित, प्रतिबीचनः(
             माडमङ पुं [माङमङ] गीर्घा सक्तर्पर्यः "
              म्बाडहिला स्त्री [है] एक प्रका क प्रान्य,
                क्तियों : ( यून १, १; उप पू २०४ ; विन ३०
                स्त्राण न [ स्वादन ] भें रन, महाग : <sup>ध</sup> स्त्रोत
                 क रह गहिमा मेटनी घटमान्। (गा ६
                  96,932)1
                 स्राण न [स्थान ] क्षन, हॉल ; (राज )।
                 व्याणि में [मानि] गन, प्रशः (
                   कुमः ; चुर ३८=)।
                   माणिय व [ मानिन ] तृत्वच हुम ; (
```

! म्बाणीं हेनी साणि ; (पम)।

ह्याणु) वु[स्याणु]स्थालु, इस्र तथः, (कह २, ४, खाणुप) हे २, ७; नग)।

स्ताम मक [क्षमिष्) रामाना, माणी माँगना । लागेद , (मग)। वर्मे—लागिज्जद, सामोजद ; (हे १, १६१)।

गरू—स्वामेत्ताः (भग)। स्तम वि[शतम] १ कृत, दुरेल; "न्यामंद्रक्योनं " (उप ६⊏र टो । पास)। १ चीण, अगफ. (दे ६, ४६)।

स्वामणा स्वी [श्रमणा] चनाका, नाफी साँका, चना-याचना , (मुक्त १६४ , विषे ७६) ।

व्वासिय वि[इसिन] १ तिनके पान चना सीनो गई हो वह, स्तावा हुमा, (निने २३००० ; हे २, १६०) ३ २ सहन दिना हुमा, ३ विलिम्बिन, विज्ञत्व विचा हुमा; में निक्षिय झहोरमा पुनान सामिना में करवित्य " (पडम

¥1, 19; È 1, 942) \. मार दुं[झार] ९ चरण, मतना, शवनन , (ठा ८)। ६ सम्म, स्वाव , (बाया १, १२) । १ खार, स्वार , सरवा-भिनेप , (सम १,०)। ४ शतक, नोन , (धृह ¥)। १ जानवर-विगेतः (पण्य ९)। ६ नतिंद्य, सण्मी: (सम १, ४, २)। ७ वि,बदुक स्वाद वाला. **ब**ृह बीज, (कल १७--का १३०)। = सारी वीज, लक्य स्वाद वाली बन्द्र, (मग ७, ६, सूच १, ७)। 'ताउसी को ["बपुरो] बद्द सपुर्या, मनन्यनि-विगेषः (कार्य ९०)। 'ਸਿਲਨ न [ਸੈਲ] ਗਾਂਗੇ ਜੰਦਰੂਰ ਹੋਰ , (क्ट १, १)। "मेह ५ ["मेघ] चार स्पताले पानी की को ः (मग ५ ६)। विशेष वि [पापिक] चार-पात्र में किमाया हुवा, २. चार-पात्र का आचार मतः; (भीर)। 'यसिय वि ['युलिक]शार में फेंक हुआ, न्दासे मिन्या दुमा , (भीत , दुना ६)। 'धायी सी ['बाफी] कार में समें दुई वाणी; (पल्ड १,९)। सारंगिडी मां [दे] गांच, गांह, बन्तु विगेष , (दे १,

सारदूमण वि [सारदूरण] सन्दात का, सन्दात संक्यो , (१८२ ४६, १६)।

न्यारव व [दे] सुत्रन, बनी , (वे २,०१)। न्यारायण पु [हारायण] १ वर्ष-विनेष , १ समस्य

्योव की शासान्त एक सोत्र ; (हा ०) । स्वारि को [स्वारि] एक अबार का नाप, (शा ८५६) । व्यारिक्षणी भी [व्यारिक्षणी] मार्गा-गर्गणा वण्डी अट मंड ऐमा पात्र भर कर कुर वने वाली ; (गा=११ व्यारित्य वि [क्षारित] १ लालि, समावा हुमा, (स। १ पानी में निया हुमा ; (मरी) ।

२ पानी में जिसा हुया ; (मरि) । स्वारी देशो स्वारि ; (शा ८१२ (जो १) ।

कारमणिय वं [शारमणिकः] १ म्नेच्छ रेग-हें १ वर्गमें रहते वाली म्बेच्च जाति , (मग १९१)। व्यापोदा भी [शारीदा] मही-विषेत्र ; (गर)। व्याप्त नक्ष [शारीदा] धना, वनारमा, वाली से माड ≡

ह—कारुणिडत (उर १२६)। काल संत [दे] नाना, मंदी, समुद्रि निधनने ध स (स १, १)। सी—स्ताला ; (हमा)।

(रा २, १) । श्री—स्वाला ; (कुमा) । स्वालण व [स्वालव] प्रवालव, ययाना ; (प्रा १६८ स्वालिम वि [स्वालित] योन, पांचा कुमा । (ती १६ स्वावणा श्री [स्वापना] प्रतिक्ष, प्रध्यत , प्रस्त

नारवाभिहाणं वा" (विषे) । काविर्यंत दि [स्ताचक्रान] जिनको विदाया जाग है।

"हागविवनाई साविवन" (वित १, २—वन १४)। साविवयः वि [सादितकः] विनहां निहासा सर वह ; "हार्यक्षमन्यविका" (धीप)। सार्वेन वि [स्वाययन्] बल्यानि काना हुमा, प्रसिद्धं छः

(39 = २२ टी) । व्यक्त पु [कास्त] रोग-विजेप, सीनी की विनयी, की

(शित १,१, कृता ४०४, तथा)। स्वास्ति वि [कासिक] किंदी वा गेग वाला, (इग १४। स्वास्तिय व [कासिक] विद्योत औत्ता, (दे १,१⁵⁵) स्वास्तिय वु [कासिक] १ म्हेन्टच देग किंदि १, १ म्हे स्देन साती स्वेच्छ-माति हु (यह १,१ — यह १४) ही

शुक्ष १, ६, १)। चित्र स्त्री [स्त्रिति] शुक्ति, पता , (पञ्च १०, १११ त पञ्च १)। शीयर वु [शीखर] मतुन्त, सार्वः, मर्ग्यः (पञ्च १३, १४)। चाइन (श्रातिच्छ] नगतिर्थः (ग १)। 'पार्विट्य न ['तातिच्छित] रागत्य व १' नगरं, (अ २२० थे: १० ७)। १ राज्यः व्या नगरं, ओ सामका स्त्रात में पार्वित्य नाते के प्रस्ति (गी १०)। 'सार वृ [स्तर] शुग्नान हा स्त्र रे

(पञ्च ८०, ३)। निनिधिषया श्रो [किट्विषिका] सुः पश्चिका , (आ ।।

```
याद्रसम्हमहण्यायो ।
                                                                        gr 3. 3-2: HT
                                        तिन वि [तिन] १ वेर हुमा
                                          ३११) । २ प्रीनः (रि.पे. १३)। इस, चित्र वि
1
                                           [ चित्र ] श्राप्त, विज्ञत्मण्यक, पणतः ; (ग्राः),
ं [सिट्टियी] अस देती , ( रा २० : स्पा
                                           २ : मेर ४६० ; स्र ४,९)। मण वि [मनस्]
र्व्या [ है ] श्रमानी, स्वी.सियम, ( दे २, ४४ ) ।
सिन्द्र वेर्डन्याल, क्यूमियारी विक्रीमितियार
                                           रियन देगो लेत ; ( मनु ; प्रमु ; पडि )। 'देवण मी
                                            [ हिसता ] चेत्र का प्रचित्रसम् देव ; (आ४०)। चाल
                                             वु [ 'पाल ] देव भेरेप, सेवनसह देव ; ( मृत ११९)।
[बिस्] किया करता, गर्न करता, तुन्त
यस्ती (क्सी)।
                                            निस्तिय न [सिनक] छन्द विशेषः (क्रीत ३४ : २४ )।
निंगः (कारा)। वर्ग-मिनियाः (वृह १)।
                                             विक्य न [रे] १ मन्यं, तुस्तातः १ वि दल, प्रतितः
मिमिन्नेत ; (स १०००)। १०—िमंसिक्डि,
                                              लितिम वि [ भीतिक ] १ नेव-नंबन्यी : २ प्रं. ब्यारि-
: न [ स्विंगन ] अस्तविष्ठ, निन्दा, गर्दा ; (झीर) !
ना की [निसता] क्लिं, ग्हों; (ग्रेंग; स
                                                विरोप ; "कचुनुरं गालागं जर बहुवार्टनः निर्निमी बाही"
त न्हीं [जिस्सा] क्या हेरों ; (क्रेंग ६०; इ ४२)।
                                               ख़िल्ल देशों निवणणाच्चित्ल ; (पाप ; महा)।
                                                (ফা ৭২) 1
                                                लिय वि [ क्लिप्र ] कींत्र, ल्यान्युकः । भाइ वि [ भानि ]
वय वि [विसिन ] लिक्त, गर्दन , ( ठ ६ )।
                                                  ९ जीत गति बाता । २ पुं अमिलाति इत्य का गृह लाक
विमंड पु [ हे ] कुराराम, निर्मात्र, मार, (हे २, ४४)।
क्रिवर्यंत वि [विक्षियमान ] 'वि-वि' भवाज करना ;
                                               ृतिवर्षं म[स्तिप्रम्]तुरत्न, गीत, जन्तीः (प्राम् ३०)
विस्तिवरी की [ दें] ट्रोम बरीर, ही क्यूकी शहले ही टवड़ी ;
हेल, यह जान । विहास, विहास, ह (म १४ ; गटर, वि : विष्णामेव म [श्रिप्रमेव ] गीत ही, तुम्ल ही: (वं रे ;
                                                   की )।
निका पुर [है] सीवड़ी, हमरा ; (हं १, १३४)।
लिहत घट [सिट्ट] १ गेर बरना, बासीम बरना । २ टीडम
                                                    तिवर प्रकृ क्षिर्] १ तिग्वा, तिग् पहुना । २ टपस्त्रा, मग्वाः।
                                                     लियाः (हे ६, १०३) । वह-नित्रंतः (पटन १०, ३१)।
 ४४४)। इ—निविज्ञयन्य ; (महा; सा ४९३)।
 विस्त्रिपिया को [ वेद्निका ] वद-क्रिया, अस्त्रीय, वन ।
                                                    तिरिय वि [ सरित ] ९ टाघ हुमा; २ मिग तुमाः
  क द्वेग; (सामा १, १६ - यत्र २०२)।
                                                     वितर व [वितर] महर नानि, करा वर्मनः ( पह १, ३--
  मिलिक प्रति है ] द्यारम्म, दरहनाः ( दे २, ४८)।
  स्त्रिक्तिअ वि [स्त्रिन्ति ] १ वेद-प्रत्य ; १ व. वेद ; (स
                                                      वित्रीकरण व [ वित्रीकरण ] मती बाना, गून्य बाना,
    १४१ ) । ३ प्रस्य-बन्य रंग ; (गाया १,६---यत्र १६१)।
   विज्ञित्रपर न [सेटितक] छन्द्-विरेष ; (क्रीव अ)।
                                                        भृतुवस्तर्जीरन्विर्देशसम्बद्धवाटको विस्व दर्का" (मे =) ।
    विज्ञिर वि विदिन्तु वेषेत् बर्ज़ बला, निस्न इते की
                                                       विकर सक [कीलस्य ] रेसना, रहावर दालता। भगाइ
                                                         इमर्च बन्दव ! गन्त्व विन्त्रती क्रीपूर्व वहुंग (मुरा १३०)।
      मारत बटा ; ( बुमा ७, ६० )।
     निर्द न [ खिल ] रोल, कंझ, महरू ; "लिह्हर मर भरेरवें
                                                        स्त्रिज्य अरु [ स्त्रेल् ] होड़ा काना, येत काना, जनागा
       एवं (स्त ३०२)। "बाउन्हाँ निहुनी गर्नेड" (सन
                                                          करना। वह-नित्तलने ; (नुतः ३६६)।
       ६= )। °कर वि [ कर ] वट बरने बला, मकह करने
                                                         विक्टण न [बेत्स्न] विदेता, विक्ट ; (मु १४,३००) १
                                                         विक्टर हैं हि विक्टर ]। बन्द किए। (४०००)
       निका वि[सिन्त] १ सिन्त, तर्जन ; २ थल, यज
                                                          विल्प्टल (यनं २)।
         हुमा; ( द १, १२४; मा २६६ )।
        विषय देनी स्त्रीण ; (प्राप्त) l
```

```
स्विय मक्ष्मिर् ] १ ईक्स । २ थेम्स । ३ टालना |
                                                         वाश्त्रमद्भहण्यते ।
                विस, विका, (महा)। क्ह-विविमाण, (काना १,
               १)। क्तर-वियंतः (का)। मह-निवियं
                                                                   स्वाद् बाने पानी की वर्गी। (नित्य )। 'यह को
               (बम्ब ४, ४६)। ह-स्विवस्थ, (जुन १६०)।
                                                                  वस्त कृत केन वाली; (हुए है)। वर इ
             विवाण न [ शेषण ] १ वेनना, संपन्न ; (म १२,३६ )।
                                                                  बीव किया, (बीत १)। यारिन [यारिन
              रे प्रेरण, इधर उपर चलाता ; ( से १, ३ )।
                                                                 ममुः का जन । (पत्म ११, १=)। दर इ
            विधिय वि[शिक] १ चित्र, केश हुमा, १ वेनि,
                                                                 चेर ] श्रीर-पामाः ( बाजा २४ )। भनव पुं [
                                                                लिटर-विनेश, जिसके प्रमाव में बनन दूर की तप
           नि:य देशा निया। मह-"मह निवित्रकण गन्म, श्रेण
                                                               मानूम हो, ३ ऐसी लान्य बाला जीव, (कह ३,१, ॥
            ते पतिभया रयणभूमि" ( धटम १२ टी ) ह
                                                             थीरहम नि [शीरकित ] संत्रात-त्रीम, निगर्ने हर ह
          लिम सर (दे) सम्बन्धः निम्बन्धः। यहः—"निवगास
                                                               हुआ हा बह , "तए म राती पनिया बिनारा सन्ति ह
           गच्छनम्य सिनिज्ञण बाह्यादिना पश्चि" (नुस ६२० ;
                                                              भागयमन्या भीग(रि)इवा बद्धारमा (सामा १, ३)
           49=);
                                                            र्वाहि वि [ श्रीतिन् ] १ दूव बाला । १ द विजे (
        क्षीण देशा स्तियण - निस्त्र , 'क्षाक्त्व मुख्यांका''
                                                             निह्नता है ऐसे इस की जानि , ( तर १०११ दी)।
                                                           न्योन्डिजमाण वि [श्रीर्थमाण] जिनहा रहत हि
       लीज वि [ सीज ] १ सब-प्राप्त, नन्द, विक्लिन, ( नान्य
                                                            जाना हो वर , (धावा के के पर)।
        ( । हेर, १) १२ दुर्गत, हम , ( मग २, १) । दुह
                                                          न्वीरिणी की [ क्षीरिणी ] १ हर कानी , ( मान ...
       नि ['बु:मा] बु:स-गहिन, (मान १६३)। मीह नि [मोह]
                                                           ४)। २ इस-स्मिर, (पाय १—पत्र ११)।
       ी जिमहा माद नट है। गया है। वह (टा ३,४)। २ हि
                                                         न्वीरी मी [शरेपी ] मीर, पहान्त-निगेष , ( हुए ()
       बाहर्वा गुण-स्थानहः , (गम २६)। राम वि [ व्हास ]
       १ बेल्सान, समानदिन , १ प्र जिल-वन्, तीर्वद्वत देव ,
                                                        नीरोभ ५ [ सीरोह ] समुद्र-विगय, चीर-मागर ; (१।
      ( 1798 1 ) 1
                                                         १८३, या १९७, यडह, तप १३० दी, म २४४)।
    श्रीयमाण वि[श्रीयमाण] जिल्ला चय हेंगा जाना हो
                                                       र्जारोमा भी [ शीरोदा ] इम नाम ही एह मनी, (ए
   सीरन ( सीर ) १ दुग्य, इ.न., (ह १, १०, मान १३,
                                                      नीरोद् हनो स्वीरोम । ( स ० )।
    १६८) । र गानी, जल . (हे र, १३) । हे प्र चीनकर
                                                     र्गारोदक) १ [ क्षोरोदक] क्षोर-मागा, ( क्षान
   मध्य का मनिकासक देव , ( अन्य ३ ) । व समुद्राविनेद
                                                     वोरोद्य (बीप)।
   वीर-मनुद्र , (वाम १ (, १८)। कर्यन वु [कर्मन]
                                                    व्यसिदा देखे सीरोधा , ( य ३, ४—वत्र १(१)।
   इम नाम का एक बामाय-उपाध्याय , ( वजन १९, ६ )।
                                                    खील ) ३ [कील, क] बीला, व्हें, व्हें।
  कामीली मी [काकोली ] क्लब्सी-विगय, संतविदासी
                                                  सोलम १०६ सम १, ११ , है १, १८१ , स्म
माम ९ ( माम) मर्गा विगेन, सार्ग
 ( वक्त १ )। जाल वृ [ जाल ] सीन-महार, महार-मिरोह,
 (र्षत्)। जलनिहिष् [ जलनिशि की श्लोक वर्षः
                                                   उन्हर महते से मुँट क निमान बनावे गरे हों, (ह
 (या रहत )। दुस, दूस दु द्विम ] दुर बाला वेह,
विषम दूर निहत्ता है एमं उस की शति । ( श्रीप ३ वह )
                                                 भोतामुणः न [ क्रीडन ] येत काता, नीम कर।
नितु १)। पाई सी [पार्था] रर निताने कली वाई ।
(बाया ९,१)। पूर पू ['पूर] जनका हुमा दुव ।
                                                  धार् मा [ धात्रो ] छत हर कान वाली हार (रा
                                                  ١ ( ٥١ ١٩ - ١ ، ١
(का १०)। एम दु मिम ] एम हैंग का कह
                                               मोलिया भी [ मोलिका ] होटो ग्रेंग, ( माना )।
मानव्यना इत , (त्रेन ३) । मेद ३ [ मेन ] इच-मान
                                               नीय पु [सीय ] मर-बास, मरोन्मण , (रे ५ (())
                                              र् म [ राजु ] इन मधी का सुबक मानाव ,-1 हिना
                                               मन्त्रास्त्र , ३ विश्वहं, विवाद , ३ मंशव, मंदर , । हर्
   ---
                                                                                           1
```

```
बुधिय ]
                                  षद् : गा
; १ विल्लय, भारवर्ष ; (१ २, ९६८ ;
१४२: ४०९ ; स्वन ६: इसा)।
नो मुद्दा ; ( पह ३, ४ ; सुत १६= ; रहवा १,
, स्रो [ स्नुनि ] ९ छोट ; ९ छोट का नियान ; (याया
न्द्रपाय पुं[दे] नंह का दिंद ; (हेर, की; पाप्त)।
तियों मी [ वे ] गप्प, सुरम्ला : ( दे २, ५६ )।
बुंट पुं[दे] नेंट, नेंटी। मोडय वि[मोटक] १
में हैं भी भी बाता, उसने सुरका मार्ग जाने बाता, र पुं
 इम नाम का एक हाथीं ; ( नत्र-मृत्यु =४ )।
ब्हुंहय वि [ हे ] स्मिन्त, स्मिन्त-प्राप्त ; ( हे २, ७९ )।
मुंगा मो दि रे परिट को शेवने के लिए बनाया जाता एक
  नृतमा दाहार ; (हे २, ७४)।
  स्रोमण वि [ स्रोमण ] लाम टरलने वाला ; ( पान १,
   रपुरत ) दि [ बुरुत] १ बुरहा; १ दाननः ( हे १, १८०).
   न्युरतयोगा १३४)। ३ वह, टरा; (क्रीर)। ४
     एट पार्थ से हैंन ; (पर १९०) । १ न संस्थान निरंपन,
      ज्ञांत का बालन क्राक्त ; ( छ ६ , म्प्य १४६ ; ब्रीत )।
      म्यान्युक्ताः (दाया १,१)।
      म्युन्तिय दि [ कुन्तियः ] कृष्या ; ( ब्राचा )।
      मुद्दु मक [ तुर्ह् ] १ तहता, मरितन बम्ला, द्ववहा बम्ला ।
        १ मा परनः, चीरातनः। । तून्तः, सूदेन होना।
        मुद्द ; ( जार---मृहित्स १३६ , हे ४, ११६ )। लुहीत,
        केलं सुरु=दुर्ग सूत्र , (हे ४, १९६)।
```

```
गुरुस्य ; (हे ४, ३६१ )। वह—मुद्रुक्तंत ; (इस)।
खुडुक्किम वि [है] १ गल्य की तरह चुना हुमा, गर-
  बाहुमा; (टा १११)। २ शेरमूह, ग्रमाम मैन
  क्षान करने बदा। सी-बा; (गा २२६ म)।
      ृ वि [ दे. श्रुद्ध, श्रुच्लक ] १ तत्र, होता; (र १,
  सुदूर्ग रे पर : इस : इस ? ; आया २,२,३ ; उन
   १)। २ नीच, ह्यम, दुरू ; (पुन्त ४४९)।
    पुं. होता मायु, त्यु निल्ब ; (सूम १, ३, २)।
    कुन अंतुराम-निरोप, एक प्रकार को अंगूरी ; ( और ; टा
    मुदुमद्वा म [३] ९ वहुं, मन्यन्तः २ हिन स्निः ।
     खुहुय हमी खुद्द ; (हे २, १७४; पर् , बण; मन ३१ ;
      खुरुमा हे हेन्सी खुरुमा : ( झीत : पणा ३६ : माया
      न्दुहुत्य ) १, ७; इ.म )। 'लियंट न ['नेप्रेन्य ]
        टनगण्यस्न मृत्र का छठती झज्यस्न ; ( टन ६ )।
       खुड्लि न [दे] सुन, मेपुन, गंनेस ; (१ २, ५६)।
        खुहिमा मी [हे सुदिका ] १ छेटी, ल्युः ( य ३, ३;
          हाता २, २, ३)। १ दशा, नहीं सुत्रा हुमा छेटा नरातः
         सुपुक्तुडिया मी [दे] प्रयः, नारः, मीमधः ; (हे ३,
          त्युरमा वि [ सुपमा ] १ मरिन ; ( ता cek; तिन् १ )।
            २ दुरितः (देश, ४१)। असल, मृतः असतः
            रामाक्त्रान्त सह सार्थ सुरुपुर्वाः ( बर १= १ संवा )।
            सुट्य हि [दे] दर्गविष्टः ; (देश, अ)।
            खुल हि [है] जिल्ला, इंडा हुमा ; (हे है, हर , जार
              9,9; 117 2.14; 326; 1147; 1155 ) 1
              स्तुनी म [ इत्यम् ] हर, इस; ( वन, मा १८, ६९ )
              सुर् दि [सुष्टू ] कुट्ट, मेर, सुद्ध करन ; (यह १. ९
```

الله والمراع المناسع المناسع (الما و الم

म्बुरिमा मी [सुदिमा] न्यरण हमा ही तह कूटी

मुद्ध हि [सारव] रोजना वारण हुए ;

(5 3-78 3:3) 1

कुरिय वि | श्रुवित] इ.स

352)1

१—पुडिजणः (म १९३)।

14. (H m, em) | RE-" qentaron an

हेर्तरिक किए " (पटन bl. १९९ : म ४४=) ।

इतियम [रे] रेल गुडुवियम , (स १९८)।

हिम हि [वर्राट्टन] वर्रीन्य वर्रम्य हिंदिन हैं

पुरुषका प्रद [है] १ मेंचे एकामा ११ वर्गाम्य होता।

```
Jes : 4 day = 6.4 . ( 4 f(x ) !
                                    Jes 41/ 1/20 = ($): (414) !
                                                                                                          वार्यसङ्ग्रह्णजानी ।
                                   गुन्त कर (सम्ब ) हेन्स, विसन होता । युग्य , (ह
                                    . १०१)। वर-पुर्णन, (वड्ड, प्रमा, अपूर्ण
                                                                                                                         कुल्ड ोप[संख्य, क] । टांस, न
                                   11, 11, 11) | 15 - April (41)!
                                                                                                                        दिन्द्रम हे र पुरान्तिय सीन विभाग ( व
                               पितामा हो [ सुन्यामा ] भूग भी द्यान . ( वि
                                                                                                                       खुन्नाम (स्व । हता खुर , (लव)।
                                                                                                                      खेल्ल्य वि [ शुक्तक ] । तपु वृद्ध व्य
                            ान १६ [शुन् ] १ वंत वना, वृत्ता हेना। १ तीन
                                                                                                                       रे क्यारंत्र निराय, गढ प्रकार की कीशी , (का
                              ...। वर निर्मत् , ( श प-वन रेटरे )।
                                                                                                                      43 555 16
                           पान क [क्षोत्रक] गाल, काराहर (गक्)।
                                                                                                                  व्यक्तिम् मी [है] महत्त्र (हेर, १०)।
                         पन का [शान] करन, पाताना । पान , (राज
                                                                                                                 उव ३ [ खुव ] जिनही माना बीर इन दरे।
                           )। १-विकास (क्यूर, १)।
                                                                                                                  एक रत , (गामा १, १ - पन १६ ।।
                       प्रवाद [स्थानिक] १ मानकृत मानमा दूसा
                                                                                                              र प्रथम थ [ के ] कुल-सिंगन, कार्याह-कुल (११)
                           १९१,३)। व्यस्त्रम् सम्बद्धः, (यंत्र)।
                                                                                                             चित्र वर्गा सुम । जन्म, । वर्ग ।
                        1 + -- , water , ( gr 2 );
                                                                                                            उत्थय व [वे] वने मा पुरमा । वा र ।।
                   र्षे जर ति है है जिल्ला हुमा, (बाता १,१ चत
                                                                                                           पुर केता हुउस । इ-पुरियच्य पुर : 11)
                                                                                                          पुरा को [ सु प् ] भूग, पुनुगा
                 A. 1 ( als. ) mate # 4,4 4. 4.1 ( 4.4 4 4 5.)
                                                                                                            विस्मिट, वरीसह वृ विस्मिह, वर्गम
                                                                                                         वदना का मान्ति व गान करना अ
              1. 1 ( M. ) de . 10 de
                                                                                                     दिस्मिति [ स्वासित ] , समारम व
                क्या व [ यत्र ] स्थान मुगा व ( विस
                                                                                                       इस्ते)। इंबाल, गंबाल स्ता ।
                                                                                                   पूर्व व [ शुक्र ] समान, मान वा र १०
           हरता । [सामा ] । काम बाउन का साम क्षिमी में मेंगा
                                                                                                    दे सागार, पुनस् , ( महा ; ) रहनग, धर
                त्त राव ११३ का हिल्लु, तब देवार का कार्य राज
                                                                                                   "107.)1
                                                                                               वेश मह [क्षेत्रम् ] मिल्ल काला मा मारत ।
        भेत्र १ [ भेतृ ] १ यह उत्तम, मान
     ( Lab ) to bet ( 4 ) to takent.
                                                                                              3 727.5, ding. ( 9 114 )
    पुरामान १ ह गुम्मान (१.न)।
                                                                                            (अने ३१)। व सहावेद लाट्चे हाल
   11 [ # ] Sold & 24 4 41, 241 .
 the l' they have been been last it a set
                                                                                          Mil (4.0) 1
                                                                                      हेरेन केम हेरेसा (यूप १, १ . स.स.
ا ( تواني ) ، فعده ( في ) ، المتلملين
                                                                                     भेत वृशियो न्यम, मचन . ( व ..
450 A tomothed (422 61" 42" 4 7-5)
                                                                                   समान सिन्त । वर, दर्ग । । । । ।
                                                                                 विवार केंद्र कारार ( १४० , वा
                1 24 to 6 M. 20, 622
                                                                                 [ महा] दिला में एक.
" ( t. g. g., (t., 2e);
                                                                                  तिया शिक्ति ] विकास
                                                                                ");
                                                                         केंग्रहरू १ [ नेमहेन्द्र] मका इत्तर ह
                                                                        केंद्रवार देवा बार्यात् । वसः
```

रेबालु वि दि] १ विगह, सन्द, बालवी ; २ बनाहिन्छ, ईऋतुः (हे २, ७३) । ोह्य वि [मेहिन] जिल्ल दिया हुमा; (न ६३४) । वेचर देखी स्वेभर ; (रा ३, ६)। बेड्सणा सी [लेड्ना] वेद-दुबर बाली, वेड , (राजा 9. 9= 11 बैड मर र छुर देनी बरना, यम बरना । मेटड ; (सुर २०६)। "ग्रह ग्रन्स्या य दुन्तिय हलाई केटीन ग्रन्न-राज्येव" (सुरा ५३०)। षेड न [मेट] १ धूनां का प्रारत वाला नवर ; (भीव ; फड़ १, १)। १ नहीं और पर्वतीं से बेटिन स्मार ; (सुम २,२)। ३ पुंस्तवा, शिकार, (सवि)। बैडग न [स्वेडका] फतर, टात : (फट ५,३)। सेष्ठण न किर्मण | तेनी कम्लाः (सुरा २३०)। सिष्ठण न [स्वेटन] गाँउड़ना, पाँदे इटानाः (द्य १२६) । नेडणञ [नेलनक] विलीना; (नाट--गना ६१)।

सिष्ठय वृं [इत्येटक] १ विष, जरुः ; (११,६)। २ ज्बर-विशेष : (शुमा) । निष्ठय ति [स्फेटक] नागर, नाग धरने वाला ; (हे २,

६; इसा)। चेड्रय न [नेटक] होटा गाँव ; (पाम ; सुर २, १६२)। विश्वाचम वि [मिलका] वंत करने कता, नमायिक (द्य पृ १==)।

मेडिय वि [इप्र] इत में विशन्ति ; (दे १, १३६) । मेंडिय पुं [स्फेटिक] १ नाम बाता, नम्दर ; २ मना-दा बाला ; (हे २, ६)।

में हु मक [रम्] होता काना, गेल काना। खेहाः (हे ६, ९६८)। बेड्डॉन ; (हुना)।

मैंड् } व [स्वेल] १ ग्रीडा, येत, नवागा, सजाक; मेंबुध ∫ (हे २, ९=४; महाः स्वा २३=; म १०६)। २ बहाना, छन्तः, "मयनेहूर्य विदेशन्य" (सुरा ४२३)। मेंड्रा मी [क्रीडा] शंहा, सेंड, त्यामा ; (भीत ; पटम =,३०;गव्ह २)।

मेहिया मी [दे] बार्ग, दरा ; " मह¹ पच्चिमा नेहिया" (गु४=१)।

मेत इंत [क्षेत्र] । माद्यगः (स्ति २०==)। २ इति-मृति, वेत ; (दूर १)। ३ जर्नत, मृति ; ४ देग, गाँव, नगर बगैरः स्थान ; (इ.स., पवृ ; विते) । १ मार्स, सी; (श १०)। किएप पुंकिएप देश का न्वाज ; (बृद ६) । २ जेंब-संबन्धी बनुन्दन : ३ प्रन्य-विशेष, जिलमें जेज-विशास मानार का प्रतिगदन हो; (पंतृ)। 'पलिओवम न ['पन्योपम] बात का नाय-विरोप ; (मञु)। रियापुं [र्रायं] मार्थ मृति में उत्पन्न मनुष्य: (पण्य १)। देखी मित्त=नेत्र।

नेति वि [क्षेत्रित] चेत्र बता, चेत्र का स्वामी : (विने 1853) 1 न्वेम न [क्षेम] ९ कुगत, कल्याय, हिल ; (पडन ६६, ९० ; ना ४६६ ; भत ३६ ; रवच ६) । २ प्राप्त वस्तु का परिगलन ; (याया १, १) । ३ वि. कुमलता-युक्त, हिन-कर, उक्तव-गहित ; (णाया १, १ ; दम ^३) । ४ पुं. पाटलिपुत्र

के गजा जिनमात्र, का एक समाख ; (झावू १)। 'पुरी स्तो [पुरी] १:नगरी-विशेषः (पटन २०, ७)। २ विदेह-वर्ष को एक नगरी ; (टा २, ३)।

न्वेमंकर पुं [क्षेमदूर] १ इतका पुरान्विये ; (पडम २, ४२) । २ ऐरवन केय के चतुर्य बुलकर-पुरुष : (सम १४३)। ३ मह-दिनेप, महाधिष्टायक देव-विरोप ; (टा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रतिद एक जैन सुनि; (पटम २१, 🗝)। १ वि. कल्याण-द्यान्द्र, हिन-जनकः (टा २९१ टी)। सेमंचर वुं [क्षेमन्बर] १ वृतक पुरा स्थित; (पत्र २, १२)। २ ऐन्यन चेत्र का पाँचकाँ कुलकर पुरुष-विशेष ; (सम १४३) । ३ वि. जेम-धारक, टपदवरहित ; (राज)। स्त्रेमय १ [श्रेमक] स्वनाम-प्रतिद एर प्रान्तरूद् जैन सुनि :

(भंग)। नेमलिजिया स्था [झेमलिया] जैन सुनि गए की एक गाना ; (क्य)।

मेमा स्वा [क्षेमा] १ विदेश-वर्ष की एक नगरी ; (टा २, ३) १२ चेमपुरी-नामक नगरी-विशेषः (पत्न २०,१०)। मेरि सी [दे] १ पीछाटन, नाग ; "घरपविरि' ता" (दृह २) । २ मेड, ट्रीम ; ३ टन्कटा, टन्हाता ; (मीडे) । मेल प्रव [मेल्] गेलना, बांध्र बन्ता, तमागा बन्ता । गंदर ; (कम्)। गंदर ; (मा १०६)। यहः -मोतंत ; (ft to() 1

नेत हैं [इलेपान,] ज्या, बर, तियात, वूपू ; (न्य १०; मीतः वसः, पटि)।

केलप } व [बेलन, °क] १ ईए े। २ निर्देश : खेलपय 🕽 (झार; स १२०

वाद्रभमद्महण्ययो । [संतामद -3.23 ६ प्रदेश, जगह ; "भिगमपोत कत्रां" (प्रेप गृह भेजनिह से [क्लेप्सीयति] ९ स्थि मिन विसे ६ प्रम्पोटन, प्रमार्जन _। (भोप १६६)। *७२ ग* रभेज सन्धा पा कम देने नते , (यह १,९; मर्नि ३)। में देने बोन्य मुक्त वरीर. इच्य ; (बा १)। ६ हि न्त्रे क्रियाला, (बाद्य_ाया १००)। शोडपहडालि वुं [दे] हरत बात बो मन, (११) मेजर रूप मेप नवतु । वंग्या , (ति २०१) (वह गोड्य पुं [स्पोटक] तथ से वर्ष का लगोल :(११) स्ट्राम्प (in se)। वरो, यह -भेप्यार्गक्या, मोदय १ (स्फोरक] क्षेत्र, कुन्यी ; (१९१) 21 Tot 1 E नोडिय वुं [नोटिक] मिनार पाँच का देशा है क्षेत्रक रूप केर व्यवस्था । स्वी १ The bill bed of the (A) (1) न्दोच्चो त्यी [वे] १ वश काउ १ (गण १, १^{.-स}। सेन्याच्या) a [लेप्सक] १ मत दश्या, शीश श्रमा । व कल की लुक्त प्रकार की पेडी ; (सर्ग) । क्रिक्ल्प्या हव रिलील (प्रा १४२ हो)। पाई रहोणि बी [झोणि] श्रीजी, श्रामी ; (गण)। ह सं[भून्ती] बर बान करी गईं, (तारी ह सर्वाचन विदेशियां केले, इत्या, (११, वर्ष) । [यति] सन्न, म्यो ; (त्य ५६८ हो)। न्योणिंद इं [श्रीणीन्द्र] राजा, मून वार: (स) क्षे न्त्रम् क्षत्र व्यक्तम् । १९४) । नोणी देश नोणि । (मृत ११, ६१, मृत १३^{८, ११} में पूर्व क्षित्र है र काल वेंद्रत, (इर वर वर्गे हैं)। १ क्लोइ पु [क्लोह] १ पूर्वत, विहारत , (अत १६) ना क्षान्त्र । कि १०६) । इ सम्पानीता (सम १ इजुन्य, कल का रम् (मृत्र १,६) । पन है वि . ** नगृश् तिने । (योग)। यर पु [यर] रोपे सेंच र सिंह है राज्या, बर, कार । "बहु बहु गृह गर्र away day virging ? , (Fit & P, RE)! (1/19 1) 1 कोन्छ । व [शोदोद] १ गदर-शिते । विशय Arre e [6079] 279 , 4747 9, 8 31 मार्च । इस्तानक तुन्यमग्र है। श्रीती। भेषा ५ (भार) रहते करा , (ता १८६) । १ महापती बागी बागी, (जोत १)। 1 व सर्वता ५ सिंदिन है ऐसा दिल दूसर हुआ , (सर्व)। वानाः, इन्युन्तव क्र समान भितः सनः (कन्तः १)। सर ya रिके विचल, १६ वर्षानामुगानाम् अवस्त्रात् न्तोइ व [श्रीद] मा, गरा, (मग १, ६) । portioner 40 11, 101 12 मांत वह [शांवय] १ तिवतित बार, वेरि मार्चन (क्षेत्र क्षेत्र व्हार का व्यवहार)। काता व व्यान्त्रे स्थापता । व राज देश काता व (बहा) । वह -मोजेन , (गाम), ६० , ना व क्षाप्त कर किंग्स है एक हा रोजन, करा हा समाज वेष्ठ - व्योतिष्णः, बोसारं , । आ , 🛚 १९६)। ## 1 # PHE : # 9 25 # 5 1 नाव १ (शांव) । विकास, संबंध , (बार्थ) ब्रोक्सी । सा [ब्रामा] हरू दी हारात्र , (स. ४३०)। इराज्य बर रचन बर गृह तुन्त । प्रश्न १६० ३६ AL WET भोजन व[शोजन] यज राजन, निर्देश बाराहर कर विकास के अधन करते हम, तिरा क्षेत्र राज्यसम्बद्धाः (१३व २, ६२ , १९१) । serge ear Lag - acregitation . 679, for 1,3% मोनिय हि [सोनिय] स्वर्थन हिन हुए (१३) argen[8] warr, mere, con 1 con . केट्रिक्स, 'बार १०० हैं । यह बहिंदी। क्रम १ व[क्रम] र बार्वेटर स्थ. सात ह Et 1. 25 .1 बोजन है हुम स्था, (मारा ५,१ मा १) है WE # [] ST. WEST (\$ 3, 22) 1 5}5 के अर बाक्त हैशायम (ला¹³⁵ my , to I . my siring ery of it, o fe १९ १९ _१ क्यू २ ह_ी र रहत वर नागर ⁴⁹ THE CAL ENGINE ! THE PAR देश, प्रकार सम्मान स्थाप है पर है पार्थ है है । EN BUT ACT, MIKELY

```
)। 'पन्तिण न ['प्रश्न ] विधा-विभेष, जिलमें | खोल्ट न [दे] कोटम, गहुबर " मोल्लं केल्पर '' (निवृ
                                    पार्असद्महण्णेची ।
                                              खोसलय वि [ दे] दन्तुर, तस्व भीर वाहर निस्ते हुए. शैर
व में देवना का झाहान दिया जाता है; (ठा ९०)।
मिय न [सीमिक] ९ क्याम का बना हुमा बन्त्र ;
                                              स्रोह देशो खोम=लामय्। खंडह ; (भवि)। वरु-म्बोहॅत;
                                                 (म ११, ३३)। क्तक-स्वोद्धितंतः ; (म २, ३)।
टा ३,३)। २ सन का बना हुमा बन्यः (इस्य )।
                                               स्रोह देशों स्रोम = ज्ञाम ; (पन्द १,४; उमा ; स्रा
य देनो स्रोद ; (सम १४९ ; इक )।
ार } त [हे] पात्र-विगेष, क्षेट्रक ; ( टर पृ ३९४ ;
हा एक देश ; (दे २, ८०; १, ३०; बूर १)। ३ मण का स्त्रोहण देशों स्त्रोमण ; (आ १२; मुता १०१)।
नावता काट-करम : ( भावा २, १, ८ ; छूर १ )।
                             इस विनिपाद्असद्महण्णवे खमागद्दवंकतुणी
```

एमारहमी तांगी सनती ।



```
ष रत्रमद्महण्यानो ।
               म ३ [म ] व्य-कानवं निर्मेष, १७मा स्थान केम्ट है,
                                                                 गउरी शी [ गोंसी ] , पारंग, निवनमां, (
               मि [म] १ जान वाला, २ प्राप् दान वाला, जैम-परम,
                                                                  र गीर कुण काली भी ; इ सी-निगर ; (इसा)
                                                                 3 [बुन] रहेनां का बुन, स्टूब्स, क्यानेंदर, (क्
            गर सो [गनि] १ क्रान, महारा है ( जिले २६०३ )।
                                                               े कार भेर, (से १, ११) । रे साल कान,
            टमान्तर-जाति , ( क्या ) । ४ वन्यान्तर-जाति, अवान्तर-
                                                             र्वा व [ सह ] मुनिवित्ता, द्वित्त्व मा का सार्व का
            THA . 31 9, 9 , 4 ) | 4 38, 4974, Faire,
                                                              (छ , निन रथरह)। देन व [ सन]
           त्रक भीर मुख्य जीव की मन्त्रा, देशदि गीनि , ( स ६,
                                                             एड जैन मुनि, जो पत्र बायुरेन के पूर्व जनम के मुन्दे।
           111 नम ३ [ यम ] यान यो बाउंड कीन,
                                                            १६३)। २ नता बाउरन के खंडाम द म
         (सम् १. १२ । ४, १६ )। नाम न [नामन्]
                                                           ( प्राप्त है । १ वर्ग है । १ वर्ग नाम का एक के के
         ह हि होने का कारक समय कर्त । ( का १० )। उपयोग
                                                           (भग १६, १)। देसा भी दिसा
        उ [ अप्राम् ]१ गनि को निवनता , ( वण्य १६ )। ३
                                                          की भी का नाम : (विशा १, ०)।
       बल्याम-विमाप , (भग =, ) ।
                                                        गंग इत्या गंगा। व्यवाय पुरिताः
     महेर ३ [ मजेन्द्र ] १ हमान्य हायो, स्टब्स्नी, १ क्षेत्र
                                                        पर्वत पर का गृह स्वान् कर, जहां म गाना ।
      हाती, (गांत्र हमा)। 'पत्र न [ पर्] मिनार
                                                       (स १, १)। भीम ९ [ स्रोतम्]
     परंत का का गढ जननीय : (नी ह);
                                                       हालह. (तेद्र)।
         । इ[को] हेल, क्रम, मीट : (हे १, १६०)।
                                                     गंगली सा [ दे ] योन, तुनी , ( ५ग २०६, १
  Ass 34 [ Ass ] 4 gs 41 40 / 10-11
                                                    यंगा सी [गरा] १ ज्याम मनेत सी, (छ.
 गडम १ ( गयम ] गो-नुत्य भारति वाला जनाती वजु
                                                     २७, क्या) । १ सी-तिरोष , ( क्या ) । १०
                                                    हे मा से हाल-दिसाल-विशेष , (भग १८)। ४१
                                                   नेदी की श्रीविद्याविका वेबी, (श्रावस ) । ह बाँचारिय
गडमा मां [मों] वेना, मी . (हे १, १६=)।
प्रकृत है । साह है । स्वताम-स्थान हम, बमात का हुती
                                                  की माना का नाम, (बाबा १, १६)।
मागा, (हे 1, २०१, मुना ३८६)। १ नीट देश
                                                 क्रिक्ट दिमाचल वर्षत का विका हर वितेष, जा के ह
                                                विकास है (25)। इस से [इस] हिल
वा निवामी । (है १, १०१) । हे तीह देश का राजा ,
                                                वर्षते का एक तिला (स. २, ३)। भीता
गरः। क्या)। गरं वृ[ यथ ] वास्तीमात का
                                               िद्योष ] इंग्लिकान, वहर वमान्त्री स व
त्वा हुमा प्राप्त भाग का एड काव्य प्रत्य ( वडः )।
                                              (य ३,३)। देवी मी [देवी] नार
मिर्दिशीय] मनाम, मन्त्रम, (११,३),
                                             हाविहा हेवी, देवी-विशेष, (१६)। यस वृ [चर्त] "
ते हो [ सीवती ] मांज विल्ला, मध्य ही वह मांजा
                                             मित्र (क्या)। सेव व (सन) बागउद्दर्श
                                            में एड माम का काल-गतिमाल , (भग वर )। मर
वैना गारमः ( क्रमा, हे १, १६३ ) <sub>।</sub>
                                          व क्तावर विनेद नीर्व-क्तिय, क्रम सवा म्युर में हर
व वि [ गोरिक ] गोर्क गुरू हिला हुआ, किस्स
मान हिल गता हा दर, "नावनाइक नेवानाइक
                                        समित्र वु [ मार्ट्स य ] १ माग का पुर, भाजपार
र दिक्का, गामक्रम् स्ट्याक्रम् " (अस
                                         (काला १, १६, केली १०४)। र शिल का
                                        हानाह मानातुं (मानू १)। र तह तेन हुन्।
प्रानुहार मानातुं (मानू १)।
                                       मानन् पास नाव क वंग के ग ( मा ६, १३)।
                                     मंह विदिश्य क्या क्या (अव हु, रह).
अंक विद्या क्या क्या स्था है। रहे स्था
                                    NEW ] ( + 1, cr ) ,
المعتاء والسادر
```

```
र्वाटिम व [ प्रक्थिमी ९ प्रत्यन में बनी हुई माला बीगः :
हिन होडिया ]
र्गज पुँ [दे ] राज ,। दे २, ८५ )।
र्गत ५ [ गण्य ] में प्यारिकेष्य एक प्रस्त की राज्य करते ह
  (कर १, १०० १८)। साला में [शाला ]
  कुर, अवह है परेट: इन्यून कराने का स्थान , (नित् १४)।
   <sup>*</sup>ज्ञान (राञ्जन) १ असम्ब, निस्म्हर, (सुर ८००)।
      महाराज्य मार्चित्रम् सम्बद्धि स्थान स्थाप हासीयो ।
      मेमाजिज्ञ मार्गे व संस्कृत प्रीतर्जनगण्या (बुझा ४२) ।
     २ कलंक, दुना । विह्नामाहिमा ज्ञाना (वहा १८)।
   राजा को [ राष्ट्रजा ] सुरान्टर, स्टब्स्ट हर्ड हुइन्स ; (हे र,
     र्गतिम ५ [गाठित को जन्द-पन, रूप देवने पन्त, पत्तन,
      गंजिल वि [ गाँक्तिन ] ९ प्रतिहर, क्रीनेप्ट : 'व्यवस्था
        तिक्तं इतः । इत्र ह्नाः हिलाः । १ हतः, सना हुलाः, ।
        الماليس الرائح ) و المتين مين المريض ؛ و يعتبد المتيا
         क्ततः। है ३, इ३ ।।
        र्गजील वि[दे] काउट, व्यक्त . (वर्)।
         र्गजीन्सिय वि [दे] १ रामान्यव, त्रियह राम सहे हुए
           हो दह : । दे २, १०० , सर्वि । । २ ज. हराजे ह लिए
           क्या जल इंगन्स्सी, मुस्सुरी, मुस्सुरीर ,
           र्शेट सर [प्रम्यू] १ स्त्रम, र्हेश्य ।
             गळ : १ हे ४, ६२० , वहूं ) है
            संद्र देव संघ ; ( सम ; सुम २, ४ ; धर्म २ )।
             गीटि पुर्ल [प्रतिय] १ गीट होते, १ वीन हारि हो
               ent, 4; ( * 9, 24; 4, 900 ) ( 3 stelly stee;
                 ल्य १,१ : मेर) ( श्रांतरिकार , । ल्यूस १४)।
                १ सार्त्यं व व्यक्तियु विक्ताम्य विशेष : ( व्य २०३ ) .
                   المناوية والمتواجعة ويعدون ويوا
                    يترب ويسيدون وسيدون و در ( ( والمد و وود ) )
                 क्रिप्र हैं [ 'ब्हिंदि ] गाँव तेहते बादा, वर्तनीतीय, पांच्य-
                  इंग् ( हे ३, व्ह )। भेष दे भिर् के क्रिक
                   न्त्र ; (यम १)। जियम वि[जेदक] १ इन्य
                   के क्रिके राज्य ; व दूं बर-क्लिय; (राज्य वे, ६८; पत्र
                    १, १)। च्यापार्ड यसी क्रिक्ट क्रिक्ट
                    ( क्यू )। 'सहिय वि ['सहित] १ वीव्युक्त, २ न
                     इन्टर्कर निर्मेष, जन निर्मेष : ( वर्ष है: परे ) ।
```

```
( पद २, ६ ; मग ६, ३३ )। १ स्टब्स-विगेप ; (एल
र्गटिय वि [ प्रथित ] गूँग हुमा, गठ हुमा ; ( हम )।
गीटिय वि [ श्रव्यिक ] गीट बाताः ( सूत्र २, ४ )।
वॉटिन्ट वि [ प्रस्थिमन ] प्रश्यि युक्त, गाँउ वाताः (राज)ः
 गंड पुं[रे] १ वन, वंगतः १ टारामानिकः देखालः
   इ होती पर्ण : (दे २, ८६)। ४ तसित, नर्दे ; (दे
    २, ६६: झाचा २, १,२ ) । १ त. गुल्ल, समूर ; "इसु-
    नशनगंदमुकाविये" ( महा )।
   गंड फ़ें [ गण्ड ] १ गण, कोल ; (मा ; मुत = )।

    अस्तिकिक स्टब्स्याः भित्रः सा केल्ड बेद्दं संदेखिन

     कंट्रिक्टुल्लें" । इव ३६= द्री ; ब्राक्त ) । ्रेहर्स्यो रू
      कुम्मन्दरः (प्त २६ ।। ४ वृत्त, म्प्तः ; (स्त म.)।
       १ जन का जन्मा, इन्दुन्नहरू ; (जन १३१६)। १
       हुन्दर्नित्वः; (र्शक्)। अक्तूंत्र, स्टोट्कः; (डन
        १०)। = गँठ, प्रन्यः ( अति १०: अनि १८४)।
        भेज, भेजज ( भिर्क विनिधीय, प्रत्याप
         (प्रति १ ३ प्रति १=४)। माणियाः मा मिणिका
         बुन्य का एठ प्रकृत का नाय ; ( गय )। साला व
          [ माला] राग किए, जिस्में भेटा पूर जारी है: (स्प
          च्यल व [ क्लल ] कोत्तननः ( सुर ४, १२० ) । की
          म् [ लेखा ] संत्याती, गलुप नगाई हुई कर
           क्तेंट: क्रिटा, (लि. १, १, गडर)। खरछा
           [ 'ब्रक्सम्का ] पंच म्लां में युक्त हार्त वार्ता स्त्री : (
            चालिया म्क्री [चालिका] बँत क
            किंदा जरून में छहा हता है। (सा अ मा)।
             वु विद्यो दिन स पर्यन्तरः ( स्टर )।
            गाँडह्या न्द्री [ गण्डकिका ] न्हेन्द्रीय : ( अवन
            र्नाड्य है [ संब्द्द ह ] १ तहाँ, जलत किये :
              हे 3, 5 थे। व हर्देशाला काले बाला पुला, हे
               बना पुन्य: (मेन १००)।
              बॉडल्डों स्टों [ हे ] सीते, स्टा के दृहते; (उन ह
              बंडिइ [ गाँख ] क्लु कि । ( झ १ )।
               मीडि दि [मास्टिटन] १ स्ट्राम्पण हा रेस व र
                 ३ कर कार कार ( कर 3, 8 ) I
               र्नीहवा मी [मन्दिश] १ नेमी, उस
                 (ज्या)। वे स्टब्स स्टाउत्तरासः (व
```

```
रे एक वर्ष के सरिवास बाजी मन्त्रपाति . (तम १२६)। शिवा वृह्मित साम है आहे. तम है किया है जा स्टीमिट है किया है किया है जा स्टीमिट है किया है किया है जा स्टीमिट है किया है जा स्टीमिट है किया है किया है जा स्टीमिट है किया है क
                            गडिल देता गंधिल , (१६)।
                           गंडिलायाँ देनो गंधिलायाँ ; (१६)।
                          गंडी लो [गण्डी] १ सोनार का एक न्यास्त्व : ( स ४,
                           र नव रेण्ये )। रे ब्लान को कविद्या, (देन रेहे)।
                                                                                                                   १३८३)। १ मन-मान्य बाँगः बाल क्री
                          निद्वम न [ निन्दुक ] यत निगंव, ( में ३८ )। वय
                                                                                                                  कोड, मान बाहि बाल्यान्य वर्गाः, वनेग्रहः (य
                        उ [ चन् ] हामा कोर- बनुव्यद नानवर , ( छ ४, ४ ) ।
                                                                                                                 हर १, जिले २६७३)। ३ फल, वेचा, (४३)
                        पोत्यय उन [ 'पुन्तक ] कुनक किंग्य , ( टा ४, १) ।
                                                                                                                ह स्वतन, मंदरमा लागा; (पण, १,४)। मूर
                    गंदीरी स्त्री [ वे ] कादरि, कन का दुवता , (वं २, ८२) ।
                                                                                                              िम्तीत ] जैन सार : (मृष्ट १, १)।
                  गंडीय न [ गाण्डीय ] १ सत्रन हा यद्वर, (बचा ११२)।
                                                                                                          गींच देशों गीति, ( कह १, १ - पर ११)।
                 मेडीय न [ वे. माण्डीय ] चतुर, बाजुन, (वे के, पर)
                                                                                                         गंधिम देशो गंडिम ; ( राजा १, ११ )।
                                                                                                        गदिला को [गन्तिला ] देनो गविन ; (१६)।
              गर्डावि ३ [ बाएडोविन् ] बर्जु न, मध्यम कावन, ( बेची
                                                                                                       व्यंतीची का [है] बोश-विरोध किलें बीत
             गंडुभ न [ गण्डु ] घानीना, नगरना, (गहा ) ।
                                                                                                     गंदुम हेमा गंदुम . ( बर् ) ।
           गंडस न [ मण्डुन ] रच-विनेत्र , (हे है, पर्)।
                                                                                                   वीच 3 [ बान्च ] १ बान्च , नाभिक्षा से महन सर्व
          गाँडुल 3 [ गण्डाल ] हान-विशेष, जो कर में पैश हाना
                                                                                                    प्तार्थों की कान, सदक , (ब्रॉन, सन , हे १, ११)
                                                                                                   रे सब, लेखा; (से (, ३))। रे पूर्ण विहेत, (स
        गह्नपर वृ[गण्डूपर्] बन्तु-विदेष , (राज)।
                                                                                                  र, १) । ४ केल्लान्स देवी की एक जाने , (म)
       गहल वेलो गहल । ( वक् १, १ - वच १३ )।
                                                                                                १ व देव-विमान विगय, (निर १,४)। (में स
     महत्त इ [मण्डूप] वानी का कुल्ला ; (मा १४०
      द्वा १९६), "ब्हुमसामहस्ताव ( का ६०६ हा )।
                                                                                               कुक पतार्थं (तुम १, ()। उन्नों मो [क्रा
                                                                                             कायन्त्व का कर (वार, है १, ८)। का
   गंत देखां गा।
                                                                                            वी (कारायिका) वृत्तीन्य कारत रंग की सार्
 गंतास्य हेरेनां गम = गम् ;
                                                                                           भग ६, ३३)। द्वाण व [श्वण] गलात ।
गॅनिय व [गान्तुका] दल-विरोग, (चनव १ - वत्र ३३)।
                                                                                         (का)। देव व [दिस] करवा व व
गेनी ही (गम्बी) गारी, सम्द्र ; (बान ११ के उस
                                                                                        (व है न पत्र ११७)। इति [जल] म
                                                                                       वर्ष, त्राप्य-वर्ष, (वर्षा ३)। व्यास व जिल्ल
                                                                                      क्ष्य का बेग्रीमा कर-विसंद (स्था)। हेन
                                                                                    [चैंत ] स्थानिक मेत्र (स्थ्)।
प्रवचातवा सं [गम्याप्रत्यातता ] विद्यानको
                                                                                   िक्रम ] व्यक्तित क्या, व्यक्तित स्थ . (ता)
हेन, क्षेत्र सुनियों को जिला का एक जकार : ( टा ह ) ।
                                                                                  देशों को [देशों] देशी स्थित , जीवर्ग अवर ।
काम वि [ गलुकाम ] कार्न की रूजा काता ;
                                                                                 किसी; (मि १,४)। देखिया।
                                                                                क्लानीर, (बावा १, १ -वन १६, बीर)।
ण व (गलुमनम् ] कार दंशी ( बद् ) ।
                                                                              देखा भामः (हम ६७)। भय ९ [
                                                                            क्योना, क्योता सान, (यार)। व
                                                                           भित् ] । मुकल्या सम्बद्ध , र महिला
गंड-मन्यू । गण्ड , (ति ३३३)। कर्म-
                                                                          बला, मित्रव का से बुख, ( व ६, १ - व १११)
                                                                         भार्षा भाषण वु भार्ता । वर्तन क्षित्र हा
                                                                        हा हिंद कार है (स्त के के के कि के के के कि
                                                                       े वात-वित्व का लह हैन
                                                                     (अर् ने न्या है। । ने स्वयनस्वतं स तर ।
```

: चित्री | भतनस्य सम्बद्ध सामेन्द्र का अवाय-स्थल ; होत्)। चिद्यन [धर्तक] मुगल्यित हेर-इन्यः; तिता १,६)। चिहि स्त्री चिति । वन्यक्का सी र्द हुई गोडो ; (गाया १,१ ; झीर) । बिह ३ बिही त, बलु ; (हुमा ; गर १४२) । विस्तु हुं [विम्स] मुर्गन्यत बन्तु का पुछ ; १ चूर्ग-विरोद ; (सुग ६४)। रमिद् वि ['समृद्ध] १ सुर्गन्यः, सुरन्य-रूपं : २ न् ए-किंग्र ; (प्रापन ; इस्) । 'सालि पुं ['शालि] र्नियत ब्रॉरि : (प्रायम)। "हत्यि ५ ['हस्तिन्] क हन्ती, जित्तही गम्य में इसंग् हायों माग जाते हैं , (यस : परि)। "हरिया प ["हरिया] बन्दुरिया हरत , कम्)। 'हारग पुं ['हारक] १ इन नम का एट रेच्छ देश : २ गन्यरणक देश का निवासी . (पार १, १ -पन १४)। र्गरसाय (हि] गन्धर, फार्ग ; (दे २, ५०) । बय देखे गंध , (महा) । रत्या सी [है] सनिक, प्राय : (हे २, ८४)। स्बद्ध (सन्दर्भ) १ देव सदन, स्वर्ग-सदस् ; (टन ।; सद्य) । १ एक प्ररूप की देव-जानि, स्थेनर देवी की एक एति, (पाट ९, ४, भीर) । ३ यज्ञ-विनेत्र, भगरान्, कुम्यु-तय का शास्त्रान्ति पर यस , (सनि ८) । ४ न, सुर्तन मित्र , (सम. १९) । ४ हत्य-तुत्तः मोतः, यनः , (विरा ९, १)। 'कोठ व ['कापठ] सच की एवं वर्षा, (सदा। घर न [गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का प्रस्यास-(थन, (बं ५) | 'पत्तर, 'नगर न [नगर] । महाभन्नर, एजा करमय में बाहारा में दिलाहा मिष्या-नगर, की मारिडन्दात्र का सूबर है, (महु, पर ९६⊂) । जुर र [भूर] देवी जनर , (गडद) । 'लिबि की ['लिबि) निर्दर्भ, (स्व धः)। 'विवाह ९ [विकाह] र ल्यानीत विराह, मीन्युग्य की ब्राह्म के क्यूगार किरण, (मर्)। माला मो [भाला] सन्जन्त, गरीत-रा, गरीगान्य, (यर ५०) । पिछ्य हि [गानवर्ष] ९ वर्शनवर्षः, यस्त्रे हे वेदवर गार रागा (चं १ : इमि १६४) । १६ इ. उन्हर्नेन रिस्टर विराहर्गकीय, भगवादेश विरागितमञ्जेर विराहिता" (बाद्य ।। । व्हार्ग्य, साव ; (यद्य) । विजिञ्ज हि [यारवर्जिक] ९ वर्डरीया में हरू १ , होनीय वि [यानीर] १ वर्जर, झाल्य, मन्द्रय, हरू, (ځټ ۱۶۶) ا

गंद्रां सी [गन्द्रा] नवरी-स्थितः (१७)। गंद्राम व [गन्द्रान] इन्द्र-विदेश ; (रिंग) । र्शधार पुं [गनवार] देश-विशेष, इत्थार ; (म ३०) । २ पर्वत-नियेत्र , (न ३६) । ३ नगर-वियोग ; (न ३८) । बंबार पुं [गान्बार] सर-विधेन, गणिनो-निधेन; (त v) । गंबारों को [गान्बारों] १ को-वितेष, कृष्य पाहुरेष को एटकी; (पडि: मॅर्न १४)। २ विपा-देशी-सिंग्य. (संति ६) । ३ मचरान् मिनाय ही शायत-देवी ; (संति १०)। गंबायह 🕽 🥞 [गन्बापानिन्] स्वनाम-प्रतिद्व एक प्रत गंधाबाह र् वैनाह्य पर्दन, (इक्; डा १, १—रत ६६: =०, द्वा ४, २---पत २२३)। नवि वि [मन्बित्] गान्युक, यंव याला , (इस ; गल्ह)। गंबिज वि [दे] दुर्गन्य, गराव गना वाला; (दे २, ८३) । र्गाधिय पुं[गान्त्रिक] गन्त्र-इन्द देवने बाहा, प्रात्ते : (ह ર, ≃છ } ! ्मंबिक वि [गरिवक्] गंत्रशुक्तः, "शान्यसगरगरिकः," (भीत) । "सान्दा की दिल्ला कि बाँक बाँक पर पान पानी बाह की दुशन, (यर ६)। र्मावित्र वि [गनित्रव] यत्व नुक, यत्व बाहा, (य. ३७३, सा १४१ : = ३३) गंधिक ९ [गन्बिक] - वर्गनीनेत, विवर-देव - सिनेव ; (स २, ३ ; इस) । र्वाबिलायर्रं को [मन्बिलायती] १ हैन-विनेष, दिवर-वर्ष-विमेष , (म. ६, ६ ; इह) २ नगरी-विगय, (स. १५) । कुट न किटो १ मन्यमादन परि का एक निमार (अ.४)। १ दैहार्य पर्वेत का शिला-दिशेष , (हा ६)। र्योधिनदी सी [दें] हाचा, होंगा ; (३४ १०३५ हो) । गंधनमा मा [गन्योनमा] मीता, हुए : (१ ५,८१) । गंपीली मी [दे] १ घर, धैरी, १ म्युक्तिस ; (इ 2, 900) 1 संबोद्या)न [सन्बेद्या] सुन्ध्य कर, साल्यकाल ं संबोदय ∫पर्ने : (मीर; तिल १, ६)। मंबोल्यं माँ हैं) ११पर, मोरहत ; १ मर्ग, रहा; (\$3,22)1 र्याचि । हेले सम≡न्त्र ह र्याचित्रु 🕽 (हीर) हे ६, ४४ , हारा १ ५ ५५ रहान्यक, स्ट्र

```
हे द्र रावण का एक सुमार ; ( वडम हह, हे)। ४ बहुरीन
                           ( By $8.8 . $5 1)
                                                               वास्थ्रमद्भवणाची ।
                    के राजा मन्यद्वान्ति का एक पुत्र , (मन ३)। १ व. समुद्
                   है किमोर पर स्थित इप नाम का एक नगर, (मुर १३,३०)।
                                                                        बच्छ हो यम चारों, गठउ का मावार, (श
                   पोल न [ पोन ] नगर-विशेष , (वाबा १, १०)। स्ता-
                                                                       स्त्री [ "सारणा ] गब्छ का स्त्रण ; ( गज
                  लियो सो [ भालिती] महाविद्द-वर्ग को एक नारी,
                                                                     गन्छागन्छि म् गन्छ २ में होस्र (मी.)
                 (217, 7)
                                                                    गव्छिन्त हि [ गव्छयन् ] गव्छ क्ता, वर्ग
               गंभीरा हो [गम्मीरा ] १ गंभीर हरण सी ; (ग १ )।
                र माना कर का एक भेर, (विन)। र स्था का निर्मेर
                                                                  गत देगों गय = गत , (गर ; प्रम् १०१; म)।
               मातिन्त्र जीन वितेष . (पाल १)।
                                                                  3 [सार] एक जैन मुन, राग्डमन्य वा वर्ग, "
             गंभोरिश व [ गाम्भीय ] गामीरण, गामीराव, (हे २,
                                                                 गञ व (है) जा, यह, धम-विगेष, (है १, ८।, त
                                                                गाउन न [ गांच ] छन्द्र रहिन बाबर, प्रसन्द्र । (छ र. स
           र्गमोरिम पुनी [ गाममीर्थ ] जतर देग्ये ; ( वच ) ;
          रागण न [ रागन ] माठात, मध्या ( (राम , स ३४८) ।
                                                              वस्त्र मह [ वर्ज् ] वरतना, परवरना ।
           पहिता न [ नाहत ] वैताह्य वर्तन वर का एक नगर;
                                                               ६८)। बर्जनंत, गरनपन , (पुर
          (१६) । काल्म व्यक्ति व विकास विकास वर्षेत्र
          पर का एक नगर, (राज, इड)।
                                                            गरवण न [गर्जन] १ गर्जन, मनवह वरे
       गाणंत इन [ गमनारू ] छन्द निरोध, ( १९४४ ) ।
                                                            का नाह । ३ नगर-निर्मेष , (देप पद्दर)।
       माम ३ [ मर्म ] १ शहिनविसेष , १ माय-विसेष, वो महिला
                                                          गरवणमर् १ दि गर्वमसार् । गृ मेर हथी।
     राता व [नातनी का गान में उन्नान स्थिनियोद, (उन १६)।
     ममार हि [ सबुगह ] १ महार मानाव बन्ता, माने मन्त्र
                                                         गण्डाम ह [ गर्जम] वरिवनं मह दिया का राज , (।
                                                        गत्रकर पु [ हे ] इन्हतिवेद, गावर, गवर, स्वर
     रेक, (बाब) । १ मानंह सा दुःन से मान्याः कान्, (हे १,
                                                        धर्म शास्त्र में निश्चित है , (धा १६ , जो ६)।
  मामारी को [ नामीरी ] गामी, छोटा बचा, (है है, ८६, डीव
                                                      मञ्जू रि [ सर्वेत ] गर्बन काने वाता , (तिक्
                                                     गञ्ड देना सस्त्रम् , (भावम्) ।
                                                     यदिन हो [ यदि ] पर्वन, हाथी क्येर ही सार
गुलिर हे में गमार, "राजगणीर केल " (ग ८४१; वर्क) ।
                                                     ह्या द , त्राष्ट्र ११७)।
गटछ तह [गम्] । जाता, त्यान द्वाना । ३ जानका । ३
                                                   विक्रिय वि [विश्ति ] । विश्ते वर्तन विश्व है।
वण काता। बन्द्र , (बान , वड़) । अपेन वच्छ ;
                                                    दिन्ति । (पाप) । देन वर्षन, सरकीर से हा
(हे १, १०१, आय)। वह महन्द्रम, बरुडमाण,
                                                   ( PE 1, 1),
(श. १. १९ : मग १३. १)। मह नाब्जिम , (श्मा)।
                                                 गितिन्तु है [गितिन्तु ] वर्गन हम्मे बता, वा
                                                गरितर (२ ४.४ -च्य २१६ , मा १६)।
छ द्वा [ गरछ ] १ वन्तः, मार्थः, वंगःतः, (व १४००) ।
                                                मितिन्तिम न [ है ] १ वस्तरो, प्रस्ताहर, १६
(E Bieng stanes, (E,J' 4, An) | 5 22-00164
                                                वं हाने वसा रामान, पुनक, (पर्)।
रारिमा बच्चे, तम्म कांत्रव विक्रम विक्रमण (चंबर
                                              and b [ and ] alached " (a see thin
वाम ३ [ थाम ] ग्रान्त में वहा, बन्न
                                             गहण व [गहन ] गरंब काल , (१ १००
र गत्र निरा, (वर्न १)। विद्यार श्री निरहार]
                                            महिमास्ते [ दे] ग्रीन्म, ग्रास्ते, "प्रसादेश (ज्
                                           महत्व[मड], हिन्तेवं वित्रा, मंद्रा वक
```

```
ह म) के सर=ार , (स्टार)
  द्वयद हुन (दे) राज्य, मान्यर धानि, हाली प्रीतः । प्री
  माराप (तिर रहार होते), समयप्र, याका राज 🐪
 ीं प्रमान किया में जाना महाई प्रश्वीती हता.
  321:300 11
  यपद मह [दे] गर्जन काल, मयल्या कामात्र काला। ,
  गा गाववर्षत , (गुरा ६००)।
  चित्रती रूप दिने बजर्जनस्य, सदस्य सामान, सेवन्यति ,
  (देश, ६८), वस्तु ।
  डियड ह[ है ] हरदर्, गोल्यात , १ गुर १४६ ) ।
  र्शिष्य । हेल्स राम≂लम् ।
  (इस् )
  हित ह [ दे ] चारत कीर का बातरायत : (पर्स २ ) ।
  'दुवी [ समें ] गहा, गा। (हे २, ३० , हात्र ,
  मुग्तिकर)। सी न्यहाः (हित्र, ३४)।
  दितिमा ) सी हि ] मेटी, मरी, करीड़, "बहीबाररीय
  इंहरिया ∮नवापुराध्य जरा दिवाराक्ष" (अस्म ;ृसुम
 13, 3, 8 1 1
ाहरी को हिंदी ५ छाने, मजा, बस्ते, (३ ३, ८४) ।
· २ मेरी, मेरी , (मी, ३८)।
 गहुड कुंब्ले [ गर्दस ] गरात, यह, सर , (ह ६, ३०)।
   थाहम हुं [ 'बाहन ] रावण, इगारन , ( रुना ) ।
 गहिशा ) सी [दे] गही, सहर ; ( मेर केंद्र ही :
 गद्दो ∫ हेर, ≂१, सुरा २६२ ) ।
 गट्ट व [दे] राज्या, विजैता : (देश, ⊂१)।
ंगढदेशाधड≕स्∤ारकः (हेर, ९९२)।
 गढ पुंची दि । मट, दुर्ग, दिखा, बोट ; (दे १, ८१ ;
   एग २४ ; ९०४ ) । स्रो—गदा; ( हमा ) ।
 गढिय वि [ चटित ] गहा हुमा, बटित ; ( हमा )।
 गढिय वि शिवित । १ गुँवा हम, निस्द ; "नेहनिगड-
   गरिकार्गं" ( द्वा ६म्६ टी ; पर्र १, ४ )। १ स्वित,
  रुनिस्त, निर्मित; (छ२,१)। ३ छइ, बालक;
   ( सावा २, २, २, ४८६ १, २ )।
```

गण सह [गणय] १ नितना, दिनती करना । २ झाहर

ब्यना । ३ मन्त्रात्त ब्यना, मार्गुन ब्यना । 🔻 पर्यंडोदन

द्रगर । गयह, गरेह , (कुमा ; महा) ! दह---गर्मन,

93

गर्नेतः, (प्रवादः, हेद् ५४४)। इच्चानेयस्यः, (डा १११)। गण ३ [गण] १ वट्ट, रहराय, यद, बीह , (की ३ ८ ; कुमा, प्राप्तु ४, १६: १४१)। २ मञ्ज, सुमान प्राप्तान म्बराग वर्षे नापुर्वे वान्त्रम्, (इस)। ३ उन्हा-गाप्त बीद मात्र-गन्द : (सिंग) । र शिव का धनुपत् (पसः ह्मा)। ६ मन्द्रं का सद्गादः (संप्)। भी म [तस्] मनेदरः, प्राः, (सुप्र १,६)। 'नायग ३ ('नायक) गदश मुक्ति ; (फाया), १)। निहित्र[नाय] १ गर का सामा, गर का सुनिया: (भूर १, १०)। २ गणरा, जिनन्तर का प्राप्त निर्म :(परन १२, ६.)। ३ प्राप्तमं, सुरि : (सर्च २३)। "मात्र पु ["मात्र] स्थिष्ट-स्थितः (गडाः)। भाष 3 [भाज] १ सम्बन्ध गळ ; (मा ७,६) । १ मेनार्च ; (भार ३, यन)। "बर् युं ['पनि] १ यय का स्वामी ; १ गरेग, गजनन, निक्युतः (गा ३ वर्षः ; गड़ा)। १ जिन देश से मुख्य निम्म, गणरह ; (निम्म २)। 'खामि पु[स्यामित्] यव का सुनिता, गण-थर;(डा १८० डा)। दिरपु [घर] १ जिन्देर का प्रधान शिम्म ; (गम १९३)। २ मनुधन शनाहि-हुए-छन्द्र का पारच करने वादा जैन गाउ, प्राचार्य वगैरः : "निर्माननं गरार्गः" (मास्य : पर २०६)। "हरिंद सं ['घरेन्द्र] गाउरो में भेट, हारान गाउर ; (पटन ३, ४३; ६८, १)। "हारि वुं ['बारिन्] देनो "हर ; (स्य २३; सर्व १)। "जिलेब ई ["जिलेब] स्ट हे नम हे निर्देश करने बाडा; (स ६, १)। "विच्छे ह्य, भवन्छेद्य, भवन्छेयय ही [भवन्छेद्दक] समुजान हे कार्य की पिल्हा करने बाद्धा साधु ; (माना २, १, ५० ; श ३,३; इन)। विद्यह पुं [विपति] १ विक पुत्र, गरान्त, गोगः; (गा ४०३; पामः)। १ जिल-देश का प्रयान गिष्टा ; (पान २६, ४) । गणग हुं [ग**नह**] ध्रा^{लेगा}ं देखी, स्वदिस्यान **ह**ा २ मंद्रारी, नायद्यानिकः; ञ्चनधरः; (ः (दवा १, १ म्**जब** न ा, सम्बद्धः (बर १)। ्चित्री, ग्रेस्स, ग्रेस्स ; (हुन १, स्थादार

: इस र, र) ।

समा ५ [सर्म] ५ जीट-विक्रास्त्र , हा स्था ३६ त्यं त्यण् एकाम्यम् , हे हा व ४)। े श्रेष्ट, करणायाच्या । काणा हे ४ . इ.स.च. करणाह भीगवा (रिकार ४ व ४) सहा हो [विसी] मर्ज्यात्म कार्यः सार्थः रिक्ता विकेषः । सारा ५ ७ हे । सार्थे F (Tagg) alom so the tre so wheth arm of a south १. ८ । ज्ञारि जिहेर्स हेर्स सम्बद्धाः प्राप रहत पत्र दरेश पहारक, १३० रेन्स वि िस्त्र विकास के स्टब्स के क्षेत्र के इस्तर राभयाण बच्चा वर्षेत्र । राज्य वर्षे आस्त्र य िसाम विशेषित संस्ता का का बा करेंग (वर् र रह सिका कि एक को है सह सह [यती] र्रार्टिंग को ूर सुर ७१% । यह रीति मी [राष्ट्रकारित] ५ सलीवर में उपनि । स. १३ ४ ४ यक्तीतथ है। [स्युक्तानिक] कर्नार में हिन्हें दार्च राष्ट्री है दर (सब २, ३३ १) इस प्रधायह , 14. 62 54 54 423 15 स्मिर संस्थार है। बाहर, सुन १ सार, विस्म राजन, । ब्राइट (१३३७) । रिमारत पृहिंगर्भत है जाल का जिल्लाक्षण जीरत , " द्वितासकरमासम्बद्धाः । । भारतसम्बद्धाः बंग (रूपा ५, य--पत ५३३ , राज)। भिनम / दि [सर्मित] ९ टिप्स सर्व पैस हमा टी मिलाप विद्यानीत्रकः, (हे १, १०८, प्राप्तः, राज् १. १ । १ मृत्य सन्दर्भ देविसहस्राज्येन्द्रिन् गन्तियम । इस . पर् १३ गिनिन्द देलं गिनिस्त , (यापा १, १० च्या वर्गमणीय देल गम = पन्। 135 11 स्म सङ्ग्रिम् विश्व तथा, पविकास, बहुना । १ जानना, रसम्बर्ग । ३ प्राप्त वरमा । सका-विदेश, (बुना) । वर्ष-गम्मा, गमिला, (१ ४,३८६)। वत् --गम्ममाणः । १३००) । गह---मंतुं, गमित्र,मंता, संतृष्ण,पंतृष्णं; (इस . पट्, प्राप्त; मीत, क्य;) . सहब, गडिब, गहुब (मी); (हे ६, २०२; वि ४=1; नार -नानतः ४०) , समिष्यि, समिष्यिणु, संच्यि, १ मंचिमु (भा); (ब्रुमा)। हेह -मंतु : (इस: धा 🔐 🕫 —ांनद्य, गमनिवन, गमणीओ; (राजा 人 有, 称 有统治

समारक (समार्थ) भेर जाता । अध्योग प्रान्, प्राप बरम, राम्परम । रहेरिया, (राष्ट्र) । 'रामा' रामा हा रिके क्षेत्र " (त्य हो । क्ष्री-च्येत्र हि , हरूरी । रूप-गर्मन, तरह १०१। । रह-नामिद्रान, (हि) न्त---गनिनग्राति ३०० ।। गम ६ [गम] १ तम्युर्गार याण ((दर १०० दर्ग) १० बरेग , (राम १, १२) । ३ वरण का मुख्य पार, एक राज का पान, रेजनका लागाई जिल्ला हर्। हे हे ६, ६ हिन अपर , मन ११ व स्थापन, रोका , (दिने १९३ ११ । देश, इन्द्रा समान । विम्तु करिन्तु हु असी, शतक । 17 131 समय है। [समक] देन्द्रह, निज्याचर , ("हेरे १५४) । गमण व [गमव] रजव, राँउ : (८०, प्रयु १३१) । १ मेरन, बार , (गाँड) १ ३ वरणपान, उत्तर , ४ पुरुव । सीर स्वरूप्यः (१७४) । गमापा) रशे [गमत] यन्द्र यदि । । । गोर्थन्यस्या । रामणा ्रे त्या र, ३०० "पापर्वता पर्यस्ता रमण्णा" (my 1, 1 -- 77 25) 1 गमणिक्त देनोः गम=१२ । गमणिया म्यो [गमनिका] १ गंतिक दरक्यन, दग-दर्गन , (शतः। १ गुडाना, मनिकार , "शानामित्रा गुरद दशासी^त (दश ५५% टा) समजी हर [समनो] १ विच-विवेद, जिलेंग्रे प्रसाद है माराम में बनन दिस जा गहना है ; (बाबा १, १६---पर १९३) । १ जुन, "सम्बंधि जमा जल विमालिनी उत्त-रह रामगीको धरगारिती" (सुरा ६९०) । गमय देन्हें गमग , (वित २२ १३)। गमाय देवी गम = वसर् । रम धः ; (सर)। गमिद्वि [दे] १ मर्लं : २ गृट , ३ म्बल्ब , (पर्)। शनिय दि [गमित] ९ गुजरा हम, भितिः : (वड्ड) । २ शरित, मेरित, विदेति : (विते ४४६) ४ समित्र न [समिक्त] राज्य-वितेष, वहुत पा; बाजा राज्य ; "अंग-परिवाह सीनाँ सरेगालं च चप्रशक्ते" (तिने \$45 ; x} x) समिर वि [सन्तृ] बाते वाला; (हे २, १८४)। ि देशो सम≕ग्य ।

'मारिणो सी ['मारिणो] वनपनि, शिरुपः

[स्मेषः

(पारा १-पर ३२)। भुइ ५ [भुत]। तः पति, निवन्तुव ; (ग्राम) । १ यतः निर्मे । (ग "राय पु ['राज] प्रान हावो, थेर हमा, (१९ ह 'बइ ५ ['पनि] गनेद था इस्ती, (बार १ युता २८८)। °वा वुं[°वर] प्रान (पो। Г [वरारि] निंह, नार्र्त, बनग्रह (प्रान्त १०.४ वर् मो [चयू] हवेना, हनिना . (१३)। स्यो [वायो] युक्त वरीर महान्यहा का का के (य ६) । °समय ९ [१२मत] रायो हो मु^{र्}। हे खुहुमाल ९ ['सुहुषाल] एड प्रनेद के हैं। मह में मुन्द्रश्वत जैन नारु विगेष , (झन, परे)। १ [परि] धः, पन्यन्तर, (भी)। परेष्टि हि हिलाह, मगान , (पाम) । गय पु [गइ] रोग, विमारी , (मोप , प्रना १^{०८)} गयक पु [सत्ताङ्क] देश का एक जाने विकास है, सवद पु [सजिन्द्र] था श्रवा । (गडा)। सवल व [समन] सपन आहारा, आहर , (हें १ त गडड) 1 'बाइ पु ['सनि] एड गात्र-रुमण, (१३)। र [कार] बन्द्रास में बहुत बहुत, बहा, दिहार । (पुरा २६०) । "सङ्ख पु ["सण्डळ] एड राज"त गयगरह पुति सेन, सह, बारल (द २, 🖘)। सम्बन्धि पुर्वे सम्बन्धि विषय वत इ तह तह है (739 4, 42) 1 गयन्ताद्व हे हि दि चित्रक, वेगमा (१ ६) शयमाङस्य रे वर् गुपा सी [गरा] लोहे का या पाताल क' प्रव निल्हा बुग्रन वा लाग्रे , (शव)। 'हर । [धा] र' (37 11) 1 मया मो [गया] न्यनम प्राह नगर भगर । । । । भार हि [चरर] दान कड़ा, ६४, १९७) । सर पु [सर] १ सि:स्थित, एक प्रश्त का अह के कहाति काम-पनिद्यं बतादि काला में है नह {{e=}} गरण के हे करणा ((१९७ ६३) । सन्दर्भ सन्दर्भ कार । शिव महार रेटाड , हे डि घरशा, माना, "मनाना प्रजार" (m'1) i

तिः (कुमा । । राज्य प्रशासिक है १ जनाँ योग , २ जो जाना जा सह ; (अर १२० , गुरा ६२६) ३ हमने बत्य, मास्य-र्शपः, । तुरं २, १२६ ; १३, १४४) । ४ ज्ञानं योग्यः, , बतर यथ स्थानी योर , (पुर १२, ६२)। तस्यमाण केच समक्ष्य । मात्र हि है , १ प्रिके अभिक पुनायास्य , (१ २, ६६, वर्) । र प्रा, मण दुवा, निर्दोह : १३ १, ६६) । गप हि [सप] ५ गत हुमा ६ (नुस ३३४) ६९ मर्ति-बच्न, गुत्तम दूबा, (द १ १६) १ ३ दिइन्द, जना हुम ्तार १ ० वस्त, इत् ; (उद ०२⊂ टो) १ ६ प्रास्त ; 'ब्राप्तानाना नुगर' (असु यह . ९००) । ६ न्यित, बदा रूक , "मत्ता । १३९ ६ । ३ प्रश्तिः, जित्तन प्रश्नेय किस श.(८४,१)३ ≒व्यतः, तम १,१,१)। ६ 4२८ इ९, (भेर) १९० न गर्रा, समय, "उराना सहर-ब तपुर्व रवत्रशिक्ष्या स्वर्ध (बबु, युव ६००, आवः) । गण्य ([प्राप्त) नामगद्गाः (बा६०) । "सर्य म [क्या] राम रहित, बाहरम, निरोद , (उद्य वर्षण दा) । पांपा, परे था [पर्निका] ९ दिन्हा, रोट , (मीर , क्षा २६, ४६) । १ जिल्हा की दिशा बना शाबद सी , क्रीत्तर्भाता । साम्यर क्षात्र रह, ४९) । "वाद fe [वर्षम्] पर, पृत्या , (पाम) । ल्युसद्देश वि [स्तुतिकः] सालग्रहाग दा अनुवत्य, सी अद्राप्तु , । दुवन ६६ सप १ [सत] १ इ.स. हब्लो, बुब्बर , (बयु, बीइ, જાપુ ૧૮ ક જૂપ કરે કાર શકાશ સાંગ્રેટ તેને સુધિ, स्वत्रात्रात्रात् (स्वत्)। व द्वा वयस्य वह र : ्राष्ट्र श्≈री)। द राष्ट्री दा लह सुरह , (पत्र्य at. a ja प्रश्न [पुर] नार शित्र, पुर क्य प्र प्रस्थ अन् हर्र अन्तर, (३३ १०१० वटा , वय)। कल्प, कम्म पुक्ति हो । ४५ थिए। १४ ४ थे ल्य रूप , (अंच २,॥ ४,३) । करन 1[कारत] ent का अस्तर (रूप)। संघ वि (संघ देश sir क्या क्षेत्रा । क्षाय १ [क्षाइ] गांगीला, क्या । लावि क्या दिन इक व्याद (रहा द ट्रा पुर क्ट प्रर. (पूस्त, १,१३)। विश्वतु [कार] एट स साथ एने वर्ग , (मूट १०१)।

समेस प्रशासनेसः। समाप्तः, (हेप, १८८)। सन

त्तवह ६ [सर्गिकस्पद्ध] क्रीक्ट, इंज्यूप्ट,

THE THE PARTY SERVICE STREET STREET, S

्री कर्-गार्खनः (१ ५१)। इस्स्-व्यक्तिस्थानाः र ९, म । मेर नगरिनाः (म्य ३, ०४)। हेर

र्विन्त्यः, का, ठ ३, १११ हे जारेहीपस्त्र, सरहर

त्तिव, बलहिष्यस्य , हिल्लास्य ; ३३६ : प्रण्य ३,९ । وم و [والأم] إسم و و الرابع و ا

क्ट्राच्या रे की (वार्ट्या) केन्द्र, स्ट्रान्ड (सर. १० टे.

हरूना । होते , हर ³, ९ । स्ता को [गरी] केन्य, रूप ; (कर)।

क्टिल के (कार्रित) क्लिक्ट हरेले ; । वं १३ : ४ ३३ :

्रासिस वि [ह्रांस] व्या हुण्या व्यक्ति : (१ ४,९९) ।

हिति किंग्रों के इ. इ. की (इ. १०)

नित्स हंसी [रागिमन्] हरने, हरने, हरने, हरे हैं है

37 : 5- 33 9-611 तित्व देश सम्ह । सम्बद्ध , सम्बद्ध , (म्रू ; स्टें) ।

不能到到一方,四月 हिंद्या में [बही] किया, प्रयान स्टूटिंग , (ब्राय १६९ -

الملاجئ لآفاء والمنتصدين يتنيعتنى اليت عادد ا

्रस्म है [गुल्स] हर, बटा, बटन, (हे १, १०६ व

हाल मर (गुरुकाय) कु बरन, बर बरन ।

المناجعة بالمناجعة المناجعة ا (A 1931)

Enter the man state of the same of the sam (For 388) 1 क्या १ कर्स्युक्तरहो ्बर्टक्या २ व्हे क्ष्मात्र । क्षेत्रव्यक्षात्रम् क्ष्मा । स्ट्राप्ट स्ट्राप्ट

रूर्वि [गुर्लीस्त] बहा दिन हुमा; हि ६,३०३

THE [THE [THE] SEC. STATE STATE : [\$ 4.500. 而行一門

कुरुवा देने गरम : "स्पार प्राप्त मार्गिक स्टिन्स्ट्राप्त

इस्टबंग रहत ;(नित्रः; सर्दर निर्म) । जननित्रः । (रिरे । न्य न [रिय] स्मार्टिंग, उत्तर के प्री

पूर्ण करा (एक १०, ११०) अ, १६/१ द्वय हैं

िरुप्त क्षित्र क्ष्मिः (स्त्र १९,१०) चुह हुँ [कहुरे] के के एक प्रकार्क क्या ; (सा नि

بهدوندخ [بهجوري] ، أحبي عبيد : ، عجبة

इंग्रह रूद राज हो जन ; (च्यन १, ३)। والمسترخ [المجترع] المرتج المجترع والمجترع والم والمجترع والمجترع والمجترع والمجترع والمجترع والمجترع والمجتر

१) १ व प्रकारित स्मार क्रिक्स हा राजा رِيْدِ (الْمِثْمُ =) () مَمْ مُرْدُمُ مُنْ اللَّهِ اللّ grigar 34. (27. 4, 4) 4 . 4 grigar 35. 4.

त्रमः (त्रमः १, १)। किंद्र हं [केत्र] केंग ्यस्य : (नव)। इस्य, दियं हैं [व्यव्ही]

क्य पत्री है किए वर्षी प्रता । (ग्रम)। १ वर्षीय हरू हु हेर स्पेत सिंग : स्टेंग्स सेन : रेक्सि:

ल (ते)। उन्हरं वर्गः प्रतस्युद्धः (इत्)ः चला र [फ्राइ] स्टाप, क्लाम्सेर : (क्लॉप

न्तम व [मिन] माम्परितंतः (वेस्त्रीति) विवार हिंदिरात] रामनियोर, विनश यह हिन्हें है and the real first of (5. 30) (the real of

सब्देश्य वर्षे । ज्ञान

而是[项]·亚亚, 项门中南部, بيسر وم و عدم ، تعلقه وميه و الموسم مد

وُمَّ ا وُ سَدِّ أَسْدِهِ ، وَوَيْنَ ا الْمُعْلِمُ مِنْ الْمُعْلِمُ ، وَمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُ क्तून केरा सम्मेत्र स्थेतम् म्युरम् 京作三年 300年 南南南

77 12 1 77, 17 - 17 (THE TOTAL) والمراع والمرا

बन्दर रेपमे रेर दे बरेस, म्या निर्देश के हिंद

三十二 ्रान्द्रे 🖟 🗁

(京京] [中京]

```
358
```

```
गण्डरक ईन दिहै । सर्वतक कण : 1 ---
 मलग्रदेगो गलअ (कह १, १) १
 रास्त्रम देला सिया । यत्या । (हे ४, १४३ । मनि )।
                                                     326 ) 1
                                                    बान्सरुख देखी बान्सर्थ । कन्नार्थाः , (पर्)।
 गलम्थण न [ शेपण ] १ चेपच, व्हाना ; २ प्रेरण ; ( मे
                                                    मन्दरफोड पु [ दे ] श्महर, बाव-भित्र ; ( रे ६,८)
   ४, ४३, दुल २८)।
                                                   स्टारोन्ड न [ दे ] बर्ड, बार-रिनेर ; ( निर् १)।
 गलरणिय वि दि । शिवन, पेंस हुमा ; १ वीन ;
                                                    शय पुर्वी [ शो ] वगु, जानरर : ( गुप्र १, १, १)।
   ($ 2,50)
                                                    गवक्य वं [गवाश ] १ गाल, वात्रल (ई
। सारस्थान्त्र पु 🕞 वेसन्त्रन, हाय स मला वरहना, (वासा
                                                     पद्द, ४)। १ स्थान इ. मार्टिश स्वीत
   1, 2; 94, 1, 3-97 (3)
                                                     (जीवर)। 'जाल व ['जाल] १ म्यांगि
 गलन्यन्त्रिम [ दे ] रेगो गलन्यन्तिम , ( से ६, ४३ .
                                                     इस , (बांह १ ; सम )। १ जानी दना रहर
   =, 44 }1
                                                     (धीर)।
  मारम्या यो [ है ] प्राचा ;
                                                    गयच्छ ९ [ है ] बाच्यादन, दक्ष्मा , ( राय )।
    " गार्याची चित्र भुरागरिम भारता न दण इति सहवाच ।
                                                    गयन्त्रिय वि [दे] ब्रान्टादिन, रहा दुमा, (त
      गद्दराजालयन-वा, गरिग्राचं न ताराचं "
                                  ( हा ज्यूट हो )।
                                                      जीव र है।
                                                    गयल व [हे] यान, तृथ ; (दे १, ८१)।
  गलन्धित वि क्षित । १ वेरियः ( सुरा ६२६ ) ।
                                                     समय पु[समय] में। की बाहिन हा जा गती गुनि
   पका हुमा , (दे १, ८०, पुना ), १ बाहर निराला हमा.
    (पाप )।
                                                      ( 972 9, 9 ) 1
                                                     गयर पु [ हे ] बनम्पनि-विशेष , ( वश्य १-न्य १८)।
   गरप्रदाभ पु [ दे ] प्रेलि, क्लि , ( पर् )।
                                                     स्वल पु [ सम्रल ] १ जर्गती प्रा-विगेष , मार्ग र
   गतावा दता गितावा , ( ताट-चीत १४ ) ।
                                                      (यक्ष == १)। २ न महिर का विग, (
   मन्ति ) हि [मन्ति, "का ] वृश्तिल, दुर्वेस , (शा १२ :
   गलिम । गुरा २७६ )। निद्द पु [ गर्दम ] मजिन
                                                      १७, दुस ६२ )।
                                                     गया मी [ गो ] गैया, गाव ; ( परम ८०, ११ )।
    गररा , ( ३९ २० ) । बहरूत पु [ बळोधई ] दुर्शिनीन
                                                     शवायणी मो [ शवादभी ] इन्द्रशरणी, क्ल्पिके
    चेता (क्यू)। सम्म पु [स्य] दुर्म योहा,
    (वन १)।
                                                      (देश, =१)।
                                                     शवार वि [वे] वैशा, छोट गाँव वा निराणी, (गर)
   गलिय वि [ गलित ] १ गना हवा, विका हवा .
                                                     गवालिय न [गयालोक]यी क विश्व में भवा गरी
     ( बाग )। २ सानिन, प्रसानिन, ( बुमा ) । ३ स्मानिन,
     र्पान , (मे १, १)। ४ लट, नाग प्राप्त, ( लुग २४३,
                                                      1, 3 ) 1
                                                     विक्रि रि दि वे सराहा, निवा । ( पर् )।
     मय )।
                                                     गयिद्व हि [ गयेपिन ] सात्रा हुमा , ( मृत १६६,("
    गरित्र दि [दे] स्पन, बाद दिया हुआ , (दे ३, ८५ )।
    गलिन देशा गल ≈ नल ।
                                                       स ४८४, शस )।
                                                      गिविन्त व [ दे ] जान्य चीती, गुद्र मिती , (रा ६,६
    गरित वि [ गरिल्य ] निम्ना विक्रमा, दशक्ता, "बहमान-
                                                      गरेघुमा लो [गरेघुका ] केन मुने मण हो ला
     र्ष्ट्रायमेच " ( था १४)।
    शाहुन्त देशा गरान, ( बध्यु १, यह )।
                                                        (হল))
                                                      सर्वेन्टम क्यो [ सर्वेन्टक ] १ मेप, मेड , ( ब<sup>रह )</sup>
    गरीर्द भी [गद्यों] क्ली शिव, विवाद , वृत्य ,
    गणीया ( हे १, ११४ , जी १० ) ।
                                                        मीत } ३ ६ गौधीर येद, (≣ ७)।
                                                      गयम नह [श्येषय] यंत्रका इन्ता, मोजना, मा
    सम्बद्ध वे [ सम्बद्ध ] १ सम्ब, स्थान , ( द १, ८१ , उत्ता )।
                                                        वनेग्यः (सराः वर्)। भूदा-गर्नेक्षियोः
      र हाथा का गाउटवर, बुध्नटवर , ( पर )। जिस्स-
      रिया बी ( भ्रमृतिका ] गण का उत्तरन , ( जीत ) ।
                                                        क -गरेसंत, गरेसचंत, शरेसमाण, (1
```

ग्रा४९० ; सुर ९, २०२ ; याचा ९,४)। हेह---वेसिचए; (स्य)। सहत्त् वि [गवेपयित्] गोल सने वाला, गवेपक ; हा ४.२)। सग दि [गवेपक] कार देनो ; (दर प्र ३३).। सण न | रावेपण | रतेज, मन्वेपण ; (मीर ; सुर ४, 13)1 त्रवाया र्रमा [गविषणा] १ सोव, मन्वेषण; (मीव; त्रणा र्रमुग २३३)। २ शुद्र निकाको सादनाः मीप ३)। ३ निजाका प्रद्यः (स्र ३,४)। तय देनो गयेसग; (भनि)। ताविष वि[गवेषित] १ इसरे हे गोजन इमा, रद्वारा श्रीत किया गया ; (स १०७ ; झोप ६२२)। २ गवेषित, मन्वेषित, सोबा हुमा; (स ६८)। से वि [गयैपिन्] छोड रुर्ने बला, गरेपह; (पुन्ह •)1 सम दि [गवेपित] सन्वेपित, गोवा हुमा ; (सु , 126) 1 पुं[गर्व] सन, बर्दश्य, ब्यमिमान; (मग ११; २१६)। र न [गहुचर] बेस्टर, गुहा ; (स ३६३)। ४ दि [गर्चिन्] धनिनानी, गर्न-दुक्तः ; (था १२ ; दे ٤٩) ١ हि दि [गर्बिष्ट] विशेष मनिमानी, गर्व बरने वाला ; 9, 92=) 1 य वि [गर्वित] गर्व-पुष्ठ, जिस्को मनिमान उत्पन्न हुमा हि; (यस ; सुरा २७०) । र वि [गर्विन्] महंसरी, मनिमानी; (हे ३, १६६ ; ४१)। स्री-री; (हेरा४१)। प्रस्] खना, दिग्रहना, मद्रय स्टना । ग्लाः ४, २०४ ; पर्) । बरु—नासंत; (दर ३२० टी)। । न [ग्रसन] नतर, निग्टना, (स ३१७) । प्र वि [ग्रस्त] मनित्, निगटितः (इमाः सुर ६, ; द्वरा ४०६)। [श्रह्] १ प्रदूष करना, टेरा । २ जारना । गेरेशः

ति १=६; सूम १, ४, १; १, १, २)। इ---गहीकत्र, गहें अञ्च ; (स्दरा ७० ; मन)। बाह पुं[ग्रह] १ ग्रहण, मादान, स्वीधार ; (विने ३७९ । पुर ३, ६२)। १ सूर्व, चन्द्र बगैरः ज्योतिक देव : (गडड ; पद्ध १, २)। ३ वर्ष का बन्ध ; (दस ४)। ४ मत कोरः का मावनग, मावेग ; (इना ;सुर २, १४४)। १ गृद्धि, बासन्ति, तत्त्वीनता ; (भावा)। ६ संगीत का राप-विरोप ; (दन २)। 'स्रोम ५ ['क्षोम] राचन बंग के एक राजा का नाम, एक संकेग ; (पतन १, २६६)। 'गज्जिय न ['गर्जित] प्रहों के मंचार है होने वाली भावाजः (जॉत १)। भिहिय वि [शुहीत] मनादि से झासान्त, पाग्त : (हुमा ; हुर ३, १४४)। 'चरिय न ['चरित] १ ज्योतिग-गाम ; (वर ४)। २ ज्योतिस्ताम द्यापीडाल ; (सन ८१)। दिंड पुं ['दण्ड] दण्डाकार प्रद-पंक्तिः (मग ३, ७)। "नाह वु निष्य] १ सूर्व, मुखः (था २५)। २ चन्द्र, बन्द्रमा : (स्व ७२८ हो)। "मुसल न ["मुराल] मुगुलाहार प्रहर्भितः ; (बंत १)। सिंघाडग न ['ऋदुनरक] १ पानी-छत के माकार वाली मह-पहिस्त ; (मग ३, ७)। २ मह-युम्म, महकी जोड़ी; (जीत ३)। भहिच वुं [भिचिष] सूर्व, सुरत्र ; (था २८)। गह न [गृह] घर, महत्त । "यह दुं ["पिति] गृहस्य, गृही, संसारी ; (फडम २०, ११६ ; प्राप्त ; पाम)। 'बर्गो सी ['पत्रो] ग्रिपी, स्वी ; (स्वा १२६)। गहकान्होल पुं [दे. ब्रहकान्होल] सद्, मद-विशेष; (दे २, ८६; पाम) । शहराह कक [दे] हर्षे से मर आना, मानन्द-पूर्व होता। रङ्गदर : (मनि)। शहूज न [श्रह्म] ९ मारान, स्तांधार, (मे ४, ३३ ; प्रान् १४)। १ मारा, समान ; १ मान, मनरोप ; (मे ४. ३३)। ४ राज्य, भावाज; (भावा २, ३, ३; भावन)। १ प्रदूष करने याता; ६ इन्द्रिय ; (विने १७०७)। च्छानूर्वं का उत्साय; (सम १६, ६)। 🗢 प्राप्त, जिसका प्रहणक्ति वाय दहः (स्त ३२) । ६ ग्रिजा-क्रियः (मान) । गहण न [ब्राह्ण] प्रह्म कराना, मंगीवार कराना ; "जे मानि बंगदेरमदरसुर" (इसा)। राह्या दि [गहन] १ दिनिह, हर्नेप, इर्ग्न ; "बाने मरा-इदिएवं कोटीग्यूटीम मॅल्ले इन्य" (ये ४६):

17:51

६)। क्र--गर्दनः (धा २७)। मह--गरायः,

थ, गहिकण, गहिया, गहिउं; (ति ६६१; नाट;

. "नलगारगुलिखिगहचा" (गउड)। २ वन, माडी, धना काननः (पात्रः, सग)। ३ वृत्त-गड्डर, वृत्त द्य कोटर, (विश १, ३-पत्र ४६)। गहण न दि । निर्वल स्थान, बल-रहिन प्रदेश; (दे २, < : प्रापा २, ३, ३)। २ वन्धह, परोहर, गिरों , (सुरा १४८)। गहणय न दि] गहना, माभववा , (भुता १६४)। गहणया सी [ब्रह्ण] बर्क, स्वीचार, उरादान, (बीप) । शहपी सी [प्रहणी] सुराशय, गाँड़, (पनह १, ४ : मीप)। गदणी मी [दे] जवरदस्ती हत्य की हुई भी, बाँदी , (दे 1 (08 ,3 8 , 37 ,5 गद्दन्यि ३ [गमस्ति] तिरव, निया ; (पाम)। गहर ९ [दे] १८३, गीप पत्ती , (दे १, ८४ , बाम)। गहयइ ५ [दे] १ बामील, गाँव का गहने वाला , (दे २, १००)। २ चन्द्रमा, शींद, (दे२,९००; पास, दाम १६ }। गदिश दि [दे] बळिन, सोचा हुमा, टेवा, दिया हुमा ; (दे 3,52)1 गटिम वि[स्दीन] ९ जात, स्किन ; (बीप ; टा ४, ४)। ६ पदश दुमा;, (कद १,३)। ३ ज्ञात, बराज्या, विदिन , (टम १ , पर्)। মহিম বি [ফুর্] সাধ্বন, কলান ; (সাবা)। गरिमा सी [दे] १ काम-मांग क लिए जिसकी प्रार्थना जाती हो वह भी ; (दे २, ८४) । १ शहल करने दोव्य Pf, (47) 1 गरिर वि[गमीर] करन, कर्मार, मन्त्रच । (दे १, १०१ , साप्र ६२६ ; साथ ; नतर ; भीत ; पाप)। गरिल [व [ग्रहिल] भृगाद से भावित, पायल : (**47 % e**) i गदिलिय) दि [दे, प्रस्ति] चावेग-पुत्रन, पणव, अस्त्र-महिल्ल }क्नि , (प्राम ११३, ४३ ; पर् ; आ १२ ; टा ६६० टी ; भी) 1 गरीत्र देशो गदिव=मूर्गत ; (था ११ ; स्कृ ६८) । गद्दीर देखें समीर , (इ.स. १)। मदीरिम व[मानीर्थ] गरण्डं, 'सनीयन ; (हे १,

गहीरिम दुनी [गभीरिमन्] गहरई, पनंद 1 (388 गहेअव्य हेदसी गह=प्रह् । गह्चा (भग) देखो गह≔बह्। गर्दा,(र बा }सह भि ९ गाना, मालापना ।, १^{९7} बाझ) ३ ग्लाघा करना । गाइ, गामहः (६ ग्र.): र्वन, बार्जन, गायमाण, (ता ४४६; रि 🕫 ६४,२४) 1 स्वरू—गिउजंत ; (यरा : ग !^ग २१ ; इर ३, ७३) । संह- गाइउ , (सः)।

गाञ ९ [गी] बैल, राम, साँद , हि १, १। री गाञ्च व [गाञ्च] १ गरीर, देह , (मन ६०)।। मनपद : (मीप)। याम दि [गायक] गाने शता : (इम)। गार्थक पु [बचाक्रु] महादेव, गिव ; (इम)। गाञ्चण वि [रायन] गाने बाला, गरैया, (पुन ध बाइअ वि[गीत] १ गाया हुमा । ^{शहरोग ।} गीर्व (सुत १६) । २ व् गोन, गान, गर्ना ।। यादआः सी [शायिकः] गाने वाती सी; (री न्याइर वि [गार्थक] गाने वाला, गरेंगा, (हर)

बाई सी [बो] गैवा, गी : (ह 1, 14=, 1 वा २७१ : सुर ७, ६६) । सांड) व [सन्यून] १ कोम, क्षेत्र, हे गाउम र प्रमाय अमीन। (पि ११ । , भीप , १६ गाउद्भ विने दर ही) । १ हो बान, ंव 13) (गागर व [दे] भी हो पहनने हा दम-रिशेन शनी में 'धापरो' , (फाइ १,४)। २ मन्य-रिंग गागरी [दे] देशे गायरी , (प ११)

यागित पु [गागित] एक जैन मुनि , (हा !)

बारोज रि [दे] मध्य, मालोहिन , (दे ५)

यागेक्ता सी [दे] नरोग्न, दुलहिन , (दे दे, गाडिम रि [दे] वितुर, विकुतः , (व २,^{८३)।} बाड वि [बाड] १ बाड, निरिट, मान्ड ((१६) ब्द्)। २ सम्बद्द दृद , (सुर ४,२३०।। ३ ई. क्षीसव ; (रूप)। गाण व [गान] गॅल, गना, (हेर.^{१) ।} बाण वि [शायन] धरेया, योत-प्रवंग . (१६)

गणिञ पुं[गाणङ्गणिक] छ हो मास के मीतर एक न्गण से दूतरे गण में जाने वाला सानु ; (बृह १)। सो दि ग्रादर्गा, वनस्पति-विशेष, इन्डवाएगी; २, ⊏२) । दियो गाहा; (भगः, पिंग)। वि [गाध] स्ताप, भ-गहरा ; (दे ६, २४) । पुं[ग्राम] १ समृत्, निरुर ; "चवला इंडियगामी" (२, १३८)। २ प्राति-समृद, जन्तु-निस्तः (विसे ६६)। ३ गाँव, वयति, माम; (क्यः, गाया १,१८; भीप)। ~ इन्द्रिय-समृह : (मग; भीर)। "वांडग, "कांडय पु रुण्टक] १ इन्द्रिय-समृह रूप काँटा ; (मग ; घीप) । २ नों का रुच भाजाप, गाली ; (भाषा)। "धायग वि धातक] गाँव का नाश करने वाला ; (पह १,३)। गद्धमण न ['निर्धमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, শা; (ৰুন)। 'ঘন্ন বুঁ ['ঘর্ম] ৭ বিষয়নিলাৰ, ।य की वाल्छा; (टा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव ; ३ स-प्रयुति ; (भावा) । ४ मैयुन ; (सुम १,२,२) । १ दः रूप वगैरः इन्द्रियों का विषय; (यन्द्र १,४) । ६ गाँव यमं, गाँव का कर्नव्य ; (टा ९०)। 'द्ध पुन ['र्घि] या गाँव। २ उत्तर भाग्त, भाग्त का उत्तर प्रदेग; (निवृ t) । "मारी को ["मारी] गाँव सर में कैलो हुई विमारी-रेंग ; (जीव ३) । "रोम पुं ["रोम] प्राम-व्यापक विमारी; (२)। "यह पुं ['पति] गाँव का मुखिया ; (पाम)। गुग्गाम न ["ानुप्राम] एक गाँव से इसरे गाँव ; (मीप)। यार वुं [भवार] विषय : (मावम) । रउड) पुं[दे] गाँव का मुखिया; (दे २, ८६; रकड 🕽 वृह ३)। र्वतिय न [प्रामान्तिक] १ गाँव की गीना ; (बाला)। वि गाँव की गीमा में गहने वाला ; (दया 1)। ३ धुं नेतर दार्शनिक विशेष ; (सुझ २,२)। मगोह पुं[दे] गाँव का मुसिया; (३ ३,८६)। 🖰 मंड पुं[प्राप्तक] गीव, छोटा गाँव ; (था १६)। मण न [दे रामन] भूनि में गमन, भू-गरेंग्र; (मग 1, 99) 1 मणह ॥ [दे] प्राम-स्थान, प्राम-प्रदेग ; (पर्)। मणि देखें गामणी ; (ह ३, ८६; पट्)। मणिसुव पुं [दे] गाँव का मुलिया ; (दे २,८६)। मणी वं [दे] गाँव का मुख्या ; (द २,८६ ; प्राला) ।

359 गामणी वि [श्रामणी] १ थेए, प्रभान, नायक ; (मे ७. ६०; घरा १; गा ४४६; पट्)। ३ पुं, तृण-विशेष ; (दे २, ११२)। गामपिंडोलग १ दि] मीख से पेर मरने के लिए गाँव का भाश्रय लेने वाला मीखारी ; (भाचा)। गामरोड वुं दि] छत से गाँव का मुखिया वन बैटने वाला : गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होने वाला; (? R. E.) ! गामहण न दि] ९ शाम-स्थान, गाँव का प्रदेश; (दे २,६०)। २ छोटा गाँव ; (पाम) । गामाग पुं [प्रामाक] प्राम-विरोप, इस नाम का एक सन्नि-वेग ; (भावन)। गामार वि [दे प्रामीण] प्रामीण, छोटे गाँव का रहने वाला ; (बना ४)। गामि वि[गामिन्] जाने वाला ; (गा १६७ : ब्राचा) । म्री--"णी; (कप्प)। गामिञ वि [ग्रीमिक] १ देखो गामिल्छ; (दे २, १००)। २ माम का मुखिया ; (नियू २)। ३ विपयाभिलापी ; (माचा)। गामिणिया सी [गामिनिका] गमन करने वाली सी : "ललिमहंमवहुगामियिमाहि" (मजि २६)।) वि [प्रामीण] गाँव का निवासी, गैंबार ; गामिल्ल (पत्रम ७७, १०८; विमे १ टी; दे ८, ४७)। गामिल्लुअ स्बी-- 'ह्ली ; (इमा)। गामीण गामुञ वि [गामुक] जाने वाला ; (स १७४)। गामेर्था सी [प्रामेथिका] गाँव की रहने वाली गैंबार स्त्री ; :(गउड) । गामेणी स्त्री [दे] छागी, मजा, बकरी ; (दे २, ८४)। गामियग वि [ब्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार; (बृद १)। गामेरेड [दे] दंगां गामरोड; (पर्)। गामेलुत्र) देखो गामिल्ल ; (पन्ड २०४ ; विपा १,१ ; गामेल्ड बिसे १४११)। गामेस पुं [प्रामेश] गाँव का भविपति; (द २,३०)। गायरी सी [दे] गर्वरी, बतर्गा, छोटा घड़ा; (दे २,८६) । "गार वि ["बार] कारक, कर्ना; (भवि) । गार वं [देशायन्] पःथर, पायाय, बर्चर; (यत्र ४)। बार न [अवार] गृह, धर, महान; (छ ६) । "त्य पुंग्री

िस्य] गृहस्य, गृहो; (निवृ?) । 'हियय पुंची ['स्थित]

308 २० हापी, २० रय, ८१ बोश और १३६ व्याहा हो ऐसी सेना; (पत्रम १६,१) । ४ इन्द, सनुह; (बीत; सुध २, २) । ६ गच्छ का एक दिग्ला, जैन शुनि-गमात्र का एक मंश : (भीप)। इस्यान, अगद्दः (भोष १६३)। शुम्मस्य ि [दे] १ मृष, मृर्च; (दे २, ९०३; क्रोप १३६ ; पाम ; बर्) । २ महित, पूर्व नहीं किया हमा ; (वर) । ३ पूरित, पूर्व किया हुमा; (दे २,१०३) । v स्थवित : १ संचितित, मूल छे उन्चलित : ६ विचरित, वियुक्त ; (दे १, ९०६ ; वड़)। शुम्मद देली सुम्म । गुम्मदद ; (ह ४, २०७) । गुम्मद्रिल वि [मोहित] गोद-पुस्त, मुख क्या हमा : (हमा ७, ४७)। शुस्माशुक्ति भ जल्याकच्य होकर ; (भीप)। गुनिमभ 🕅 [मुख] ९ मोइ-प्राप्त, सूद ; (इना ७,४७) । १ पूर्वित, सद से पूसना हुआ ; (बृह १)। गुम्मिश पु [गोलिमक] कोटवाल, नगर-रसक ; (ब्रोप 163; 466) 1 गुम्मिम वि [दे] मूल हे उलाग़ हुमा, वन्मूलित ; (दे २, 1 (13 गुम्मी सी [दे] इच्छा, घमिलावा ; (दे १,६०)। गुम्ह सक [गुम्ह] गूँचना, गतना । गुम्हरु (शौ); (स्वन ११)। गुपृद्द देलो गुजभः (ह २, १२४)। गुरुष देसो गुरु; "बो गुरने साईनी घम्म साईड वाउनुदियो" (पडम ६, १९४) । गुरु } ई [गुरु] १ तित्तक, विज्ञ-स्ता, काने वाता ; शुद्ध र (वर १; मणु) । ३ धर्मीगरेशक, धर्माचार्य : (विशे ६३०) । १ माना, फिरा बगैरः पूज्य सोग, (छ १०) । ४ मुत्रपति, प्रइ-विरोत , (१उम १७, १०८ ; कुमा) । t स्वर-विरोप, दो माता वाला भा, है बगैट हनर, विश्वेत पाने स्थारमा संयुक्त व्याज्यन हो ऐशा भी स्वर-वर्ष; (पिव)। ६ वि बरा, मदान्। (उवा; से ३, ३८)। ७ वारी, बोमेल; (व 1,1;स्मा)। द उत्हर, जनाः (स्मार, पर्; va)। कम्म नि [कर्मन्] क्यों का बीक वाला, वारी ; (पुत १६१)। 'बुल न ['बुल] । धर्माचार्य का सामोत्य, (रंबर ११)। र ग्रुव-गरिवार ; (उप ६७७)। श्राह को िगति] गी-विरोद, मारीपन से, खँक,-नीवा समन , (या =)। 'लाघय न ['स्टापच] शासनार, बन्छा बीर नुसस्त, (श v)। "सिन्धिल्या वृं "सहाध्यायिक] कु के बाई, |

(# Y) 1 गुरुई देखे शहर्द, (शाया १,१) । गुरुषो सी [गुर्यों] १ गुरु-स्वतीर सी; (र ११.१ २ वर्षोदेशिहा, शाहरी ; (इन ७१८ ही)। सुरेड व [सुरेट] तृथ-शिन ; (र १, १४)। गुल देवो गुइ≔पुर ; (छ ३, १ ; ६ ; बस ५६ ११४ । भीत) । गुल न [दे] नुज्यन ; (६१,६१)। गुलगुंख स्क [उन्+हिन्] देश देखा। र (हे ४, १४४) । शह-गुल्मुं कित्रण ; (मा)। गुलगुंछ रेमा गुलुगुंछ=उर्+मनर्। गुनगुनः. गुलगुल यह [गुलगुलाय] गुलगुल मात्राम इर वे गरवता । वह--गुलगुलंत, गुलगुर्ना १०३१ टी ; उत्तर ; पत्रम ८, १७१ , १०१,१०)। गुलगुलास्य । स [गुलगुलायित] समी 🕏 गुलगुलिय 🕽 (अ ४ , सूरा १२७)। गुलल सह [बाटी हा] बुगामर हाना। पुरार परे) । रह—गुललंत, (रुमा) । शुलिब मि [दे] बाँचन, विलोधन , (दे १, १०)। १ पूं बेंद, रूपुढ ; "बंदुको गुतिका" (यम) l शुलिया सी [द] १ दुनिस , १ गेर, बर्ल हैं गुन्छा ; (दे २, १०३) । गुलिया सी [गुलिका] १ वोली, गुरिका, (सी. १, १३ : तुम २६२) । २ वर्णंड क्य-वितेर . इच्य-विरोप : (घीप : बाया १,१---यम १४)। गुलुरव मि [दे] पुरेबा, गुल्म बाता, तम स्तुर्ग (भीर ; मर) । गुलुंच वं [गुलुक्य] नुन्छ, नुन्जा, (रे २, ६९)।

गुलुप्छ सह [उत्+नमय्] तथा हाना, उन्ना हर्न 1 (15, y 3) , perfe शुलुगुंखित्र 🖪 [उन्नॉमत] ढेंबा क्या पुण, र^{वर्ष} वि २, ६३ ; इम्स) । गुलुगुंचित्र 🕅 [हे] बार 🎚 सन्तीत : (हे र. ६१)।

गुनुगुंछ देखे गुलगुंछ=अत्+ित्य्। गुनुगुञ्स, (१४,।"

गुलुगुल देखो गुलगुल । अनुमाति , (भारी)। र गुलुगुलेंग ; (वि ११८) । गुलुगुलाहय }देखे गुलगुलाहम : (मीप : ^{का} 1-1 गुजुगुलिय हे स सह है।

च्छ वि [दे] प्रभित, धुनामा दुमा, हिराबा हुमा ; (दे 1 (53 ब्य इं [गुलुच्य] गुन्य, स्तरह ; (पाम)। प्य वि [गुन्मवत्] एक-कृत् बाटा, गुन्न-बुरा ; न १,१--पत्र ४) । रेखे गुप्प=गुर् । गुर्विः (का १४) । उप देनो कुञ्चलय । "सुरिवस्तरपतिराजें" (पॅरि) । लेया [दे] देते गोबालिबा ; (जो १०)। न वि श्चिनो म्याङ्ख, सूम्य ; (ध ३,४—पत १६१)। उ वि [शुपिछ] १ ग्हन, ग्हग, गाइ, निवेह ; (सुर ta; तप प्रश्∙; एक्ष १,३)। ३ नुम्बर्गे, र ; (दर =३३ टी) ; 'इक्टो क्यू क्यां, इक्टो महुद्दा दुक्काविनारं । कुछं संसद् जिसी, जरमन्द्रवङ्ग्वसुवितं (पर ४४)। इ दि दि चेलोका बना हुमा, मिली बटा (मिट्रप्र) : τε, a•) ι भी सा [गुर्विणी] मर्नदर्श स्त्री ; (सुन २७७) । देखे ग्रम । ग्रहर : (हे ५, २३६) । [गुड़] कार्तिकेय, एक व्यवस्त्र ; (फाम)। स्के [गुहा] गुय, इन्द्रगः, (यमः, य १, ३ः 209) [: वि [है] सम्बंद, यहस ; (फ्रम ; कम)। वि [गूढ] युत, प्रच्छम, जिस हुमा ; (फह १, ४ ; १०)। दिंव इं [दिला] १ एक मलाजि, हो-पः १ द्वीर-क्लिप का निक्सीः (स ४,१)। ३ चैन सुनि; ४ स्तुत्रग्रेरराविक दशा सूत्र का एक कम्मान्त; 33)1 १ मात देव का एक मानी कनदी राजा : R ter) 1 स्क [गुह्] जिस्सा, इत एका । वह-गृहंद ; (90)1 । [ग्य]ग्, किः,(देः)। । न [गृहन] जिस्ता ; (इन ७१)। रिदि[गूहित] जिस्स हुमा; (२४ ५८)।)(मन) देखे निग्द । स्ट्स ; (इका) । केर--∫गुण्हेजिसु ; (हे ४, ३६४)। ति [गेय] १ गाने यम्य, गाने टायब, गीत ; (द्य र—पत्र १८५० ; इटा ४४)। १ त् पेत, गतः, ब्हर्णनकुर्यान्" (सुर ३, ६६ ;गा ३३४)।

गठुत्र न [दे] स्तनों के कार की बस्त-प्रत्यि; (दे १, E3) 1 गेंटुन्ड न [दे] बन्तुह, चेजी ; (दे २, ६४)। र्गेडन[दे] देखे गेंडुब ; (दे २,६३)। र्गेंड्ई स्त्री [दें] श्रेष्ठ, क्षेत्र, क्ष्मतः (दे २,६४)। गेंदुज हुं [कल्दुक] गेंद, गेंदा, मेहने की एक क्लू : (हे 1, {*; 1=7; 5; 1, 121) | गेट्य वि [दे] मथित, निर्दाहित ; (दे २, 🖛)। गेड्डल न [दे] प्रतः का मानरपः (दे १, ६४)। गेडम्ब ति [ब्राह्य] ब्रह्य-योग्य : (हे १, ७=) । गेहण न [दे] १ दंक्ता, देका : २ दे देना: "तन्वोड-पर्य सर्वमना बालमाउ टर्¹ (दर ६४८ ही)। गेड्ड न [दे] १ पर्ट, डॉन, बादा ; १ यत, बन्न-सिग्रेप ; (इं. १ • ४)। गेड्री स्वा [दे] गेड़ी, गेंड सेडने की उक्ती ; (हुना) ! गेण्ह देखे गिण्ह। गेव्हर ; (ह ४, २०६; टर ; महा)। म्हा- गेर्हाम ; (हमा)। महि-नेव्हिल्हाः (महा)। बह--रीग्हॅत, गेण्हमाण; (हुर ३, ७४; विस १, १) । वंह-नोण्डिता, गेण्डिकप, गेण्डिय; (मग; रि ४८६: इनः)। इ-नोण्हियस्य ; (रन १)। गेण्हण:न [प्रहण] महान, उराहान, मेना; (टर ३३६; स 308)1 गेण्हणया श्री [प्रह्मा] प्रह्म, ब्राह्मन : (डा १२६)। गेण्हाचिय वि [प्राहित] प्रश्न क्याना हुमा; (स १२६: महा)। गेण्डिय व [दे] डए-मूद, लवान्काइक वस ; (दे २. EX) ! गेड देश गिड; (भीर)। गैरिय) के [गैरिक] १ के, टाउ क्य की मिर्ग : गेरुत्र) (छ ११३ ; ति :६०; ११८) । १ महि-क्षित, रल की एक अस्ति ; (पण १--पत्र १६)। ३ वि मेर रंगका; (कम्)। ४ पुंक्तिमी मान, संस्य मा का मनुस्यो प्रीवाजक ; (पर Ev)। गेलण्य) व [स्टान्य] ग्रेम, स्मिमी, म्हानि ; (सिं गेळ्न 🕽 १४० ; हा ४८६ ; मीर ५० ; २२९)। नेवित्त विश्विषक] १ वितास मानून, गरेसा नेवेज्ज रेप्टन; (सीतः समा १, २) १ १ वैदेस ,गेबेरबय) देशें का किन; (ब र)। १ पूंरक

395 आपन तिरोप, भी की तस्द् देला; (४६ धेगी के देशें की एक जाति ; (कन ; भीव, भव, जी ११ : "तिन्ध न ["तीर्थ] १ गीर्थ का तना में 14)1 बा राम्बा ; कम में नीची अमेत्र; (बंद १)। मेह न [सेह] एट, घर, मधन, (स्त्रः १६; गउड)। सनुद बर्गेरः को एक जगह ; (य १०)। ० 'जामाउप पु ['जामाद्वस] पात्रमई, मांदा मनुः ["बास्स] १ गीर्वा का बाप देने बाता ; १ई के वर में रहने पाला.जामाना , (डा १ १६६)। "ागार बाह का प्रयः (बिस १, २) । दाम ई रिनी वि[भार] १ पर के भाधार माता , १ प कन्यान बैन मुनि, मरबाटु हराना का प्रथम गिमा । रे . .. को एक मार्ति ; (सम १७)। "लु हि ["बन्] गव : (का ; दा ६)। दोहिया मो (। पर बाता, गरी, संसारी ह (पर्)। असम पु शिक्षम] ९ गाँ का शृंहन , २ मामन-विग्रेप, गी १६४ १४ हुएह्याश्रम । (पडम ३१, ८३) । तरह बैय जाना है उम नाइ का ठावेगन ; (इंड मेंडि नि [ग्रंद] लोतुन, मज़ानक , (मांत्र ८०)। "दुइ वि ["दुइ] ती हा हैहते वत: रिदि सी [गुद्धि] आसकि, माध्यं, लाउव ; (स ११३, 'चूलिमा मी ['चूलिका] उनकी, ^{हो} PR 1. 1): बर पाँड शुनने का समय, मायबात । "-मेहि दि [मेहिन्] नीन देखे. (वाया १, १४) । (रंका)। °वय, °व्यय व [°व्यर]। हेर गेहिम नि विदेश देश शता, ग्रहे । १ प्रमर्थ, दला गर्सः "लडम्मि जम्मि जीवाच रूपः ^{राज} धतो, पनि ; (उन १)। जन्दो" (भाष ६६)। १ गोन्यद वर्डिन हैंदे गेशिम रि [मृद्धिक] मनामक, संतुत्र, सासवी : (यह ,३ मी का पेर, (इं ४, ४)। भर् ९ (भी 9, 1)1 विशेष, शानिभद के भिता का नाम । (स १०)। गैदिणी मी [गैहिनी] एडिजी, सी ; (लुख ३४५ ; मा [°मूमि] गीनो को चन्ने का जगरः (कुमा, कुग्) ह भागि [भागे | वो बाला , (विव १४६०)। मी पु[मो] १ शीम, किथा, (गतः)। १ स्वर्ग, न [मृत] गों हा गव, (यावा १, ११-मी वाभून , (सुरा १४२)। १ वेट, वजेवर्ष ; ४ प्यु. स्वत्र विश्व] नोवा, गो का मत, मा-रित्र हो जानवर , ६ मो, गेवा , " बगुर्गरियशियानियमिय-र । मुलिया सो [मूजिका] । के मा रिगामक्रमीकिशे गाल्य " (सिंग १७६८ ; पान १०१, (काय (प सा)। १ मी-मूब ह बाहार kay ग्राम ९ वर्ष) ३ ६ कार्यः, वाग् , (स्थ १, १३)। (वंदार)। "मुद्दिशन[मुखिर] ^{हैंदे}। मूनि, " अ महा विभागवगीत्राच खेला पुतिश्व" माहार बाजी दात. (वासा १, १=)। रहेग (गार, नुस १४१)। "अहा देशो "याल, (पुन्ह तीर वर्ष का वैतः (सम १, ४, १)। ९९६)। फिल्ड वि [मिन्] वें कुछ, जिसेंड कुल ['रोवर] समाम-ल्यान पोन-गर्ग क्रम तिर्दे बनेंद्र में हों का, (द ६,६८)। "अत्र व [भूतः] न्यित गुड़क रिन, (सुर १, १३०) , सं^{--प्र}, १ गीनों का स्पृद्ध ; (बाद ३)। ६ वंट, यो-बाहा ; *]। "लेहणिया मा ["लेहनिहा] " सभी गाउनमधे।" (भाष्य)। "उदिय वि (बिद्रे)। "लोम पु["लोम]। बैहरी कुलिको गो-कृत बला, गो-कृत का मानिक, गोवाला । र इंन्टिय बन्तु-सिंगर, (बार १)। वार्थ (महा)। 'किलंबय व ['किल्फ्जिक] वन्न-विहेत् १ इन्द्र र सर्व ; १ सजा, (मृत १०८)। जिएमें की के खता दिया आता है; (सम ७,८); देर ; ६ बैल: (हे 9, ११9)। 'वाप १ (१) कींड व किंडि दिगुओं की मानी, क्रो (जो १६)। बीर्या को क्यां का अनुकाब कान वाला एह प्रशि कमार, 'मार न ['सार] नेवा वा दा इ (मन ६०. (बारा १, १६)। "चप देश 'पूर्व, (रत) रत 1, 1)। "बाह पु ["प्रद्र] नी को केते, भी का 3[चाट] गीमां का नाग (द 1, 10

इन्तर, (पद १,३)। "मार्य व ("प्रहूण)

सेन्द्र ; (दारा १, १=)। 'जिमाता वी ['निपवा]

देखें वहवं, (और)। साला म [1

हिण न [धन] गोच्छा मी [दे]मञ्जर्ग, बीर; (दे २, ६४)। गीमों का बाहा; (नित्रू⊏)। गीमों का समृह; (गा६०६; सुर १, ४६)। ात्र देनो गोच=गाप्त । कु—गोत्रणिडस; (सट —माउनो 939)1 बिंद पुं दि] १ मी का चएत : १ स्थत-१८६माट, स्थत में होने बाला श्ट्याट का पेड़ ; (दे २, ६८)। ोबगा सी [दे] रप्या, मुहल्ला : (द २, ६६)। रीअल्डा स्त्री [दें] दूस देवने वाडी स्त्री ; (डे २, ६८)। गेवा की [गोदा] नई/विशेष, गोतवने नहीं ; "गोमाय: इक्च्छ्रद्वंगवासिया दरिप्रयोहेच" (गा १७६)। गित्रा मी [दे] गर्नर्ग, बडगां, छोटा बद्य: (दे २, ८८)। ग्रेयायरी स्वा [गोदायरी] नदी-विरोप, गोदावरी ; (गा ३६४)। शिवालिया स्त्री [रि] दर्श स्तु में उत्पन्न होने वाता संद-विशेष ; (दं २, ६⊏)। ोिशवरी देखे गोजाजरी ; (हे २, १७४) । गोउर न [गोपुर] नगर का दरवाजा; (सम १३०; खर १, ४६ 🕽 । गोंजी | स्वी [दे] मञ्जरी, बीर; (दे २, ६१)। गोंड देखें कोंड=दीनः ; (इद) । गोंड न [दे] कानन, बन, जंगत ; (दे २, ६४)। मोंडी सी [दे] सन्तरी, बीर ; (दं २, ६५)। गोंदल देखें गुंदल; (भति)। गोंदीण न [दे] म्यूर-रिन, मीर का क्ति ; (दे १, ६७)। गींक पुं [गुलक] पाइ-प्रत्यि, पैर की गाँठ; (कह 9, 4) 1 गोकण्ण } पुं[गोकर्ण] १ गैं का कन । २ डो गुर गोकम्न र्र वाला चतुत्रार-विशेषः ; (फह १, १)। एक भनतर्द्वीत, द्वीत-विकेष ; ४ गोहर्य-द्वीत का निवासी मनुत्र्य ; (द्य ४, २) । गांकचुरय र् [गोसुरक] एक मोर्पाध का राम, योगम ; (स २६६)। गोच्चय वं [दे] प्राज्ञ-राउ, बोहा ; (दे २,६७)। गोन्छ देखे गुन्छ ; (मे ६, ४० ; या ४३२)। गोच्छत्र) इन [गोच्छक] एत वर्गेरः सक वर्गे दा गोच्छग रुवन्यतः ; (इतः , पदः १, ४)। गोच्छड न [दे] गोनय, गोनीहा; (बच्छ ३४)।

गोविछय देवी गुव्छिय ; (भीर ; गावा १, १)। मोछड देवो मोच्छड: (बाद-पच्च ४१)। ् गोजलोया माँ [गोजलीका] चुर कीर-शिप, इंस्टिय बन्तु-विगेष ; (फरा १६) । मोडन वुं [दे] १ मार्गरिक द्राय वाला बैल; (सुपा २८१)। २ गाने वाला, गर्वेया, गायक ; ^म बीजाबंससमाहं, गांचं नटनहरूको*ह*ोही । वंदिकौरा सहित्तं, जयनहालायणं च कर्यं " (पत्रम ८६, १६) । गोह पुं[गोष्ट] गोशहा, गीमों के गहने का स्थान ; (महा : परम १०३, ४० : गा ४४७) । गोद्वामाहिल वुं [गोष्ठामाहिल] दर्म-पुरलों को जीत प्रदेश से मबद मानने वाला एक जैनामात भाषार्थ: (टा 🗷)। गोहि देखे गोहो ; (मादन) ।) इं [गाँद्विक] एक मन्द्रली के महस्य, रिसमान-बयत्स्य दीस्तः ; (गायः १, १६--पत्र गोहत्त्वस गोहिन्लय रे०४; विस १, २—पत्र १७)। गोही की [गोद्धी] १ मण्डली, सनान वय बालों की सना . (प्रापः दमनि १ : गावा १, १६) । २ बातांत्रापः, परासर्गः : (थुमा) १ गोड पुं [गोड] १ देग-विशेषः (स २८६)। २ वि. गीट देग का निवासी ; (परह १, १)। मोड पुं [दे] गोड़, पाद, पेर ; (नाट-मुच्छ १४८)। गोडा मा [गोला] नरी-विशेष, गोरावर्ग ; (गा ४= -3-3)1 ं गोडी सी [गीडी] गुरू की बनी हुई महिया, गुरू का दारू . (季3)1 गोटु वि [गोंड] १ गुरुका बना हुमा ; २ सपुर, निरः (सन १८, ६) । गोड़ [दे] देनों गोड ; (मुच्छ ५२०)। गोप पुं[दे] १ मली; (देर, १०४)। र बेल, इपन, बडीवर्र ; (दे २, ९०४ ; बुमा ; हे २, ९७८ : सुरा १४० : भीर ; दन ४, ९ : भावा २, ३, ३ ; उर ६०४ ; विस १, १)। दिन वि ['यन्] मी बाला, चौमों का मतिक : (मुक्त ४४१)। चिर् पुंची ['पनि] बौमों का महिन, बी बाहा ; (सुरा ४००)।

150 ayate (una) + care to make and the 14 " gh) : 4 # 514 # 44-1 (491) سنعديك Charles We (Mark to) 3 th my (LA all) April as [while] we'd that I be गीनमर । (म ।। ११ र र)। ajida 1 [4 jah] 4 j 45 44 And 1 44 44 44 44 Acc \$114 About 1 bungt Half Look गोना को (१) है, है है (भा) , appearing (4) and they de मोतिकत है [के] का काम, जो हा का का र (१ ए. . मोसहर का दिंगितम गुम्मम ।रे १.४ गोप्तिय में (१) केवी का कामनी (श ६); गोयो का (के) के केस , (कर रह का) ;

Mant sut sing " (a.d ' a.m. 1'2 - a.t. 5 0) 5 बोह्यजनिक्स को [बांसानविक्सा] वरकर मील इ[मोत्र] १ वर्षद् करत् (१४१,३०) १६ व वस्त्र Mileta, mant . (9 98, 90) , 1 and live, fore योगान्तरी को [गोगान्तरी] कम रेना (रह) मान हे राजा राव का गांच माने का बहागण है . (या) attle) to [attitue | Tors me are d ! (3 A) antital at salist at the am de e sia du e un et sand' (4 31'1 1) ! ajust at (4) cone in' attest and tree देवता को दिवता] हर हर (था १०)। कुल्लिक बी [स्वतिका] क्लोनकेन । (कल १) । the said (to bit he seems गोलि वि [गोरिक] समन गाम कमा, इइन्के, व्यक्त । मानवर्षा का विकास महत्र, (धा व.१)। (1, 19) गोति हेतां गुलि , (११४१) ; नाम्यां का है मांसूको है कर रिशन कर । गोलिस हि [गोबिक] कान गांव कागा, त्वसन, (आह ०) । मांग्रह व [बांग्रंथ] । क्य काल अवस्य अ साल वह । (व द) । हे वह रितर, किसे वी fen m# 1 . (4m 17, e1) ; गाम्हो इन्त गोमा , (ग्रम) ,

गोल्यम रेना गोयुम , (१६)। गोरधूमा देवो गोधूमा ; (१६) ; गेषुम) इ[गोल्यूप] १ मारहरे जिल्लेह का उक्त पूर्व) तिस्त्र । (स्त्र १६१ , ति १०८) । १ क्लान्स शोमिम वृश्विमिक् | ब्राह्म वृश्विम वृश्विम मामा का एक बाबाय-परंत , (मा ६६)। १ व कर्य-गोप रूप गोस . (का 11 क्या 11 पर मा सी [गोस्यूका] १ वारी-सिगेद, सम्बन्ध वर्षद सर िवाहित् | धार का वा कार स्था का सार ह बार्गी : (य है, है) । हे सहन्त्र की वृह बाग-बहें हो गोप व [है] क्यांकर कोत. का कर , (बार ()) [ते. मोत्र] मही-विशेष, गोदावरी, (बहु, मा && &)। धोवम व[गोनम] १ वरी-भित्र । (म -)। गोध] । मंत्रन्त देश , हे गांध देश का जिलाती वेत , (क्षी) । वेत वानतित्व , (क्षा व ।) भोरम है [भीरम] । यक यह में उपन मानोव : "वे मानमा से न बहुता काल में है य A 1) | I H HORSE MANNE DE ³γ, ω . ⊇στ 1 . .

्रान्यकृत्य का एक पुत्र, जो मनशन् नेमिनाय के पान देता रेक्टर राष्ट्रस्य पर्वत पर सुक्त हुमा था; (संत २) । ४ क महत्य-वाति, बो पैट हुए निवा मेंग कर मना वर्षे बताती है ; (याचा १, १४) । १ एव बादाय ; (उर ६ इत-तिगेर: (म्म मन: हर १६० ही)। शैनितत न किताय] उत्पाद्यतन सूत्र का एक मन्दे-म. दिल्ले पीडमत्तामी और केशिमने का संबाद है : हन १३)। 'संगुत्त वि ['सगोत्र] गेतन गेर्जन ; मगः भावन) । "सामि पुं ['स्यामिन्] मन्तान् महावीत । मर्व-प्रयान ग्रिम्स का नाम ; (विस १,१--पत्र १) । यमज्जिया) सी [गीतमार्थिका] जैन मुन्नियय की यमेडिजया रे एक गाला ; (राज ; कम) । यर हुं[शोखर] १ गीमां को चान की जाह : "बी गेरिंग ग्रे बरगारियार्ट" (बृह ३)। २ वित्रव ; "बंधुरहरायाँ मइ...सर्वम्" (गतड): ३ इन्टिय का विषय, प्रयत्तः "इम ापा स्टब्स्यं तं काली नवरणीयां कार्र "(कुमा)। ४ निवादन, बला के लिए प्रमण ; (मीन ६६ मा ; दल ६,१) । ६ मेला, मायुक्ती ; (टर २०४) । ६ वि. मूर्नि में विचान ाटा, "विमनातांदगाय पुटिवार" (गडा) । "चरिया री चियाँ निका र तिए अन्तः (टर १३० टी: पत्न (, १)। "मूमि को ["मूमि] १ फर्कों के वरने की तह : (द ३, ४०) । २ निसा-प्रमा श्री करहः (द्र ६)। धित दि चितिन्] भिद्धा के दिए प्रमण करने बादा ; या २०४) । यरी मी [गौचरी] निहा, महुछी ; (मुरा १६६) । र हुं[गौर] १ मुक्ट वर्ष, छहेद रंग ; २ दि, गौर वर्ष हा, गुक्त ; (गहर ; क्रम) १ ३ महरहत, न्यित ; (गाया । "शार पुंर्ने 'सार पुर्ने 'सार) गर्दन की एक जाति : (परमा) । मिरि इं ['मिरि] पर्वत-विधेत्र, दिनाबद , (निष्ट् १)। मिग ९ं[मिग] १ इति को एक अति ; १ वृदस रिया के ब्याहे का बना हुमा वस ; (मावा २, १, १) । रम देखे गोरव ; (गा = 2)। र्रग वि [गौराङ्ग] गुस्ट गर्तर बन्दा : (बन्द्) । र्रोमिडी को [दे] गोरा, गोह, उन्दु-सिरोप ; (देश,६न)। रहित वि [दे] सन्द, घरत ; (यह)। प्त न [गाँरव] १ महत्त्व, गुरुव : (प्रमु १०)। राग, सम्मन, बर्मन : (विते ३४७३ : स्वर ६३) । ३ म्ल, ग्ली; (ब १)।

गोरवित्र वि [गीरवित] सम्मानित, विनद्या प्राद्य दिया गना हो वह ; (ट ४,६)। गोरस दुन [गोरस] गोरस, दुन, दहाँ, मत्र वर्गैरः ; (पाया 1,= ; # x,1) 1 गोरा सो [दे] १ ठाड्गड-पद्मि, हड-ऐसा; १ वस्, बाँग ; ३ मीता, डोक ; (६ २, १०४)। गोरि देश गोरी ; (१ १, ४)। गोरिम न [गीरिक] विदायर हा नगर-विशेष ; (इह) । गोरी स्वा [गीरी] १ गुक्त-वर्ण स्वीः (ह ३,२०)। २ पार्वती, गिव-मन्ती ; (कुमा ; सुना २४० ; गा १) । ३ थंकुना को एक स्वी का नाम ; (मंत ११)। ४,इस नाम की एक विधा-नेतीः (सीते ६) । "कृष्ट न ["कृष्ट] विधायर-नगर-विद्येष ; (इष्ट) । गोल पुं [दे] १ सर्जा ; (द २,६४)। २ पुरुष का निन्दा-गर्न मानन्यतः ; (याया १, ६) । ३ निरुखा, क्ट्रोरना ; (दन ७)। गोल पुं [गोल] १ वद-विगेष : "कर्न्वगीलविह्नंद्रभेत-तिमनि" (मन्तु १८) । १ गोताका, नृतका, माउताकार बस्तु ; (य ४,४; मनु १) । ३ गोलक, बंता;(मुरा२७०)। ४ गेंद, बन्दुक : (सुम १,४) । गोलग) वुं [गोलक] कार देखें ; (सुप २,२ ; सर्प गोलय (३६१ क्ल)। गोला रहा [दे] गी, गैवाः (देश, १०४; बाप्र)। २ नरी, बंदी भी नदी ; १ सपी, संहती, सीन्ती ; (दे १. ९०४) । ४ गोहालगी नहीं; (दे २,९०४ ; गा १०० ; १०४; हेका २६७ ; ति म्४ ; १६४ ; फम ; पर्)। गोलिय पुं[गाँडिक] गुरू बनाने वाला ; (वर ६) । गोलिया की [दें] १ योजी, दुरिहा ; (गय; मणु) । १ केंद्र, टर्डों के मेरने की एक बांब ; "तीए दावाए पता गोतियाए किना" (इसने २) । ३ वहा कु'ता, बहा बार्टी ; (ग्र =)। 'सिंड, 'सिन्ड व ['सिन्ड, 'सिन्ड] १ बुन्दां, बुन्हाः २ मनिन्दिगेरः (छ =--वर ४९७)। गोलियायम न [गोलिकायन] ६ गोत-विरोध, जो बीरिक योज की एक शाला है ; १ वि गोटिक्स्पन-गोजीय ;(अ)। गोली की [दे] बक्टी, बदरिया, दही बक्टी की एउसी ह (देश, ६६)। गोल्ड र [दे] स्मिन्छ, कुदल च छत ; (पाप १,५ ; <u>इन्)।</u>

```
मोज्य ३ [ मोज्य ] १ हेम्पनित ( स्थाप )। २ व /
                                                                                                                                                                              करतियन से कारण की की सामा है। है किसेन
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            वाइअसर्वनहरूपाने ।
                                                                                                                                                                        मन में वचने, (व ०)।
                                                                                                                                                            गोन्स को [है] कियों, हर्सीनीतंतु, इन्दान का थेर,
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               गोनाहित वं [कोपाहित्र ] काः
                                                                                                                                                 मोत्र गड [मोत्यू ] १ हिलला । ३ महत्र करता । संसर्
                                                                                                                                                    मोर्ग ( उस रेप्ट, मए)। राह-चीवरनंत, (उस
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     गोवालिको वो [गोवालिको ] को
                                                                                                                                               गान्। पा ११, १६१, माग् ६६)।
                                                                                                                             100 ( 21 me ) man ( 22) ( 22) ( 21)
                                                                                                                                                                  विभाग विभाव का स्मिन् माला, मानान,
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           गोवान्त्रिय ह [ गोवान्त्रिक ] गेल, वर
                                                                                                                             [ Tall ] six flay , "dichile action and a
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                गोवाजिया को [गोपालिका] कंपना
                                                                                                                           A desca ( diga doce a ) !
                                                                                                            गोबान वस गोबहन (ति सह )।
                                                                                                        भीका व [ गोका ] न राज व दिलामा ( स्व वट ;
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      गोवाल हो [गोवाली] क्लोकांक, (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                गोविस वि वि के अन्याह, नहीं शेवने बह
                                                                                              गोवस्य वृक्षिणास्य है। यांक्रीयाः (वि वश्तः)।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          गोनिम [ गोनित ] , विसवा हुण,
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          (ST 1, CE, ST 1, 1),
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                वोविका को [गोविका] गोवलना, प्राणित,
                                                                                  मोरक व [है ] मान, व्यान, मानिया | (है १, ६६)
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   वोचिन् व [वोचेन्त्र] १ स्वनाम-व्यात एव बोर्ग्सन
                                                                            ोंबर वृ [ बोजर ] १ मध्य देश का एक सीव, सीन्य-स्थातो
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       कार : रे एक केन क्षत्र , ( यक्त , व्यक्ति)।
                                                                            A was fig 1 ( sur ) } & squares 2 ( sur ) }
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         मोदिन व [ मोदिन | १ किया कर । १ तम ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           (व १०)। विग्रवित सी [निवृद्धि]।
                                                       गोका व [ गोका ] केंग्स केंग्रिंग, बीजों का न्या |
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       स एक केन दार्गानिक सन्त्र । (नित्रु ११)।
                                                           Ashir man ( Sh. Ash ) . She was been as a she was a she 
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           मिल्ल र हिं । इन्हें कार्ता, (हे र रा)।
                                                     (271-)1
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    गोवी मा [ते] कता, क्या, उत्पाद वस्ती।
                                         मान प्राथम हमा गोल-गायम, (४० १०)।
                                     and the state of any of the state of the sta
                          वीवतित्त वृ [ वावतित्व ] कावा, व्यापः (ता ४६३)।
विकास काव [ वावतित्व ] कावा, व्यापः (ता ४६३)।
व व वक्षत्रीतिक (ता ४) । विकास विकास विकास विकास विकास व्यापः (ता ४८३)।
वीवतित्व वृह्णिया विकास विकास विकास विकास व्यापः (ता ४८३)।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    गोपी भी [ गोपी ] बोग्यतमा, ब्रह्मीन, (इस र
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                गोवर (है) क्ये गोवर (ज ११), ११।
                  मोस के [डू] सम्मा संबद भा कर है।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                17 and 18 [ 177117 ] 1 F. 24 . 3 144 2571 [
                                                                                                                                                                                                                                                                                           बोसिक हैं [ बोसीका ] केवल, खते. (ए)
    Stone little las see 1 ( Selle ) b was
    to be a supplied by the best of the supplied by the supplied b
  भोतातः । व । प्रतिकारः । व । व्यक्तिः ।
भोतातः । व [ भोतातः ] । व्यक्तिः ।
2 (1)1 1 (1)1 1 (1) 24 (2) (2) (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1 (1)1 1
                                                                                                                                                                                                                                                                 (4) 52 (4) 53 miled and 1. (4) 52 (4) 52 miled and 1. (4) 52 (4) 52 miled and 1. (4) 5
                                                                                                                                                                                                                                                                 किन को कमा कार्योह का काल है।
                                                                                                                                                                                                                                                भारताहिता हो हि । क्षेत्रक राजक / --
```

Same of Same o 1977 1977] The state of the s े सार्थ्य देने क्लान-इंदर (इंदर १६) । \$ 777, 9777, 8777 ((777 \$ 0) 1 1 777 \$17 \$177 ((7, 0) \$1 \$1 7.3) 1 2 777 \$177 (7, 0) \$1 \$1 7.3) 1 गण कर काचा - (२ ४, ४८ अ ५०) । विस्ता को [कोजिका] १ सक, मा, सम्बद्ध सिंग : [स्वास्था केले बादमा-प्रत्य : (दम) ।

इच शिवास्थानस्मद्यम् ग्री स्थानसम्प्राहरू हत्तरम मार्गे रहार ।



१९६) ३ वत-सद्देश, (ग्राप) । पार-१८

घटमक[संश्] वर्ण्यताः साः(प्)ः

यड, १ नेपु, बंदा (दे १, १११)।

बहुई[दे] १ हम्म (वने ग्रांश्म १४; १०

घट् वृं [घट्ट] १ शर्रतालानामस्यासम्बद्धाः

(१६)। १ पुंत अस्ति। (आ १८)। १ मू. १

"हरामाई" (पुत १६६)। ४ हि, वर, विधे,

(4 2, 4)1

• (घ दुं [ध] करा-स्थानीय कान्त्रन वर्ष-विशेषः (प्राप्तः त्रागर)। धममंद न [दे] मुद्द दांव ; (वर्)। धरं (भा) म पार-पूरक मीर मनांक मनाः (हे ४,४३४ । बुमा)। धमोश्र] ५ हिनोद्] ६ हिनोद् , श्रिमा पनी सओद विके मुन्यस्कादिने हैं। (१६, स ०)। १ मेश-विरोप, (ति य) ३ वि, जिनका पानी थी के समान मार हो ऐसा जलात्य। सी-ंभा, दा; (बीत ३: राय)। र्घंग पु दि रे एह, मधन, थर; (दे २, १०६)। "साला सी ['शाला] भनाव-मारप, भिन्नुको का भाषव-स्यान ; (भोप ६३६ ; वर ७ ; भाषा) ; र्ययल (मा) न [स्टक्ट] १ मन्त्र, इत्रह, (दे४, ४२२)। २ मेंह, पश्राहड , (कुमा)। र्घघोर वि [वे] अमय-शील, भरकने बाला; (दे २, १०१) । र्घांचिय ५ [वे] देशी, देश निकातने वाला ; गुजरात्री में 'योबी' ; (सुर 150)1 धंड पंत्री [घणड] मारा, क्रेप्स-निमित्त बास-विसेव ; (ब्रोप ब्ध्भा)। हती-दाः (हे १, १६६ , राम)। वंटिय g [घाण्टिक] कटा बजाने कटा , (कर्प) ह घंदिया स्त्री [घण्डिका] १ छोटा प्रत्य , (प्रामा)। १ किंकियो ; (तुर १, १४८ ; व १) । ३ शामाय-दिरोव , (शाया ९, ६) । इसि हु [धर्य] वर्गक, विकन ; (काया १, १--वन ६३)। शंसण व [घर्षण] जिनन, स्महः (स ४७)। शंसिय 🕅 [शर्वित] विश्व हुमा, रवश हुमा, (मीन) । धक्रुण देशं थे। घग्घर न दि] परा, सर्वेना, स्तियों के पहनने का एक वस्र . (27,904)1 धन्यर वृं[धर्यर] ९ सन्द-विते ३; (वा ८००)। २ सासता गला ; "पानरगतिम" (६ ६, १७) । ३ सोसता मानाज, "हरानाची अन्तरेख सहेख" (सुर २, १९२)। ४ न साइवल, रीवाल को रः का छमूर । (मता) । यह तह [यहर्] १ शर्व बस्त, इता । १ हतना, चलना। ३ संदर्भ काना । ४ शाहन करना । यह , (श्वा

बरबन्दरमी (नुस ११)। यहंसुध व [देशव्यं मुक्त] वन मिन होत वय : (पुना)। घटण न [घटन] १ हुना, सर्ग काना । दिखा, (शा ४)। घट्टणम पुं [घट्टन के] पान वगैरः को विक्रा क्षेत्रे उप पर शिश जाता एक प्रकार का प्रचा . (म रे चहणया) भी (चहना] १ शतरन, महत्ता, ! यहचा । स ४, ४) । २ वर्ग, हिनन (धर ३ रिवार, ४ इच्छा, (बूर ०)। १ कार्यः (माना)। ६ शर्म, ह्ना , (नाम १६)। घर्ष देनो घर , (मरा)। घट्टिए वि [घट्टिन] १ मार्ग, मरर-पुत्र, (1) १ वेरिन, कालिन ; (पन्छ १, ३)। ३ स्² हुमा, (त १, राय)। बहु वि [बूर] शरिता हुमा, (हेर, १०४, मी, मा भड़ तक [धट्] १ वेडा काना । १ करना, क्रन्त । वरिषय करना । ४ संगत होना, मितना । वारः। १६६) रह-परंत, घटमाण, (वे १, ६, नि) क-चडियञ्च , (वावा १,१--पत्र ६०)। घड सह [घट्य्] १ मिनाना, जोडना, नपुक इर्गः) बनाना, निर्वाच काना । २ संवालन करना । वार । () ६०) । सर्वि -- चंदिरपानिः (म १६४) । । (ता १६६) । सह- चडित्र , (ल १, १)। बंड वें [शर] बा, कुम, बन्ता , (हे), १११) वं ["कार] कुम्भश्चर, मिशे का बरना बतारे स (अष्ट ४१६) । चेंद्रिया सी [चेंद्रिशा] वर्रे बाजी दानी, वनिहाती , (नुस ४६०) । दास इ पानी मरने बाता नौहर , (माना) । दाप्ती सी (रि पानी भरने वाली, पनिहारी , (सूम 1,14) !

```
3/3
                                                                          रहित, स्वतः (जो क. स रे, ४)। १० न. देवनियन
                                                    पार्ञसह्महण्डावी ।
                                                                           fing: (田引) 1 99 fing: (中田 9,9,9) 1 92
                                                                            बायनियेत ; (मुल्त १२)। जुदहि देश श्लीदृष्टि ;
                                                                              (ला)। निर्विष वि कितियत्र मिल्ला निर्विषः
                                                                               (क्न ७, =; क्रीर)। न्त्रव न [ न्त्रपत्री नक्त्रवर्गनिकाः
हि] हुई ला, बनाम हुमा ; (पर्)।
                                                                                 (त्त र)। क्तर्प (क्त्त) । स्वतंत च एक मत
वि[३]मंड्या ; (पर्)।
वं विस्क विस्त वहाः (सं १; मण्)।
विष्टती १ वहता, हर्त्ये, हिल्ले (वि ४,३१)।
                                                                                 हुत : र जन्म निर्मा महत्य ; (य ४,२)।
                                                                                   [भाल ] बेतर्य पर्वत पर विवास विकास कार विरोत :
                                                                                     (क)। मुद्रा वे [मृद्रु ] नेन को ठाव गर्नार मानात
THE P. LEWIS CO. P. LEWIS CO. B. L. LEWIS CO. B. L.
ला मी [घरमा] निरुल, केंत्र, गुंदोर ; (सुम १,१,१)।
                                                                                      बला बाग किंग ; (मैंग) । व्ह वं [ रूप ] एक जैन
                                                                                       मुनि : (पन २०, १६)। वाउ में वाखु क्लात बायु
                                                                                         के नारम्पी के नीय है ; (जन हैं)। "वाय है [वात]
हुप देखी घड़ता ; (इं २)।
डा की [घटा] मन्दर, क्राफ्त ; (एउड) ।
जायडी मी [ के ] गाँठी, दमा, महारही ; (यर) ।
                                                                                          देखों चाउ; (मा; में ७)। चाहन वं [ चाहन ]
हाव मह ( बट्यू ) १ सन्त्र । १ सन्त्रा । १ मंत्र
                                                                                           विकारों के एक सलाका नाम ; (पान ४, ५०) । विकासमा
    इत्ता, निर्मा । बर्मा ; (ह ४,३४०)। मेरे चडा.
                                                                                             मा [विद्युता] देवी विजेप, एक रिक्तमती देवी का नाम ;
                                                                                              (रह)। न्समय इ [न्समय] बर्गन्हत, वर्ग हत ;
      विं मी [ यदी ] हेती घडिआ-क्रिका ; (जल ४४)।
भंतप, मतपन [ मानक] छंट पटे हे मानर हा
प्रवास्तितः (ग्रनः का)। भीतन [ व्यन्ते ] स्त्र पत्री
                                                                                               इस्त्रजाह्य न [ इन्द्रनायित ] ग्प इर बेल्ड्य, इत्यक
विकार विकार के विकार के लिए के
                                                                                                 धनवाहि दं [ हे ] रहा व्यत्मितः (१ २, १००) ।
          ः मुद्द्यः निक्षः मिला हुना । (यम । म १६४ । मीरः महा)।
                                                                                                   यजनार वं [ वनसार ] इतः ; (पामः भावे)। भाव
         ्र महिल्याना मो [दे ] गारी, मगरी : (दे रे, १०६)।
                                                                                                      क्षं [ क्रव्यती ] एवं क्षी का त्रन ; ( इन् )।
              शहिला मां [ बरिको ] १ हेटा प्रा, इटकी; (तापर क
                                                                                                     धना मी ( धना ) परिन्म ही एवं प्रमानियों, हत्त्र
      1 4 40) 1 3 421 25 1 (24 400) 1 3 201 4 25 2
                   इटा दल्य, प्रतिद्वय ; (राम) । ह्यय व [ ह्या ] क्या
                                                                                                        Frit; (44) 1
                                                                                                        क्या की [क्या ] स्टा, स्प्रम्य, तर्थ ; (जार)।
                                                                                                         व्यक्तित न [ व्यक्तित ] वार्त्रन, वार्त्रन ; (मात २०)।
             समोदि पे [ धनोदीय ] क्या हो तम् होत्र कर
                                                                                                              (स्त २०) । च्याल्य व ( च्याल्य ) दल्त हर हरे
                      पदी माँ [ पदी ] रेली सहिता ; (म १३ = ; प्राप्त)।
                       ग्रमुक्तम प्रिमित्सच के में के दुव (१ ४,२६६)।
                                                                                                              والما ع [ كو ] م كام عجم ل والمراز و أو المراز
                         सर्वात वि चिरोहम्ब है। वर वे उत्पत्न है है हैंपै
                                                                                                                  St. 11 [ [ [ [ ] ] ] ] ] ST. ST. ST. 3 2
                                                                                                                  Ser; ( 2 3, 902) 1
                      क्ति, माल्य इंदे ; (इन्हे)।
                                                                                                                     (६४,१४१)। महाना सारिका व
                                   ( [ [ ] ] ) AT, ATT; ( H ) ], 14; 17]
                                   13) 13 Care (4 (31) 1 3 Free Free 32 Fre
                                   ब एव कर, हैंदे हे स स इन्हें हैं हि १० न्य
                                                                                                                       4=150 ; E 384) |
                                    TEL : (FE IVE) | VATIE TOTAL
                                                                                                                                                                       1 2
                                                                                                                      可平[灰] 🖛
                                     55 877; (3 1,3) 1 8 ft (7, 27; (F1)) 1
                                       The Brit Brit Box Box ( (See ; $27) ) " o Free,
                                                                                                                       ST IN THE
                                                                                       . 57 mm.
```

```
यत्त वि [ घास्य ] १ मार बालने मेन्य । १ जो मारा जा
                                                       पाइमसद्मद्वणानी ।
             सके। (ति स्टन्, सुझ १, ७, ६; ८)।
           धसण न [ क्षेपण ] व्हेंबना ; (इमा)।
                                                              [ कोकिला ] गुरुगंथा, लिएनी ; (मेर, नुः
                                                                                             [ धत
          यत्ता सी [ यत्ता ] छन्द् विरोष ; (विष) ।
         यताणदं न [ यतानन्द ] छन्द-निर्वेष ; (विन)।
                                                              बोलो स्रो [ बोली ] एरपंपा, जिसी,
         धत्तिय वि[ दिला ] बेरित ; (व २०॥) ।
                                                             १०६)। भोदिमा ही भोधिका] जिल्ल
        घत्य वि [ प्रस्त ] १ मिन्त, नियना हुमा, करनेता ; (प्रम
                                                            निगंप, (दे रे, १६)। जामाउग इं जिल
         भी, हेर । एक रे, हे)। र ब्राह्मण्य, व्यक्तिम्त , (हुना
                                                            थर-जनाई, एप्रत-पर में ही हमेगा रहने बजा हर
                                                           (बाला १, १६)। त्य प्र[स्व] सीम
       चमा वृ [ सम<sup>र</sup>] वाम, बरमी, वंतस्व , (वे १, ८७; स
                                                          थरवारी , (धारु १३१)। "नाम न [भागत] ह
        भाभ) । २ कांना, स्वेद : (हे ४,३१७) ।
                                                          नाम, बालाबिड नाम, (महा)। धाडप व हिंग
     यम्मा ही [ यमां ] परवी बाह-प्रविद्यी ; (य ७) ;
                                                         वेटी हुई जमील बाता थर, (पाम)। 'बार व[ए'
     धनमोर्द मी [ वे ] त्यानिरोप ; (वे २, १०६) ;
                                                         वर का वरवाजा; (कार १६१)। सार्ग
     यममोडी को [है] १ बलांद काल ; १ मारू, यक्त,
                                                        [ शकुनि ] वालव जानार , (बा र) । सनुति ।
     शुर बन्तु निरोप , हे मामवी-नामड तृष्ण , (हे हे, १९२)।
                                                       उ [ समुदानिक ] बाबीनिक ना का म्हार्न ग
   पर न [ मृत ] के स्त , (हे १, ११६ ; जर १६,
                                                       (भीप)। क्लामि इ हिलामिन् ] समार्थ क
    (१)। भासव द शिवन | जिल्ला बचन वी की
                                                      (हे रे, १४४)। 'सामिणी ही हिसामिणी क
   ताद गुर क्षेत्र हेमा सहित्यान पुरुष ; ( मानन )। किह
                                                     की। (सहर)। न्त्रव[भूर]
   न [ 'बिट ] यो का मेज (धर्म २)। 'बिटिया की
                                                     कृत शुर, पर में ही बहापुरी दलाने वाला , ()
  [ किहिका] ये हा मैठ ; (या ४)। गील व
                                                   धरंगण र [ शुराहुण ] बर का घाँगन, बाँड, (ग
 ि भीता ] भी भीत पुत्र की करी हुई एक प्रकार की मीटाई,
                                                  धरम देनो घर, (जीव १)।
 निकाल निहेत्, (हा। (११)) "यह ई [ यह ] की
                                                  यरघंट वृहि । बडक, वीरेया वर्ता , (१६)
का मेंबा (क्रा)। जुल व[ पूर्ण ] केस, मिटाप-
विवेद ! (का वेतर क्ष) । जैंद वे [ क्षर ] केरर क्षितान-
                                                घरघरता वं [ दे ] बीवा का बाम्यक विरोध , (वं रो
विभेगः (हमा ११)। भूसमितः है [ अप्यमित्र ]
                                                बाह वं [बाह] मन्त्र चीनने बा पानव सन्त्र, (बान
एक जैन वृत्ति, बार्वरवित सुरे का एक वित्त्व, (बायू १)।
मंड इ [ मण्ड ] कार का की, हजात ; (बीत है)।
                                              बरह वि दे ] बरवर, बरहर, प्रती का बाता,
मिलिया मी [दिलका] भी का होट, यह कल्ल-
                                              यही बी [ यहो ] मच्चो, तत्र , (रे १, १०
रेप।(बो १६)। भेट वं भिया | बो के बन
                                             धरणी देखों घरिणी, "तं बरपरिव वर्षण ह"
बराने बालो बर्मा ( अ ३)। चर व [ चर]
                                              न्द्रदी ! सामें हर )।
नियः (१४)। सागर ३[ सागर] सा
                                            धरसंद वृ [ दे ] माना, वर्षम, सीना, (हे १, १०
                                           धरस वृद्धि गृहवास] रहात्रम, रहत्वामा , (मा
                                           धरसण देशे धंसण . ( हव)।
ह [दे] मातः, महताः ( दर ह २०४, २०६;
                                          धरिकी हो [ यहिंगी ] धरवाली, हो, मर्च, वर्चा, ।
                                           करंदश्च हे से हैं से हैं के हैं के अप )।
शिंद ] का, महान, रह : (हे रे, १४४ ) टा है,
                                         बरिका हैं [ कृदिन् ] यहो, संवादो, वस्त्राहो, (ग शा)
पर)। वृत्री सी [ ब्रेटी ] १ वर के बार
                                        बिल्लिय सी [ यहिणो ] बरवाओं, सर्वाः ( मा)।
। १ बीड के मानर की करिया ; (बीय १०६) ह
                                        वित्ति हो [ दे ] रहेको, वन्त्रो, ( दे १, १०६)।
रतः (ता)। कोस्ता, कोस्तिमा को विस्ता व [ यसंख] कांग्र समः ( स्व )।
```

```
रेस हि देश-संग्रह-सिंह : (दे ४, ९०६ ) I
रया ) में हि ] राजिया, विकास ; गुरम है में
     ] भ्योत्ताः ( पाए १, १ हे २, १०४ ) ।
ल वं चित्रपार वे 'यह पर' सामात, धर्मन निर्मेश:
ार १, ६)।
 मह सिष विवेदा, दाल्या, पाल्या। पालक,
ाति : ( स्थि, के ४, ३३४ , ४२२ ) ।
 वि दि । मनुष्या, प्रेमी ; ( दे २. १०४ ) ।
प्रम हि [ सिन ] चेंचा हमा, दाना हमा , ( सर्वि ) ।
म्म दि है ] पटिन, निर्मन, किया हुमा, "म्मर्यानं
वि चनिलको, लिक्सारामगुरुपाको:" ( सुरा ३४३ ) ।
सर पुरु ] १ जिल्ला, स्पत्न । १ मार्जन परना,
 करन । पाता : ( महा : पट् ) । संह-"यनिक्रण
रेख' कारों पडराडिको मार् पच्छा" ( सुर ७, ९८६)।
ष देशं धीमण : ( पुरा १४ , दे १, १६६ )।
मेत्र वि दि ] इत्या, गाँवितः ; (यर् )।
भी की धिर्यभी है है रेगा, बह लहीर, (स ३६०)।
 की दि ] १ पेली वर्षन , १ मृष्टिया , लगा ;
E ) [
य वि [ घुष्ट ] वित हुमा, रगहा हुमा ; ( इता ॥ )।
रि वि [ प्रसिन् ] बहु मलह, बहुत गाने वाला, (प्राप्त
के बहुत है।
र माँ [दे] ६ भूने गति, स्टीप ; १ - नीवे दराना, ्
हार, (गत)।
 वि [ घातितु ] पात्रह, राज्यक, हिंदयः; ( गा ४३७ ; †
! १९३८ ; सर ) । "कल्मान ["कर्मन्] कर्न-,

    म , इन्तलाय, दर्शनायाय, मेहनीय और झन्द्रसय दे

'र्क, (धेट) 'चडकत ('चतुका) शॉल
(화 : (도투 ) 1
ब वि [धानित ] १ मन्ति, विकशित; (धादा १, ८;
 )। २ ध्वादा हुमा, को शक्ति गृन्य हुमा हो, समर्प्य-
त , "करपाई पाइपाई जाया घट वेयपा मेंदा" ( सुर
316 )1
आ माँ [ घातिका] १ दिरागुक्त बाडी की, बाले
रोस्रो, (वंश)। श्यत, हम्म; श्यत करना;
57 16, 14+ ) I
इजमाण } देखे धाय≕हन् ।
यञ्च
```

```
घारपञ्च देले. घाप == पत्र ह
घार है [ ब्रायित ] गैंबते बात : ( क == १ )।
घाडकाम वि [ हुन्तुकाम] मन्ते के प्रका कराः ( गाप
  9, 9= ) 1
घाएँन देचे घाय≕त
घाडमर [संश्] भट हेला, ज्या हेला। प्रक्रा,
  (42)1
घाड इं घाट ] १ मिटा, नीहर्ष : (इत. याचा १.
  १)। १ सन्दर्भ से नीचे का साथ ; ( राजा १, प-पन
  133 ) 1
घाडिय वि [ घाटिक ] बतन्य, निव ; ( गाया १, १ .
  57 1)1
घाडेरव वं [ है ] सन्धेम की एवं लाने ( ? )
    " में नुह संग्रुतसारब्दुनियम दूर मा, रहा ।
      पांदरराज्या इव भगंधया ते पतापंति "
                           (टा ४१= टी)।
घाण हुँ [दै] १ पत्री, वं.ग्हु, तिउन्यो;न-वन्य ; ( विंड ।।
 १ यन, यहही फाहि में एक बार टालने का परिमाण .
 (सुगा १४)।
घाण पुन [ घाण ] नाइ, नानिश ; " दी पाछा" (परा
 १६ : हा ६४= डां : दे १, व्ह ) । "रिस हुन
 [ "र्थान् ] नालका में इंत्ने बाला रोग-विग्रेप : ( मोर
 १८४ मा ।।
घाणिदिय न [ घाणेन्द्रिय ] कनिस, कदः ( दन २६) ।
धाय सक् [हन् ] माला, मार डास्ता, विनास करता,
 वह-धापह: (ता) । वह-"घाएँत रिजन
 बहुवे " (पटम ६०, ९७)। धार्यन ; (पटम २४
 २६ : विने १४६३)
                      बरह-" ने परी विद्यार
 र्थत्नेदातक्या पंत्रहिं त्रत्याहि सिद्धि गर्वे धाइक्समाण
 पानह " ( पाना १, १८ )। वह-धार्यध्य ; ( पङ
 ££, ₹¥ ) $
घाय सरु [धानय्] सरवना, रुक्ते द्वारा मार डाउना
 विराध करवनः। वह-धायमाणः, (तुम २,१)
 कू--धार्यव्यः ( पत्न ६६, ३४ ) i
घाय पुं [धान] १ प्रहार, चोट, बार ; (पडन १६
 रा)। र नरकः (सम. १, १, १)। २ हत्य
 वितास, हिंसा , (सुम ९, ९,३)। ४ संसर ; (सुः
 9, 4)
```

```
365
             घायम नि [ घातक ] मार अवने कता, निनासक , ( य
                                                       पाइअसइमहण्णयो ।
           धायण न [ हनन ] १ हन्या, मरा, दिया, ( सुस्र २ वर्, ह
                                                                वि देवो घे । मी-विच्छर,(विने१०११)।सं
             २६)। २ वि हिसक, सार बालने नाता, (स १०८)।
                                                                  (प्राम् ४) । मह-चित्तृण , (समा ५,४१).
           पायण पु [ दे ] मायह, गरेवा, (दे २, १०८, हे २, १०४,
                                                                  घितुं , (बुस २०६)। इ—धितन्त्र , (सुन
                                                                थिय न [ धून ] यो, योन, माञ्य , (ग ११)।
                                                               चित्र वि [ दे ] मन्त्रित, निस्कृत, मार्गीत, (१)
          घायणा स्रो[हनन] मारता, हिंसा, क्व, (क्टू १, ९ ) ।
                                                               चिं) 3 [बोप्स] १ गरमो की श3
          यायय देता घायम, ( मित्र १७६३, स २६७ ) ।
                                                               चिंसु 🕽 "वि शिमिरवाम" ( मोव २९० मा ; तर
         बायावणा की [ घानना ] १ मखाना, सुरं द्वारा मारना,
           २ तुरगार सचवाना, "बहुम्मामरायाचचाहि" वानिया <sup>१९</sup>
                                                               वि ६, १०१)। २ वस्मी, मनियम (वृष्टा, ११
                                                              चिंद्र नि [दे] इच्य, कृत्रता, (दे १, १००)।
          ( बिस १, ३ ) ।
                                                              चिह्न वि [ चूप्र ] फिला हुमा, त्यश हुमा। (इर'
        घार मक [ घारय् ] १ नित का चीलना, नित की मन्तर से
                                                              ना (२६ म)।
         बचन दाना । २ सङ्दिष से बचन करना । ३ दिव से मारना ।
                                                            विणा सी [पृषा] १ द्युमा 🔑 १ रह.
         हर्म—"शारिजनेते य तमो बिनेन " ( त १८६ ) हेहः—
                                                             (£ 1, 175) 1
        षारिजितव", (सन्दर्)।
                                                            चित्त (मर) वि [हिल्ल ] केंद्रा हुमा, राजा ह्य
      बार पु [ दे ] प्राकार, फिला, पूर्ण, (दे २, ९००)।
                                                           चितुमण वि [प्रहीतुमनस् ] पहण करने .
      मारंत पु [ दे ] प्राप्त, धवर, एक जान की मीटाई, ( हे २,
                                                            ( 30 for ) 1
                                                           धिसूषा) देखां थि।
     धारण न [धारण ] किन की कमर ले होने वाली वेचेनी,
                                                          चित्र्यं
                                                         थिस्त सक [ प्रस्] प्रमना, निगजना, भव्य र
    चारिय ति [चारित] जो लिए की मन्तर से वेचेन हुमा हो, "त-
                                                          ( x 30x) 1
     तमा मोगो । सञ्चल तुक्यामा निज्ञारिकमंत्रानुन्छोति" (दर
                                                        विसरा सी [ दे ] बक्ती फाने ही जल की
     ४१) । " विगवा(? या)रियम्म वद का यसकन्द्रकडानि-
                                                          1 ( 45 th-5 t
    बीनंगां" (दरर ६७)। "विक्कारिको नि वत्तरिको नि कोहेब
                                                        चिसिम नि [ मस्त ] स्त्रतित, निगवा हुमा, मां
    विष दिनाओं मि" (तुना १२४ , ४४०) ।
                                                         " Y( )1
  धारिया भी [ दे ] निवानन विशेष, गुजरानी में जिले 'कारी'
                                                       पुष्ट प्र ( है ] उच्चर, बग, समूह , (हे र, १०)
                                                      धुट ९ [दे] ब्रेंट, एक बार में पोने बाल शनी हैं
 यारी को [दे]। राष्ट्रनिया, पश्चितियोव , (दे ३,१०७,
                                                        R 851) 1
                                                     युग्य } (भव) इन [ युग्यका ] की वेर,
धास 3 [ धास ] तृष, क्युमों को बाने का तृष ; ( दे ?,
                                                     युव्यम् । (हे ४, ४३३ , इमा )।
                                                    पुण्यच्छण न [ दे ] सेर, तस्तीक, गरिमा, (रे ६१
धाल ई [ प्रास ] १ शतु, धीर , (क्षेत्र'; उस १) ।
                                                    पुण्यति व [ दे ] मगहूर, भेड, मेडर , (हेर,14)
 महत, मोका ; (माचा , मोच ३३०) ।
                                                    पुण्युम्मुम नि [ दे ] नि शंक होटर पदा हुमा,
याम व [ यर्थ ] कांस, ताह , भ्या से लाजियां हुई , बर-
                                                    पुगपुरमुसय न [ दे ] सार्गंड वस्त, पागधंनी
स्कावेच परवसमेव" (मृत १४) ।
                                                    ($ 2, 9.8)
गरिसचा को [बासवंचा] बहर-विसंह गुर्द वर्गाद
                                                  व्यव्यव्यव्याम् । व्यव्यव्याम् । द्वाः मानः।
                                                   ध केतना । कडू-धुमुमुमुमुम् सेत , (१३१ ११
                                                 धुपा मह [धुपूप्] कार देनो। सु-प्र
                                                   ( gidi J' e-dá 155 )!
```

40 } { ति [मुख्य] पंजित, अँकी मानज से अपि निया - सः (पत्रमः ३, ११०० , सर्वि)। बजा कर [गर्ज] यरहना, गर्जन्य बरना । शुद्रश्या , F 4, 352) 1 पृंचिता । राज्यसम्बद्धाः (स. १.१) जिल हितिमा∤सी हि] क्योंतर्गीट, काकारी ; (दे गहुणी (२, १९०, महा)। गय वि [धुणित] धुली ने दिद , (इन १)। षा देनोः सुसा यह—सुरुपनि (नाट)। रणाम वि चि घुणित है १ पुना हुमा , १ आन्त, मटना मः(देद, १६)। ने अप वि (दें] गवे भित्र, अन्वेभित्र, (दे १, ९०६)। त)देची धुमा। युना , (थिंग)। यह-1)(421, 1)1 श्रिमिय वि श्रिमश्रमित । शिवने 'बुन पुन' कावाद ह्या हा दर , १ न् 'तुम पुम' ध्यनि , "महुग्रांभीरशुमनुमि-बामाले" (सुरा ४०)। म प्रद [पूर्ण] यूनना, यहाका किना। युन्नहः हे ४, १९७ ; पर्)। वह--धुरमंत, खुम्ममाण : हेंदा ३३; यामा १, ६)। शह-पृम्मिकण ; महा । । मण ॥ [धूर्णन] क्यासा अम्प ; (हमा 🕕 नेमय वि [चूर्णित] पुना हुमा, पर की तरह तिरा दुमा: सुरा ६४)। रिमा वि [घूर्णिन्] पुनने बाला, किने बला, बस्स्वार [मने वाला , (टम प्र ६२, गा १८०; गडड)। रग ९ (दे] एह तरह का पत्या, जी पाप वगैरा की विकता एते दे दिए दन पर दिना जाता है ; (पिंड) । गहुर देखे बुरुबुर । यह—चुगहुर्दन ; (श्रा१२) । रावक बाद [दे] प्राचना, प्रश्नाना, गरान्ता । "प्रश्नकी श्या" (सहा) । रमुः मद [युरमुराय] पुरनुराना, 'बुर शुर' भाराज बर-ता, ब्यात्र वर्गेरः या बोलना पुरत्रांत्रिः (वि ४६८)। बह-घुरायुरायंत ; (छन ४०४) । रयुपि ५ [दे] मार्ह, मेरर, मेह, (दे २,१०६)। :

बुलिय व दि] पार को बड़ी निकाः । दे ६, बिरुबुन) देश पुरुषुर । बुरुबुर (सप) । क -घुरतुर 🗦 घुरजुरुसमा ; (मा) । चुल देनो घुम्म । पुरत ; (ह. ४,११३) । चुलकि भी है | हाबी की माराज, किलाब; (रिंग) ञ्चलब्रह कर [ब्लब्लाय] 'तुर पुर' कार प्राप्ता वह –चुलबुराधनाम ; (ति ६६=)। धुलिश दि [धुर्त्येत] पर राग इन हमा ; (हना)। चुल्या मी [दे] कंपनीनेय, इंजिय जन्तु की एक जाति। (977 1)) चुमण इंनो चुनिण ; (इसा)। धुमल एक [मध्] बदना, दिलेहन करना । युक्ता (Ex. 223); धुमन्त्रिक हि [मधिन] मधिन, रिडोहिन ; (पुना) । घुनिण व [धुनुण] इत्त्व, मुण्यित स्व-तिहर, कार : (ह १, १२८)। घुमिषाल्य वि [घुमुणयन्] बर्जन बाता, बर्जन-युक्तः (थुन्स) । चुमिणिय वि [दे] गवेविन, मन्त्रियः (१२, १०६) । घुलित व [दे] धुन्य, कर्त्रव ; (यर्) । धुम्निरमार न [दे] बास्तान, शिरह के बाना में स्नान के परने लगाया जाना मन्गादि हा निवान ;(है २, ९९०)। मूत्र पुंची [भूक] दल्ह, दल्ह, पनि-विगेर ; (यापा १, ८ ; पटन १०१, १६) । सी-पृहे ; (विरात्त्र,)। "रि पुं ["रि] काह, कीमा, वायम ; (नंदु)। भूणात वुं [भूणाकः] स्वनाम-रूपात गरिनवेश-विशेष क्यि; (प्रावृ १)। घृरासी [दे] । बर्ग, और ; २ वतद्य, गर्गर का मवत्व क्लिर; "गर्कण वा ध्रामा वर्जीत" (सुम 3, 3, 48)1 धे देखे गह = मर् । घेर ; (पर्)। मनि-धेच्छ : (नित्र ११२७)। वर्न-- पेन्छ ; (हे ८, २६६)। कहि---चेयांन, चेयामाण ; (या १००; मत ; स ११३) । संह--घेऊण, घक्कुण, बेक्कुण, चेतुत्राण, चेतुक्षाणं, चेतूण, बेतूर्ण ; (सट--माटनी ७१ ; वि १८४ ; हे ४,२१० ; रि; स्व; प्राप्त) (हेह--चेतुं, चेतूण; (हे ४, २९० : परन १९८, २४] । ह—्येतस्य : (हे ४, **२**९० ; श्राप्त } ३

```
धेतर कु [रे] केम, प्राह मिनान-वित्र , "वा
                          यदा नेदर्गहेति हु वदनेतामस्य स्थानकर् "
                                                                 षाइत्रमङ्गहण्याते।
                        घेक्कूण देखां छै।
                                                                          घेल हेना घुम्म । यन्त्रह, (
                       धेनुमण हि [यदीनुमनस् ] यहच बाते ही इच्छा बजा,
                                                                  (30
                                                                           (इन्स् मा ३०१ ; इना)
                                                                         घोळ मह [घोळच्] । हि
                                                                         (A toxx ; 4 x, 41)
                     घेलन
                                                                       घोल न [दे] हारे में छाना हुमा
                                                                      घोलण न [ घोलन ] कांब, ला
                    घेवर [ दे ] देखां घेउर ; ( दे ३, १०८)।
                                                                     घोलणा भी [घोलना] क्यर क
                        े वह [या ] क्या, क्या बदना । यंद्रा, (हें ४,
                                                                      गेलाकार होना ; (स ४७)।
                         १०)। क्र पोहरतः (व २६०)।
                   ग्र—पोहितं, (इमा)।
                                                                    घोलवङ } न[दे] एक प्रकार क
                                                                   योलयङ्ग (यमा ३३ : धा ३० ;
                मोड देना । युस्म युद्ध ; (वे ६, १०)।
                                                                  धोलाचिम है [ घोलिन ] मिनिन है
                       तुन्तं [ पोट्टकः ] पास, स्टब्ह इव ; ( वे २,
                                                                   हमा . (स ४, ११)।
                       १११ , वस १२ ; वस ; वर २०००)। १ तु
              पाडम | हालेका स एक तेन , (या १)। रेक्सम
                                                                 बोटिय न [दे] । विजानन , १ व
              व[ स्तक ] मानात ; (स्त १६० थे)। भावि
              इ शिव मन्त्रांत्रनामक मीतापुरंत, वर्शकार ;
                                                               थोलिय है [ यूचिंत ] समाया हुमा, ( र
             (मका)। द्वर न [सुन्न] केन्त्र सास्त्र स्तिन ; (स्त्र)।
                                                              घोलिय वि [ घोलित ] रमश हुमा, मर्रा
           घोडिन १ [ में ] मिन, क्वान , (बुर १)।
                                                              घोलिर वि [ घूचित् ] दुसने बला, बरूबर व
           पोड़ा को [ पोटो ] १ वार्त , १ इच-विरोह , "ग्रीवनित
                                                              ( 41 ffc ! a fnc ! 122 ) !
           हा विकार कार्याच्याच्या १ ( स ३१६ ) ।
                                                            योस मह [ योषय ] १ क्षेत्रव इत्ता, ही
          योग न [ योग ] यह वा नाव ; (नव ) ;
                                                             वादिर हरता । २ चोलना, क व मानाव हे
         धीयम् इ [घोनसः] एक कम का क्षेत्रः (वास ३६,
                                                            क्षेत्र : (हे १,१६० ; प्रामा) । प्रशे—प्रासात
                                                          धोस हु [ योप ] १ देश धावान ; (०.
       घोषा श्री [घोषाः] १ नाइ, नामिसः (पासः)। ३
                                                          १४) । १ बामोर-पन्तो, बहोरी का बहना।
        को का बाद, रे मुम्म का मुख्य प्रदेश ; ( से १, ६४ ;
                                                          १(०)। १ वंड, मोलों हा बारा, (य १,४ साम्
     पोर कह [सुर] क्या में बर बर माताब काना । चोरिहे :
                                                         व स्तानित्रामार देशों का दक्षिण दिशाका हन,
                                                        १ त्यान माहि स्वर्तवरोग , (वर १०)।।
      (सा देक)। कुन्स्तिः (स अवस् , उत्र
                                                       (मग (, १)। ७ न देव-विमान-विरोध (स्म १६०
                                                       सेम वृ [ सेन ] बातां बाताः व प्रांतनः
   घोर में हिं] १ बाजिन, निर्मानन, १ वुं नोब, बांव-सिनेट,
                                                      एक केन सुने, (वड्म १०, १५()।
  योर में [ योर ] मर्था, मरूनक, मेंस्ट ; (वस १, ६,
                                                   योमण व [योपण] । कवी मानाव (नि
                                                    <sup>डोहरा</sup>, जिसेस किस कर आहेर करना, ( एव)।
  1 - an jat 1 24 3' 4x3 ' 334 455 )!
                                                  थोसणा हो [धोरणा ] कार देखे , ( बार १
 Frie Frat | ( TE ) |
मंदिव[दे] राज्यन्य वी रहकारी; (दे ३, १११)।
                                                                                           11.
                                                धोमय न [दे] संब हा वरा, संब सतने
                                                                                            1
                                               योसाइर् से [ घोषातकी ] स
```

टर्स भूसी दि उत्ह स्त्र में होने कटी ठटानिगेषः ; ही (दे २, १११ ; एकः १ — पत्र १३)। वण न [धोपण) धारतः होंग्रे निटन स्त्र अदिर ; (तर २११ टो)। प्रति [धोपित] जहिर निजाहमा; (त्र १)।

तिरपाइमसद्मद्दणचिम्म घमाराख्यंक्टपो देग्हमे तरेगे स्मद्ये।

--

च

च] राष्ट्र-स्वातीय स्थानजन-वर्ष-विदेश; (प्राप; प्रामः)। [च] इन मर्वी में प्रयुक्त किया जाटा मन्यय ;—९ . वया: (इसा: हे २,:२१७) । २ पुन:, स्टि: म ४, २३ ; ६६ ; प्रास् १) । ३ भरपारद, निम्बद; :१३)। ४ मेद, विटेप; (तिबू १)। ४ मेतिस्य, . रस्य ; (माचा : निवृ ४)। १ मद्भदि, सम्बद्धि [१)। ७ पार-र्र्डि, पर-र्रग्ट ; (निष् १)। क्षी [स्वक्] चन्ही, त्वचः; (६६) । ंदि [शक्ति] दा समर्प हुमा हो, राष्ट्र (६ ६, १९) । विद्ये खविस ; (पहन १०३, ११६)। ंदि [स्थकः] सुन्त, परित्यन्तः (इनः १,४६) । ंदि [तयाजित] दुश्तामा हुमा, हुक्त क्रमा हुमा ; 1 (12 t । देखें खय ≔ स्पर्1 । देखें चु 🗷 रेगं: चेरम; (बर्)। ो देखें खप≕त्यह् । इच } स्परंद्रे चु। ९ हेळे चेहब: (६ २, १३ ; इन) । 🗷 र्ड [स्टेंब] साव-शिवेष, सेव साव :[(हे ५,५६९) । डा देग्द्र खु। गर्म } रेस्टे खप≕पर् । **™**) [(ग्री) वि [चरित] संद, ग्रीत ; (मरि २१३) । व्य देशे प्र । वि[चतुर्] चप् हंस्या-विहेद ; (हर ; क्रम ४,३ ;

जो ३३) । °बालोस सॅन [°चत्वारिंशत्] फौमार्टस, ४४; (निण्धः; ९६६)। "कहन [काष्ट] पर्तो हिया ; (इना)। 'कड़ी स्री ['काष्ट्री] चौह्य, चौत्रय, दूर के चारों भोर का काठ, दूरर का दाँचा ; (निदू १) । **'बकोण दि ['कोण'] चर कंप दाता, प्युरह : (पादा** १,९३)। यान देखी चडकक≕चुन्हः (६'३०)। 'गह स्रो [गति] नरह, निर्मेष, मनुष्य मीर देव की दोनिः (क्म ४, ६६)। गरम हि [गिर्डिक] चरों गडि में बन्द रुले बन्तः (था ६) । धमण न [धमन] करो हिराएँ; (इन)। शुण, "सुण वि [शुण] श्रीका; (६ १,१७१ ; यह)। "चत्ता सी [चत्वारिंशत्] इंस्पा-विशेष, चौमार्टान; (मन) । 'खरण ई ['खरण] चौरक, चरपेरके अन्द्र, पगु; (टरण्ड्≖टी; हत ४-६)। 'खुड पुं['चूड] विकायर वंश के एवं राजा का नम ; (पड़न १, ४१) । ह देशों दिय ; (१ २, ३३) । "हाणबद्धिल ति ['स्यानपतित] चार प्रधार द्या ; (मग)। "पाडर् साँ["मयनि] मंख्या-विरोप, शौरायवे, £४; (ति ४४६) । "लउप नि ["नवत] चौग्रदहर्गं, £४ बों ; (प्रज्ञ ६४, १०६)। चित्रह देखे चित्रह ; (स्म ६७ ; धा ४४) । 'पना (मा) देखा 'पनन ; (दिन) । "तिस, "तीस न ["वि"शन्] चौरीत, २४; (मग; मीर) I 'तीमहम देखे 'चीसहम ; (पत्रम ३४, ६९) । 'तीसा की, देखे 'ठीस (४६) ! 'चालोस ति ['चत्वारिंग] बौमार्टलरें, ४४ वें ; (एम ४४, (८)। चिसहम दि ["विदेश] १ चैटीनरों, ३४ वीं; (बम)। १ न, बीटर दिनों का लगाजर दरवान; (बाया १,१—यर ४६)। "त्य वि [थ] १ कींदा ; (हे १,१४१) । २ ईन् डारम ; (मा),। रियंबडस्य दुन [स्वयुर्ष] एक एक उत्तरतः ; (मन) । रियमस न ['यमख] एव दिन का द्रारास ; (मर)। 'त्यमित्र हि ['यमचिक] क्लि एक हरतम किल हो बह ; (एम ६, ९) । दिवर्मगण र [धोमहरात] राज्य के स्वयंत्र के पहुँ हिन, क्लिके बाद प्राप्त महेटा मने पर बाउँ रि; (य (४(म) । लियों की [भी] १ चैये । १ संस्कृतिक, चैये स्टिल ; (इ.८)। ३ टिबेन्सिटेस् (स्म ६)। हिंतदेतो हिंत, (एक)। 'दम वि. ९, ['इछत्] संन्य-सिंग, चौराः (अर २, ची ४४) १ देमसुन्दि ई [दिवाईईमा^भारेत १९ करो हा हुन हाला हुन्ने; (होन १):

'(जर्वा 1, १४)। दसदा म [द्रावा] चेंदह प्रधरो थं', (मर'१) । 'दसी मो [दसी] मिव-मिरेड, चंतु-देती ; (रवेष '७१) ने दे ते व [वस्त] एंगनन, इन्द्र हा हाथीं । (इ.स.) । इस देख दिल ; (मण्)। इसपुत्रिय देशी दसपुटिर ; (भर्ग ६, ४)। दिसम रि [दिस] र्विदर्श, १४ वीं ; (पत्रम १४, १६=) ।' १ जनानार छ तिनों का त्रासम्, (सम्)। इस्तो देगो "दसी; (क्ष्म)। दस्तारसय व ["दशोत्तरशतनम] एक वी बीर हर्ग, ११४ वीं ; (वडम १९४, रहे) । इह देशों देख (वि १६६, ४४३) । 'इही देखें 'इसो ; (बाब) । 'हिसं िहिस्ति म ['दिशा] बारों दिसामाँ की तरक, बारी दिसामी में (भग , महा , हा ४, १) । दा म [धा] बार प्रकार से , (इस) । भाषा नं [ब्रांगन] सन्, जुन, अन्ति भीर मन पर्यत्र हाल; (मन, महा)। नगणिति [सानिन्] मित कोर्रः बार कान बाला , (पुत्त = ३ ; ३१०)। "पुष्ण देनो पन्त । भूपनारम वि [भूज्यास] १ बोस्ती, · ६४ वाँ । १ न तगानार छव्यीन दिनों का उसाम ६ (कावा भारत, ६४, (राम २०, १७, तम ७१, सम्य) पत्नांसहम ति [पद्मारात्तम] बीक्ती, १४ वा । (पत्म १४, (द)। "पर देशों "पर्यं, (बारा १, ८; को ११)। "पाल व [चाल] सर्वत देर का प्रहाक केत ; (ताव)। पर्या, चंत्रवा सी [चित्का] व क्षेत्र हिरोप । (मिना) । द अन्य निये की एक आहि । (बंत १) । 'जार मी ['पदी] देशी 'चर्या ; (जन १६०) । 'एरल देनों चलनं (गम ७३)।' रेपन पुनी [पर] १ कीतमा प्राची, करू ; (बी ३१) में ११ व मानिव प्रशिव एक विया कार्या (शित १३६०)। च्याद व [पय] बरस, बेंग्स, बेंगमा (हवी १००) । खुड ति [पुर] बार पुर बाला, बीरार, बीरार, (रिवा १,7)। एकार हि [काल] रुपे च्युड़, (बांबा १) १-वर्ग ११) । ध्वादु वि [बादु] र बार हाथ वाना, १ द क्यून, औरन्य (तर) । क्यून [सुत] देशी बाहु, (बर हंतूम १ (१, १)। भेग झा [भट्ट] बर प्रस्त भरतिनम् (प्रं र, १)। भेगी श्री [भूति] क्र इस्त, पर सिना : (सत) । नास्या औ [नागिका] चेतः पर का एक नाम् (सद्भे अहिता वी [मृत्तिका] दारे दे ताच दूरी हुई निती ; (जिनू 1=)। महिल्ला न चउक्कर वि [चतुष्कर] बार हाव बडा

["मण्डलक] सम-माजा, निष्दनाता,() मासित्र हेगा चाउम्मासित्र, (शक) म्मुद, वें [भूग] । वज्ञ, विल्ला, (ररा १८,४८)। १ वि, बार मुँ (बारा, " (मीर् ; मच)। "याग पुन ['यर्थ] कर .. बसुराय, (नितृ १४)। "यणण, 'यल सन [५० चौतन, पक्तम भीर कार, १४; (म १६६,१% ण्र)। "बार दि ["द्वार] कर स्वाने कर स (इमा)। 'बिद वि ['बिय] करें प्रश्न हा(। ना ३)। 'बोस सीन ['बिंशनि] चैनेन । बार, २४, (सन ४३, ई १ । ति ३४)। (बन) सी ['विरानि] बीन मौर कर, वेची, "बोसरम रि ["विंसतितम] : बीरेर्स / ए ४०) हि श्रे व्यारह हिनों का लगानार उसन। "ब्यासा देनी व्यस्त । (भाषा १,१)। व्यार ह चार बार, चार दस ; (हे १, १४१, इस)। देखी विह ; (य ४,२) । व्याम देखें ४३)। व्यक्तिहम श्ली विनिहम ,। °संहि सी [चिए] चौताड, मार झौर व क्यें)। सिहिम वि [परितम] बीत ४७)। स्सर्हि देखों 'सहि। (कार्) [शास] बार शासामां से पुत्रा पर , । हिंह, हिंहण पूर्व [हिंह, कि] बीहा, शा शा ३७ : दुस ४११) । हसर दि [सर थड वीं , (पडम थ४ , ४३)। 'हत्तरिमं बीट्नर, वनर और बार , (रि २४४, २६४ [ध्या] चार शहार से , (टा १,१, वी १६) बडक्क व [चतुच्क] बोहरो, वर बन्दर्श (mg x + , gr 9x , un , gm 9x) 1 संव" (अस्य)। चंडकेका [दे चतुंदक] चीड, चीरहा, जा मितना हो वह स्थान । (दे १, १, वर् : बर बीप ; कृष्य, बागु , हुर १ , लोच १ ; श्रु १,६) रे धीयन, प्रार्थका , (सुर २, ०२)।

खडककोर्र पुंचि विश्वकिय, सिरका गढ पुत्र, रे

केसभानी [दे चतुष्टिका] भील, बेटावीट ; . हर ३, ७३.) । स्टाऱ्या सी [दें] सप-विनेष : (सन ७, म) t गोर बन [चीबोल] एन्द्-विरेक् (विष्)। म ; (दिंग) । देवि [सन्दर] १ निपुप, दल, हमियर ; (पन्म ; वेगी)। र विरे, निरुप्त है, हरियारों है ; "क्डी गयर र"(ब∘)। रंग वि [स्वतुरङ्गः] १ चर धरेन ब्लडा, बार दिनारे डा; (सैन्य दर्गिः) (स्तः) । २ त् चल अस्त, चले धर: (उन ३)-। रंगि वि [चनुर्राहुन्] पर विनाग बाडा, (मैन्य पर्गैनः); !—'पी ₃ (सुरा ४१६) । रंत वि [चतुरन्त] । यर पर्यन्त कता, यर संबंध डा ; २ पुं संसाद (भीत) । मी-निता [ना] हरियो, स्केंद्र(टा४,६)। ः शंस कि [चतुरस्त] चतुरक्षेण, बार कीय काता; मगः प्राचाः दं १२) । रिसा हो [चतुरंसा] छन्द-विदेर ; (पिंग) । रय पुं [है] चीम, चनुतम, मीब का क्यान्स्यान ; सम् ९३ = टां) १.. रस्स इंद्ये चडरंस ; (कि २०६७)। **श्रम्बिंघ १ दि ।** बादसहन, सज्ज्ञा कादिसहन ३, दे है, ७)। १राणग वि चितुरानकी १ चर मुँद कता। २ पुँ 🗷 , दिवाता ; (गडट) 🛚 उससी) हो चितुरसीति । संस्थानीय, चौरासी, इरासीर् ∫=८ (बी ८४; स्प ; टक्क; प्रश्न २०,९०३५ म ६०; इन्ने) । १ इरासीर्म वि [चतुर्यातितम.] चौरातीरी, 🗝 वौ : (पटन मार, ९२ ; स्मा) । इससीय मान [चनुरसीति] चीरावी ; "बरसवीर्य कु ग्राह्म बस्त इल्लाना" (पटन ४, ३६) । उरिदिय वि [चनुरिन्द्रिय] त्वह, बिहा, बाह भीर बहु रत चार इन्द्रिय बाटा; (सन्दु); (सद्दुडा १, १३ |वॉ ४२)। ।डरिमा 👪 [चतुरिमत्] श्रतुरा, राहुर्यं, निरुद्धाः ; (इहि १६)।

चडरिया ,) मी है , दिनमंद्रम, दिरहमाम ; गुज्यती चडरी र् में 'केमें' ; (रंग ; सुन १४२) १०० ('२४ चउरुतरसय मि । चन्रत्तरस्ततम । एकौ.वे सौ,१०४० वाँ ; (पत्रमा•४,३४) । Rolling . चउसर वि.[दे] चौंगा, चार माग बाता (हागदि); (सुनी £90; £33),I चंडहार 9ं [चतुराहार] चर प्रहार के भदार, मगुर, पान, खादिन झौर स्वाहित ; " ईंगानिकारि न संजीति पटहारसरि-हारो": (हुना६७३) । चओर पुन [दे] पात-विशेष; "भुनावनार्व य मायनप्रविताए मक्ष्यां स्वाप्ती क्षेत्र क्ष बमोर १९वा (बकोर) पीत-तियाः (पह १, १) चत्रोरग रेजन २०) । चबोवचर्य है [चयोपचियक] र्रद-हानि कहा, (इंग २१≂ टो; झावा) । चंकम बह [चङ्कम्] १ वार वीर चटेना। २ इयरे ट्यरे मूनना। ३ बहुत महस्ता। ४ देवा चटना। ४ चटना-सिला । वह-चंकमेत्;(स्वा३०स्); ६=६रो); हेह-चंकमिठं: (म ३४६) । हः—चंकमियव्य ; (मि ४४६) । चैकमण न [चङ्कमण] १ इयर देवर व्रतंत्र ; २ बहुन चडनाः है बारेबंद चडनाः ४ देदा चडनाः १ चडना, दिल्लाः (छम३+६% सामा५.१) (चंकमिय वि [चंकमित] १ जिन्ते चंद्रमण विदा हो बट्टा १-६ कस्टेकी ; (टरंप्र= टॉ; निदृश्) । ; ; चंकमिरं वि [चंकमितृ] चंकमय करने वाला ; (सर्व) । वंकमा मह [वंकम्य] देखा चंकम । वह—चंकमांत. र्चकम्ममाणं; (या ४६३; ६२३; दर १ २३६; कट २, १; इप) i चंक्रमण देखे चंक्रमण; (टाया, १; १—पत्र ३८)। चॅकम्मित्र देना चॅकमित्र ; (चे:११,६६)। चंकार पुं [चकार] कर्का, 'व' भ्रत्य ; (य १०) । चंग वि [दे, चहुं] १:इन्टर, महेंद्रर, रहा; (दे ३,१; दरष्ट १२६; उत्तर्भः । इत्र ३१ ; मन्म ६ यो ; इत्यु ; प्रापः ; म्प≒ मर्चि,) (• , , , , , , , कंबिर हुं [दे] राष्ट्रभावी, राष्ट्र का बका हुमा होटा पात-क्रिंग ; "पंडा पंतिर य" 🐔 चंगिन 🗯 🕞 चाहि

```
भारता । (वित्रे १००) वर्ष द्वाद्य है ;
                                                  पाइमलहमहण्याची।
            127 167 )
         चीती भी हैं। रोबरी, कप्रदी, तुंच माहि का बेम पाव-विते ह
                                                           धरवीय है [ भयोत ] वात्रविनों के एक शर
        वंत ५ [ बच्च ] । श्रहामा मह-मुक्ती हा एह महाना-
                                                           नाम ; (धावम)। भागु वृ [मातु ] वर्ग क्
         व। (रह)। र न देन-निमान-निरोध ; (रह)।
                                                          क्षेत्र विद्या विद्या विद्या ।
      वनपुर व [ है ] मारान, मानवात, "वारन्तवनंत्रोति
                                                         (मान१७)। विहिस्तय वुं [ भवनंसक
                                                         (म्हा)। बाल वं [ बाल ] हा निसं
     चंत्रपार न [दे] मान्य, मूठ, महुन, व्हंबन्दरं व महिमां
                                                        सेण वं [ सेन ] एड एका का कम ; (क
                                                       न [ नतीक ] क्षेत्र करा हुमा मूल (तन
   वंतरीम वृ [ चन्तरीक ] मन्द्र मन्द्राः (वे १,६) ।
                                                     वहस्र ३ [ वण्डामु ] वृर्व, वृरम, एवे ; (ब्लू)
   वंतन ह [ चातन ] । कान, कन्ना (कन, कार 1)।
                                                    वंडमा इ [ कन्मस् ] क्रमा, बाँद । (शव)
    रे दे राज्य के एक प्रानट का नाम , (पत्रम १६, २६) ।
                                                   वंडा को [बच्डा ] १ कारादि हन्य की सन्तर
  वंचता हो [ वान्तता ] १ वानत हो । ३ वान्ततिवेद ;
                                                    (क रे, रें। सम ४,१) । १ सम्बान् बाह्यस्य वी राम
वंदन्तिम है [ वस्तित ] वन्तत विस हुमा, "तकता
                                                   (df10) 1
                                                 वंडातक न [वण्डातक] वो का परने क कार्य
विवा को [बाबा] १ नरहर को कहाहै। १ करोहर को
                                                वंदार हुन [ है ] अवदार, भारतागार । (
                                               वंदाल इ [ बण्दाल ] १ वर्णका अर्थ
बाल (बा) हेवां बंबल ; (वच) ;
व को [कार ] चीच, पत्रों कर कींड़ है है १,९१)।
                                               माप्रवी हे उत्सन्त । (धाना । इस
ज्विय न [ दे बाबुरित, बाजुबित ] इरित कान
                                               बोम : ( वत् १ ; म्यू ) ।
                                             वंडालिव हि [ वण्डालिक ] वचाल-संक
गलरप है [ है] रामाज्यम् उनहेर, (ब्यः बीत)।
                                             वाति में क्ला ; (क्ला 1)।
र्थ ( बम्बुका ) १ मनार्थ देव-वितोष ; १ तत्र देव
                                           वंदाली को [बण्दाली] १ बद्याल-मानेत
                                           ( and A 184 )
                                         वंदिम हि [ वे ] १०, किन, वाटा हुमा ; ( वे १
[ कम्बुर] कात, वंबत ; (क्यू)।
                                         वंडिकक कु [ है वाण्डिका] रेव, मुना, हर, रे
[तम् ] कितना । चंत्र । (तः) ।
(42) dient | 417 , (42)
                                         ($ 1, 2, 4K | HR VI) |
                                        विश्विकाम में [हे वाण्डिक्यत ] १ तेन नह
t; (15);
                                        कार काला, अवस्ता । (काला १, १ : रख १, १) व
TE ] | 1823, 30, 520, 124 (804) | 2
क्या : (क्य १६ : होन) । ३ वाने क्यांने, क्येंप-
                                       " " " ( TE ; 27 ) ;
                                      विहात वृहि दे कोष, क्षाप, क्षाप, १ वि विहर, क
में १: १०; सिन; बाबा १.१८) । ४ वेक्ची,
है रेश्की है में राष्ट्रम नेत के एक राजा का
                                    वंडिम दुनी [चरिडमन् ] बताना, प्रकारन,
(3(v) 1 ( six, six, (27 1)) Taxes
रहें, हों (तह रहा)। क्लिस के विकास है हैं कि हुए (दे हैं है)।
                                   वीहरा हो [विज्ञा] देखे चंडी, (अस
```

चंडी सी [चपडी] १ क्षेप्र-दुव्त सी; (गा ६०८)। ·२ पार्वती, गौरी, ग्रिव-फ्ली ; (पाम)। ३ दनस्पति-विरोप ; (परा १)। दिवन वि [देवक] चन्डी कामक ; (सम ९, ७)। चंद् धुं [चन्द्र] १ घन्द्र, चन्द्रमा, चाँदः (ठा २, ३; प्रास् १३ ; ४१ ; पाम) । ९ द्रा-विशेष ; (टर ७९⊏ टो) । १ रामयन्द्र, दागरयो राम; (छ १, १४)। ४ राम के एक मुभट का नतम ; (पडम १६,३८)। १ रावच का एक मुमट; (पडम १६, २)। ६ राशि-विशेष ; (भवि)। ण् प्राद्शादक बस्तु ; प्र कपूर ; ६ स्वर्ण, क्षेता ; ९० पानी, जतः (हे १, १६४)। १९ एक जैन भाषार्यः (गच्छ ४)। १२ एक द्वीन का नाम, द्वीत-विशेष; (ओव ३)। १३ राघावेष की पुतरी का दाम नदन, झाँख का गोला ; (इदि)। १४ न् देव-विमान-विरोप; (सम ⊏)। ११ इंबर पर्वत का एक शिलर ; (दीत)। "अर्थत देखो कत ; (विक १२६) । "उत्त देखो "गुत्त; (सुदा १६८)। "क्तंत पुं["कान्त] १ मदि-विशेष ; (स ३६०)। २ न देव-विमान विशेष ; (सम ८०)। दि चन्द्र की तरह माद्लादक ; (माबम)। "कंता सी ं [कान्ता] १ नगरी-विग्रेय ; (उन ६७३)। १ एक .इतकर-पुरम की पन्नी ; (सम १४०)। 'कृड न ['कृट] ८ ९ देव-विमान-दिशेषः (सम ⊏)। १ इषक पर्वत का एक शिवर ; (टा =)। भुत्त पुं [भुम] मीर्ववंश द्य एक स्वनाम-विख्यात राजा ; (विते प्र.२)। पुं['चार] बन्द्र की गतिः (वर्र १०)। 'चूल पुं ['चूड] विचाधर वंग्र का एक स्वनाम-प्रतिद ्र राजा ; (पडम १, ४१ ; दंस) । 'बछाय ९ं ['बछाय] भग देश का एक राजा, जिल्ले भगवान् मल्लिमाय के साप दीला ली थी; (यत्या १, २)। जिसा सी ्र ["यरास्] एक इन्त्रकर पुरुष की पत्नी; (सन ११०)। जिमस्य न ["ध्यंज] देव-विमान-विरोप : (सम ⊏)। "पात्रस्ता स्त्री ['नरता] शवरा की वहिन का नाम; (पडम र् १०, १८)। 'णह पुं ['नख] रावय का एक नुनट ; (पडम १६, ३१)। 'णहीं देखों 'णक्खा; (पडम ७, (६८)। 'णागरी सी ('नागरी] जैन मुनि-गर्व की एक शानः; (कन)। "दरिसणिया मो ['दर्शनिका] रत्त्व-विरोप, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-रर्शन के उपत्रदेश में दिया बाता टल्डव ; (राज)। दिण न [दिन] प्रतिरहादि तिथि; (पंच१)। 'दीच पुं ['द्वीप] द्वीर-विरेप;(जीव ३)। दि न [ोर्घ] प्राथा चन्द्र, प्रश्नो निधि का चन्द्र; (जीत ३)। पिडिमा सी [भितिमा] तर-विशेष ; (छ २, भिष्मित्ति सी भिष्नति । एक जैन टराइम प्रम्य:; (डा २, १-पत्र १२६)। "पञ्चय पुं ["पर्वत] वस-स्कार पर्वत-विशेषः (श. १,३) । 'पुर न ['पुर] वैताऱ्य पर्वत पर स्थित एक विदायर-नगर; (इक)। 'पुरी सी [पुरा] नगरी-विशेष, भगवत्न चन्द्रप्रम को जनम-भूमि ; (पटम २०, ३४)। "प्पम वि "प्रमा । चन्द्र के तुल्य कान्ति वाला; २ पुं. बाटरें जिन-देव का नाम ; (धर्म २) । ३ चन्द्रकान्त, मिंप-किरोप ; (पर्या १)। ४ एक जैन मुनि ; (ईस)। ४ न् देव-विमान-विग्रेपः (सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासनः (पाया २, १)। प्पामा सी [प्रमा] १ चन्द्र की एक मत्र-महियी ; (दा ४, १) । २ मदिरा-विरोप, एक जात का दारुं; (जीव२)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या; (टर १०३१ टों)। ४ इस नाम की एक गिविका, जिसमें बैठ कर मग-बान् ग्रोतजनाय भौर महावीर-स्वामी दीजा के जिए बाहर निरुते ये; (मादम)। प्यह देखा प्यम; (क्यं; सम ४२)। "मागा को ["मागा] एक नदी; (ब ४, ३)। भिंडल पुंत [भिण्डल] १ चन्द्र का मगरत, चन्द्र का विमान ; (बं ७ ; भग) । २ चन्द्र का विम्ब ; (परह १,४) । "मग्ग वुं ["मार्ग] १ चन्द्र का मगरत-गति के परित्रमय ; २ चन्द्र का मण्डलः ; (मुज्ज ११) । "मणि पुं.["मणि] चन्द्रशन्त, मरि-विग्रेष 🕫 (विक १२६) । 🖺 माला स्री [भाला] १ च्यादार हार ; २ छन्द-विगेप ; (पि ग) । "मालिया को ["मालिका] वहो प्रॉक मर्प ; (मौर) । भुद्दी स्रो [भुषो] १ चन्द्र के समान माद्दादक भुष बाली सी; २ मीता-पुत्र कुरा की पत्नी; (पडम १०६, १२)। रह पुं िरय] विचाधर वंश का एक राजा ; (पउन ६. १५; ४४)। 'रिसि पुं ['ऋषि] एक औन मन्यदार मुनि; (पंच १) । 'लेस न ['लेश्य] देव-विमान-विरोप; (फ़न =)। लिहा सो [लिखा] १ पन्द्र हो रेखा, पन्द-कता । २ एक राजनचां; (तो ९०)। °वडिंसम न [भवर्त-सक] १ चन्द्र के विमानका नाम; (चंद्र १८)। १ देखी चंड-यडिंसगः (टत १३)। 'घण्ण न ['वर्ण] एह देव-दिमानः (सन म्)। वियण वि विद्ता १ पर के तुत्व माइटाइ-जनह मुँह बाता; २ पुँ राजन बंग का एह राजा, एक संदा-यति; (पडम १, २६६)। "विषय पुन विकस्य) चन्द्र का

5:

```
निरम्भेत्र ; (को १०)। 'विमाण व ['विमान]
                                                 पाइअमाइमहण्याची । .
             वाबा निन, (वं )। निनासि हि [ निना
            निम ] कर के इस्त मन्द्रक (सव)। चीम व चिम ]
                                                            ['बर] मगलकारक वड़ा, (जीतारे)। 'याल
            ६६ वि.चा नंग ; (मा) । "संवच्छर व [ "संवत्तर]
                                                            एक साञ्जी स्त्री, भगवान महाबीर, की प्रेयम नि
           वर्गातिक, बच्च मन्त्रों में नियान संक्वार , ( बर् १० )।
                                                           बार व (पिति) स्नाम-स्थात एक एका, (क
           मान्त मा [ भाजा ] कहातिका, कटारी । (१ रे. ६)।
                                                         चंद्रणमं पुन [ चन्द्रनक ] १ अपर देखा ।
          मानिया मा [ शानिका ] महानिका । (बाता १,1)।
                                                          बन्त विकेश, जिल्हा क्लेस की जैन बाद बीन
          विग व [ अरू] के बिल्व लिंग (सा द)।
                                                         में रमते हैं.. (कह १,९ इ जी १४),।
          निहुत विष्णु के दर निमन . (यन द)। 'सिरी
                                                       बद्धा भी [ बन्दना ] मानान महानीत भी द्वान
        मी (धी) दिश्व बुनकर पुरत की मी का नमा। (बाबू
                                                        कन्सकाताः (सम् ११९ वर्षा) ।
        १)। स्तिहर १ [ जिल्ला ] विकास बंस का एक सामा
                                                      चंद्रणी न्यों [ दे ] बन्त को वन्ती, रोहियों । विद
        (राम १, ११) । मृत्यं मावणिया, मृत्यामाणिया
                                                       वस्यांबोगों" (वस) ।
       के [ मुक्तांनिका ] बनाइ का कन होने वर होनी जिन
                                                     बेरम व [ चन्द्रमास ] चन्द्रमा; चौर ; (मग्)।
       ग्ला दारा बना कर की सर्व वा स्त्रीव, और जाद
      रिक्म में दिस जाता कथार, (मंग १९८१, दिस १,२)।
                                                     चंदवडाया स्वी [ है] जिलहा, बापा सरीर हहा हरे ह
                                                     . बंबा हो एंगी स्वी , (दे १,७)।
      गृहि वृ [ गृहि ] स्काय-निव्याण एक जैन व्याणार्थ ,
                                                    र्वता भी [ सन्ता ] पन्त दीव की राजधानी , (असे !"
     (भग)। भीता वे [ भीत ] १ मातत् मारिताय का एक
                                                   वंतासव ई [बन्द्रानप] स्थातना, क्षतिम, क्षा
    इर १ एक हिनाम राज ब्राह, (सहा) । महरूर वुं
    िद्दाला ] १ वर विलेख : (ती ३८) । द सहरेट , जिल्ल
                                                    त्रमा , (व १, १७) । बनो संदायस ।
   (१।।।। हाम ३ [हाम] बर्गालाः। (व
                                                  बंदाणाम ई [ चन्त्रानन ] ऐसन वेह के प्रण
 यह ![ बाल्द ] कर नकती, (वर ११)। कुछ न
                                                 चंदाणवा स्त्री [ चन्द्रानमा ] १ वन्द्र हे तुन
  [ Am ] 3, e m, wi de das (um? 4) !
                                                 कन्मं इतमं दाती, ९ शास्त्रनी जिन-प्रनिमा स्थित,
 बराम क्या बंद-बन्द (हे १, १६४)।
                                                र्थनाम वि[काराम] १ कर हे ग्रन्थ मानुना
Attm 1 [ 4 ] 41, 40, (8 1, 4);
                                                 र प्रमालनी जिनहर, बन्दरम स्वामी , (मापू र)
कीर उन्तर रिया में समन , (श ११) ।
हिमा क [र] १ पुर, १०वा, १०वा, १ पुरुष,
                                           वंदायय देशं वंदामय ।
                                            4° (17 1, 42) 1
                                                                  रे बाब्दास्त मिटेर् मेन
म के [ बन्ते ] र मुन्ति हम मिल, बन्ते स
                                           र्वस्थ्या व [ है ] एवं का मार्थक किने । (मूम १,०
(12 ()) ( 4 month of the same of
                                          वीरायम न [ कन्दायमा ] एक केर निवन, (बार)
ि, (का 13, 21, 4 दे, १८२)।   दे लिया हुस्य
                                          नेहाजिक्य देनां सहम जिल्हा । (वर्ष)।
1 1 5 Sec April (44) | 4 EVE
                                         विद्या की [ विद्वा ] कर की उस, प्रत्य ,
C. A. [2] 1 ENT 1 [ 421]
A.1 fra 'a. e. e. e. ( 2,1) | AE I
                                        विदिया व [ हे ] बन्दरा, कदावा ,
                                          ا المالية والمالية المالية المالية المالية المالية
                                          कार्यक्ष क्षेत्रनं, मान्त्रं स्वत्रकामार्थः ।।
```

चंदिम देनो चंदम : (बीर : बन्न) । २ एक - हैन सुनि : (मेड्र रे) । व चंदिमां मी [चिद्रिका] यह की प्रमा, योग्ना ; (ह 4, 9= ≥) 1 चंदिमाइयान [चान्द्रिका्] जातवर्षव्या मृत्र हा एह मञ्जयन ; (गाँज) । चंदिल पुं[चन्दिल:] किल्ल;हलक; (गा २६५; दे ३,२)। चंदुनरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावनंसक] एक देव-व्यान ५ (सम =) 1, - -चँदेरी माँ [है] नार्ग-दिग्रेष ; -(र्गः ४४) । चंदोडा 🕠 न -[दे] कुनुद, त्यन्त्र-दिश्यमी चन्छः 1 (\$ 3. 4) 1 . . चंदोरजय वंदोत्तरण २ (चन्द्रोत्तरम) बैजान्यी नर्या वा एव च्यतः ; (दिसः ६, ४—प≈६०) । चंदोयर हुं [चन्द्रोदर] एड गज़-हमार ; (धन्म) । चेदीयग न [चन्द्रीपक] सन्पत्ती का एक कारूगा; '(टॉ ४,४) ।

चंदीवरीतः हं [चन्द्रीपरातृ] चन्त्र-महा, चन्द्रमा का महर्ग, पहुंच्याच्य, (द्वा १०), मतः ३, ६) १ चंद्र देखी चंद्र (हि.२, म०), हम्मी १ चंद्र मंद्र हिंदी चंत्रमा, हम्मी १ स्वस्तु (मान ११)।

च ४ स्ट [द्] चास्त, दास्ता, द्रम्ता । च छः (भ ग देश)। व्यम्पतिस्यः (ह ४, १८४) । चंपुस्क [चर्चु] चर्च देस्ता । चंग्रः (प्राप्ते) । सहस्य

्रिये पत्र (स्था १) संबद्धान हिं] इत्तर, संबत् ; "सम्मद्दर्शतिकारद्विक-गंविक्वरिक्क्ट्रद्वरद्वरद्वनक्षम् घृतीवर्त्तते " (स्व. २४) }

चंगण ह [है] चीका, खाता ; (झ १३० डी)। चंग्य दे [चारक] १ इट्स्किंग, चारा का पेड़ ; (ह १६६ ; सी)। १ डेंब-किंग्ये ; (जेंब ३)। १ दे अस्मा त्य इट् ; (देना)। 'माला मी, [माला] १ इन्द्र-किंग्य सी ('लेंबा)। 'माला मी, [माला] १ इन्द्र-किंग्य सी ('लेंबा)। १ इन्द्राचे इन्द्रेग्ये १ चार इन्हें को जेंबा ; (हें १ ; मी)। 'चिया न . ['चन] चार्क इन्द्रेग्य अस्तर काटकार्व हो (सी)। ' चार्क इन्द्रेग्य से अस्तर काटकार्व हो (सी)। '

बिन्द्रों मार्बहर्न 'सागडकुर' बर्ट्ड हैं ; (दिन ६, ६, ६म) ।

'पूरी की ['पुरी] हुई। प्रेर्थ ; (परने न, १४६) । चंपा मी, देशी चंपय । कुसुम न[कुसुम] जना हा पुतः (गय)। विषय वि विर्णी क्या ह पुत के तुन्य रंग बाडा, दुका वर्ष । सी— पंगी (मा) र (ह ४, 330) 1 चंपारण (मप) इं [चम्पारण्यं] १ देश-वियेत, नेपान, मांगवतुर का प्रदेश (र वंशास का निर्वासी : (विंग)। चंपित्र वि [दे] चींना हुमा, हवायां हुमा, महित है (मुन 13 = 3 = 3 | चंपिडिजया स्तं [चिन्पीया] देन हुनै गण को एक शासा (इय)) र्चम पुँ [दे] हट-मे विद्यारित भूमिनेस्या ; (दा ३, १) । चर्कच्या माँ [है] लहु, लंबा, बन्हीं ; (दे ३,३)। चंकिद देतीं चहरू ; (हुमाः) । चकोर ऐसी [चकोर] पीत्-क्लिप, क्लोर पत्ती । (हार ४६०)। स्री-दी ((संग्रह्में)। चक्क दुं चिक] १ पति निर्देश, प्रजाह पत्ती ; '(पाम ; बुमा ; सद्य) । ^{प्र}ते इग्सियुटाव्यंगो चक्को इव दिर्ग्टराण्यस-दंगा" (टर १२= टी) हैर ने माड़ा हा पृद्धिन ; (पन्ह (१३९) (३ हेन्द्र : (स्ता ११०; र इस) । ४ मस्-स्टिंग : (पटन ४२, ३१ ; ईनि) । १ चर्याचा बांमूरेण, मलक का भाजारवन्तिकेतः (भीत्) । ई ब्युहरीकेष, मैन्से की ब्रह्म-व्हार स्वानक्वितिक (सात् १, १९) भीत्) । वितिष्ठ [कार्रत] देव विरोध, स्वयंन्यान कुर्द्ध के कविरोध देवे? (इत्) । जोहि ६ (भोचिन्) १ के में टहेंने शेली केंद्रा ; (द्या ६) । २ वर्तुहेब तीव संद श्रीवर्ता क्यें राजा ; '(मति १') । 'उम्रय पुं [क्यत '] पर के निगान वाही म्दरा; (वं १)। पिटु पुं [प्रमु] कर्ज्या गता: (क्ये) । पाप्पि इं [पाप्पि] ई पम्बनी गांता, सबाद । 'र बार्नुहरू, मर्च-वस्त्रतीं गंजा पूर्व (पंडम ७३, इ) । 'पुरा,' पुरी की ['पुरी] दिहें वर्ष की एट करी | (हा र, दे इट)। पांडु देनो पहुः (चन)। यर ५ [चिर] निजुब, मीन्सर्व ; ('टर्न (१०)। 'रयंप न ['रत्न] मस-विरोधं, देखिती गेहा को सुन्य मानुष ; (सर १,४) । 'बंध हैं ['पनि] स्बद्ध ; (तिन) । चा, चिट्टि ह

[बितिन्] होस्ट मूहिबा मीरिन, रोहा, स्वयह,

(तिंगु किर्दे ; य शेर् : चित्र ; प्रान्, १०४) । "बहिन

र [विक्ति] कार्यन (तक्राय) (पुर ४, ६१)।

```
वित केनो विद्दि (ति १८८)। विकास वु [विकास]
                                                                                              वार्अतहमहत्ववादी ।
                            काली राम से मोने योग बेमनियर, (य ट)। साला
                           की [ माला ] कर महान, मही नित्र पीता काम हो,
                          वित्रका (का १०)। सह व [ कुल, सुल]
                                                                                                               (बाउ) । ७ ९ पर्वत विशेषः (स १०
                         तेर नित्ते, महोग्य स्ति हा महिन्दि हैर ; (सीत)।
                                                                                                              [ विष्काम ] बहाहार पेरा, गोत परि
                         भीन व [ भीन ] स्कालकवान एक राजा ; ( रहा ) ।

 शे। 'सामायात' हो [ 'सामायात']

                       रे दि पर ] र कार्गी तका, समाई . (यम १२६ ,
                                                                                                            (4 MA)
                      राम १,८१ १४,३(१६०)। रे क्योर, वर्ष-क्यो
                                                                                                         चक्कपाला सी [चक्रपाला ] गोत ।
                     1 ( 223 ) 1 22.3
                  वाकामाम हेची वक्तवाय ; (श दर )।
                                                                                                      वक्ताम हेता चक्तवाया (हे १, ८)।
                 कारण 1 (कारू ) चंत्र-किंत ; (वस १४)।
                                                                                                      व्यक्ताम न [ व्यक्तक ] क्ताकार नामु ; "नास
                क्कानाम व [ है ] करना वा कर ; (है है, प) ।
                                                                                                      करन समी मंगो व दीनह" (पण्य १ : ति ११०
               क्रमाहर व [ रे ] बार्ड, तात्र, क्रातंत्र ; (रे रेत्)।
                                                                                                    वक्तार व [वकार] रात्तम बंग का एक राज, ल
             क्रमा } कर [ सन् ] चुनना, नरकना, जनक करता !
                                                                                                    वित् (वस ६, १(३)। वस व [पर्स
             TTOM | TOM | ( $ 5, ( ) | THOM | ($ 4,
                                                                                                   वारी; (स. १, १)।
              1(1) 19 - 4447, (# (10);
                                                                                               व्यक्ताद वं [ व्यक्ताम ] बोलहर्वे किन देव छ इस हैर
          करकारिय है [ प्रसिन ] कुल हुमा, हिराबा हुमा ;
        A 1 ( 6 and ) ( and 3 ) !
                                                                                             वक्काहिव ई [वकाश्चिय] कानी राम, सर्व (व
        करता व [ है ] क्रांग, कर्त हा समूच ; हे होता-
                                                                                            वक्काहिया ई [ वकाचिपति ] कार देनो । (म
        and If that it again, (£ 3, 40) 1 $ 16 and at
                                                                                           विक हे (यक्ति, यक्ति) । का का को
        4. 4. ($ 1 00 1 mg 1 mm (A)
                                                                                          विकास विदेश हे कालती राजा, समार्।
      way and I v Array, Proceeding ( $ $120,100) )
                                                                                          तेत्री ; ४ कुम्बार ; (दम्ब ; मीर ; बावा १,1
   करतील है [ है ] करकर किय हुआ, ति 19, हट ;
                                                                                         सी [ शाला ] तेल बेचने बी इसन, (शा
    व रत्य | वस्त ) । भूतिमा है [ भूतिमा ] वस्तास
                                                                                       विकास वि [वकिता] मनगीत, "समुर्गभीतम
   क्या, वात हवता, (तुत १)।
                                                                                       वक्तवा केवर उन्होंनिया" ( वन ११ )।
क्रमार्थ हो [क्रमार्था] क्रमानवां से महा।
                                                                                    विकार वृ [चातिकः] १ वह वे ताने बता दे
                                                                                     नियह की एक कार्ति । ( और , बादा १, १ ) !
क्ष्या ] १[क्स्स्ट ] यह लिए , (कारा १,
                                                                                  विकास हि [ सम्बुधान् ] सहे, हा तहे, वर्त है।
meen | 1 of 1 21 & 110 | ed.
                                                                                  ( 434 14 14 144 ) I
                                                                                करकी भी [करी ] कर्-किने , (संग)।
** The state of th
                                                                              कार्तिका की [र] मां हो एक करि , (र ११)
ANSA. ($4 6 to) | $ 4000 4000 400 400 400
                                                                              वक्तेनर् [ कर्तानर] । कार्ता तम् , (व
A mal ( and 16 ' and " and 3' 36 ) 1 5
                                                                              है किया की रोहरीं राज्यों का एक देन करता है
mes ( 18 mes) and ( 18 mes) 4 mes ( 18 mes)
Me wind out allowers and these
                                                                           काहेमरी ली [बहे देवरी] । मण्ड्
THE P. LEWIS ST. AV. (200 at ) 1 5 Mg
                                                                           A 441 1 (4.2 8) 1 5 62 (4m-64) .
17 Sect. (181 +) ( 27, 17, 21)
                                                                       कारोहा लो [रे] मध्येने स्वितित्।
                                                                       काल क [मा + स्वाद्यं ] कार बुकर सा
                                                                         1 ( fi tot) | 45 - 454/7 . (41)
                                                                       The special states
```

वविषक्रणः (मे १३, ३६)। हेर-व्यक्तियं ; (पाटा ४६)। क्यद्विम न [है] होश्विम, बोपन : (दे ३, ६ १) क्रियण २ [आस्याद्व] मास्यादन, पंथन . (इर ष्ट्रहर्) १ विराज ६ [साम्यादित] मन्दर्गतः, योगः हुमः . (हे ४, २६० , सा ६०३ ; यहा ४६) । विसंदिय व [श्वासिन्दिय] नालेन्डिय, क्रीय, चन्दुः (इन १६, ६३)। सम्बु हुन [स्वक्षयु] १ फ्रीम, नेव, यस् , (हे १, ३३ , मुर ३, १४३ , सेन १ । (२.५) इस समाधाएट युजबर पुरपः, (पदम ३, ४३ । । ३ मृ देखेः मीचे ^वर्देस्तणः, (कस्म ३,९०;४,६)। ४ ज्ञान, कीय; (छ ३,०)। ६ दर्गन, मदरासन : (माचा)। श्रांत पु ['कान्त] देव-निरोप, कुरहत्तर समुद्र का अभिद्याना देव : (जीव ३) । किता सी ['कास्ता] एक कुतक पुरुष की पत्नी ; (स्म १४०)। इंसपान [इर्शन] पत्ते बन्तु का समन्द इत ; (गन १४)। इंसणवंडिया मा (दर्श-नप्रतिक्या दे प्राप्त का विषय, वयनेन्द्रिय का संपन , (निवृद्दः माचः २,२)। दियं वि [इ.स.] इन-राता ; (सम १ ; परि)। पहिलेहा माँ [प्रति-लेखा] भाँत से दयना ; (नितृ १)। "परिन्नाण न चिरिहान | ब्य-विषय हान, भीत से होने बाला हान; (माच)। पद् ९ ['पय] नंध-मार्ग, नदन-गीवर; (सह १, १)। 'फास ५ ['स्पर्या] दर्गन, बदलेखन ; (भीर)। भाष वि [भीत] भरतोक्त साम वे ही हराहुमा, (भाषा)। "म, मित्र वि ["मत्] १ तीका-पुक, भीव वाला ; (विते)। २ ६ एव कुलवर पुरत का नाम ; (जम १६+)। 'लोल वि ['छोल] देखने का भीकेल, जिलको नपलेल्डिय संबद न हो। वह है। (क्त)। "सोलुय वि ["सोलुप] बहा पूर्वीक मर्पः । (स्त)। 'क्होयपहिस्स व ['होक्नहेस्य] हुस, मुन्दर हर बादा; (सद; जीव ३) । विक्रिट्य वि [बृक्ति- ; हत] दृष्टि में मार्गियत ; (वर म) । रेस्सव पुं [श्रवस्] सर्व, सींग ; (स ३३४) । चम्पबुरूण न [है] प्रोसरह, कामा ; (हे २, ४)। चम्बुय देखी चक्युम ; (भादन) ।

चरपुम ५ [चासुर] फीन है ईनने बेग्न बन्तु, नवन-मत्यः (पट १, १; स्टि ३३११)। चगोर इंनो: चन्नोर ; (प्राप्)। च्या पुं [सर्च] समारम्बन, बन्दन वर्गेगः हा गुर्गत में दर-सेंग: (देह, पर)। बस्बर म [बत्बर] चैद्रा, चैतला, चीद्र ; (गाया १, १ ; परः १, ३ ; सुर १, ६३: हे २, १२; इसा)। चक्चरित्र पुं [दे, चञ्चरीक] भ्रमा, ममगः; (पर्)। यक्वरिया स्त्रा [यर्थरिका] १ इत्य-विगेर । (रमा)। २ देवी खबरी ; (स ३००)। चर्चरी म्बं [चर्चरी] १ गॅत-विरोप, एक प्रकार का गात: ''विन्यरिक्षचन्यरीयवसुद्दरियङस्वाराज्यसारो'' (सुर ३, ६४); "पार्गनिययवर्गामीया" (हुना ११) । २ गाने वाली टोली, गाने बाड़ों का बुद ; "पतने मचरामहुनने किगपानु विचित्र-बेनामु नपरवष्ट्यरीतु" , "ब्हें नीयवषरी झन्हास चव्चनीए मनामन्तं परिव्ययद्" (म ४२) । ३ छन्द-विग्रेप ; (पिन) । र हाय की नाती का मावाज; (माव 🤊)। चरुवसा स्त्रं [दे] राष-स्थिप; "मरमर्व चरुदमानं, मामयं चरवनावायगायं" (राय) । चच्चा स्वा [दे]:१ गरीर पर सुगरिय परार्थ हा वागुना, विलेला; (दे ३,९६; पाम; जं१; साबा ९,९; गम) । २ नत-प्रहाम, हाय दी नाजी ; (दे २,१६; पट्ट) । चक्चार मह [उपा+सम्] दरायम्य देना, दरहना देना । वज्वाद्धः (यह्)। चक्किमक वि [दे] १ मण्डित, विमृत्तिः, ''बंदुरत्रयचरिय-का दिनाउ" (दे ३,४)। "वयुमहागदवर्याञ्चलो" (यन्म हरी); ^अशाह गुज्ययदविषयका" (घउ २६)। २ हेन् दिवेजन, चन्द्रनादि सुगन्धि,बस्तु का गरीत पर मसदना; (हे २,७४) ; "वरिवरको" (य१); "वृक्षुंमदन्दिकहरू[दिगो" (१३म १८,१८); 'रिकार मुशन्मकामं मुख्यंदरारं इत्वियस्त्रं'' (दर १६ = टी); " घरलेदिसंदर्श्वस्थे" (नच्छ१९०) । चन्नुष्प सह [अर्पय्] मांच कता, देता। दस्तुनहः, (\$ 4.38)1 चच्छ सर [तक्ष्] छिटना, बछना । चच्छा; (ह ४,१६४)। चिन्छम वि [:तष्ट] छिदा हुमा ; (इना) । चडत सक [हरा] हेवला, मतरोहन करता। सन्तरः (\$ 3, Y ; UZ)! बङजा सौ [चर्यां] १ प्राक्ष्य, वर्डन, १ क्टन, गल्ला।

चक्युरक्सणी म्बं [दे] दण्डा, ग्रस ; (दे ३, ४)।

वणस्या मी (चणिकका) मनुर, भन्न-विशेषः (श्र ४,३) । बणन देखें चणझ: (सुरा ६३१: सुर ३, १४८)। "गाम ९ ["ब्राम] बान-किरोप, गीह देश का एक बान : (राज)। 'पुर न ['पुर] नगर-विशेष, राजग्रह-नगर का मनजी नाम : (राज) । चत्त पुन हि नहीं, तहमा, स्त बनाने का यन्त्र ; (दे ३, १ ; धर्न २)। चत वि [त्यक] धोहा हमा, परित्यक ; (पन्द २, १ ; इसा १, १६)। चत्तर देखी चल्चर ; (वि १६६ ; माट)। चता देखे चतालीसा ; (दवा)। चत्ताल वि [चत्वारिश] बार्लनवीः (परम ४०, १७)। वतालीस न [चत्वारिशत्] १ वार्तान, ४० ; "चना-र्टानं विमायात्रासनहरूना पण्यता" (सम ६६ ; कम)। ३ षालीत वर्ष की दम बाला: "बतार्तातस्त विन्नायं" (तंद्र) । चतालीसा भी [चत्यारिशत्] कतीत, ४० ; "वीता षतालीमा " (पग्य २) । चत्यरि पुंची [दे, चस्तरि] हात, हास्य; (दे ३, २)। चरेटा की [दे चरेटा] क्यकत, पनड़, तमाया; (यह) । चण सह [आ+माम्] मातमय करना, दशना । संह---चिपिवि: (मिति)। चप्पडरा न हि] कप्ट-दन्त्र-विगेयः (एट १,३---यत्र १३)। चप्पलम दि [दे] १ भन्य, मृशः ; (इसा ८, ४६)। १ म्हुनिय्याबादी, म्हुत मृट बीतने बाता ; (पर्)। चिप्पय वि [आकान्त] माठान्त, इवाया हुमा; (मवि)। चमुडिया) स्त्री [चमुटिका] पर्सा, मंग्रा के गाव चसुडी र्रमगुती की नहीं; (क्ला १, १—पत्र Et; \$ =, x3) 1 चप्पाल)त [दे] १ मेग्रा-निमेद, एक तरह का मिरी-चप्रालय मूर्याः १ वि. अनन्य, सूत्रा, निम्यानापीः (हे १, २०; हे ३,३०; हुना ८,२४)। चमक्क पुं [स्वमत्कार] क्लिन, मानवर्ष ; "संदरियदट-यमस्द्री" (पाम ६ टी; टर ५६= टी)। "यर दि विसर] विन्मद-जनक ; (सय)। धमपक } सह [समन्÷हा] दिल्ला सन्त, मान्पर्य-चमकर∫न्ति बना। चनसंद्र, ध्नसंद्र; (सिं ४६ ; ४८) । रह—समस्कर्त ; (सिः ६६)।

चमक्कार पुं [चमत्कार] मारवर्ष, विस्तर ; (सुर १०, प्तः वस्ता २४)। चमक्किम वि [चमत्कृत] विस्मित, माधपाँनिवतः (हम १२२)। चमड) सह [मुज्] मोजन करना, राजा । चनउद् चमड र्र (यद्)। चनदर ; (ह ४, १९०)। चमद सक [रे] १ मर्रन करना, मस्तना। करना । ३ कहर्यन करना, पीड़ना । ४ निन्दा करना । भारमय करना । ६ टट्टिन करना, जिन्न करना । क्यह---चमंदिरजंत ; (मोप १२८ मा ; बृह १)। चमदण न [भोजन्] मोजन, खाना ; (तुमा) ! चमडण न [दे] १ मर्रन, मवनर्रन ; (म्रोप १८० मा ; ⊞ २२)। २ झाकनप ; (स <u>१</u>७६)। ३ कर्यन, पोइन : ४ प्रहार : (झोर १६३) । १ निन्दा, गईय ; (मोप ७६)। ६ वि जिल्ही कदर्यना की जाय वह: (भीर १३५)। चमद्रणा सी [दे] कार देखी ; (बृह १)। चमदिय वि दि । मिर्दिन, विनागित : (यद २)। चमर १ चिमर । पतु-क्रिय, जित्रके पालों का पासर बनता है: "बगहरर बनस्त्रेविए सत्ये" (पत्रम ६४, १०१ : पद्द १, १) । २ वुं पाँचवे बिनदेव का प्रथम शिन्ता; (सम ३ दक्षिण दिगा के मसुख्यारों का इन्द्र; (इ. १, १) । चिंच पुं चित्रव | च्योन्द्र का प्राक्षाय-पर्वत ; (मग १३, ६)। 'चंचा मी ['चप्र्या] फ्लेन्ट्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी तिगेप ; (गापा २)। 'पुर न [पुर] तिदायमें का नगर-विदेश ; (इक्) । चमर पुंत [चामर] चॅर, शमर, बाउ-स्तरतः (११, ६०)। "वारी, 'हारी स्त्री ['धारिणी] पना बीजन बारी स्त्री : (सुरा ३३६; सुर १०, १६०)। चमरी सी [चमरी] चन्त्यमु दी महा ; (मे ७, ४० ; म ४४९ ; मीप ; महा) । चमम पुने [चमम] ध्नवा, रहाई, इसै ; (मीन)। चमुक्कार हैं [चनत्कार] १ फ्रान्बर्न, जिनन ; "दे-चण्यत्त्रिक्तिन्त्रसम्बद्धाः " (स. ११, ६४)। २ विष्ठी का प्रकार : "दाव न निरुद्रपास्कार्ट्स र्यायात्रकंहे" (सु १, ११०)। चमुकी [चमु] १ हेरा, केर, राग्य ; (प्राम्न) । १ हेर-सिंग, किसे शहरणे, शहरू रह १५८,

```
11, 197 vo , 197 103 ) | This In [ "Fez]
                      ियमम् । धात, त्वरः, बाम, मातः ; (हे १,
                                               (1 '1) $ heb) : Miss no.
                                                                                              , , १५५६ वर्णायो ।
                पारं व सोमा इमा ; (मा 1३, ६)। कोस,
                                                                                                      चय वह शिक् ] गाना, गमंत्र हेला। बार
               कोसय व किरोस, कि ] १ फारे वा क्ताहुमा चेवा;
                                                                                                       टर् )। बहु-चर्चनः (युम १, १, १, १ हे हैं।
              र एक ताद का बनाई का जाता, (भोष धरू । भाषा
                                                                                                    च्य मह [ ब्यु ] मण्या, एड कम से एनं अने में ह
             र र, र ; क ८)। कोसिया मी [कोसिका]
                                                                                                     चता (माने)। वर्षात् (मा)। का चाला
           पारं को कतो हुई भेली ; (त्य २,२)। "टॉडिय
          वि[ शिण्डिक) १ व्याः ना परियान करता ; १ तन
                                                                                                 चय इ [ चय] १ मनेत्र, देर , (निस १,१; स्र)।
         वण्करत बमहे का ही रसने वाला ; ( वाला १, १४ ) ।
                                                                                                  र महरू सन्ति, स्म । (तिमं १९१६ ; सम १०१/म)
       न हि कि ] बनहे का कम हुआ, अमेनव , (तुम ३,
                                                                                                 रे बाह्य होला ; ( सन्तु ) । ४ वृद्ध , ( सन्तु )।
      विस्त द विस्तित् ] क्यारं की चीन बाता
                                                                                            चय व [ च्यव ] च्या, अन्यान्तानमन , ( स ८ हर)
     तहते [ कहते | क्षेत्र | विद्यु है जिस्से हैं कर है । विद्यु विद्यु । विद्यु है जिस्से विद्यु । विद्यु विद्
                                                                                           खयण न चियन । १ हिमा काना , (स १)।१ बर
    वमहें का परा, करें। (बिस 1, ६)। चाल न
  िपात्र ] वलहे का पात्र ; (बाबा रे, ६,१)। श्वर
                                                                                        चयण न [त्यज्ञन] त्याय, परित्याम, (मर्ने ।
 उ िकर] मोबी, बनार : (स २०६ ; हे है, २०)।
                                                                                       चयण व [बययन] १ सत्यः अन्यान्तर-गानः : (
रेंपण म (रेस्ल ) कामनी का रतन विग्रेष, किमने ग्रवह में
                                                                                        पत्र १६) । १ पत्रन, निर जना। कृत्य वृक्ति
बोबे हुए सावि बाँरः उमी दिन पढ कर बाने दोन्य हो जाते
                                                                                       कार महार, कारिय क्योर से चितन का प्रकार, १ है
(ल १११)। कल व [ कुल ] का निवार,
                                                                                     सानुकों का निहार, (बच्च १, पंकारा)।
                                                                                  चर सह [ चर् ] 1 यसन हरता, बजना, बाना । १ स
रिंड को [ यर्मपिट ] कर्मभव वर्गन, कर्मन्छः;
                                                                                   करता। इतिका। ४ जानता। बार् । (ज्यः, ---
                                                                                  मुद्य-बरिय, (बरु)। मनि-बरीत्म , (ति।
                                                                                 कि चरत, चरमाण, (अन २, भग, बिगाः,
हैस मह [ वर्मेपप्रीय, ] का र्वाट की तरह माकरक
                                                                                संह-चरित्र, चरित्रण, (बार-वृद्ध १०, मण
                                                                              हें चारव (श्रंच (१, क्य)) ह - वार
ल ५ [ बर्मास्थिल ] शीन निरोद, ( कह १, १) ।
                                                                             (मग ६, १३)। प्रयो, ह-चारियस्य , ( १
व [ वर्मकार ] चनार, मोची , (विने १६००)।
                                                                            1 ( 03x ED
उ[ बमेकारक] कार देखें : ( अव )।
                                                                        वर ४ [वर] १ मान, वति । १ वर्गन , (रहा, ।
[ चर्मित ] का है बैंधा हुमा, का बटित,
                                                                          रे देन, जानून , ( वास, भारे ) ।
                                                                      'बर में [ 'चा ] काने माता , ( माना ) ।
[बर्में द्र] महत्त्व-विनेत्र, ब्रम्बं
                                                                    वांती हो [ वरन्ती ] किम दिसा में म
                                                                     हमी पुरस निकारी हो बहु , ( वन १ )।
MB4 . (4E 1, 1)1
त् ] डोडना, त्यान करमा । क्याह , (पाम,
                                                                  बरम ९ [ चरक ] १ देखी चर=का। १
                                                                  न्दुड विरोच, युवबंध धूमने वाले बिरविडमाँ
सं-गरमा (त्र)। क्र-नरातः
                                                                 (मा; मन्त्र १)। ३ मिलुको को एक व
मह-चर्म, बार, विच्चा, बर्फण,
                                                                २०)। ४ दश-माधीद कन्तु , (सब)।
मी, बहुतुः (दमा ; दम १८, महा
                                                             वरचरा सी [चरचरा ] 'मर मर' मातात (
ह-चारवस्त्र, (जुगा ११६, ४०६,
                                                           बाद वृ [ बार ] सुरंग को एक बानि , / सम
                                                         चरण म [ घरण ] १ हक्य, चारित, मन, निम्म
                                                          १: कार्च, नित्रे १) । २ पता, प्राची क
```

-महर्द : (मुर २, ३)। ३ पय का चीया हिन्मा; (विंग)। चरिया की [चरिका] १ परिवातिका, संन्यातिनी ; (ब्रोज १६८०)। २ किटा और राग के बीच का मार्ग : ४ गनत, विहार ; (ग्रीहि ; सुम ५, १०,२) । ४ सेवन, .महा; (र्वत ३) । ६ पढ, पति ; (३,० १) करण (इस १३० , पदा १,१)। र किरम देवन का मृत भीर उत्तर दुए: सुमा, १ चरिया मी [चर्या] १ मावरण, मनुरत ; "दुश्वरवरिया मुख्यिगर्य" (पटम १४, ११२) । २ गस्त, गति, विहार; इन्न १६४)। 'करणाणुत्रीग वुं ['करणानुयोग] नंदन के मूद माँर दतर पुटों ही व्याच्या ; (निष् १६) । कुमील (सम १, १, ४)। हैं [कुद्रांकि] चारित्र को मंजित करने बाला साबु, निधिता-चर हैं [चर] स्याडी-विरोध, पात्र-विरोध ; (भौष; भवि)। चरुगिणय देखी खरुरूपय ; (१७)। कर्म संखु; (पत २)। "पाय [नय] किया को सुन्य मनने बाहा मत ; (माया)। 'मोह पुंत ['मोह] वारिव चरस्टेब न [दे] नम, मास्य ; (४३,६)। चल सह [चल्] १ घटना, गमन नगना । १ मह हाँनना, का प्रचारक वर्ज-विशेष ; (बन्म १)। गम वि [सरम] १ मिलन, मन्त का, पर्यन्तकी ;(ब हितरा । चउइ ; (महा ; गउड़) । बह--चलंत, चल-ृ २, ४ ; संग च,३ ; कस्म ३, ९० ; ८, १६ ८ १७)। २ माण ; (म ३१६ ; सुर ३,४० ; मर्ग) । हेह—चलिउं; (या ४=४) । प्रयो, मंह-स्वत्रह्ता ; (दन १, १) । क्रान्त्र मर में मुक्ति पाने वाडा ; ३ दिसरा विकास सा मन्त्रिम हो वहा (छ १, १)। 'काल हुं ['काल] मग्र-चन्द्र वि [चन्छ] १ वेवड, अस्थिर ; (स ४२० ; वडा क्तः;(रंज ४)। जलिहि दु [जलिय] मेल्ल ६६) । २ पुं. राक्य का एक सुनद ; (पटम ४६, ३६) । सरवर ति [सरवर] १ वंदर, प्रस्थि ; "दर्वर न्दुः, स्वयंसूनिय स्टुः ; (सहम १)। कंडिकेडएक्स्ड्रं नक्सड्रं रहर्येखें (क्या ६०)। १ इं गर्मेत हैं [चरमान्त] सर हे प्रत्निम, सर हे प्रत्न-वर्त, भी में बतादी चीन का परता दीन पन ; (निवृ ४) ! (समहह)। चलप पु [चरण] पेंच, पेर, पाट ; (मेंंग : में ६,१२)। ब्राय केदे चरना , (ब्रीन ; याना १, ९४) । 'मालिया स्वी [मालिका] पैर का भागूरा-विरोध : मिरेगा देवो चरिया≔पीका ; (गद) । (कर १. ६ : मीत) । 'चंद्रण न ['चन्द्रन] देर पर शेरित न [सरित्र] १ वन्ति, भाषामा : १ न्यतरापः (स-लि मुद्य दर प्रयान, प्रयाम-विरोध ; (परन न, १०६)। वि ; प्राम् ४०) । ३ स्वनाव, प्रकृति । (सुनः) । बलप व [बलव] बलवा, यदि, बाहा ; (वे ६, ५३)। र्वेरिस न [न्यारिक] संबन, विग्ति, ब्ल, नियन : (ब्ल २, ं ४ ; ४,४ ; मा) । 'कारप वुं ['कारप] संबाहुतन क बरमा छो [बरमा] ६ वटर, गीर : २ वटर, हिन्ह : र्रजाबह प्रत्य ; (बंधना)। सीह दुन [मीह] वर्न-(सप १६, ६) । स्टिन, मंदन का कारायक वर्ज ; (नग)। 'मोहिनावत न बलपाइट ५ [बरपायुव] ब्रह्म, मुर्ग ; (ह ३, ४)। बरुपार्थोद्द दु [दू चरपायुव] क्रार हेर्स ; (११)। ['मोहतीय] बहा प्रांक प्रयं : (ह २, ४) । व्यक्ति चलनिया म्हां [चलनिया] तीवे हेखी ; (मीव ६ ३६) । न ['स्मारिज] ब्रांशिक संयम, शादक्यमं : (पीर ; सर धरमी भी [धरतो] १ समोमों स एवं सम्परः ं ५,१)। 'स्वार हुं ['स्वार] संब्य का बदुरन, (पीट)। रितिय हैं ['र्ग्य] करित है कर्क, तिहुद करित (मीम १६६ मा)। २ रेग्ट्राका क्षेत्र; (बीव िंदरा, सपु, सुनि ; (परव ५) । 3, 477 0, 2) 1 बनवराम र [दे] धरस्यां, वदर्ग , (राम १०६,६) । विचित्र इंदो [चारिवित्र] संदर्भ गण, गर्थ, मुर्च , बराबर है [बराबर] १८२, मन्ति ; (१३२ ११२,६)। (क्ष ११६ : पंदा १)। बर्लिटिय रे (बर्लिट्सिय) इन्हिस्टिन्ट् बार है। इन्हिर्स् चरित्र क्षेत्रो खरम ; (दुर ६,६० और : मा . य २ ४) । दिल्य इन्द्रिदे बाद में नहादह प्राप्त १ १ १)। चरिय ६ [चरकः] शन्तुम्य, असून, १७ । तर ४००० । वरिज व [बरित] । दिस्पर, इस्पर्व हरूरत विवित्र विक्ति । वेटिन, माराग म्)। र द्यारी द्यारमध्य स्व १ । र विद्या यस । शहरताहरू होत्रत् । साम्म १ वे दान र मन्य (सुर (६०) । व सेविन सर्वन ರ್ಷಕ್ಷೆಗಳ ಕ್ರಮ

415 4 ghunnings 1 [किस म चनाक १५ [सार्याक] गान्त, जातिक सर्वेत्तर में [सर्विष्ट्] बरते राजा, श्रीपर, करण, बेरत , क्रमात है न शनीद (या मा, ला)। ma_newarid, (ite e.r.t im of 7 45 e t 14 e 4)! क्यांगि ५ [बार्योहरू] । याने गर्ग , र मन रेणे मण्डण् । पनार । (हे ४, ६११ । पर्)। En : (# 1) ; सम्मान न[रे] नश्रीपुर, श्री त्व. (१९)। समिक्षे (हैं] बाचे त्या डी लड उडार डी सी ; वन्त्रित है **[चर्चित | न्ना**त हुण , (उर १३.१ व्यवं तह [व्यवं] जन्मा, मानात् नेता । (47) बर्जिय रेण यनित्र ((१) १, ६५ , शतु ३०) । (m), (far) 2 in entre (m), (fa ब्राम है है विकार है । सब मेरे सा प्राप्त है बार नव विराम् हे बनन, बनान । बार् , (हे ४,६) । ब्रुवंप रे प्रथः) । र पान पान, भागा । (१९) वर्ग-मोराया (इस') । या -मोर (वीर) । कार बार, १०) ह द वीच विलेत (हैरी व मान कर [बापु] बारना, अध्यानाम में जाना । नगर । [ने ४,९६३)। तह-विस्तितः (४°८)। छ-बर्गिया के [रे] पारी, गुप्तान , "गान विषयन . (स १.१)। वानेन्त्रकात्रेता, (दात) ! मार पु [करण] मारा, भीत , "मानेता महत्त्वता है , है जा सपुर वि [वे] १ विसान, नान, (रे १, १, १८ · mer meet fin that hange fond aber, 1, 14) 1 गवपा पु [याया] 'भा का' बनाव, व्यक्तिकेत. 1 (12 . 90 (प्राप्त १८६ मा) : चरोप ५ [वे] एक सर्य गानि । (गी)। बाद वि [म्याधिम्] १ त्याम धन गणा, वीरव साराय व [बरायत] ५ वाच, कन्ता-त वाती , (तुर ३, 11१, ७, ⊏, इं ४)। १ कश, तिर अप्तर, (कृर ५)। व हाती, तथा देने बाता, आण , १ वर्ग १, १ श्याद (र [स्थाद] १ चंदन, प्रवेदन , (मृत १६, ११८) 11 र रे के व नि सन्, निरंत्र, संपन्ना, (आपा) प्राप्त १०३) ३ ९ अप्रण, स्थल्ल ३ (अप्र) ह - ६ लू ब्याइय दि [शक्तिम] त्रा नामं दुषा पी. (१९३ । त्य १, १०) र लाज्यभानि प्रता पनि रात्रध्न का एक गुनद : (पत्रत ३६, ३६) । ययारं ई [दे] बन्दम, लाहुन ३ (आ १८) ३ श्रीरहेल । तारे ते नत्रवा" (दान ११% १४) चयला सी [चयला] हिन्तु, विली ३ (अंभ ३) । "बारंड १ [बागुण्ड] राजनरंग वा तृह " यविम रि [च्युन] मा, अन्वारकानका , (१वा १,११) । लर्बार्थाः (पान ६, १६३)। थविम 🛭 🕻 कथित 🕽 तथ, ब्हा हुआ , (अति) । खाउपकार व (खनुष्यात) भार वर्ष्ण, प यविभा भी [यविका] कर्म्या निरोत , (क्ल १ ---(199 98 98) 1 बाउपकोण है [सनुष्कांण] ना क्षेत्र राहा पत्र ६३१)। थयिता) (अंप ३)। व्यविद्धा | सी [यपेटा] त्याचा, वया । (हे १, बाउम्बंद) वि [बनुर्येष्ट] गर रत रण, ग ध्येला । १४६; इमा)। चाउघंद ∫ से युन्त, (बाया १, १। वल ६, १३ थयेडी सी दि] १ रिवड कर-संपुर , क संपुर, समुद्र, चाउडलाम व [चानुपांम] भार सर्भी विषा; (दे ३,३)। करिंगा, सन्य, क्रम्यथ और घ्रयरिष्ण व वर्ग स्पेण न [दे] बचनीन, लोकापनाद , (दे ३, १)। (बाबा १, ३, छ ४, १)। खेरेला देनी खेरेडा ; (शह)। थाउरहाय न [बानुकांत] १ल नी, भाना६ घरविकाम 🖟 [दे] पश्चित, वृते से वेत्य हमा, "वान-धीर बागक्षमर , (जा प्र १०६ , महा) । स्टिया व पुन्तेय बामिया" (सुपा ४६६)। बाउन्धिय वृ [बानुधिक] तम विले वेर् घण्याद देशो चण्यागि ; (राज) । हाने बाला ज्वर, चीधवा कुमार , (जीव ।)।

[ब्रद्गिया को [ब्रनुदेशिका] शिक्षातिक, क्युरेंगी, रीयः : "र्वार्युग्यनग्रहरीय्या 🗀 इस्र 🕽 । हिंदु सी से [बनुदेशी] कर देवे : (मा , हे १)। उद्दार (द्या) दि च [चतुर्देशतु] चीत्र, १४, (धरः । हिति हो यह दिनि (मा: मृत १८१ ।। हमाम) क [बातुमाम] १ चीला, हैने बायह रिस्मारन र के बेचन कार्नित तत के यान मुर्नित इर ०, परा १० १। १ क्यापा, वर्णीय कीर वास्त्र 🖼 को शुक्त बहुरीयों , "परिणा बाइस से" (लहुम १६)। 'उम्मापित्र हि [घानुपांषिक] १ घर मार सबस्ये, मि बायर में लेकर बार्निय नह के बाद महीने में गर्दय समें बाला :(साथा ९,४ सा ९४, ९९≔) ३ व स् र्षाद, कार्तिक क्रीर काल्युल माग को सुक्त प्युर्वेदों दिवि, र्बे-जिल : (धा ४३ , ब्रॉल ३०)। इम्मामा हो [चतुर्मामा] पर गर, पीनण, मरा वार्तिह, बार्तिहरी, बालपुर बीर बालपुर से बाराय कर षा महीते : (पत्रम १९८, ४८) । इम्मामी मो [चातुर्मामी] इसे चाउम्मानित्र , धर्म ९; झाव)। हरेन देली खडरोग , पडम २, ०४)। द्देशि देशे श्रद्धरेशि , (मग : दामा १,१--पर 1)1 ^इर्गेगिटल वि [चतुरङ्गीय] १ वर अंगे में संबन्ध निवाताः ६ न् उत्पान्यस्य सूप का एक मन्यस्यः 1 (4 65 इर्रेत देखी चडरेन, (सन १; द ३,१,६१, ¥) (रिते पु [चान्रस्त] १ वस्त्री गडा, गडाड् ; मर्५,४)। २ म् लन्त-मराज, चीमी; (म ०००)। , इसका वि [सातुरस्य] गर गर परियत् । भीर्यार [गोहोर] चार कार परंगत किया हुमा यो-दुत्प, ्री कीतार गीमों का हुए हुएगे गीमों के रिटाना जान, र उनका मन्त्र गीर्मा को, इस तरह यार कर परिवत शहुमा गी-दुख; (इति ३) ार प्रं [दें] पत्रत, नातुन, (दे ३, ६, माना २, ६, ; ६ ; म., तरह २३९ , और ३४४ , सा ६३६ ; Fit+; 877)(

चाउम्ह्य र [है] दूस का दुरणा _पहारिम्स दूस्य; (तिह् बाडबन्त ोति [बातुर्वर्षः] १ नए वर्षः नाम, पर चाउठबण्या हेरार बन्ता: ६ ई. साहु, साली, धारठ मीर शक्तिम का सनुरद: (छ ६, २---वर १२१): " बाह्यबान समार्थिया " (परम १०, ११०)। ३ म् ब्राह्मण, सन्दिर, बैस्य धीर सह वे बार मनुष्य-वाहि ; (सग १६)। चाउळोडत न[चानुवै घ] १ चर प्रधर धी विशा—स्याय, ब्यादरण, सहित्य भीर पर्य-गाम । १ दे भीरे, प्राप्तती ं की एट करदा " परस्वार केरबर्ट एवं " (सहा) (द्याप्त देशो खाय=प्य । चौंडंडा मी [चामुण्डा]स्थाम-स्वार हेरी ; (हे १, १७८) । काउम हुं [कामुका] महारेप, गिप ; (इसा) । चाम देगो चाय≕राम; (परा १)। चानि देगो चाइ ; (ता १ १०६)। चाड वि [दे] मायावी, बाडी ; (हे ३, ५)। बाह पुन [बाहु] १ जिन बारव ; २ गुनामर ; (हे १, ६ । प्राप्त)। 'यार वि [फार] गुरामर्गः (पट् 2, 2) 1 चाडम न [चाटुक] कार देती ; (इमा)। चाणक्क वुं [चाणक्य] १ गता चन्द्रक्त का सन्तम-प्रनिद्ध मन्त्री ; (सुद्ध १४४)। १ एक मनुन्य-जातिः (P(4): [श्राणक्यों] दिति-विशेष : (विन चाणक्की की *{ x 2i) चाणिक्क हेरो: चाणक्क ; (भार) । चाणुर वे [चाणुर] मन्त्र-विगेष, जिल्ही श्रीहम्य ने माग था; (पष्ट् १, ४; विंग)। चामर कुंत [चामर] चेंतर, वाल-वाबन; (हे १, ६७)। ३ इन्दर्-विशेष: (विंग) । वाहि वि ["ब्राहिन्] याना वीजने बाता नीहर।सी—'णो ; (मवि)। 'छायण न ['क्हायन] स्वाति नशत हा गोत; (१६)। 'उम्हय बुं [ध्वज] शमर-युक्त प्राक्त ; (फ्रीर)। धार वि ['धार] बानर बाँउने बाङा; (परम =•, ३=) । चामरा मां, जार देखें; (मीन, बढ़; मा ६, ३३)।

```
पण काम १ ४ ) . विष्णुं क्षेत्र ; (श्रमः ; मुताः , चारमङ ३ [चारमङ ] ग्राः वरमः स्वी
           चामुंडा रेखे चाँउंडा; (बिमें , मि)।
           चाय रेगा चय = सङ्। यह चार्यत, चार त, स्प
                                                              1, 2, 1, 2; $71)1
                                                           | चारव देगां चारम ; ( मुग २०७ , म ११ )।
         चाय देता चाय ; (सुन १३० , से १४, १४ , विस) ;
                                                             वारवाय व [ दे ] शोन शतु हा पान ; (दे १,
         चाय ९ [त्याम ] १ छोडना, परिन्याम , ( प्राप्त = ;
                                                            चारहड देखें चारमङ , ( थम १२ दो ; मी)
         पंचर १)। २ सम्म , (सर १, ६१)।
                                                           चारहड़ों भी [चारमड़ों ] शौर्व ही, होनह ही,
        चाया) व [चातक] वीत निर्मेर, बालक-पन्नो, (सव ,
                                                             AA3 2 AA5 1 E A' SEE ) !
       चायक) वाम , दे ६, ६० )।
      बार १ [बार ] १ गीने, गमन, ''वाववारेख'' ( मजा,
                                                           चारामार न [चारामार] है लाना, जेउकर,
       ता १ १२१ , त्वय ११ ) । २ अवव, वर्रिताव , (म
       १६) । ३ वर-तुरस्, जासूमः, (लिया १, ३; सदा,
                                                         चारि सो [ चारि ] बारा, रागुमों के ताने से रंद
      भवि )। ह कारानार, केरलाना , (भवि )। ६ संवार
     मबास (भीर)। ( मतुत्रम, भावनस् , ( भावानि
                                                       चारि वि [ चारिन् ] १ प्राति करने नाता । (
     (१ । वहा ) । ७ ज्योनिय क्षेत्र, धारास, ( दा ३, १ )।
                                                        टों , तह , माचा ) । २ चतने वाला, वनन-गीत
   बार ३ [ वे ] १ इत-मिन, रिवाल इत, विगोबी का पेंड;
                                                        1 ( )
   (व १, ११ , मण , प्रण १६)। १ कच्यन-स्थान
                                                     वारिस वि [ वारित ] १ विनद्यं विनार
   (दे र ११)। १ इच्छा, मनिवायः। (दे र ११,
                                                      (वे २, २०)। २ विज्ञानित, अनाया हुए
  मित्र तम १११)। वन धल विनेत्र, मेवा विनेत्र ;
                                                     - 62 x50) 1
 (वन्य १६)। कत्तव वृ िताय] वेकने वाले को
                                                   बारिष ३ [बारिक] १ वर पुरुर, आपून
 ब्लानुनार राम रेक्ट मारिना , (जुन १९९)।
                                                    १, पत्रम २६, ६१)। धवादिन बारिजिनः
बारप दला बरळका ।
                                                   वस्तारवाधिति" (विते १३०१)। १ वंबाव
वारम है [बारक] देशों खार, (भीत, वाता १,
वाता है [बारक] हैने बार (की, बाव 5, कीरित हैने बरिति 1) व्याट 3 [बारक] वारित हैने बरिति 1) विकास कीर्याट की वर करा है।
                                                   अरह, बसुराव का क्ष्मिमा , ( स ४०६ )।
                                                 चारित देखां चरित = बारित , ( प्रोप ( ।
] 'जर, ) र, जर १२० ()) पाट जु [ पाट ]
कोराना चा मन्त्र (किंग १, (-जर १६) ]
बाटमा जु [ पाटक ] हैराना चा मन्त्रम, नेवार, (जर भी [ बारों के वार वर् ।
                                               वारिति देखे वरिति। ( उन्ह ११४)।
अगरवा (सिंग १, 1)। विदेश व विशेषण ] , बाद है [बाह ] १ वन्स, बोसन, स्वर्
                                              रे पु तांगां किनरेव हा प्रवस निप्त, ( वस
उ [ बारल ] १ मादाम में नमन करने की साथि
                                            व प्रदेशक विशेष, राम-चित्रंष, ( मोत १, ।
पे जैन सुनियों की एक जाति ; (श्रीत ; सुन के
                                          चारत्णम् पु [चारकितक] १ देग निगर, १
रिव १६)। १ मनुजनानिसिंग, सुनि करने ।
                                           य निवामी, (बीर, अंत् )। सी-गेलवा,
ति भार (स ४(द से; हम्मा)) । ३ हड
                                         चारणय व [चारनक] अस तेनो , (की)
                                          जिया , ( चीन , बाता 1, 1 )।
को [बारिनका] तर्रका किंग, (कोन १४ ठी)। बारुनेको स्वी [बारुनेनी ] कर स्थित, (सर.
```

52

चार मः [मानव्] १ घतन्, तितनः, केरतः । बास ३ दि । यन, इट विश्वति ध्वितिः दिनया बरना । कार्रेष , (द्वा, सं ४ ४४, मा । । वर्म---(8 2, 1)1 र्षाटारा : (३३)) वर्-मार्टन, राहिमाण : चार यह [चान्छ] १ फट्ट, बँजरा। १ मरेटर (गुर १९४ , अस ३))। कार - मालिक्समाण , बस्त । ३ सच्ता । पादा, पाइति ; (मर्प ; (याय १, १) । हेह--चाटिनरः (उग)। विंग ।। चारण म [चारत] १ पतान, रिजन , (रंगा)। १ चारिय व [चान्छित] १ कल्छि, प्रसित्ति ; १ रियार : (सिंग ५००७) व घर्गिकातः, ३ याचितः, (मति)। चालचा गाँ [चालना] शहरा, पर्यवस, बार्सर, चातुमाण र् [चातुयान] १ ए६ इतिइ चित्रियंगः (मए:इर १)। चौहान बंग, २ पुन्यो चौहान बंग में उत्पत्न; (मुरा ११६)। चारुणिया 🖆 [चारुनिया] मीये हेन्छे, (हर ५३४ ही)। बि इंग्ते बिण। वर्म-शिना, विना, विज्ञित ; (हे चारणी गाँ: [बारहर्सी] झप्ट, हानने वा पप , (झपन) । ४, १४३ ; सग)। चालपास पुं [है] कि का भ्षटनीयेव : (है ३, ५)। चित्र च [पय] नित्रय को कालाने काला सन्त्यः चालिय वि [चालित] । भता हमा, तिलामा हमा ; " मतुष्यं नं विम कानियोगं " (हे २, १०४; बुना; "प्रकारीत चारियात नियमंग्रयायामात्" (मन) । गा १६, ४६ ; ई १) । चालिर वि [चालियतु] १ घतने वाता । १ घतने चित्र म [र्घ] १ - १ दाना मीर उन्प्रेसा का सुबद " शास्त्रवाचार्यात्रव्यक्तिम्बद्धिम् वेद्येष् मन्यव : (प्राप्त)। (यज्ञा ००) १ चित्र वि [चित्र] १ शक्ता दिया हुमा; (मग)। चार्टा मी [चर्त्यारिशन्] चार्तम, 🕶 , (का) । २ ब्यन्न ; (सुरा २४१)। ३ पुर, मॉनल ; (उर चालीम मीत [चन्यारिशक्] बालीय, 🕶 : (महा : = ok zî) | तिग)। सी- सा, (ति १)। चित्रा सी [स्विप्] कान्ति, तेत्र, प्रमा ; (पर्)। चालुक्क पुर्रा (चौलुक्य) १ बालुक्य वंश में उत्पन्न; १ विभा देयो विषगा ; (सुग २४१ ; यहा)। 9. गुजरत का प्रसिद्ध गाजा बुमारपाल : (कुमा) । चिर् माँ [चिति] १ डरवर, पुष्टि, वृद्धिः (एव १)। चाव गर [चर्च] पराना । १० -चावेवव्य : (उत २ इक्ट्रा कन्ना ; (उन ६)। ३ वुदि, सेथा ; (पाम)। 98. 30) 1 ४ भींत वगैरः बनाना ; १ विताः (परः १, १---एप्र ⊏)। चाय ९ [चाप] धनुर, बर्म्बर ; (स्वर ४४)। "करम न ['कर्मन्] वन्दन, प्रकाम-विशेष ; (माव ३) । चायल न [चापल] घरतता, बंबतता; (मनि २४९)। विद्दंशं विद्मः (ता १६७; षेत्य ११; पंचा १)। चायल्ट व [चापत्य] उप हेर्यो ; (स १२६)। चिर्मा देखे चियमा : (जे १)। चाचाली माँ [चाचालो] माम-विग्रेप, इव नाम का एक विश्वष्ठ सर [चिकित्स्] १ दवा बरना, इलाज बरना । गाँव ; (भावन)। २ शहुका करना, संशय करना । विश्वच्छ ; (हे २, २१; चाविय वि [च्यावित] मन्वादा हुमा : (पन्द २, १)। ¥, ₹¥+) { चार्चेडी मी [चापेटी] विधा-क्विन, जिनमें दूनरे की नमाना मारने पर विमार भारमी का गेग चला जाना है; (बर १)। चिइच्छम वि [चिकित्सक] १ दम करने वाला, इलाज करनं वाला ; २ पुं वैदा ; (मा ३३)। चावेयव्य देखी चाव=चर् । चिश्य देखो चितिय : " बेय एन मुबरियतकोवि मुचिर्याब-चाचोण्णय न [चापोन्नत] विनान-विशेष, एक देव-विंदवयपोनि " (महा)। विमान ; (सम ३६)। चास पुं [चाप] पति-त्रिंगप, स्तर्प-वातस, सहद्येखा : चिउर ई [चिकुर] १ देश, गत ; (गा १००)। २ पीत रह्म का मन्ध-दम्ब-विग्रेप ; (परम १०--पत्र (पद्द १, १ ; पाय १० ; दावा १, १; मोव म्ह मा ; १२८; गय)। टर १, १४)।

```
विश्वम्)विनम्, विनम्मः (हे ४, १३६ : वर् )।
                      (०० [ मण्डयू ] निर्माश कृता, मतहन करता |
                                                       पाइअसद्महण्णात्री ।
              विचाम वि [मण्डित] रानिः, विमृतिः, वनंतरः,
                                                               चिंतण न [चिन्तन] १ विकार, पर्यांत
               (बाम १६, १३, सता  सहा ; बाम, हाव ; समा )।
             विवास ति [ है ] चलिए पता हुमा, (है रू. १३)।
                                                                र स्मारण, स्मृते ; ( वन ३२ ; महा )।
            विविधाम ) सी हिं। देखे विचिधाः ( अम. उम १२ ;
                                                              चिंतणा मी [चिन्तमा] जार देखें; (
                                                             चिंतणिया सी [चिन्तनिका] बाद करन
            विविधामा
            विवली (१८३)।
          विवयो सी[दे] वर्गाहर, मन पंतरे से वरसे;
                                                            विनय में [चिलक ] विल्ता करने कहा।
         विचा सं [ चम्चा ] १ त्य की काई हुई क्याई कीए।
                                                           विंतव देखी विंत=वित्रम्।
          दिस्स वं [ 'पुरुष ] त्य का स्तुन्य, जो वृष्ट्व, वाडी कादि
         धे बाले के जिए केते में बात बाता है; (डाव
                                                         वितविय हि [चिन्तित ] निएडी दिता ही व्
                                                                                        विकार ;
       विया हो [दे विम्या ] इच्छी वा वेह, (हे रे. १०;
                                                         चिंता सी [चिन्ता ] ९ विषात, पर्वतिष्यः ।
        क्ष । दिल १, ६ । इस ११४ , १०१ , १०१ )।
                                                        इना ) । २ बक्तीन, रोह, रिल्मीते , (इर १,
      चिविम वि[मच्डिन] गृति, ग्लाइन ; (ध्या) ।
                                                        हुम ३, १ मास् (१) | ३ व्यान । (मार ४)।
                                                       स्टिन, स्माख, (वहि)। १ हर माति का वरेह, (इन
    विविविविवेवा
                  े की [ दे ] इम्ली का पेड़, (ब्लेच २(;
                                                       उत्ति [ तिर] ग्रीक वे ब्याउन , (तर (, १११)
                 ोरे १, १०; ह्या स्टर; वास )।
                                                      दिह वि [ इप्ट ] विवादमुग्ड देवा हुमा, (१४)।
   विकित्त कर [ मण्डप् ] निर्मुल बता, कर्णुल बता।
                                                      मास वि [ अय] किता नुष , "वसने विद्यार दर्म
                                                     विमा (वा१११)। मिला वु [मिला] । मोर्गांड
  चिनिक्तिम नि [मण्डत ] निवृतिषु मर्गाष्ट्रव ; (चम ;
                                                    वर्षं को देनेवाजा रत्न निरोप, दिव्य मवि , (भा)।।
                                                    बुह्ममाह अमरी का देव धाना ' ( स्था ५०' ३४५ )। हे.
 चित्र क्व [चिन्तर ] १ विन्ता कृता, विकार करता।
                                                   वि [ चर] किताना, (पान १०, ११)।
 विष् क्षेत्रा । विमान करता । ४ व्यक्ति करता
                                                 वितायतः ) व विन्तक विन्ता करते वाता, (नार्वा
 क्यांत्र क्या | वित्रेष, वित्रेष ; (सर ; क्या) ।
                                                विमायम र्जी मा; (इस ११)।
क-बिनेन, चिनेन, चिनिन, चिन्त्रेन, चिन्त्र
                                                विनिय वि [चिन्तिन] १ विवादि, व्यक्तिक , (।
माख, चिनेनाम ; (इसा , इन, इसा १०,४ ; सीन
                                                व बार किया हुवा, स्ताः ( बारा १, १, ११)
10. $ 2. 311 1 310 21 2 21) 1 ele-
                                                किसो क्लिया उत्पन्त हों से वह, (जीत ), ही,
वितासना (भा (११)) बहु-वितिस
                                               ४ व स्थारण, लगीः (यग ६, ३३, और)।
विक्रण, (म्हु, म १६८)। इ—चित्रणीय, चित्रि
                                             विनिर में [ विन्तियम्] किन्ता गोत, विन्ता करते हरू
य वितयात्र । (का पहर, वचा रे, काम है।
                                            विश्व व [विक्क ] १ किन्ह, बान्छन, निराजी, (हे
व [ किल्प ] किलोत, विकासीय विकासीय
                                            क्षा । काला १, १६) । १ व्यस, प्रतास , (४
                                            पट्र विकट्टी निवानी का क्य-कार, (बाता ),
A [ Same ] Amy and any, there,
                                           वित्म व [ व्या ] १ तथी मूंछ बोर वृत्त द
                                           वता मुगड । हे पुरत का केर भारत करने बजी क
                                         (21.1)1
                                        विवास है [सिहरू] बिहरूक हिलाने हता.
```

6

```
चिंघाल वि [दे] १ रन्य, सुन्दर, मनोहर; १ सुन्य, प्रवान,
   प्रकरः (दे ३, २२)।
, चिंग्रिय वि [ चिहित ] बिह-युक्त ; ( पि २६० )।
  चिंपुरुत्यणी सी [दे] सी दा पदनने का बस-किरोप, टक्ष्मा;
   (देव, १३)।
  चिकिच्छ देशो चिर्च्छ । पिकिच्छानि ; (स ४०६)।
   ह—चिकिच्छिमन्द्र ; ( मनि १६७ )।
  चिकुर देनो चिडर; (ति ४०६)।
  चिक्क वि [दे] १ स्तोह, योहा, प्रत्यः, १ न् चुत्, छँकः;
    ( पह् )।
  चिक्कण वि [चिक्कण] विक्रमा, स्किय ; ( पद 1, 1,
    हुता ११ )। २ निविद, धना; "जं पार्व विक्कयं तर बडें"
    ( सुर १४, १०६ )। ३ दुर्नेच, दुःश से झूटने बोस्य ;
    (पद्भ १,१)।
  चित्रका स्त्री [दे] १ योड़ी चीत; २ इटकी मेश-ग्रीट, सुदम
    र्धीय ; ( दे ३, २१ )।
  चित्रकार पुं [ चीत्कार ] बिन्ला, इटविंगड़ ; ( मण )।
  चिक्किण देखें चिक्कण ; (इना )।
  चित्रसब्द्रण दि [ दे ] सहिन्छ, महन करने बाला ; ( यह् )। -
  चित्रसाल्य पुं [दे] वर्रन, पंब, ब्बॉय; ( दे ३, ११; हे ३,
    187; 98 1. 1 ) 1
   चित्रबल्ल्य न [चित्रवल्लक ] क्लिनागर् का एकनगरः;
   (तो २)।
   विक्सिक्त )[दे] देखं विक्यक्तः (गा६७; ३२४;
  चित्रस्त
             रे ४४६ ; ६००४ ; भीते ) ।
ਂ ਚਿਥਿਤਰ )
   चिनिचिनाय प्रद्र [ चिक्रचिकाय् ] पद्दच्छः स्पना,
    भन्छा । बरु-चिगिचिगायंत ; (सुर २, ८६ )।
र्ग चिगिच्छम देखी चिर्च्छम ; ( विवे ३० )।
   चिगिच्छण न [चिकित्सन] विकित्स, श्टाम ; ( स
     १३६ टी )।
 ं विगिन्छय देखे विरूच्छम ; (स २०= ; एता १,
     १---पत्र १११)।
्रं चिंगिच्छा साँ [चिकित्सा] सा, प्रर्शसन, श्टार ;
     ( ह १७ )। "संदिया की ("संदिता) किन्छ-
     रास, वैदह-ग्रास ; ( स १७ )।
🕫 चिष्य वि [दे] ९ विक्टि नविद्य बाटा, बैग्रे हुई नाय
     बाटा; (दे ३, ६)। २ न् स्मर, संनोत, र्राटः, (दे ३, १०)।
```

```
चिच्च वि [स्यादय ] छोड़ने चीन्य, परिदरकीय ; " सर-
   कम्माइं पि विवाईं " ( सुपा ४६८ )।
  चिन्चर वि [ दे ] विपिट नातिष्ठा वाला ; ( दे ३, ६')।
  चिच्या देखे चय≃लम्।
  चिक्चि पुं [ चिक्चि ] बीत्हार, विल्ताहर, मर्यहर माताज;
   "विवेतिर-" (विना १, २--पत्र २६)।
  चिक्चि ९ं [दे ] हुतारान, मग्नि ; (दे ३, ९०)।
  चिट्ठ मक [स्या] बैठना, स्थिति करना । चित्र ; (हे
   १, १६)। भूक-विद्विसः (माया)। वह--
   चिहुन, चिहुमाण ; ( शुमा ; मग ) । मंश--चिहिडं.
   चिहिज्ञण, चिहिण, चिहित्ता, चिहिताण ; ( रूप ;
   हे ४, १६; राज; ति )। हेह--चिट्टिसप:
   (६म)। इ--बिट्टणिउज, चिट्टिमध्य: ( स
   २६४ टी ; मग )।
  चिट्ठ देशों चेट्ठ । वह-चिट्ठमाण ; (पदा २)।
  चिद्दर्जु वि [स्थातु ] वैध्ने वाजा ; (मग ११, ११ ;
   दवा ३)।
  चिट्टणा स्त्री [ स्थान ] स्थिति, बैठना, मबस्थान ; ( हुर ६)।
  चिद्वा देखों चेहुर ; ( सुर ४, २४६ ; प्रास् १२६ )।
  चिद्विय वि [चेप्टित ] १ जिनने बेटा ही हो वह ; (पाइ
   १, ३ ; याया १, १) । २ न वेटा, प्रयत्न ; (पद
   ₹,¥}[
  चिद्विय वि [स्थित ] १ मवस्थित, रहा हुमा। १ म्
   भवस्यान, स्पिति ; ( चंद २० )।
  चिद्रिग पुं [चिटिक ] प्रतिनिगेतः ( प्रद १, १ )।
  विभ सक [बि] १ इद्या करना। २ पूछ शीरः तीह
   श्र इद्या बरता। विदरः (हे ४, १३८)। मूच--
   बिरिंगु; (मग)। मनि-चिरिहिर; (हे ४, २४३)।
   क्रम-निविवद; (देर, १४१)। गृह-चिणित्रण,
   विणेऊण ; ( बर् )।
  चिप रंग्डे चप ; ( भा १०)।
  विधिम वि[चित्र] इसा दिना हुमा; (धुना ३२३;
   क्या )।
  चियोही सी [दे] युंग, युंग्बी, यात गर्री, गुस्तृती में
   'बटोर्ड ; (दे १, ११)।
  विण्य वि [बीर्य ] १ मार्चल, महीत ; ( हा १३ )।
   ९ मंगीहतु महर; (ट्या ३५) ।
   (टा१)।
```

```
विष्यु न [ विष्ठ ] निवानी, लीजः ; (हे १, १०; ]
                                                 पाइअसङ्गहण्णानी ।
        चित्त मह [ निषय ] निष् बनाना, नणोर सीवना । विनेद,
         (गर)) बाह्न चित्तरज्ञंग ; ( वर ष्ट ३४१)।
                                                          वेती-निनेपः (टाट)। "परवार्त्
       दिस व [चित्र ] १ मन, मन्तरह, हत, (य ४,
                                                          देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव विग
        १; प्राय ६१; १६६)। २ ह्यान, केला , (धाना)।
                                                          र चुद बन्तु-विगेष, बतुविनिय बोट-विगेष
       रे इ. म.द. (भाव ४)। ४ सलियम, भारत , (भाना)।
                                                         कुल, कुला, कुल्य व [क्रवह ]
                                                        कन्ता, (महा; मन १४; नि ११६) ।
       र ताराम, स्थार ( मेलु )। केलु मि [ क्षेत्र ] हिल
      ध अनमा, ( ता ह १७६ )। "निवाह वि ["निपातिन्]
                                                        [ मिति ] १ वित वाली भीत, १ भी बो त
                                                      द)। °वर देशो °गर, ( गामा १, ८)।
     स्थार ह स्तुपार बानने बाता , (साचा )। "सन वि
                                                      िरम ] माजन देने बातों कामानों ही एउ व
     ियत्] मनीत क्यु , (मन ३६ , माका )।
   चिम देनां बारमःचित्र , (रंबा , जं र , बच्च ) ।
                                                      १७ ; पत्रम् १०२, १२२) । 'लेहा मी[
   विष म [ विष ] १ छने, मानेत्य, वासीर , (उर १,
                                                     ज्यतिगेरः ( शति १३ )। "संमूख म
   र्ष , त्वल १३१) । १ व्यारवर्ष, विस्तवा (जन
                                                    तीय ] बित मीर मध्य नामह बावहात किये है
   ११)। १ बाउनिया, (बातु १)। ४ वि नियस्य,
                                                    बाना उनग्रन्थसम्बद्ध का एक बाज्यस्य ; ( जन्
  विविषः (मा ६९६ : मागू ४६)। ६ मनेड
                                                   ैनमा मी [ 'नमा ] तम्बीर काल' पर , (का
 प्रकार का, विश्वर, मानाविष , (टा १०) । ६ मन्-
                                                  =)। साला मी [शाला] वित-गाः]
 मुद्द मानवर्गनाह , (विता १, ६ , काम) । थ कारा,
 शिस्ता ( बास १, ८) । ८ वुं एक तीरात ;
                                                विसंग इं [वित्राह्म ] पुग्य देने वाले हना हो संव
(स ४, १-वन १६४) । ह वर्गनीतेन ; (यह १,
हे—नव १४ )। १० विवह, विचा, स्वास्त्र-विचेष , ( राजा
                                              वित्तम देती चितः=वित्र , (तप ११०)।
                                              विताहिम नि [ है ] परिनोधिन, तुम हिमा हुमा, (१)
                                            विसदाउ ९ [१] मान्यत, मसुग, (१),
                                            वित्तरहिन्द्रीय वि [ वे ] वतु, हाता , ( मन ५)।
                                           वितय देना वितः=ित्र , ( शाम )।
                                           चिताल वि [ दे ] १ व्यक्तिन, विभूषितः, १ स्वतंत्रः
```

१. १ - पत्र (१)। ११ नसम्बन्धिक विस नस्तर, "हजो दिलों व स्त्रा, दव इत्तिमहं मानव्य " (सम 10)। उस व [शुम] कारवेब के एक मानी जिला हेर (यम १६४) । 'कण्यात को [कलका] हेरी-वितेष, एक विश्ववानी वेशी : (क ४, १)। काम व िकर्मन्] प्राकृतन् हार्ष, नार्षरः (गा (११)। कार वर्गा भार ; (बापू) । कह मि [कार्य] नामा शहर 4 en ett em ! (21 !) | 22 3 [25] में हिन्तु के क्या किये का दिना हु क्यान्सर गरेंग विकास है [विकास] १ निगता, हता, है। (४४)। १ वर्ग मिल् , (वस १३,६) । ३ (वास)। र अंत्रती बनु-विग्रेड, हरित के सहरा ह दिवान कमुनियम . (असे १ . फह १, १)। आर-शिष्, के सामका मेरच में न विरोह !! कम से विसाति पुत्री [विद्रतित्] साँव बी एवं वर्ष, (क्रां) नाहै।(सम्बद्ध)। विकासिन्तः (अ द विकारिक वि विकारित, विकित्र विकारिक कर्म क्या मी [माग] व्यक्ति (व्य "वाम निम दिसहर वृशे व्हारि विगतिमा" (वा १०-) विक्षिमिम वि [दे] दोन्द्रीका , (यह ।। का दी। युना क [गुना] । नह

विमा औ [विमा] १ नवम किंग, (गम १ / १ मानमह कारात हो हह हर महिते । य . 411 of 12 May 141 (21 8 3 1 1) 14 र रिवर अस्त वर्तन का कान वालून वह दिवहसाल यह मोहान की भी, स्मीनित्र, , यह । 304) | 4 MAC-16134 (dt 30' 50) || 1.),

'पूँ [चित्रिन्] चित्राप, वितेग; (कस्म ६, २३)। ।प्रति चित्रित दिन-पुन्य निया हुम भीतः , इप ३६९ टी दे १, ३६)। ाया की [सिविका] मी-विका, भाग-विकेश के महाm 33) 1 ते को [श्रीक्री] गेव मान को पूर्तिया, (इस । इ विश्व] वि [है] निर्णायिक, विनानिक । हे ३, बिश्र रिशः प्रमः भवि ।। । डेग्गे खिण्णाः (सुराधः, सर्वः)। पहुष वृं [दे] कप्र विरोध , (इसा ६)। पूर्ण हुँ [है] १ हजार, स्वारी ; १ क्यारी वाला प्रदेश. विमान का प्रदेश, नट-प्रदेश , (सर्ग ६, ७)। सन [चितुक] इंट के नीवे या करण (दुना)। रह म [चिकिट] ग्रंग, बस्टी पट हि। गुलाकी " पीलहें "; (दे ६, ५४=)। प्रतिया मं: [चिर्मिटिका) १ र हं-भीप, रहरं। स र । १ मरूप की एक जानि , । जीन १)। मंड देनो चिक्सड . (सुग ६३० , पाम)। रेंट्ट) वि [चिपिट] बस्य, बेट हुम (नफ); मंड र्र (याया १, ८, वि २००; २०८)। मेण वि हि | रेम्पर रोमान्यित, पुरक्तिः (दे ३, ५%; 138 का)मी [सिना] कुँ की इंदने के दिए चुनी हुई रना) टक्सियों का टंग, (यह १,३ -- यह ४४ : मुन 14;8896 }} रत देखे चत्त , (सर २, ४, ९०, २; सन; मंद्र वि [दे] । सनिमा, सम्मा; (य ३,३)। ३ विद्या, राग-जन्छ ; (झीर)। ३ न. झीति, द्वीनः भगंति स्व भनाव ; (ठा ३, ३~-पत्र १६०)। पंपा देखी खियगा : (पहन ६१, २३) । याग }देवी साय=यम : (हा ४, ६, सन १६)। रन विर 1 ईर्म कल, बहुत कल (साम स्हः; १९८०)। १ दिल्ला, देशे (या ३८)। ३ ति ति इति नह गहने वाला "दिवाच्छिन्पवर्तना विग दाक्षम् जार्वेतः बद्धाः १) आस्त्र वि े कारकः } विद्यन्य कार्र वाहर । मा ३४)। विजिति

वि [जीविन्] दीर्न काल तक जाने वाला. (वि १६ ४)। 'जीविस दि ['जीविन] होई बात तर होया हमा, बढ़: (बाम २, ३८)। हिंद्द हिंद्य, हिंद्य वि िस्थि-निक टिम्मा प्रायुत्य बाउर, दीर्म काल नक गरने बाना : (सन: सुम १, १, १)। " एवाई" कासाउँ फुर्वान बार्ल, निर्दर्श तत्व चाहिर्देष " (सुप्र १, ३, ३)। राम वृं [राम] बहु बाह, होर्य कहा; (माना)। चिर मह [चिरय्] १ विडम्प काना (१ मालत काना । विग्मार (गी); (ति ४६०)। चिरं म [चिरम्] डॉर्ज कात तक, मनेक नगर तह : (स्या २६ ; ओ ४६)। "तपा वि विन) प्रामा, बहुत बाह्य का : (महा)। चिएडो मी [दे] वर्ग-माला, मलगवर्ज : "विगरिति मयारांता लोमा लाएहि गाँगवस्मदिमा " (दे १, ६१)। बिरिट्टिहिल्ल [दे] हेग्रो चिरिट्टिहिल्ल ; (पाम)। चिरया मी [है] कुडी, मीरही ; (है ३, ११)। विरास्त म [चिरस्य] बहुत बात तद ; (तता १०६ ; कुमर है (चिराभ देशे सिर≔ियम्। विगयः ; (स १२६)। विराधति ; (मे ६२)। भवि--विराहस्तं; (गा २०)। वह--चिराश्रमाण : (नाट -मालतो २०)। विराह्य वि [विराहिक] पुगना, प्राचीन ; (गाया १. १ : भीर) (बिराईय वि [बिरानीत] पुराना, प्राचीन; (विरा १,१)। विराणय (भा) वि [;चिरन्तन] पुगल, प्राचीत; (मति)। चिरादण वि [चिरन्तन] कार देखें; (हुई ३)। चिराय मह [बिरय्] १ विजन्य दरना । २ मालय करना । ३ सक विजन्य कराना, रेख एसना (सवि)। विगवेद: (बात्र)। "मा गै विगवेदि" (पड़न ३, १२६)। चिराविय वि [चिरायित] १ किने विराध दिया है। यह २ विटम्बित, रोका गया । 🕒 भू विटम्ब, देरी ; "मौरामी चंद्राजाम् किं मन चिमानियं समिति!" (पटम १०६, 9-9 11 बिरिबिस मी [दे] उत्तराम, दृष्टि ; (हे ३, ५६.)। विक्तिका मां [है] । प्रतो नमें रा करें २ मन्य बंडि ; ३ ब्राट-बंडि, नुरह , (विरिविश [दे] ब्छे विरिविश

```
चिरिडी देखों चिरडी; (गा १६१ म)।
                                                  वितिष्टिक्त न [ वे ] की, दर्श ; (वे ३, १४)।
                                                                                                                                                                   पाइअसद्महण्याची ।
                                                वितिहिंदी भी [ है ] गुन्या; बुवबां, वात रुगी ; ( है है,
                                                                                                                                                                                             किञ्जूणा हों [ चिञ्जूणा ] एह सो
                                            विकास व [किरान ] १ मनाव<sup>ं</sup> देश-विकार १ किरान
                                                                                                                                                                                               क्नी ; (की)।
                                             रंग में रहने बानी ब्लेच्च-बाहि, जिन्त, पुनिन्ह (हे 1,
                                                                                                                                                                                        बिन्द्रत ई [बिन्द्रत ] १ मार्र हे
                                            1-1; 5 (x : ad 1 ) : mis : 341) | 5 44
                                                                                                                                                                                           वैस का निवामी : (इक् )।
                                         मानेश का एक साथ-जीहर, (बावा १, १८)
                                                                                                                                                                                    बिल्ल पुन्नी [दे] , बाह्र क्यु-विरोह
                                   निजारमा मी [ वितानिका ] किरान देश की रहने वाली
                                                                                                                                                                                       १, १-वा १ वामा १, १-वम ११
                                                                                                                                                                                    ंटिया<sub>।</sub> (याच ११)। १ व. कता ह
                               विवाह थी [कितानी ] वस हेगी : (१७)। जुन
                                विकार के किए होंगी के बार के कार है । विकार के किए हैं के किए सामान (कार 1: ) विकार के किए हैं कि किए सामान (कार 1: )
                                                                                                                                                                                 ध्येटा क्लाब मादि (पाना १, १—गर (१)।
                          विजिमितिमा भी [दै] बारा, ग्रेटः (वर्)।
                       विलियात्र । हि] मर्च, विता, ( श्रद १, ३-
                                                                                                                                                                       देरीनमान ; (शाया १, १ ; भीर , स्म )।
                     विविष्योत्र 🕽
                 विनिया [रे] केनो चिन्तीया ; " एक्डाक्रोडकर्मन स
                                                                                                                                                                चिक्तिरि ३ [ दे ] मगर, मन्दर, पुर बनुसीते,
                   वितिये महत्त्वहानांची " ( मोप १६६ )।
                                                                                                                                                            बिन्तूर व [ दै ] गुगत, एक प्रधार को मोरो व
           विशिष्टा । अर्थ है विश्वेष्ठ वर्षण, मान्यास्त्र-वर्षण, विश्वेष्ठ है विश्वेष्ठ है कि विश्वेष्ट है कि विश्वेष्ट
                                                                                                                                                             वाक्त बारि कन क्षेत्र बाते हैं, (हे रे, ११)
          विजितिमालिया / ( मान १४ मा ; वाम १, १, ४८,
                                                                                                                                                       कित्य द [ रे ] का आणं, परिते को तका,
        विजिमिली । क्षेत्र अद्, द०)।
      वियोग १ [दे] बहुद, मेग, वत्रन्त । "तरस्त
       मित्रोते ब कराम काराच संगु े (का १०११ हो)।
                                                                                                                                                 विविष्ट ) (बाह), "विविध्वाया" (ति ।
  ( ) 1 40, een, ora, ( ; 3. ))
                                                                                                                                           विविद्या हो [विविद्या] कप्रस्थानितः,।
किल इ[किल ] । रेज किल , (यह)। १३
                                                                                                                                        चित्रिक देखां चित्रिक ; ( इर ११, १८१ )।
      " इर १वन रर, दशकानन विकार्राच ।
                                                                                                                                      विदुर्त [ विदुर्त ] केन्न, बाव , ( बाम , ब्रुवार
          हा कुल कि जर्दन्ति गांच देश किएसम्बर्ध ।
                                                                                                                                                         देवो बोहम, (है १, १११ ; वर्ष १०१।
न्त्र व [है] हेरियान, ब्लह्म, वर्गकान
मार्थ हरे हरिने स्वतंत्राकामानान्त्रे
                                                                       ( 974 (6, 14 );
                                                                                                                                 बीम व [ विना ] मुर्रे शे हुँ हो के लिए की है प्रैं
                                                                                                                                 वियों का बेर । " कीए बंजुन्त व समित हाई ।
ग [दे] देश विकास : (ब्रह १, ४ - मा
                                                                                                                                (47 1-Y);
                                                                                                                        वीर देशों बोहब, (कु रे, पर )।
[ ] ( and [ ] ) ( ] ( and 2 ) 5 3
                                                                                                                       बीम मि [ बीम ] 1 होता, हरू व्यक्तिमान
                                                                                                                        (बारा १ ८ वर १११)। १ ई खेब हैं।
                                                                                                                       April ( ( 26 1' 2' 18 AM ) | 141
                                                                                                                     The state of the s
```

हे का एक मेर : (मर)। " चीराकूर छन्दियानगर में "(महा)। "पट्डें["पट्ट] येन देश में हीने शक्तकीरः (पर ९,४)। पिंह न[पिन्ह] प्रक्तिपः (सर, राज १०)। भि हें [चीनांगु कि] १ बेंग्र-विगेद, विगेद मेंसुय र तन्तुकी ह क्या करा है; (कृ १)। १ र देश का करण-विदेश: " कीर्यंतुस्सृतिस्थयविगावयं" क्षार्थ: महु; वं १)। गि.सी, देली सीअ = विता ; " सीवार पहिलादित तन्ते विमें बहरों " (हुर ६, वय)। . न [चीर] बळाज्याः, बारे वा दृश्हाः ; (धीर ६३ प्रमा १६ ; सुरा ३६१ १। "कोड्सग्यट सं विषयु-कारह] जैन रायुमी क एक रास्तर, गरेराय की पर-विशेष (लिबु ४) । में \$ [चीरक] मीचे हेम्बे ; (मच्च १)। रैप इं [चोरिक] १ गला में पहे हुए क्षेपहों की पह-'बाडा निष्टुब्; ६ फरा-इस बाबा पहतने बाटी एड गायु-वि (दया १, ११--पत्र १६३)। ोर्मा [चीरी] १ वस-कर, दस का इक्ता ; "दी। । निवस्तन्यं वदाह वीर्गाह को कट " (सूत १८०४)। हुँ, बीट-बिटव, मीहिंद (इस्त ; हे १, १६)। हीं की [दे] मल्टी, माटा, राल्त-कियेर : (ह ३, () रि र [चीवर] वस्र, काग्रा; (सुर ८, ९८८ ; स [हीं मी [दे] चीन्हार, चिन्टाहर, पुद्धार, हामी परेता ; (सुर १०, १०३) । ीको [दे] इस्ताका मृत्यक्तिः; (दे३,१४; 1 () FE [च्यु] १ मरत, समान्त्र में बना। २ किना। र्ने—यस्त्रिः; (रूम)। संह—चइक्रण, बहता, सः, (टन ६; स ८; गर)। १ — बरपन्त्र ; F3, 3)1 म्ह [स्तुत्] मन्त्र, शक्ता। तुम्दः (हे. 1600 हिर्दे , (सग ; सहा , हा ३,९)। १ हिन्छ, |

"बुम्बरिक्ट्रनें" (क्रांत्र १=)। ३ झा, पीता; (गाया १,३)। चुर मी [स्यृति] स्तर, मण ; (गत)। चुंचुन इं[दे] देगर, मनदंग, मलक का मुख्य ; (दे 2, 31) [बंबुम इं [बुम्बुक] १ मेंच्छ देश किए ; १ इन देश में बहने वाली महामान्यति: (इस्)। चुंचुण १ [चुञ्चन] रम्य अति-विरोप, एव बैग्य-अति : (2 (-42 3)=) [चुंचुपित्र वि [दे] १ वहिन, ग्वः १ स्टुन, वः ; (\$ 3, 33)1 चुंचुणिया सो [दे] १ गेही का प्रतिवित ; ० स्वयः, की, मंमेता : ३ इस्ती का देह : ४ ध्त कींप, सुवित्यतः । युद्धा, चड चीट-विगेर : (हे ३, ०३)। चुंचुमान्ति वि [दे] १ मडन. मातनी, दीर्बनुवी ; (दे 2, 9= }1 चुँचुलि इं[दे] १ चन्तु, वॉव ; १ तुनुह, पन्य, एह हाय का संदुराकार ; (दे ३, २३)। रेपा स्त [चीरिका] रीवे देखे : (सु ८, १८००) । । चुंचुलिस वि [दे] १ स्वरति, तिथित , १ न, तृत्या, सम्पृहकः (दे ३, २३)। बुंबुलिपुर इं [दे] बहुद, बुन्द, फा ; (हे १, १८)। बुंछ वि [दे] परिगोलित, मुखाया हुमा ; (दे ३, ५४)। बुंछिम वि [दे] स्डा हुमा, परिगोरित । " बुंजियल्लां एवं, मा मन्तर्ग हता हरन्तु " (हता १४६)। चुँदमक [चि] वृत कीए से दोड़ कर हमा करता। बहु---चुंदंत ; (इस २३१)। र्चुंडी सी [दे] योहा पानी बला: म-बल बलागय; (दमा १, १-पत्र १३)। र्चुपालय [३] रेखे चुप्पालय : " दाव व हेवालु हिमी, वंदमहत्त्रेपरी विनासम्।। चुंगटर्प पेच्या, निवर्त स्वरावदियं " (पञ्च २६, ८०) । चुंब सर [चुम्ब्] उत्का करा। दुवा; (हे४, २३६)। वह-चुंबंतः (यः १०६; ११६)। कार-चुंबिरजंत ; (हे १, ३२)। मह-चुंबिवि (मा); (ह ४, ४३६)। ह--चुंबिमध्य : (गा ८६३)। वि [च्युत] १ च्युन, एत, एक अन्य से इसे अन्य में ﴿ सुंदाय न [सुरवत] तुन्यत, कुमा, सूमा : ﴿ मा २१३;

```
चुंबिस वि [चुन्तिन] , चुन्ता विशा हुम, इन.
                                          वार्असदमहक्कानी ।
 पुष्पत, २ व सम्बन, सुम्बा ; (द ६, ६८)।
चुनिर वि [चुनिनर् ] गुम्बन करने बाता , ( मनि )।
                                                  जुणिय वि [रे] विशनित, पान्य विस
                                                  बुष्ण मह [ बुष्पंय ] पूना, उसे अ
                                                   विष्णियः (राम)।
                                                 चुण्ण कु [चूर्ण] , वृणं, वृरं, वृष्ट
                                                 (इर १ ; है १, ६४ ; माचा )। १
                                                (बावा २, १,१)। र पूर्वी, रब, रेख
                                                व गन्यन्त्रम की रज, बुक्ती , ( मग १, ०)
                                               (हे १, वर ; विमा १,२)।
                                              हिया आना इच्च-मिनाम ; ( बाबा १, १४)।
                                              न [ कोराक ] महत-तिनेत . ( पद १ १)
                                            खुवका न [चीर्क] वर-क्रिनेर, मंगोरावंड ए
                                          नुवनाहम वि [ वे ] पूर्वाहन, पूरन में बहा; के
```

चुमल १ [में] गेला, मानंत, निरं-मण्य ; (१ ३, १६)। वृत्रक सह [संशु] १ वृष्टा, मृत करना । १ अट होना, रहिन होना, ब्रान्चन होना । ३ मह. नष्ट बणना, काम कमा। वृत्तव, (हे ४, १००, वर्)। "में समिसिकार, वृत्तवर देन व मान व '(जिने चुक्क वि [सप्ट] १ वृत्ता हुमा, भूता हुमा, विस्तान, " उत्तम कमा ", "उत्तक्षितारिक" (या ३१८, १६६)। रे ध्रष्ठ, बॉल्बन, रहिन, " दशकानकाने जुन्स नि सुरक्ष बदुमाण " (मा ४६६ , बड ३६ । दुना ८०)। मनबहित, ब-स्वाल , (से १,६)। वुक्क व [है] वृष्टि, होंगे, (हे हे, १४)। वुक्कार वृ [वे] मानाज, सन्द (मे १३, १८)।

343.8 3 [2] mm, 4001, 400, (2 5, 16) वुक्त [है] देनों सोवार , (वफ ४६)। युवुष } न [युवुक] तन हा हम नाम, पन हा हन्त बुब्बुय) (मह १,४, मन)। वुंच्छ है [तुंच्छ] १ मान, धोरा, स्तवा, १ हीन, बयन, वुग्त न [दे] मानवां; (हे ३, १४, तार ८३)। वुक्रण न [दे] जीलेना, सह जाना , (क्षीव ३४६)। बुहिलिस न [दे] गुरुवारत का एक बार, रखेलक की

मतात की तरह लगा रून कर कचन करना , (पुना १६)। वृहली [दे] देनो वुहुली, (का १)। वहरा न[र] , बात ज्याता , (रं है, र)। र गण, चन , (गाह) । वसही, त्वचा ; (गाम)। वृहुत्ता मी [दे] लंबा, बमरी, सत्त , (दे हे, हे)। वृहेली सा [है] जना, प्रमान, वन्त्रह, (हे है, ११, ण मह [चि] कुनन, पनोध्ने का माना । कुणक । (ह (स्वत)। "बामी निवाहति कुण्य" (सण ८६)। म ३ [२] १ बाताल , २ बात, बच्चा ; ३ व्यट छा , ब्रामीव, मोजन की समीति , ६ व्यक्तिक, स्मकन्त्र, ह मान्त्र, भूक, तक, तमान्त्र, वृद्ध

वृशं केंद्र वदा हो बह, (दे है, १४, वम)। चुण्या स्त्र (जूणां] एन्ट-किरोर, श्रम-विरोर; (वि वुक्यामा सी [दे] बजा, विज्ञान, (देर ११)। बुक्कासी स्त्रों [है] बार्ना, नीडानो , (हेरे ॥ बुध्यि स्त्री [बुध्यें] पत्य की दीवा निरोप ,[बुविषाम ह [चूर्णित] १ पूर पूर दिना हुए। र पूर्वा से ब्लाम ; (हे रे, १४)। वृण्णिया स्त्री [वृणिका] भेर विशेष, एव म इस्प्यात् जेते जिलात का स्वयत्त प्रचल १ हिर् बुद्स हेवो चउन्स, (कु ८, ११८)। वृष्ट देनो सुच्या । (क्या , टा १, ४ , प्रापू १०

वुनित्र देवो चुविषाम , (कह र, ४)। बुन्निमा देलो चुविषामा, (भाग ०)। वुष्प वि [रे] बस्तेह, स्त्रिण, (रे १ ११ वुष्पळ पु [वे] तेवद, मनाव , (व १, ११) चुप्पलिस न [दे] नया रंगा हुमा बयग, (दे। चुण्याल्य वं [है] मात्र, बनावन , (१ १, १ वृतिम न [दे] साच निरोप , (पा ४)। वुलकुत मह [बुलकुलाय] अवस्ता हा. हेना। क चुल्तुलन (बा ४८१)। बुळणो सी [बुळती] १ द्वर राजा हो हो , (

मरा)। 'पिय वं ['पिन्] मगरान, महातीर का एक : व दससदः ; (दर्गः) । मी स्त्री [चतुरहोति] चौगरी, बस्ती बीर चर, 🗝 🔉 महा ; क्षा ४७) । "बुन्तरीतः नागङ्गाराव समयग्रह-ाषु^{**} (मग) । ।सोर देवो चुलसी ; (पड़्स २०, ९०२ ; वं १) । देशाला मी [चुलियाता] छन्द-विहेत ; (पिंग) । टुश क्षेत्र [मुत्तुका] मुत्त्व्, परा, एक दाय का संपुदा॰ गः,(दे३, १८; सुरा २१६ ; प्राच ४०)। कुल **म**ह [स्थल्डु] फरबना, योग हितना । पुरुपुडर ; हे ४, १२७)। हुनुलिख ६ [स्यन्दित] १ परका हुमा, इउ दिवा मा, १ त् स्कुग्य, स्यन्दतः (पामः)। टुप्प पुं[दे] छ ग, सज, बस्स ; (दे ३, १६)। न्द पुं [है] १ शिग्रु, बालक ; २ दाम, नौस्ट ; (दे ३, :१)।३ द् छोटा लचु; (टा १,१)। ताय ई 'तात] पिता का छोटा माई, वावा ; (ति १२४) ! पिट पुं ['पिनृ] थाबा, तिना बा छोटा भाई ; (विना ।, ३) । भाउया सी [भारत] १ होटी मीं, मता की हेटी स्टब्नी, विमाता-दिश्य ; (टर १६४ टी ; धाया १, १ ; विरा १,३)। २ चाची, निता के छोटे माई की स्त्री ; [विरा १, ३ ---पत्र ४०) । "सयग, "सयय पुं [°शतक] सगतान् महाबीर के वस मुख्य दनायकों में हो एर ; (रहा)। 'हिमबंत हुं ['हिमबन्] छंटा हिमहान् पर्वेद, पर्वेत-विशेष ; (छ २, ३ ; सम १२ ; इक)। "हिमयंतकुड न ['हिमबत्कुट] १ जुर हिमरान् पर्वतः ध गिल्हर-स्मिपः २ धुं, उनका मधिगति देव-विग्रेपः (अं४)। **"**हिमबंतगिरिकुमार पुं ['हिमबदुगिरिकुमार] देव-विधेप, जो सुद दिमवत्कूट का क्रायिष्टायक है ; (वं ४)। [ल्डन [दे] देशे चोल्डक ; (मार्क) । [न्छि]मा (चुल्लि, "ल्ही) पुल्हा, विसमें माग स्व बर बृन्हों ∫रसंई ही जाती है वह: (द १,=७; ग्रुर १,१०३)। हुल्ली सी [दे] शिवा, पायाय-कर ; (दे ३, १४) । **बृ**ल्लोडय इं[दे] बड़ा माई; (दे ३, १७)। मूच पुं [दे] स्तन-शिखा, यन का मय गांग ; (दे३,१८) । सूस इं [चूत] १ एत-निरोप, भाभ, मान का गाठ ; (गरह ; मग; सुर ३, ४=) । १ देव-विरोप ; (बीव ३) । 'चिहिंसग न ['ावतेसक] दिनान का अन्तर्भन-निरोप ;

(गय)। "यहिंसा स्त्री ["ायनंसा] गर्हन्द ही एक मम-महिरी, बन्दापी-स्थित ; (इक ; जीत ३)। चुत्रा स्त्री[चुता] शहेन्द्र शी एक मत-महिपी, इन्हापी-क्लिंद; (इक्: इस ४, १)। चुड पुं[दे] पूरा, गरु-भूरण, वडवावजो ; (दे १, १०; ७, १२ ; १६ ; पाम) । चूडा देखो चूटा; (सुर २, २४२; गउर; यादा १,१; सुरा १०४)। चूडुल्लम (मा) देखे चूड; (हे ४, १६५)। चूर सह [चूरम्, चूर्णम्] साउ करना, तोहना, इक्हे इहहा इरना। चूरिन ; (धन्म ६ टी)। मति-नूग्इस्सं ; (वि १२=)। वह-स्यूरंत; (सुरा २६१ ; ६६०)। चूर (मर) इंग [चूर्ष] चूर, मुखर; "जिह गिरीनं-गदु परिम निजामन्द्रि चूह करेश" (हे ४, ३३७)। चूरिम वि [चूर्ण, चूर्णित] पुर पुर किया हुमा, दुंछड़े दुछड़ा दिया हुमा ; (मनि) ! खुल देखो चुला। भिणि न [भिणि] विपाधारे का एक नगर ; (१क)। बुलम [दे] देखो चूड ; (गट)। चूला स्रो [चूडा] १ चेटी, तिर के बीच की केश-शिखा : (बाम)। २ शिखर, टॉब; "मबि बजर मेरन्जा" (टर ७२८ टी) । १ मयूर-शिला ; ४ इत्त्रुट-शिला ; ४ शैर की केशरा ; ६ बुंन बगैरः का बाप माग ; ७ विभूगण, बालं-कार् "तिविद्यां य दम्बन्ता, मन्निता मोसगा य अध्विता । कुनकुड सीह मोर्रसहा, बुवामिय भागस्वादी ॥ बूला बिन्सरंति य, निदरति यहाँति एएट्अ' (निवृश्)।

"तिविहा ये दम्बवता, मण्यिता मोसमा य घण्यिता । कुत्तक मेंह मोर्गहरा, बूतामीय माण्डूतरी ॥ चूता विमुम्पति य, तिहरित यहाँति एएट्स" (निवृश) = मायिक माख; ६ मधिक वर्ष; १० अन्य का परिष्ठिष्ठ ; (दत्रबू १) । "सम्मा न ["कर्मन्] संस्कार-विरोध, कुरान ; (मायन) । "मणि पुंस्ती ["मणि] १ तिर का मबातम मामूच्य विरोध, सुद्र-स्टन, रिरोस्पति ; (मौत ; राय) । १ सर्वोतम, सर्व-भेष्ठ ; "तितायबुतामिय नमी ते" (यप १) ।

चूलिय ५ [चूलिक] १ मनार्थ देश-विशेष ; १ रत देश का निवासी ; (फ्ट १,१)। २ स्नंत, संस्ता किरेष, चूलिशंग को चौरासी तास से शुद्धने बर जो संस्ता रूप्य हो वह ; (इक ; य १,४) सो—"या ; (एप)।

राहरूक र प्रत्यं सबद हुन (हार्ड) 71271 वृत्तिमां सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः । A1 12 12 2 42 . [24]1 التعرفط اعتضعانها لدياليا में र [मेर] से, र. (क्र मा)। जीवक the section and the section वान्त्रात्वर्गं मार्किने सम्बद्धाः } रत्रवित्रास्त्रं के के के स्टार्ट (स्ट्र)। 4= 1 सेत मर [तिर] १ वेड्र, स्वाप्त हेर्ड, स्वयं स्वयं । * 51 H. L. 62 J. B. L. 1 422 1 (4 \$1") 1 2 ed 2 or 6 orde 6 ord 2 ord 2 (mor); वेड कर [दिस्य] १ जम दला । व हेल, करिय धन विषय परण । १ एट, कारा । व ही संत rd ang " (Ad by) | Ty, grid, Tid ; (m.m.) | 42 - 152 4 4 2 2 2 2 1 (12 8' 5" वित स (एव) सरारव भूगर सम्बद्ध नियह बर्डन करन वेज व (क्षेत्रम्) १ वर, वरत, इन , वेलव ; (क्षेत्र 11(1) (1) 1 2 m, fer, meren (412,1,28,2); मा १ विक विकासित (१८, मन १० टो)। 'सह 1 ['T'] Kr en ar war, (fin) ; बर १४ [बेन्द्र] व रिम्म क बरना दुवा वसरह Armier, en die meiffen au neuten at M. er and a weedlad at a (mal s' s' 5)! इ १० म श दवन स्कारका ! (का दशा देखें ! 20 1, 1 . let 4, 7, 2) 1 2 lacator, fac-स, म्हंबर तः (ह द, व-वह ४३०, वहना ;) TO 121 ATT \$ 4 20), " TO प्रतिका स्व" (मन्द्र)। व श देव की व्यक्तिन वीत मान देशा का जीवर , " काराज अवत केरत | विस्ता केरत

Contract of the second व्यक्तिकृषि प्रदेशताक दंद विकास स्वर् ⁹⁰्र की केरत स्त्र['] संभव चेत्रकोत सम्बद्धाः विति " सक्, किला चास (छ६६)। भक्तलम म बहुता बहा इह , ६ मो ब है। वरहरू अर्थ जिल्ला ए बली (ट = ; == 93; 92t , 118 हर्ग्य एउँम केंद्रसम् सारत "। हः। । चन्दर; 13 स्त्रतो इक्ति≉ ै १००)। जिसे १ (७०१ हैं () इस्ते , सुन्द १० १ । प्राप्त क्षित्र, बहेक्ट्रिस , १ राज १ म " बिना सी [यात्रा] किर्माच मार (यम् १)। धून १ लिए स सम्बा (व ४, ३, ३१ देवहरू, जिल्लान्या-मुक्तर रहण ! (बाह्य इंबना हर १००१) की ["परिपादी] ध्य व "कव" " १)। भहपु[सह] देवलः % 1, १)। "दस्य ३ (वस इंड, बिमंड बीचे बीचा बंद ह र र है देव को जिसके जीन बक्रमान है देवताओं का बिद बन इस 15.28 च्यः (स्य १३ १८ विन्त] किन प्रीमा र प्राप्त 10 f न्त्रत्व (तर १। वर १ । नहरू र क्यो पर्नेष्ठ सदः (सर । किन मर्रेस में बीओं दा भा था, (बीत १, पत्रम ६० 16 -34 315 बेहब नि [बेनिन] हा, पर ,वाराज्यं चेद्रशाम्

```
पंता; (स १४६)। भील न भील विम कः
मर्ह [ चेष्ट् ] प्रयन्त बरना, झाचरण करना ।
                                                  गेंह, कन्दुक ; ( मूभ . १, ४, ३ )। 'हर न ['गृह ]
माण ; ( वः )।
देश चिट्ट≕स्वाः (देश, १७४)।
नि [ स्थान ] न्यिति, भरत्यान ; ( वर ४ ) ।
स्रो [चेहा ] प्रस्त्र, भाषम्यः (हा ३, १ ; सुर २,
·( ):
₹ देश चिट्टिय≕गेंडित ; ( भीत ; महा ) ।
                                                  ( पडन ६६, १६ ; भावा ) ।
पुं [ दे ] बात, बुमार, निग्नु ; ( दे ३, ९० ; दाना
 3;589)1
  भू पुँ [ चेट, "क ] १ दाय, नीवर , ( भीर , कथ)।
१००० त्याचित्र, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम-
प ) प्रशिद्ध राजा; (भ्रावृ १; मन ७, ६; महा )।
                                                 चेज्लय ∫ता ३३)।
। देवना, देव की एक जवन्य जानि ; ( सुरा २१७ )।
स्मा स्त्री [ चेटिका ] दासी, नीस्त्रानी, (मग ६, ३३ ;
() i
 । स्रो [चेटो ] करा देशो ; ( मायन )।
 रियो [दे] दुमारी, बाडा, लब्कोः (पाध) ।
                                                  ( पत्रम ८, ८८ )।
 न [ खैत्य ] बैत्य-विरोध ः ( धर् )।
 पुं [चीत्र ] १ माम-विरोप, चैत मास ; (सम १६ :
  १, १४१)। २ जैन मुनिमों का एक गच्छ ;
 £ € ) i
 'देखां खेद ; (सप )।
 सि वुं [ सेदीश ] बेदि देश का गजा ; ( मण )।
 ग दि [चेतक ] हाता, देने वाता ; ( इर ६६७ )।
 ण इं [ खेतन ] १ झात्मा, जीव, झागी ; (टा ४, ४)।
 वि. चेतना बाला, हान बाला ; " भुवि चेदणं च किमस्व"
                                                   ७४ ; (सम म्४)।
 将 9mrk ) 1
 णा यां [बेतना] इत, चेन, चेनन्य, मुच, स्यात; (मान
 ; 57 x, 28k ) 1
 ण्ण ) न [चैतन्य] कार देखो ; (बिंदे ४०५ ;
                                                   (महा)।
 न्त ∫ सुस २०; सुर १४, ⊏ )।
 स देखी खेअ≈चेनस् :
                                                   (ময়)।
  " ईपादांवय भाविद्दे, कनुपाविज्वेषये ।
     वे धनरायं चेएइ, महामाहं पकुन्नइ " ( छन ४१ )।
                                                   ś∈ ) |
 १ दक्षा चेत्रणा , " वतेयमनावाद्यां, न रेग्युनेत्वां व समुदए
 मा " ( विते १६४२ )।
 े ) न [स्रेट ] बस्र, क्यदा; (झावा; मौर)।
                                                   महा ) ।
```

तन्त्र, पटनाद्य, रावटो ; (स ४३०) । चेन्द्रम न दि विचा-पात्र; " दिशेतुलाए भुवर्ण, तुलंति ले चित्रचेत्रए निहियं " (बमा ४६)। चेलिय देवां चेलः " स्यवस्थलवेलियवहुपन्तमस्मित्या" चे दुंप न [दे] सुतल, भूगल ; (टे ३, ११)। चेन्ह } [दें]देवी चिन्ह (दे); (पत्रम ६०, १३; चेक्लम र १६; स ४६६; दसनि १; हा २६८)। चेल्लम) [दे] देशो चिल्लम ; (पद १, ४---पत्र (८; चेच म [एव, चैय] १ मत्यारव-सुवक मञ्चय, निरवय-दर्शक शन्द : " जो कुणड् परस्म दुई पावड् नं चेत्र सी मर्था-गुर्च " (प्राप्त २६ ; महा) । " प्रवहारने चेव-सहो वं " (विने ३४६४)। २ पाद-पूरक क्रम्पय : खेब म [इच] साद्रय-यांतक मन्यय ; " पेब्टइ गवाहर-वसर्ह सरमरिं चेत्र तेएएं" (मडम ३, ४; उत १६, ३)। चो° देखें चड : (हे १, १७१ ; इसा ; सम ६० ; भीर : मग : काया १, १ ; १४]; विता १, १ ; सुर १४, ६७) । "बाला सो ["चत्यारिशत्] चार्तस मीर चार, ४४ ; (बिन्ने २३०४)। "चहिं सी ("पण्डि | बीन्नन, ६४ : (क्य)। चित्तरिक्षा ['सप्तति] स्तर भीर चार, खोज कर [चोदय्] १ प्रत्या करना । २ व्हना । चोएरः (त्र : स १४)। क्ष्मह-चोइउजंत, चोइउजमाणः (सुर २, १०; याया १, १६)। संह-चोइज्रण; चोत्रज दि [चोदक] प्रेग्ड, प्रमन्दर्ग, प्रांथली : चोवण न [चोदन] प्रेग्प, प्रेरण ; (मन ३६ ; उत चोइब वि [चोदित] प्रेरित, (स १६ ; सरा १६० ; भीप; ग्र किएण न ['कर्ण] ब्यजन-विग्रेय, एक तरह का | खोक्क [दे] देखो चुक्क = (दे), (नदा)।

```
योमा ति [ दे ] बोता, हुन, मुनि, वनित ; ( वाना १,
                                                      पाइत्रसहमहण्याची।
                1 ; टर १४२ टी , बूह १ ; सम ६, ३३ ; राव ; मीर)।
              घोषसा भी [चोद्ता ] परिवादिक-स्थित, इस नाम की एक
                                                                चौर्रकार हुं [ चौर्यकार ] चोर, तस
                                                                 बुलमहतं तर्व बज्जे " (हुगा ३३४)
             बोझ व [ हे ] मानवर्त, हिस्तव ; ( हे के १४ ; सुर के
                                                               चौरम वि [चीरक] । जुमने बाता
              ४; इत १०१; हाई १६६; महा)।
                                                                क्रिय ; ( पण्य १—वत्र १४ )।
            चोरत व [ चरेर्व ] पारी, चारकर्त , "तहेव दिन धातिन,
                                                               चोरण न [ चोरण ] १ बोरी, अगना ; (
             पत्ने कांस्ताल ( वण ३४, ३ व्याचा १, १८)।
                                                               र वि चोर, चेरी करने बला ; ( महि)
            चोरत व [चारा ] १ प्रस्त, इच्छा , १ मारवर्ष, महमून,
                                                              चोरछी सी [ दे ] भावण मान को कृत्व व
             हे वि चेंग्सान्यन्य , (ना ४०६)।
           गेरी सी [ दे ] करी, तिला , (दे ३, १)।
                                                             चोराम द [ चौराक] सनिवेश-विशेष, १९ व
          बोह न [ हे ] कुन, प्रत और वनी का कन्यन, (निक १८)।
                                                              गींव । ( भावम )।
          कोंड प्र[हे] मिन्द राजनियेत, बेत का केंद्र (हे है
                                                            धोराली रे देशे चडराली, (तिराहः
         षोपमान[१]१ कार, मधाः; (तिह २०)। २
                                                           चोरिश्र न [ चीर्यं.] बोरी, महत्त्व, (हे १,१
          रणनदन मार्थ जलन वर्म । (सम १, १)।
                                                            1 ; बाम् ६१ ; हुता ३०६ )।
               े उन [ दे ] क्ष्मीर, बाजन-दुनर, (दे रे, १६; बाक)।
                                                          थोरिज नि [ थोरिक ] १ चोरी दरने बता, (
                                                           १९ पर, जासम ; (पद १, १)।
        बोर [दे] रेगो स्रोय : ( पह १, ६—वह १६० )।
                                                         बोरिज वि [बोरित] बुगवा हुमा , (क्षि दर्भ
       बोर्ग रेना बोसम ; (सार ४ मा )।
                                                        व रेरिसा स्त्री [चाँदै,चाँरिका] योग, महार, व
       वेच्यह का [प्रस् ] व्लिप बाना, वो तेत्र वर्गरः समाना ।
                                                         41, $ 1, 38, 57 (, 140) 1
       कंतार, (१ ४, १६१) । <del>यह योजहमा</del>ण
                                                        चोरिककः व [चारिक्स] जस देनो , ( पर १।
       ( 347 ) 1
                                                       थोरी ली [ घोरी ] बोरी, महरव . (आ ११)
     बोलहरू व [ घ्रमाय ] वे, तैव कौरा दिवाब क्या ; " वेद-
                                                       चोल हि [ दे ] १ नामन, तुरुष , ( दे रे, १=)।
      वक्क बोर्क दिनि क्यमंत्रवाहि " (व्या ४३०)।
                                                       उत्त-विष, लिस्य ; ( पर (१ ) । ३ व वस्त्रवी
    बीध्याल व [ रे ] बनाम्ब, बन्या, (व १)।
                                                       व्यन्त्रः (तः ६, ४)। परश्चित्र
    बेन्द्रक्त में [रे] लिन, लेंद्र कता, अनुक, (रे १,
                                                      वा करोनान ; (बोर १४)। यह [४]ए
                                                      <sup>₹q</sup>;(₹₹ (, ¥);
  A.A. ] 4 [ $ ] (44), 84), (45) $ $-44 15.
                                                    बोल १ [बोल ] देत-वितेष, धीर मीर कीत्वके
  बोगा है है। इ मान करें, बा बंगा; (नित् १६;
                                                     देगः (सिवः सवः)।
   man 1' 1' 10 )! 3 mater | [ 11.1 ! ( 11.2.)
                                                   घोलम न [रे] धनव, वर्ष , ( बार )।
  1 ( 23 : 1 2,5
                                                   बोल्य व बोल, का निका निर्मा हुतर
 बोमा रंच बोजन ; (बर्द )।
                                                  बोल्स) ब्ताब्स कताव रोतर तम " (इन
कोरमा के [कोइना] सम्बा, (व ११; हा (अट
                                                  वोतुक्त देख बातुक्त , (मी १)।
बर्द्र [बर] क्या हुने स का कुले कुन, (हे है
                                                 विज्ञायकम् ) व [बुलापनयन] । बन्नार
 110 AE ('1) | AUE 1 [ AUE ] HELL II
Pro CT 62 , ( 12 1+ ) |
                                                बोटोब्ययम् ) १ विन्य वास्त्, पृशं वन्त्र
                                                             िक्षित, मुतान, ( बादा 1, 1-न
                                                11-51 fax ' 144)!
                                              1 C 1 2 14
```

. बोन्स्स (क्ष्म हिंदी १ वेस्स (स्वयू ११) व्यस्त, बोन्स्स (स. १) ११ वे ब्यूस, १४, १४ (स. १ १९) १ - बोन्स्य पुरुष्टि | बेस, बेस, संब , "स. स्वयस

च नरप पुर्व [है] चला, बेटा, सेटा , गीया उद्या स्थापन - टेटेंट स्थापन् गानुसार इस्त्र प्लाटिया संग्रायाओं असी स्थाप्यक टेसी चीच्यक – सन् । सीच्यक, (१९) ।

स्त्र में [यद] मारागासूच्या मारा , (हे १, १८४) इसा , मा, हे (

स्थित देशो चित्र±ाः, (१०,९८०) हमा ।। स्मैत्र । देशो सैप≝ाः । ५ ०९, क्रॉ.३०) । स्मैत्र ।

इम विवाहसमहमहणसर्वीमः स्वतंत्रकारकार्यः सहस्या स्थानस्यो।

ಕ

छ ६ [छ] ९ हारुअदर्गेद स्वयंत्र वर्गनीतीत , (प्राप्त प्रमा)। १ ब्राच्छात्न, दक्षणाः, " ६ लि व होनाय धारी रेंड्र" (क्राइस्)। 😯 वि. ब. (पर.) सन्दर्भात्में रहे । छत् । 'छ छे दिमा में स्थित-बन्द्रामा" (धा ६: ब्रा ३२: गर ५, ८)। उत्तरमय हि ['उनकातनम्] एश्मी भी स्वी; (पान १०६) YE)। 'क्क्स्मान['क्स्मेतृ] छः प्रधान्य कर्न. दः , महरों के इर्नाम है, बरा-बार, बारन, मन्तर, मञ्ज्ञा, राज भीर प्रीतर, (जिस्तु १३)। विसाय न ['काय] C. प्रश्य के र्रात, प्रीती, क्रीन, पर्नी, बाहु, बन म्बर्ड मी अन् बंद , (धा ४ ; वंदा ६४) । शुण, 'सून ति [सूच] छहा; (छ ६, वि २३०)। 'स्वाम (विरम) हम, स्मए; (इस) । उर्जीव-निकाय पुं [जीवनिकाय] हेक्टे 'बकाय; (माका)। ण्याद्रा, 'प्रयद्धा मा ['प्रयति] स्थ्या-हिर्दे, हन्दे, ११ (स्व १५, मीत १०)। सीम सेन [बिहात] म्प्यार्वित हरीन ३६ . इस । 'सीमाम वि [बिंग्रनम] जॉन्से, रहम १६ ८३, पर ३६०, इस ५ व [योड्यन्] बाजा, नरह । हिसहा म

[पेडराजा] रेन्ड प्रस्प का ; (सा ४)। दिसि र ['हिंग] ६ 'घर्मा' — ह्वं, डीवर, रूप, डीवर, उर्ज भी मोति ; (स)। दाम [धा] ज प्रस्त का; (कस्त ६, ३२)। निया, 'नुवा, न्तिबंद देती विसंबद्ध (कस्स ३, ४ ; ९२ ; स्स ३०); न्तिउप दि [चियत] इन्तरी, १६ वी; (यहम १६८ १०)। धरणा,धरन गण [प्रस्तारत्] इतन. र्धः (गडःग्यः १६)। दिस्तं दि [दिम्बरात] ग्रन्तीः (परम १६, ४०)। स्माप ई [माग] छ्व हिन्न ; (ति १४०) । 'ब्लामा मी ['मापा] प्रकृत, संस्कृत, मारावे, सीन्सेनो, रेसाचिता और आश्रीय दे छः स्पाः ; (रंग) । "मासिय, "म्मानिय वि [पान्सासिक] ८८ सल में देले बला, ८८ सल र्वेदन्ते ; (स्म २९ ; मीर) । 'यरिम वि ['वार्थिक] घर सर्व की रूप करता; (रार्थ ६६) । 'बीम देगी 'वर्षाम, (तिर)। व्यह नि ['विय] प्रवारका; (स्तः; न ।)। 'ब्याम संत ['बिंगति] ब्यांन, रंग हीर छ ; (न्य ४१)। 'व्योमाम वि ['विरातिनम] १ क्विन्ती, २६ की; (पत्न २६, ५०३)। २ हयातार बाग्र हिने [ध रातप ; (घप १, १)। सिंह मी [पिटि] र्क्तम-स्टिप, राउ मीर घर : (स्मा १, १म)। "स्मापरि भी ['सर्गति] द्रिकः (सम्म २, १०)। हा देवी 'दा; (क्य १, १; ५)। छ(देखे छवि = धर्व ; (स १२)। छहन हि [स्थितित] माहर, मान्काहित, हिरीहित; (हे २, १०; यह } । छरछ)वि [दे] विरुध, बदुद, दुरियर ; (विष ; दे ३, छर्ल्ड∫ २४ ; या ७२० ; दबा ४ ; प्रम ; हुना) । छउम वि [दे] रह, इस, पहला ; (दे ३, ५१)। छडम हेर [छमन्] १ इन्ह, रहेत, मचा ; (स्म १ ; पर्) । २ छन्न, नहत्तः ; (हे १, १११ ; पर्) । ३ मवर्ष, मान्यान; (स्म १ ; द्व २, १)। छडमत्य वि [छप्रस्य] १ प्रन्तीर, बहुर्व जन हे बन्तितः, २ गयर्न्डतः, सायः, (दः ६, ६ ; ६ ; ७)। छउन्भ देवी छन्म , (गत , कि ११०८)। र्डहर्र मो [दे] चीम्ब्ब्ट्, इत-विहेप, देवींच ; (दे ह 36)1

५१८ पाइअसइमेर	ण्या ।	In. 4
, .	उसके नि [यट्क] छस्य, छः का न्त्र्	u getiga E
	अस्ता " (सुन ११६; सन् ११)।	1
All and and and first and a	प्रस्थाः (धुगरा६;०५१८)। इसदेश छ≕ात्;(दम्म४)।	8
22.46[1.46]	ध्यादशाध=स्कृत्यमार्थाः छमन[दे]धुनेः,निष्ठः,(पद्रः	. 3-TE !! P
	सल्बल ५)। इस्त्र वृद्धी शुरुष्य सङ्ग्रहरू	•
अशासी[दे]रेप एटः (पाम)।	भाष कर है। छुम्चान [दे] थे.सर, गोकर ; (टर ६६	७ दी, वर ≒
	હેલ ૧૧) ક	
छक्र रेणी छड्≈पुर्। छड्डः (आस ३२ ; मनि)।	ल्या २०)। छमनियासो [दे] गोइंग्र, इंगः ; (१	त १)।
	छगल असो [छगल] छन, मनः	(48 11
	થીર): મો—'સી; (દે ^{ર, દ}	471 2.
(At))	िपुर विगर-शिते ३ (छ १०)।	,
एर् एड [छन्दु] १ करना, सन्यना । २ स्वज्ञ देना,		
 अर्थ देशा । ३ निसन्त्रय देशा । करहः— अ शत्रान्त्रकर्ष्ट्वेदि वर्गार्गियोदि सुधिकामा । 	छत्तुरु इं[वह्तुरु] १ एक मी मेर	् इत्मी ^{दूरी} है
क कार्युक्तरसद्देश वर्धावरणाह श्रु यसला । बार्याट क्यूनिस्ट व छोत्रिकातायि नेप्छिति'' (उर्ग)।	उस्तम : १ तेन दिनों का उसाम : (284)1
नह - दिस्म (१७ १०)।	छम्छुँदरपुन[दे]क्तुन्रर, मूने की एक	कारि। (वंश
ण्ड पुर [स्टब्स्] १ इस्ता, सम्बद्धे, क्रमिनाश ३ (क्राचा ,	खरद्वसह [राज्ञ्] गामना, बनक्ता 10म	SE (\$ 1,511
क्षा ३ . ३ . ४ ३ १६ अन व्यय १३) । ६ मध्याय.	and format for Carthian I printed. MAD	2 / E
शास्त्र, (शास्त्र, अत्) । ३ दशक, सर्वेनकः (दल ४) है १,	छित्रमा सी [दे] पुन-पात, बोगे,	(मराग)
1)) " " " " ((((((((((((((27-1 [2] 2 to 22 21 (87)	
स्टरो)। "इन वि ["यन्]स्तेरी (सरि)।	ere foliated a seed (Rd 40)	\$ 5, 9(1)
ोन्द्रक्य व [ोन्दर्शन] सन्त्रांक सद्गार करका ;		
(इन ११)। "शुरुत्तय ६ ("जुरुत्ते ह] साजी का	'क्श्रत्य व ['क्ष्रत्य, 'क्षरण]' ह	
श्रमुक्तक कार्य बाला, (बादा १, १)।		
सर् स [स्ट्रम्] १ सम्बद्धान, स्वेतिस । (३५ ४)।	िक्ता का का का के किये हैं।	रावर है न
६ झॉन्न्य, इध्या, ३ झारत, शनियाव, (सुन्न ,	रता गल्यो , (वर १११)। भव	
१,१,६,सपा, हे १,३३)। ४ छन्द-शस्य, (तुर्ग		
च्छा सैंद्र); हे इन्द्र छटः (काश ४) ।	["सिविद्यः] स्वयः स स्ति च व	हरन धर
च्युप ति [अः] इन्द्र का अन्तरार , (ने३४) ।		
एर्च व [बन्दव] कान, प्रकाय, कान्यान् (दुना ४) ।	. (च्या ३३४) । छद्री सी [चन्नी] १ फिने-स्थित ।	नम १३)।
प्रत्या वे [स्ट्रा] १ व्यन्तः (पंपा ११)।		
१ क्ष्यंत , (हुर १) ३		
उदा की [इन्द्रा] रीपा का एक बेर, माने का रागे के	THE SECTION AND DESCRIPTION OF SECTION AND ADDRESS OF SECTION ADDRE	af 1 844 ' '
क्षीताम्बर्धित ने निशं दुव्य नैन्यन ; (छ १, १;		
रक्त)।	server of feeters I as all	A 10-4
द्वरिष ५ (धन्दित) बहुदाद बहुदा , (बोप ३००)।	स्मत द्वांज केद प्रदेश दा मध्यक्ष प्रता	a, (4.4. i
६ মিটেকণ , (মিশু १) ।	41 35() (
'री' स्थ इंद≔करम् , (क्रमा , क्रमा १११) ।	एडा की [दे] शिवृत, शिवती , (रे	3, 341+

```
ु इंडा सी [छंटा] १ सन्हे, परम्परा ; (सर ४, २४३ ;
   वा १२)। २ छींडा, पानो का बुंद: (पाम)।
   इडाल वि [ स्टाबन् ] हटा बाला ; ( पडम ३४,९८ )।
   उर्दे सक [ छर्देय, मुन्दू ] १ वसन करना । २ छाड़ना, लाग
   करता । ३ टाटाना, गिराना । छाइ : (हे २, ३६ ; ४,
   ६१; महा; च्य )। वर्ज-छद्विन्नदः (पि ४६१ )।
   वक्-छड्डेत ; (भग)। संक-छड्डेड भनीए खोर
   बह पिरह हुटुव्मण्डारो" ( वित १४०१ ) , छट्टित् ;
   (वद २)।
   एड्ग न [ छर्दन, मोखन ] १ परित्यान, विमेखन ; ( बन
```

१७६; मोघ⊏६)। १ वसन, वान्ति ; (विरा १,८)। छर्वणन [छईन, मोचन] १ हुड्वाना, मुक्त करवाना । १ दनन पराना । ३ दनन पराने याला : ४ दुडाने वाला : ि (दुमा)।

डइवय दि [छईक, मोखक] त्याग कराने वाला, त्यावक; ं (दे२, ६२)।

ं **छर्**विण देश छर्चण ; (सुरा ४१७) ।

🕾 छ्याविय दि [छर्दित, मोचित] १ वनन कराया हुमा ; २ हुः शाया हुमाः (मादमः; हुइ १)।

छिट्टिसा [छिदि] बनन का राग; (पट्ट; हे २, ३६)। ष्टोंडू सो [छर्दिस] जिंद, द्वय ; 'जो जन्मह परछड्डि, सा

नियठद्वीए कि' सुपद्द' (महा)।

ो वि [छदित, मुक्तः] १ वान्त, वनन ं हड़िय छडियविलय 🕽 किया हमा । २ लस्त, मुस्त ; (विम र्ि २६०६ ; दे १, ४६ ; सीर) ।

्छण सरु [ध्रम्] हिंसा काना । छ्यै; (माचा) । प्रयो---

छणांबर : (वि ३१८) ।

🕤 छण दुं[क्ष्मण 🐧 बल्स्ब, महः; (हे २, २०)। हिंगा; (माचा)। 'चंद ई ['चन्द्र] राद क्छ की पूर्वमा का चन्द्रमा ; (स ३०१) । 'सिसि वं [शादीन] बहा प्रवोहत मर्थ ; (सुरा ३०६)।

छणगन [झणन] हिल्ल, हिंसा, (माना)। छणिदु वं [क्षणेन्दु] ग्रस् ऋतु की पूर्विना का चन्द्र ; (सुरा ३३ ; ४•४) I

रुपण वि [स्ट्रन्त] ९ गुन, प्रच्छन्न, जिराया हुमा ; (बूद १ , पाप) । १ मान्जादित, दस हुमा ; (गा १०००) ।

३ न माया, करट, (सुम १, ३, १ । ४ निर्जन, विजन,

रहन् ; १ बिनि गुन रीति से, प्रच्छन्न रूप से ; "जं छक्तं भागरियं, तहया जएकीए जोल्यकमएक। तं पडिव(रै यहि) उन्नड इक्टि मएटि सीलं चयंतेहिं"

(ट्य पर⊏ टी)। छण्णालय न [देपण्णालक] निकारिक, निपाई, संन्या-सोमां का एक उनकरण: (भग: भीव: गाया १, १)। छत्त न [छत्र] हाता, झातात्र ; (गाया १, ६ ; प्राप्त १२)। "घार पुं "घार] छाता घारए करने वाला नीकर : (बोर १)। "पडागा स्रो ['पताका] १ छत्र-पुत्रन ध्यत्र ; १ छत्र के लगर को पताका ; (मीप) । °पलासय न (पलाशक | इतमंगता नगरी दा एक चैत्य ; (मग)। °र्संग ९ं [भङ्ग] राजनाय, नृष-मर्ग ; (राज) । °हार देशो "धारः (मानन) । 'ाइञ्छत्त न [ीतिञ्छत्र] १ छत के ऊपर का छाता ; (सम १३७)। २ पुं ज्यांतिप-शास-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुरुव १२)। छत्त पुं[छात्र] विवार्यी, सम्यासी : (टर ए ३३१: १६६ टी)। छत्तंतिया सी [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, समा-विशव ; (६६ १)।

। छतच्छय (मा) ई [सप्तब्छर्] इन-विशंप, सरीना, द्यविषन ; (सय)।

छतयन्न म [दे] शह, तृप ; (पाम) । छत्तवण्ण देवा छत्तिवण्ण ; (प्राप्र)। छत्ता सी [छत्रा] मगरी-विशेष ; (प्रावम)। छत्तार वुं [छत्रकार]छाना बनाने बाला धारोगर ; (फल १)।

छत्ताह वं [छत्राम] रूब-विराव : "यागादवतिराने, वाल विचयु निर्वेगुलताहे" (सम १६२)।

छति वि [छत्रिन्] धत्र-युक्त, छाता बाला ; (भास ३३)।

छत्तिबण्ण वुं [स्तर्मण] इत्त-विरोग, स्तीना, स्तिका , (हे १, २६६ ; इसा)।

छत्तीय व [छत्रीक] बनस्पति-विगेष, बन्न-विगेष, (परस्य १--पत्र ३१)।

छत्तोय ई [छत्रोप] रह-रियोप ; (भीर ; भंत)। छत्तोह वं [छत्रीय] रज्ञ-विगंप ; (मीर ; पर्य १--पत ३१ ; मग)।

छद्द्वण देखं छद्द्वण ; (राज) ।

छही सी [दे] राम्या, विजीता ; (दे ू छन्त देख: छण्ण : (बन्म : स्म

```
[ छ-स्थिन-स
11 820
                                                पाइअमद्महण्णयो।
      छप्पर्गित्ल वि [ यट्पदिकावन् ] वृद्धा-बुन्द, वृद्धा बाना,
                                                           छयन्त्र दि दियां छहन्त्र र (रमा)।
                                                          ः छठ पुं [ स्मारः ] सद्य-मु%, तनरार द्य हाराः (स
       ( 42 3 ) 1
                                                             ४)। 'व्यवाय न ['प्रमद] सम्बद्धाः
   .- छप्पर्या मी [ पर्पदिका ] वृद्य, ज् ; ( मोव ४१४ )।
      छर्पनी सी [ दें] नियम-विरोद, जिपमें पर्म लिमा जाता है,
                                                             (311)
                                                           छल वह [छलप्]यना, बन्वना। वितेष,
        (दे ३, २१)।
                                                             ২৭३)। নছ—छलिउं, छलिऊण, (म्हा)। 🕌
      छप्पण्य ) वि [दे पर्श्यक्षक ] विद्यं, ब्तुर, चालाक ;
      छप्पण्यय } (दे ३, २४, पास , नम्बा ६८ )।
                                                             बन्ध, (धा १४)।
                                                           छल न [छल ] १ दल, माना ;( हा )। १ माम् <sup>हा</sup>
      उप्पत्तिया हो [दे] १ चयत, वपड, तमाचा , १ चयतो,
                                                             (पाम ; प्राम् १९४)। ३ मर्थ-रिपन, स्वर्नीरः
        रोटी, फनका :
                                                             नग्ह का वश्व-गुद्रः ( सम १, ११ )। भववम ।
        । "ग्रप्यतिप्रादि सम्बद्धः, निमन्ने पुरि ! एत्य को देगो है ।
           निमपुरिष्ठवि रमिञ्जद्द, परपुरियविवर्णिकए गामे "
                                                             तन ] ८२, वदन-दिस्त, ( सूम १, ११)।
                                                            छलंस वि [ पडमा ] वर्कोल, व्ह दोव रहा, हि
                                           (साब्द्ध)।
                                                            छलण न [ छलन ] गाई, बन्नता , (हा t, <sup>(दा</sup>)
       छप्पन [दी देखे छप्पण्णः (जय ६)।
                                                            छल्लमा सी [ छल्ला ] १ शाई, दल्ला , (इंदर्स
       छत्यय ९ [यर्यद ] १ अमर, मगर, ( हे १, २६६ , औत
                                                             का ७०६ )। २ छन, माया, ६५८ ; ( विषे ११४)।

 १ वि. सः स्थान वाला; ३ छ । प्रधार का;

                                                            छलत्य हि [ यहचे ] दर मर्थ बाता , ( सि धरा)।
        (पिने ६८६९)। ४ ज्छन्द-निरोप, (पिंग)।
                                                            छलमोत्र स्रंत [ यहरोति ] सस्या<sup>(सर)</sup> स्रं
       ग्रथ्यय न दि ] वंश-पिटक, यो बगैरः को छानने का
         रपारत्य निरोप , " सुद्रवाईसन्द्र। उएडि ससला च नाउखे ।
                                                              टर, <६, (भग)।
         गालेज्य छन्वएय " (ओव ६६८)।
                                                            छलसीर भी कार देती, (सम ६९)।
       छन्मामरी बी [यङ्ग्रामरी] एक प्रकार की गीवा ;
                                                            छलिम वि [ छलित ] १ वन्ति, विराहित, स्प
         ( वावा १, १७--पत्र २२६ )।
                                                              (सवि,सहा) । २ शृह्गार-स्तब्य, ३ चोर इस्
        उमञ्जम यह [उमञ्जमाय् ] 'छन् छन् ' बाशाव करता,
                                                              तम्बर-चंद्रा , ( राज ) ।
         गरम चीत्र पर दिया जाना पानी का मानाज । असन्दर्भतः ,
                                                            छलिअ [ [दे] दिराप, बाताब, बदुर, (दे। ग
         (बाजा 🕮 )।
                                                              पास )।
        रुम' देखो समा । 'रुह् पुं ['रुड्] इस, वेड, दरहन, (इमा)।
                                                            छलिञ्ज न [ छलिक ] नाव्य-विरोष , ( म्र ४ )।
        छमलय ९ [दे] साच्छर, इच-विरोग, स्तीना ; ( दे ३,
                                                            छलिम वि [स्विकित ]स्वलना-प्राप्त , (क्री 🗗
                                                            उलिया देखो जालिया , " बोबाकूर प्रतियानस्वर
         22) I
        दुमा स्त्री [ क्षमा, इसा ] पृथिती, परिची, अपि , ( हे २,
                                                              (मदा)।
          १८)। दर दे [ धर ] पर्वत, पहाड, ( पत्र )। देखे
                                                            छलुम ) प्र[यङ्गूक ] वेशेषिक मन्प्रतांक झारा
                                                            ख्या } (क्या, सं प्रति ११०१), ह्या ।
ख्या अस्ति ११०१), ह्या ।
ख्या अस्ति ११०१), ह्या ।
ख्या अस्ति ११०१
          सम ।
        छमी सी (शर्मी) इल-विरोध, मनि-गर्स इस, ( हे१, २६६)।
        क्रुम देखे क्रुम, (इ. २, ११२, वर् , पत्रम ४०, ६, स्थ)।
                                                              2×84)
        रामुद्द पु [पण्मुल] १ स्टन्द, दानिदेव ; (हे१,१६६)।
                                                             ख्यन्त्री सी [ दे ] त्यचा, बल्बत, व्राव , ( दे ३, १<sup>४</sup>।
          र मगवान निमलनाय हा मधितायक देव , ( संति प् )।
                                                              ९३, ना १९६, स ४, १, वाया १, ९३)।
        छप न [ छइ ] १ पर्यं, क्ती, पत्र , ( भीर ) । २ भावत्य,
                                                             छल्लुय देखो छलुम , ( पि १४८ )।
          मान्दारन , ( हे १, ४० )।
                                                             छव देनो छिय। हदेनि , ( मुन ४५३ )।
         छप न [इरनं] ५ वय, याव; (दे २, ९०) । २. पोक्टिन,
                                                             छवडी स्त्री [ दे ] चम, चाम, धमड़ा, ( द र, ११)।
          मधित, (सूम १, १, १)।
```

छाणबङ् (मर) देखे छण्णबङ् ; (सिंग) ।

छाणो स्त्रों 🔁 १ घान्य कोरः का मतन ; २ वस्त्र, काड़ा ;

्रवेस्त्री [छिबि] १ कल्ति, तेत्र ; (बुसा ; पाम) । २ —;^{-भ}, गरीर ; (पाइ १, १)। ३ वर्म, चनशे; (पाम; _ ोत ३)। ४ मनपत ; (प्रति)। १ झँगो, नरांगो; ब ४,९)। ६ मत्रद्कान्वियेतः (मग्र)। व्हेंब ् [चिछेद] मर्ग चा विच्देद, सवस्व-कर्नन : (पित) । ्राग्नेयण न [°च्छेद्न] भंग-व्देद ; (परह १, ९)। तापा न [ज्ञाण] चनशे का भाष्टादन, करव, वर्म ; टन २)। ब्रेंब दि [स्ट्रप्ट] द्या हुमा ; (श्रा २०)। 🎮 [है] देशो छत्त्वय ; (राज)। मेबल दि [है] रिहित, मान्छ दित ; (गडड)। ं(मा) देखो छ≕पर्ः (पि ४४९)। नर वि [पट्सतत] छत्तरवाँ, श्रे वाँ; (पटन £, 20) 1 मि वि [छादित] भारजांदन, दशा हुमा ; (पटन १३, ६४; दुना)। स्टि वि [छायावन्] छावा बाहा, कनित-बुकः ; (है , ११६ ; पर्) । ल्लि हं [दे] १ प्रशेष, श्रीवह, "बीद्दवन्नं तह छाइल्डबं च र्वं सुचेज्ज्ञाहि " (वत्र ४ ; दे ३, ३६)। २ वि. सद्दग, ान, तुत्रः ३ जन, मनूगः ; (३ ३, ३४)। ४ सुस्तः 'र्रोत, स्परान् ; (दे ३, २४ ; पर्) । रेदेडी छाया ; (पर्)। र (सो [दे] माता, देवी, देवता ; (दे ३, २६)। इमेरियय वि [छा प्रसियक] देवउद्गत दलन्त होने परते की महत्या में उत्पन्त, खईडड़ा की पूर्ववस्था है बन्य रखने वाला ; (सम ११ ; पाठ ३६)। -भोषम दि [छायोपम] १ छपा-पुरू, छापा बाहा ; [बादि) ; २ पुं. मेदनीय पुरुव, माननीय पुरुव ; (टा ४,३)। ुगल दि [छागल] १ मत्र-मंदन्यो ; (डा ६, ३)। र्धं भव, बस्ता ; स्री— स्ती ; (शि १३९)। गलिय इं [छागलिक] छानों हे बाजोतिस इन्हें चा, महा-पादक ; (दिरा १, ४)। म न [दे] १ धान्य बर्गेरः का महना ; (दे ३, ३४)। गानम, गीवर ; (दे ३, ३४ ; सुर १२, १० ; याचा , ण ; जीव ९) । ३ वस्र, बरहा ; (द ३,३४ ; जीव३) । ् गण न [दे] छनना, गाउन ; " नूनतिहयदङङसयाई प्यामी होह न्हायह" (हड़ि ४६ हो)।

्र-।य—छार |

54

(दे ३,३४)। ३ गेलय,गीवर ; (दे ३, ३४ ; धर्म २)। छाय मह [छाद्य्] बान्जास्न करना, दक्ता । छादर ; (ह ४, २१) । वह—छायंन ; (पञ ७, १४) । छाय वि [दे] ९ इसुन्तित, भ्वा; (दे२, ३३; पाम टा ७६ म दो ; भोष २६० मा)। २ इन्त, दुर्वत ; (हे ३, ३३; पाम)। छार्यसि वि [छायावन्] काल्यान्, तेजली : (सम 182) 1 छायण न [छादन] भान्जादन, दक्षना ; (दिंग ; महा ; नं ११)। छायणिया) स्त्री [दे] देरा, पड़ान, छावनी ; " तो तत्येन छायणो ∫ टिम्रो एवो कृषितः गिहकायनि " (था १२ ; महा) । छाया ऋाँ [छाया] १ मादा स्व मनाव; छाँही; (पाम)। २ कान्ति, प्रसा, दीति; (हे १, २४६; मीर; पाम)। ३ रॉना; (मीर)। 😮 प्रतिदिम्ब, परङ्गई; (प्रास् १९४; इत २)। १ धूर-पहित स्थान, झनातर दंग; (स.२, ४)। "गर् स्रो ["गति] १ छाया के मतुतार गमन ; २ छाया के मरदम्बन से गति ; (फरा १६)। वं ['पार्ख] हिनाचल पर स्थित मगवान, पार्थ नाथ ही मुर्ति ३ (वी ४६)। छाया ओ [दे] १ कोर्ति, यग, स्वाति ; २ अमरी, मनरी ; े (दे ३, ३४)। छायारचय नि [छायावत्] छमानाता, छमानुस्त । मो—'६चिमा ; (हे १, २०३)। छायाला स्रो [पट्चत्वास्शित्] ज्वितंत, बार्वत मीर घर, ४६ ; (मग)। छायालीस भीन कर देखें; (धन ६६; इस)। छायालोस हि [पट्चत्वारिंश] विवार्तनाँ, ४(वाँ; (पत्रम ४६, ६६)। छार दि [सार] १ दिन्हाने बाला, स्तने बाला ; १ माग, दार स बाहा; ३ पुँ, दारा, नीत्-निमध; ४ साबी, साबी-सर; १ आहः (हे२, १७; ब्राह्न)। ६ सस्त, मृतिः (विते १२१६; स ४४; प्रायु १४६; टाया १,२)। ७ मल्बर्य, मत्री-एकः (स्वा ३)।

[शर∽ पाइअमहमहण्णवी । 655 छिडिया सो [दे] १ वार का दि; १ मार्ग स्तर वं [दे] बच्चमञ्ल, शल्कः (दे ३, २६)। छिडिबाबो जिनगरगनम्मि" (पर ९४६ औ () शारय देवी छार, (भा २७)। छिंडी सी [दे] बाड़ का दिर, (गाम 1, १—म 1 शारय न [दे] १ इस् गम्ब, अय की हाल, (१ ३,३४)। । छिंद सक [छिटु] देश्ता, निन्देर कारा। बिंग, " २ मुरुल, कली ; (दे ३, ३४, पाम)। महा)। मनि—देव्छं; (हर, 1≀1)। ह छाल ९ [छाम] धन, वस्स , (हे १, १६१) । विवर् (महा)। वह —छिड्माण; (बाब १, १) । छालिया सी [छागिका] बना, जनो , (मुर ४,३०,मण)। छिउनेत, छिउनमाण, (था 📢 सि 👫 छारते ही [छापी] उत्तर देखे , (प्रामा) । सङ् — छिंदिऊष, छिंदिसा, छिंति, छाप पुं[शाय] बालक, बच्चा, शिगु , (हे१, २६६, , छेतूण; (विश्⊂श्; मग ९४, ⊏, विश्रा, व प्राप्त; वर १)। २, महा)। ह— छिद्दियन्त्रः (स्र छायण देखे छायण , (बूह १)। छावद्वि स्त्री [यद्यप्टि] ठाउट, ठिवामड, ६६ , (सम हेह-छेतं; (माया)। छिंदण न [छेदन] हेर, साउन, काँर, (st ण्य ; सिने २०६१)। रायत्तरि स्त्री [पर्सप्ति] जिल्ल, रूप और छ, मा)। खिंदायण न [छेदन] कटवाना, वूले हुगा हेप F ५६; (पडम ९०२,⊏६, सम ⊏६)। "स दि ["तम] **अ्ट्रियों**, (मग)। (महानि ७) **1** छिंदायिय वि [छेदित] विश्वित कावा गरा, (११ छापलिय रि [पदायलिक] छ. बार्गलेका-गरिमेत समय छिपय ५ [छिम्पक] कारा ठाएने वा बार छो।" कता: (सिंडे १३९) : द्यानद्व वि [पर्पष्ट] ठिवानज्ञों , (पडम ६६, ३७) । १,६८, पाम)। डिक्स व [दे] जुन, छीक, (देर, स्_रस्त्र) छामी स्त्री [दे] हात्र, तक, मग्र , (दे ३, २६)। छित्रक दि [दे छुन] ल्हु, ह्मा हुमा, (१६) छामीइ ली [पहरोति] क्ष्मिने, बली और छ। "स हे र, १३८ , हे र, ४६ , स ४४१)। भार दि ["तम] रिक्निलॉ, म्द बी; (पत्रम म्द, ७४)। ["प्ररोदिका] बनम्यनि-विशेष , (विषे १०१४)। छाइसरि (भन) देना छायसरि ; (वि२४६)।

हार्ता ुस्ति हित्या] श्रीहें, जलत का क्या , र हार्तिया | प्रतिक्त, कार्या ; (वर्, याव, गुर, हार्ति । प्रश्न ; (दे १, ६१) मा स्था ह ['मिल] सूर्व, सुन्द ; (दे १, ६१) । हित्र देखें होत्र ; (दे १, ६१) । हित्र देखें होत्र ; (दे १, ६१) । हित्र देखें होत्र | प्रतिक्त कर ; प्राथा) । हित्र हर्ति [दे] मार्गि, करता ; (दे १, १०४ , मा १०१ ; १४० ; याम) । हित्र हर्ति | प्रतिक्त कर स्वाप्त कर स्वाप्त कर स्वाप्त कर स्वाप्त हर्ते होत्य हर्ति । हित्र हर्ति | प्रतिक्त कर सम्बद्ध ; (दे १, १४) । हित्र हर्ति | प्रतिक्त कर सम्बद्ध ; (दे १, १४) ।

जिस्त[दे] १ पूर, मोटी; (देश, १६; प्राप्त)।

रे बन, बन्नारे भूर-कन्त्रः (देर, २६)।

क्तिक वि [कीटकृत] को को मानाम में महुनी बोरमुविमा ठिस्काविक्का प्लाका तुरिव" (मोप 111 जिक्कंत में [दे] वींद्र करना हुमा , (नुत्र 111) डिक्का सो [दे] जिल्ला, शीव , (म १९९)। खिरकारिम दि [छोतकारित] यो यो प्र^{मार्थ} अञ्बद्ध भावाज से बुलाया हुमा, (मोप १९४^४, छिरिक्य न [दे] छीनमा, छीन काना, (न ।। छिनकोधण नि [दे] मनहन, मनहिन्तु, (रेरे जिक्कोहली सो [दे] 1 पेर सामाना, र थप्य का मतुना ; ३ गोइडा का दुहा, हरें (देव. ३७)। डिक्कोनिमार [दे] का, पाना, हम , (र), छिक्कोयण [दे] देखां छिपकोअण, (य जिञ्चीलय ५ [दं] देनो जिञ्चीलदं , 'रम)! रिप्टर्स हेनो जिस्से ; (पर्) । जिय्ह्य देनो *स्टिप्ट्य* , (बर्)।

छ । हि बिक्टिक्] हो ही, दिन् कि । मेन्य क्षान : (१५,५३४,५३) बत पि हिंदा । यो मीता किए हा गर्छ , र हारी सर : (सूम १, ४०) । ११ देश, विलंद, विलंदर, र्भावतिक्षयास्य हिन्द्रसम्बद्धसम्बद्धः १ क्रिये १६ स्म , ₹ 1≈{ } { र्लन रि [श्रीयमाणा] एव पा, हुवें हो र

क्षेत्रकेर्यः कार्युरस्, यस्त्रकर्यकारि दुर्गाका करेरि " F 3 (2) (

इतंत) रम सिंद ।

श्रेमाण) इन छिद्र ११ हिंद निग, विस्त १०, १६१ . मह , तर १ १३=)। १ मानाम, माना : १ रण १,)। ३ दुन्न, देख, (नुस ३६०)। 'पानि ६ पाणि रेह इसर स देन गाउँ (झाल २,१, ३)। बार्य देशे छिन्त । रामा १,१८, सुम १,८७। क्या पु [हे] जग, हरतीः , (हे ३, २० : पर्) । पमच्छोडण २ - हि] गांव, तुन्न, रान्ये , (६ ३,६६)। पणवद्य वि: दि } टब से जिला , १ पम १। प्रपा सी [है] बहुई, इत्या , (रे ३, ६४)। क्याल दुद्दि] चम, स्वर्त ; (दे ३, २०, पर्, ३१२०)। मनालिया) मी [दे] मनी, इतय, प्रावजी;

यणान्द्री है (मुच्छ ४४ , द ३, ९०)। पणीत्मवा मां [है।] हर्ग, राम : (हे ३, १६)। न देणं सिन् ≘र्वदः (भीः, उरमध्येतं; द्य ३०)।

न्ति वि[दे] स्टर, ६मा हुमा _१ (४३,२४) गा १३३ हर १०४ ; पास) ।

क्तर है] क्यां छेता: (मन: २२३; बाह 190; \$3 = 27 }1

ानि मां [छिति] हेर, विन्हेर, करतः (विने \$ 62= ; #FR 8) 1

ह देशे छिट्ट ; (रावा ५,२ ; व ४,३ ;परम १४,६)।

民\$[考]前前和前(参り、社)1 इदिय वि [छिद्रिन] जिन्युट, जि बाहा ; (गन्छ)। इन्त वि [किन्त] १ सन्ति, बृद्धि, देश-दुक्ष ; (सर);

रव १४६)। १ निर्मान, निरंगा (हा १)। ३ न, हेर, स्वारम; (रन १६) । "माँच वि [^{*}श्रम्य] स्टेह- र्गत्त्र, स्मेत-पुणः (विकास, ४) ३ स है त्यारी, सापुः मुर्रे, निर्देश्य , (इ.स.)। चित्रेष हु ि रहेर] ना-विरोध, प्रायक सुत्र की क्ष्में सूत्र की क्ष्मीक्षा से अपित सामने राज्य मर : (गर्जि) । "द्वाप्तेनर नि [पिदान्तर] मार्ग-विशेष, क्टी थेंब, नगर वरीम कुछ भी न ही ऐसा रक्तः; (हुत १) । 'सर्देष वि ['सद्दर्भ | जिल गौर ग रहर के सतीर में इत्या गाँव कीश न हो : (निय १०)। "सह दि ['सह] बाद कर बीने पर मी पैड़ा होने बाली बन्मर्यः (अँव १० : पण ३६)।

हित्य न [सिम] जन्हीं, मीटा । 'तुर न ['तुर्थ] सीट २ बराबा लाग्न बरह : (बिरा १, ३ ;गाया १, १८)। छिष्य न [दे] १ निला, मीत्रा, (१ ३,३६ ; मुत ११६)। ९ इच्च, टार्ट्ट : (हे ३, ३६ : पाम)।

छित्रांत देना छिय=स्ट**्**।

हिर्जनी माँ [है]। महन्तिर ; १ रच्यानीरेय ; (हे 2, 3 =) [

हिर्प्यदूर न [दै] १ योमार-उठ, योगा-उठ ; १ मि शिम, कींग ; (हे 3, 34) 1

छित्याल पृ [दे] कन्यवद बैट, शने में हवा हुमा देल ; (हे ३, २=)।

व्रियात्रुम न [दे] ५°७, :वार्युत ; (हे ३, २६) । छिपिंडो सी [दे] १ वर्त्तरेत ; ३ वन्तर्वरोय : ३ रिद्ध निमान ; (दे १, १०) (

छिल्पिस दि [दें] सारित, मग हुमा, दरहा हुमा; (प्राप्त) १ छिन्यीर व [दे] पताद, तृष ; (दं ३, २८)। . छिन्योल्सी की [दे] मजादे की विद्या ; (निव् १) ।

छिमिछिमिछिम मह [छिमिछिमाप्] क्रिन क्रिन मानाव बाता । वह—छिमिछिमिछिमंत ;(पत्न २६, ४=)। छिरा की [शिय] बन, बनी, रग ; (छ २, ५ ; हे '५,२६६) । छिरि ई [दे] मानूक का भावात; (पत्म ६४, ४१)।

छिन्छ न[दें] १ विद, नितर ; (हे ३, ३६ ; यह)। २ कुटी, कुटिया, छोटा था; ३ बाढ़ का हिट; (द ३,३४) । र पतामा का पेड़ ; (ती ह.)।

छिन्छर न [दे] पन्चड, छंटा वजन ; (दे ३, २= ; सर ४, २२६)।

क्रिकी माँ [दे] विश्व, बहाँ ; (दे १, २०) । छिय सर [स्पृश्] स्वर्य बरता, छूना । जिस ; (हे ४, १=२)। क्नें- विना, हिविजा; (हे ४, २६०)।

```
हर रेगी सुद्ध (रेडाउं) ।
इ.सि.[हे] व्यत् इंग्लि (र सार्) ।
घ डर्ग सुरम , "लंगीम पामनरा सुन्ना अनेग
Barrell friende
चंत्र रेले ह्या।
ब्स गर [ सम् ] सुन्त होना, निर्यालत होना । हुन्तीन
1 15 32 11
प्सन्य [ने ] देव छोप्तस्य : ( हे ३, ३३ ) ।
मि देशो सुद्र । दूसर, हुनेद्र , । सरा : स्वय ३०) ।
गर-सुमिनाः (विशः ।)
सा देशे छमा , (दल्द ६ ) ।
रे सर [ हरू ] ९ मेर बाला, लोरता । 📑 देशन हरता,
हारा । ३ करार, कारता , । वा ५० , पाल ६००००) ।
गंद्र{द्दर } ५ दूस, सदित दा ध्रमः, १ प्रदु दा सप
🖭 🗈 इंड-विरोद, बारासः । ४ कारा, सार, बीर 🗧 🕞 के 🧸
५७, प्राप्त १४ व वृतर्विहेश (प्राप्त १) । यहयं न
[गृहक] साहित को हुए। क्येंगः। रमने की थैली, (निच ६)।
रण न [ झुरमा ] धइनेपन , ( इन्यू )।
रमहि ५ [है] नात, इद्यान , (४ ३, ३९ १)
भड़त्य g [है स्वरहमत ] मपित, हजाम, (वे ३,३५)।
रिमा से [दे] मृतिष्ट, निर्ह, (दे ३,३९)।
मिना ) मी [सरिका ] दुरी, यह ; (महा: द्वा
्रिया ∮ ३०५ ( मे ५०० )।
[रिय दि [छरिन] १ ब्यम ; १ दिन ; (पटम १८,२८)।
र्रो की [श्रुरी ] दुने, पक् , ( हे २, ४ ; प्राप्त ६४ )।
म्ल देवी छुट्ट : ( सुरा १४६ )।
वि गव [ छपु ] सर्ग करत, दूना । कर्म-दुम्छ,  हुनिः
था; (हेर, १८६)। सह-स्वयंत,
332; 39年前 ) i
[द सक [ क्षित् ] सेंबरा, शहरा । बुद्ध ; ( हव ; हे ४, ,
१८३) । नह—छोदुण, छोदुणं: (म न्हः, विते ३०१) ।
शिकं [सुवा] १ मझ, पंत्रा ; (हे १, २६१ :
हर )। र लग्ने, मधन पंतरे का अवेत अध्यानिये,
🚏 : ( रे १, १८ ; हुना )। "बर हुं ['कर ] चन्द्र,
वन्द्रम : ( पट् ) ।
[हा सं[ध्रुप] चुक्र मुत्र, दुनुज्ञा
3, 13
लाइव ५ [अधित] न्त, दुर्स्टन
```

सुराउन दि [भुराकृत] हम रेमे ; (म १८५)। हरामु दि [शुबानु] जार हेरो; (श र १६०; १४० हो)! छतित्र वि[स्रचित्र] ज्या देनी, (डा ; टा १५० दी.: 77 120)1 छतिब वि [दे] निन, पराहमा ; (दे ३, ३०)। हुद्ध वि [क्षित्र] क्षित्र, जीतः ; (१ ४, ६२ ; ४२४ . <u> रुक्ता है ।</u> हुदिय न [दे] पर्भ का परित्न ; (पर्) । छेथ मह (छेर्यू] १ जिन बरनः । १ तेत्रानः, देशानः । क्रम-देशवर्षीत, (वि ६४३)। महन्न्छेपलाः (महा)। होब हुँ [हे] १ घल, जल, पर्यंत । (हे ३, ३८ ; प्रप्त; में ७, ४म ; इस्म १, ३६)। २ देश, धीर दा होटा मार्ट, (दे ३, ३म) १ ३ एव देग, गृह भाग ; (से १, ७) १ द निर्दिनाय घोरा : (कम्प ४, घ३) । छेन्न वि [छेना] नितुष, पतुर, हुनियार : (यम : प्राप् १३२ : मीर : कार १, १) । गैयरिय हो [भित्रार्थ] जिल्हाबार्य, कहाबार्य : (सम ४, ६) । छेम पुं [छेद] १ नाम, विनाम : "निम्बाब्देमी क्मी मह" (बुर १, १६४)। र रहार, तिनार ; (से १, ५)। ३ देहर, कर्तन ; "बोहादेमी" (या १४३; के ७, ४२)। ४ छः जैन भागम-अन्य, वे दे हैं ;—निशीयस्त्र, महानिशीयस्त्र, दरा-भुक्तकाय, बृहतकाय, स्पत्रहासूत्र, पनयकासूत्र; (ति-में ११६६) । १ जिल विनाग, मद्रम हिया हुमा मंग; (मे ७, ४८) । ६ वर्म, न्यूताः (४वा १६) । ७ प्राय-विन क्रियः (य ४,३) । य युद्धिनगंता का एक क्रेग, वर्म-मुद्धि जनने का एक लक्षण, निर्देश बाच झावरण : "मेर देएर हुदोनि" (पंचर ३)। "रिहि न [विहे] प्रताधित-स्टिंग ; (छ १०)। । छेमम)ति [छेदक] देश्व धर्मे वाला, धाउने वाला, छेथग ∫(स्ट ; दिने ११३)। छेंप्रण न [छेद्न] १ छाउन, इन्ने, द्विपा करण; (सन ३६: प्रद १४०)। ३ वर्गे, स्पृता, हाप ; (प्रापा)। ३ ग्रम, हथियान् (सूच २, ३)। ४ निशायक वयनः (बू-ह १) १ दहन मनवन; (बृह १)। ६ यत-जीन विरेप : (ब्मर,३)। छेओबद्दावण न [**छेदोपस्यापन**] हैन इंदन-विरोप, दर्ग र्रोद्या , (सब २६ , पंबा ३६) । छेभावद्वाचपिय न (छेदोपम्यापनीय) इत देने , (न्ह'

चें हो [दे] दे ले जिछ है , (मा ३०१)। छंड [दे] देला छिंड ; (दे ३, ३४)। छेंडा स्त्री [दे] १ शिला, चाटो, २ नवमालिका, खना-विनेत्र, (देव, ३६)।

छेंडी सी [दें] छोटो गलो, छोटा सस्ता , (द ३, ३९) । छेग देशो छेभ=पेड : (दे ३, ४७)। छेन्न देखे जिल्ला ; (दम १ , महा)।

छेण प्रदि | स्तेन, चोर ; (वह) । होस देवो खेला (गा ६ ; उप ३१७८), स १६४ , सर्वि)। छेखर व दि] गुरंबगैरः पुराना ग्रहेशकाया, (द ३, ३१) ।

छेतमीयणय न [दे] बेटर्मे जागना ; (दे १, १९)। छेतु वि [छेत] देशने वाला, बारने वाला , (बाचा) । छेद देखो छेश=देख्य ; सर्ग-जेदीयनि ; (वि ६४१)। तह--छेदिऊण, छेरेता ; (पि ४<६ , मन) 1

छेद देनो छिम=देद ; (प्राम ४४,६७ ; मीत ; बच १) । छैदम रि [छेदक] छेरने वाला : (पि २३३)। छेदीवहायणिय देलो छेत्रोवहायणिय , (हा ३, ४)। छिय द दि] १ स्वासक, बन्दनाहि सुगन्धि वन्द्र का विदे-पन , १ चोर, चोरी करने वाला ; (हे ३, ३६)।

छिप्प न [देशीप] बुच्छ, लाङ्गूल ; (गा ६२ ; विश १, ६; गउर)। छैमप इंदि बन्दन मादि का विशेषन, स्थानक , वि ३,३३)। छील । प्रेमी हि] भज, छान, बद्याः (दे३,३१: छैलग व १६०)। मी-- किया, की ; (पि २३१ ;

होत्र**य** रेपाह ९, ९—पत्र ९४) । हिलायण न दि । १ वक्तर हर्ष-व्यति ; २ बाल-कोडन , ३ चीन्द्रार, ध्वति-विगेष , "द्विशावर्षामुविद्याद बालकोन्यस्य च सेंटाइ" (ब्यावन')।

छैलिय न [दे] हेक्टिन, ची-बार बग्ना, बच्नक ध्वनि-निरोद (पण १, ३ ; विमे १०१)।

छैली मी [दे] योडे पून वाली माला , (दे ३, ३१)। छेषान [दे] मणी वगैरः फैलो हुई विवासी, (वत ६; निद्19)।

छेयह) न [दे सैयार्स, छेद्धत] १ गंहनन-विगेध, शरीर-छेवडु 🕽 रकता-स्तिव, क्रिप्से मर्हेट-बन्ध, बेठन, भीर सोना न हो कर को 🖟 हर्पूकी आपन में जुड़ो हों ऐसी गरीय-न्चना ; (समाप्तः १४६ : अगः कस्म १,३६) । २ वर्षः

ि सिरोप, जिलाहे तहब से पूर्वीक महतन हो प्रान्त हेट्टी रमं, (समा १, ३६)। छेवाडो [दे] देनां छित्राडो ; (ग =+ ; त्रा, " अंत ३)।

छेह 9 [देक्षेप] प्रेरण, क्रेपण ; "तो वर्षाण ने न मावतिसम्मगतिर्देशस्त्राः" (वे ४, ९४)। छेहत्तरि (भा) देती छाहत्तरि ; (रिंग)। छोइब इं[दे] दाय, नीहर ; (दे रू स)। छोइआ सी [दे] ठितका, (१ वगैरः हो एउ, (त ४ टो } , "उन्दुर्गंड पत्थिए छोड्यं प्रवामेड्"(स्")। छोड वह [छोटर्] छंत्रमा, मधन वे इत कर। द्रोडेड , (मनि : मरा) । सह—छोडिनि, (हा १८) छोडाचिय दि [छोटिन] तुरवाना हुम, ^{हरून}

क्राया हुमा ; (स ६२)। छोडि मी [दे] छोटी, लपु, चुद्र ; (शिय)। छोडिम नि [छोटिन] १ डोग हुमा, बन्तन्ति हुमा, "बन्यामी छोडिमो नंडी " (सुरा १०४, हर्ग ६ पटिन, ब्राह्न ; (पाह १, ४—२३ ०८)। छोडिम देशे फोडिम ; (मीप)।

छोद्र्य | देखो सह। कोव्य इ [दे] शिक्ष, सह, दर्मन ; (दे १,११) देशो छोम ।

छोटम वि [झोरच] कोन-योग्य, कोमवीय, परिविश्ववा व छोमा(क्या) मिनवहर्जामाना वित्रया" (पाइ १, ३--पन ६६) छोटमस्य वि [दे] मधिय, मनिट , (दे १, ११)। छोव्याहली सो [दे] १ प्रत्युखा, पृत्रे हो सर्वय,

द्वेच्या, भग्नीत्थर स्ती ; (दे २, ३६)।

छोम [दे] देशों छोध्म: (द ३, ३३ है)। र हाय, दोन ; (फाद १, ३—२३ ११)। १३ सर्व रूपान, कञ्चक-मारापण, दोपारोप, (ब्रुट् १, रा १ ४ न् बन्द्व-विशेष, दो समानमण-हप बन्दन , (गुर्म १) ६ मास्तः ^वहोतेष धमयमनो दंगच्यमे म 💵 हा 🤼 (महा)।

छोम देखा छडम ; (थाया १, ६—५३ १६४)। छोयर वुं [दे] होरा, तरहा, होत्रम . (उप पू रार) द्योलिम देनो द्वोद्रिम=द्वेदिन , (पिंग)।

इम निर्माद्श्रमहमहण्याच्छिम छमागवस्त्रं नहर्यः प्रथमित्रो नहर्यो स्वतः ।

77

ज

१९[ज] ताहु-स्थानीय स्थल्बन वर्ग-विगेष ; (प्राना ; ब्राव है। हस [यत्] को, को कीहै; (डाइ, ६; की क, इसा; का १०६)। ज दि ["ज] उत्पन्न ; " मानाइपरानेमी हाइ विनेतिय रेहडो दहची "(शा बदद) । " मार्गनत "-(झावा)। ह्मबद्ध प्रवाह (स्वर्) त्वस्य करका, गोजक करका 🕫 जमका; (हेर, १३०, पर्)। वह-स्त्रमईतः (हेर, १००)। प्रया- जमहार्यते ; (रुमा)। इयल वि [हे] छन्न, भारजदिन ; (यर्) । झा पु [यति] १ मार्गु, जितेन्द्रिन, संन्यती ; (झीर ; मुर १८१)। १ छन्ट-गाम में प्रतिद विश्रम-स्थान, कींका का विश्राम-स्थान , । यस्य १ डी)। ताः म [यदा] विन सम्ब, वितः वत्ता, (याव)। जदम (यदि) यदि, जा, (सम् ५०० विर ९,९)। विक[अपि] को सी, (सह ।

काम [यव] लां, जिल्हार में :। पर्)। जा वि [जीक्] जीले घरा, बार्च ; (क्ना)। ज्ञास म [यहा] हिन स्मर, जा स्मा .'(टा ; हे 3, 88) 1 ज्ञान्त्रा सी [यहन्त्रा] १ स्वरूपा : १ सीन्त्रणाः (गत)। अहम वि [जैन] १ जिन-देश का मण, जिन-पम : १ जिन मगरान् का, जिनन्देश में गंदना रागने बाला; (विने ३८३ : पन्न ६ टो; सुर =, ६४) । स्त्री—ेष्मी; (पंचा ३) । ज्ञास्य नि [लियिन्] जीतने काला; " मयानयज्ञास्यवेषी" (उस ; द्याचा १, १---१४ ११) । जरूण वि [जयिन्] केंग काता, केंग-युक्त, त्राग-युक्त, "टाइयडनाइयाउद्याप्यस्यभियतेगाहि " (भीर)। ज्ञानि [जीप] १ जीपने बाता, विजयी : (छ ६)। २ पं. नृप-विरोधः (रामा) । ज्ञाना देगी जय=ति। जाय दि [जयिका] प्रकार, विजयी; (ग्रामा १, =-- प्रत 122) (जार्य रि [यष्ट्र] यान करने बाडा; "तुन्ने ज्यपा जन्नार्य" (उन २६, ३८)। जार्यव्य देगी जय=पन् । तार्वा म [यदिवा] मयरा, वा; (दर १) । जस्स (मा) वि [पार्ट्स] जैना, जित्र नह का; (पर्)। ज्ञान [ज्ञानु] सामा, साम : (द्रा ४,४ : सा ४,४४) । जंड वुं [यदु] १ स्थनाम-स्थात एक राजा; १ ध्रुपतिद स्तिय वंग ; (तर)। "पांदण वं ["नन्दन] १ यह-वंगीय, बहुरंग में उत्पन्त । २ धोहरू ; (टा) । जड १ [यजुर्] बर-शियेष, यहर्वेह , (मणु)। जडणपुं [यमुन] स्वनम-प्रतिद्व एक राजा ; (उन ४१७)। जडण जडण } मी [यमुता] मारत को एक प्रतिद नहीं ; अवच्या) (स १, २ ; हे १, ४ ; १४०)। जमी म [यतः] १ नर्रोहि, इत्ए हि ; (श्रा १८)। २ जिउने, जहां में; (प्रामु पर, १४८)। जं म [यन्] १ क्योंकि, कारण कि ; २ वास्पान्तर का नंबन्ध-नुबक्त कान्नव । (हे ३, १४ महा : गा ६६) । किंचि म [किञ्चित्] १ जो हुछ, जो बोई; (पाँड ; नह १, १)। १ मनबद, मयुक्त, तुष्क्व, नगमः (पंचत्र)।

जंत देखो जा = या।

बाजा ; (बा ६६४)।

(महर, र- पर १२३)।

£3, 98£) [

अँतव्य न [यन्त्रव्य] १ नियन्त्रव, मंदमन, दर्1 । १ ने

जैनिम पुँ [यान्त्रिकः] यन्त-वर्ग करने वल, धा 🗗

अंतिम वि [थन्त्रित] नियन्ति, जहग हुमाः (प

र्जनु इं[जन्दु] योद, प्राथी ; (📭 ३ ; सप) १

जीतुम न [अन्तुक] अशासय में होने बडा एवं की

जीप नक [जीहरू] बोलना, करना । बीरहा (17)

बरु-त्रंपंत, जंपमाण (भहा ; वा १६० ;

२)। सह—अधिकण, अधिकण, अधिका,

वाता, प्रतिरायक . (से ४, ४६)।

1 न मांग, "गवक मिविशारियमोनिशहि वां व्ययत कियाइ" (बदा ४१)। र्जांगा भी दि] गत्वर-भूमि, प्रमुमें को चरने की जनदः (\$ 2, 80) 1 इंगिय वि [आहुमिक] १ जंगन बन्तु से नवन्य रखने वाना, जनम-संबन्धी । २ न् जनम जोवों के राम दा बना दुमा काना; (स. ३, ३ ; ४, ३ ; कप) । अंगुलि सी [जाहुलि] नित्र उत्तरले का यन्त्र, वित-क्षित्र (सी ४१)। अंगुलिय द [जाङ्गुलिक] बार्डड़क, विक्सन का जान-ें हार , (पडम १०१, १७) । जेगोल बीत [जाइगुल] रिश-वियत्त अन्त, विश-विया, भापुर्वेद का एक दिनाय जित्रमें नित्र को चिकित्या का प्रति-पान है, (शिम १, ७—१३ ७१) । स्रो—हिरो ; (य ८) । ज्ञ ज्ञ की [जहा] ब्रॉए, जानु क शोषे का शान ; (आवा ; का)। "घर नि ["घर] पार्वारी, पैर से बनने बाता ; (मद्र)। 'बारण दु ['बारण] एक प्रकार के जैन तुनि, मो माने तावत से माध्यत में समूत कर सकते हैं ।

(मग ९०, ६ ; वन ६७) : "संनादिम वि ["संनार्व]

र्वे र तक पानी बाता स्वागद ; (प्राचा ६, ३, ६) ।

बंधामय) दि दि] प्रशत, इतुशामी, वेस से बाने

जेन सद [यम्यू] १ श्रम काल, कार्ने काला । १ जह-

काने क लिए वरार्व-निर्देश, जिल्लाना, अल्लाना कार्यक्त

(बी ३, सा ११४) पी, मा, दुना) । २ वर्गात्रक, रहा

बगेण क तिर्दिश साम सेत्र-पर्येष, (क्य ६,२)।

रे मंसन, निस्तवः (एवं)। 'पन्यदं ('अन्तरः)

मारव संक्रमा; (क्या १,९)। "रिन्टन समाव

संवाब्द्रेश पु [दे] चपर, बीह ; (दे ३, ४३)।

ब्रीप्राप्तम हे स्थाः (दे ३,४२, वर्)।

ध्त, वंदन ; (ठा ह १३१)।

826

शियेद ; (शिय)।

महा)। हेरु--अंपिर्ज : (महा)। ह--अंगिर (गारपर)। जंपण व [अल्पन] उतिन, कपन (भा १२। ^{सा)} जंपन व [दे] १ महोति, मसरा, १ तुन, ही। रे. १९ : मति) । 1 ()

अंपय रि [अल्पक] बोतने बाता, मारहः (सं अंपाण न [जम्पान] १ बाहन-निरोप, मुनायन, प्रेरी निरोतः (टा ४, ३, ग्रीतः, तुरा ३६३। ता धारे रे च्राष्ट्र-यान, शह-यान ; (मुगा २१६)। जंपिन्जय मि [दे] जिपको देवे उमी का बारते ही (दे हे, ४४ ; नाम)। अधिय रा [अस्पिन] बर्बन, उस्त ; (प्राप्त ११०)। जीवय देशा और । अधिर दि [अस्टिन्] १ अन्याद, वाबाट , (१९३१) १ बलने बला, मारह; (हे १, १४१, धार/; १६१ ; सुरा ४०३)। अवेश्वितस्याचितर हे हि शिक्षा देवे उनीमें व्यवनी अवेश्वितस्याचितर है बाजा ; (पर् दे र, ४०)

```
यवर्ष सी [जास्ववती] श्रीहत्य की एक फ्ली;
. ( मंत १४; मादू १ )।
ेघाल न [दे] १ जंबाद, मैबाल, जलमल, निवार : ।
 (दे ३, ४३ : पाम )।
" घाट हुंत [ जरुशान ] १ वर्ड्स, बाहा, पंक ; ( एम ;
स्प्रदे, दे)। द जगपु, गर्ननेष्टन वर्म : (सुम १, ३)।
 घोरिय (घर) न [ जर्म्यार ] नींतु, फट-विरोप ; (सरा)।
्यु पुं जिस्ता । जन्त्रक, सिया ; " व्यक्तरन्यवर्त्रकु-
 गर्य" ( परम १०१, १० )। १ एक प्रसिद्ध जैन सुनि,
· पुरमं-स्वामी के शिम्ब, मन्त्रित केवती ; (कम : वप्त ;
 विस १,१)। इन बस्य इल का कतः (धा ३६)।
  द्वे दिशों अन् : ( कम : क्मा : इक : पटन ६६ ,
  २२ ; से ५३, व्ह }।
  बुम १ंदि] १ वेन्छ इस, २ पविम हिस्सास: (द ३, ४२)।
 ंबुल ) पुं [ जम्बुका ] १ सियार, गीरह ; ( प्रान् १७१;
  द्विग रेटर ७६० टी ; पटन १०४, ६४)। १ जन्मुः
· इम का प्रत, जासुन ; ( हुन ११६ )।
  बुल्द वुं [ हे ] १ वार्नीर एक ; २ म. मद-माजन, सुग-
<पन्न ( दे ३, ४१ ) ।
 ींबुल्ड वि दि ] जन्यक, बाबाट , बक्ताडी ; (:पाम )।
  शियाँ देशी अध्यार्थ : ( मेन : पीर )।
ं हि.सी [ जरनू ] ९ इत-विरोप, जानुन का पेह ; ( याना
 ी, १ ; भीत )। २ लॅड्ड्स के भावत का एक रत-
  मन गाभन परार्थ, हुवर्गना, जिल्लेक कान्या यह द्वीर जेन्द्रीय
िष्यताता है; (अंत्र)। ३ वं एक सुप्रतिक जैन
  इति, तुपर्यन्तामी का तुरुव शिल्पः (वं १)।
ि दीय है [ 'डीप] मूला किंग, इंतरिकेश, यह ईन और
 े प्यूरों के बीच का द्वीर, जिल्में यह मारत मादि चेत्र वर्णन न
   रें;(अं १; इक् )। दीवग-वि ['डीयक] उन्द्र-
िरीतमंदरती, अनुरीत में उत्पन्न : (स.४, २,६)।
   'दीवपण्यति सी ['क्वेंग्यत्रति] देन माग्न-प्राय-
ु निरेष, क्लिन बंदूरिय का धर्मन है। (जे १)। 'पीड,
   पिंड न [पिंट ] मुर्त्यरा-अस्यू का मर्पापनकाराः ( वं :
   ४; इट)। 'पुर न [पुर] न्यत-लिय: (इट)।
 ा माति हुँ [ मातित् ] एवट का एक हुन , रास्ट का
   एक सुनदः ( पत्रम ६६, २२ , से १३ , मा )।
💉 मेघपुर व [ मेघपुर ] विचार बार स्टिंग , (१६)।
```

'संड पुं पिण्ड] बान विशेष ; (भावन)। 'सामि पुं [स्वामिन्] मुप्तिद जैन मुनिनिनेत्र ; (प्रावन)। जंबुक्ष पुं [जम्बूका] निवार, गीरह : (मीर ८४ मा)। जंबूणय न [जाम्यूनद] १ एका, छेता ; (सन ६४ ; पत्न १. १२६)। २ पुं स्वनाम-प्रतिद्व एक राजा ; (पड़म ४८, ६८)। जंबूल्य देन [जम्बूलक] टर्ड-मानन किंग; (टर्जा)। जंम इं दि] तुप, पान्य कीरः का दिलहा : (६ ३,४०)। जैमेर देखे जैमा=हम्म् । जंभग वि [जम्मक] १ जैगाई हेने वाला । १ पुं ब्यन्तर-वेदों को एक जाति ; (क्य ; सुरा ४०)। जॅमणंसण) वि[है] खच्छर-माथे, जी मरजी में मावे र्जमणमण { वह बेत्वन वाला ; (वर् ; दे ३, ४४)। **जंम**णय जंभणी माँ [जुम्भणी] तन्त्र-प्रतिद विदा-सिरोपः; (शुप्त २, २ ; पत्रम ७, १४४) । र्जमय देखी जैमगः (राजा १, १ ; मनः मग १४, =)। र्जमन्द पुं [दे] जह, सुन्त, मन्द ; (दे ३, ४१)। जंमा नो [जुम्मा] वैनार्ड, जुम्मप ; (शा १,८)। जंमा १ मह [जुम्म्] जैनाई हेता । अंशाह, अंनामहः जैमान (हे ४, १६०; २४०; प्राप्त; पर्)। रह—जंनेव, जेमामंव: (या ४४१ , हे ७, १६ : **年**平 } 1 जेमाहम न [जुम्मिन] बैनाई, बुम्मा ; (चीह) । अंभिय न [अम्मिन] १ वेंग्डर, बुम्मा । १ पूं, प्राय-विरोप, जहां मगहान् महागीर की बेरडहान उत्पन्न हुया या : यह गाँव पारमनाच पराह के पास की ऋतुरानिका नदी के दिलारे पर था; (रूप)। जक्त वं [यस] १ स्वत्य देशें की एक जाति ; (पट १, ६ ; भीर)। १ घनेग, वृदेग, यहारिरति ; (प्राप्त)। ३ एवं विद्यापन्यामा, जी गत्रय का मौत्रेश नाई का ; (पान न, १०१)। ४ डोप-सिटेप; १ म्युन-सिटेप; (बंद १०)। ६ मन, बुक्त ; मह प्राचीरादयक जस्टन्टिएरे पारस्थि " (घोष १६३ वा)। "याह्म पु [किर्दम] १ - केल, मरा, बन्दर, बहुर धीर क्रम्यूर्ग द्य सम्बद्ध स्थित ; (स्वि)। १ इंपिस्टिंग ; ३ म्मुरुस्टियः (बंद १०)। नगर पु [प्रत्] बलारेगः, यद-क्त उद्याः (जैत १, जे १)। जापन पु [नायक]

यसों का मधिपति, नुबेर , (मणु)। 'दिसान ['दीन] देखो नीचे "दिसय; (पर २६)। "दिल्लामी ['दत्ता] महर्षि स्पृतमद की वर्ष्टन, एक खेन साप्ती ; (पाँउ)। भिद्द पु [भिद्द] यसद्वीत का मधिवति देव सिग्रेव, (पंद २०)। °मंडलपविमत्ति सी ['मण्डलप्रविमक्ति] एक तन्द्र का नाणः । (सय) । "मद्रपुिमही यद्य के जिए दिशा जाता महोत्स्य , (भावा २, १, २)। 'मराभर् ९ ['महामद्] यस द्वीप का क्रविपति देव ; (थंर १०)। 'महाचर पु [भहाघर] यज्ञ समुद्र का मरिहाता देव-सिगेष, (चंद २०)। "राय पु ["राज] १ यक्तांका राजा, दुवेर । २ प्रयान यक्त ; (सुरा ४६९)। १ एक दिशायर गता, (पतन 🧠 १२४)। 'घर दुं ['घर] बज्ञ समुद्र द्य प्रविद्वी दा निगेप , (वर २०)। "शह नि ["विष्ट] यन हा भावता वाला, बनाभिटिन । (य ६, १, वर २)। "दिलय, "लिसय व ["दीमक] १ वमी २ विमी रिया में विवरी के नमन जो प्रकार होता है वह, माकार में म्यन्त-कृत प्रति-दीनः (भग १,६; पर ७)। १ प्राप्तरा में रियाता समि-युक्त कियान ; (जीत १)। 'भ्येत एं ['यिश] बत्त-हत मावेश, बन बा सनुन्य-गांग में प्रेग; (अ २, १)। "हिय 3 ["विष]

१ केमल, दुवर, वजनात्र । २ व्यक्त विद्यापर राजा, (यद्म ८, ११६)। "दिख्य पु ["विपति] देवो एपेल सर्व', (सार, यद्म ८, ११६)। स्रकारानि सो [दे यहारानि] वैगालिक, योगलो, क्रमेंड बेरे सम्ब का वर्त , (दे १, ४१)।

जनमा सी [यशा] एक प्रभिद्र जैन माणी, जो नहीं स्मृत-मत्र की वरित्र की ; (वरित्र)। जनिनद वु [यहेन्द्र] १ वजों का स्वमी, नजों का सज्ज,

ज्ञात्सन्द दु[यक्ष्म्यू] १ यक्षां का स्वभी, वर्षों का राजा, (ध ४,१)। १ सनक्ष्यु सम्बाद का नामनाविद्यवक दक्ष, (पर २६, मनि ८)।

प्रतिकारों को [यदिकारों] १ वय-वेतिक मी, देशियों को एर प्रति, (प्राप्त)। १ मण्यत् प्रतिक्रियत् को यक्त रिक्ताः (एव १६९)। प्रकृति मी [यहिंगी] रिक्तियोतः (लि ४६४ टी)।

जन्म का यादा] जिल्लीले (स्वि ४६४ टी) । जन्म पुन्न १ (यसीनम) वचनेते दी एक काल्ल वर्ष (पन्य १)

जम्बेस पु[यशेश] ९ वर्तो कालले। १० ब्रस्निनन्दन का सामन-बन्न ; (सनि ७)। जम न [यस्त्] पेट की दक्षिण-प्रनिय ; (पद १,१ जग पुं[दे] जन्तु, बीव, प्राची ; "पुरो भित्रम्" (स्य १, ७, १०) ज्ञम न [ज्ञमन्] जन, मंग्राम, दुनियाँ , (स १५) २, १२१)। "गुरु ई ["गुरु] १ कार् हैं! पुरुष ; २ अगन् का पुत्रय ; ३ जिन-देन, नैर्देष २९,पदा४)। "जीवण 🏿 ["जीवत]। जीताने वाता ; २ पुं. जिन-देव ; (राज)। १ [°नाच] जान् हा पातह, पामेग्वा, जिनेश। 'पियामह पुं ['पिनामह] १ बग्ना, दिरण । देव ; (वरि) । "प्यगाम वि ["प्रकाश] ह प्रकारा काने वाला, जगन्प्रकाराकः; (पाम १६, "प्यहाण न ["प्रधान] जगर् में थेंड, (गड़ा) जगई सी [जगती] १ प्रकार, दिता, दुर्ग , (व

चैत (१) । १ शृथियां , (वण १) । जरावता मह [चकाल्] चलाला, होता । एँ जरावत जरावताल ; (प्राम ५०, ११, १४, १४ जराड जह [है] १ जरावता, मतात छला, वर्षा बरण्य चरता, शीरता । १ उप्रता, जाएन छला। जरावित , । तावि ।। चहा— जाविताले, चन्, १, एता)।

जगडण व [रे] नीच देखे , (उर)। जगडणा सी [रे] १ मगग, बतद। १ कार्म "देख चित्र वस्मद्रवादगन्त जगतगडवारणन्त १२० दो)।

जगडिजनि [दे] दिशनिन, दर्भिन, (रे रे.)

जगर ९ [जगर] नंताह, इरव, वर्ष, (१६) जगठ व[दे] १ पर्ड वालो महिम, वर्षण ६ गठा ; (दे ३, ४१) । १ ईन इ. वर्षण ६ मचा ; (दे ३, ४१, वाम)। जगार दे[दे] राव, वराम्, (पा ४)।

जगार पु [जकार] 'ज' मतर, 'ज' वर्ष , (' जगार पु [यरकार] 'यर' गहर क्योंग्य विहेशी कीए'' (तिपू १) ! ारी को [जगारी] बल्ब-विदेश, एक ब्रह्म का स्कू तः "मार्ग मोत्राप स्मान्यवसारीत" (पंचा ४०)। [सम वि [जगद्रमम] जगद्रशेष्ट, जगद्र में प्रसन् ; पाइ र, ४)। में मेर [जातू] १ जातना, नींट में उल्ला! १ स्वेत रा,सप्ताम हाला । जनात, जन्मि ; (हे €, ⊏∙ ; है। प्रमु ६८ । । यह -- जमान : (मुन १८३)। ये-जनावड , (विश्वहर्त)। गण न [जागणा] राजना, निशन्याम, म्बांच १०६)। गविभ वि [जागरिन] जगाया हुमा, नीट से उद्या मा : (मुरा ३३९) । गद इं [यद्वह] या प्राप्त हा हते बहुए करने की जारा ; "रगण जगरे। पोनिमी" (मानन्) । गाविश देले जगविश ; (मे ९०, ४६) (गाह देनी जगाह ; (धार)। रेगम वि [जागृन] जना हुमा, न्यस्त-निद्र ; (गा ३८४; ला ; हुन १६३) । गेगर वि [जागरितृ] १ जागने वाटा ; १ शवदेत गर्दन .दाः (सुरा २१०)ः यण न [जधन] बना के नीने का माग, बन-स्पत्र ; (बन ; बीन) । व्य ई [दे]पुरम, सरह, झड़मों : (हे ३, ४०)। 🛮 वि [जान्य] ९ उनम जान बाला, बुर्जान, श्रेन्ड, उनम, ल्हर ; (दावा १, १; धा १२ ; हुक ७०; द्वय) । २ नानविद्य, महन्त्रिम ; (नंद्र) । ३ सजातीय, विज्ञाति-निभय रेस्ट्रि, गुइः; (जंव ३)। च्यंज्ञण न [जात्याञ्जन] १ श्रेट मन्दन ; (यापा १, १) । २ मर्दिन भन्तन, तैल धनैगः से मर्दिन भन्तन : । (ৰুদা) | च्चंदण न [है] १ मगर, सुगन्य इच्य-स्थिर, जो धूर के । घन में माता है ; १ ब्रुम, इनर ; (दे ३, ६२)। ष्वंत्र वि [जात्यस्य] जन्म 🗎 मन्या; (सुगः १६४)। च्यण्णिय) वि [जात्यन्यित] मुर्ज में दलक, थेर च्चलिय 🕽 बति स्रः (सूक्ष १, १०; हुइ ३)। च्चास पुं [जात्यस्य, जात्यास्य] उत्तन वार्ति का पोहा; (पटन १४, २६)। विचय (भर) वि [जानीय] मनान जाति हा ; (मद) । विचर न [यविवर]क्षे तह, क्लिंग्नर तह ; (बर १)।

तच्छ सक [यम्] १ उसम इप्ता, सिराम इप्ता । २ देना, दान काना । अध्वर्ष ; (हे ४, २१४ : उना) । जन्छंद् नि [दे] स्वच्छन्द, स्तेर ; (दे ३, ४३ ; पर्) । जज देके जय≈यत् ।यह —जजमाणः, (सट—यह ४२)। जजु देनो जड≔ बढ्रम् (राया १, ४ ; मग)। जन्म हि [जम्म] वो बीता वा महे वह, बीतने हो महय; (₹ ₹, ₹¥) į जञ्जर वि [जर्जर] बेर्स, महिन्द्र, मोराना, जीवर : (मा १०१ ; सुर ३, १३६)। जडतर मह [जर्तरम्] बेलं छाना, मोताचा काना। च्नाः—जञ्जरिज्ञंत, जञ्जरिज्ञमाण ; *(शट—शै*न ३३ : दुन ६४) । जडजरिय रि [जर्जरित] बोर्च हिना गया, छिउन, कोलजा किया हुमा ; (छ ४, ४ ; सुर ३, १६१ ; क्स)। जह पुं[जर्त] १ देश-क्रिंग ; (मित्र)। २ स्त्र देश का नियत्वी ; (हे २, ३०) । जह वि [इप्ट] यजन किया हुमा, याग किया हुमा ; (व ११)। ज़िंह सो [यप्टि] तक्ये ; "ज़ीनुरिन्नवन्द्रांगहि" (महा: जड वि [जड] १ प्रवेत्न, जैत-रहित परार्थ ; १ मूर्य, मालकी, विवेद-शृन्य ; (पाम ; प्रान् ७१)। ३ निश्चिर, जाड़े से टंडा होकर चर्जने की मगरन; (पाम) । बड देखें बढ़ ; (पर्)। जड ें) श्री [जटा] सेटे हुए बात, मिने हुए बान ; (हहा जहा) १६४ ; सुना १६१)। घर नि [धर] १ वटा को घारण करने वाला । २ ५. जडा-घारी तावड, मंन्यानी ; (पडन ३६, ४१)। धारि इं [धारिन्] ईखाँ प्तोंल मर्प ; (पत्न १३, १)। तडाउ) वृं [लटायु] स्कामन्रतिह एव पति-किये ; जहाउपा 🕽 (पत्रम ४४, ११ ; ४०)। बडागि वं [जटाकिन्] इतर देवो ; (परन ४१, ६४)। जडाल में [जरावन्] क्य-युक्त, क्या-पार्ग ; (न्हे २, 1 (£) 1 तद्वासुर पुं [तटासुर] भन्ना-क्रिय ; (वेर्जा १००) । ज्ञडि वि [ज्ञांटिन्] १ क्या बाला, जया-युक्त; २ वुं क्यापारी वास्त ; (और ; नन १००)।

जाडम दि [दे जटित] जहिन, बहा हुमा, स्विन, संजय्त; (दे ३, ४९ ; सहा ; पाम) ॥ जिटिम पुमी [जिटिमन्] बहना, बहमा, बाह्य, (सुग६)। जडियाहरूम) पुं [दे जटिकादिलक] बद्द-रिरेप, ब्रहा-जिंदगारूटप 🕽 रिखायक देव-विरोप, (टा २, ३, वंद २०) । जिंदिर रि [अटिर] १ जरा-बाला, जटा-युश्त : (उता : इमा १, ११)। १ व्यक्त, सचित, "उल्लियिवह्यजाली-निजीने जाने परेगो ना" (तुम ४६६)। ३ प्. मिह. देगरी; ४ जदापारी साम्यः (हे १, १६४; सम १६; मा १४)। किंत्रिय पु [दे] गहु, गहु-विशेष ; (नुज्य २०) । जडिलिय) हि [जटिलित] बटिल किवाहुमा, बटा अडिलिज्ल र्रे तुल स्या हुमा : (सुरा १२६ ; १६६)। जरून [जास्य] बरनः, जस्त्र ; (डा३२० टी, सार्थ जरू देगो जह ; (पर ९०७ ; यंचमा)। अपू ई [दे] दावी, हन्ती, (स्रोप २३८ ; बूह ९) ३ महा सो [दे] बार, शीत ; (तुर १३, १११; शिंग) । मद नि [त्यस्त] परित्यका, मुक्त, वर्जितः, (हे ४, १६८ ; मेरा ६०) ^क अव्ति त सम्बन्धको ^० (सन 410)1 ब्रदर हेन [ब्रदर] बेट, उसर, (हे %, २६४ ; प्राय, अरल) वर्) । क्रम नक [क्रमण्] अन्तर्भ कामा, पैदा कामा। जपेद, बचरी, (बल् १६३ १०८, बहा) । जनवंति . (सपा)। क-जर्णन, अभिमाणः (सुर १३. 11,4 H ; 31)1 क्रम र्रु [क्रन] ५ मनुत्र, मानव, ब्राह्मी, लीग, व्यक्ति , (मीर, मणः ; इसः , प्रमूद्द, ६६ ; स्था ५६) ॥ र डेरापी सदाद; (सुस १,१,३)। ३ समुत्तव, र्म्मान्दः (इ.स. १वर ८)। ४ हि. उत्पादः, टमन करने कहा_। "जेन मुहत्वसम्बर्ग" (शिं at-); "जनास" ["यात्रा] जन-प्रशान, जन-मर्जन, "बचकार्यदेशनं हेत्र वर्ष प्रदेश नवा? (राप)। प्रायान [भ्यान] १ त्रासका रित्र स रह कान ; र कार-विदेश करिंद ; (श्रे १०)। वर १ [पनि] कर्ले क शुलिस ; (बीप) । विश

पुंजिजी मनुष्य-समृहः (पटन ४,६) । ियाद] १ जन-धृति, हिंतरन्त्री : (ग्रा रे २ मन-वों की मापन में चर्चा (भीत)। क्षोक्र में निन्दा : "जणवायभएएं" (मर स्सुर सी [°श्रुति] हिंदरली । पि ["पवाद्] होड में निम्हा ;(गा ४=४)! जणह सी [जनिका] श्लाहिश, अपन हमे (इमा)। রভারে) দু [জনবিশু] ৭ জন, দিশ, (1 जणहत्तु 🕽 २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने 📆 4,4)[जण्डल इं [दे] बामका प्रधान पुरुष, गाँव का ! (दे२,६२ ; बर्)। १ बिट, मारः (दे १ जणगम ५ [जनहम] चावडाल, "रायाची 📢 बमया य जनगमा" (तप १०३१ 🗗 ; पाम)। जणम देनो जणय ; (भग ; उप पृ १९६ ; 🖫 ६ जणपान [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न कार्य काना (शा ६६७ ; सुर ३, ६ , १ ३८)। ङपादक, बनक; (उर ६, ६; इमा, भ^{वि}). भवामावत्रवया " (मनु) । अणि | सी [जननि, 'नो] १ मतः, ^{सन्त}ः जपणी ∫३, ९६; महा; पाम)। ९ वर्ष वली सी, उत्पादिका; (तुमा)। जणहण ९ [जनार्थन] थीलून, विष्य , (ग री, शिव)। जनमेश्रत्र **९ [जनमेजय**] स्वनाम-प्र^{श्}र ^{हा} चाद १२)। जायप नि [जनक] १ जनातक, उपन कर्न "दिन्नियं रिमुधानां सक्त संच्याना सरप्रदारं" (प्रण् २ पूंतिस, काप, (पास; सुर ३, ९६ । प्र^{म्न}ू ३ देशो जण≕क्त्र (सूध ५,६)। ^{४ ¦} का एक राजा, राजा जनह, रीमा का रिगा, (पान र १ पुन् व, सला-क्षिप्त, सा-सार्_व पत्र किल की तम्बद्धार्थं कुमंति तं मन्तं " (मुद्रा २४६ । ^{१६} निषमा को [निनया] राजा जनक की उर्दे

रमक्ट की क्ली, ग्रेश, जनगी। (में h

दिहिया, भूबा (दिहित्) वहां मर्व , (वल

११ ः व्हरे)। विदेश र्वृ [भन्दन] ^{ता}ं

ः इ. ६व, मामाउठ ; (पत्रम ६६,२६)। विद्यामें सी - [नन्द्र नी] र्वता, रामयन्त्री, दालकी; (परम ६४, ४६) । - भिदिणी सी [निन्दिनी] दही मर्थ; (पटन ४६, - १८)। 'नियतणया हो ['नृपतनया] गडा उन्ह ं धीडुकी, छैटा; (परम ४०, ६०)। दुसी सी [पुत्रों] दहा कर्ष: (म्बर पर)। :['सुत] ज्यह गडा का पुत्र, मामदल ; (पड़न ६४, १८)। 'सुना मी ['सुना] दल्हो, छीत ; (पन **ु ३५,६२ : कें २, ३**= : ९०,३)। ु - प्रयोगया सी [जनकाङ्गजा] जनशे, र्रांता, राजा गर--बन्द्र की पन्ती ; (पत्तम ४९, ४८)। ् पायय ९ [जनपद्] १ देश, गान्द्र, वन-स्थान, टोब्ट-ु ट्य ; (बीर) । १ देश-न्तिनी जन-स्तुः (सद ्र१, ३ ; भाषा) र पायप वि [जानपद] देश में इत्सन, देश का निवर्ता; ्मि (भा) भ [इव] तरह, महिब, देश ; (हे ४, तरर वह)। गिन्न वि[जनित] उत्पन्ति, उत्पन्न किन हुमा; ं (पाम)। मी सी [जनी] मी, शरी, मीडा; (यान २---रत्र ११३ : एउम ११, ७३)। मुदेशे जणि ; (हे ६, ४४६; इसः , पर्)। पुरवन्त्रिया मी [जनोत्पालिका] नहानी का धेरा 熙;(初): शुन्मि की [अनीर्मि] तरंग की तर बहुओं की संब, ि (मग)। पेमाप रंखे जप = उन्द् । ं गिर (भर) दि [जनक] १ उत्पाद्ध देश करने ल शहा ; २ ई तिहा, बात ; (भनि)। चिरि (क्य) मी [जनमा] नाम, मी (मरि) । स्म हुं [यह] १ व्ह, रण, सन, हरू; (१७; ं गर्भः)। १रेस्न्हाः, १ यदः (जीर १)। `\$.`तार् वि ['दाजिन्] दा क्ले कामाः (मीपः निर्को। 'इटल वि['बीचे के सम्माद्ध स्व ु पा १२, "उन्नायक मूर्व"का एक प्रस्तर ; (ज्य ३३)। हाय ह [स्थात] ६ या का स्वर ; ६ नगरिये नगर (रेक्)। 'सर र [सार]

क स करप; (का २६)। 'बाड धुं ['चार] ब्द्र-स्थान; (गा २२०)। "सीह पुं[श्रेष्ट] श्रेष्ट बद्र, लमयम ; (ल १२)। जण्यय देमी जणय : (प्राप्त)। जण्यका मा [देयप्रयात्रा] बगत, तिरह की मत्र, वर के माधिमों का गमन : (हर ६६४)। जण्यसेयो यो [याप्रसेनी] हैन्हें, पहलक्ती ; वेद्या १०)। जप्यहर १ (है) नर-राजन, इट मनुन्य: (यह)। जिप्पय हैं [याशिक] साबह, यह करने वाला: (मावन) । जण्णोर्चाय 🤈 न [यमोपर्वात] बङ्ग्व, ज्लोड ; (हन जण्योयकीय 🕽 १ : मारन 🕽 । जण्मोहण इं[है] गडम, निगाय : (हे ३, ४३)। जण्ड न [दे] १ छंडी स्थाडी; २ तिकृत्य, बाते रंग का: (₹ ₹, ₹1) 1 जर्दा मा जाहवी] गंगा नहीं, मागीएवी ; (मञ्जू ६)। जण्हती मां [दे] नेती, ताम, इमावन्द ; (दे १, x=) [जण्हयों की [जाहयों] १ मार परतीं ही एक एनी, मर्पत्य की जरूरी ; (पडन ४, १०५)। १ गर्मा मडी, मागीन्यी ; (एउम ४१, ४१; इसा) (जण्दु है [जरू] भारतनीर्याम एवं राजा ; (प्रायः है २, ०६) । 'सुमा स्मे ['सुता] गर्मा नरी, मगीव्यो, (975) 1 जग्हुमा मी [दे] राष्ट्र, पुरुष ; (पम)। जन हेरी जय=मह्। महि--क्रीश्रामि ; (जिर १, १०)। जन है [यज] उपय, उपन, देश ; (२१ १ ३०)। जन्म की [यात्रा] १ देशस्य कर, देशास्त्र ; (स र, ६ , बीर } ६ २ सम्म, सीर ; " अपनि होता समने " (पंदना ; मीर) । ३ देश-इस दे निवित्र शिला काल दलक्ष्मित, मर्टाहक, स्वाम मार्थ । १, राई प्राप्त निदायनोष्ट्र जनको "(सुर ३,३०)। ८ नेवी रसर, टेप्पेन्सम्प ; (धने १) । ६ - दुन इस्रीतः । अर 3=, 30) 1 उति सी[दे] १ व्या ; १ मेर, हरूर ; "मरण्या हाजनी न इस हस्य श्राप्ति (धा श्राप्ते) । द्यालय वि यायत्] जिला ; (प्रायुक्त प्रायम) खली देशी खायों । है १, १६० है।



रंज दि [यमित] निप्तनित्र, संदन्ति, रूप ने दिय सः (मे ५५, ४५ : मुरा ३)। ुमा देने अँडमा, ्चि १७६ : २६१)। सी [तमू] हैरानेस की एउ क्राउसी ह F: (5%)| रेमर जिन् देशपारीता । जन्मर ; हि.६.१३६ []। वह-इम्पंत , (दम), "इब्मर्वर मेले, हुनी, य बहुता, विंदा" (सूच ==)। 👫 सह [जम्] रामा, यसरा धरमा । जन्मह ; -पट्) । र क्षेत्र जिल्लान् जिल्ला, क्षत्र नि, (ठ ६ : महा; प्राप्तु ६०) । पि ह [जन्मत्] इत्स, इन्यन्, इन्यह , के २, ५४४; स १,९; सुर १,६)। स मी [याच्या] इन्तिय दिना . (इन प्र ३०४) । सरु [जि] १ जीलमा १२ घर, उच्छाल ने करना 🖡 क्ष (सहा)। दर्वति ; (स ३६)। वंह--- झर्त्ता; F () 1 हर [यञ्] १ इहा हरता । १ दल हरता । उद्धः, हा २४, ४)। बहु--जनमाण ; (मन १२४)। मर्य [यत्] १ दक्त रातः, वेद्य राता । १ स्वाद र, टररंग इन्हा। इन्हा, (इव)। सवि--- व्यः-नि; (स्त्र) । शह—अर्थन, अयमाणः (स . •) था २६ : मीन ९२४ : इन्ह २४३) ६ ह — रिय्य ; (इद ; सृत १, ३४) । न [ज्ञान्] ज्ञान्, हुनियाँ, संस्थाः ; (प्रान् १४६ ; ६,९)। च्रियन [चिय] स्वर्ग, मर्ल फ्रीर पटल इ ; (मुत्त बह ; ६१) । 'नाह पुं ['नाय] पर-रा, परमान्या ; (परम न६, ६४) । पिटु ई [प्रिसू] रेभा; (हुत र=; =ध) । पिनंद नि [ीनन्द] स् को भारत्य हैने बाला ; (पहन ११०, ६ **)** । वि [यत] ५ चंदन, ब्रिटेन्टिय ; (सफ ६१) । 🤏 ; पींग रखने बादा, स्वाद एउने बादा ; (उन १ ; माब)। रे बु इस्त्री गुरान्यमञ् । (इस्त ४,४२)। ४ । हड, स्वतंत्र, हावयान्डा ; (यावा १, १—वव ११), ; र्ष के दर्भ किट्डें" (इन ४)। र्ष [जय] देग, रांध-प्रमन, हीड़ ; (एम) । ५ [सप] १ वय, बीत, गानु का परानद ; (मीत ; ा) । २ स्वतम-प्रीटद एट पश्चरी सहा : (स्व १६२)। < ? ['पुर] रगर-विदेश: (ह ६)। किस्सासी

[कर्मा] निय-विरेत्र ; (पडन ७, १३६)। "धीन प्रे [धोप] १ वयन्त्रनि ; २ लतान प्रनिद्र एक जैन सुनि; (इन २६)। चिंद पुँ [चन्द्र] । पिन श्रीकार-हर्वी रतन्त्री का एउ क्लीड का मन्तिम गडा। २ फ्लाएडी मतानों का एक वैनावार्ष ; (ग्या ६४)। 'जला सी ['याचा] मन् पर पहुँ ; (सुर १४१) । 'पडाया की [पनाका] विद्य का मंद्रा; (धा १२)। 'पुर हेनो 'डर ; (रह) । 'संगला सी ['महुन्ता] एक गद-पुनर्ग ; (दन १)। "लच्छो मी ["लह्मी] रफ्टरमी, विश्व-भी: (में ४,३१; क्राप्त ७४३)। वंत वि [चित्] इव-प्रान, विह्मी ; (पहन ६६,४६)। चिल्लह पुं [चिल्लम] हा विदेश ; (इंछ १) । 'संध इं [स्तरच] कुल्लाह-नमह राजा का एक मन्त्री ; (प्रात् ८)। 'संचि इं['सन्चि] वहा ख़ॉफ प्रमं ; (प्राव र)। 'सह ई [शस्त्] विवय-मूच्छ प्रातान; (प्रीत)। निंह हुं [निंह] १ निंहत होन हा एक राजा : (रहरा ४४)। २ विच्न की बारहतों उत्तरको का गुतरात का एक प्रतिद राजा, जिल्हा कुला नाम 'विद्याज' था ; "तेग वर्षचेंद्रदेशे गमा मगिजय स्वतदेशीना" (सुधि १०२००) (स्वनमन्द्रत जैनवार्य विशेष ; (द्वा ६१=), "निरिज्यविक्षे सूर्ग स्वंभगनायत्तीन सुप्रतिक्षे" (सुनि १०=३२)। 'सिरी की ['थी] तिहर-थी, हप-वन्तः ; (कान्न)। 'सेपा पुं ['सेन] स्वनमन्द्रतिद एक गता ; (नहा)। विदे वि [विदे] १ जन हो बहन करने बाता, विदयों ; (पडन ७०, ७ ; सुरा २३४) । र विवायर-नगर विगीप ; (इक्)। विवहपुर न [विवह-पुर] एड विषयर-रूप: (१६) । 'विस्त न ['विस्त] विराहमें हा एह स्वरावन्त्रात स्था ; (इह)। जय इंक्री [जया] विधि-विदेश- तृतीया, कदनी मौर क्षेत्री दिभि ; (वं १)। अर्थ देशो जया≕ारा। "प्यमिद म ['प्रभृति] दद है, तिय समय से ; (स ३९६) । जर्यन हैं [जयना] १ इन्द्र दा पुन; (पाम) । १ एड नाती बटरेत ; (हम १४४)। ३ एड दैन मुनि, जी बज्र-हेन हिने हे हरीय रिज्य थे ; (हज)। ४ इन तम है देव-दिवन में रहने बाडी एह उत्तम देव-दानि ; (स्म ४६)। है देंचुईन की दर्शन के परिचन द्वार का एक मरिशाता देव : (इ.४,२) । ६ त् देव-दिनच स्टिंग; (सम ४६) ।

जर पुँ [उचर] राग-विजय, बुकार ; (बुमा)। जर १ [जर] १ रावण का एक सुमर ; (कन १६)

[जयती-4

जर दि [जरत्] जोर्छ, पुगता, १६, बूडा, (इन. १

६६ : १०४) । स्रो—र्ष ; (इमा ; गा ४ गरे म)।

बु शिव] बूबा देत; (बृह १, ब्रु ४)। मा [भावी] ब्री गी; (ल ४६९)। भा वं [चुं। बैत, र स्त्रो बूचे गी ; "जिल्ला य जामने पीरा"(

₹₹, 3€) £

जर" देली जरा ३ (दमा ३ मेन १६ इन ०)। क्षरंड वि [दे] रह, सूम , (दे ३,४०)।

जरम्म वि [जरत्क] जोर्च, प्राना, (मन् ६)। जरठ नि [जरठ] १ किन, परा; १ जेंगे, रि

(याना १, १ — पत्र १)। देखो — जरही

अरड वि [वे] इद, ब्हा (दे १, ४०)। बाद देनो जरह , (पि १६८; से १०, १८)। प्रीत, सत्रवृत , (से १, ४३)।

जरय हं [जरक] रत्नामा नामक नाहर्य सी

सरकाराम ; (दा ६ — पत्र १६४)। 'साम्य [¹ नरद्यात्राम-निरोध , (ठा ६)। "त्यत्त ५ 🕅 बरबाग्नय-विगेष, (त ६) । विभिद्व ५ (गिर शब्दायान-विशेषः (दा ६)। जरलदिम १६ [है] मामीन, मान्य , (रे १,

जगरवित्र जरा मी [जरा] दुराधा, इशन , (प्रास्त : ^{हर}, १३०)। 'बुमार ३ ['बुमार] शंकव मारे, (संद) । 'संघ द ['सम्ब] राम्स मा

राजा, नवर्गी प्रतिवासुदेव, जिल्ही भी कृत्य वृत्ती नाः (नम १६२)। सिंध १ ['नियं] ह सर्व : (क्य १, ४-वम ३२)। निषुरी क्ही पुरोपर अर्थ, (बाबा न, १६ -- वर रन 2, 321) 1

जराहिरण (भा) देशे जलहरण , (१९४)। जरि दि [उपरित्] पुत्रा रागा, भा व गीर 317)1 जरि वि [जरिन] मगपुरू, १६, वि \$0,37 3. 9 31 अधिम हि [३४रिन] गानुन, हुन र

लुख १८६)।

शी ; (स ८) । १ मनान् नहारीर को एक उपासिका , (सर ११, १) १ ७ सगरान् सरावीर के बाटने गणधर की शरणः (माइम) । य अन्त्रज्ञात पर्वत की एक वासीः **૧**∘ জ²न (ती ६४)। ≋ नतमी टिथि - (जे ७)। हुनियों दी एक शाला , (कप) । ज्ञापण न [यजन] १ वाग, पूत्रा , १ समय-दान ; (एद २, ५) ३ अपना व [यतन] १ वन्त, प्रकृत, चेटा, उपन ; "वयध-बाग प्रीतन्ति। (प्रतु) । २ वन्ता, प्राची की रचा ; (95 3, 3) 3 ज्ञपण वि [जपन] देश वाला, वेश-युक्त ; (कम) । जयन व [जयन] ९ मोग, निश्य ; (गुरा २६८ , कापू) । ९ दि, बीली बला , (बप्प)। प्रयम व [दे] संब या कन्ल, हय-मंत्राष्ट्र , (१ २,४०) । प्रयोगा का विनया १ १४२२, नेश, बोगिय : (निष् १)। व बाली को रचा, दिला का परिचया ; (इस ४)। ३ क्षप्रतम, कियो को इ.स. व. हो इस नगर प्रतित करने का करात , (इंतर् १ , सं ६० ; धीर) । जगहर १ [जगहूच] किन् कर का स्तरभनतिह एक राम, बार्गील शंक्लीहै वा। (तावा १, १६)। ज्ञाया व [यदा] जिन समन, जिन करन ; (इ.स. काम) । प्रया के [प्रया] १ विश्व विल्य ; (बज्र ४, १४९) । र कर्त्व कलारी राजा की क्लामहितो ; (म्या १६२)। ३ क्रमान राम्युम की स्थाप-स्थाप राजा : (स्था १६१) ।

क्रिक्टिय-कृष्य, अस्त्री और बर्द्यमी दिव :

(सम्बद्ध) । इसमान् प्रधानवदी रामन लेती , , (नंद)। द अपूर्व किने ; (त्राव)।

क्रम ६६ [क्र्] बॉर्न रोग, प्रांत रोग, क्रा रोग । क्रम ;

(इ.स. १३४) । वर्ष-बंग, बंगता (हर, भारती । इन्दर्भना (सन्दर्भ) ।

प्राथित हम्से प्रदेश=कीन् ; (कर् १, ॥)।

835

इनद परंत का एक दिया ; (अ ४)।

की एक नगरी , (हा २, ३) । ४ झगारक-नामक ग्रह को

(क अप-अहिरो ; (टा ४,१)। १ अम्बुद्दीय के मेर से पश्चिम

रिता में न्या हवड़ वर्तन पर रहने बाली एक दिह्कुमारी

एक टोकात ; (राप, १)। यिन जिल्हा,

प्यः (पटन १२, ३४; क्रीतः परत १)। यहेगी

दि; (सत; गटः ; मे १, १४)। 'यर पुंसी चिर]

दत में रहने बाता प्रहादि दन्तु: (बी २०) ; मी-भी ; (क्षेत्र १)। 'रेंकु पुं['पङ्कृ] पविन्तिरेत, हेंप-पर्वा;

(ना १०३) गडर)। "रक्षेस पुँ [राझस] गडर

क्षंपुक दाति; (पन्तः १)। रिमण न [रिमण] दरनोग, जरानेति : (गाम १, १३)। 'स्य

पुं[रिय] बदान-समय इन्द्र का एक दीवरात : (हा ८,९)। 'गसि ईं['गरि] गहर, गार (मुक

्रस्ट मक् [ज्यस्] १ दल्क, इन्य देला । २ प्लस्ता । रदाः (महा)। यह-जलंतः ; (स्याः या १६४)।

रेष्ट— जलियं; (महा)। प्रयो, यह-जलिंत ; (महनिष्)।

इन्द्रे इंग्वे जह ; (धा १२ ; झाव ४)।

त्रस्य न [जाह्य] बद्ना, मन्द्रता , " श्वर्य यहत्त्रेया"

, विरोद्धा दिनों में को करते धेरा, बट-बर्टि, (राया ६,

र)। केलि मां [केलि] दार्थम ; (रमा)। चर

हेनो 'यर : (क्य ; हे १,९७० । । 'बार पुं ['बार]

पर्छ में घरमा, (मारा १,६, १३३ बारण ३ (बारण)

बिएके प्रमाप में पानों में भी भूमि की तरह जाना दा सके

एतं भरतिहर एति साने बाना हिने ; (रस्य ६) । याति

६ चित्रिम् । पर्रामे ग्रेर बाला मंद्र, (श्री १० ।। 'चारिया सं: ['चारिका] एड बरपुर्वितेश पपुरितित

वीव की एक क्राफित काला का जिल व विशेष के विशेष का सन्त्र, पन्नी का पत्रमा, (कुमः)। "माह ६ ['नाघ]

(सर्घ ७३ ; से ४, २४)।

इस वृ [उदाल] देशीयमान, चनलेदा ; (चूम १, ४, १) िं इस व [सन्य] १ पनी, स्टब्स्स (सम. १, १, १; औ

१)। १ ब्रह्मान-रमस्यस्य साएक दोकालः; (स

र, १)। कित पुं कान्त] १ मधि-विगेर, रूत ही

एड जाति ; (करा १ , शुस्सा १४)। २ इस्ट-विगेर,

राधिरुमार-रामध देव-जाति का दक्तिय दिगा का इन्द्र ; (स्र

१,३)। ३ जनशन्त इन्द्र का एक सीक्यातः (टा

५,१)। कारकाल पु (कारामकाल) हाद हे माहत पर्टी , (प्राप्त) । कारि पुर्यो [कारिन्] पर्टी का शायी,

लड-जन्दु विरेप ; (महा)। 'चालंब धुं [**फाइन्य**] बदम्प प्रज्ञ की एक जाति, (महद) । 'फीडा, फीला मी

(डाष्ट्रवेश:सरायः)। १ कन्दुर्नियः (पहम

==, १)। विराह्य पुं [वृद्धिया] पर्न का रिकाः,

बर्द्धक्तिम ब्यद्धक्तिम् (पनः १) । 'चौरिय हुं [चीर्यः] ९ इतरह दंग का एवं स्वत्यन्यतः ग्रहा ; (ग्रा म) । ६ सह बोर-विरोद, बहुरिन्द्रप्र करनु को एक क्रारि, (बोप५)।

'सय ह [शय] सहर, १६ ; (स १०११ हें) । 'साहा मी [माला] ज्या, पर्ने दिनने का स्थान ; (आहर)। 'स्म र ['मृक्त] १ मैंदर । १ जनस्य अग्रहान

कारक लोकात ; (दा ४,६) । 'सेल दुं[गील]

शाही चारी क्षेत्र स्था (सात्र, कराहित्र भागे । कर्षा विद्याल दुन्य : (त्राल का, संस्) । हा ६ [भा] सन्भाः । स्टाः । हा व [प्रि]स्ट, रण ((हें ५ स स्ट्राह्म **रा**च र

लिंक, ! पेर १६ 'हिड्ड ('ब्रिड) अगून, राखा, साहित्य करें हैं। व साहित्य की राजा है दिसे ९४८ हे फ्रिक्ट एक (फ्राफ्ट) स्थात, तराव । १८ हे 🖓

१६४ ; टा २६४ टी)। फिट पुंत [सह] पानी में पैश होने वाडी कास्पी; (पर १)। 'रूप पुं [कर] ब्रह्मणानामह क्षत्र मा एक लोकरान ; (मुख ३, ८)। 'लिन्दिर त ['चिन्दिर] पर्ना

में उत्पत्न होने बालो बन्तु-विरोध: (इंग्री)।

'बायम पुनी ['बायम] जनहींमा, पीन-सिरा: (इसः)। यानि ६ [यानिन्] १ एते में गर्ने । याताः १९ तापने की एक अर्थि, का पानी में ही जिल्ला सर्वे है ; (भीत)। 'याहपूं ['याह] १ नेद इन ;

स्मुके मेराका सर्वे : (दा ४६० दी) । 'हिन्द्र पू [दिनित्] स्थतन्य, पर्यं का एर जस्तु (राम) ।

[साम्] ६ पर्ने से क्लां : - प्रमान १ इतः

गनुः, गराः ; (हा ४६० ई:)। पिहि पु निवि] स्पुट गरम : (साट) : 'मान्दो सी है सी हो है रोसल (१० ३,४६)। जिसार ६ जिसार १ रही रा किनु, (प्रमा)। 'धंनियां में [क्लिनेशी] 'tu-fire (tim e. 92: 11 '# 9 ['#] fir. म्ब (इत १(१, म १=)। 'हा में ['हां] पर्रोगे मीताच ह्या पर्या । सुर १९३ १। सिहि रण 'चिहि (प्रवृष्ट)। यहम ५ [मन] प इन्द्र विशेष्ट्र रहित्सार अध्यक्ष इद क्ष^{ति} इतः उत्तर दिशा राज्य (७५,३)। अञ्चलनस्यर क्या र

```
| उस्र-
                                          बाह्असहमहण्णजी।
1836
                                                      न्मिक गाँक, जिसके प्रभाव में गरीर के मेरे 🖂
 जलस्य ५ [ जलकित ] अनवान्त-नामक इन्द्र वा एक लेक्ट-
                                                      होता है , (पन्द २, ५ । सिंप्पर)!
   पाल , (टा ४, १—पत्र १९८०)।
                                                     अब गरु [बाषय् ] १ गम्न क्याना, मेहना । १
 जलेजलि १ | जलाध्यालि | तर्गव, दानां शर्था में निया
                                                      शना। अस्य (हें ५ € )। हिन्द
   हुमाजल , (सुर ३, ११ ; कप्)।
                                                       (सूच १, ३,२)। ह - अप्रतिहरू
 जलग ९ [ ४२लक ] मधि, माग , (पिंट )।
 जलजलित वि [ जाङ्गान्यमान ] देदी-क्मान, चमहता .
                                                       (बाया १, ३ , हे १, २४० )।
                                                     जय सह [जण्] अस काना, बार कर मनहैं।
   (काम)।
                                                       का नाम स्मान काना, पुन-पुनः मन्त्रीत्वरी
  जलपापु [ उचलन ] १ वर्षि, बहिन , (स्व ६४० हो )।
                                                       जबह , (रंगा ) । " तथि तस्मेंते ं
    २ देवी की एक जानि, अभिरूमार-नामक देव-जानि ,
                                                       नुदिल्लामो" (नुपार०३) । वक्त⊸जवेरी
    (पह १, ४)। ३ वि जलना हुया, ४ चमहना, देशीप्यमान .
                                                       क्वह - जयिष्टर्जन ; ( सुर १३, १८६)।
    "र्गुर अलगजलकोनसाए" (उद (४८ टो )। ६ जनाने
                                                      ज्ञथ पु [ जार ] अार, पुन. पुन: शन्बोच्नान,
    शाला ; (सुम १, १, ४ )। ६ न, धार्म सुनयाना; (पन्द १.
                                                       शन डो. सने देशना का नाम-स्मरण ; ( प्रार<sup>9</sup>,
    १)। प जलाना, मन्म यग्ना , ( गन्छ १ )। "जडि पु
                                                       13- } |
    [ °जटिन् ]विधायर वंश का एक राजाः (पटन ६, ४१)।
                                                      जय ९ ( यय ] १ मम-विगेष ; ( गाया १, १)
    'मिसाई' ['मित्र [स्वनाम-स्वान एक प्राचीन दिन ,

    १ परिमाण-शिंगप, बाद स्था का गा.

    ( गउड )।
                                                        णाली मी [ °नालो] वः नार्छा जिलमें दा
   जलाचण न [उजालन] जताना, दश्य नरना; (पह १, १)।
                                                       रीं (बायू १)। संस्थान ['सप्य] । व
   अलिम वि [ उपलित ] १ जता हुमा, प्रदेश , ( सूम १,
                                                       (पडम २२, २४)। २ माउ सूझा शा एक र
    ६, १) । २ सम्बत्त, नान्ति-पुक्त ; ( फद २, ६ ) ।
                                                       २१)। "सब्बासी ("मध्यां] स्त्री
   जलुगा रे सी [जलीकस् ] १ वन्तु-स्निय, बॉट, बिटरा,
                                                       विशेषः (शं ४,९)। दिलय दु(ँरात)
   अल्<sup>या</sup>) त्रज का कीता; (यउम ९, १४; फद १, ९)।
                                                       (बूर १)। यंसामी (धंशा) का
     १ पश्चि-विशेष ; ( जोव १ ) ।
                                                       (9797)1
   जलुमग पु [ दे ] गेंग-विगेष; ( उप हु ३३२ )।
                                                      जब ९ [ जब ] देग, दौड, शोध गांत , ( दुर्मा
   जलीयर व ( जलीन्र ] रोग-विशेष, जनस्थर, जागम :
                                                      जयज्ञच ९ [ थयपय] भन्त-विगेष, एक शह में
     ( 44)
                                                        (213,1)(
                                                      जयण व [ है ] इत की शिक्षा, इत की बोरी
    जलीपरि वि [जलोब्रिन्] जलन्यर गेय वे वीहेत, (राज)।
    जलोया देवो जलूया ; ( जी ११ )।
                                                        49 ) 1
                                                      जधण न [जपन ] जाप, पुनः पुनः मन्त्र स
    जारून वं [ दे, जारून ] १ गरीर का मैल, मुना पतीना ६
                                                        <sup>थ</sup> भरिया दहस्य जाए को कालो मन-जनलीमें"
   (सम १०; ४०; भीप) । २ नड को एक जाति, रस्मी
      पर मेज करने बाला नट , ( पण्ड २, ८ ; भीष , याबा १,
                                                        $0;4E)1
                                                      जवण दि [जयन ] १ वेष से जाने वार्टी,
      ा)। ३ बन्दी, विस्त्पाटक (बावा १, १)। ८
   . एक म्बेच्य देश ; ६ उन देश में गहने बालो म्लेच्य प्राप्ति,
                                                        टो )। २ पुवेग, शोप्र गति , (मायम )।
                                                      जबण पु[यबन ] १ स्तंब्ड देण विगेष
      ( पाइ १, १--गत्र १४ ) १
                                                        ६४)। २ उप दश में रहने वाली मनुन्न-
    जल्दार पु जिल्हार ] १ स्वनाय-प्रभिद्ध एक मनार्थ देश.
                                                        १,१)। ३ यस्त देश का राजा, (वृत्री

 जन्सार दग का निवामी, (इक्ष)।

                                                       जयण व [ याथन ] निर्वाह, गुजाग , ( उन <sup>:</sup>
    जिल्लिय न [ दे,जान्दक ] शरीर का मेल ; ( दत २४ )।
    कल्डोमहि सी [दे कल्डीयधि] एव तर दी बाध्या-
                                                      ज्ञवणा भी [ यापना ] जार देनो , ( <sup>११ १</sup>
```

प्रिया में [यदनानिका] लिपि-किम (सह।। शिविषा मी [यवनाविका] क्या के प्रत्युक्त रायम् 🕽 । गेब्रासी [यवनिका] पटा, (दे ६३ . सप. 111 पिडल देशी लख = यास्य । मी मी विद्यमी दि पादा, भाष्ट्राटक पट (ह २, ्रीतः असंगतिका, द्वीः, (अभिक्षणः) मी मी [यायमी] १ दान की मी। २ यक्त की पि; (सम ३४, सिते १६४ टः)। नीव देखे लय = दणा । रचमाण पुंहि है । लान्य भन्न का वायु-विशेष, प्राण-३:(गडट)। ष) हुँ [दें] या का मर्जुर, (व ३,४२)। ली भी दि दे दे हैं। हम, देग . " गच्छित गम्बर्निश्य ग्तुम्याहिण्डा जवलीए " (सुप्ता २०६) <u>।</u> वास्य हि] दशा जवस्य , (१९६ =)। स न [यदस] ९ नृत, यतः । " विद्याय जमनिन" टर अरम ही ; उप प्रमार) । १ मेही बर्गर, धान्य; शासास, ३, २ 🛶 श्रमी किया के क्लोनीकेंद्र जगपुल की पृक्तः गुहत्त वा पृत्र , (वुना 😘 ाम g [यदास] इक्त-बिग्नेप, रस्त पुत्र बाला एक-रीय, "पार्टीय जबन्या (धा २३; पाण १)। जहामानुष्मे इ दा " (पाण ५०)। 🖚 } वि [अधिन्] ५ वेग बला, बेग-पुस्तः (सुरु रण ∫ ९९२ ⊬ । २ झ-५, षंद्रा. (राज) । स्य वि [यापित] ५ गनित, गुक्षण हुमा : २ नागित; . हुन्सः)। [पुं[यशस्] ९ वीर्ति, इञ्चत, सुन्यति ; (मीर : का)। २ संयम, न्याय, दिस्ति , (वर १ : इस २)। ३ किनय, (उन ३)। ४ सम्बान स्काप का प्रथम निज्य: (सम ११२)। ३ मान् पार्थमाय का बाहवीं प्रधान जिल्हा; (क्या)। केति मा किति | मुद्राति, मुप्रसिंह; (मुम १, ६; च १ । सह पु िसही स्वनाम-स्वत एक जैन् चार्च। क्या सार्च ६३)। स, संस वि [चित्]

१ स्थल्बी, इव्हरदार, कीर्न प्राप्ता ; (परह 1, ८)। २ ५ स्वामन्त्रविद्व एक बुत्तक पुरुष ; (सम. १४०)। यर् को [यतो] १ दितीय बसार्वी मगर्भात की माता ; (स्म १६२)। ९ नृतीया, भएनी भीर प्रकेशनी की गाँव: (चंद १०)। विस्म वुं [वर्षन्] सातन-न्यत हर्मनिनेश (गडा)। वाय वुं [बाद] मार्-बाद, बर्गातान, प्रमोगा : (उप रम्ध टी)। 'विजय पु (चिजय) विकासी महारहाँ राजान्ही का एक जैन मृत्येत्र प्रत्यक्तम्, रज्ञदासार्व श्रीमान् यगे वित्रय छ्या-ध्याय: (गत)। हर १ घर रिमन्तर्यका मत कालिक ब्रह्मालको जिनन्देव : (पर =) । २ भारत वर्षे के एक मधी जिन-देश: (पर ४६) । ३ एक राज-कुमार; (धम्म)। ४ पत्त का पाँचशे दिन; (अं ७)।. श्वित्यम को धारम करने वाला, यमुखी; (जीप १)। देगां जसी । जसद् पु [जसद्] धतु-विगेष, बला; (गब)। जसा मी [यशा] क्रीडमुने की मता; (दत =)। जसी देनी जस । 'आ भी ['दा] १ नन्दनामक गेरा ' को पत्नी ; (या ११२; ६६०)। २ मगदान महादीर की पन्तो; (क्रम)। "कामि दि [कामिन्] यग चाहन वाना, (१०३)। 'कित्तिनाम न ['कीर्त्तिनामन्] कर्म-विगेर जिसके प्रभाव में सुरम कैलता है : (सम ६७)। धर पुं धरी १ थरनेन्ड के मध-सैन्य का मधिपति डेब; (डा ४, १)। २ नृत्री वेयक देवतीक का प्रस्तरः ; (इन)। हिरा मी [धरा] १ दक्तिय स्वह पर्वन पर गटने वाली एक दिशा कुमारी देवी; (टा न)। १ जन्यु-दृत्त विधेर, सुरर्गनाः (जीव ३) i ३ वस की चीथी गितः (जी ४)। जह मह [हा] लग देना, छंड़ देनः। जहह ; (पि ६७)। वह--जहंन; (वर १)। ह--जहणिस्ज; (गत्र) । मह-जहित्ता; (भि ६८२)। जह म [यत्र] व्हां, जिनमें ; (हे २, १६१)। जह म [यया] जिन ताह में, जैन ; (दा ३, ५ ; स्वत २०)। विकास न [ब्रह्मा] कम के धनुतार, धनुकम ; (पंचा ६) । 'बसाय देशा शह-एक पर (मानन) । °द्विय वि [°स्थित] वास्तविक 🖑 🥏 मुरा १०)। 'स्थ वि [ैं ः, मलः ; (पंचा १४)। 'त्थनाम वि

जहिच्छिष न [यथेप्मित] रच्छताः, स्टि

```
[ सेप्रादित ] सन्य वस्ता ; (सुर १६, १६) । ध्य
न [यायातस्य ] कस्तरिकता, मन्यता ; (राज )।
'रिहन['हे] उरिक्य कं मनुपार, (सुपा १६९)।
'संद्रिय वि [ 'यृत] क्य, वशर्य, (नुता ६२६ )। 'विहि
 पुर्मी [ 'निजि ] निनि के सनुनार , "नहगामिक्यिपमुदासी
 जर्<sup>द</sup>िया न<sup>(</sup>देशस्त्रामो)'' (मुर ३, २०) । सीरान
 िरोष्ट्रा । सन्दा दे अस से, क्यानुपार , ( साट ) । देखें।
 जहा=स्था ।
अर्ण व [ अधर ] बन के नीये का भाग , ( गा १६६ ,
 बाया १, ६ )।
अरणरीह पृष्टि किन, अग, आँप , ( प ३, ४४ )।
क्राण्याच । न[दे] बर्गोरर, जलांगुर, मी दो
अरणोरुभ पहतने वा क्या शिव , (देश, ४६; वर्)।
अहरका ) वि [त्रप्राय] निहन्द, होत, महन, नाव, (नम ८,
अस्यय र्शियाः छ ९, ९, औ ३= , दं ६ है।
अरावनी अह=डा। बराइ, (वि ३६०)। नंह--
 अदारमा, अराय , ( मूल १, १, १, वि ६६१ )।
ब्रहादय ब्रह=रता, (६ ५,६०;४मा) जुक्त वि
  [ "पुन्तः] यथांपन, बोग्य, (सुर १, १०९ ) । "जेह त
  रियेषु रे भारत करते, (सह )। जासप नि
  िनामक दिवस्था नाम न क्या नदा हो, प्रनिर्देश्य-नामा,
  €र्र, (4'4 ३ )। 'संदेश न [ संदेश] संदेश संदर्शनातिक,
  (मपा)। सद्व[सर्घ]नन्त्र, कल्लीह, (श्वा)।
  'सह । [वायावय्य] १ वप्यतिहस, स्थ्यम, "बामानि भ
  भिल्यु अराजेन " (सम ९, ६)। २ 'स्त्रहत्तर्य '
   न्त का गक्का-राज , (नम 1, 12 ) । "प्रशुक्तावा
   व [ प्रानुसरणा । अपनः का परिद्या किया ( आवा):
   'जय व [ 'जून ] मन्या, वर्ष्ट्यक, ( नावा १, १ )।
    रप्रियो में [गन्निकता] अवता कक्ष स, बहयन
   इ क्रमार (रा)। 'रह बना जह रिह, रम बहु३)। 'विस
   व['तृम] बेंग्ग हमादा वेंग्ग, बनाउँ, (सं२८) ३
    मॉन बंद ( प्रतिन) शंक्ष व व्यूपर, ( त्रश १ ) ।
  जराजाय व [दे संघाजन ] बर, सूर्व, वश्ह ; ( द
    3, 49 , 92 9, 4 ) |
   जरि । इस जह=स्थं, र ४ २, १६१ , स. १३१ ,
   The fire sec
```

830

(पंचा १)। जहिब्छिया सी [यहुच्छा] सर्त्रो, लेच्हा, मर्जी (सा ४६३ ; तिले ३९६ ; स ३३३)। जदिद्वित ५ [मुघिष्टिर] याग्द्र-राज ■ गर्दः! कंछ पात्रञ्ज , (हे १, १०७ ; प्राप्र)। जहिमा भी [दे] विरम्ध पुरत को बनाई हुई वर्षाः ६ (१)। जहुद्दिल देवो जहिद्दिल ; (हे १, ६६ ; ^{१०४}) जहुत्त न [यधीवन] हवतानुवार , (वीर)। जादीम म [यधीय] जेंगे हो , (मे ६, १६)। जरेच्छ देशो अहिच्छ, (गा ==२)। जहोर्य न [ययोदिन] दिवनानुनार , (भर्त १)। जहोर्य । व [यधोसिन] बोम्या के मनुग जहोब्बिय 🕽 ८, ६ , मुरा 🕬 🕽 । जा वक [जन] स्थान होना । जामर, (रे ५ ¹⁾ वक—जार्यतः (पुमा)। सह-^एएस विभिन्नणा दुनो पुनो जाइउं च प्रीरं च" (न ११) जा नहिंदी । अला, गमन काना । ६ प्रत ৰাবৰা ঃ সাহ, (বুয়া ३०५) । সৰি । (মুল)। अन, (वर ३, १४३। १०, ११०)। इत्ह-जारा (989,4)1 जा देशो जाय=गार्थ, (हे १, १७१, ^{हुत}, ^{हु} 135)1 जाभगदमी जागर . (मुद्रा १८०) । जाइ सी [जानि] १ पुण विरोप, मानता, (म रामान्य नेवाधिकों के भार में एक वर्ष किया, है भी जैन सनुत्व का सनुत्कल, वो का वाल्प, (^(रा))।" ३ जल कुण, गार, बंग, झर्ति, (य 4, 2, व्हरी हुवा) । ४ उत्पति, प्रत्म , (उत्त ३, वी ।) रे बन्द्रम्, वैश्व वर्णाः जाति , (१९३)।। प्री श्न, बार्ड बाया : (फल १) १ ० स्व^{हिन्}र १,२)। आजोवपु[आजोव] ^{हरी हैं।} बरता का विशा प्राप्त करने बाता गाउँ । हा ।

भेर पू [स्थावित] माद को का उस के हैं

२) । विस्त व [नासन्] यर्स-पिनेष, रूप्य ६०) । 'प्यसण्यारको [प्रसन्ता] क्रक्तिक पुत्रासंबातित र्मात्राः (जीत ३) । फारु न [फारु] १ पत्र स्थितः २ फर-विरोप, जायकर, एक गर्म मताता: (सुर १३,३३; गा) । 'संत वि सिन्] उत्य जानि वा: (ब्राचा २, ४, २)। 'सय पु ['सद्] लाति का धनिमान (टा ९०)। 'यनिया मी [पत्रिका] १ मुख्य कर वाता वध-शिव ; २ पत्र-शिव, एक सर्भ मजना , (मरा) । स्वर तुं[स्मार] ९ पूर्वजन्म को राप्ति , १ वि पूर्वजन्म का म्बरमः बरमे यान्ता, पूर्व-करम का द्यान वालाः " जाइनगडे माने इमार्ड नयागाइ स्वत्तायान्य " (सुर ४, २००) १ सरण न [समरण] पूर्व जन्म को स्पृति, (उन १६) । किसर देवी 'सर. (बजा: विते १६७९- द्य १२० टी) । जार् देगी जाया ; (पर्)। जाइ नहीं [है] १ महिरा, गुग, दार, (३ ३, ४४) । २ ं मदिगा-विशेष: (विश १, १)। जाइ वि [यायिन्] जाने वाला; (टा ४, ३) । जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, माँगा हुमा; (विते २६०४; मा १६४) । 🕶 जाइच्छिय वि 🛛 याष्ट्रच्छिक 🕽 स्वेच्छानिर्मितः ; 🕻 विषे 25) 1 जार्डनेन देखी जाय=दान्यु । ' जाइउनंत ो देखी जाय=याच् I 🖒 जाइउजमाण जारणी मी [याकिनी] एक जैन साध्यी, जियसे मुत्रमिद

जाहणां सी [याकिनी] एक जैन साप्ती, जिससी मुप्रमिद्ध । जैन मन्यस्ता श्री हिस्तरमृति काली धर्म-स्ता समन्ति ते थे; (उर १०१६) । जाउ म्न [जानु] क्लिंग नग्ह; (उर १८५) । काण्य प्रं [क्लिंग] पूर्वभरतस्त नन्तर्न का गोत्रः (इक्)। जाउरसा सी [यानुका] देवर-पत्ती, पति के छोटे साई की सी; (गाया १, १६)। जाउर प्रं [दे] विषय्य युन्तः (दे १, ६४)। जाउर प्रं [दे] विषय्य युन्तः (दे १, ६४)। जाउरण प्रवृद्धितानुक विक्तिनेश्वरः (पर्मा १ च्या २२)। जाउरण प्रवृद्धितानुक विक्तिनेश्वरः (पर्मा १ च्या २२)। जाउरण प्रवृद्धितानुक विक्तिनेश्वरः (पर्मा १ च्या १०११ हो; पाम)।

४०;ग१७१)। २ देव-पूजा; (शबा१,१)।

जागर मह [जागृ] जागना, निशनवार्ग करना । जागरा: (यट्) । यह—जागरमाण ; (तिमे २०१६)। हेह-जागरिसण, जागरेसण ; (क्य ; क्य) । जागर वि [जागर] १ जागते वाला, जागता ; (भाषा ; बया: धार्ध)। र पुंजागस्य, निज्ञ-न्यायः; (सुज १८०; भग १२, २ ; गुर १३, ६७) । जागरह्नु वि [जागरितृ] जागने वाला ; (था २३)। जागरिभ वि [जागृत] जागा हुमा, निजन्गहित, प्रयुद्ध ; (गाया १, १६ ; था २६)। जागरिक्ष वि [जागरिक] विडानदिव ; (मग १२,२)। जामरिया की [जागरिका, जागर्या] जागरण, निशन्त्याण; (गाया १, १; भीर) । जाडी सी [दे] गुन्मः लतान्त्रतानः (व ३, ४४)। जाण सरु [धा] जानना, शन प्राप्त परना, समसना । जाराह: (हे ४, ७)। यह--जार्णत, जाणमाण; (क्य; विपा १, १) । मंह—जाणिकण, जाणिसा, जाणिसुः (वि ६=६: महा: भग)। हेक्ट-जाणिउ: (पि ६७६)। कू-जाणियव्य : (भग ; भँग १२)। जाण पुन [यान] ९ रथादि बाहन, सवारी ; (प्रीप ; फाह २, ६ ; टा ४, २) । २ यान-पात्र, नीहा, जहाज : "नागं संसारमनुर्तारमे बंधुरं जारां" (पुण्क ३७)। ३ गमन. गति : (राज)। 'पत्त, 'यत्त न ['पात्र] जहाज, नौकाः (निम ६ : सुर १३, ३१)। "साला मी['शाला.] १ तवेला; २ बाहन बनाने का काररामा; (मीप; माचा २,२,२)। जाण न [झान] हान, बोध, नमक ; (भग ; कुमा)। जाण दि [जानत्] जानता हुमा ; "जार्च काएण वाउद्दी" (मूझ १, ६, १) । "मासुम्म्रेच जावया" (झाचा) । , जाणई सी [जानकी] गीता, गम-पत्नी ; (पडम १०६, ٩= ; ﴿ ﴿ ﴾ ا · जाणग वि [झायक] जानकार, हानी, जानने वाला; (सुम १, १, १ ; महा ; सुर १०, ६६)। जाणगो देखी जाणई ; (पउम ११७, १८)। जाणण न [दे] बगत, गुजरातीमें "जान"; "जी तदबत्याए ममुचिम्रोनि जागणगाइम्रो" (उप १६० टी)। जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समक्त, योध; (हे ४, ७; इप पृ २३; सुपा ४१६; सुर १०, ७१; स्थरा १४; महा)। जाणणया) श्री जगर देखो; (दप १९६ ; विषे २१४८; जाणणा ∫भणु;भावृ३)।

४४२ पा श्चमहम	हण्णयो ।	[जाणय-अप
प्रश्च प्राव्यन्त्रम् । अप , या) । जाणाव हि (प्राप्त) जवाने कहा, कामको-नाजा, (भीग) । जाणाव हि (प्राप्त) जवाने कहा, कामको-नाजा, (भीग) । जाणाव ही (प्राप्त) जवाने कहा, कामको-नाजा, (भीग) । जाणाव ही [प्राप्त] हान, कामक , जानकारी , "एग्रांन प्राप्त आवारी है [जानवह] । देश में उन्यन्त, दग-मन्त्रमी, (रात , याना १, 1—यत १) । जाणाव ही [प्राप्त] हान कराना, जवाया । वागावत, जाणावे ही (हम. सामको । इन जाणावेख्य (उन ११ ११) । जाणाव ही [प्राप्त] हानक ने वान , जवाया । वागावत, जाणावेड , (हम. सामको । इन जाणावेख्य (उन ११ १) । जाणाविज ही [प्राप्त] हानक ने वान (प्राप्त १९ १९) । जाणाविज ही [प्राप्त] हानक ने वान , विवार्त ने वान , विर्म्प) । जाणाविज ही [प्राप्त] कामको हान, किरीहर, सामक । । जाणाविज ही [जात] । या, जुरमा १ उन भीर जाणा कामका , वानका , जाणा के । जाणा ही [जात] । या, जुरमा १ वर्ग । ताला हान , जानका , वानका , वालका ,	जामि श्री [जामि, सामि] गरित, जामिस है [सामिस] प्रारित, एं जामिस है [सामिस] प्रारित, एं जामिस है [सामिस] प्रारित, एं जामिस है हो श्री हो सामिस है [सामिस] प्रारीत हरता, है हो श्री हरता है हो है हो है हो है हो है हो है	भागिनी; (नात)। नेनार, (जा नारे): ३; (जा नारे):
०६)। विद्यां ियता निर्मंद्र नगः (गटः)। आस्तरेने त्रीय ⇒वर्ष्यः (शर्मा ३०)। आसार १२ (आसार्यः के विकास कर्षाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः	जायव पूर्वा [याद्य] यहाँ त (बाता १, १६, पद्य १०, १६) जाया मी [जाया] मो, मील, (जाया नेमो जन्मा ; (कन्मू १, ४	म उत्पन्न, युः.)। सा ६, मुपा ^{३=} ०

38. 9 3 1

परिष्या, (बारा, साथ, या थे, ये) 1

रा स्वरार्टिंग , १ व्यंत्र ३ । १ साविष्ठ रि [याद्वस] हम देने , ६ प्राप्ता । जामित है। बाहुस हिला, जिल्लाह सा, (१ १,१४० । लारेक्फ्य में [लारेक्ट्रिय विश्व विरिध रोज की राष्ट्रप्रदार्शिक हा अहे । जान कर [ज्यालय] जलका कर करका "ती र्जनसम्बद्धानपानम् समिति नियोगः (सा.)। मंत्र जालेचि । मन् १। জাল স (জাল) ৭ মনুং, নমার । মূর ৫ ১৯৮ , ग ४८३ ।। १ माना का समूर, रामनित्र , (राम)। 3 बार्यवारी बाले हिड़ां से युक्त हुहांगा, गवाकर्नामीयः (मीप.) रादा ६, ६)। ४ मानी मीन पहली की राज, परा-सिंद, (फल 5, 5: ४०) ६ पेर का मानुसा-लियः (बीरा) मडगदु [बद्धा] १ विच्छ गरानी का समृत १ मध्यि गरान-समृत में महता प्रदेश , । प्रदेश । । यस्त २ [गृहक] मन्दिः रवाल बाला सहाल (१ गया ; गाया ६,६)। विंतर न [पञ्चम] गताल : । जीव ३)। हरमा देगी 'धरगा, (भीरा)। जांड हुं [ज्यान्त] व्यक्त, प्रतिनीतमः (सु ३, ९०० : F & 1 जालंतर म [जालान्तर] मन्द्रिक यज्ञान का सन्दर्भ ; (सम् १३७) (जासंघर हुं [जासम्बर्] १ देशद के एक स्वर्गन स्वरत रहा; (सर्व)। ६ त् रोब्लिवेव ; (बन)। जालंबरायण ह [जालुन्बरायण] वेब-विदेव : (मार 3, 3)1

बाला केरे बार = बार ; (पर १, १ ; ४ ; मीर ;

बारवडिया मी [है] करगरा, महरिक्य, (र ३,४६),

जाला सी [उदाला] ९ की ही किया; (क्रफा; सुर, २०६) । र नहम चक्कर्ति ही माठा; (स्म

जालय देशे; जाल= इ.स. ; (गटड)।

1 (۶,۶ ست

लाया मी [जाता] फाल्ड फी इन्ड मी मडा

हार हुं[ब्रार] १ इसर्वर, (हे १,९४४ ८) वर्षी

जापार ६ [यायाहिन्] स्टब्टॉ. गटा

१६१ । ३ साइम् यस्त्रास्यो हो हाल्य-देवी : जाता म [यहा] हित्रमा, हित्र कर में ; " राज रामति गुण, राजा दे महिमार्डि देवति " (हे ३,६४)। जानाड वृं [जानायुष्] इंभिन बन्दु-विभेत ; (सर्व)। जालाब सर्व दिवालब | उत्पा: दार देता । दार जालायंत : (स्तान ३)। जालायिम नि [ज्यालित] बताया हुमा ; (सूरा जानि ३ "[जानि] १ मरा धेरिक म्य एक दुन, जिल्ले मगरन् मगर्गत के पस दोला नी थी; (भनु ९)। १ धीरूक्य का एक पुर, जिसने दोला ने का राज जा पर्वत प्रमुक्ति पर्देशी ; (मेन १४)। जालिय ३ [जालिक] दान-दंति, बद्धन्य ; (गहर) । जालिय है [ज्यालित] बहन्ता हुमा, मुहताया हुमा ; (हर : हर १६ व हो) ह जालिया मी [जालिया] १ बलुद्द ; (पर १, १— पत्र ४६ ; गडर)। २ दन्त ; (गड़)। बालुग्गाल (बालोह्माल) महत्रा पश्ने सा मापन-विदेश: (मनि १=३)। जाब नह [यापयु] १ यनन करना, गुजरना । २ कल्ला। ३ गरीन का प्रतिशासन काला। बातहः (भाषा)। बवेदः (हे ४, ००)। वातः : (सुम ५, ५, ३)। अध्य म [यायन्] इन मधी का चुन्ह प्रस्ताः - १ परिवार: १ मर्रोत ; १ भवपारर, विध्य ; " जावद्यं परिवारी सहसामा १६पारी बेड् " (तिसे १४१६ : रापा १, ४)। जिया मीन [विजीय] बेरन पर्यन्त ; (बाबा)। मी-बा; (बिंड १४९म; बीर)। 'उजीविय वि ('उजीविक) पावलंब-संबन्धी: (म ४४९)। देश, जार्थ । जाब है [जाप] का हो का दर का देक्ट का कारण, सन्त्र का स्वारम : (सु. ६, ६४६; सुप्त १४६)। जावा है [दे] इन्हर्नियः (परा ५-पर ३४)। जाबहन वि [यावत्] जिल्हाः, " बाराचा बन्दरहाः" (सम्म १४८ : सन ६४)। जार्य देखें जाय; (एडम ६८, १०) । "नाय म ["तायन] १ वरित-स्थित ; २ हुनाहार ; (हा १०)। जार्थन देगी जायहम : (सर 5, 1)।

```
8.40
                                        412442464444
                                                                   _____
                                                    ["गडक] त्रण ने उने का स्थल (राप) । हिं
 २३०)। 'पपस्तिय दि [ प्रादेशिक ] सम संन्य प्रदेशों
 से निश्यम , ( सग २१, ४ ) ।
                                                    प्रयो वैति ; (ग्रयण ४०)।
                                                   ज्य पुं [यूप] १ जक, पूर, वारी हा बारर किन में तेर
जुम्ह्'ग[युष्मत्] द्वितंत्र पुरुष का कावड सर्वतंत्र ;
                                                    कर्भेषण्डाना जाता है : (उने पूर्वाम)। भन्द
 "अस्ट्रस्ट्रप्यरण" (हे १, २४६ ) ।
                                                    क्रिंद, "जुबाररणं अनुब नद्वां च उपवेद" (रा)।)
जरमित्रत वि वि ने गरन, निविध, मान्य , "बुद्रबुर्गन रता-
                                                    बार्राज्यः (अ३) ध्रत्यस्य सागारत्यस्यः (त
 वन्य" ( द ३, ४ ३ ) ।
                                                    8 18 } 1
जुय १ (युपन् ) जान, नत्य , (यूनः )। राप्त पू
                                                   जुमा पुं[ वे ] बारा पर्या , ( रे ३,४१)।
 ("राज्य | गरी का शारम शज-पूमान, भारी गत्रा, (स्र १.
                                                   क्षमत पृ [ यूपक ] देनो ज्ञम=तृ : (म्य ग)!
  १७६ : श्रमि ८२ )।
                                                   ज्ञात पु [रे] गन्ध्या को प्रभाषीर वाहकी प्रभ
 ल्या सो [युवनि] तरणो, जान मो । क्रि ६, ४.
                                                    দিলে ( ঠা ৭০ ) ।
  भीप , गउड , प्रासु ६३ , बुना )।
                                                   जुमा नो [ युका ] १ ज", बीतर, चुर केरनिर्छ , (ई
 जुर्वगय ९ [ युवगय ] तरण बेत , ( आचा २, ४, २ ) ।
                                                     १६) । ६ वनिमाय-सिने र, मांड लिया वा तुर रप, (1
 ञ्चयरज्ञ न [योषराइप] १ वृश्यज्ञान , ( इर ११९
                                                     ६,६६)। 'सेन्द्रायर वि [शत्यानर] पूर्वे
  दी,सुर १६, १३० } । १ शजाके सर्वपर जरता
                                                    स्यान देने बाला , । मग १६ ) ।
  युदराज का राज्याभियेक व हुमा हो ततनक का राज्य .
                                                   ज्ञार मि [ यूनकार ] ज्यारी, जुए वा मेन्सी ; (स
  (भावा ६, ६, १)। ३ गताके मरने पर और युक्तात
                                                    सरि, स्पा४०० ।।
  के राज्यानिवेंक हो जाने पर भी जवनह दुगरे युवशक हो
                                                   अभारि ) वि [ धूनकारिन् ] जुमा नेतने गण हैं।
  नियुक्तिन हुई हो तबनक का शाय , (बृह ५)।
                                                   ज्ञारिय) वेनारी, (१ ४३, द्वा ४००, 🖆
 ज़ुबल देवो जुगल , (स ४७८ , पउम ६३, २३ )।
                                                     स १६० । ।
 जुपलिय देवां जुगलिय ; ( श्रग ; भीर )।
                                                   ज्ह ५ [ जुर ] इन्तन, केस-स्नाप , (रे ४, १४,वी
 सुधाण देलो सुब , (१३म ३,९ ०६ ; बावा १,१; बुवा) ।
                                                   ञ् पर [कृष्] कोष काना, गुन्मा काना। पूर
 जुयाणी देशे जुवई , ( १३४ ८, १८४ )।
                                                     ¥, 128 . 97 ) 1
 जुन्धण } वंती जीव्यण, (प्रत् ४६; १९६) । 'प्रत्न
                                                   जुर बड़ [ निद्द ] नेद करना, अन्मोग करना । दूर ,
 पुरुवणात्त) विव बातन, तनी बुमरतनुभ्यानाइ " ( नुपा
                                                     ४, ९३०, ९६) । जूर, (दुमा) । सदै – दुरिहा,
   272)1
                                                     २, १६३)। वह-जूरेते, (ह २, १६३)।
  जुसिभ वि [ जुष्ट ] वेदिन , "पाएस देई खाँगी अवसारिन्
                                                    अर्थ मह [ अर्र ] १ भूरता, स्वता । १ सक वर्ग
   यरिविए व जुनिए वा" ( क्ष ४, ४ )।
                                                     हिसा इरना ; (शाथ)।
                                                    अरुण व [ अरुण ] १ स्वता, भुग्ना , १ निन्दा मार्व
  प्रहिद्विर ) देशो अहिद्विल ; (पिग, उर ६४= डी,
    हरिल 🏱
             णाया १, ९१ -- पत्र १०८, १२६ )।
                                                     (राज)।
  अहिद्वित्ल )
                                                    अरव सह [ बड्य ] स्तनः, बदना । ज्यार , (हे ४, धे
  जु<u>र</u> तक [१६] १ देना, धर्षण काना । २ इतन करना,
                                                    जुरवण वि [ यञ्चन ] अने शला , ( इना )।
                                                    जुरावण न [ जुरण ] भुराता, सोषण ; (भा ३,९)
   होम करना । जुहुलामि , (टा ७---१व ३८१ १वि १०१)।
  ज्भ ा [ यून ] ज्भा, धन , (पाप )। "कर वि [ कर]
                                                    जुराविश्र वि [कोचित ] कद क्रिया हुण, क्रि
    जमारी, जुए का बिलाबी ; (सुना ६२२)। "कार दि
                                                     (कुमा)।
   [ कार] बड़ी पूर्नोक सर्व ; ( बाबा १, १८)। कारि
                                                    ज्रिंश वि [ खिन्न ] बेर-प्राप्त , ( पाम )।
    वि["कारिन्] जमारी; (शदा)। "केलि सी
                                                    जुरुस्मिन्दय वि [ दे ] बहन, निविड, सान्द्र , ( रे रे,
    ['केलि ] यून-केश ; (स्थव ४०० ) । "स्वलस्य व
                                                    ज्ल देसो ज्र्= कुष्। जल; (गा ३६४)।
```

```
द्व देखे ज्ञ=चन : ( गला १, २—पः कः)।
. जूपे ) देगाञ्चम ≕ङ्गः (इटः स ५ २ ∖।
 ज्यय)
 ब्स देखे क्स . ( हा २, ५ : क्य )।
 जूस हंत [यूप] इत, मूँग क्लेंग का स्तय,
  (मोस १४३, इ. ३, १)।
 ज्सभ वि [ है ] इन्डिम, ऐंदा हुमा : ( ५१ )।
 जुलपा की [जीपमा ] हेवा - ( हन )।
 ज्सिय वि [ तुष्ट] १ मंदिर . ( हा २, १ )। २ जॉन,
  चींग : ( क्या )।
 जुद्द न [ युथ ] सन्द, बन्दा : ( डा ६० ; या १४० ।)
  'बर इं [ पिति ] समूह का अधिर्गत, पूर्व का नायक : ( से
  ६,६म: समा ५, ५: मुत १३०)।
 [ स्थिप ] इसेंबर ही अर्थ . ( का १४= )। वहिबह पु
  [ विरति ] वृथ-गयदः ( दतः ६९ )।
 ज्हिय वि [ युधिक ] एवं में इन्त्रम्न : ( प्राप्त २, २ )।
 बृहिया को [ यूचिका ] ल्टा-विगेष, इहाँ वा वेड़ ( कर
  ९ ; पडल ४३, ०१ )।
 बुही सी [ यूपी ] एक-विनेष, महरी एक ; । इसा ) ।
 वै म. १ पट-हिने में प्रयुक्त दिया कारा मन्यतः (हे १,२९०),
  ३ मरकाग्य-युवड अञ्चय : (८३) ।
बैंड दि [ बैंतु ] डोरने बाना, दिलेश , (सर २०, २ )।
 ते उपाप
          देश जिपा=ित ।
जेंड्रज
जैक्कार वृं [जयकार] 'दा दा' प्रवाद, स्तुनि ;
  " इति देशरा जिस्साम " ( मा ३३२ )।
 र्वेह देखे जिह्न=अंद्रः (हे १,९७६;स्यः;स्यः)।
बेंद्र हेगे, बिद्द = भैन ; (महा ११
जेहा देखे जिहा, (स्म = , माद < )। मृत दं [मृत]
 रेंद नगः (मीनः एवा ६, १३)। मूखे महें [मूखे]
 रेड बन की हिंसा ; (सब ६०)।
जैन म [येन] तररामुच्छ ब्राम्यः; "नामस्म वेर ब्राम्यः"
  (१२,५=३; हुङ्ग)।
 बैत देखे जस्म ; (विध्य)।
 जैनित्र) हि [यावन्] हिन्हा ; (हे २, ५४० ; मा ४५;
वैचिन्द्र) यहह )।
```

```
बैस्य ) (मा) अम देखी ; (हे ४, ४३१ )।
  जेन्द्रह)
  बैद्ह देख बैत्तिम; ( हे २, १२० ; प्राप्त ) ।
  जैम नह [जिम्, मुज्ञ] नोदन करना। देनाः; (ह ४, १९०;
   पर् )। बह--जिसेन; (परम १०३, =१ )।
 जैम ( मर ) म [यथा] देंहे, जिल तरह है ; (हुत ३=३ ;
 जैमण ) न[जैमन] जैनन, मादन; (मीर ==
 जेमणग∫ और )।
 जैमणय न [दे ] इतिया अंग , गुहरानी में 'दमपुं'; (दः
   2, = 11
 जैमावण न [ जैमन ] मीडन इंगनः, निद्यमा ; (मग १९,
 जैमाविय दि [जैमिन] में जिन, हिल्हों मोहन हराया
  गमा हो बह ; ( दा १३६ टी )।
 जैमिय वि [जैमित ] बैमा हुमा, दिलने मादन हिया है।
  वह : ( राजा १, १-- पत्र ४१ ही )।
 जैयव्य देखें जिण≕दि।
 जैव देशे एव≕ एवं ; ( रंगा : कर्म )।
 तेवं ( मा ) देनी तिये ; (हे ४, ३६० )।
 जैवड ( घर ) देनां जैस्तिय ; ( हे ४, ४०० )।
 के ब देनो एव ≕एतः (ति ; सट )।
 जैह ( सर ) दि [याहस् ] जैन; (हे दु४०२; यह )।
 बैहिल ﴿ [ बेहिल ] सनमन्दान एक बैन सुनि ; (ब्य्य)।
बो (सर्[हर्ग्]कना। बोह (स्प)। भएता ह
जोम) देखई , देता तुर मंदुर रेग्ये' (स. १, १२६) ।
 बोर्वि : (स ३६९) । वर्ष- बोडाव्यः (स्वरः
 २२)। दर-दोधंतः (पन ११ री; स्ताः
 स १०, ३८८)। बार—सोरस्वेन; (इस १०)।
बीन मर [युत्] महीत हेन, व्यक्त। देरे:
 (इन)। म्ह-वंद्यः (स्व)। यः-जोश्रंतः
 (इस (सह) ।
जीव स्ट [चीतर्] प्राप्ति करा। केमा : (सम १.
 ६, १, १३)। जिल्ली व निर्मेशन करेंगा
 र्दोर" (दा (११)। डेएस : (सि ११२)।
जोत्र नर [बोज्य] बेह्न, बृत्त बन्त । बाह्र ; (न्त्र) ।
 श—डोर्यव्य, डोर्यमय, डोर्यानय, डोर्यानक
```

४५२ पाइंशस	इमहण्यवो ।	(जे	`;
जोम वृद्धि । कर, करमा, (दे ३, ४०) । वृद्धि, युमा, (यादा १, १ २)—वह ११) । मार देखे । जोम रुगो जोगा (मार १६) = १६१, जुमा) व्यव्य वृद्धि हो वृद्धि । स्वार क्ष्यं, हामवा (म १६१) । जोमंत्रा [र्थे देखे जोशेगा (मार १६) । जोमंत्रा [र्थे देखे जोशेगा (मार १६) । जोमंत्र [र्थे देखे जोशेगा (मार १६) । जोमंत्र वृद्धि । स्वार करेंद्र पर (१६) । जोमंत्र वृद्धि । स्वार वृद्धि । स्व	े जोइम है [योजिन] जात हुए जोइम देखें जीमिय ; (सर्ज)। जोईमण दु दि] केट-विरोग, वर्ज जोइम दु दु दु दु दोनित्क] दर्श "हि सुम्य देखादिन हो 5 प्रद., पत्र भ ; वर्ष भ)। द प्रद (भाव ६६१)। जोइमी जो [योगिती] १ वंतिक प्रकार को देती, वं भीत हो ; (म जोइम व दि है] क्लीत , (दे १, जोइम व दि है] क्लीत ; (दे १, जोइम व दि है] क्लीत ; (दे १,	ता; (म २ । ता; (म १) ता; (म १)	10 1 10 10 10 10 10 10

र्गायको 🗠 (इद्योगियो | इन किन 如 机转图 行前[2][ma, for 23, 4 下 र्वित्य रल होहत्स्य । राष्ट्राच्या ३ तिस्त ६ विभीश देशक वर्गका 💎 🕏 ेर्नियर ५ [स्रोत[प्रप्रत] नाम दल (सन्तर - राज বিষয়ের বল ইয়েছার । লাড্ডেম ও विद्यारि (दि.) को प्रश्नेत्रक वर्षा क रेग पुरिन्ता है ६ दल्या हरते. तदन क्या स्वयं क कार्याद्व हा क्रिके हास के वा कर विकास भिष्ठदर्भ कर अवस्ति हान, नवार्षितः । यद्यसः ६०० व.स. १ ५० ५ है बहुत बहुते के जिलाहा नुप्रतान नाहि द्वारत के जिला देवन इत्ता मूर्नी देखेर १ ५०० वर्षात्रक राज्य विराह । इताल रूमका^{ति} हुअनु च् ७६५ । र र द्वार, रायस साम्ब ्दा १४ मा ४ है जिस्सा कुल सार्थ । हाल १ ४ म , मध्य व कारणकार्यन वस्तर । भाग वस्त । भाग, सार एक्स (कार्य) (वर्धम व (र्शम) हैं क रामुबा राज धीर एक्स सरदाय , ४ राजा ५,४ । । माहि [का] वर्तन, ध्यस्ति । । पहन ६६, ्रोत्रा क्या पुणि वे विकास सरवार का सर् पनिके कतुम्म मेज वर्ष कर्त हर भाग २० ०० दिहि र्द [दृष्टि] विकर्णनाः स अवस्थान । ना इसर्वित राष्ट्र)। धर ('धर)रम'। में दूरार, येगी पद्ध १९६, १३ । । योद्धारया मा [चीन्यादिका] मिकियान मिलासिक, र गाहा १, ६ ८३ ,['पिण्ड]कांप्रस्य की शशन स [बरा : (वंदा ६३ ; नियू ६३) । 'सुद्दा मी [सुद्रा] विश्वविद्यान-निहेद; (पश १।। यहि [यह् शुन प्रान्ति वाला (स्म ६, २, ६ । । ३ पायी, ं माप्त बाल बाला (१ इत ५५)। बाहि वि [बाहित] े मामनात्र इं प्रागान के निष्मामीन नावर्ष हा रामे ोता ; र समारि में करने बाता ; (टा ३, ९ -पत ६९०)। 'बिहि पुंग: विवि । शार्थ को मानक के जिए प्रमानिर्देश्य अनुसन्, दास्पानिकोतः, "अव बुनी जेगान ारी', ''एस जीरदिरी' (धेर) । 'सरध र [शास्त्र] र , बर्फिनोत का प्रतिताहर मामा ; (इस ६६०) । ्रम देने औरम ; " इव में स एक ओर्य, जेसे पुरा हेंज ्रपंक्रोता (प्रमा १२; सुर २, २०६ ; महः; ह्या २०५)।

होती हम होड़ - शहर (हरा)। जीतिह १ (प्रेमीन्ड) स्टब्र्डर्स, संरोक्त , (मार क्षेत्रियो का क्षेत्राचे : (गु. ३, १८६) । होतिय रि [योतिय] हा स्टों र व्याहे स्टाह्म राह्य, हेरे - हर कर है, इकिन्द्रमार्गेष्ठ (प्राप्त १, १ -प्राप्त रार १६० सम्बन्धन समें द्या हुमा (इस हु ३४) । रोक्तसर रूप क्षेत्रेसर (स.२०१)। होनेमरो मा [येनेस्वरी] श्री-भीत , (गर) । डोर्गमा कः [यमेगी] विज्ञतिहरू , (राम ४, १८१) । जीमा रि थिएय] दण्द, इनिष्, मादह , (१) ३,५ : मुग व्यः । व प्रशुलमार्गुर्गाध्याणः (सिव्यः) । क्षेयत से [हे] पा, गुरुष ; (ह ३, ४०) । जीवता मी [याप्या] १ माम का कार्यम , (ज्य ११, १९ (ह १) । १ र्यन्तराय में समर्थ में पि : (संह) । जीद गर [घोजपू] बाहरा, गदुरत रूपरा १ वह- -जीहेंन : ्या ६, ६८ / । यह -जोडिक्स , (मा) । बीट पुन [दे] १ न्एन , (हे ३, ४३ ; रि.इ.) । १ शत-दिरेश , ६ म**य** । । क्षेत्रिम पृहिते । स्मान, पंतिता ; (१ ३, ४६)। जोडिय रि थिजिन) राश हमा, गंपुस स्या हमा, (मुरा 942 : 359 +1 क्षेण हु [यान यवन] स्टेस्ट देश विषेत्र है (राजा १३)। जोर्रण मी [योनि] १ टन्यनि-स्थान : (मग ; मं ६२ ; प्राप्त १९६) । २ बाल्य, हेतु, उराय ; (डा ३, ३ , वंबा) । ३ श्री का उत्पतिन्त्यमः (दा ३) । ४ म्री-चिन्द्र, न्गः (मः)। 'विदाप न ['विवान]। हर्मात्रभाष्ट्र , (ति १९२६)। स्टिन [शुल] बेनि का एक गय : (शाया १, १६) १ जोप्पिय वि [योनिक,यवनिक] बनार्व देश-शिव में हत्तन । सी-वा : (१६ ; मीत ; राया १,१ -पत्र ३७)। ओण्यतित्रा सो [है] मन्दरिये, हमरि, बोन्हरी ; (\$ 3, \$0) [जोण्द नि [इमीन्थन] १ दुर, भेने ; "ुंद्रादी वा बाळीवा करणुनवेग वंदन्य " (सुब्द १६)। २ वुं, सुद्द पत्त ; (केंट)। जीपहा मी [इयोतम्बा] बन्द-प्रद्यन ; (पर् : बार 323)1

पार्असह्महण्यवी । [जोक्सल-•• 8.8 जोण्हारत (a [उद्योत्स्वायन] प्योत्स्वा आला, चन्द्रिया- असहुराजित्र वि [दे] विवारत, विवारण, (१ यम्त ,(हे २, १६६)। इस निन्धार्थसद्भहणपर्याम बन्धर जोत्त } न [योक्य, क] जान, रूप्यी वा नमड का न्या, शक्तवार संस्कृतम्। त्रांगो स्मन् 1 जोत्तय जियमे बैल या धोडा, वाडी या इन में जोना जाना है, (पक्र २, ४, गा ६६२)। जीव देशी जीअ = दर् । जानद् (महा, मति)। जीय १ दि] १ विन्दु, २ वि न्नार, याद्य ; (३३, 43)1 भ जोब्रण न [दे] ९ यन्त, कल, 'ब्राडञ्जोतन'' (ब्रोप म्ह पु [मह] १ तानु-व्यानीय व्यान्तत वर्ण-किंगः, (a • भा) । ३ धान्य का मार्ग, सन्त-भनन , (स्रोप ब्राप)। १ थ्यान , (बिंग ३१६≅)। ६ • भा)। म्बंकार पु[महार] नपुर वरेरः द्या मात्र र जीवारि भी [दे] अन्त-विगेष, खमारि , (दे ३,६०)। १८ वि. गय)। जोबिय वि [हुए] बिनारित, (स १४४)। भवकारिकान [दे] प्रथमपन, पूल कोर हा जीव्यण न [योचन] ९ नारुभ्य, जनाना ; (प्राप्त ; कृप्य)। (देश, १६)। ९ सन्य भागा (छ ६,१)। म्बेरर बक [सं+तप्] मना हेता, मंता हारो। जीव्यणणीर) न [दे] वयः-परिवास, स्ट्रन, वृक्षापा , (E v, 9 v .) [जोड्यणयेथ) " जोञ्यलकीर नरकनले वि विजिए दिया-म्बंस्त प्रक [चि+लप्] निलाप काना, का^{त्र} मत्त्र, (इ.४,९८=)। वर —सत्त्र, (! ग पुरिमाण " (दे ३, १९)। "धवनानामा गरिजीभूमा ऋताह नग्न ! एन दुर्ग जीव्यणिया श्री [यीयनिका] बीवन, बगनी , (सद)। नीबोवि श्वार कलिय तुमेव बहुलाहगहगहिमो ' (" जीव्यणोधय न [दै) बूरावा, बूद्रम, का , (हे ३, ४१)। भांख बढ [उपा + सम्] ज्यातम देना, उन्हान ही जोम देखा जुस = हुव । वह-ओसंत, (राज)। १यो-मह—जोसियाण , (वन ४)। (t v, 122) 1 महेल मह [निर्+श्वस] नि भाम लेना। अन जोसिम वि [सुष्ट] वेक्तिः (मूझ १, २, ३)। जीसिमा मी [योपित्] स्त्री, महिना, नारी , (वर् , धर्म v, 309) [3)1 मंख वि [दे] तुन्द, सतुन्द, सगः, (दे । भंदिका व [उपालक्य] उरावम्म, उत्तर्ग , (र -जो स्विगी देलो जोणहाः (अभि ३५-)। म्हेंबर वं [दे] गुन्ह तह, सूचा वेड , (दे रे रे जीह मरु [युध्] तहना। जीहह ; (भनि)। मंदारिश [दे] देखा मंकारिभ , (वे । १ जोह १ [योध] सुभः, बादा , (बीप , कुमा)। "हाषा ' न ['स्थान] सुनटों का युद्ध-कालीन सागेर-किन्तरम, धंय-। अंक्सायक वि [स्तंतापक] मनाप कान वन्त्री क्षित्र वि [निःश्वसितृ] निभाग मेने । रचना विगेर ; (रा १ ; निवृ २०)। जीहणा देश जीव्हा : (में ४१)। 4, 44)1 जोदि ([योधिन्] शब्ने बला, लब्दैवा,(बीप)। म्बेंग्स पु [क्यम्ड] इतह, सगडा , (गम १०)। [कर] क्लइसारी, फुट कमने वाला (हर जोहिया भी [योधिका] उन्तु-शिल, हाव में बनने वाली एक प्रयार की सर्व-जाति ; (जीव २)। 'पत्त नि ['प्राप्त] क्लेग-प्रात , (सूध १, ११ संस्था े अक[संभाषाय्] मन मन ^{गर} `क्तेव } देशंषय≕ण्य; (गि२३,≂∤)। कंशवास्त्र के भनवार , (वा ६४६ म)। में ffit) इस्ट देनी महा। अपन्ह, (हें ८, ९३० टि)। (शिंग)।

र्रमणा यो [महमाना] मन मन शब्द , (गड़र) ।

्रसेमा सी (महत्सा कि प्रचल्ड बयु-विसेष्का, । या १००, मा)। २ वस्तु वर्षमा समझ ; (टा : हा है)। ३ इसपा, काइ; ४ होच. मुन्ता; (सुम ५, १३)। ३ तुरा लेख: (गम २, २, २)। १ व्यास्तान, म्य-हरा । प्राचा है। कॅन्टिय वि [फेडिन्सन] दलीवन, मूना : (राया ६,६) । चेंद्र सह । सून । पूनना, किला । स्टब : (हे ६, १६९ । मंद्र ब्रह [शुक्रत] गुन्तास्य स्थलः । वह -महेरतर्मसन् समाउन्मातियं मानियं गरितः 🐪 सुरा ४२६) 🛚 महिष्य न [भूमण] पर्वटन परिश्रमण : (तुनः) । संद्रलिया हो [दे] चम्मा, वृद्धित गमन : (वे ३, ४४)। संदिम वि दि] जिन पर प्रहर किया गया हा वह, प्रहत . (= 3, 22 1 1 भेटी को दि] हेटा बिन्तु हीरा हम-स्टाप; (रे ३, ४३) । महिलो को दि । मनतं, हलहा : (द ३, ४४) । मंद्रम पु [है] यस-विरोध, पीलु का वेड ; (वे के, ४३)। महिली मी दि । धनां, बुनहा : २ मीहा, बेल , 3. 49 } 1 मंदिय वि [दे] प्रानु, परान्ति ; (पर्) । स्थे वह [अम्] घूनरा, दिग्ता। संग्रः (हे ६,१६९)। म्दंब एक [आ+मछाद्य्] मीना, ब्राच्छाक करा, द्या । मंदर : (विंद १) नह -संविजय, संविधि : (इस : स्वि)। म्धेपमान [भ्रमण] परित्रमा, पर्यटन , । उस्ता) । मध्यणी भी दि। पहल, मेंन के मेन्द्र (है ३, ४४; पाम) । मंपा मी [मरमा] एकम हाल, लम्मानाव, (दुरा १६८) । भवित्र वि हि । १ व्हर, इस हमा, २ पहिन, मारद ; (\$ 3, 25) 1 म्बरिय वि विभावद्यादित । स्माहमा, यह दिया हमा : (विरा) । 'रहेबको महिको मिन '(सहा), ''तको एवं नगा-मण्डकार्याय स्वीमं मुख्या सुमान्य गाउँगाँ (मर्थावर) स्विकास म [दे] बरमीय, लोकनिन्दा; (वे ३,४) मीब): जन दर्भ मंम=रि+टर्। यर-नरवेन ; (जर १३)। मगड ५ हि | स्मार्ग, रुटर ; (स्ता ४४६ ; ४८०)। स्प्युकी सं[दे] प्रतिनरिष्ट , (तिर १०१)। महत्त्वा पु [मर्म्हर | १ वाद-किंद, लीन : २ पर, होत: ६ ब्रोट-दुर्ग, ८ स्ट-विदेश, (वि ३६८)।

महत्त्वस्थि वि | मर्मारित | वाय-विगेष के गळ में यून्त ; (2190): महत्त्वरी भी [दे] दुले के स्पर्न की गेरने क तिए यांत्रत-लोक को लक्की बाले पस रहते हैं बहु ; (दे ३, १४)। मह बह शिह् । नहना, पेर पत बादि का गिना, टबस्ता । १ होन होता । ३ एठ मपट मारना, गिराना । मद्र ; (हे ८, ९३०)। वह-मद्रिन : (रुमा)। क्यक - "वाक्षमु सीयवार्ग्स महित्रवंग" (मार 1)। मेह---"म्हाडिकण बन्हिबन्हा, पुरांबि जायीत तरवरा तुरियं। र्धागर्स्त परास्त्रि, गगदि न हु दुन्दहा एवं (दर ७२= दी)। म्डलि म [महिति] ग्रंब, बन्दां, तुरंत ; (टर ४६० र्टा ; मरा) । म्ब्डस्प व [दे] श्रीक्षता, बन्दी ; (टर प्ट ११० ; रॅमा) । **म्दडप्र** सक [आ ÷ छिन्] मधरना, भारद गारना, छीतना । महत्रमि : (भवि)। यंह-महाध्यियः ; (भवि)। महापाड व है | महारा, महिति, गीव ; (है ४, ३५०)। मडिपिश वि बाब्छिन | हांना हुमा ; (मर्च) । मिडि म मिटिति] गांव, बन्दी, तुरन्त ; "मरि मारन्त-बह पुर्नेष (या ६१३)। भ्रांडिय वि [दे] १ मिर्वित, दीता, मुन्त ; (ना १३०) । २ थान्त, नित्र ; (पट्) (३ म्हा हुमा, गिग, हुमा, "इम्च्डराम्ब्रियर्वश्यक्षेत्रक्षे" (परम ६६, ११)। 📑 महित्ति देशो महिता (सुर २, ८)। म्हिल देखे उड़िल : (हे १, १६८)। स्टडीको [दे] नियम वृद्धिः गुवसरी में 'मडी: (१ ३,k३)। मध्य मह [तुगुष्म्] वृगा करा । मगद्र : (वर्)। क्यत्क्या वह [क्यक्याय्] 'मन मन' प्रसाह कर । वह—कपत्रसमेत ; (प्रार) । मराज्यपित्र वि [मरामधीत] मन मन प्रपात देशाः । विनि)। स्यानय देवो स्पानस्य । स्यानग्रः : (राजा ६६) । स्टास्याख वं [स्टान्ट्याग्य] 'नन नन' हाराज : (=5)1 मजस्पिय हेर्यः मजनस्पित्र ; (मृत १०)। म्ह्यि देने अपि ; (रोग)। मनि केरे महत्ति, (हे १,८२ : पर् ; मा : ल १, ६) । मत्य हि [है] गा, गा हम (२ मा) (४ २, ६१)।

```
पाइअसइमहण्यवा ।
                                                                                         Norm .
   म्बिम नि [ दे ] पर्शल, उन्तिम ; ( पर् )।
                                                       म्हस पुं[महप] १ सन्स्थ, मळती; (पद्द १, १)!
   मध्य देशो मध्य । सत्यह, (पर्)।
                                                        °विंघय पु [ °विहरा ] कामदेत, सगः (स्यो।
   भमाल न [दे] इन्द्रवाल, माय-जान, (दे ३,६३ ) ।
                                                      महस्त पु [दे] १ मयश, मपरीनि ; १ तर, दितग ; ।
   भाग पुनी [ध्यत ] स्थाना, क्लाना, (हे २,२७;
                                                        नदस्य, सन्यस्य ; ४ दीर्च-गभीर, लम्बा और गर्भः र
    में । स्थि—थाः (मों।)।
                                                        रे, ६० ) । १ टॅक से दिन ; ( दे ३, ६० ; '
  बर प्रद्र [ १२९ ] मण्ना, टएउना, चूना, गिरना । मारङ् , (ह
                                                      कमय पु क्रियक |होटा मन्य : (दे १, ११
   भ, १०१)। यह—सदंत ; (उसा ; सुर ३, १० )।
                                                      भ्रत्मर पुन [दे] सम्ब दियेर, भागुर विशेष, "स
  मार्गङ [स्मृ] बाह बस्ता । मन्दः (हि.४, ७४; वर्)।
                                                       सन्धन-" ( पत्रम न, ६१ ) ।
   १-मरेयाय ; (बूर १)।
 मरंबः ) वं [रे ] तून का बनावा हुमा पुरन, बनवा ; ( द
                                                      क्यांसिअ हि [दे] १ पर्यन्त, डन्किंग; २ ब्राह्प्ट
                                                       भारोस किया गया हो वह ; ( द २, ६२)।
  भारत है १, ११ है।
                                                      न्दिनंध ९ [ भ्रद्यचिह्न ] वाम, सम ; ( दुमा )।
 करत वि[स्मारक] विल्का करने काना, ध्यान करने वाला;
                                                     भस्पर न [ दे ] १ ताम्बूत, पान ; ( दे ३, (१)
   " अलगं वरतं क्रमां कर का मान हं ।समुवान" ( तें हूं ) ।
                                                       र मां : (दे १, ६१ )।
 मरभार पु[भारभार ] निर्मश माहि वा " सर सर' बाहात;
   ( 27 1, 30 ) [
                                                     भा सह (ध्यी) विस्ता धरता, ध्यान शता।
 बरपा व [ शरणा ] मन्त्रा, टाइना, प्रश्न , (गा १) ।
                                                      माध्य , (इ ४,६)। यह-मायंत, मा
 भागा हो [शाया ] उत्र देनां , (माम) ।
                                                      (प्रान, सहा)। संह---भाउत्यो, (प्रागी
 मान्य १ [ दे ] लालीतान, ( च ३, ६४ ) ।
                                                      हेरु--भाइलए ; ( बग ) । ह--भाषान, है।
 महित्य 'त [शारित ] दण्या हुया, निग्न हुमा, पर्म १ ( उर ,
                                                      यन्त्र, भारत्यव्यः , ( तुसाः ; झारा ५= । झा
   V + +(+ ) |
                                                      10; 17 14, 50) 1
 बरभ ११दे ] सगह, सन्दर ह (१३, १४) ह
                                                    म्बाइ वि [ध्यायित्] विस्तत काने गरा, ध
 बारिक्य । [दा व] क्या हुमा, कमंभूत , "व्यापुरपुर-
                                                      वाता , ( आचा ) (
  सिर्वाचनकार विकास कियों (स्ताहर के हैं है।
                                                    म्बाउ वि [ध्यान्] ध्यान वरने बाला, विलय् ,(ब
  160 }1
                                                    म्बाउन [हे स्वार] १ लगानान, निहन्य, मर्गे
भ १०१४ हर (हाएकर) म गढ़ता, कारता, रोगतः | वहुनन
                                                      <sup>हे, ६३</sup> : ०, ≂८, वाझ,सुर ०, ६८३)। <sup>१</sup>
  मारवार्त्तम् , (भ<sup>र</sup>ह) ह
                                                     वर , "बाब-लो माइनेब्रस्मि" (११,११),
बदबटिया हा [त] मनो, बपते, वैना , (ह ३,६६)।
                                                     नरः पानाद्रश्रभादकम इस्टिस पर्व विकासी प्राप्त
सरन्दरेश सहस्रह। सन्तर्मः (मृत्यूदर्)।
                                                     200)1
 <del>१</del>७ -व्यादण्यंत्र, (ध* ००) ।
                                                    महिदान [महादन ] १ मान, त्तर, संगता, १ हो
बराबा [ते] मार्टा, पूर्व तर इत. वार्टाना .
                                                     भग्दना , ( गत्र )।
 ( 2 3, 23 , 74 ) :
                                                   म्बाह्य व [ दे ] क्यंत क्षत्र, क्यंत्र , ( व ३,११)।
बर्डिय । ५ हि ] स्था, अभा हुमा । हा ११०),
                                                   म्बाङ्कावण अन्न [म्बाइन ] अध्याना, गरा काना,
दर्गमः ।
म्बारतः हः[मानद्रति] इत्रहाराः वाह्यवित्यः सान्त्रः
                                                    शानामः यो, नुस्रका)।
 (इ.९ क्षेत्र सुरक्ष सुरक्ष का व
                                                   न्द्राण कुत (च्यान) १ विस्ता, रिका, ३४६<sup>३</sup>
बाउक रहत्र (दि) भाग, चीर में सर्ह , बीरा
                                                    व्याम नाव : मार र हर १, हर, स
बन्नरा व [ इस्ता ] १ जर दिन्ह । देव १६०३,
                                                    गर हा बान्यु में सन का विवास भी सराजा, (S
 । क्षाच्छा, राज , । विस्तुतः ।
                                                    ो । । इसन माँद की चन्द्र का निराण । ही <sup>हर</sup>
                                                   बळवको इटकार (दिन ३००१, हर्स
```

राणंतरिया यां [ध्यानास्तरिका] १ ट प्याने स मध्य मण, यह नमा हिन्में प्रथम ध्यान के पनाणि हुई ही मार इतेर या प्राप्ता उपत्र न किया गया है। बीर अस्य मनेद्र व्यम कारे व दाका हो । हा ६ , सा ६ ४)। द एक प्यान एन्या होने पर रोप प्यानी में दिले एक की प्रथम प्रारंभ करने का दिनमें ; र हुई १ रे । शाणि वि [ध्यानिन्] ब्यान रुग्ने बालो . (झाग 🖘) । सम स्ट [इह] जनाना, टाइ देना, राय सम्बा । सामङ . (सम २, २,४४ । बहु-भामंत ; (सम २.२. ४८) । प्रयोक्त सामावेद (सुम २, २, ४४ । । साम दि [है] इत्थ, जता हुआ 🗟 आचा २०५० 🕫 "यंडिल न ["स्थण्डिल] गय सूनि , (मान' २,९५५) I राम वि [ध्राम] ब्रह्मान्त , पर १,२—व्य ८०)। कामण न[हें] बदाना क्राम तकन प्रदेतन्ह, । वर २)। कामर वि [हे] इड, ब्टा 🐧 ह ३,३१ । । सामस न[दे] १ औव दा एठ प्रदार स रोग, गुडरती में 'निमो''। २ दि स्टमार शेग बाहा; (दर श्र∓ दी . आ १२ । । म्यमिश्र वि[दे] इन्द, प्रवन्ति ; (दे ३,३६ ; वर ा : मान्स) । २ न्यामितः, राता क्षिम हुमा, ३ व्टर्ड्ङ-्ते ; 'घरडट्टवर्गगापि और अन्यमिम नेष" (मार्थ१६)। न्धाय वि [धमात] मन्द्रां हुत, इत्य , ६ गाँड)। मायस्य देखे म्हा । बारमा मी [हे] बीरी, हुए जन्तु-विरुष ; (व ३,६७ h न्यवप न [ध्यापन] वर्तः म्हामणः (गव) । मायणा न [धनापना] दार, जनाता , मन्ति-एत्हार : (= 77) 1 स्थियण व [दे] हुन्ता काना ; (३३.५ ६३ दी) । भिक्षिय म [है] दर्बाय, लोगमाट, लोक्सिन्स : (है है, 48)1 मिर्दित १ है दि दि इंड इंडिकीय, बेन्दिय अप की विक्तित्व । एवज्ञते : हेन १।। निरंतिष्य है [दे] दुर्जुल्ड, मूरा; (हुट ६) । निक्तिया १ मी (ह) एक प्रशन का पढ़, लक्षानिक (इर चिम्लि र्रे १०६६ हो ; इस्य २, ६, ८, ८, ८, ८, १। मिक्तत (ति [सीयमाण] के क्य के प्रशासित निरंतनाय रेंगे, रह देता हम : वि ४,६५ स. ११८ टी : रमा रे ।

फिल्म डेन्ने कीण ; (से १,३४ ; कुसा)। मिसिय । स 🐧 स्वीत के स्वतीं की जड़ता; (माना)। क्तिमय । न्दिया दनो महा। भिन्नह, मिनावह ; (ट्वा ; मा; दरा ; रि १७६)। व्ह-स्यायमाण : (गाना ३,१--पत्र २८ : 1 (03 क्टिरिंड न [दें] वॉर्स कुर, पुरता इतरा ; (दे ३, ४०)। फिलिश हि [दे] मंत्रा हुमा, पर्सा हुई वह बस्तु जो करा म निर्म्ता हा; (हुन १७=) । क्टिल्ल प्रद [स्ना] मॉलना, स्नान करना । किन्लुइ ; मिलिस्सा सी [मिलिस्सा] चीट-विग्रेप, नीन्दिप जीव की एड जाति ; (पात्र ; पन्य)। न्हिस्टिरिआ मा दि । १ चीहीनामक हरा : २ मगह, मध्यहः (वे ३, १२)। म्बिल्टिमी सी [दे] सळडी पहरूने की एक उपह की बात ; (विश १, ८--पत्र ८४)। निब्लो मी [दे] टहरी, वर्ग ; (गडड) । ब्हिली मी [म्बिल्डी] १ क्वलिविक्या; (पहा १ ; स्व १०३९ हो)। २ इंद्र-विगेर : (मा ५६४)। भीष वि [क्षीष] दुर्वेत, हम : (दे २, ३ ; पाम)। मदीमान दि] १ मंग, सर्गत ; २ कॉट, कॉड़ा ; (दे ३, 22 1 1 म्हीरा हो [दे] दश्या, गम ; (हे ३,४७) । म्हेल हैं हैं। दुराय-नामर बाय : (वे ३, ४८)। र्म्होक्तिय वि [दि] १ हर्होबर, सूर्यः ; (सर १, ३—वद ४६)। २ स्या हुमा, झुमा हुमा; (मा १६, ४)। म्बुर्मस्य व हि] स्व पा छाः : (दे ३, ६≕)। महिषा म [है] १ प्रश्त , (६३,३८)। २ प्रयु-विगेष, े जो सहस्र के सरीर की रामी से जीता है और जिसरा सेस बार्ड के लिये करन्य है : (इस १३१)। म्बंदडा मी [दे] मंतरा, हा-बुरंप, हा-निर्मंत घर (है C. est; es= 11 म्बिएस न [दे] प्रान्म : (गास ६, ६) । हुउच देने जुड़च = दुर्। मुज्द ; (ति २१४)। रह— झुल्बंस ; (हे ४, १०६)। हरू वि [दे] सुद, मर्जय, मान्य ; (दे ३, ३०)।

पर १३ १६ ४ व ता सारत बा ब्राय, होती तता । रे, ११ : इत्यु १०४ - ४ क्विमान लिए का बाब को रोड , १ विस् ११ र चंत्रवींबीड *१ सं*ब ५ कि ६ [है] ९ तराय, सर्ग १ सार, सुद्र हवा लगा. र्ग, ६ रहरू हो । ४ जिले, बीट ६ रह, देवक दिन्द । इसिन्ड वृत्तप दिन्द स्थापन भीर जिल्हा तहा हुमा, बाद हुमा 💎 व रहार किया पुरिच्चत है देशर का एक क्लीर । रोबल ६४४४ है। वियमपुर्व ५ हिं चन्छ-चित्रण ग्रह झाँग है। नामका (≥= 3 ± र्वेश सी[है] र जर, जीर र राष्ट्र र असमा स्वत्रकर्तः (कंटक) र्देशा पृ[स्ट्रात] पट्याण गण्या । स्थि । र्देशर ६ [हे] मालगु, तल (राउट १ । र्रेकिम रि [है] बनुर, वैका हमा (इ.स. ५) । देवित्र वि [द्राहित्र] होग संस्टा हुमा । वि ८, ६०। । देशय हि [है] हर सरा, हर, हरते । (ह ८, ३)। देवक पु [देवक] का निर्मेश (हे ६, ६८३ । । द्ववरपुद्धि । ध्वर प्रतिवे प्रति प्राप्त । सु १९. द्वसार सी [दे] प्राणितल का वल 👝 वे ६, २) । रगा ६ [तगा] १ तक किए, तम छ दूत , १ स्ता-ंशियत बाग्य-विहोप 📑 हे ६, ५७४ ; हमा 🕬 ब्हाया मी [है] दर्शन्य, पर्ग , (हे ४, ५) । द्भाग मि [दें] विद्याद दर्भ बता, मर्थ्य इत इता ; (डे ४, ३, हा ४३०; हम्)। दमर हुँ [दे] बेठ-घर, शत-महुः (दे ४ ५) ; द्या हेर्छ द्यार : (इस) । रेक्टर पर [रक्टराय] उत्तर प्रवार रक्ता। वह — इस्टब्बेन ; (प्राप् १६३)। रन्द्रनिय व [रन्द्रनित] धन स्त्र' प्रवास वान्ः (स t == 2; } i दसर न [है] स्मित्र, मेहन ; (वे ६ ५)। दसा है [ब्रमर] रहा, एवं प्रदेश के सूत ; (हे १, २०३ ; इसा) (दमगेष्ट र [दे] हेल, प्रत्यः (हे ४,६)।

बार्ड[दे] मल मध्यां मेहा (दे ५२)।

िस्मीरिया विससुस्य, सार्य हास्य हास्य पिका १४)। १ स वह पहा , (सा १३३ । । रामन[दे] रामना, गुर्मे रामन्ते राज्या है राज्ये हो माराज राजा कल (इस् ५) ह दि । हि] श देवा. (मी)। माना मी दिया । [बाला] दमलन, दमा तेलंड ना मा ; 57 62 \$ 11 रियम । स्टि हि स्टिन्स हें स्टब्स् (हे ४ दिवरम् । ३: इर १०३१ डी , राम्) । र्टियरमा सी [है] इस हेगी : (ति ५९८)। दिकास [है] ९ होता, लिएड , १ लिए का स्ट्राह, सन्दर्भ स्थान जन सुद्धाः : (हे ४, ३)। टिविकड् : गो) वि[है] विक्यीन्दितः (इस्)। क्रिका वि[दे] मानि हुन, हुन हर है रहा है। विदिन ३ [विदिन] १ वीज विदेश । १ वर्णकानु किंद , (सु १०, १मर) । मी— भी ; (सा १,३)। टिट्टियाच नम [दे] बलने की देगरा करता, 'दिदि' झाराब रमं के विकास । विकास (राम ६ ३)। नार-दिवियाचेज्जमाण ; र नाव १,३-पर ६४) । दिव्यनय २ [दिव्यनक] सिरम, ईसी श्रीहा, (मुर ३३ हो। दियों मी [दें] तिहा, रोग ; (दे ४, ३)। दिरिदिन्त वह [मृम्] पून्ता, दिला, जाता । दिर्गिट-ल्यः (हे ८, १६९)। २५ - टिगिटिन्हेनः (हुनः)। दिविदिक्क २६ [मण्डय] मन्ति कनः, पेन्सि कनः। विधित्तक ; (१ ८ ११४; रमा)। वह-दिविद्वि-वर्शन ; (द्वर २०) । दिविदिक्तिम नि [मण्डित] निर्देश, मर्डहत ; (राम) । र्देद हि [दे] जिल्हल, लिस्स हर इस हुमाहा हर ; (हेर,३; ब्रह्भर, ५८३)। हुँदुरम मह[दुरहुवाय] 'हर दृह' महाब हरहा। यह---र्देदुरणेन ; (ग. १८४ ; स्ट्रास्ट्रेस्)। हुँक्य हुँदि। मारणस्थिक ग्रह्मार्वामे हुँक है (स्वरहत् है)। द्धमः [बुद्] हन, स्टबना हाः ; (तिः)। रह-दृष्ट्व ; (वे ६, ६३) । ह्वर है[तृबर] १ विक्ये कही मूँ वन को है। देश बनावी: र दिल्ले बड़ी सूँठ बहर ही हैं ऐसा प्रतिहर ; (है ६ रेन्द्र : कुस्ते । देंदा मी [दे] दमयम, हम रेज़ने का महा ; (रे४,३)।

F. 0 पाइश्रसदमहण्यवो । Ter-टेक्कर न [दे]स्थर, प्रदम ; (टं ४,३)। टड्ड वि [स्त्रान्थ] हरकात्रस्य, कृष्टित, जाः (१) न [दे] दाय नापने का वग्तन , (दे ४,४) l ३६, बना ६२)। दोरकणमंद्र है उत्प वि [स्थाप्त] स्थापनीय, स्थाप नगरे M टोपिमा मी [दे] दाक्षे, निर पर रचने का निवा हुआ एक (अंग्र६)। प्रशासी वस , (सुता २६३)। ठय मह [स्वमं] बन्द काना, गकता । हाति (र te राण १ वि वि थिने स्थित (स ४६१)। दोष्पर पुन [दे] निरंच व-तिनेत्र, दला , (शिन) । टयण [स्थमन] १ हहात, महहात । १ ति रेडोरा मो-- 'णो ; (ता हर्द)। दोल ५ [दे] १ गत्रभ, अन्तु-विरोध , १ शिराव , (ह ४, ४, प्रमु १६१) १ "बाइ सो ["गति] गुर-बन्दत का डरिंग वि [दे] १ बीर्गवन, १ अर्थ-िया, (१४,) ण्डदंग, (पार)। गिर्दि [क्रिनि] प्रमूल डलिय विदि नामा, सून्य, विश्व दिशा गरा, (१०१ माधर बन्ता , (शक) । ठज्य वि [है] निरंत, धन-रहिन, वरित्र ; (ह न, र) दोल्य वं [दे] मर्फ, क्ल लिय, मरुका वा पड , (दंर, र)। ठव नक [स्थापय] स्नापन करना । उस, देस , क्य , महा) । उन , (भग) । नह-उगर ,(इम निरिपाद्मद्महण्णयक्ति उपागङ्ग्ह्न रुवती ६३)। यह—डविड', डविड्रव, डियेना, ही घरण्डमा गरंगो सम्भा। डवेला, (वि १७६, १८६, १८९, प्रानु १४,विश ठवण न [स्थापन] स्थापन, मंस्थापन , (वृग १, १ ठवणा सी [स्थापना] १ प्रतिहृति, निष्र, मूर्प मा (स २, ४, १०; मणु) । २ ह्यापन, हरण , (१ ' १) । ३ नाडेनिड बस्तु, सुरूप बस्तु क सनार म न्यिन में जिया किया चीज में दाश मंदर दिया मा ट बन्तु, (बिसे २६२७) । ४ जैन सार्मा का निर् ह पृ[ह] मूर्व स्थानीय व्यवस्थन कर्ण-तियेत । (बासा , बाप)। , एक दाय, गाउँ का निका स दने के निर्देशों हैं है द्रभी। [रे] १ डिलान, उत्तर वेंदा हुमा : २ पू घरध्य , (य ३, ४—१२ १६६) । ६ मनुण, गमी । (व⁶ (2 4, 4 }1 दे वर्षणा, बाद हिनों का जैन पर्र-विगेर , (निर् 1) द्रम्म हि [क्यूनिन] १ सन्दर्शन, दश्र हुमा, २ बन्द कुल प्र [कुछ] भिता क निर प्रतिह हरें,। हिरा बुमा, दश बुमा , (ग १ १३) । ४)। 'वाय पु ['नय] स्वापना दा हा प्रथम र द्राम देशो द्विभ , (दिन)। वाजा मा : (राज) : 'वृदिन व ['वृद्दा] हैं। हाहित्स हेक्षे चीहित्स ; (उन)। वृशंगास्त्रि (हा ३, १ ; सूत्र १, ८,१)। वि हम देश पंतजन्यतः स्मेन्द्रशास्त्रः, (ह ०,६)। प [चार्थ] जित दस्तु में बावर्ष हा नहीं है र्दम हेन्से पीमाञ्चास् , (हे २, ६ , १२)। आव वह कन्त्रु, (यम् १)। सस्य न [भन 29r) 3 [218r] 1 29r, erfit, ergen, (4 र्वणमा-विश्वध संब, जैने जिन भगान् डा सूर्ति के दक्का } १८८, मह १९२, मह ६८ /। र हत्य क्टना दह व्यक्ता-गय है , (हा १० , पण ११)। कीर का स्वास, बायक, मृतिया , (बायस)। टेक्की की [स्वायनी] स्थान, स्थान हा स हम हर है दग ९ [टक] ल, पूर्व, वल्बह, (डेव, ३०, ३०, वला) । (था १८) । मोम वृ [मोच] ना शे मार्ने द्रशिव नि [रे] रोन्स्न, अर हुया, विदर्शन्ते , (नृहक्ता क्रि)। का क्याच्या , व दहेषु निकाश, टार्गमण, मार्गमण द्रोतिय क्षेत्र द्राप्त झर्नार , (द्रा कृ ३००)। (35 36) 1 द्याप पू [दे] सन् धानन बाँग चानू के वर्गन काफा टरिय हि [स्याधित] स्मा हुम, मन्त्रांत X'W and to (12) ! \$5 5 , 2 2, 2) 1

ी, १४ ; सुरा ३०६ , सुर २, ३३ छ। छाइ (र[सम्मायित] राजे दाला, विस्त दाले बाला (स्मीर ,

₹73.) i

द्यापयस्य हेनी द्या ।

टाएप ध्य देव टाय ।

टाप ६ [है] मान, गर्व, मितवात , (व र, ६) । टाप एत [स्थात] ९ तिवित, मरत्यात, गरि को निश्ति , (सम ५, ६, ९, ५५ ९) । १ त्यावन्याति , (सम्म १) । १ तिश्त, रहता , (गृम ९, ९९ ; तिबू ९) । ४ कारम्, तिसित, हेतु , । सम ९, ९, २ ; ८ १, ४) । ४ पर्यट्य मारि मानत , (गाय) । ६ प्रशार, भेर ; (स ९० ; माय ४) । ७ वर, जरह ; (टा ९०) । मासुस्

पर्यान सर्मा, ग्राह्म १, १, १ माह १) । १ माह्य माह्य माह्य स्वार, सहाप्त, पर १, १८ १, १० १० तृरीय जैन सह्य-१ माह्य १ द्वारीय भूत १ द्वार १) । १९ विद्यान भूत्व स्वामान्यस्त, परिच्छेर १ (द्वार १३ १३ १४ १४) । १९२ सामीन्यर्ग १ (स्वार १८) । १ स्वारित स्वार १ (१४) ।

ीरय रि ['निम] हासीन्तर्ग कमे वाटा ; (फीर)। "रियंत्र व ['पन] क्रेंडा म्यान ; (हुद १)। काणि वि [स्थानिम्] स्थान बाटा, म्यान-पुक्त ; (वृम ९, २; स्य)।

'टाणिडज देखी टा ।

द्याणिक्स वि [दे] ५ वीर्गवतः, सम्मानितः, (दे ४, ६)। ९ न, वीरवः, (पण्)।

टाणुक्कडिय) वि िस्पानीत्कटुकः] १ टब्बुक मास्त टाणुक्कुड्य अंबला; (फट २, १; नग)। २ न. मास्त-स्मिर : (कट) ।

टाणु टेले: ब्वाणु । ब्वंड म [ब्वण्ड] १ स्थातु वा प्रस्त्व. १ वि स्वातु को तरह जैवा भीर निश वहा हुमा, ल्वन्तित समेर बच्चा ; (सारा १, १---पत्र १६)।

ठाम । (च्या) देखे ठाण ; (चिमा ; स्ता) (ठाण)

टाय स्म [स्यापि] स्थान करम, रुस्त । होत्र, होत्र, (दि ६४३ : क्य. सह.)। दह—टायेन, टायेना : (का १०, स्मा मन्द्री) संह - टायाना, टायेना : (का सह) (ह --डेप्पर्य : (सु. १४४)।

हाराज न [स्थारन] स्थापन, धरम, (पंचा ११)।

ठायणया / हेर्ने; ठवणा . (इर १८६ हो; छ १ ; दूर ४)। ठावणा 🜖

ठाध्य वि [स्वायक] स्थापन काने नाताः (गाया ९, ९स: ्सुरा २३ व १६

टावर वि [स्थायर] रहने राजा, स्वासी : (अरतु १३) । टाविस वि [स्थायित] स्यापित, स्या हुमा ; (ट. ३, १ ; - था १२: मता । ।

टाचिनु रि[म्यापित्] अस देवी; (स. १,९)। टिश्रम न दि | कर्च, कॅचा; (दे ५,९)।

टिर माँ [स्थिति] १ ध्रतस्या, ध्रम, मर्दाहा, नियम : " बर्बाई एक " (हा ८, ५ : टर ५६= हो) । २ स्थर्त. महत्त्वान : (सन १) । ३ महत्वा, द्वा : (जी ४८) । < बायु, टब, बार्च-मर्यादा : (मग १४, k : तर ३१: पता ४: भीत)। 'सन्तय पुं ['स्तय] मायु देः क्षय, मारा : (निरा २, १)। 'पहिषा देखे 'चडिया: (राम)। 'बंध पुं ['बन्ब] कर्म-बन्द को बात-सर्देश ; (कम ४, =१)। 'चडिया मी ['पनिता] प्रव-यन्म-मंत्रम्यो उन्छन्तिमः ; (दाया १, १)। डिक्क व [दे] पुरस्तिह ; (दे ४,१६) । 💯 🍱 डिक्करिमा को हि] डिहर्ग, यहा का दृहता ; (धा १४)। डिय वि [स्थित] १ महस्यतः (हा २,४) है । ब्दबस्थित, निविधित ; (सूम.१,६)। ३ सहा : (संग ६,३३)। ४ निक्का, बैध हुमा ; (निवृ १ ; प्राप्त ; दुमा)। डिर देखी थिए; (मञ्जू १; गा १३१ म.)। डिविम न [दै] १ कर्म, क्रैना: २ निस्ट, नमीत ; ३ हिनस, हिचडी ; (दे ४,६)। डिव्य मह [वि+धुरू] मेहना । वह--डिव्यिक्रण : (संस 95) 1

ठीण दि [सन्यान] १ उसा हुमा (१० मारि) है (१२ना)। २ धनिन्दाक, माताज धने नाला (३ न जनाव) ४ मानस्य (४ प्रतिजनि (३ १, ४४,३३)।

```
ठंड पुन दि दिंग, समग्र . (वं १)।
ठेर पुंसी [स्थिविर] इद, वृश ; (मा 🕮 म , वि९६६),
  "परस्तुवाको गामो, महमानो आमध पर्द देगे ।
  जुरवपुरा साद्दोचा, मन्दि मा होउ हिं मन्द्र ?" (वा १६७ )।
  भी-°री : (या ६४४ म )।
ठोड वं दि ] १ जांतियाँ, दैवन , २ पुगेहिन, (सुग्र ६६२) ।
       इम निरिपाद्असहमहण्णविम्न ट्याराइनह-
          र्शंक्तचा एगुपर्वामदमा तर्रयो समना ।
 ह ई [ ह ] मूर्व-स्थानीय व्यव्जन वर्ग-विशेष : ( प्रास्त :
   प्राप )।
 डमोयर न [दकोदर] पर का रोग निमेश, जर्महर, (निष् १)।
 डंक पु दि ] १ टंक, वृश्चिक मादि का काँटा , (पक्ट १,१) ।
   २ देश-स्थान, जहाँ पर दृश्चिक आदि इमाही : " बहु सक्व-
   मरीग्यश्विमं निर्देशिन् इडमाविति " (श्वरा ६०६)।
  दंगा सी [दे] शॅन, लाटी, याँट : ( सुना १३८ , ३६८,
   £44')
  कंड देवी वृंड ; (हे १, १२०), मान्र )।
  डंड न [दे] बस के मीए हुए दुहडे ; (दे ४,७)।
  खंडय दं [ दें ] स्थ्या, महत्ता ; ( दे ४, ८ )।
  इंडारण्या न [ इण्डारण्य ] दक्षिय हो एक प्रनिद्ध जंगल,
   द्रशाहारवद । ( पाम ६८, ४३ )।
  इंडि की दि ] साए हुए स्क्र-सवड ; (हे ४,७ , वस
  इंडी रे १,३)।
  इंबर वं [र] यम, गरमो, श्रम्बर ; ( है ४, ६)।
  इंदर पु [इस्पर] माझका, भारत : (उप १ वर टो: विम)।
  र्धम देखे देम ; (हे १, २१०)।
   डंभण न [ द्रमन ] दार्गन का राम-विगेत; (विशा १, ६):
   इभिणया ) सी [दस्मवा] १ दायता । २ माना, इन्छ,
   इंग्रणा दिन्स, बन्क्स ; ( तप प्र ३११ , वक्ष २,१ )।
   इंग्लिम वृं[दे] जमारी, जुल का लेनाडी ; (दे ४,६३)।
```

इंनिम रि [दास्तिक] बन्दर, मायात्रो, रुपरी ; (कुमा ,

۹₹)1

डक्क सीन [डक्क] बाप-विगेर ; (सुग धरे)। ह्रमण न [है] शत-तिगेष ; (रात्र) ! इरामग बर [रे] बनिन होता, हिनना, हीपना। एकी (Ma) 1 डयल न [दे] ६ वज बा इहरा । (निर् ११)। १५ पात्राच वर्गेरः का दुक्ता , (झोष ३१६ ; धन मा)। ख्याल वु [दे] वा के कार का भूमे-वव ; (दे ४,०) देशो इह । इउम्बंद हरकमाण डह देखे डक्क≔हर , (हे १, १९०)। डड्ड वि [द्रश्य] प्रमतिन, जना हुमा . (हे १.१1 या १४६)। डङ्काडो को [दे] दर-मार्ग आग का शस्ता ; (रेश् दण्क व [दे] बेल्ल, इन्न, बायुर-विगेर , (दे ४, ०) डच्म इं[दर्भ] शम, करा, तृब विरोप ; (हे 1, 11") दमदम मह [इमडमाय्] 'रम उम' प्रावात कर्न' क मारि का माताज होना। वह---इसडमंत, (शा १६१) डमडमिय वि [डमडमापित] विवने 'इम हन ही क्षिया हो वह , (मुग्न १६९ , २२८)। डमर वृत [इतर] १ एन्ट्र का मीतरी वा क्य लिंग बाहरो या मोत्ररी उपारव , (साया १, १ , सं १ ; रा भीप) । १ कत्रह, खराई, हिन्ह । (पवह १,१) है दार डमस्य) पुन [डमहरू] नायनियेन, समितिहरी डमरुग) क बजाने का बाजा , (दे र, प्रारं २३ : जुला ३०६ : ९३) । द्वर मह [त्रमु] इरवा, भय-भीत हता । इरह. (ह 1,515 डर 9 [दर] हर, मय, मोति ; (ह १, २१४, वर) डरिम वि [महर] भव-मोर, हम हुमा , (१४) (११; मण)। इल ५ [दे] लोट, इंला ; (दे ४, ७) । डब्ल मह [या] क्षेत्रा ेशला ; (हे ४,१०)।

इंस्स मध [द्रेश] इनना, बाटना । ईनई, ईनर, (प्)

डेस पुं[द्रा] चुद बन्दु शिष, ग्रॅंग ; (बी १२)। डेस्क दि [द्रुट] बगा हुमा, बीत में क्या हुम ;(१६

इक्क वि [दे] इन्द गृहोत्, दाँव में उपन : (देगा)।

२: गा १३१)।

```
( यह ) ।
ं द्वाय पु हि दे विमाहत्य, बार्या हाव , गुलावी में 'हाम' .
   (846)1
 इस देनो इस । राष्ट्र (हे १, १९८ , वि ११०)।
   रेह--इसिड , (सुर १, १८३) ।
 इसमान [द्रात] १ दश, दोत म कटना , (हे १,
   २९०)। २ वीत , (इसा)।
 इस्तिय वि [ दृष्ट ] इसा हुमा, कथा हुमा , ( मुस ४४६ ,
   ET E. 9=1 ) 1
 दद गरु [ दह ] जनाता, राघ काता । अन्द्र, उद्देग , । हे
   ी, २९८ ; पष्ट्र, महा , हव ) । भवि । हरिहेंद्र , १ हे द्र
   १४६)। काह--- प्रत्येत, जन्ममाण, (तन १३०;
   दाष्ट्र ३३ : गुरा 🖙 ) । हेह — इहिन्ने , ( पडन ३१,
   ১৬)।হে— জন্ম , ( हा ३, २ , ६२ १० )।
   'हण न [ इहन ] १ जलाना, भएन वरना ; ( बुर १ )।
   २ पुक्रानि, बहि, (दुमा)। ३ दि, जलाने वाला;
   "तला स्टास्टरहरा भागा जलगा प्रतासह" (भागा मह )।
   हर पुंदि । भागत् बालक, बच्चा ; ( हे-ब,म ; पाम ;
   द्य ३; द्य ६, १, सूच १, २, १; २, ३, ३१, २१; २३)।
   ९ वि. सपु, छोटा, सह, (ब्रोट ९००८, २६० मा) । "रगाम
   र्ड [ 'प्राप्त ] छाटा गाँव; ( यव 🧸 ) ।
   दिख्यामा दि । जन्म स भधग्ह वर्गतः का लङ्काः ;
   ( 41 7 ) 1
   देशी को दि मिलिन्जर, मिहो का पहा ; (र ४, ७) ।
   गंशल न [ दे ] लाचन, भाष, नेत्र ; ( दे ८, ६ )।
   ारणी सी [ डाकिनी ] १ टानिन, टायन, बुहेब, पॅतिनी;
   २ जेनर-मंतर जानने बाता स्रो ; ( यहा १,३ ; सुरा ६०६;
   म ३०० ; महा ) ।
   ाउ वं [ दे ] १ फलिट्सक पृत्त, एक जाति का पेड़; २
   गयपति की एक तरह की प्रतिमा ; (दे ४, १२)।
   श्वा पुंत दि ] भाजी, पत्राकार तरकारी : (भग ७, ९० ;
    दमा १: पत्र २) १
   धिंगणी देवी हाइणी, (१०१, ३,४)। -
```

इन्हें) स है] विदेश, दाला, दालो, बेल दे। बना हमा

इन्छय । पत-मृत्र शतंत्र का पात्र (इ.४.) अपन्त ।।

इतियर वि [पान्] दने बाता , (हमा 🕫

इयं मा [सा+रम्] धारम्य कारा, शुर कारा

```
डामर वि [ डामर ] भर्वहर ; "उम्मानिरटमप्पादीरदान्ते"
  (सुर १६१)। १ पुंत्रतमन्यत एव जैन सुनि :
  ( पहम २०, २१ )।
 डामरिय हि [ डामरिक ] टर्स्ट इस्ते क्टा, विषद्कारकः
  (पट्र १, २)।
इाय [दे] देनी द्वाम ; ( गत )।
इायान्य न [दे] हर्म्यन्तन, प्राचाह-भूमि ; (प्राचा २, २,१) १
दान मंत [दे] १ इत, गाय, छनी : (शुग १४० :
 वंबा १६ : मंदि : हे ४, ४४३ ) ई १ गामा सा एक देग:
  (मायार, ९, ९०)। मो -- ला; (महा; पाम ;
 बन्दा २६), न्हों ; (इ.इ.इ. ; पच्च १० ; गए, निवू १)।
डाय १ [ दे ] बाम हम्म, बायों हाव ; गुत्ररानी में 'दाबा'
 ( $ 5, 5 ) 1
डाट देनो दाह ; (१९,२९०; गा २२६ ; १३१ ; बुसा)।
डाहर हुं [ है ] देन-बिरोद ; ( पित् )।
डाहान्ट ९ [ दे ] देग-निगेर ( मुरा २६३ )।
डाहिण हेगी दाहिण; ( गा ५००; निंग )।
डिअयो सी [दे] स्वया, संभा, स्टा ; (दे ६,६)।
डिड्य वि दि ] जत में पनितः ( पट् )।.
डिंडिम न [ डिव्डिम ] इवड्वा, इत्या, बाय-निर्मेष ; ( हुर
 2.1=1)
डिडिलिस म दि । गति-सवित वस, तैल-हिट से
 ब्यान काश : २ स्त्रजित हम्न ; (दं ४, ९०)।
डिंडी की दि ] मार्हए वस माह ; (दे ४, ४)। व्यंध
 प्रं विस्त्र ] गर्म-पंभवः (तिवृ ११)।
डिंडोर पुन [ डिण्डोर ] समुद का फेन, गमुद-कक ; ( उप
 ७२≈ टो ; सुपा २२२ )।
डिंफिन वि [दे] जल-पतिन, पानी में विदा हुमा ; (दे
  5, 2 ) 1
डिंव पुंत [डिस्य] १ भव, इत ; (मे २, १६.)। ००२
 विच्न, मन्त्रसय ; ( गाया १, १--पत्र ६ ; मीर ) । ३
 विन्तव, इसर ; ( जं २ )।
हिंस मह [स्रंस्] १ नावे निग्ना। २ ध्यस्त होना, नष्ट
 हंता । डिमइ ; (हे ४, १६७ ; पर्.) । वह--डिमंत :
 ( बुमा ५ ४२ )।
डिंम पुन [डिम्म] बालह, बच्चा, ग्रिगु ; (पाम ; ह
 १, २०२; मृद्ध ; सुरा १६ )। "मह बुरिएस्याई तह
 भुक्तिनाई जह बिनियाई डिमाई" ( विवे १९१ )।
```

```
[,,
                                         पाइअसइमहण्णवी।
844
                                                    दुविकमधि [ डीकिन ] उस देखे ; (वि)।
द्वयर पु[दे] फिगला, (द ८, ९६; पाम )। २ ईर्न्या,
                                                    दुम ) सक [ भ्रम् ] भ्रमण काना, प्नाः। प्र
 इंव, (केंग, १६)।
                                                    दुस र् (हे ४, १६१ ; इसा)।
इन बार [दे ] १ ट्यस्मा, नीवे पडना, गिरना । र मुख्ना ।
                                                    देंक पुं[देहू ] पवि-भिगेर, (राजा रूप)।
 १६ - दलंत ,(१मा), "दलंतनेमनामन्मोता" (तप ६८६)
                                                    हेंका सी दिं। १ हर्ष, युगो ; ९ देहता, देखी, र
  की है।
                                                     ( दे ४, १७ ) 1
हिन्दि ( दि ] भुद्ध हुमा , ( उप प्र १९८ ) ।
                                                    हें किय देखें दिनिकय; (गर)
हान्त्र मह [दे] ५ शतना, नीने गिगना । १ मुखना, बामर
                                                    हेंकी मो [ दे ] बलाहा, बरु-पर्दित, (र ५११)।
 सर्गेर का बोजन' । बाताय , ( सुप्ता ४० ) ॥
                                                    हॅकुण पु [दे] मन्त्रम, स्टमन । (हे ६,११)।
हारिप्र रि [ दे ] नांचे विगया हुमा , "सीमामा डालिमा
                                                    हें दिश्र वि [ दे ] धरिन, ध्व दिया हुमा ; (१३,१
 Et. ( Et f' 46= ) 1
                                                    हणियालम् ) पुनी [हेणिकालक ] पी हिं।
&ाप ५ [ है ] भावर, निर्वन्थ , ( हुमा ) ।
                                                    ढॅणियालय) १,१)। मो—<sup>4</sup>लिया ; (<sup>छ</sup>्रा
दिक प्री दिष्ट विशेष्ट रियोप , ( वयद १, १--नय ८ ) ।
                                                    हेरल नि [ दे ] निर्धन, दिए ; ( दे ४, १६)।
रिकाम) पुरि ] चुर प्रन्तु-शिंग र, गी भादि का लगने
 दिक्ष पुंदाना दीर सिंगेद , (शत , शी ९८ )।
                                                    डोभ देनो दुवक = दीक्। दोएमद ; (महा)।
                                                    ढोह्य वि [ढोकित] १ भेंड बिवा हुमा। १ १
 दिस श्लो द्विका,( राज ) ।
                                                     बिका हुमा ; ( सहा , मुता ९६८ ; मवि )।
 विदय वि [ दे ] अन में पीता, (द र, ११ ) ।
                                                    खोंबर रि [ दे ] अमत-नील, पूमने बता ; (१ ९)
 दिवस सब [ मर्स ] माँव का नरअना । हिहरह , ( हे
                                                    ददोत्य इ [ दे ] १ तात, प्रद्र । १ तम मि।
   र, १६)। रहं-दिश्यमाण , (४मा)।
 दिवस्य व [ रे ] विन्न, बनेगा, महा ; ( रे ४, ५१ ) ।
                                                      वानी धीलरूर है ; ( विंग ) इ
 दिविषय न [गळम ] सँद को गर्मना , ( महा )।
                                                    दोषण ृत्र[होकत, क] गर्मट हरनी
                                                    दीयणय ) (इमा)। १ उपरान, मेंड , (इम ए
 रिडिम र [रिडिम ] देव नियान विशेष , ( इस )।
                                                    दोविय रि [ दोकिन ] उपन्यापिन, वर्गस्म
 दिन्द का [ है ] र्वाला, विश्वित , ( वि १६० )।
 दिग्ला था [दिग्ला] नारका का प्रापन और वधनत
                                                      (# to=) 1
   रेप्र बाले, दिल्ली रुदर , रे दिन है । "बाह वु [ "बाध है
                                                           इम निरिपाइअसइमहण्यवस्मि हरणा
   दिली दा राजा ( पुना ) ।
                                                               संबन्धा एकस्थानहमा तस्या हमना ।
 संदर्भ नद [ सम् ] चूबनः, निर्मा, बरना । दुरुन्छ ,
   (# 4, 949 ): #274-1 ; (#AL) 1
 हुरूज्य सर्व वियेषम् ] हुन्त, भारता, क्रम्पत काता ।
   15mg, ( F 4, 952 ) 1
                                                                       स्म तब न
 इंड्रप्टम व [ गरियम ] बाब, घटनाव ; ( बूमा ) ।
                                                     ण पु [ ण, म ] स्पन्तन वर्ग लिए , श्रम्बा हरवा
 इ दुरिल्य वि [ गरेपिन ] क्रम्भित हुँ श हुमा , (तम)।
                                                      मूर्त दे , इनव कट मूर्वन बहाता है , (इन, ह
 शक्य नद शिक्ष है। जेर करन, आंग करन । व शहरवर
                                                     ण स [ म ] शिरेरावंड मार्थ, नहीं, मां, [
   क्या । ३ व्रद रूका, उर्रूप क्या । व विश्वा । वर्ष---
                                                      १ : वप् १६६ )। "उण, उणा, उणा,
   दुश्यत , (१४)। कार-दुश्मे र , (उर ६८६
                                                      [ पुन. ] न हू. नरी हि ; ( हे ५, ६१ ; नर्))
   E, 44)1
                                                      वालोगवार वि ("मारिक्सलीक्सारिक)
  कुरद ५ (देवीक्त) १ दर्शका ; (न २३१ ) ।
   र चित्रक ( विक्र)। १ वश्य, " विक्रिय पुरुद्ध "(ar
                                                      काम क बड़ी है ऐसा मानने बाला ; ( टा ८ ))
    • र , सम , वर्ष है।
                                                     सन[त्र[]ब्द; (हे १, ३०, इस)।
```

```
[ इट्सू ] सा, इस ( हे ३, ३० ; उप १६० .सा
  1:45:)1
  वे [ हर ] कालकार परिवाद विश्ववार , (वृद्धा क. == ) ।
   देनो चात्रच्या, (गा ५०००; शरा-मैत ४०)।
  छ। हुँ ['द्वीप ] बहुबाद का एक विप्तात नाम, को
  म्य शाका का करत शिला जाता है, जिनकी बाजना
  देया' बार्टी है , ( सन्द—चैत १०१ ) ।
   ष्ठा ९ तिधव-सूपद क्षान्य: 'पर्टेग् गड'' (हे २.
   रि : वर् )। व निर्यथार्यक कान्यय : ' ला साथ' सेव
  हैं। (सुरु ३, ३०६ ) ।
   देलं पर्दे (सहर , हे कह रहार १६०) हा १३,३४) ६
  म दि [नियक] नय-पुन्तः प्रनिज्ञाय-विगेर यन्ति ।
   मन ४≈ ) :
   झ देनो पोो≕ना ।
  मानय म हि ] पानी में होने बाला कर-विगेष , (दे
   , २३) (
   मो [नदी ] नरी, पर्वत झाँद से निश्ला कर सीत जो
  हा मा बहा नहीं में जारा निते . (है १, १२६ ; पाम)।
  रुद्ध ('बाच्छ ] नरे के कितो पा की भाषी ;
   याया १, १) । 'गाम ९ [ ब्राम ] नडी के हिनाँर
   न्यित गाँव : ( प्राप्त ) । 'प्याद प्रं [ 'नाय ] मनुष्ट,
   गर ; ( टर ७१८ टा )। धर वुं धिति । महुद, मागः
   पद १, ३)। 'संबार पु [ 'सबार ] नः उत्ता,
   हाब महिने नहा पा जला; (शब)। व्योत पुं
   'स्रोतस् ] नहां का प्रशदः ( प्राप्तः ; हे १, ४ )।
  र (भर) देशो इच ; ( इसर )।
  श्रि त [ समुत] 'तपुतान' की चीरामी साल से गुणने पर
   में संख्या तथ्य ही बहु; ( हा २, ४ ; इक )।
   इसंगन [ नयुनाङ्गः ] 'प्रदुन' को बीगवी दाय से छुएन
   र जो संख्या सन्द है। बहु : ( टा २, ४ ; इके ) ।
   हैं। सो [ मयति ] मंख्या-विगेत, नन्ते, ६० ; (ग्रम ६४)।
   डेंग्रेय वि [ नवत ] ६० वौ ; ( पड़न ६०, ३५ ) १
  बल वुं [ नकुल ] १ न्यीडा, ( पन्द १, १ , वॉ २२ ) ।
 र पोंपवी पायटव ; (गाया १, १६)।
  उँसो मो [मकुर्ता ] वियानिगेर, मानिया की प्रतिका
🖍 तिया ; (गत्र)।
```

म १ वास्यालंबार में प्रयुक्त किया जाता अन्यय ; (ह

```
म्बीकार-घोत्रः मञ्जय : (गत्र )।
र्षः (र्मा) देगो पशुः (हे४,३८३)।
याँ। यन ) देखे इच : (हे ४, ४४४ : मनि : गरा : परि) 1
र्धमञ्जल हि है है स्व, मेबर हमा ; ( पर् )।
चीमर पुं हैं। लेगर, जहाज की जन-पान में धामने के लिए
 पत्री में जो गन्ती काहि दानी जाती है बहु (उर ७३०
 हो : सर १३, १६३ : स २०१) ।
चौगर ) म [स्टाहुन्छ] इन, जिन्ने मेर बीना चीर बीना
चाँगल 🕽 जाता है : (पटम ७२, ७३ ; पण्ड १,४; पाम)।
र्यागर पुन [ है ] चन्तु, चौन ; "नहाडयो स्रो । नहर्यान्तुन्
 पहरत्र, दनायारी विद्वत्तरस्ट्रबंते" ( पदम ४४, ४० )।
र्णगन्ति पुं [स्टाट्सस्टिन् ] बदनः, हती ; ( बुना ) ।
चंगलिय हुं [साहुलिक ] इत के मारार वार्ग अध-विदेश
 को धारुष करने वाला सुनद : (क्य : भीत )।
चांगुल व िलाङगुली पुन्य, पुँछ; (स ४,२; हे ५,२६८)।
चंगुन्ति वि[लाङ्गुलिन्] १ लम्या पुँछ बाला; २ पुं बलर्ग,
 बन्दर ; ( कुमा ) ।
धोगोल हेन्ये धांगुल : ( धाया १, ३ : वि १२७ )। 🚈 -
र्चगोलि ) वुं [लाङ्गलिन्, बा] १ मल्याँव-विकेतः, १
चांगोलिय ) उत्तरा निवामा भवुन्य : (वि १२७ ; स. ४,२)।
र्णतम न हि | वस्र, काहा ; (वस ; माव ६ )।
र्षांड् बार्ड [ नन्हु ] १ खग होना, मानन्दित हेला । , २ मनद
 हाना । यंदर, यंदार ; ( पर् ) । बन्छ-पदिस्त्रमाण ;
 (भीप)। ह—पांदिअध्य, पांदेशस्य ; ( पर् )।
पाँद वं [ मन्द ] १ ध्वनाम-प्रतिद्व पाटतिपुत्र नगर का एक
  राजा; (मुझ १६८; यदि)। २ मरत चेल के भावी
  प्रमन बासुदेव: (सन १६४)। ३ मरत सेत में होने
  वाने नवर्वे तीर्पटर दा पूर्व-भवीय नेतन् ; (सन १६४.) [
  ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन सुनि ; (.पडम् २०, २०) । ५.
  स्वनाम-स्यात एक थेडी (सुरा ६३०) । ह न्.
  देव-विनान विशेष ; (सन १६)। ण तीहे का एक प्रकार
  का बृत मालन ; (दादा १, १--- पत्र ४३ टी )। = वि
  मनद होने बाता; ( मीर )। "कौन न [ 'कानत ] देव-
  विजन किंगेन; (सन २६)। कुड न किट एक देव-
  विनतः (सम १६)। 'उनस्य न ( ध्यज ) एक देव-
  विमान; (मन २६)। "प्यम न ["प्रस ] देव-विमान
  विजेप ; (सन २६)। "मई सा मिना एक मन्त-
```

४, १८३ , इसा , पि)। १ प्रान-सुन्द कान्य : ३

रत् गज्यो , (भन्त २६ , सब) । "मिल पु [मित्र] मरक्तेत्र में होने वाला दिनोग वासदेव , (सम १६४)। 'छेम न ['लेश्य] एक देव-निमान , (सम १६)। "याँ भी ["यती | १ सातुर्वे" बायुरेव की साना , (पत्रम २०, १८६) । २ रनिहर पर्वन पर स्थित एई देव-नवरी, (दोत)। यणणान ["चार्ण] देव-निमान विशेषः; (गय १६)। 'सिंग न ['श्रङ्क] एक देत-निमान , (सम १६)। 'सिंह न ['स्ट्रंट] देत्र-विमान स्थित , (गम १६)। 'सिरी सी ['श्री] स्वनाम-स्वान एड अदि-कम्पाः (ती ३०)। "मेणिया मो ["सेनिका] एक जैन मानी, (मंग २६)। र्णाइन दि] १ कथ पंत्रने का दायह , २ तुनहा, पाल-मिले (वे र, ४३)। र्मार्ग र्व [तरहरू] बादुरेव का न्तर्ग , (एवं १,४)। र्णादण वृं[मन्द्रम] ९ पुत्र, लड्डा, (गा६०२)। २ राम का एक स्थाम-स्थान मुभद , (पटम ६७, ९०) । · ३ स्वताम अवन एक बन्देश ; (नम ६३) । ४ मरनतेच बामपी नातरी बायुरेव, (सम १६४)। ६ स्टनाम-प्रनिद्धाल्ड घोट्टी; (इप ६६०) । ६ श्रेबिट शजा का ^{। हड हुद}, (निर ९, ६)। ४ मेड वर्डन वर स्थित क र्शस्त्र स्तः (स २, ३, इस)। स तह वेत्यः (सप ३, ६)। ६ इदि , (पह १, ४)। १० वसर-। शिक , (डा ४९८ टी) । "कर हि [कर] वृद्धिनाह , च्छ व [फूट] बनान का का निचा ; (राज)। भार 5 [भर] एक वैन मुनि । (बण) । 'याण न ['यान] ९ स्वराम-स्थात एक वन जा मेर पर्वत प्ररानिव है , (सम ६२)। २ रणन-मित्र , (भिर् १, ४)। णहम ५ दि] नग, नेक, तन ; (के ४, १६) । परिचा की [नन्दना] ताडी, पुरी ; (पाम) । णीतमाजन पु [नन्दमानक] पत्नी को एक जाति, (बक् . 3, 1 }1 मोडा क्षं [सन्दा] १ सगरन् इस्तेव को एक पत्योः (राम 1,552)। ९ गडा थविड हो ल्ड करी होत हमारह-सर दो सात, (साया १, ३) । ३ सम्बात् अजीवत्रताव

के मण्ड ; (क्य ११९)। ४ वकान् बहार्य देशव

स्थान् नामह नवत्र की माना ; (प्राच्छ)। ३ अवच को

ष्ट प्रथा , (प्रज्ञा २४, १०)। ६ ई.ज रेपहर्मात पर गर्ने समा वह रिस्प्रमणी वसे, (ग्राम्म) । अज्ञीनेन्द्र बोहर

एक पुट्यस्थिते ; (टा ४, ३)। ॥ स्वर्तिस्य िब-विग्रेप-प्रथमा, यन्त्रो और एकाइनो निष् णंदा सी [दे] मी, गेवा, (दे ४, ९=)। : णंद्रावत ९ [बन्द्रावतं] १ ए४ प्राप्त सम्बन पा १२)। २ चुद जल्तुको एक आहि ,(ब्रोर) न् देव-निमान निगर, (सम १६)। र्णान्द् पुर्यो [नम्द्] १ बारह प्रकार के बार्ज य बादान ; (फह २, १ ; गरि) । १ स्मर्त १,२)। ३ मनिकान झाहि पौषों क्रानः (^{बह}े बाञ्जित सर्व की प्राप्ति, १ संगत्त, (हुर १: होते हैं ६ समृद्धिः (झप्र)। ७ जैन आपने गर् (बर्दि)। प्रवान्छा, मभिशाप, पर्दः (स ६ मान्यार नाम को एक मुज्जा , (इ.च.)। स्वनाम-स्वान एक राज-तुमार। (विश्व 1,1 एक जेन सुने, जा झारे झावणा ना^{हे} बलदेश झाया १ (पतम २०, १६०) । ११इव सि २०, ४२) : "आयत्त देवा "यावत, (ग) ९ श्वृद्ध] एऊ प्राचीन करि का नाम। (कर्प)। भार, ति [कर] मर्गत कार ... (इर १, १)। "बाम ६ ["झाम] सम विगेरः (१ माप् १)। चोस १ (चोप] १ गए गर का बाहाज , (कार) १ व देव-पिनांव लिंग १७)। खुक्कव न [खूर्णक] हाउ क हारी बहार का चुर्च , (सम १, ४, ६)। मूर १ एक साथ बहाया जना बाह् ताइ हा बाद। ('पुर न ['पुर] नारिकस्य देग दा एवं हैं १०३१ टो)। 'फाट पु ['फाड] द्वारिते। ९, ⊂६९६) । "साण न ["स.जर्ग] ^{हार्गि} (कृट्ग) 'मिन इं['मिन] रे ^{रते वी} (गत्र)। १ एड राज मृत्रण, जिले संगर् के तार्व दीवा हो वो, (कावा 1,⁴) [मृदङ्क] एट प्रसा का नृतर्ग, क्वांगिक मुद्द व [मुन्व] पांत किंग्र (गत्र)। पर (गळ ११=, ११०)। थायत १ 🗐 स्टिंग्ड सिनेंड , (बीप , पद १, ८)। र त देह, (स के १) १३ चर बलु-सिंह, (ह ∉ न दर-स्थित स्थिर, (गर)। पार्वी

अप्रमृहियों को राजधानी ; (ग्र.५२)। द

श्यारी के स्वाप-मान्य एवं सहर , (गाया १, १६ -- प्राप्त र•=)। 'सब ५ ('सन] मध्ये में हाँ, ना १,४)। ' रुस्त पुं [पृत्त] पुत्र रेलीर ; (पण १)। च मा देन चडना. (१६)। वडण ३ [पर्वन] १ मरहान् महार्थतं का गर्भातः , (क्या । ६ वय-्रक्षीकः (क्षारः) । क्षारः राजन्त्वरः , (विशः ९,८ % रम्मल-दिले । (सुतस्य) । विद्यमार्थः (वि र्थना } भएक दिस्टुमण दण , (राष्ट्र)। । गण्य ह सर्वेदी ; (क ४,१)। भिना वुं [वेगा] १ देखा वर्ष में इसल चर्च जिल्हा (सम १६३)। ३ एर कैनक्षिः; (क्षत्रिक्षः) । ३ एटसल-दुसरः, (स ं ९०)। अस्यतमन्याद्यस्य तैन मुनि, (द्य)। ४ देव-विरेच ; (राज) । "मैजा मो ["वेजा] १ इन्छ ें पेटी विरोप: (जान ३)। १ एक दिस्तारी देशी, (होत)। 'सेणिया मा ['विणिका] गरा धविष्ट की गृह पन्नी : (इ.र.) । "स्मर पु ["स्वर"] १ देगा ंपोदीसर; (शज)। १ दाग्द द्रद्या इ वायों का एट ही र्'नाम मानाल ; (सीम ३) । दिञ्ज न [हे] निंह ही विन्तरहर ; (हे ४, १६) । िद्धि हि विनिद्दे । १ स्टब्स्स (भीता)। १ जैन प्रति-ं दिंदा; (यन)। ं दियम पुंहि है | सिंह, म्लेन्ड ; (दे ४, १६)। पॅदिस्त न [नन्दीय] र्जन मुनिमों का एक एउ ; (कान)। ोंदिणों सी [नन्दिनी] पुत्री, सहसी ; (पडन ४६,२) । 🗠 "पिउ वुं ["पिट्] मगरान् महार्गार का एक 🖼 सनाम-स्वात , ' शहस्य दरालह ; (क्स) । र्वदिणी सी [दे] गी, गैसा ; (दे,४, ९८ ; मम)। ्राणीदी देशी पाँदि ; (महा ; धीप ३२१ मा ; पण्ट १, ९ ; ः भीतः, सम् ५४२ ; यंदि) । , 'गॅड़ी क्षी [दे] गी, गेवा; (दे ४, ९८ ; पाम)। ्रं गॅदोसर १ [नन्दीश्वर] स्तनम प्रतिद एक द्वीर ; (यावा ं १,८; मुदा)। चिर ई [वर] नन्दीक्षर द्वीतः ः (दाप्र, ३) । चिरोद ई [चिरोद] सहस्वित ; (जीव १)। , पांडुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विध्य, नागप्रमार कं भूतनन्द-नामह इन्द्र के रथ सैन्य का सरिवति देव ; (य ६, ९ ;

णंड्लतकः [मन्दोत्तरा] १ व्हेच्य हरह पर्वे पर छने। बाजो एक दिस्त्वामें देवी : (ग्राम : इक्) । १ इन्हा-नमर इन्हरों को एक गर्यामी; (शीर 1) । 3 पुन्हरियी-लिंग, (छ ४,३)। ४ सका प्रेटिट की एड फली; (\$27 +) 1 णकरपुणिकार, नकारी 'ल' सा 'न' मर्चर, (तिन २८६० । । पांडक हुं [नक] १ जडबन्दु-विदेश, प्राह, नाहा ; (कब १, १; इना)। १ राक्य का एक न्यनाम-स्वात हुमद ; (पुरुष १६, ९८)। णरम ९ [दे] १ नाह, नातिहा; (दे४,४६ ; तिहा १, १ ; भीर) । १ वि. मुद्द, बाबा-ग्राफि में रहित : (ई ४, ४६)। 'सिरा मो ['सिरा] नाह व्यक्तिः (पाप्र)। णक्कीचर ५ [नपतञ्चर] १ सज्ञतः २ पतः ; ३ विहानः ४ वि. सर्ति में चउने हिल्ने बाता : (है १, १५७) । णक्स हुं [नस] नय, नयहा ; (हे २, ६६ ; प्राप्त) । 'ब वि [कि] नत ने उत्पन्न ; (मा ६०१) । आउह पुं ['आयुव] विंद, मगारि. (दुमा)। णक्यस्य द्वेन [नक्षत्र] इतिहा, यनिनी, मृत्यी मादि ज्योतिन्ह-विग्रेदः, (पामः, इनः, देखः, सुव ५०) । दिमण बु [दमन] राधन-वंश का एक राजा, एक लंकन: (पत्न १, २६६)। मास ५ [भास] जोतिन शेल में देखिइ बनानन विषेत्र ; (बर १)। भुहन [भुख] चन्द्र र्थाद ; (राज) । "संबच्छर वुं ["संबदसर] ज्वादिर-शासन्द्रविद्य वर्ग-विशेष ; र्र्श () (णक्सत्त वि [नाक्षत्र] नजत्र-संबन्धाः (ज र)। णक्खलाम इं [दे नक्षत्रनेमि] किन्तु, नितायण : (दें ४, ११)। णक्खन्नण न [दे] नव और केटक निर्मातने को संस-क्यितः (बुद्द १.)। णक्सि वि [निधिन्] सुन्दर न ३ वालो; (बृद् १) । णग देखे णय⇒त्य ; (फ़द्र ९, ४; ट्रमू ३४६ टी ; सुर ३, ३४)। "राषर्थं["राजं] नेह वर्वतः (छ ६)। ["चंर] पुं[बर] क्षेत्र पर्वतः (याया ५,१)। चिरिद् पुं ['बरेन्द्र] मेर पर्वतः (पडम ३, ०६) । पागर न [नकर, नगर] ग्रहर, पुर ; (बृह १ ; कून ; हर ३, २०)। गुलिय, गोलिय वृं [गुप्तिक] सार

रह) 'बडिंसग न ['बर्वसक] एक देव-विकान ,

४३० पाइअस	इमहण्णवी ।	[बागरी-
प्रकार वारवात, दरांगा (वाया १, १८, भीन, कर १, १८, वाया १, १)। भाग पृ भितानी गहर से तुर-पार (वाया १, १८)। भाग पृ भितानी गहर से तुर-पार (वाया १, १८)। भित्र सण न [निर्देश सात] नाम क्या पाने जाने नाम क्या भी, माज (वाया १, १८)। भाग पु [वाया] पान-कार (वाय १, १८)। पानिया से ताम क्या पाने जाने का प्रकार (वाय १०, १०)। पानियं द्वा तामे हुँ । भोज वर्षन (वाया १, १०)। पानियं द्वा तामे हुँ । भोज वर्षन (वाया १, १०)। पानियं द्वा तामे हुँ । भोज वर्षन (वाया १, १०)। पानियं हिलाही नाम का नामिर (वाया १, १०)। पान्य हिलाही नाम का प्रकार का प्रकार (वाया १, १०)। पान्य हिलाही नाम का प्रकार का प्रकार वाया (वाया १, १०)। पान्य हिलाही नाम का प्रकार का विवास का प्रवास का प्रकार का प्रक	णवासम्मन न [नाम्यासम्मन] १,१)। णिकर नि [निर्मित] नवीया (गा ४२०, प्रता ४४०, उना प्राच्या नि [नि] मान्यति । णव्या नि [ने] मति नि	स्ति मत्ते में से , तार्त वर्ड में , तार्त वर्ड में , तार्त वर्ड में , हैं । (दे ४, १=)। ते स्ताः, तार्त वर्ड मार्च कर्ड मार्च मार्च मार्च कर्ड मार्च मार्

ाड मह [गुप्] १ ब्यङ्त होना । २ सह विल्ल करना । राइ, राइति: (हे ४, १४०: सुना)। कर्न-गाँकारः; (ग ४०)। ६३६ —पाडिइअन; (नुरा ३३८ ाड देखो पाल्यञ्जदः, (हे २, १०२)। ाइ हं [नट] १ नर्ने हों की एक वानि, नट; / हे १, १६६ ; प्राप्त)। 'साह्या सी [सादिता] रीजा-किंग्स, नद की तरह इतिम सायुक्त : (ठा ४, ४)। हाल न [ललार] मात, बसत ; (हे ९, ४० : २१७ ; यहड) । हालिया श्री [सलाटिका] उत्तर-गंमा, सात में पन्दन मादि का विजेतन ; (बुना)। ग्डावित्र वि [गोपित] १ ब्याउन दिया हुमा, २ निस्त क्या हुमा ; (सुना ३२४) । ाडिय वि [गुपित] स्तत्व्ह ; (मे १०, ३० ; *मर)* । डिम वि [दे] १ वभ्वित, विज्वारित ; (डे ४, १६)। २ खेडिंद, किन्न किना हुमा; (१ ४,९६; पाम, दाया ९,८)। हीं मो [नदी] १ नड की की ; (गार्; सार्)। १ तिनि-विशेष ; (विते ४६४ हो)। ३ नाचने वाली स्वी ; (कुद ३) । हुली की [दे] बच्छा, बहुमा ; (दे ६, २०)। पुरी की [दे] नेद, नेंदह ; (हे ४, २०)। कृत न [दे] १ रन, मेंदुन ; १ दृश्नि, मेंतान्त्रस्य दिवनः (दे४,४७)। इंदुली हेगी पहली; (दे ४, २०)। पदा स्रो [ननान्ह] दिन्दी बहिन: (वर् हे ३,३१)। 🗓 म [नतु] इन मयीं का सुबक्त सम्बदः – १ सरदारयः, निरचप ; (प्रायु १६१ ; निष् १)। १ मार्गाचा; ३ दिनहीं; र मन्द ; (इद ; स्टप ; प्रति १४)। ष्पा इं[दे] १ हा, इसी ; १ हुस्ते , सर ; ३ वहा म्दं; (१४, ४६)। स न[नस्त] गति, रातः (५० १०) । त्त देश्ये पासुः "मंदनिवेनियनियनियन्त्रित्तरियुक्तरियुक्तरा FR" (57 ()1 र्लचर देखे भक्कांचर ; (इस' ; दि २००) । त्तम न [नर्तन] राष, तृत्य ; (शह---गङ्ग ८०) । चित्र इं[सत्या] १ की६ दुव का दुव ३३ हो है। हुआ E 57; (\$ 9, 930; 5=) 1

पत्तिया) मी [मर्प्यो] १ पुत्र की पुत्री; (हुमा)। े २ पुत्री की पुत्री ; (राज)। णतु १ ९ [नप्टु , कि] देखे णत्तिओ ; (तिः २, ५; णत्म हे १, १३७; सुरा १६२; विरा १, ३)। पत्तुञा हेखे पत्तिया ; (इह १ ; दिस १, ३) । पनुइषो सी [तन किनी] १ पीत की मी; १ दीहित की सी : (विरा १, ३)। पतुई देखे पत्ती ; (विश १, ३ ; इन)। पत्पित्रा देले पत्तित्रा ; (दम ४, १४)। पत्य वि [स्यस्त] स्थानि, विहित ; (पाया १, १ ; ३; विते ६१()। पत्यण न [है] तक में कि काना ; (सुर १४, ४१)। णत्या सी [दै] सम्रान्त्रह ; (दे ४, १७ ; दवा)। पत्थि म [नास्ति] मनाव-नृपद्य मनाव ; (दम ; स्वा; मन्म ३६)। पत्थिय वि[नास्त्रिक] १ परशंक मारि नहीं मानंत बाला ; (प्राप्त) । २ ई. नास्तिह-मत हा प्रवर्तह, बार्राह । 'चाय इं ['धाद] नास्तिह-दर्गन ; (हर १३९ हो)। पद सह [नद्] तद काना, माताव काना। बहु--पार्टनः (सम ६० ; बार-न्यस्य १६६)। णद इं [नद] नाद, माताब, ग्रम्द ; "यहिल गर्वा मान् दिन्तरं नदरं नदं" (सन ६०)। णहीं देखे पर्दे ; (से ६, ६६; फ्ल ११)। पदिम ति [दे] दुःगि ; (दे ४, २०)। पहित्र न [नर्दिन] योर, माताब, गुरु ; (राज) । मद्ध वि [नद्ध] १ परिदेत ; (गा ४२० ; परम ४, ६२; पुण १११) । २ नियम्बनः (पुरा १११) । पाद वि [है] मामहः (हे ४, १८)। पाईदवय न [दे] १ स-१ए, पूरा का सनान ; १ हिन्दा ; (\$ 4, 80) (पारुच वि [भयन्त] म-पर्वत ; (महर)। पारहृष्यंत वि [ब्रायस्यत्] मार्चन होता ; (गडा)। प्युंम 🥎 🔄 [नर्युमक] रहेता, सर्वत, रार्जा; (प्रेंच बर्नुमग राः भारत्यातान १५ हः पर्युमय है हा विष हैं [चिद्] क्लेक्ट्रिंड, क्लिंड दाव ने की भीन पुरवहाने के मार्ग की बागावा होती है। (ए।) यस मह[रा] बल्दा स्वा; (रम्)। याम हेर्नेपार्क्टन्ड (हे ९,९८० ; इसा ; स्टू)।

```
[ef-
                                               पार्मगर्महण्यारी।
   833
   णलिण न [नलिन ] १ १७ वसर ; ( सव : चंद १० :
                                                       ण इस्तार देनो जमीकसार, ( गरे १, चेंगीर-
                                                       यापन ( मा ) हि [ मा ] मनग, रूप, रूप, रूप,
    पाम )। ६ महारिहेंद्र वर्ष का एक वित्रव, प्रध्य-विरोध, ( य
                                                         बर्द } । हनी-- व्ही ; ( हे ४, ४१० )।
     २, १) । १ 'नटिकर्य ' का चौमनी नाम ने गुणने पर
     जो संख्या सम्प्र∎ा बद्द. (टार, ४;इक)। ४ देश
                                                       वापनीम पुन [ नपनीतः ] मारम, मना । (१५)
                                                        মদা) ៖ <sup>এ</sup> লচবহ্মকঃ ৰাজীয়া "(বস 15
     मिन स्थित ( स्व ३३ , ३६ ) । ६ इवड पर्नेत काल्ड
                                                       णपणोह्या श्री [सपनीतिका ] क्लपी:शिए(र
    शियर, (दार)। 'कुष्टपु ('फुष्ट) वजन्यान्यान
     विगेप, (अ. १, ३) । "गुम्म न [गुम्म] १ दे। स्मिन-
                                                       णवमानिया हो [ नयमानिका ] ३७ तर
     विनेर, (समा३६)। २ चुन-विजेर (ठा ८)। ३
                                                        शिंग, नेशर ; (बण)।
     मध्यान तिरोष : (माद ४) । ४ राजा भेशिक का एक पुत्र,
                                                       व्यवस्थितः स्त्री [नयमिका] १ इतः गीर
     ( राज )। "वर्ष सी ("यना) शिक्ष वर्ष का एवं वित्र ,
                                                        बाजो एड (१४६मणी देती , ( स व ) । १ गाँ
     प्रदेश शिथ, ( स २, ३ )।
                                                        इन्द्र की एक बाय-मरियो , ( हा ५,१ )। रे
   पिलिपोरा न [ मन्दितरह ] सन्दानीश्रेष, पश्च को बीतारी
                                                        एड वागली : ( स = )।
     लाल में गुणने पर जो गंभ्या लब्ध दा बह, ( टा १, ४,
                                                       व्यय देशे व्यय ; ( वात १, १०)।
     24)1
                                                       व्यवकार देनो व्यवकार ; ( वंशा १, वि २०६)ः
    णिलिणि ) स्त्री [सलितो ] कर्मतनी, पर्मनी ( पाम,
                                                       व्यवर } मृ १ केवत, वतः ; ( हे १, १८० , ही
    णलिणा । याया १, १ )। शुरम देशे पनिण गुरम ।
                                                       व्यवरे ) क्या । नुपा ८ , जो २० , गा ११)। र<sup>1</sup>
     (तिर १, १, विषे )। विम न [ विन ] उपन स्थित ,
्रणाता २ ) t
                                                        बाइ में , (हे ६, १८८८ ; प्राप्त ) ।
                                                       वयरंग ) वं [ नयरहू, कि] १ दल सर् स
 ८ मिलिगोइम ५ [ मिलिनोइक ] सनुर क्लिन , ( दीर ) ।
                                                       णवरंगय) १,६१)। २ छन्। निरो (<sup>हर</sup>)
    णक्लिय त [दे] ९ वृति क्सि, बाट का डिस, २ प्रयोजन .
                                                        कीनुस्त रर्ग का बन्त , ( गउड: गा २४% 🏻 रें।
     १ निमिन, कारण ; ४ वि करिन , कोच वाला , (दे ४
     ¥ } 1
                                                        शम ) ।
    णवादेशो प्रमाः याह, (बर्;हे४, ११⊏. १२६) ॥
                                                       वायरि हे वेली व्यवरः (हे १, १००० वे ५
    भय 🕅 [ नय ] नदा, न्तन, नशेन, ( सउड, धार 👀 ) ।
                                                       वाप्रस्थिते प्रामा ; सुर, १६ । वर् ; मा १०१)।
      'धहुया, 'घह सी [ 'घ वृ ] नोता, दुनहिन, (हेश्च ११:
                                                       वायरिय व [ दे ] सहगः, अन्ती, तुग्ना, (रेग
" "ET 3," kt )
                                                        TR ) 1
    णय ति व [नयन्] सल्या-विशेष, नद् ६ , (टा ॥)।
                                                       णानवयास्तो [दे] वह मन, जिन्ते वरिश्वर
      °६ स्रो [°नि] संस्वा-वितेत नम्दे, ६०, (त्रण) । "ग व
                                                        पर तने नहीं बताने बानी हती पतारा की छन है है
      [ क] १११ का सनुराय , ( र्द ३८ ) । । "जोयणिय वि
                                                        आतो है; (दे ४, ११)।
      [°योजनिक] मत बोजन का परिवास वाला , ( या ६)।
                                                       णयुक्त देशो पात्र = सर , ( हे १, १६४; हुना , ग
      णडा, नडा सी [ नयति ] सस्या वितेश, निन्यानवे,
                                                        दो ) ।
      ६६; (सम ६६; १००)। नित्रथ वि [नियत ] ६६
                                                       णवसित्र व [दे] उपग्रविषदः, मनीनी , (देर,
      बों ; ( पडम ६६, ७६ )। "नजह देखा 'णडह, (क्रम १,
      )। "तथमिया सी [ "नवमिका] जैन साधु का नत-
                                                         पाम : वज्जा ८६ ) ।
                                                        णवाको [नवा] १ नशेत्रा, दुलक्ष्त्र, र वृत्त्रे हे
      पिरोप, (सम ब्रम् )। "में मि ["म ] बस्ती; (उस )।
                                                         1, रे. रे)। १ जिसको दीता लिए तीन साँ s
      भी भी भी दिय-निरोप, पद्य का नवर्गे दिश्न ; (सम
      १६)। भीपक्स पुं[ भोपक्ष ] बाठतें दिन, बाउनी ;
                                                         साध्यो, (बर ४) १ ४ म प्रशाबन महावे,
      (अं३)।
                                                         (स्वय ६७)।
```

रम् १ वैकोपन्तम स्टाप, "स्टिन की" १ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विकास के स्टब्स (गाए) ह ख रेली समित्र=०० के ३, ९४६ : सर्व छि रि [सम्ब] रूप, सब , (क्राचा १, १, ३ नग्नय । [नयोन्तरगत्रम] एउनी नार्यः (पान *:, * *) [स्टब्स (ध्या देनो यात्र -- स्व. (वृता) । खा सी [मधीदा] नद-निर्मातत सी, पुर्वान , (हाप 2)1 *दरण स[दी]ट(न्डा, प्रश्न (दे ४,३३)। र दं [है] आयुक्त, ग्रीव का मुनिया , (हे ४, ९०)। ंदि [मध्य] नुसन, न्या, नयंत्र . (आ. ११) । िदेश प्रा≔हः । राउन पुं [दे] १ दिन, धनाइब, मार्गा, १ निर्वामी वा , सुराबालक्षरा, (देर, ११)। गत [निक्तमत्] श्यापत करना । नमेवल, (विन वर्म--नम्मा (सिंद १००)। गृहः--नमिऊण 3 (==) 1 प्रश्न [नम्] भागता, पदायत काना । वापः, (रिग)। . स.व.[स्थल्पतः]स्थल, स्थालः (जीर १)। ्रासी [दे] ना, नार्गः "सपुरेगनियन्तरे हट्डस्वर-, स सम्मनानदे" (गुरा ३४१) । स्म वि [सष्ट] नाग-प्राप्त , (इसा) । न देशी लम्म=त्रम् । सम्बद्धः, सम्बद्धः (पर्ः कुमा) । —नन्मंत, नन्ममाण : (था १६ : सुरा २१४) । नर वि [नध्यर] रितथर, मंगुर, नाग पान बाडा; "नय-ं प्रगद्द' स्वाद्र''' (सुना २४३) । ना मी[नाग्ना]नानिका, प्रारोन्त्रिय, (नाट-मुच्छ ६९) । 🚶 देगाणक्षयः; (गन ६०; इनाः)। ा न [नमस्] ९ भाकाम, गगन ; (प्राप्त; है ९. ३९)। र्भ श्रवण मान ; (दे ३, १६)। °थर वि [°चर] मावाग में विवरने वाला ; (मे १४, ३८)। र र्जु. गथर, बादाग-विहासी मनुत्य ; (सुर ६, १८६) । उमंडिय न ['केनुमण्डिन] विवाधरी का एक नगर ; (६)। 'गमा साँ ['गमा] बाकान-गानिनो दिया ; रू १३, १८६)। 'गामिणो सी ['गामिनी] माद्याय-्रमेनी विद्या ; (सुर ३, २८)। "डचर देखी "आर; (स्य ंटा)। 'च्छेदणय न ['च्छेदनक] न३ टनारने [|] गम, (भाषार, १,७९)। ीनलय न

["निज्ञा] १ ज्या-सिंगः १ मुनद-रितेगः (परम ४४, ११)। 'बाहण पुं [बाहन] दर-तितः : (सुर ६,२६)। 'सिर व ['शिरम्] ज्य वा घर मण; (सर ४, ४)। 'सिहा सी [| शिपा] नव हा ह्या भाग (हार) । 'सैप पु["सैत] सहा इब्बेन का एक पुनः (सह) । हिस्सी न्यां [दिस्मी] नव उत्तने का सन्त ; (यूत्र ३) । णहसूद पुं [दे] प्र, डल्त् ; (दे ४, ९०) । णहर पृ[सम्बर] स्पः, सप्तः ; (स्रा ११ ; १०६) । धाहरण पुं [दें] नपी, नपवाता बन्द्र, भाषाः (वना १२)। पाहरणी की हिं] नहानी, ना उत्तरने का ग्रहर, (र्वका ३)। याहरान्द्र पुं [नगरिन्] ना बाता भारद बन्द्र: (दा ४३० टो) । णहरी स्वी [दे] चुनिस, दुरो ; (दे ४, २०) । णहयस्की स्वं।[दे] सिनुत्, विक्ती; (दे ४, २२) । पहि वुं [मिनियम्] नप-प्रधान जन्तु, भारत जन्तुः (मापु)। णहि च [नहि] निरंत्रार्थंक मन्त्रप, नदी, (न्यन ४१; पिंग; गय) । णहु च [नगर हु] कार देगो; (नाट -मून्छ १६९; गाना 3, 2) 1 णा मरु [झा] जानना, गमनता । मरि-चादिर ; (रिने १०१३) । दाहिति; (वि १३४) । दर्म—पन्यः, वरमः; हे ४, २१२) । काह-पाउनेत, पाउनमाण ; (म १३, १३; टर १००९ टी)। गंह-पाउं, पाऊप, णाउरणं, णव्या, णव्याणं ; (महा ; पि ६८६ ; भीर; सम १, २, ३; वि १८०) । इ.—णायव्य, पेम; (मग; जी ६ ; सुर ४, ७० ; दं २ ; हे २, १६३ ; नव ३१)। णा म [न] नियेष-सुचक्र मन्यय; (गउड)। णाञ्चरक (प्रत) देशा णायगः (रिंग) । णाइ वुं [झाति] इत्यार वंग में उत्पन्न सक्षिय-विशेष । 'पुत्त पुं ['पुत्र] भगतान् थी सहातोगः (प्रत्या) । "सुय पुं ["सुन] भगदान् श्रो महावीर ; (भावा) ! णाइ स्त्री [झानि] १ नात, ममान जाति ; (परम १००, ९९ : भीर ; टवा) । २ माता-पिता भादि स्यवन, समा ; (सादा ५, ९) । ३ ज्ञान, बोध ; (म्राचा ; ठा ४, ३)। णाइ (मर) देखें इय; (बुमा)। णाइ (मप) नीचे देखा ; (मनि)। णार्द् देखे ण≕न ; (हे २, १६० ; उवा) । णाइणी (इत) स्त्री [नागी] नागिन, मुर्गियो; (महि)।

दाइभगद्महरणाशे । 435 कुमार देशों का राजा, मागेन्द्र ; (मीर)। 📆 . न्त्र । ५(१) ज्यान हार स्टाप्ट सने बागनीह नार स्वितः (पत्रम १०, १०)। भागः [क्लान्य रे वर्ष गाउँ १०१, गाध्य रे ।। हिन्द सन्दरियाः (जीवाः)। भर्। mg र ो [कर्ष्य | १ उन, १९३१, पुरुष हुया , (य श नाग द्वीप का अभिग्रता देगः (नुत्र १३)। । [भूष] देव मुनियों का एक इत, (पर)) -2 mars 2 mm t , 112 + 1 व [महाभन्न] नागरीय का एक महिला के हैं। ###(박 [| 속나라 *] 노소)고의 #작가 (*) 라마 라마 워크, (항기) | सिद्धानर पु [सिद्धानर] बाग गगुर वा बीर्य + 3+ gr (4+ 0547), (372 117, 119)) - 3 (কুল 1 চ; হছ)। "মিল র ['বিষ] ^{সা} m. 47 2 9 }1 एक जब मुनि जा मार्थ महाशिर के लिय है, कि कर्प र १ क्षांतिमार] देर मुनिया का एक शाला . 1 "राय पु ["राज] नागरुभार देशे दा लगे. १५ wn * (पान १, १४०)। "तहल वृ [भूम] त. मन्द्र । (ब्रानिहार हैट्टयन दूश (इरो र) । (हा दं)। परवा भी [फाना] कने प्रेर सर्व कि दे सामू दे पानकार, सन्त सत्ता, १ ह ६ है। लाः,(पण्य १)। भाः (पाः) [भाः । सः कर्त्य हुई है है ५ वरवार, मॉल्क्स र मॉल्डाव, रे सनी तभव हायो , (सीप) । ३ सम समृत्य (नाप १६)। चलते भी [चरते] हैं men freiterif काइ र क्ट्रेड्डिंग्या क्रिया है। (रे (गग)। "लियो मी ['भो] होतो का लिए # 74 E (अ १ बट थी) । व्युक्त व [न्यून व नाम (सप्)। 'संग पृ (सन) ल्डम' स्टा (शतका ह। यान व . (बानमं) । 'स्तित व ['कृषिमं)" # 17 रेन की (वीर)। . 41# } 15°, \$27# ; (39 49*) 1 आगण्यिय व [माण्य] साना, मंताम । (व कालर शि [बातर] व बता नंबली, १ वत व EN 15 4 75 87 + 8 TE 4 75 17 27 25 नागरिक , (वृत्र ३, ६६ । मही) ! का , रताहरी और र वहाराहर, कायरित्र 4 [नागरिक] नगर वा स्थे एक · Ilimant Theres, (#\$#); नागरिता को [नागरिका] नार है गर्न है . ५० द्वर ० वर्गत सेडम्ब, शिक्स to be med. , major asone nos es व्यागरी थी [मागरी] ५ मार में समें राजे है रियोगिक, विन्तिरियः, (श्रिम्पार्थः) Serbill Siegel in die gefreiglieg ficht fach व्यक्ति है [मार्गित्र] ह बन्त हैते हैं। - tan 1 ['tar) ## ((m .. , ()()) mer 1 5. 6. 26 AC12 C 1, . AR 81 1. व्यासिक हेना बाहक , (राम)। the of the process that me जामा की [मार्गा] जीता, मीती , ' हर' Burg ar an sin & Bat a grad a s मार्ड हेते महिल्, (बात र,६) क्षा प्रदेश हैं । इस अब है विशेषा मांड देश केंद्र भरात्र , (बार्स १, १ (व AT HARD REAL RICH THE PRES माराउत व [मार्चाय] कार्यात 1 *44 Thouse in ous, 4571 40 mm 22, [474 3, 1, 44 11 #12 60 (. et., 'engirm' मान्दर्भा को [मार्गरमी] १ वर्गे, वर्ष THE HOSPING PROPERTY. TO SEE STATE SEE S · m at sa, "ma, stiffel on

णाम पुं[नाम] ९ परिगान, भाव ; (भग २६,६) । २ णाम म [नाम] इन मर्थो का सूचक मन्द्रयः ;- १ मनाव-् [नाटक] ९ नाटक, झीमनय, नाट्यकिंगः ना;(स ४,४)। २ झानन्या, मंबीता; (बृह ३: (बुहु १ ; सुत्र १ : ३१६ ; मार्च ६१)। ३ तं १)। वृद्यमिद्धं, स्वानिः; (क्य)। प्रमनुता, मिन्ने में उत्युक्त काव्य ; (हे ४, २,३०)। अनुन्ति ; (विते)। ६—६ वास्यालंकार और पार-पूर्व मंभी इसका प्रदेश होता है; (ग्राप, १; राज)। हेर्ना पाड़ील ; (गड़ड़)। णाम न [नामन्] नाम, माल्या, मिनयानः (तिराप, १ ; चे [नाडि] ९ ^{इड्डु,} दण्या ; २ नाडी, नल, सिंग ; सि ११)। क्तम्म न [कर्मन्] कर्न-शिव, तिचेत्र प रियान का सारा-अनु कर्न; (मध्य)। 'चित्रत,' चेत्रत, म्री[नाडी]करा देवी ; (हे १,२०२)। ·जेय न [·जेय] नाम, माल्या ; (हरा : मम ७९ ; प्र पु [नाडीक] बनस्पनि-विगय ; (मन १०, ७)। पडन ४, ८०)। 'पुरन [पुर] एक विवासरनार : न [द्वान] हान, बीव, बैतन्य, युन्दिः (सन ८,९ ; (इक्)। भुद्रा साँ [भुद्रा] नाम से मर्द्रिश सुरा। २. ४२; इस : प्राम् २=)। चेर वि [चर] ानो, जनहरू, द्विन्तः, (मृता ४०=)। स्पद्मायम 'अयाद] जैन मन्यांग-निर्यंष, वाँचशे पूर्व ; (मन २६)। अयार ! अन अत्यात (पटि)। च, चंत वि[चत्] । भाषार हेर्ने प्यार ; (पटि)। ाय व [विर्] क्रान्याः ; (श्वार्) विष्ण , सामण व [तमन] नमला, नीपा काला ; (श्विर्००००) | भावार] राजभिषयक जासावन सिनः (राजभा भा ाचार] एनन्ववक आत्वारा १९५५) (घण ४४) । । जाममंतवस्य पुं [वे] सराय, गुनार ; (१७३१) । व [वयरण] हुन का साव्यारक वर्म ; (घण ४४) । । जाममंतवस्य पुं [वे] सराय, गुनार ; (१८३०) । ाजत व [ताताहर्य] मेर, शिंग, मन्गः (माय ६१ म) । वाय वि [दे] सर्थर, मानवाः (दे ४, ३३)। ाणत न िमामात्यो भः, १९७९, नवाः, (भिन २९९९)। वाय देश व्यामः (श्वास ४४७) ; ब्याः स्रीतः , गाउँ ; यहाः ाणा म [नाता] मतेह, दुरा दुरा; (टरा : मा ; मुर : वुर ; मुस हुईहं, पडम ३६, ४६) । मि । नाना । भगक, धरा अन्तर प्रदेश का भिन्न । साय पे [नाद] गुन्द मानज, प्रति । (मेर्स ८ प्रदेश । का पे विकास (बार १ : सा ४, २४६ : देवर)। न वि [जानित्] हाना जानहरू, बिहुन् । (काला । शाम प्रमित्री १ म्यनम्बन्दर गृह कुल्हा पुरुष, नगरन् स्थानी का शिंग (सम ११०)। १ पट का मान मार्गः र गारी का गृह मारव ; (दन ७)। अंद्रण पुं [नःदन] भारत् सानदाः (पटन ४, ६=)। राम मह [नमप्] १ ज्याना, ज्या इन्हा १ उर्याचन इन् पामपंतः (सि १६६०)। मह पामिनाः

(पान k, १२)। संस्ति वि[िसाय]नामनाव मे मन्बा, नामवार्ग ; (य ९०)। हैं अ देगों के या; (प-कामिय न [नामिक] यावर माम, परः (विनेष्००३)। णामुक्तातिम । व [वे] कार्य, काम, काम; (हे न, जाम) पामापकामिम । प्रश्ने भ, ने ।)। ताय दं [ज्याय] १ ज्याप, में हैंने, (मीर, म ११६) हावा)। ३ ट्यान प्रमणः (वंबा ४: सि)। कारिवि कारिन्] न्यानां (मार्)। मा हि [का] १ न्यापना । २ वं न्यापारीता (म १९) °ट्राहि (शि) स्त्राम् क स्ट्रास्ट्र (स १४१)। लाय ५ [नाक] स्वर्ग, देवलंह ; (सम)। चाय रि वात । १ इत हम, दिलः (स : ए 22) 1 3 granterit, mir 14 ferrit er ; (6 स्त ()। उ वल्यांचे में व्याप्त (र्म ४ वे बंगीलेख : (इ.१) । १ व्यव्यक्तित, (६ : बन्ने) । ६ म्. उत्तरात, रूपम्म, (स. मूरा

णायन-पर्नः पाइअसहमहण्णयो । ¥92. णारसिंह नि [नारसिंह] नरनिहमकरो , (त 'द्रमार प् [क्रिनार | क्र-तंशीयशान-पुर ; (राफ १,८) । "क्रुट न["क्रुट] वश-विदेश ; 리 (15 (पार ९, ३)। "कृतवह पु ["कृतवन्द्र] सगरान् णाराय देखो णराञ ; (है 5, ६४ ; उस; ^{स १} व्यति १४)। 'यद्भ न | 'यद्भ] बंहतर हिंगः। श्चित्रपर , (अप:) । कुठवंड्म पू [कुठवंड्स] मधान धोनापरः (वस्तु, १)। अतः प्रति प्रति ₹, 90€)1 णारायण वुं [नारायण] १ हिन्दु, थेहन्त्र, (ह ' बराज्योसपर, (ब.का)। "सुनि वं मिनि] ६२२)। र मार्थ-जनाती साता, (पान १, ^१" अनगर प्रजापोर: (गा १. १)। "विहि वंशा [दिश्वि] मात्रा या दिशा के द्वारा सकन्य, v3. to) ! etratt. (4t t): संड न ('पण्ड) जारायणी को [नारायमो] देश-शिंग, की ह अपन विरेश, जारी अनवान, श्रामहाशेर वेश ने दीचा (गउइ)। नो वा, (बारा २, ३, १)। "सुद्रप्र स्ति"] चारि' देवं। चारी, (कप ; राज) । 'क्रांना स्वे [मनत्र भोनागरीत। "सुरतः [अन्त] हातापर्मकपा नही-शिवः (सम १७; व्य १, ३)। सामा बेर मारा पान्य । (साथ, ९, १) । "धिन्मकहा -व्यारिष्ट १५ [मालिकेर] १ नारिक का वेड, १३ मा (परेहरपा) जैन भागम-पन्य निषेत्र ; (सम. ९)। व्यास्थित विरक्षाक्याः (स्रीत १९०३ विश भाषतीतु [सायक] नेज, शुनिया, मनुमा , (उत्र ६४= वेशो पालिश्वर । दी, बाप, नम ५ , मार २२)। णादिंग न [मारिट्र] नारनी का कन, मेछ में कापन पु [मै] नवुद मार्ग से ब्यापार कान वाला मधिस हु ; , मीप , (क्या)। *कारका विकास सर्वास आधि ताम नायक्षे (उपस्थ स्टी) पारी मो [गारी] १ मो, मीन, वनन, 1 मापर देश भागर (वहा ॄनुग्र ९०००)। (देश ररण, प्रायुद्धरः १४६)। र गौ मापन्ति दश मःगारिष , (सुर १४, १३३) । स्री⊸ः ' (१६)। "कॅनत्यवाय पुं ["अतनावराते] भा: (स्टि) ह

भाग्यरी देशा चारतगी ६ (अति) इ साय जा रहे भा का । बार पु [बार] बहुर्य जन्द-वृत्तिनी का एक प्रश्नाह, (इक्.)। मारद्रम वि [मणशिक्ष] १ वण्ड पृतिश में अपन्य ; १ द नग्द सा क्षत्र ; (है १, २६)। बार्ध्य दु [मारकू] ५ इत-दिनव, मध्य का दुत ; ६ म क्षानिक, क्षात्रा अच , श्रंता : (वहम ४१, ६ : कुर #\$+ ; \$\$\$, #75, \$77) i बारम हे ही व्याप्त = नगढ : (तिने १६००) ह भारत रेड मार्स्य ; (प्रशे ६५) ३ च्यारदीय है। [सारदीय] सरट-चंबर है ; (प्रति ६५) ह बारप पु [मारप] १ मुनिर्दर्ग, जन्द की ६ (सन त्रक, बर इन्ट टा) । र कर्या नैन्य का प्रांतरिका पाला भी [मादि] नारी, ना, निर्म (हैं ' for 1: (25 4) 1 ब्यारय हि [सामक्र] ५ वर६ में उत्तर, माधनीयओं, महासूत्र णान्डि हेबर)। स्पर क्षते , किंद्र वेरंड है। उर्वे कार सुटनान्त षान्ति वि [के] करता, विता हुमा ३ (वर्) । मानिवति [दे] ब्र, ब्र्यं, प्राप्तः (१ 4, 1) इप्ते, स्पर स्ट प्रेंग , (क्न) ।

तिनेर , (श २, ३) । देला णारि । ं मानह दु [दे] क्रार, नर्नाहार स्वान । (पाव) णारोह १ वि । १ वन, गाँउ मारिया मने म श्विर ; २ कृतर, वर्तहार स्वान , (१४,९१) वाल व [नाल] १ ब्यन-रात , (वे १, १६) गर्ने का भाषाय : (उन १४४)। णा उद्दश्य 👭 [मा उन्होंय] । महम् न्यूर्य बार्वश के समीप में प्रतिगादित मान्त्रका-रिते हैं न्दर का नाश्ती धा-वयन ; (सुम ६, ४) । णा देदर भी [नान्द्रन्त] राज्यह नग के न्य (बद्धाः सुम २, ७) । वारंतिमन [हे] बाधनत, मचनका । णार्थवि वृद्धि कुल्यम, देश-क्लाम (१ %

```
335
                                                                     पासत दि [ नाराक] तम काने बचा : (मार, १८)।
                                                    पार्यसह्महण्याची ।
                                                                       णासण व [ नारान ] १ वडायन, करम्मण ; ( पर्नर) । १
                                                                         द् ताग करने वटा ; (म 3, २७; गत १२)। म्रा-
_पाहीए चिन्छेम ]
<sub>देनी</sub> पारिष्ट , ( दे २, ९० ; पट्ट १, २०) ।
[ होत ] इंत्र वित्तर : ( कम्म १. १६ )।
                                                                         वासन न[न्यासन] स्थान, व्यस्त्यासः;(मत्)।
र को [नार्क्तिका ] ९ बच्टो शिव : <sup>। इ. २,</sup>३) ।
ह, परी, इन्तु नपूर्व का एक नाह के पत्त्र ; (पामः
                                                                          जसगा मी [ नाराता ] लिए ; ( वि ६३६ )।
                                                                           वासव मह (नात्र श्री नाग कला। वास्त्र ; (हर, ३१)।
६९३)। ३ फर्स नगर में बर क्रोड़ स्टबा लांग :
                                                                            जासिविय वि [ नाशिन ] नः हिला हुमा, मतायः हुमा ॥
प्रदर्भ)। ४ यम् दिसयः, एह नगरं का जूणः ;
ती; मार्, ) । लेशुका [कोडी] ए
                                                                               णासः मी [नासा ] नाह, प्राचेन्द्रिन ; (गा २२ ; माना ;
हक्षेत्रकातः (सीत्)।
                                                                                 णासि वि[नाशिन्] किया, महदने वाता ; (वित
लिया देनो पारिया (श्वा १,६)।
क्तिरसे मो [ नाजिकेसे ] मीतवा के गाउ ; ( गाउ ,
                                                                                   जासिकक न [नासिक्य] इतिए माल का एक स्वनाम
'लो सं[नालो] ९ दसम्प<sup>द्</sup>शिय, <sup>एड स्ट</sup>र
                                                                                      प्रियद नगर जा झांत्र कत मा 'निविष्ट' नाम से प्रतिद्व है :
 (क्ल १)। १ वर्त्तिहा, पडी ; ( जल ३ )।
्यानी मो [नाडी] नहीं, न्य, निगः (विशेष, १)।
                                                                                      वासिना मा [नासिका ] नह, प्रातिन्त्य ; (महा)।
   गलाय वि [ नालीय ] नात-मंबन्या ; ( प्राव्हः ) ।
    गायह ( मर ) देख इस : (हे ८, ४६८ ; मर्वि ) ।
                                                                                        णासिय वि [नायिन] नर हिमा हुमा ; (मरा)।
भावजा न [ हे ] दल, विराध ; (वह १.३—वन ४३ )।
                                                                                          णासिर वि[ नशित् ] नष्ट होने वाला, विनश्रः ; ( हमा )।
      nan मा [ना] नीस, बहाब ; (मन ;टरा)। धारित
                                                                                        वासियस्य देशा पास = गर्।
                                                                                           वासीक्य वि[ न्यासोहत ] पंहर स्य हे न्वा हुमा;
     हुं [ चाणित ] महुर मर्ग स ब्यावत काम बाता बांगक ।
          विद्वार पुंहि वुद्दः वुन्तुः । भूतंत्रं रावस्पाद्धं आया-
                                                                                             वासेयक देती वासिकक ; ( टर १४१ ) । न
         (दावा १,=)।
                                                                                              वाह पं [नाय ] स्वामी, मुन्तिक ; (क्मा ; प्राप्त १२ ; ६६)।
                                                                                               चाहल वृ[साहल] इत्वा को एक अविद (हे ९, ११६)
          गाविम दे [ नावित ] नः, हत्तम ; (ह १, २३० ; कुमा ;
          ्वड्)। साला मा [ शाला] नहमां वा महः
                                                                                                 वाधित्वं वासिः (क्तः इत्)। रहपुंचिते
            , गाविष पुं[नायिक] सहस बटाने वजा, नेका होकने
                                                                                                    हमा, बतुमंत्र ; ( प्रस्तु ३६)।
                                                                                                   चाहि (मा) म [नहि ]नहीं, महीं; (ह ४, ४१६
                बाडा ; ( टास १, ६ ; मुर १३, ३१ )।
                 गास देश पास्त । दानाः (पर्ः गरः )। बह
                 ्यास कर [ नाराम्] तात करता। करता।
                                                                                                          [चाहिर्] नालिह साबा मनुत्यी; (सुर ६,
                 गास पं [नारा] नरा, व्यंतः (प्रान् १६३: प्राप्त)।
प्रदेशिकत्र वित्र व्यवस्थाः (मुर् १३, १६४)।
                                                                                                           म १६४) । चाय ५ विदि नित्तर सर्व ; (तन्त्र
                      अतु)। सन्तरः(महःहत्रः)।
                                                                                                          प्राहितिकोम हे पृष्टि करने वा
                 वटमा कर् नियम् (सही हिस्से रेट्स रेटर)।
तास इं[स्मस] र स्थानः (सही हिस रेटर)।
                                                                                                           काराय-विच्छेत्र) (ह ४,२४)।
                          र पातर , स्वतं संग्रहन करि ; ( इर श्रम्यो ;
```

'४८० पार्असङ्मा	क्ष्णत्रो ।	वि∹	
णि ल [ति] इत सची का संदक्ष सम्बद्धः — । नियरं, (उत्तः) । १ नियरं, निर्माणः (उत्तः) । १ स्थानं सम्बद्धः समित्रः समित्यः समित्रः समित्रः समित्रः समित्रः समित्रः समित्रः समित्रः समित	दार्शवरची मा-चा, "गृत्त माणि विभिन्ने विभिन्ने विभिन्ने माणि विभिन्ने हुँ [नियम्बन निर्माण माणि विभिन्ने विभन्ने विभ	() () () () () () () () () ()	•
·			

```
المستعد من ويتين المستعدي من المستعدد
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  و دور پیشند دید.
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                [بيببعسيت
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             . ----
سيوان ( المستون ) و ومنها مساوي
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       والمستعدد والمستعد والمستعدد والمستع
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                : =-.
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               THE SEC STATE OF SECURITY STATES AND AND ADDRESS.
A STATE OF THE STA
المتعارة المتعارة المتعارة المتعارة المتعارة
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    ニーマ · テーマ · 「 と と 、 ? · 1 「 元 下 [ 一元次]
     Shake the war to be at ) I all more
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      Sing in the same of the same of the
            من من من المنافعة ( المنافعة ) من المنافعة المنا
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      المعلقة والمستعمر المستعمر الم
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              المستنب والمستنبع المستديد فيزيم
     ا مَعْرَضُونَ وَوَ مُوسِّدُونَ أَ مَعْرَضُونَ الْمُعْرِضُ وَالْمُعْرِضُ وَالْمُعْرِضُ وَالْمُعْرِضُ
               The free of the same of the con-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        Form = [ ] 450, 270, 3 - min, 200, 3 22, 47,
                                        Francis ( Francis , Francis ( Francis )
                                                                         إلى و المستار و المستر و المستار و المستار و المستار و المستار و المستار و المستار و ا
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 चित्रमा मो [निर्मा ] उत्तर्त वित्रमित या गर्यः
                                                                      المائد المائد المائد المائد
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           المستويد المستوية والمستوادة والم
                                                                              ( - 141 , TEA ( - 11))
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        - ( ) ] m, ( - , , + x 12 ) )
                                                                         المناوية و [ المعاومة ] عند و معاور و الما
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             المنظمة و [ ع ] المناه مو لم المناه و المناه و المناه المن
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     المستعدة [ع] عبد عن و جمعيد فيه ; (ع)
                                                                                             المستعمر الم
                                                                           France ( France ) = Fr. miles : ( = 3, 5; fee
                                                                              $ 1, 13 , 5 mg 1 mg market 1 mg 2 mg 1
                                                                         المراجعة والمتاكمة المتاكمة المتاكم المتاكم المتاكم المتاكم المتاك
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         (Tenter ) 3 [ Fernita ] 2 22 2 5 5
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       · 新西西西南部
                                                                                                                                               रिक्कराज्ञिल
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          ) == = *, == ) 1
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           हिम्मार है (वे कियार) कर्ता है। के के किया
                                                                                                                                             المستهدد والمعتددة والمرسيس ميده
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     144.44
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       Fant ([=] = +, int. (=)
                                                                                                                                               Tuna 3 : "Tuna : 3 : 17 : ( 51: 18 ) !
                                                                                                                                                              France of France of State of S
                                                                                                                                             Frank at a factor of the state of the state of the
                                                                                                                                             Tarac 200 Fact 1 ( ** 2 - ** 10 2 - 15 2 )
                                                                                                                                               THE THE PARTY THE PROPERTY OF THE PARTY OF T
                                                                                                                                                                                THAT TE THE THE E THE ! ! !!!!
```

गिर्वित्र है [निकुडिवन] गृहिना, सुर हुर.

मुद्दा हुता ; (बा ६६३ ; वे ६, १६ ; प्रम ; व श

णिउंज नह [ति ⊹युज्] अधना, मंतुष्ट स्में,

कार्य में शाना । कन -- वितंत्राप्ति , (विशे

वरु-विडजमाण ; (सूप १, १०)। वार्न

जिज्ञा, निव्दतियः (स १०४; मरा)। हर्न

जियव्य, जिउसव्य ; (उर १ ९० ; इस)।

"कड रि ['कुन्] जिसने घरने सुभानुदान क एउ का व्यभिक्षाप किया है। यह; (सम ९६३)। °कादि वि ["कारिन्] बही झनन्तर उक्त भर्षः (छ ६)। णिआण न [निपान] कूप या तताव के बाद पशुर्मी के अत पीने के लिए बनाया हुआ अल-कुउट, आहाब, हीही ह " पर्भगणं पहहर पर्मन पर्नरं पर्निवाण " (टन ४२८ ही) । णिमाणिक्षा सी [दे] सत्तवतृशों का सम्मृतन , (दं४, ₹k)ı णिभाम देखोणिशम⇒नियनयु। सङ्—उपन्या णियामिला मानोहताए परिव्हर " (मुझ १, ३, ३) । णिश्रामग) वि [नियासक] नियम-कर्या, नियन्ता , (पुरा णिशासय) ११६)। १ निधायक, विनिगमक , (विने 1800 " 1 Jao) 1 णिमानिम वि [नियमितः] नियमं में रखा हुन्छः, निय-निवन ; (स १६१)। णिभारसङ [काणे हित कृ] कानो नजर से देखना।

हुआ , माधी न्प्रस दे बाहुमा ३ २ न् मध्ये नदर स

विमारद ; (द ४, ६६) ।

द×ण, वनं, गमो ; (गउ≭)।

२,४; संद; माका; स्य ११२,)।.

निराज्ञण 1 (दुमा)।

वादो, पदार्घ का निय मानने वाला ; (का म) ।

जिभाइय देखें। णिक्राइय , (गृम १, ६)। '

न्त्रण दे कर जा निजा दो जाय वह, (दम ३)।

जिआग देश णाय≕न्याव ; (माचा)। ∙

णिमार्ग पुं [नियाम] ९ निवन बाग ; ९ निवित बूबा :

णिआण न [निदान] १ बारव, हेतु, " बारा धर्म निवाय

महंतो तिवासः " (॥ ३६०; पासः; वादाः १, १३)।

१ महा, मुकि, (भावा, सूग १, १, १)। ४ न् भाव-

रकियो मनानुष्टान को फन-प्राति का सभिनात संकन्प-विगेर আিডর বুঁ [নিকুমর] ৭ বহন, তথা মাহি বু ^{[মা} (भारेरे; टा १०)। ३ बृतदारच, (झावा)। (दुना; सा २९७) । २ सह्यर ; (४ ६, १११) णिइंस पु [निकुम्म] बुम्बवर्ण हा एक पुत्र । (रे १५ णिउभिन्हा सी [निकृष्टिमहा] बहस्यन : (रे १३) णिडक्क दि [दे] तृथ्योक, मीन सूत्रे वर्षाः । 1 (HIP, 05 व्यिडकरूप १ (दे) १ वायन, बाब, बीमा: १^९ बाङ्सिक में होत ; (दे ४, ४१)। विडव्हम वि [निहयम] उपन्यहित, महती, 1, 2)1 बिधर् बड [संस्त् , ति+प्रुष्] सबत हाता है बिडाह ; (हे १,१०१)। बह-विडड्साय, ह णिवह वि [सहा , निम्नु हित] हवा हुमा, निम्न , वि 18: 18, 48) [णिडण वि [निपुष] १ वजा, बदुर, क्रांड: (^ह स्वन १२ ; प्रात् ११ ३ जी ६)। १ सम्ब चुदि से जाता जा सक्त , (जो १, सप)। द्वास में, च्यार्ट में, कुराजना से , (बांद १)। णिडण वि[निजुण] १ तिया गुण दाला; १ बुख न बुख , (र.व) । रे मुनिरिया, विविधीत , (र्वा णिउणिय वि [नेपु णक] विनुष, दत्त, स्ताः णिआरिस वि [कार्गिस बोहर] १ दानी नजर से देखा णिउत्त नि [निरुष्टर] १ व्यापारित, इप्तर्ग हुमा : (पथा ८)। २ नियह, (मिन 🎏 णिउत्त वि [निर्वृत्त] निमन, निर्दर, (उन भ णित्राह पु [निदाध] १ मोत्म बाल, मोत्म बहु, २ णिउत्तरव देखा पिउंज=नि+युन्। णिडद न [रियुद्ध] बाहु-पुद्ध, कुली , (अ गरी चिद्ग) वि [दे नित्य , नैदियक] नित्र, सत्त्व, धनिनश्द वितर व [विहर] इच-दिये। , (वाबा १,६-वारी बिह्य (क्ष १,४-वर १८१; हिंद १, १, ४; णिउट व [न्युट] सा के पाँव छ एक मानत्व, हा १२३ ; कुमा)।

४८४ पाइअसह	महण्णयो ।	णिकाय-जिन् ^{कार}
जिकाय प [निकास] विमन्त्रण, स्थीता ; (सम २१) ।		
विकासणा सी [निकासना] १ करक सिंग, किने को वा निकर पन्य होता है ; (विमें २६१६ टी ; मन)।		धन, चवतः (दे ४,३१,४) ध्यः दर्वतः सोधः (^{ग्रूप} ,
१ निश्वा कथन , ३ दापन, दिनाना ,(गड)। विक्रित सक्क [नि+ छन्] बाटना, वेदना। विक्रियः		
(पुनः ३३७ . उर्), बिक्किस्, (उद:बानः)। सिक्तिपारि (निस्तिक) काट बालने समा, (कार्तः)।	, पत्ररुग)। णित्रकड कि [दे] १ की निर्शय ; (पड्र)।	
निरुष्ट्र शह [ति+कृष्ट्] १ कृटना । २ कारना । विरुद्देर	. जिस्कडिय वि निष्य	ट्रिनियक्तिवित] वार्यक्रिकी
विकृति । (उस)। लिकृति ये थे [निकृतिन] दश दिवा हुमा, वह दिवा हुमा	वाहर निधाला हुमा ; (जिस्कण वि [निध्कण]	धास्य-कव-रहिन, ब्राह्म हो
(व १,८८)। लिपेय पुं[निकेद] दा, आध्या, नियान-स्थानः (सार	(शिता १, 1) t	न्द्रा । बाहर निष्ठामा । १ ^{हेर}
१ १६ , दन २ । आचा) ।	सना, गन्याम सनी १ । व	рания ((1 ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °
निकेयम म [निकेमन] अपर्थमो , (सुर १६, ९९ मरा}।	Garage - (Garage) :	नेज के बंद
निकोष पू [तिकोष] संबंध, सिटः (दे ०, १६) निक्का हि [दे] मुनर्बन, सर्वया सन-गरिहः (साया १,६		ा] १ विष्मत, बार विशे ता, संज्यात (शाका)।
जिक्करमञ्जा । [निक्तियः] १ वया व्हात, निर्माय (१ता । १ कार वा सभाग, नित्वप्रदेशन , (वा ८६		मंद] १ कार्य-ग्रेश, विम हिन्दा, १ संग, व्यो वा विष
नितंत्रकार कि [निरम्बहुद] १ बातमा स्टिन , (बीस १ जनार स्टिन , (सम. १६०) ।)। (प्रायः)।	३ • व्हला, उद्दल्थ, (ई
निक्कविय व [निक्काड़िक्षर] ९ माशर्सा	की ३४१, पत्रमण, १२६	()[4 0 6 4 1
শ্ৰন্থ , ২ বৰ্গৰন্ধ হাগৰিম্য , (জাণ, গাঃ) বিশ্বস্থিয়ে ([বিজ্যাহিত্যৰ, ক] । শ্ৰেষ্ট্ৰা	ाः विस्करण ६ [निष	त्रण] कन्ता रहित, दर <i>री</i>
२ तर्जनस्य के वशान में ग्रीन , (सुब २, ०, मी) स्व) :	ा, (नाउ-∽मालाघ १९ <i>)</i>	Terrary (881)1
विकासिक है [निम्बाद्यत] हार्य-देश, बन रहे विस्त : (मृग १६८) ह		भ में रहित, (हुता १ ; मा) लहू] बनाइक-रित, बेरणा
चित्रपंदर रि [नित्रपद्ध] कारकारित, सन्नीरे (सर २०८) ।	प ; ४९८ , यश , युत्र २। विकास	(3) l eart (9% 1,1)!
विश्वंद्र ([निन्दापद) १ इप्टर्मरा, स्ट्यार्थ	ते, जिल्लाडुमा(निज का,सम्बद्धाः	-34] 1 HELP WALL
= इक्स्पर्यात् , (ग" ४१६) । स्तिकृत ([तिग्दान्त] १ जिले, बार निद्दा हा	E	
(में ५, ६६) । रु जिप्ने दीवा को हा तर, हराबार क्रिकेट (कवा) ।		त्यस] काष-१३ वर्ष
सिक्टरार ५ [निकास्तान] क्रांत है सि (ग्र.५)।		कष्] निहालकः, वर्गक्रिया वि. (उत्र १) ।
चित्रक मुध् [जिल्कासिन्] हरण वहारत वहा , (सा	গ)। বিষয়নার র বিংয	त्मन] मिर्जन , (^{मूच} ी

```
The state of the s
                                                                            जिस्तान र [निःसन ] स्प्रान्तिः संन्तर्भातः
                                                         याद्यस्महरूकत्रो ।
                                                                              िस्यान कर [रिस् + सम् ] १ वर्ग विस्तर । १
रमाय-स्निम्युः ]
المعين المستدر ] المستدر ومرد
                                                                                  *** ** *** *** | Frank : ( $11 ) !
क्षेत्र (स्पर्)। १५ स्थापकेष्य के स्पर्व केर्यः
                                                                                  हिल्ली (स्व)। मा हिल्ली (स्व)।
                                                                                    क्षी-रिक्टिक्ष (क्य)। यह-जिस्सममाणः
                                                                                    ( हापा १, १ , परम १३, १०)। मह जिल्लामाः
हान्द्रा <sub>र</sub> (एक ५३३ ५)
त्त्रका म [मीवा] गम्मात्म , (क्रम
                                                                                      (क्य)। हरू म्बरगमिनणः (इयः क्य)।
न्तरसम् हि [नित्यस्य ] स्टब्स्यूय्यः
व्यवकारण वि मित्रकारण है । काराजीतः, केनेतृतः
                                                                                    क्तियाम हत [निष्यम ] १ जिल्ला ; १ ईन्लान्याय ;
  (m 2, 21) 12 1st fer um 1 wit 1
  संस्थारित वि [नियारित्य ] व्यस्त्रित्व, हेर्
                                                                                       चिम्प्रमण न [निफ्रमण] कर देनो ; (मून १३ ;
   क्तरताल गर[निर्-कारवय]बन्दा निर्मलना । मह
                                                                                         चित्रसम्बद्ध (के निवत ) वित्तः, समा हुमः ( के ४,
भारकासिक । (निष्कासिन) वहर विकास हुवा: (गर)।
भारकासिक । (निष्कासिन) वहर विकास हुवा: (गर)।
                                                                                           चित्रपवित्र रि [निसरिव] कर बिच हुमा, स्तिरिव :
       सिविष्या (१ (निरिक्तस्यते ) व्यवस्थित
                                                                                             क्तिसम्बद्धित (है) हीत, के त्र विवा कारी,
        क्तिबह दि (तिहर्ट) ब्राज्ञ, क्षेत्र, क्रान्य, "क्रार्टिन
            दिस्तर्यसम्बद्धाः विद्यात्रम् १०० ।
                                                                                               जिस्ताचिम्रि (है) गुन्त, टारामयम ; (वर्)।
                                                                                                चित्रितत्त वि[तित्रित्त ] १ न्यत्ता, स्पतिः ; (पामः
            तिबिका गर्ट निर्भक्षो दिल्ल वानाः वागरनः।
                                                                                                   बर्द १, १)। २ सन, वर्ग्यकः (दासा १: १
                                                                                                    वर १)। व्यस्माल में स्पितः (पर २,१)
              निविकालम शि [निक्तियम ] मर्नामा, मण्डा, खाना
                                                                                                     'बर शि विष ] प्रत्नाल में लिया पत्तु हा निला
                लिक्सिय वि [ति निय] हिन, महिन हिन्द ; (पार्व , १)।
                                                                                                       वित् मोति वार्ताः (पर्व २, १ ; प्रेंप)।
               तिक्ति वि (विष्ट्र) हाल्युः, निःवः, (यम ,
                                                                                                     चितिष्ययमण तीव देखे ।
                                                                                                      चिवित्रव मह [नि ÷िल्पु] १ स्थान करन,
                                                                                                          स्पन में रहता। व परिल्ला इन्ता। दिश
                   चिक्कं लिय वि [नियमादिन] समन, स्तेन , (पर २,०९) ।
             ((30) 問:明(1)
                                                                                                           (मरः)। निक्लियंतः (नित् १६)। व
              ित्रकृत ५ [तित्कुट] न्तर स्तर्तः (सत्तः)।
                                                                                                            निविश्वणमानः (भाग)। महि—निविष्ठ
                      चित्रकृत्त का [ते] इत्य हुम्, विश्वेद्धाः (द्वा ४)।
                                                                                                            निविविवित्र, निविववित्रं ; (बन ; नि ३१८।
               ्रितक्ताहण न [तिर्द्ताहन] बन्दन-वितेष, (बाह १, ३-
                                                                                                             हिंद १०३ ; वा १ )। हर्—िणिहिस्सियप्रव्यः, ।
                                 तरमहित्द-कार्ये । देवाव
                                                                                                              स्ताः (पह १, १; ति ६१)।
                                 लिक्तिव वं [निवेग] १ स्त्रान । १ व्ययस्य
                                                                                                                हर् यन प्रादि जना रतना ; (ग्रा १४)।
                                 इकारण न [निकारण] १ पत्र मार्वेड सुँरे वा
                                                                                                               लिक्लियम न [निक्षेपम] १ म्बार ; १
                                 त्यातः । २ पत्र क्राहिक्य तत्रच । (हुट् १)।
                                 त्रस्य है [ है ] १ जार १ सुर्ग्य, इ ज्वर, (१ २, ००) ।
                                                                                                                   (सुन ६३६ : ५%)।
                                                                                                                 क्तिशुह वि[वे] प्रस्ता, दिनः । (वे ४, १
                                                                                                                  चिम्बुड पुं[ तिस्कुट] परंतुः . (ति
                                 चम्म के [लिंद्र] हमा, महर, चुरा, रहर ; (हर, र)।
                                 चित्र वेत हेता चित्रकृत ; (चूमा, = ; मन १८९; बन)।
                                  चित्रसंघ वि [निःस्कन्त्र] स्ट्यानीलः (सारह्म्म)।

    2.51/59
```

200

पीर्त्रम	इमहण्याते ।	[विश्वत-सिद्
णिरेखुत्तन [दे] निष्चा, सस्तो, कारत्, बार्ग्स,	c · · ·	
भग विश्वविश्वति नामह मुद्दा नाहवा निहत्रले । (क्रूप्स	गणगल देश विकास । ३ चिक्र ४-३ ४	बड़ी के बाहार का मीर्ज मर्ग
१३, १३८), 'वन्' दाहासि निश्चन'' (११२० ०० ८०) ।	िया, ; (भीर)।	
णिक्युरिश वि [दे] ॥ दृड, म-िया । (दे ४, ४०)।	जिगन्तिय देगो जिगनिय	ا(د تخا)،
णिक्येड पु [निष्येट] मामना, नोबन, दुश्म , (सुन	जिगाम न [निकाम]	भारता, मतिगरः (
sue) 1	था १६)।	
णिक्षेत्रव्य देया णिक्षिय=नि+चित्।	णिगाम ३ [निकर्ष]	परस्य समीजन, मितः
णिक्येव पु [निश्चेष] १ न्यान, न्यान , (मणु)। २	(सग २३, ७)।	
परियान, माचन , (आचा २, १, १, १) । ३ घरोहर,	विगितिषय देनां विगित	()
पारचान, (श्रीचा १, १, १, ६) । ३ घरोहर, धन प्रादि जमा रखना, (पुउस ६१, ६) ।	^ध ाह देशो जिक्किट	(सरा १८३) १
गिमन्वेयण न [निश्चेपण] १ निर्नेष, न्यासन , (पा ६)।	।णस्यार[सद्ग]सत्र, व	र्त्या, (भावां १,६
१ व्यवस्थापन, निरमन , (विते ६११)।	", " , IT " {	
णिक्जेवणवा } सी [चिक्केक्जः] स्वापना, विन्यान,	णिगिण्ह सह [नि + प्रष्] ९ निम्नद्द करना, इ
1014 (HQUI FAIT ECT) a	गिया क्रमा। १ सक	ता। ३ बद्बेंग
गिक्संस्य प्र निश्चेत्रक है जिल्ला करणकर (क्रना। संहणिमिति	अध्य, जिग्धेउं,, (
णियम्बेसिय वि [निश्चित्तन] १ त्यस्त, स्वास्ति, ३	=व्य;राज)। ह—ि	गशिण्हियस्य । (उर १
	णिगुंत वह [नि+गुप्त] ৭ বুহৈল, সন
णिक्लेविय वि [निश्नेविन] उस हेना । (क्या है	करना। २ नीचे नसना।	वरु — णिगु जमाय
	ी, ६ -एत १६७)।	
14019 1 40E EX A9 / "	णिगुंज देख णिउड्ज = नि	कुरुज्ज , (भावम)।
पिछार्ज म निस्तर्य ब्रांस्ट्रा क्लिक की कर्ज (षिगुण वि [निगुण] गुण	नहित्र , (पञ्ह ९,३)
णिचिस है। चिक्रिन 1 - 1	।पगुरच देश णिउ(व , / ।	PR 9. ¥) į
महावीर ६७)।	।परमूद्ध वि स्तिमृद्ध ५ स	ल, प्रचळक्त . (६४२)
णियंड देखें णिअंड: (विके २३२३)	मत्ना, मान रहने नाला , (र	লৈ)।
प्रिंग व व वस, धास, तास्यो (े प्राप्त ।	णगृह सह [नि + गुह्] हि	प्रता, गे(पन करना : ि
णिसद सक [ति + गट] । बद्धाः ।	(वर्व , महा) । विषयिति	. (सहिं ३२)।
	णिगृहिक्रण ; (स ३१६)	1
णियम वं विराम १ प्रत्य हैल . (६३ ००००)	<i>पगु</i> हण न [निगहन] गंप	ल, द्विरनाः (पर्याः
र ब्यापार-प्रधान स्थान, जहां अग्रामारी क्रिकेट जीवना ज	थग्रहम 📶 [नग्रहत]	क्षिराया हुमा, गारित्र :
भ्यायाच्यासद्धिमाहि, विकास क. ५. चर्चेच्य	f3=)!	
र जारपार्ज्यमुङ् । सम्बद्ध । ।	गेगोअ पु [निगोद] भनस्त	जीवों का एक साधारण
प्यामण न [निगमन] अवस्य सम्बद्धाः	निरोद,(सन, पत्रपंत्र)।	"जीव पु["जीव]"
	द्या और , (सग २१, ६, ३	माγ,⊏t}I ⊑mri
णियमित्र वि [दे] निवासित , (पर्)।	प्रमा देना णिग्गम ≕ निर्- (भनि)।	⊦गम् । वह-सिम
	(114)(Britar (-1)000 0	
Function of Ferman 2	र्ग्यंटिद् (शौ) वि[निप्रस्थि ११२)।	रत] कुत्रत, श्रथाः ।
जिसरण न [निकरण] दास्त, हेनु ; (सन ७,७)। जिस्ति है। निकरण] किला	र्षितं) ह	
जिस्तिय सि [निकस्ति] सर्वन सोचित ; (पंद १,४)। जि	ष्पांतुं व्यातृष्य } देखा जिल्लाम = निर	[+गम् ।

```
હેડક
```

```
णिगगहि वि [निप्राहित् ] निप्रह कर्ज वाला ; (स्त
                                    पार्असहमहण्णवी ।
                                               णिस्मिण्ण वि [देनिर्गोर्णः] १निर्गत, बाह्य निरुता हुमा :
ग्र देवी णित्रंठ ; ( ब्रीप ; भ्रीप ३२८ : प्रस्तु ९३८ ;
व—िणग्वोस ]
                                                 (दं ४, ३६; पाम)। २ वान्त, दसन क्रिया हुमा; (म
गंच वि [निर्दरण] निर्दर्शनंबन्धी ; । गाया १,
                                                 चितिपह देशोचितिपह । विकिन्द्रितिः ( विके २४८२ )।
                                                  जिति हिन हिन हिन कि वाल वे मन दिन हुमी;
तार्यो स्रो [निर्मन्यो ] जेन मार्घ्यो ; (राम ९,९;
                                                   जित्तुंडों को [निर्मुण्डों] प्रायपि विशेष, वनलित संमास ;
चाराच्छ रे मह [ निर् +राम् ] याहर निरुद्धना । िया-
प्राताम ) च्छ : ( हा ; कप् )। वह-प्रितासन्छन.
                                                    जिल्लुण वि [ तिर्मुण ] गुरा-हिन, गुरा-होन ; (ता२०३ ;
 णिगान्छमाण, णिगाममाण ; ( सुरा ३३० ; खासा ९,
 १ : मा १४६) । मह -िजामिन्ड ता, जिल्ला तूर्ण,
                                                     चित्रगुण्य ] न [नीर्मुण्य ] गुननहित्रम, गुनर्शनना, जिल्ला, जिल्ला, विस्तु : मन १४)।
                                                      ख ; फ्र १, २ ; हा पर्दर्श ) l
  (क्य; स १७)। हेरू — जिलते हुं ( हम ७२ = हो)।
चागम पु [ निर्मम ] १ टम्पनि, जन्म ; ( विते ११३६)।
                                                       जिस्ह वि [ निर्मुट ] निवर स्थ में स्वासिन ; (सुमर, ७)।
२ बाहर निरुद्धना : (में ६, ३६; ट्य पू ३३२)।
                                                       किमाहि पुं नियप्रीय ] यन निर्मन, वह का पेहुं , (प्रम
हातु दावाला ; (ते २,२)। ४ बाहर जाने का शस्ता,
                                                          २, ३६ : पह )। 'वरिमंडल न ['वरिमण्डल ]
     अर्गेश-मेन्यल विशेष, बटाकार अर्गेश का आचार ; ( मम
        प्रण न [निर्गमन ] १ लिलारा, बाहर निरुतना :
        (प्या १, २, सुरा ३३२; अ ग)। २ पलायन, माग जाना; ३
                                                          जिल्होंट हे हेनी जिल्हेंड : ( इस )।
                                                           1 ( 3 15; 389
        त्मामित्र वि [निर्मामिन] बाहर निश्चता हुमा, निस्मानि ;
                                                           क्तियह वि [ है ] कुगत, निरुण, बनुर ; (हे ४, ३४ )।
                                                           िंगचंद्र 🕽
        नामाय वि [ निर्मात ] निःस्त्र, बाहर निरुता हुवा ; (वित
                                                            चित्रयण देन। चित्रियण ; (विष्ठ १०२)।
          १६४० ; हवा )। 'जस वि ['यरास् ] जिलहा परा
सहस्म केटा हो ; (गामा १, १=)। 'स्रोत वि
                                                            जिल्यतिय वि[है] तिन, वेंश हुनः ; (वाम )।
                                                             क्तिवादय वि (निर्वानिन ] १ मायत-प्रात, भारत :
           [ भोद ] विवहीं मुगन्य नृद केती ही ; ( एस )।
                                                               ब्याकरिष् सित्तिष ; (शादा १, १२)।
                                                              क्तियाय १ [ निर्यात ] १ क्रांत्रत, 'निर्वातुर्गर
        ि चिताय वि [ निर्मात ] हार्योगीत । ( भर्त )।
                                                                कुमानियापिकृतियं घर्मने" (सुन ३)। २ वि
           जिलाह देशा जिलिएह । क् -जिलाहियस्य ; (नुस
                                                                 का सिन्हा; (स ३०४; होस ९)। दे ब्यन्त
                                                                  वर्तना ; ( हा १० ) । ( दिनागः ( गुम्न १, ११
        जियाह वे [ निमह ] १ वर्ष, मिला ; (प्रास् १३० ; हात
               ६)। व निराय, झरराय, म्हण्यः (सर्व ४,६)। ३
                                                                 चित्रधार्यण न [ तियातन ] नाग, वित्रम, उर
               बर बरना, बन्यू में अस्ता, नियमनः ( प्राप्तु ८० )। हिला
                 ः [ स्थात ] न्याय-गाल-प्रतिद्वं प्रतिक्तन्त्रति व्यक्ति
                                                                  चितिया दि [ निर्मुण ] निर्देष, क्यानित, ( म
                                                                    ١ ١ ٩ ٩ ١ ١ ١ ٢ ٩ ١ ١ ١
                 ज्यस्यनः (य १; नुम १, ९३)।
                 त्वामाहण न [निप्रहण] ९ विमा, जिल्ला, वेरवः (स
                                                                   क्तिकेष देगे, विनिष्ट्।
                  ١٢, ١) ١ ؟ حصر أحرص أجرم ن ( برم وع ؟ ) ١
                                                                    क्तिचेद व [हैं किंद, रहारंगः (ह ५
                 चिनाहिय दि [ निगृहीन ] १ जिन्ह दिन्ह दिन गर है।
                                                                     क्तिकोष हैं। तिलीय निमान मत्त्र रहा ।
                    बर ; (मं १९४)। ३ वर्गाहर, वरम् : (कारन)।
                                                                       1 ( Edd 283 ) 1
                   चिला मी दि रिक्त हर्णी : (द ४, २४)।
                    चिनालिय है [ निर्मालिय ] गुण्य हुम (इन वृ = र)!
```

```
[ । सबेह 🐍 ।
                                        पाइअसदमहण्णयो ।
844
नियंदु 3 [निययदु] कर बाक, नाम मंतह, (भीप, अब) । विच्लुक्तोत्र ) वि [ तिस्योद्योत ] १ ५ १५
गियम १ [निकप ] १ क्लीस का प्रवार, (अलु )। २ | णिक्युडसीय / युरतः २ ९, अर-सिरे, अंपेन ।
                                                    विगेर, ; (टा १,३)। ३ त, एक रिपास <sup>सारा</sup>, <sup>(त</sup>
 कर्नोटी पर की जारी मुख्यें की रेखा . ( सुरा ३६९) (
                                                  णिब्युड् वि [ दे ] १ उत्त्व, शहर निस्ताडुमः (ग.
नियय दु [नियय ] १ स्मृद, ग्रश्चि , १ उत्तरह, पुष्टि ,
 ( प्राप्त ४००, स ३६६ , प्रत्या, सहा )।
                                                    २ निर्देश, दवा-हीन : ( पाम )।
णिन्दिशं दि [निनिष् ] १ व्या , सरहर , (स्रीत १)।
                                                  णिञ्युध्यित्म ( वित्योद्धियः ] मा निनः (हा
 व निवित्तः, पुष्टः, (भगः)।
                                                    3)1
सिमुत्र पू नियुष्ठ दिन-सिरेश, बंतुन इस , (म १९९,
                                                  णिक्वेंह देशो णिक्विह , ( शामा १, १ ; 5' १,11
                                                   णि क्वेपण 🖟 [ निरुवेपन ] बेन्ना-गीत, ( 🕬 )।
 有品 11
                                                   णिच्योउया भी [नित्यतुका ] होगा रहता ।
गिरम रि [ निरय ] १ व निरार, गास्त ; (धांचा ;
 भी)। १ व नियम, मर्दर, इमेगा, (सह.,
                                                    वाली भी , ( य १, १ )।
 प्रयू १४, १०१)। "च्छिणिय वि ["क्षणिक ] निर-
                                                   णिक्खोरिकक न [ निक्कीर्य ] १ केरी द: प्रशास
 मा उन्त राता. (काशा १, ४)। "मंडियां सी
                                                    बारोन्सहर , ( बर १३६ दो ) ।
 [ मण्डिना ] अन्य प्रशासिक (इक् )। याय प्र
                                                   णिब्द्धस्य वि [ मैध्ययिक ] १ विग्दानंबनी।
 ियाद ] का थे का निय सनने शता नद : "महदरस-
                                                    निरुपय नयः बन्दायिक नयः, परिवास वदः (पिर)।
 शामगान पुरबद्द नियमतावाक्ष्यमि" (सम ९८)।
                                                   णिवज्ञडम वि [निरज्डनर ] १ कार गीर, मण्यो
  मी म ['सप्] नए, नर्रश, निस्तर, (बहा)।
                                                    ( तम = , सुता ३६०)। २ कि । दिला इष्टा (र
   ार्देश्व, 'रदोव, 'रदोव g [ालोक] १ एक शिया-
                                                    £9 ):
  भगगत् ( पत्रन ६, ६२ )। २ महास्त्रियक देश-
                                                   णिञ्छरक वि [ हे ] १ निर्नेश्न, बेराम, १४ : (#
  स्मिः,(दार,३)। ३ श नगरस्मिः, (पद्यस्,
                                                    वर k }। २ मध्यरका नहीं जनने क्या, हमर्

 रूप्ति । वृद्धि नर्वता प्रधान कला , (क्ष्णि) ।

                                                    (शह ) ६
 निरुवादनाणीय ≖ अंत्र, । सन ६१)।
                                                   विश्वसम्बद्धाः वेना जिच्छात्रमः, ( इतः, नारं १८६)।
 गिद्दरपु ति [ निधासुन् ] नत्रभी, नेदहीन, सरवा ,
                                                   णिबळय गह [ निर्+चि ] लिखा बाना, निर्म हो
  ( प्रथम मर, १५ )।
                                                    वह चित्रज्ञरमाण (तः +१८८)।
                                                   णि उद्धर पु [ निजयर ] १ निज्यर, निर्णं । ( इर.)
 निष्यष्ट ( मन ) रि [ गाड़ ] गण, निर्देश (हेंद, ४०२):
                                                    ९००)। इ विश्म, अधिनामच , (राज)। १
 विषय १% विष्ठा , ( प्रते २१ : वि ३०१ ) ।
                                                    िछेद, इन्सर्विड नव, बान्नविड पार्व हो हो मन्त्रे प
 नियवर १३ गिन्धर । विज्ञाह : (॥ ४, ३ दि )।
                                                    वरियाम-बार : (बुर ४ , वंशा १३) । 'सहा में हिं
 विकास महिल्ली मध्य, हाइन, ब्ला। विकास ह
   (देश, १३३ ६ वट विष्यवस्त (ह्रमा) ।
                                                    Wirt, ( 64 t ) :
                                                   मिन्छान्त्र मह [जिहु ] वता, बरमा। विभि
 किंदन र मद [मुम्न] रूप का दादन, गुण का राण कामा ।
   दिवसम्बद्धः ( ह न, १ र है) । जुद्दाः - व्यवस्थाः (वृताः) ।
                                                    (80, 330)1
                                                   चिवउन्तित्रम ति [ किम ] बारा दुरः, ( वर्ग , <sup>क त</sup>
 विस्कट ६ [ निअट ] १-४१, दा, सवर , ( १ ३, ३५,
   • । प्रवाद कि ] मृत्यु स्थ , ( वधा : ४ )।
                                                   चिवळाय वि [ विश्वाय ] कांन्निर्मा, गार्थिय
  विभिन्न । [ निवित्न ] किन्निल, वेरोस , ( कि
   41 : 77 24 , 27 22 ) 1
                                                     9, 2);
                                                   मिञ्छाम्य वि [ विस्तातक ] मा गरेत . * १०१०
  বিভিন্ন হৈ [ নিজাপ্ত ] জন্মনে , ( নুল ১৫ ) ৷
  विधिवद (जी । इन विधिष्ठ , (वि ३०१) ।
                                                     रह्र्मला" (श्राप्र∗)।
```

```
चित्रंनिय हि [नियम्त्रिन ] हिर्देना, महीता ; ( स
                                                                  पार्वसह्महण्यवी ।
, जेन्जिस् वि [ निर्फिल्फ़ ] व्यिनीयः (गांज १,६;
                                                                                          चित्रिपन रेन्ने निर्वित्रपन ; ( रा ४,१ )।
                                                                                           जिज्ञुद्ध रेखें जिज्ञुद्ध ; (हिंबु १३)।
                                                                                            चित्रोक्रम न [नियोजन] निर्जुल, कर्ष में ट्यान, मन
्राजिल्लामा वि [ निविल्लाम ] पृष्क्रका, भारता क्या हुमा,
                                                                                                र्माण ; (हा १४६ हो)।
चित्रोतिय हेने, चित्रोह्य ; ( हा १७६ हो )।
                                                                                               चिन्न वि[हे] हुन, हेल दुक्त ; (ह ४, २५ ; पर्)।
                  त्र हेन्द्रे चिक्छिएच : ( पुन्त ४६३ ; महा । ।
                 व वि [ तिरिवन ] निर्म्यन, निर्मान, कमारियः
                                                                                                 चिल्ला दि [तिश्रेन] १ दिल्ल, महुत्यु महिल, २ त् एस्ट्राल.
                                                                                                 चिल्लंत रंगी चीन्ती।
                 हिर वि कि सार कि क्ला कुरवर्त्त हुन्द र १॥
                                                                                                    चिट्नप हि [नियांप्य] १ निरंद-कार, १ निरंद,
                 गुंड वि दि कितंत, करणानित (हेर, ३१)।
                                                                                                       बल को नहीं बहुन करता है। ब्राह्म विस्तानित हुन्त रहन स
                 युंद वि [ तिस्युंदिन ] नियंग, ह्या हुम ; ( स ६,
                                                                                                       चिल्लर नह [निर् + जू ] १ एवं काल, नना कता।
                 ख्युम मह [ति + सिर्] १ वस विकास । १
                                                                                                          वर्म-द्वारी के सम्मान महार करता । विश्वरह विश्वर
                 इंडल । स्टिब्रुका : ( तर १ । वर्ल स्टिब्रुब्व ; (सि
                                                                                                            [CTETES : ( 44 ; 2 x,1 ) 1 72 - CTF 19 16
                   ११)। कार-चिन्द्रुक्तमाण : (१४० ९,१)। मेर-
                                                                                                             रेख ; (रि १३६ ; सर) । स्ट्रिंग्सरेस्स
                   चिन्द्रुविमना चिन्द्रुवितं । स्तं : नि १,१।। न्यं
                                                                                                              (इ.४,१)। बर्-जिल्ह्समानः (जन १८)
                                                                                                               क्रा - निर्वारकामान : ( ह १० ; इन )।
                  , वेल्ल्युमण न [ निर्देशण ] विलगर, विल्ह्यन । (निर्
                                                                                                              चित्रकाण न [निर्देशन ] नेव हमा ; (बीन)।
                                                                                                              निस्तामा के [तिर्देशना] । ज्या, स्व, १ व
                       देश्युमाविष हि [ क्लिपिन] निम्मिन, बहुर निर्वास
                                                                                                                  क्षेत्रण : विस्ते क्षेत्र के क्षित्र है देश है।
                         मिल्दुद्वा मी [निर्देशना ] बहा निरंजन वे. मह.
                                                                                                                  चित्रक्षत मं [निर्वत ] स्तंत्रम्, स्तंतिकः
                            Fried : ( 1 4 4 9 9 21 - 47 900 ) 1
                       Transports [ Talkers ] & state fortis to be to
                                                                                                                    विक्वतिय वि[निर्वीति ] बेर, विकायण
                             Sta ) 1 3 at la . [ . [ . [ . ] . ] . [ . [ . ] . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . [ . ] . 
                                                                                                                     ज्ञिता है [ नियापक] १ जिले बारे हरे
                       to forther form of the day of the da detri
                                                                                                                        $4, mary 812 824 ; ( $7 95
                       त विकार व [निकार न] यह सार (स्ति १०९)।
                                                                                                                          केर मुर्जिनियान, के निर्णय के कारी प्राप्तीयन
                                    क्षेत्र में [तिर्भेष्ट्य] १ बला विद्यंत्र के लिए
                                                                                                                           नार के दिनार का दे कि क्रियेर की पीन निर्दे
                                    Men 13 Conto de 13 Ella | Peter !
                                    (entry (ent 1, 1( , 1=)) | (entry :
                                                                                                                            निकारकार को [नियोग्सा] १ विल्ला,
                                    (2F) 1 HE - FORTS ELTH.
                                    लच्छोड्न म [ निरंत्रेटन] हिन्दे हेन हरा हिन्दे हे
                                                                                                                             THE PROPERTY IN A GOT
                                                                                                                             क्तिक्षत्व हेल क्तिक्षता ; ( क्रेन १८
                                    रिलरकेष्टमा मो (सिन्दुकेटमा) उस देवे श्री करण के
                                                                                                                             क्तित कर् हिंदू-या दिस निय
                                                                                                                                 ( 25 )) 24 - children 5 1 ( )
                                    क्तिकेंद्र का [सिन्ध्यत्] हेक्ट, एक स्वार्थ ।
                                                                                                                                   Francis ( 7 6,2 ) 3
```

१६वि (चित्र)। सं-व्यक्ति

* | FE - HER JEE = EF) !

4

518

```
ाय वि [निध्यान] दृष्ट, वित्रवितः; (सुर ६,
ः सुर २४= ) ।
रुवि [दे ] जीर्य, प्राप्ताः (दे ४, २६)।
ोड मह [सिट्ट] देवन, कारना। पिल्लाकः
Y, 938 ) 1
ोडण ह ि छेड्न है हेरन, वर्तन : ( कुना )।
ोमान वि [निर्द्रोगीयतृ] स्य छतं वसा,
क रंग करने यादा : ( कावा ) ।
: दि [ है ] १ टर्ड-च्यिन , १ दिस, मनसन ,
Y, &+ ) 1
त्र वि [ निरुद्धित ] निण्या, भरवानि ; ( सुग
. 11
म मह [ शर् ] उपत्ना, इता : विद्याद : (हे ४.
t) 1
म वि [ अस्ति ] टपर हुमा ; । पाम ) ।
[ घर [ चि+गल् ] गड जाना, नट हेला । टिट्-
: ( R x, 942 ) 1
इसी मिहा=नि +स्याः। निहरः ( भनि )।
ः) मह [ नि+स्थापय् ] ९ समाउ करना, पूर्व करना ।
🏿 रे इस्त करता, राज्य बरना। १ विधेर स्त से
स्त बाता, नियर बाता । भूदा-विश्वंतु ; ( सव
  १)। नंह-पिट्टियम: (निम)। इ-
(यणिञ्च : ( ३१ १६० ८१ ) ।
ाम न [निम्रापन ] ९ मन्त्र काला, समानि । ३
नाग-करक, खरन करने वाटा ; (सुन १६५;
ो) । वृध्यत्य करने वाला ; (आ. k.) ।
रय वि [ निष्ठादक ] स्वान्त करने वाला ; (मान ६)।
वेश वि [ निष्ठायित ] १ समान हिरा हुमा ; (पंचत
 । २ विनावितः ( स ६, १ )।
ं महः[ति+हवा] नतन हला, ननान्त होता।
飞;(稍 [34][
स्त्रं [तिष्टा ] १ मन्त्र, मनक्त्र, स्वरितः (विते
ेरे; सुपा १२)। २ सहसाव , ( मावृ १ )। भासि
िमापिन् ] विन्या मुर्वेदः बांडने बाटा, निरंपर-पूर्वेदः
स्पद्धनं बाला ; ( माचा )।
[ण न [ निष्ठान ] १ इहा वर्षेत्र ब्यान्डन : ्य ४, ३
६२, ४) । २ समानि
                     িলি ৷ কীয়া কৰি
```

[क्या] मक बचा रिहेन, रही वाँग बनमन ही बर्जनीत; (सर,२)। णिहाबण देनो णिहबण : (सुता ३६७)। णिहिय वि [निष्टिव] ९ स्मनः हिना हुमा, एर्ड हिना हुमा; (ट्य १०३१ टो; सम्म ४, ७४)। २ तर हिया हुमा, बिनिन ; (सुन ४४६)। ३ लिए ; (मे-६,-०)। ४ निमन्त्र , निद्र ; (कावा २, ९, ६)। १ पूं मीता, मुन्द्र ; (माना)। 'ह नि ['गर्य] इतरूप ; (फल १६)। हि वि [पिर्यम्] सुन्तु, मेल का रण्डुक ; (माचा)। पिहिय वि [नै प्रिक] निष्य-युक्त, निष्टा बाटा ; (पद २, ' 3)1 णिहीय पुं [निष्ठीय] युर, भुँद का पानी; (रंमा)। पिट्टमय दि [निष्टीयक] एक्ने वाला ; (पद १, १ ; धान) । णिटुर) वि [निदुर] निद्युः, परा, बर्जि ; (प्राय ; हे णिहरूल र्ी, १६४ : पाम : गडड़ रे। जिद्द्यण न [निग्रीयन] १ यह, मतार ; (नर १)। २ वि युद्दने वालाः (य १, १)। णिट्ठुइ मह [नि+मतम्म्] निप्टम काना, निर्वेष होना ; स्तव्य दाता । दिव्हारः (हे ४, ६७: यर्)। जिह्ह वि [दे] साथ, निरवेट ; (दे ४, ३३)। पिट्ठुर्ण न [दे निष्ठीयन] पृष्ठ, मुँह का पानी, रम्लार ; (महा)। जिद्दुद्दावया दि [निष्टभाक] निरंबेट वर्तने वाटा, साम्य कने बन्ता ; (इसा) । पिहृहित्र व[दे] मुद्द, तिशेवन, सजार; (दे ४, ४१)। जिड र्दु [दे] रिगाद, गस्त ; (दे ४, २६)। । पिइस) न [स्लाह] मात्र, सताह; (नि १६०; डाल रे पत्र १००, ६० : हरा २८ र। चिट्ट न [नीड] पत्ति-गृह ; (पाम)। पिड्हण न [निर्दहन] बडा देश ; (डा ४६३ टॉ)। णिड्डुह दक्षे: णिट्टुझ , पिट्डुह , (इसा , पर्) । जिजाय १ जिनाह) शहर, बार ब, चर्च , ६ दाया ३, = प्रदेश के १०३ में €्रेक के र

४१२ पार्थसद्	महण्णवी ।	{:	•
जिल्ला [जिल्ल] । श्रीक, मारमा, (जा ११,	णिण्डुय थि [निह्नुत] प्रार्टीय णिण्डुय देशो णिण्ह्य=नि+६३	; (gn	(1=)} -{4 5 (+)
ता १०३१ री) । १ वित् नीते, मणः, (हे १, ४१)।	ाणपद्भव देशा । गण्डसम्बर्ग म्ह्य (हि ३३०)।	. 1 ->-	•
िरमास्यु ६ (निःसारयनि] बद्धः निश्नता है ; । "हराधाराचनपरि, स्देश वास्त्रायस्य" (माना २,२,१)।	णिण्डुविद (गी) ति [नि+ह्तुत) कार्याः	1, († ì
िक्ता को विकास किया विकास किया विकास किया विकास किया किया किया किया किया किया किया किया	चितिय देशे जिट्य, (मार्ग)	E 1°	11
	चित्रहित्र रि (तिरहित) रहा ह	या, दिख	(Kali
रिकार् । [निक्य] क्या-राम , (सुर ६, ६२) ।	जिल देवं, जेल : (यम ; सुग र	E1; 8	31.1
त्रिकार ३(निर्मय) ६ निरंपर, म्लासम्य , (ह ६, ६३)।	चित्तम । [तिस्तमस्] 1 म	न्धकार-१	1, 1-
्र केश्यः, (द्वार्दः)। ॄ	रहेत , (मति ⊏)।	. 46) 1	
जिल्ला १वः चित्रवर्षाः, (४००)।	णितल वि [दे] मनिरन, (म णिति (सर) देवो गीर ; (मे	3)1	
गिल्पार मि [निर्नेगर] कार स निर्मेत्र , (सप १६)। भिल्माता का [रू] घन्यु, पीप , (दे ४, ३६)।	णिसिंस ([निर्क्तिश] निर्देश	इद्या-होन	(T =)
रित्याप्तर महिद्देशात्राय् वेशित करना । वह~ः	वासित्रक्ति है है जिस्तर, ध	878(1,	1.0
नियानित (ता ६३०) ।	णिलिरस्थित । हि । व दिन, द	ाहमा;।	13.5
निक्यान ५[नियांस] विनय , (अ६)।	चित्रस्य हि सि स्टिस्टर्सर्य, प्री	BETTE H T	144
निक्तालिय है [निक्तिशिष] विनाति , (सुर ३,	Mara D. [Brown] + Dri	R. \$1374	141.
411 , #fe / 1	६३)। ३ थि, म नासस्य र	761	wr.
विभिन्नद्र सि [तिलिंद्र] निश्च मेंद्र है (गा ६६६)।	मर्गन" (हुना ३४४)। चितृत्व नि [निस्तुर] दुन गर्दा	Forz :	(WV
मिण्यतेष वि [विविधा] ५ विवश्यति , १ वश-	व्यतुम्स सः [नस्तुर] द्वा परा इत १-१८ टा)	1134	•
र्श्वर स्थानिया (स.स.५)। विकास व [निर्मीतः] निर्मन, वस्त्रा विसा हुमा,	किसंब विकिट्से बड़ी संग्रहीत	, (बच	1,3 }.
(m. ss):	णिन्ययम् व [निस्तनत] वि	त्रपृत्र व	164
चिम्मुरमात्र (र [निरमाधात] द्वैतानाता, स्थिम , (मॉन	3 222) [
3-6.71	णित्यर सह [तर्+मृ] पा द	मा, पा	इयर । इ
विक्योद प [तिःस्वेद]स्थर र्यदा, (१८,३६०,			
gr 2, 555 , 40° })			
जिल्लाम (जिल्लामा) जिल्लाका (स्म ३६) ।	ात्मत् (यम्)। इ—ाग	वारयभ	11.
बिक्स, १[निद्व] १ तत्व का माहण करन करता, जिक्स्पन सिन्स्यान , (बाय ४० वर १ छ ४ , भीत) इ	३, तुश १६६)।		ال وقد
चित्रको २ सम्बद्धः (१.४ ४० मा ३)	जिल्याम व [जिल्लाम] वग	#4, E12	.,
विश्वपात्र [निन्द्तु] मान्य क्रमाः विद्याहः,	४ , ३६ १३४ दी } ६		
्रेश राहर , हे र, रहे. हा दव-विकासी	किम्बरित क्या गिरियक्त, (उ जिम्बर्ग ।। [निःस्थान]	1 152.	
(मे), (बर-स्व १२)। वह-निगरवन,			
किन्द्रसम्भ , देश रेश सः, सुर्व ३६ रेल्ड ३६	कियाम ([बन्यामर्] व	έη, π ¹ ί,	(44
किएस ५ (स्व ३६) समा ध्यार, (४१			
ৰানুধা ৮৫ জিলেক্ষৰ বুলিৱকুৰী জনগড় হু নিম ৪৮২ ৯ বছ ৮১	विकार कर्ष विद्रशास्त्र है।	47 35	1.5,
चित्रकार क्षेत्रका विश्व का व्यक्तिका व्यक्तिका विश्व का	र बचल, बुदद्या इस । 'स	<'1 1	64
-	•		

3 4 2

```
चित्रंग हैं [तिरंग्म] सम्बन्धि इस्टर्म्स ; (स्त
                          युष्ट्यस्य महास्याची ।
                                     निर्देश (मा) हेने निर्दा = निरंद (निरंद )।
Fr. 7
ومثله) ، وتعمل ويري المعمار ومثل
                                     निरह रि [निर्म्य] १ ज्यान दुम, मन्त्र मिन दुम ;
(म १४, १६ ; मी ११)। १ में दानकी (पान
                                        १३, १३) । ११ ज्यान जन्म जन्म निर्मा का एक निर्मा
المستسم ويمود والمستسم
                                         हर , (८६)। माल वृ (मण) नार मारिया
                                         तर मार प्रेंग ( प्र ६ )। प्रान व ( प्रान ) माना
عَمَّا [ المستنام والمستنام : الم
                                          क्लास्ट्रेस ( हर)। भिमहर्ष ( भागित) गर
प वि [ निक्रमाणि ] स्थल हुमा, ग्रेटन,   सः
                                          लिह्य वि [निर्देष ] द्वान्देल, कारान्त्रि, लिए ; ( पह
स्तु दे [ मिलीसी ] १ वर्ष है, पानात :
                                           चित्रका म [निर्देकत ] १ मर्गन, वितरणः ( माचा )-।
M } . (4 36,0 ) 1 5 (2 44)
क्षिण हो बर, अधिकाला प्रकृत गरंग (गुर स, सर)।
                                              १ वि. मर्रेन बरने बाला ; (बमा ४२)।
                                             लिहरियम वि [निर्देशिय ] मर्थ्य, विस्तित ; ( बाम ; वा
                                              चिहर मा [ निर्+रह ] बडा देना मन्न करते । निर-
· चल्लान्तुतं (त १३६) १
म गर [निभूगय] १ टरन्त बन्डान, इटल
मना १ रिक्ना विर्वाः (दिन्त)। बर्-निर्दे
                                                ता (मा । जा )। विहेन्सा (ति १११)
                                               चित्र कह [नि + द्रा] नित देना, मीर करना । दिया
त्रहंतण व [तिहरीन] १ टटराय, राजन : (की
                                                 (बर्)। बर-जिल्हासेन ; (में १, ६६)।
                                                ित्यं मी [निया] १ निया, नीर ; (स्पन १६ ! इन्हें
                                                  र निया-विकेश, बढ निया जिलमें एकाचे मालाज देते पर
जिल्लाम वि [ निर्दिति ] प्रदर्भिक दिलका दुका ; "त्वे
                                                   ब्राह्मी बता ठटें; (इन्स १, ११) । व्यंत वि व्य
 विवित्ता निर्देशियो नियस्यो स्त तेन्" (शुर ६, ८५ ; टर
                                                   व्यानुष्यः, हिर्देशः (ह १, ६२)। क्तरी
जिल्लीसमा देशे चित्रंसमा ( टा ; टर १८४ )।
                                                     [करी] बतावियः (दे ७, १४)।
  चित्रा क्षी [दे] १ बेरता किंग्य, स्वयुश्व बेरता ; ( ज्ञा
                                                     भी [ निर्दर ] विदासिरेष, बर निर्दा विवर्त बरी व
    १६,१)। १ बली हर मी की जली प्रतिनिरंसा ;
                                                      हे कार्मी टग्रमा जा सके ; (ब्रम्म १, १९ ; स्म १
                                                      रू, ° सु वि [ चत्र] विद्या बाताः (संविष्णः वि १६६१
                                                       च्यति [ भर् ] निता देने बजा ; (व ६, ४१ )
    चित्राण देशो चित्राण ; (दिन १, १; इन १४; नट-
                                                      क्तिहाल वि [निद्रात ] जो बीर में हो। (हे १,
ĭ
                                                       चिहाय वि [निर्दाय ] महिनहिंग : (हे 1, ६
     जिल्लाया देखें जिल्ला ; (कल १६)।
      चित्रार प्रं [निदाय] १ धर्म, धर्म, टर्य । ३ धीमन्बर्द्ध,
                                                       जिहाल हि [निर्दाय] दाव-एहेंड, वेहह पन ह
        सम्मा की मीनित । रे केंद्र मात ; ( ब्राव ४ )।
       जित्रह दें [निद्राह] क्रापाय दाह ( मव १)।
                                                        चिद्राहम वि [ निदित ] न्त्रि पुष्ठ । (मरा )
        च्हिंसिय रि [निर्देशित ] १ प्रदेशित ; २ तस्त्र, इरितः,
                                                         जिह्नाणी की [निद्राणी] विजदेश विरोप: (पर
                                                         जिल्ला देखें जिला; (कर्य ३६.)
         चित्रंबाण व [निद्राध्यान] निर्दा में हेला ध्यत्,
                                                          िल्हारिय वि [निर्वारित ] ग्रीन्त्, मिन्ती
           चित्रं वि [तिहर्ष्टि] हर्दर्माल, हरेर-वर्ष्टि ; (सा
                                                             es : 43, EK) 1
             rkk ) l
                       63
```

The state of the s

	महमदण्यत्रो ।	[तित्रव—ि
पारक पिएण है [निस्न] न बीज, मारुन्स ; (जा १६; जा	जिण्डुय हि [निद्रुत] का जिण्डुय हेशे जिण्डुय=नि (रि १२ -)। जिल्डुविद् (गी) हि [नि+ जिल्डुय हि [निनुद्वित] । जिल्डुय हि [निनुद्वित] ।	ाउति । (तुम १(२)) + हुतु । वर्म-विद्रोस हुतुत] मार्ची (, विः सवा ; स १०)। हुश हुम (अल ; (क्यू) सुसा १६१ ; हुम ११)
प्रिकार में को पिक्का , (व.स.) । विकार क्षेत्र में (सन १६)। विकार हिल्लिया क्षेत्र में (सन १६)। विकार क्षेत्र में (सिंदे में (सिंदे में (सन १६))। विकार क्षेत्र में (सिंदे में (सिंदे में (सन १६))। विकार क्षेत्र में (सिंदे में सम्यवस्थी) (सिंदे में (सिंदे मे	जित्तक है [दे] म तिन, जित्ति का) दना जी है; जितिल ही [लिति हा] है जितिल ही [लिति हा] है जितिल है है दे किरना जित्ति है है दे किरना जित्ति है है किरना जित्तु है दे किरना जित्त है किरना जित्तु है तित्तु हो है हे है दे किरना जित्ति है किरना जित्ति है किरना है किरना जित्ति है किरना	(भारे)। वेद, करणाईन : (वें) वेद, करणाईन : (वें) प, क्या हुमा : (वें) प, क्या हुमा : (वें) प, क्या हुमा : (वें) पूर्व भारे व चर्चे प्रकार के प्रकार विद्या : (क्या प्रकार व्यक्त कर्मे प्रकार विद्या विद्य विद्या व

```
. 3-
                                                                                 પ્રદેશ
रंडुं निस्तार] १ हरकर, दुने, १ तकन, रहाः चिहंस है [तिहंस्त ] रस्नच्छेन कारनेहरः (इन
                                          चिद्दु में [निर्देश्य] १ ज्यामा हुमा, मन्त्र हिमा हुमा ;
المر ( حسر ع، و وأسسم عرو : ٢٠ ع. ١٤٠ م. ١٤٠ م. ١
                                             (ज १४, २६ ; मंत्र १४ )। २ ई. हार्रक्ताः, (प्रम
                                             ३२, १२) । ३ रन्त्रम नामह नाह मृतिर्गा का एक नाहा-
गरंग है [निस्तारक] दर इसे इस, दर इसके
                                              बन ; ( छ १ )। भन्त पु (भाग्य ) नाहतून सिंग,
                                              एक सहस्रहरू है (इ.६)। वितर्ष [ नवर्त ] तहा-
गारणा की [ निस्तारणा] परणान्य पर स्वैष्ट्राः
                                               बत्त-किंगः ( ह १ )। शिसह ५ [ भ्वतिह ] नाव-
                                               न्तिह्य वि [निर्देय] रतार्चन, कल्यार्गेट, निर्देश ( पडे
तत्यारिय हि [निस्तारित ] स्वाया हुमा, ग्रेंट्य, टर्
चित्रियाचा हे व [ तिस्तीर्च ] १ हर्तचं, चल्यावः
                                                चिह्लम न [ निर्देलन ] १ मर्तन, विहारः ( माबा )-।
मिल्याल ) रिक्ता मार्ग " (म ३६७)। १ हिन्स
                                                  १ ति मान करने वाडा ; (वजा ४२)।
 पर किर हो बहु (क्ट्रिक्स मच्या गर्हा)
                                                 लिहरिय है [निर्देशिय ] नर्ति, हिर्दिय ) (नाम ) वा
                                                   ्रित्रमा १ रित्रमा विद्वार (रिंग)। ब्रान्टिन
  रिलना। व रिलना। विर्देशः (सिंग)। बर्ट-पितं
                                                     सः (नहः स्व)। विस्त्वाः (ति २१२)।
                                                    चिहा मह [ नि + द्रा ] निम हेता, बीर करता। दिखाः
िन्द्रसम् व [निद्दर्भ ] १ दहरूप, इट्ला; (क्री
                                                      (बर्)। बर् - स्तित्रंतः (हे १, १६)।
                                                     ित्र श्री [निद्रा] वित्र, वीर : (सर्व ४६ : इन्सी)
                                                       व किला किला, बहु किला जिल्ला एकप आजान देते पर ही
    मिन्नित्र वि [निन्निति ] इत्तीत्र विवया हुमा । "व्यं
                                                        क्रम्मी जग देहें (इस्स १, ११) । क्षेत्र वि [ चत् ]
      विचित्रक्र विक्रिमे क्लिंग मा हैंगू" (सुर ६, म्य इस
                                                                                          करी जी
                                                        知了,既有;(年9,86)
                                                          िक्सी वसन्तियं (हे प, १४)। स्तिहा
EER : 214 Ao ) !
     निर्दात्मण रेक्षे निर्देशन ; ( हा ; हा वृद्ध )।
                                                          की [ निता ] कि किए वर कि किया की की
            र्सा [दे] १ केरना किंद्रा, हज्जपुता केर्ता; ( मन
            ,६)। र बतने हुए में हो बती प्रचितिमा
                                                          के मानी उद्भा जा सके ; ( इस्म १, १९ ; इस १६ )
                                                           स्, सु वि चित्री दि बटा (मंतिरः वि १६४) म
                                                           चमति (भर् ) ह्या संबद्धाः (त १, ४१ )।
            राम रेश जिल्लाम : (दिस १, १; इंड १६; व्यट
                                                          ित्राय में [नित्रात ] के बीर में हैं। (हे १, ६६
                                                           ित्याय वि निर्दाय है मिनिर्देश (वे १, १६)
                                                            निर्मात [निर्मात] राजनीत देख पत है दे
             सावा देखें निदा ;(कर ३१)।
             नदाह पं [निदाय] १ धर्न, इन्न, इन्द्र । १ ब्रीन्सब्दर,
              क्रमी ही मैलिन । वे लेल मन ; (मन १)।
             निहार दें [निहार] क्रायाद वर्ष (प्रवार)।
                                                            ित्राम वि[निदित् ] वित्रुष्ठ । (नरा )।
              न्दिसिय वि[निर्देशिय] १ प्रदर्शिय ; १ हारा, द्वीरा,
                                                            चित्राची के [तिहाची] विचर्ष किये। किये
                                                             क्तिया देखें किता; (क्ले १६)
               रिहंबाण व [निद्राच्यान] न्या व हेटा घ्यन,
                                                               िद्रांखि वि [मिद्रांखि ] क्लान्य, विर्णि ;
                दुर्व्यवस्थितः (बार)।
वर्व्यवस्थितः (बार)।
विदेशिति विद्वाली हरूर्वितः, होरावर्वतः (स्ट
                                                                 es; 93, 5k) 1
                   4KK )1
```

	महण्णची । [जिल्हाई-	
निगमान पह [निर्मयु] नीतवन, निद्र होना । विष्क- उपा: (व (१६)। यह-निष्मयनमाणः (पक् १,४)। तमानिक सि [निस्सिटा] । सिरोणं : १ विषक विकास क्रिने पान सि : माहुका-पेटा: (वर १६८ सी)। तिस्मानिक हि [निराध] नीतवा हुमा, वता हुमा, विद्रः (व १,११. ना)। तिस्मानिक सि [निष्पित] निमादन, विद्रित (वर १ १९८० हो । तो १०६)।	चित्रंत कहाँ जिन्न पान्य] व बीवत (१ वर्ग (या) । पार्यंत्र वंत्र [जित्रन्य] व हं बन्द, वंदेत ((१ कायद हा: (महा) । = पिरामीवा (चित्रंत्रण न [जित्रन्यन] कारा, वंत्रेस, विदे आय हर । । पान्यद हिंदिय ही १ वैश हुआं (व्या) वंद्य (वे १, ४४) ।	mile Aus Test
तिकारित है [केर्य, राज्येत, (वे ४, ३०) । तिकार है [किस्त वे] कार्यादेश निर्वेद (वे १४, १६, ता १६६) । तिकाराम केश विकास व (वाव) । तिकाराम वेश विकास व (वाव)	चिविद्विद्व हि निविद्वित । निविद्व विकास	

1, 49, 4, 40 }1 जित्रकृष व [निमञ्जन] ह्वता, निमञ्जन ; (राम)

णियोल देशी जिहुद्=िनमन्त्। वह-विशे

णियोद्द द [नियोच] १ प्रहा वाप, उन्म इ^व :

विश्वंच ९ [निर्यन्च] ब्रायह : (गा (४१)

जिल्हांचन व [निर्वेश्यन] निरम्बन, हेर्ड, ^{हरूब}, '

मिन्बद्धिम [निवेदिम] म बन्ड बद्दा (ह (ना)

जिथ्वाहिर नि [निर्वाह्य] बदर हो, रहारी

विम्बुस्क 🐧 [द] १ विजेन, मून-रिशा १ वि

" विष्युष्टिअकारव—" (कह 1, १—व रो)

निमुद्देशे निदुद्द्द्दियाः (स १६०, वर्ष)

विक्षंद्रज देखोः विकारद्यमः, (उत्त १०१)।

प्रचार का बाप ; (विते ३१८७)। चित्रोहण व [नियोधन] प्रश्व, समझता । (१३)

रिकारन्तिव्यंपर्य पर्य " (बारा)। गिलक रि [निश्ल] बन रहेर, दुवंत (हवा)

" संबद्धिमाद्भिग जावा [†] (३व) ।

41)1

(सब)।

(9)

1(23

रियालाहर नि [निष्याहित] नोतमाना हुमा, बनावा हुमा, रिद्र क्रिल हुमा , (हिन च बी, वन २९९ टी ; मता) । निन्दाप नर्ड [निर्+पादम्] नीरशना, बनाता, विद्र कारा । मह--पिन्काइफ्रम ; (वंबा ७) । कल्यापन ([निष्यादक) नैशामने बाला, बनाने बाला, हिंदू करने वन्ता, (हिन ४८१, छ ६, ला ८१८)। किरायम व [निध्यादन] बीरवाना, निर्वाद, कृति : (#4 x) | बिन्हाब दे [नियाब]पान्य-वितेश, बन्त , (देश, ६३; बनव १, स ६, १; धा १= }। विकेश्य मह [वि+िक्स्] व्या निवत्ता । व्य विक्तित्र (म १०४)। विक्तितित है [निविक्तित] निर्देश बक्त निवत हुया: (134 (. 110, 50, 10)) जिल्हा ६ [विस्तुर] इसा, वेत्र , (शरह)। क्षिपेड १ किन्देर क्षित्रम, बहा न्यान, (रा प्र 212 } 5 स्टिटिय li [निम्पेटिय] १ जिल्हीय, विकारत : (👣 २, २) ३ २ मन्दर: दूम, नद्रवा हुमा 🛊 (पुण्ड ११३ } । ३ सन्हर, होता हुमाँ ; (य ३,४) । कि रेस १ (है) हक्द रेग्ब, अवज रेवश्य (है ४,

14) 1

तम न दि] परदास्त के पदाने पर जा हैय पूर्व स्टब्स ; (पना ३३)। त वि [निर्मान्त] वि.इंदर, संगय-देश ; (ि१४)। मा व [दे] उदान, बगोवा ; (दे ४, ३४)। गा दि [निर्मारय] गत्य-रहित, कनकर्तत ; (हा ँ सी ; दुश ३=४ **)** । िष्ठ एक [निर्+मरर्स्] १ तिस्कार बरना, मर-ि वरता, मरदेवरा करता, माकारा-दुर्वक मत्तान करता । ब्दि, विमल्देवा ; (दावा ६, ६म ; स्वा) । ं~णिक्मच्छिम ; (नाट—मण्डो १७१) । ब्छय न [निर्मरर्सन] निरहरूर, बालान, पर्य दक्त ावरेडना ; (परह १, १ ; गडड) ३: · एंच्छणा श्री [निर्मटर्सना] कर देखे; (नग ६४ ; - [9, 96] 1 ~ बब्धित्र वि [निर्मेटिसेंत] सत्मानित, सब्देरित ; ा नदन ; हुना ४०७ }। ्र पि दि [निर्मेष] भव-रहित, निदर ; (याया १, ४ ; ्र रर स्ट [निर्∸भृ] मरना, पूर्व बरना । बन्ह---भरत; (हे ११, ७४)। ्रीर से [निर्मर] १ पूर्व, मरहर ; (से १०, १७) । २ पद, पेटने वाडा; (द्या) १३ विदि, पूर्व स्पष्ठ 🚼 ्रवे य दिम्बर्र वरिवद्र'' (झाइम) । भेंदे एक [निर्+मिट्ड] टाइना, विदारण करना । बक्त-क्षिण्डेत, जिस्मिल्डमाण ; (.सं:५४, २६ ; मग . १२;वंत ३)। मेनच्च वि [नर्मीक] मय-हित, निहर; (हुता (if ; 4xf ; 4vf) 1-मान्द्रत) देखी फिल्मिंद् । γेमें इजमाच∫ भेनह वि [दे] माद्यन्तः ; (मि) । 🔑 चेमप्प वि [निर्मिन्त] १ विरास्ति, टोश हुमा ; · पाम)। र बिद्धः; (सं ६,३४)। ुम्मीत्र वि [निर्मीक] सर-वितः (हे १३, ७०)। सुगा वि [दे] मन, खरेडा ; (दे ४, ३१)। . भीप वं[निर्मेद] मेरन, विहारकः; (ध्रग ३३७)। ्रभोपण न [निर्मेदन] कार देखी ; (सः १, ६६)। , म देखें जिह्≈जिन ; (क्षा; अं ३)।

णिर्मग पुं [निमङ्ग] मन्दन, सग्डन, बेटन ; (राज)। जिमाल दह [नि+मालर्] देखा, निरांत्रय करना । दिनाहेहि ; (मातन) । वह-जिनास्त्रांत; (उनष्ट ४३)। ष्यह—णिमालिञ्जंत ; (स ६८६ टॉ) <u>।</u> पिमालिय वि [निमालित]द्रु निरादित; (८४९ ४८)। णिनिज) देखो जिहुस ; (पन्ह २, ३ : गा = •)। णिमुञ िमेल एक [निर्+मेलय्] बाहर करना । बन्ह--णिमे-स्त्रंत ; (पद १,१--पत ४१)। णिभेद्धण र [दे] गृह, घर, स्थान ; (ऋम)। णिम छड [नि ÷ मस्] स्थापन करना । चिन्म ; (हेर, १६६ ; पर्)। रिनेर ; (नि ११८)। वह—िर्मित ; (8 1, 41) (जिमंत एक [नि ÷ मन्त्रय्] निमन्त्रच देना, न्यौदा देना । दिनंतर ; (महा)। वह-णिमंतिमाण ; (माना २, २, ३)। चंइ--जिमंतिज्ञण ; (महा)। णिमंतण न [निमन्त्रण]निमन्त्रण, स्पैता ; (टर १९९३)। जिजंतजा द्यां [निमन्त्रजा] कार देखे ; (पंचा १२) । जिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिन्हों न्यौता दिया गया हो वह:(महा)। णिमया वि [निमन्न] हवाहमा ; (परम १०६, ४ ; मीर)। 'अल्प्र की ['जला] नरी-सिरोप ; (जे ३)। णिमञ्ज बढ़ [नि + मस्जु] हुवना, निस्त्रत करना । दिन-ज्ञाः; (ति १९=)। वह--णिमञ्ज्ञंतः; (गा ६०६; द्या ६४)। पिमहज्ञरा वि [निमहज्जका] १ निनम्दन करने वाला । र्षु बलप्रस्थानमी सायत्र-विगय, यो स्तान के लिए पोड़े समय तक बलाग्रय में नियम रहते हैं ; (भीर) । जिमक्त्रण न [निमक्तन] हुन्ता, बत-प्रवेश ; (पुता ₹\$¥) { णिमाणित्र देखो जिम्माणिक=रिनंतितः ; (मपि) । गिनिम वि[न्यस्त]स्यति, लिहेतः; (कुनाः, में ५,४५; 표 운 ; 이원 0; 편집) 1 णिमिञ वि [दे] मात्रात, सुँवा हुमा ; (पर्) । निर्मिण देखे जिम्माच = दिनंद; (कन 1, २६) । णिनित्त न [निमित्त] १ शास्त्र, रेत ; (प्रास् १०४)। २ बरए-स्टिन, सहक्रीर-करण ; (सम २, २) । ३ ग्रास-दिवेद, महिन्य मादि जातने का एक ग्राम ; (मोर्डो १६ मा; जिल्हा मह [निर+पद्] नीवनत, निद्व होना । बिण्ह-क्तरः (स (१६)। यह-जिल्हान्त्रमाणः ; (पष्ट

1. 4) [

णिक्तडिम नि[निस्कटिन] १ निशोर्थ; १ निशंध मित्राज डिकाने पर न हो ; १ अड्कुस-रहिन ; (उप १३⊏

टी)। णियक्तरण वि [निष्यक्ष] नीयबा हुमा, बना हुमा, निद्ध ,

(में २,१२ : सहा)। णियमति । [निष्पति] निमादन, विदि : (उद :

चप १८० टी : सार्च १०६)।

णि क्राप्त देखा जिस्क्रवण ; (बन ; वाबा १, १६)। णिव्सिटिस हि [बे] निर्देश, दवान्होन; (वे ४, ३४) १

विक्तित 🖪 [निष्कृत] बल-रहित, निर्वंद ; (से १४,

1 (350 10 1 39 णिकाभ देशे गिक्साथ : (श्रप्र)।

जिन्साइक्रम देशे जिन्हाय। पि:साहप मि [निष्यादिन] भोरताया हुमा, बनावा हुमा, तिद्ध किया हुमा ; (दिने ७ टी, उप २९९ टी ; नहा)।

णिष्पाय सह [तिर्⊬पाद्य्] नीरजाना, बनाना, तिञ् करना । संह-- जिल्हाइजण : (पंचा ७) । णप्पायग वि [निष्यादक] भीषताने वाला, बनाने वाला,

निद्द करने नालां; (वित्र ४८३; ठा ६; उप ८१८) । णिप्रायण व [निध्यादेन] नीरशाना, निर्माण, कृति : (माद ¥)।

जिन्हाब दें [निष्याब] मान्य-वितेष, बन्त ; (हे ६. ६ ३: पगय १ ; हा ६, १ ; धा १८)।

णिपितद मह [नि + स्मिह्] बाहर निब्बना । वह-

जिल्कितंत : (व १०४)। जिल्फिडिम रि [निहिकेटित] निर्मत, बाइर निक्ता हमा: (पत्रम ६, १२७ ; ८०, ६०)। . .

जिएफूर पु [निस्फुर] प्रमा, वेज ; (शउड) । णिएफेड पुं [निस्फेट] निर्मान, बाहर निबटना, (उप प्र

282) (जिएफेडिय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निन्हासिन इ (सूप २, २)। २ मगाया हुमा, नयाया हुमा; (पुण्ड

१२६)। ३ मगहर, छोना हुमा ; (स ३,४)। णिप्पेस वं [दे] शब्द-निर्म, भवाज हिन्दना ३ (दे ४, ₹ } 1

2, 22)1 णियंच मक्र [नि+बन्त्र] ९ बीना । १ हाना विदेश (मग)।

णियंघ पुंत [नियस्य] १ संक्य, संकेत (कि ११८) २ मागह हुउ ू (बहुर) ६ " विषम्पावि" (रि ३६८) गिरंचण न [नियन्त्रन] बारव, प्रयोजन, निर्मेष ; (व्य

प्रास् ६६)। णिबद्धी [निबद्ध] १ वैश हुमा ; (मरा) (१ हाँ संबद्ध, (हे t, vr) ! णिविड नि [निविड] सान्द्र बना, गारू, (गार स्मी णिविडिय नि [निविडित] निविड किंग हुमा : (बा)

णिवुक्त [दे] देवा जिल्दुक्त , (बल १,१-वर ११) निवृद्द् मड [नि+मस्तृ] निमातन काना, दारा क--णिबुद्धिकांत, निबुद्धमाण, (भन्दु ६३ ; ३४) णितुरु वि [विमात] ह्या हुमा, विमन , (वा १०। 1, £9; v, 50) 1

विदुष्ट्या व [विज्ञहत्व] हरता, निमञ्जन ; (पान ११ 21 18 वियोल देवो विषुष्=नि+मः वृ । वह--वियोतिष्राव (सब) 1

जियोह ५ [निवोध] १ प्रहा बाब, उत्तम झन । १ मी प्रकार का बोध ; (सिमे २१८०)। णियोहण व [नियोधन] प्रवाध, समन्तन ; (१३४ १०) 1(1) णिव्यंच वं [निर्यन्त] बागह , (गा ६४१ , महा है

1,5)1 णिम्बंचण व [निर्यन्थन] निबन्धन, हेतु, बारव , ⁴ हरे रियत्रेयनिन्धं घषं " (काल)। ाणम्बङ वि [विश्ल] बज-रहिन, दुवंत , (भाषा)।

जिम्बह्दि ≡ [निवेदिस] भन्यन्त गहरः (छ १—नन् ३१' णिश्वाहिर वि [निर्याहा] बाहर का, बाहर गया (" संजमनिष्वाहिस आया " (दव) । णिष्डुक्क वि (दे) ५ निर्मेत, मूल-एंडर । २ सिंव मूत्र " विम्तुनवज्ञितवपय--" (पद्ध १, ३--पत्र ४१)। णि:सुरू देखो चितुरू= निवनं ; (स ३६० , वडड)।

णिम्बंद्रण देखो जिस्सच्छण : (वर ३०३)।

भीडम नहीं परान्त के परमें के जा हैन प्रारम ंद्र;(फार्३)। _म्नित वि [निर्मारत] ति ग्रॅंडह, संगद-र्मति ; 🗇 🕬 . (माम म [हे] दएण, बतोवा ; (टे ४, ३४ ्राभाग ति [निर्मास्य] माय-दिन, कान्सीय , (उ श्यदां : इत १८४)। , मिन्छ एक [निर्+मर्त्तुं] १ तिन्का बाना, मा निकास, मरोजरा कामा, माठाए-सिंह सम्मान कासा ह रेनच्या, विमन्धेदाः (रास १, १८, दर) । र्वेष्ट-निक्सस्टियः; (सट-क्ट्डी १४१)। म्बिब्दम न [निर्मर्टर्मन] हिल्हार, मन्मान, परा बचन हि मर्रोहता ; (पार् १, १ ; महर) । रैमन्छना मी [निमरसैना] कर देये; 'नग १४ , Act 4: 36)1 र्रेमिन्छत्र वि [निर्मेतिर्मत] समानित, सर्वेदित ; (47 min ; 577 800) ; मैंब्बय ति [निर्मय] बयनहिन, निरह ; (काबा १, ४ ; न्हत् }। मेंचर एक [तिर्+भृ] माना, पूर्व काना। काह-। निक्तरतः (दे ११, ७४)। मन्तर हि [निर्मर] १ इच, मरहर ; (ने१०, १०) । २ भारत, देवने यहा; (इसा)। ३ व्यति पूर्व स्पति ; किये व विकार करिन्छ" (मातन) । मीत्र एक [निर्+निह] दोहन, विरास कता। बक्त-निन्निहर्वत, जिल्लिङ्कमाण ; (.सं१४, २६ , मा १५ ३ ; यंत ३)। नेनिक्स हि [नर्मीक] मदनहेट, निप्ट ; (हरा 285 : 386 : 308) 1. निमानंत) देखें पित्रिनंद । ^{पॅ}ल्मिड्डमाण</sup>∫ निहित [दे] महन्तः (मी)। विनाम वि [निर्मितन] १ विराहित देश हुमा ; (तम)। १ बिद्धः (स ६, ३४)। विनीत वि[निनीक] नवनहितः (हं १३, ७०)। म्मुम वि[दे] मन, खंडात ; (दे ४, ३१)। िनेय ई [निमेंद्] मेरन, विरुत्य ; (प्रण ३२०)। न्नेयम र [निनंदन] अस देखे; (स १, ६६)। न देखे जिह्≕निन ; (हर ; अं ३)।

पिसंग दें [निसङ्गे] मन्दन, स्थान, बेटन ; (राज)। णिमाल वर [नि+मालम्] देख्ना, निरोत्तप करना । विनहीं , (मान) । वह—निमालदंत: (टाप्ट १३)। वयाः-जिमान्तिवर्तन ; (हर ६८६ हो)। निमान्त्रिय है [निमान्त्रित]हर, निर्देदितः, (स्पष्ट १=)। णिनिष्ठ 🚶 देखें निहुब ; (फ्ह २, १ ; गा =••)। निमुद्र जिमेल मह [निर्भमेलय्] बाहर बरता । बत्तर-जिमे-ल्लंत ; (पड़ १,३—पत्र ४१)। गिभेन्द्रण व [दे] रह, बर, स्थान ; (इन्म)। जिम वह [नि ÷ संस्] स्थान करता । विनद्र ; (हेर, १६६; पर्)। दिनेद; (पि ११८)। वक्-णिर्मेत; (9 1, 71) [पिमंत मह [नि ÷ मन्द्रय्] निनन्द्रय देता, न्यौद्रा देता। विनदेर ; (मरा)। वह-जिमतिमाण ; (म्राचा २, २, १)। वंह--पिनंतिकप ; (नहा)। चिमंत्रच न [निमन्त्रण]हिनन्त्रच, न्क्वैच ; (टरपृ९९३)। पिसंतपा भी [निमन्त्रणा] कार देखे ; (पंचा १२) । चिनंतिय वि [निमन्त्रित] बिन्हों न्यौता दिया गया हो बह ; (महा) । पिममा वि [निमझ] हवाहुमा ; (पटन १०६, ४ ; भीत)। जिन्य मी [जिला] नरीनिरीप ; (जं ३)। ं पिमज्ज हरू [नि + मस्ज्] ह्वना, निमानन काना । दिस-व्यहः; (वि १९=)। वह—जिमदर्जतः; (गा ६०६ः; इस ६४)। ः पिमञ्जत वि [निमञ्जक] १ निनञ्जत स्रने वादा । वानप्रस्थायनी कारमनिकाय, जो स्लान के जिए मोहे समय वह बदागर में दिनम रहते हैं ; (भीर) b पिमञ्जूष व [निमञ्जन] हृदना, जउ-प्रवेश ; (सुरा 38x) 1 पिमानिय देखं निम्मानिय≕हिन्दित ; (६५) । जिमिम वि[नयस्त]स्यतिम निहेत ; (दुना ; में १,४३; उँ हैं ; पर्क; सर्वे)। निर्मित्र वि [दे] माज्ञ , मुँदा हुमा ; (पर्)। चितिय देवी निस्स,प = दिनंद; (रून १, २१)। निमित्त व [निमित्त] १ सार, देत ; (प्रास् १०४)। २ बारा-स्टिन, छड़बरि-कारा ; (सम २,२) । ३ गास-विदेश, मिलान कादि जानने का एक शाक्ष ; (मोर्न्)६ माः

```
RREC
                                            ,पाइअसइमहण्यवी ।
                                                                                   :[:"
    ठा ८) ; '४,मनोरिदन इन में काम्ब-भूत परार्यं; ( का ८) ।
                                                       णिम्मच्छ सङ [नि+प्रप्त] निनेत राग
     ४ जैन साधुमों, की,भिद्धा का एक दोन; ( दा ३, ४.),।
                                                         (मति)।
  'पिंड पुं[ 'पिण्ड ] महिन्य माहि कृतता कर यात की हुई
                                                       णिसमञ्ज्ञाण न [ निप्रश्नण ] वित्रपत ; (मं
    भिक्षा ; ( भावा २, % £ ) [
                                                       जिम्मम्बर वि [ निर्माटसर्थ ] मन्तर्थ रहेर,
  णिमित्तिय देशो प्रीमित्तिय ; ( द्वा ४०१ )।
                                                       1 ( AS & LE) "
  ,णिमिद्द सङ् [ नि+सोल् ] स्रोत मुँदना, स्रोत सीकता ।
                                                       विमाधिम हि [ निप्नमित ] हिंदत ; (न
    विमिल्लरः (हे ४, १३१)।
                                                       जिम्मञ्जिष व [ निर्मशिक ] १ वरिया
  णिमिल्ल नि. [निमोलित ] बिधने नेव बंद किया हो,
                                                       रिजन, निजनता; (अभि (=)।
   मुदिन-नेत्र ; ( से ६, ३,० ; ०१, ६० )। .
                                                      ,जिम्मङ्बाय वि [ निर्मर्थार्] मर्वदानीत, (
  णिमिल्लप देशो ग्रिमीलण , ( राज ) ।
                                                      णिम्महिबय वि [ निर्मार्जिन ] ,श्रादेप। (
 ,णिमिस पु [निमिय ]. नेव-संदोष, व्यक्ति-मोतन , (गा
                                                      विम्मणुय वि [ निर्मनुज ] मनुवन्ति ; (।
    ३८४ । सुपरे २१६ ; गुउड ) ।
                                                      जिम्महरा वि [ निर्माहक ] १ निरम्य महत्र क
 णिमीलण न [निमीलन ] मॉक्त-संदोद ; (या ३६७ ;
                                                       ई कोरों की एक जाति ; ( शक् १, १ )।
 । सम १, १, १, १२ हो ).।
                                                     णिम्महिष वि [ निर्महित ] विश्वा महिनी
 णिमीलिस वि [ निमोलिन ] मुहिन्-(नेव) ; (गा १३३; व
                                                       (921,1)
   4, 与E,,(科賞!),1.
                                                     जिम्मम वि [ निर्मम ] १ ,ननज रहिन, किल्ला
 |णिमीस न [ निर्मिश्र ] एक निराधर-नगर ; ( इक )।
                                                       हर्द ; त्रम १४०)। १ प्रभारत-वर्ष हे .
 णिमे |एव [ नि + मा ] स्वाप्त करना । विमेति, ( गउड)।
                                                      देव ; ( सम १६४ )।
 , जिमेज न [ दे ] स्थान, जगह , ( दे ४, ३७,) ।
                                                     जिम्मय वि [ दे ] गन् , गवा हुमा । ( दे ४,३)
 णिमेल बीत [दे] दन्त-माम ; (दे४, १०) । स्री—
                                                     णिम्मल वि [ निर्मल ] मत-१६७, विगुद्ध । (
ाला, (दे४,३०)।
                                                     . प्रास् १३१) । २ ई मध-देवलोक का एक प्रस्थ
 णिमेस ५ [निमेष ] निमीलन, मचि-संदोच । (आ १६;
                                                     विस्मत्ल व [ निर्मालय ]देवका दक्षित ह्या (
 , सद ) ।
                                                      ۹٤) ا
.णिमेलि देवो णिमे ।
णिमेसि ति [ निमेपिन् ] भास मूँदने वाता, , ( सुस ४४)।
                                                    जिम्मद सड [ निर्+मा ] बनाना, रक्ता, दर्सी
णिसम सक [निर्+मा] बताना, निर्माय करना । विस्मा :
                                                     (हे ४, १६, ९१) । इस-निम्मदिस्मनि, (वन
                                                    जिम्मय सक [ निर्+मापष् ]। बनवाना, बर्र
। ( वह् )। विम्मेह, (थम्म ११२)) । स्वक्-विस्मार्खत्,
                                                     ४, ४ ; दुमा ) ह
  ( नाद-मात्तरी १४ ) ह
पिस्मार्भ नि [ निर्मित ] र्यान, इन ; ( गा. १०० ; ६००
                                                    णिममवर्सु वि [ निर्मापिय ] बनाने रहा
                                                     4, 4 ) 1
 平);
                                                    जिस्सवण व [ निर्माण ] रक्ता, इति ; ( हा ।
णिमांयण व [निर्मयन] १ विनास ३ १ वि. विवासक ;"उद
                                                     श्चम २३, ६६ ; २०६ )।
 य परामु निर्म मक्त्यनिम्मवर्थ नित्य " ( हुन ७९ )।
```

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, करावा, (व णिम्मविक 🏗 [निर्मित] बनावा हुमा, र्वन , (ह

णिममन्त्रिय वि [निर्मापित] बन्ताया हुमा ; (म

णिस्मह सुद्ध [सम्] १ जाना, समन करना । १ प्र^{ह्}

चिम्बद्ध ; (हे ४, १६२)। वह-विस्मर्थे।

हमाय , (वे कु ६३ , ३६, ६३ ; व १६६)।

101; 97 11, 11)1

णिम्मंस वि [निमास] मान-रिश, सुद्ध , (खावा १,

णिमांसा बी [दे] देवी-विरोध, पामुक्ता ; (दे ४,३६) ३

· णिमांसु दि [दे नि श्मधु] तस्य, अवान, युवा : (के ४,

णित्मविकान देशो णिसमञ्जाध = निर्माहिक ; (नाट)।

- १३ सय)।

11(. \$\$

६३ [निर्मेष] १ विरास : १ दि, विसासक : ४गीव । इम् न [निर्मयन] ९ वितास ; १ विविन सन्दर्भ ग थर)। सी—"ची ; (सुर १६, १⊏८)। व्यि हि [गत] गया हुना : (इसा) । हिम वि [निर्मियन] विनासित ; (हेडा १०)। बिंग देखें जिसा । ार्थ देखे जिम्माय ; (ति ४६१)। 🖳 स्ट [निर्+मा] स्तन, रूपना, रूपना । दिन्नी-ः(देप, १६, षष्ट् ; प्राप्तः) । ाण न [निर्माण] १ रचना, बनाउर, इति ; २ कर्म-^प, स्पंत के **मर्**गोपार्ग के निर्माय में निरासक कर्न-7;(神(い)) गि वि[निर्मात] सन-हित ; / मे ३, ४१)। रिमंत्र वि [निर्मायक] निर्माद-कर्त, बनाने याला : 3, 14) | र्गिनम दि [निर्मित] गीवद, बनाया हुमा ; (इमा)। ानिभ वि [निर्मानित] मरमन्ति, तियस्त ; (मवि) । मणुख दि [निर्मानुष] मनुम-ग्रीतः, (सुरा ४४४)। -"सी; (महा)। राय दि [निर्मात] १ रिंदन, विदिन, इत ; (सव ; ्वता १४)। १ न्युप, मन्यल, इनाउ ; (मीर;)। "नदिपक्रवेषु निम्माया परिवाहवा" (पुर १२,४१)। विष - सङ [निर्+भाषय्] बनवानाः, करवानाः। न्यः (स्ट)। इ—ियमायितः (स्म २,१,२२)। राविय वि [निर्मापित] बनवामा हुमा, कारित : (श्वरा 4.) 1 मंत्र दि [निर्मित] ग्रीवन, बनाया हुमा ; (अ = ; १९७)। 'बाइ वि ['बादिन्] बात् को ईप-हिंद मनने बाला ; (य 🖂)। मन्स वि [निर्मिश्र] १ मिता हुमा, निर्मिश चल्ही [बन्ती] प्रत्यन्तु नवर्तक का स्ववन, जैते माता, ं गेर्डे, बरीनी, पुत्र और पुत्री ; (बन १०)। मिनुत्र वि [.हे] राम्यु-सहित, हाई। मुँछ बर्जितः (पड्)। उन्हें वि [निर्मु बत] इक हिना बना । (हुग १७३)। 🗺 ई [निर्मोहा] मुक्ति, हुटकारा ; (निन २४(०)। लिवि [निम्ल] मृत-गति, बिल्हा मृत करा गता दः (बा १३१.)। मेर मि [निर्मियोर्द] मेनीदा-राह्नि, निर्दाग्य ; (स ३, |

१ . मीर ; गुर ६) (शिम्मोत्र हुं [निर्मोक] बन्तुक, क्रांको त्यवापः (ह २, १=२; सन १५०, हे १, ६०)। जिम्मोधजी मी [निर्मोचनी] कन्तुर, निर्मोर्क : (उत्त 14, 3x) [शिम्मोद्रण न ['निर्मोटन] विनाग ; (मै ६१) । णिनमोल्न दि [निर्मृत्य] मृत्य-गहित ; (हुना)। पिन्मोह दि [निर्मोह] मृंह-एर्न; (इमा ; आ १२)। पारद् सी [निर्म्ह ति] मूता-नवत द्या मधिग्रायक, देव : (जर, १)। णिखयार वि [निर्पतिचार] मनिवार-विद्यु द्वाय-वर्णितः ; (युरा ९००) 1 पिछस्य वि [निर्तिशय] मत्यन्त, स्वाधिक ; (कार) है जिखें बार देवा जिख्यार : (द्वा १०० ; रंबर १५) हैं। गिरंकुस नि [निरङ्करा] मंद्रय रहित, स्वच्छन्दी ; (इमा; धार≂ }। जिरंगण वि [निरदूरण] 'निर्वेष, श्रेप-रहित ; (मीप ; टव : याया १/११-नियम १७१)। पिरंगी स्रो [दें]े तिर का मरापुरत, पूँवट ;े (न्दे ४/ 39; 2, 2+)1 णिरंजण वि[निरञ्जन]निर्देष, हैप-रहेन; (सं १८२; हज्य)। णिरतय वि [निरन्तक] मन्तं-रहित ; (डप १०३१ टॉ)); णिरंतर वि [निरेन्तर] भन्तरं-रहिन् भवंपान-रहित : (गदर : है ९, १४) है जिरंतराय मि [निरन्तराय] १ निर्वेचन, निर्वेच : १३ ब्यतवान-रहित, स्त्रत ; "धर्म्म" हरेह विनर्त "व निरन्तराये" (पडम'४४, ई.फे.) i पिरितरियः वि [निरन्तरित] मन्तर-गृहेतं, स्वयन-गृहेतं, (জীব[†]) ট্ णिरंब वि | नीरनेब | छिदनेदिन । (विकं ६७)। जिर्द्यर वि [निर्द्यर] वस-रहिद, नेम ; (सार्वन) । णिट्या सा [निरम्मा] एड इत्यादी, वैरायन इन्द्र को एड मध-महिथी; (य १, १; रक्)। जित्स वि विरंदा विश्व रहितं, भेनारं, बंदर्ज : (विने)। जित्सक पुँ वि । भू बार, स्तेतं । ५ छः, पाँठ ; ३ वि स्थित : (वे भू भूट)। स्थितः (दे के प्रेट)। जिरिक्क वि निरास्त कि कर हर, निस्त ; (बन ६, १६)। जिएमा कर [निर्-शित्र] निर्राहित करता, देखता।

बाक्स ; (हे ४, ४३८) । "तोवि ताव रिजीए बिर-निसन्त्रा" (मदा) । णिरमञ्जर वि [निरश्चर] मूर्स, ज्ञान-रहित । (क्ष्यू : वज्ञा ११८)। णिएगल वि [निरमें ह] १ स्टाबर में सहित ; (पुरा १६२ ; ४७१)। २ स्वब्ब्दो, स्वैरी, निरंद्रस, (पाम)।

णिरब्दण रि [निरर्चन] प्रपंत-रित ; (३व) । णिरहु) रि [निरर्थ, कि] १ निर्वंड, निज्यवेतन, णिरहुरा े निकस्सा; (उत्त १०)। र न प्रयोजन का मनाव, "विगरतिम दिशमो, बेहुकामो सुपंतुरी" (उन २,४२)। णिरण ॕ [निर्माण] श्व-१हित, करव ने मुख ; (मुग्र

kea . see) |

णिरणान्न देशो जिरिणास = नत् । विख्वतांइ ; (ह ¥,9 °८) णिरणुकंप वि [निरन्धुकन्म] बनुष्ण्पा-रहिन, निर्देव ; (बाया १, २; बुह १) 1.

णिरणुक्कोस वि [निरनुकोश] निर्देश, दया राज्य : (साया १, २ ; प्रास् ६८) ।

णिरणुनाय वि [निरनुनाप] क्लातार रहिन ; (बाबा १,२)६ णिरलुनावि वि [निरमुतापिन्] परकताप-वर्णितः । (१व

244) ! णिरस्थ वि [निरस्त] बगस्त, निरान्त ; (बन ≤)।

णिरस्य) वि'[निर्यं,क] मपार्यंड, निरुमा, निर्म णरत्था बोजन ; (दे ४, १६ ; वजन ६६, ४ ; कह णिरस्थय र्र १, १ । हर , से ४१) ।

णिएव्य वर्ष [स्याः] बैजा । विएवह ; (हे ४, १६)।

भूक-किरप्पीम : (इमा) 1

चिरव्य वं वि । एवं, पीक्ष १ वि, बद्देन्दित, (दे ४,४३)। चिरमिगाइ कि [निरमिग्रह] श्रामिश्रह-रोहत :(श्राह ६)। जिरमिराम वि [निरमिराम] अपृत्तर, मचाह, (पञ्च १,३)। जिरमिलप वि [निरमिलाप्य] अनिर्वेक्तीय, बाबो हे बन्दाने ही प्रयास्य ; (विमे ४०८)। जिर्मिस्संग 🖪 [निर्मिष्यङ्ग] बार्शन्त-विदे, निन्हाः (पंचा २, १)।

जिरव 🕽 [निरय] १ नाइ, प्रय-मोग-स्वान ; (ठा ४, १; भाषा ; पुरा १४०)। १ नरह-स्थित जोड, नारह, (अ

१०)। 'पाल ई ['पाल] देशनियेश, (ग्र. ४,१)। "विलिया शी ["चलिका] ९ वैन मागमन्त्र विशेष; (मिर् १, १)। । मरक-निर्देश (प्रस्ति)। ३ नरक जीतों को दुःश देनें

बाड़े देवीं की एड जाति, परमाधार्मिक देर ; (श णिरव नि [निरत] बामन, तथा, ठन्तेन (। दर ; द्वा २६) १ जिस्य वि [नोरजस्] रजोरदिर, निनंत्र ,

CAC) 1 णिएव सक [तुमुस्] साने की इच्छा स्मा कि णिरव सह [मा + शिप्] मानेन कता। बिन जिरवहक्स 🖪 [निरपेश] बरेशा-रींग, ^{विरो}

(भि ॰ ही)। णिखकंख दि [निरयकाइस] स्टा-रीरि

(मीप)। विरवक्ति वि [निरवकाद्दिन] निसा.[व जिरवगाह वि [निरवगाह] क्रागहार्थः, जिरवमाह वि [निरयमह] निरंहण, संपन

(प्राप्त)। चिरवञ्च वि [निरपत्य] बयत्य-रहिन, वि ह

समा १६०)। चिरवाज नि [निरवय] निर्तेत, निर्देश (¹ तर ५ १८१)।

जिरचजाम देशो जिरोजाम; (बर)। णिरवयस्य देखे जिरम्हास्त ; (वाग १, ।

63)1 जिरवयद वि [निरम्नयद] अवस^{्हित}, ^{निर्} णिरवयासं वि [निरयकारा] प्रवद्यार ^{(ही}, जिरवराह 🖟 [निरपराथ] प्रशाय-गीठ, ^{हेर्} जिरवराहि वि [निरपराधिन्] कर हे^{नी} । जिरवर्लय हि [निरवरस्य] सहात रहित् (णिरचला**य मि [निर**पलाप] १ मप्डप-र

(84 ku) | जित्यसंक मि [नित्यमङ्] इःगर्धानी णिरवसर 🖟 [निरवसर] माना-र्रातः (णिखसाण वि [निखसान] मन्त-र्वा णिरवसेस 🖟 [निरवसेस] सर, सक्त , (बहु; हे १, ३०)।

बात करे प्रकट नहा करने भाषा, इसरे को सर्वी

जिरवाय]व [.निरपाय] १ उद्धाः रहिरः] निर्देष, विगुद्ध र (आ १६ ; ग्रुपा: १४६)।

निराम है [दे] रहेंस् इ.र : (११) । जिरासंग मि जिराशंस में बाबाइसा-रहेन, निरीह : (इस ६९१)। निरामच वि [निराधय] निराधाः (बन्धे १६१) । निरामय वि [निराधिय] 'भाशने-विद्य का बन्धन के बतावों वे रहेता ; (पन १, १)।

4.2

निराद है [दे] निर्देश, निव्हत ; (वे ४, २०) । चिरिम हि दि भागेतिन बाबी स्वा हमा : वि र १०)। जिटिक में [वे] का, बया हमा : (वे ४, ३० 🏗

जिरिनी दे दियो चीरेगी : (गांव)। ' त्तिरियास में निरित्यम] इम्यत-रदिन : (अग ७, १)। शिरिक्त तर (निर्दर्शा देक्ता, व्यतोदन बला शिरि-

क्ता, विकित्ता, (मच : महा)। बहु-- विकित्तात चिरिक्कमाण ; (मक् ; वर २११ दी) । सह-जिरि-रिक्टहरा । (१व) । ४ - निरिक्लोग्रिक ; (ब्रम्) । निरिक्शण र [निरीहाण] प्रश्लीतन , (गा १६०)।

शिरिक्चणां भी [निरीशणा] मंद्रतेका, प्रतिकेता : (see 2) 1 चिरिक्तिम नि दिरिशिय है आंशोधित, वृद्ध हैं (कापू ह

काल कर् कर है। चिरिन्य तक [दिस्सी] व भारतेब काता । व मह BONT ((\$ V. 22) 2

विविधियाम 🖟 [निडान] मान्त्रिय, मानिविधय १(६मा) । विक्ति निर्देश विश्वनान्ति अस्य: (अ १. १ C-18 380) 1

निरिकास कर [राम्] तमने बाना । विशेषान्ह । (हे v. 919) 1 रिंशिकाम वह शिया वंत्रता । विशेषास, (हेप, १८१)।

विरियाण वर्ष [मार्] पराप्त करना, गुणारा । विरियास्त · (2 v, 9 00 , 501) f र्फिटिकान्तिक वि [सर्व] वया बुझा, कृता , (कुमा) ।

' रिटियानिय नै [रिष्ट] पंता हवा : (पूना)। fufifurs es [fig] ern : felferer : (}

e. 462 1 1 किर्दिक्रीक्षेत्र में [विष्ट] केंग्र दूषा , (कुल) | सिनि के (सिनित] एवटा का नवा, (इस)।

जिल्हे में [मिर्फेट्] मैन्स्य, मैन्स्र , (क्रस , क्रस ***) :

छुपा न्दः छन्नं ; मनि) । णिह्य देखी णिद्ध्य : (तिमे १४६४ : हार ४११)। . णिर्द्राष्ट्रय वि [निरुजीहत] नीरेगं क्या क्या : [त

८ । जितस-स्था

1 [(5 0.2) णिवंस वह [निस्क्यु] तिरोव इता, रोझा । सिंग् (अपेप) । कहरू जिल्लामाण, जिल्लान, (१ ११) बहा) सह-णिव भरता । (तृम १, ४,१)। F णिक भियत्रम, जिरुद्रात्य, (सुरा ४-४; विते १०८१)

णिक् मण व . [निरोधन] भळवन, स्था€ : (ए 9. k. # (1) 1 णिदक्षांठ वि [निरत्कप्ठ] बल्ब्या रहिर, लिख (me):

जिरुप देशो जिरिन्छ । विरुष । (वर्)। णिवञ्चार में [निवन्सार] १ वर्षार-पुरित्न लिए खोगों के निर्णसन से मर्जिन; (सामा १ - नम् १४) ९ पालाना जाने से जो रोका गया हो। (वन्ह-१, १) णिडब्छच वि [निरम्सय] वत्त्वन सी] (प्रीपी णिवन्दाह में [निव्हसाह] बत्याह रोत ; (देश, 1) णिरुम 🖷 [निरुत्त] १ रोग-रहिन। १ न, रोग हा प्रद 'सिख क ['शिख] एक प्रधार की तावर्थ ; (सरे)' णिकरमम वि [निक्यम] उपन रहिः, माला । 🕻 # \$90 : EM SCY } !"

णिरदार् । [निस्त्यायिन] गरी वजी गरी । 1:1)1 विरत्त हैं [विरवन] १ जन, दरिंग ; (मा पर्) ब, मिर्किन बरिना, (मण्ड)। १ क्युनिहा १ : ६(२) । ४ वेशहर साम-शिवः (धीर) । जिमला किन [दे] १ निक्ति, मन्द्री, बेल्ह्या (ण, १० ; बाल १६, १९ (क्या ; सव, मार). लेखी सन्य मिलां चुरियो संपत्तिकर बाले" (बामा १, ६६)।

रि, इंटीक्स, विस्ता-एड्स, (इसा) । जिल्लाम में [निरुशान] स्टिप का-पुरू, बना , (तं.) विश्वमा 🖟 [विश्वमा] संकल भेर, (बार)) 🤊 विश्वमार है। [विश्वमार] क्षाप्त नहित दिया हुन, क्षाप्त, (# 11,56)1

निवर्तित्र को [दिवर्तित] ब्युप्टन , (सि. ६६५)

```
निरुचित्र है [नैरुचितर] स्तुपति के कतुण कि हस सर्व

किस बार कर रूप ( काउ ) ।

निरुद्ध के [निरुद्ध ] एस के बच्च, क्ष्मुस । सी - पि;

( पर १, ४ ) ।

निरुद्ध है [निरुद्ध ] १ गेस हुमा , ( गाय १, १ ) । १

करूर, मास्त्रीत ; ( सम १, १, ३ ) । ३ द सम्बद्ध हो

पर बार्च ; ( कम ) ।

निरुद्ध है देशे जिरुद्ध ।

निरुद्ध है ।
```

निगरिकेट हेरों निगरिकार (सा)।
निगरिकार मिट्ट होरों निगरिकार । शहे का विकास में कि निगरिकार में । शहे का विकास में कि सिंद के सिंद क

निरवक्केम दि [निरवक्टेश] शंह मादि होगों हे रहिः,

(a +)!

निय्यपारि वि [निग्रकारिन्] अवद्यः के न्हीं बनने कहा, प्रमुख्यार नहीं कहते वाता; (प्रम्म) । निय्यपाह वि [निरम्मह] उत्कार नहीं कहते कहता; (द्य ४, १) । निय्यहानि वि [निरमस्यानिम्] निरम्मी, भावती; (भावा)। निय्यहत्व वि [निरमस्यानिम्] वर्षान्त्रस्य वि [निरमस्य वि]

(की)। जिल्लाम वि [निरुपम] म-ज्याल, म-जावास्य ; (कीर ; या)। जिल्लापिया वि [निरुपचरित] बास्टविक, टब्य; (यावा

ी, १)।

जिरोजाम है [निर्वनाम] कहार-पिट्र, वर्षेत्र, वर्

ेंपानिन हिम्मदेश" (५२० १४, ६४)। निरंदेसमां नि [निरंपसर्ग] १ ट्लॉन्स्ट्र, ब्राउन्हेंट्र, (इन् २८०)। १ धुं मोल, सुन्ति, (६६ ; पर्व १)। १ में टेल्ले का क्यांत ; (वर १)।

२०६)।
निरुवास्थि वि [गृहीत] चरात, गृहेत; (इसा)।
निरुवालमे वि [तिहवालम्म] करन्यममून्यः; (गृहदः।
निरुवियम वि [निरुविय] टर्डुगनहितः; (यावाः),
१ – पर ६)।
निरुव्यमहितः विकासमाहि । स्टाइ-ईलः (सम्। १,४,१)(

जिल्लाह से [निरुत्साह] उत्तर हैंन, (स्प १,४,१)(जिल्ला कह [नि ÷रुप्य] १ विवार कर कहता । १ विवेदी करता । १ देखता । ४ दिखताना । ४ तताय कहता | विवेदी वेद (सरा)। वह—जिल्लाहित तिरुद्धाताणे, (दर ११, १ १६ १ इस १५४)। वह—जिल्लाहित हो, (विवेदी हैं - जिल्लाहित करता । विवेदी हैं (इस १००)। जिल्लाहित हैं दिखताने करता। की—जिलेहा, (विवेदी ११०)। २ वि. दिखताने करता। की—जिलेहा, (विवेदी

११, २१)।
जिरुवपाया साँ [जिरुपणा] जिरुपण ; (दा ६३०)।
जिरुवपाया साँ [जिरुपणा] ग्लेलि, जिर्द सी से इंग्सें से सा है। जिरुपला] ग्लेलि, जिर्द सी से इंग्सें से सा है। जिरुपला] १ देखा हुमा ; (से ११, ११, खा १२१)। १ माजीवना कर कहा हुमा ; १ विदेशित, जिरुपलित (से १, ४०)। ४ दिन्याया हुमा है गलीवित, (सर.)।
जिरुपला वि जिरुपला] दलक्क्य-पुरंत ; (मह.)।

णिकह वृं [निकह] महाराजातिकार, एक तार का विर्वल, (वाला १, १३)। पिरोय वि [निरोजना] निकार, सिरा, (सा १६, ४)। पिरोयण वि [निरोजना] निकार, सिरा, (क्या ; मौरो), निरोजाम वृं [निरोजनाम] निकार रहित, वर्षित, व्यंत्र, (व्यं), विरोज वि [नीरोज] रोज-रहित ; (मौरा, व्यंजा १, १)। निरोज वृं [वै] मोदेश, माजा, स्वर्ध : (मुखा १३४)।

जिसेवंगर वि [निस्पंकार] दरदर से दर्श मनने बला; (क्षेत्र ११३ मा)। जिसेवंगरि वि [निस्पंकारिन्] क्यर देखें ; (स्व) । जिसेवंगरि वे [जिस्पंकारिन्] क्यर देखें ; (स्व) ।

बद्दा 🕽 ।

जिन्यनिम हि [दे] निर्णत, निगुत, निर्मत, (रे भए)

चिल्लालिय हि [निर्लालिम] वि गरिए, बहुर किड

हुमा : (बाबा १, १ : =--वर १३३ : ग्रु १३ रहेरे,

```
णिरोह वुं [निरोध] इंडावट, रोडना, (अ ४, १, भीर, पाम)।
णिरोह्ग [ [निरोध ] गेकने वाला ; ( रंगा )।
णिरोहण न [ निरोधन ] रहत्वट , ( फार १, १ ) र
चिलंक वृं [ दे ] पनर्यह, विहरान, श्रीसन-पात्र; ( दे ४,३१)।
णिलय पुं [ निलय ] घर, स्थान, आध्य ; (से १, १'; वा
 ४२१; पाध )।
णिलयण न [ निलयन ] बमनि, स्थान ; ( विमे ) ।
णिलाड न [ ललाड ] भारत, बनार ; ( कुमा ) ।
णिलिम देखे जिलोभ । बिलियद ; (वर् ) ।
णिलित नीचे देखा ।
णिलिएक | एक [ नि+ली ] १ मारचेप करना, मेटना ।
णिलीम 🤰 रे बूर हरना 🛊 अब्द किन जाना 🖟 चिलिस्बर,
 विलीमर;(६४, ६६); विलिमित्रमा;(कप्र)।
 क्क--णिलित, णिलिउर्जमाण, णिलीअर्त, णिलीअमाण
 (कान्य, सम २, १; काना
                           d, Ana ) I
णिलीहर दि [ निलेत ] मारक्षेत्र करने वाला, भेटने वाला ,
 ( क्या )।
णिलुक्क वेसी णिलीभ । बिहुक्का; (हे ४, ११ , वह )।
 वक्र--णिलुक्कंत ; ( <u>इ</u>मा ) ।
णिलुक्क क. लुद्द ] वेक्स । विजुक्का; (ह ४, १९६)।
णिलुक्क दि [ है निलीन ] १ निलीन, च्व किया हुआ,
 प्रचलन् ग्रम, निरोहित ; ( बाबा १, 🗷 ; से ११, १ ; वा
 (४) चर ६, ६ ; उर ; हम (४०)। २ सीन, भासक ;
  (विषे ६०)।
 णिलुक्कण न [निलंपन] जिपना; (वर्ष १११)।
पिल्लंक [ दे ] देशो जिलंक ; (द ४, ३१ )।
णित्लंडण न [निलाञ्चन] शरीर के किमी भरपन का बेहन,
  (उदाः पडि)।
 पिदलन्छ देखी पेदलम्छ ; ( वि ६६<sup>५</sup> ) ।
 णिद्याच्छण वि [ निलेशण ] १ मूर्व, नेवसूक (उप ४६ ४
  टी )। र माउदाय गला, संस्थ ; (था ५२ )।
 णिस्टरम हि [बिस्टरम] लग्ना-रहित ; (हे २,१६५, २००)
 णिट्टिनिम पुंची [ निर्लिनिमन् ] निर्वित्रक्रम्, वेशस्मी :
```

(११,३१)। सी—"माः (१५,३१)।

खरः (दे४, २०२)। .

(इमा)।

णिल्ट्स मह [उन् + रुख्] उन्लखना, विश्वना । विरख

जिल्लासिय वि [उल्लासित] उल्लाम-युक, विकासन

जिल्लुंड सङ [सुन्] बारना, त्याग रूजा। ^{(दिल्लुह} (\$ 4, 29) I जिल्लुंडिय 🖟 [मुक्त] सक, ब्रोग हुमा ; (🖼)। जिल्लुस वि [निर्हम] विनारित ; (कि ६१)। 🕫 जिल्ह्र क [किंदु] बेदन करना, करना । विन्तुन हे (३४, ११४) । दिल्लुन्ह; (मारा ६८) । ० णिल्ट्राण व [छेदन] वंद विश्वेर : (इमा)। जिल्ह्यूरिय वि [किन्न] करा हुवा, विन्त्रिन, "वर्ग" . विद्युमाइयनिरुक्तियद्वियसंख्यले" (वडम ६,२१०)(णिक्लेय वि [निर्लेष] सेन-पीता ; (विते २०⁼१) ! णिक्लेयग ई [निर्लेपक] रजह, बोर्ग ; (मार् ४)। णिक्लेयण व [निर्लेपन] १ वस के ए वर, (कर १) । १ वि, क्लिंप, क्षेपरदिन, (मोन १६ मी)। काल g [काल] बहे बात, जिल समय जरह है ए भी बारक जी इस हो : (भव) । णिल्लेबिश वि [निर्लेषित] १ हेप-रहित स्मि 👫 ै विज्ञाल स्ट बदा हुवा हू (मग) 1' णिस्लेहण व [तिसेंखन] उत्तर्गन, गेंडना; (गर - 2. 2. 2) 1 णिल्लोम 🕽 वि [निल्लॉम] तोम-विन, म-सुन्य : 🧗 जिल्लोह । २६१ : भा १२ : मनि) 1 / णिव वं [नूप] राजा, नरेता : (तुमा : रस्व पर)। "ताणाय 🖩 ["संबन्धिन] राज संबन्धी, राजधीन; (प्र 112) I. णिवह वं [मूपति] उत्तर देखो ; (स १, १ ; क्षा 🗥 ६) । "अस्य पुं["आर्थ] राजनार्ग, जाहिर रहा (पत्रम् ५६, १६)। णिवंदम 🖪 [निपतित] १ मीचे गिरी हमा ; (कार्ग क w) । १ एक प्रकार का विषः (अ.४.४)। णिवरसु वि [निपनित्] नीवे गिएने वाता : (हा पर्प) णिवच्छण न [दे] मनतारण, उत्तरना : (दे ४, ४०)! णिवज्ञ मह [निर्-पद्] वियन होता, नीपंत्रता, क्र विवस्त्रहः (वह) ।

(7 tis [\$1,444] } kom (fristory , (in 642)) -रिप्रकृताल, (१९४४)। इसे-रिप्रकेस 79, 931 [देव [निर्म्यूत्] ६ रिनुत्र होता, गीरिता, करता । पा । वर् किंग्स्ट्रेंग , (राग १६१) ! [वि [नियुक्त] ५ नियम्, रहा हुवा, प्रवर्ति नियुक्त । [[7] 1; (* v. 120) 1 हर म (शियानेन) १ विह्नात, प्रानि निर्देश है हर्ष काम बार हरन है। बर् क्राय , (ब्लाव ९, ३०० v:) 1 इ.स. (निवयत्) राज्ये परमा, राज्ये निवस । निवस (ता , गरू , माः) । यह - जियदेत, जियद-ग; (म १४; मा ३, १९४)। मह - जियहि न, पिषद्वियः (४०३ ; ६००) । रण २ [नियतन] श्राय-यात , (गर) ! डिय वि [निपनित] अन्ये निम हुसा ; (मे १४. ाग स्थल : १४ ह १४ है। हिर १ [निपनित्] जेके निके बाला; (सा .; m=) t ाण्य वि[नियल्य] १ देहा हुमा ; (महा ६ मेथा ा परे)। १ तु बच्दोक्सी-किंद, क्रिसेने धर्म काहि ीं प्रसार का ध्यान व किया जाता हो का कारोत्सर्य : मत् १)। 'नियण्य वुं ['नियण्य] नियमें मार्च र ग्रीड ध्यान किया जाय बर बायोग्गर्स ; (झाव 🖟) 🗓 रणगुन्तिस्य वुं [तियणणीहस्तृत] कायोगमर्ग-विदेव, ार्पे धर्म ध्यान सीत हारण ध्यान दिया जाता ही बह बायी র্লঃ(ছব ৮)। यश देकं णियह = नि+पूर् । वह -- णियश्वमाण ; म १) । इ—जियसणीयः (हाट—गई १०८)। पे--शिलाबेनि; (वि ४४९)। पन देनं जियह=तिरु ; (वर् ; बल) । वत्रण हेन्द्रे जियहूण ; (महा ; हे २, १० ; इमा)। यमप वि [नियर्सफ] १ कदिन भाने बदा, लैटिने स्ता । २ सीटाने बाला, बाफ्रिय बरने बादा ; (हे ३,३० ३ 7 (27 यति मं(निवृत्ति) निवर्तन ; (वर)! यत्तिय वि:[नियस्तिन] रोहा हुमा, प्रतिविद ; (त 41)1

रिचाँनम ६ [निचंतिन] श्रिमांत ; " निर्देश का-पूरा (स १६३) ह चित्रहि देले चित्रसि : (मीस ६) । जियम्ब देशे जियमम ; (स गई -) (रिल्य देवे नियद्व । विकास, निराम्य : (रूप : स a, v) । वह -नियर्वन, निययमाण, (हा 144 हैं) शहर, १४ ; बल है। विवय ५ [नियान] बेंचे विकार, भारत्यण, (मा १), 4:4) 1 जित्रकृत हुं [नियरण] रष्ट किंग, (उर १०३१ थी) १ जियम कर [निश्चम्] जिया बाग, गरम । विकाद ह (मग)। बह-जियमंत्रः (मृत्र ११)। हेह-जिवस्थितं (ग्राम्पः १)। जियारण व [नियमन] वय, बाहा; (मनि १३६ : सता : स्वा २ ०० } र जियमिय वि नियमित है जिले निराग विया है। बर १ (यन)। णियनिर ति [नियसित्] निराण क्षत्रे बल्हा ; (गडा)। णियह गृह [शम्] जाना, गमन बग्ना ! पियस ; (हे ४, 1(7)1 णियह भ्रष्ठ [नशः] भागना , पतायन करना । विशः ; (× x, 9u=) 1 जिवह मह [पिय्] पंतनः। दिस्हः (हे ४, १८६ ; षष्ट्र)। जिबह कुंब [निचह] मसूर, रागि, बत्था ; (से १, ४१ ; सुर ३, ३६; प्राप्त १४४), "ब्रन्छड ता पत्रनिवर्द" (बर्ग्ना 1 (831: णियह पुं[दे] सम्द्रि, बैभर; (दे ४, २६)। णियहित्र वि [नष्ट] नाग-प्राप्त ; (इसा)। णियहिथ वि पिष्ट] पीता हुमा; (इमा)। णिबाइ वि [निपातिन्] गिरने राखा ; (भारा)। णिचाड स्ड[नि÷पातय्]नांने पितना । निवादेर ; (म ६६०) । वह-- निवाडयंत, (स ६८६) । यंह--णिया-देश्सा ; (जी १)। णिवाडिय वि [निपातित] नीने गिरापा हुमा; (महा)। णिवाडिर वि [निपातियनु] नाने गिगने वाटा; (सप)। णिवाण न [निपान] कुर या तालाव के पासपगुमों के जल पंतिके लिए बनाया हुया अत्रक्ताः (स ३१२)।

_म, ७, १४१) ।

जिञ्चाण व [निर्याण] १ मुक्ति, मेरा, निर्देशी

१६७६)। २ सुब्ब, चैन, शान्ति, इ.स.मित्री

बमको निञ्जार्थ मुंदरि निस्संग्रय दुगाइ" (दर्ग गर

पंडम ४६, १६) । ३ तुमाना, विज्ञाम, (मन ४)

्रिकुमा हुमा; "जह दीतो विज्ञानी" (शिर्वे ॥

am ka) । k g, ऐरवन वर्ष में होने बहे हर कि

का नाम, (सम १६४)। . , , ; '

जिल्लार शह [छिटु] हेदन करना, बाटना ! . . विज्लाह ; (t v, 12v) t णिध्यरण २ [कथन] दुःमनिवेदन ; (मा १५५.)। चित्र्यरिम वि [हिन्त] हारा हुमा, खब्दि ; (हुमा) । जिञ्चल सक [मुख्] दुंख को छोड़नः। विश्वतेदः; 1 (\$4, 29) ; णित्र्यल भद्र [निर्+पद् -] , नियन्त् , होना, निद्ध होना, इतना । विष्नतद् । (दे ४, ११८) । । । जिञ्चान देनो जिञ्चाल=चर, 1 विष्वतर;-(ह ४,१७३८)। णिय्वल देशो णिऽयष्ट=भू । क्र--- णिश्यलंग, जिय्य-, हमाण् ; (चे १, ३६ ; १,४३) १० , ५,५५ जिल्लालम (व दि) १ जन-चीन, वानी से घारवा हुया ; २ इतिनायत ३३ विचारत, विदुक्त ३ (वे ४, १९) । लिप्यय मह [निर्+यापम्] देश बरना, बुनाना । विध्व-वेदः(स ४६६)। विष्यतमुः (कात्र)। वह-णिव्यर्थनः (तुना २२६)। इ -- णिव्यवियम्बः (सूत १६०) ! ्चिम्यचण न [निर्वारण] १ दुनाना, नान्त काना । वि शारत करने वाला, तथा को बुनधने वाला; (बुर ३,२३७)। जिप्यविम वि [नियारिंग] बुनावा हुमा, टेरा विमा हुमा , (सा १९०३ मुर १, ७४) है चित्रवह मर [निर्+यह] १ निशना, निर्देश करना, पार वरना । १ मादीविश चनाना । विव्वहर ; (म १०६; गमा ()। वर्ष-दिष्युच्नर : (वि ६४५) विक्र-णियाईन , (था १२; १३ ३३) । इ-निध्वहिराध्यः (\$7 14) | गिन्दर क [उद + वट्] १ वाक्य कार्या । १ अगर डळ्ट । क्यित्र ; (११) । फियहण न [निर्यहण] निर्माह, (नृत १०६; मृथ ३०६) । कियर्थ र [रे] विश्व, तथी ; (दे ४, ३६)। নিবো মড [বি+আন্] বিখন কনা ৷ বিদার ; (ই · v, १६६)) । सः—जिञ्चाधेन, (शे ८, ८) । विध्वाचारम व [निज्यांचितम] स्वचनर्गत् स्व मना-गर्य : (घीर) । विकास वि [विकासन] १ कारत वर्षितः (बारा १, १ ; ब्ला ; बार) । २ त् ब्लाप्ट प्राञ्चल (mq 1):

णिञ्चाण न [दे] दुन स्थन ; (दे ४,३१)। पित्र्याणि वं [निर्वाणिन्] मत्त्रपं में मण उनी काल में संजात एक जिन देव ; (स्म ५)। 🖫 णिञ्चाणी सी[नियाणी] मनतन् भी र*िन* , शासन-देशी ; (एंति १ ; १०) । जिन्याय दि [निर्याण] बेता हुमा, म्लीता (है 194) 1. . . . विष्याय दि [विधाल] १ जिले विश्व स्थि (इमा) १ २ गुक्ति, निर्देतः (में ११,९१)। जिञ्चाय नि [निर्यात] बायु-(रा । (वर्ष ' मीप)। णित्यालिय हि [भाषिते] १वड् हिया 👫 जिञ्चाय देनो जिञ्चय । जिञ्चादेन । (१ र्थह—जिञ्जाविऊण ; (निष् १)। ['] जिल्हाय ई [नियाँप] थी, गाड मर्थ इ (निष् १)। कहा सी [कया] ल म इवा ; (स ४, २)। णिप्यायात्तम (शौ) रि [निर्यायिक्ड) शता ; (ति ६०००) । ' আংঘাৰত ন [নিৰ্বাদণ] বুদনে, ^{বিত্ৰে} णिप्यायणा भी [निर्यायणा] उन्तर, हैं। गानि ; (धउर) जिञ्चाविय 🖟 [निर्धापित] द्या भिन्न 🖍 १, १ ; इस १, १) । णिश्वासम्ब व [निर्यासन] रेग⁵⁴⁵ धरेण; इस रेथरे 🕽 🛭 णिव्यासणा को [निर्वासना] उत्तर रेक हैं। ा निकाशया को [निकासनाः] एवं क्यानेत्री; (वा **) :

not.

जिल्हाह मो [निर्द नि] ९ निर्वाण माज माज हों ११ (व्हंचा) जिल्हाह मो [निर्द नि] ९ निर्वाण माज हों १९ माज १९ १००)। प्राच १६४)। १ सन वां सम्बन्धा, निवाण माज १९ १००)। प्राच १६४)। १ सन वां सम्बन्धा, निवाण माज १९ १०० ।। जन्म (१००० १)। जन्म १०० वि विकास निर्देश का विकास के स्वास १००० १)। जन्म (१००० १)। जन्म १०० विकास निर्देश का विकास के स्वास १००० १)। जन्म (१००० १)। जन्म १०० विकास निर्देश का विकास के स्वास १००० १। जिल्हाह देवा पिण्डच्या (१००० १०० विकास का वि	ध ा	ग्रममद्गहण्यत्रो ।	[কিন্তু(–নিশ
चित्रेशन चित्रेश च था, वेदान दे दे व्याव- जरहां की-चीं (द्वा ५ १) चित्रेट्ठ नह [निर्म् प्रेष्ट पू]ण कान कान, चने रेना ६ चेना '३ बेशना वह-चित्रेट्ठ ' (किं दुश्य हु साथ ६ ३, २) चित्रेट्ठ नह [निर्म् पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट्ठ मह [निर्म पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट्ठ मह [निर्म पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट्ठ मह [निर्म पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट्ठ मह [निर्म पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट्ठ मह [निर्म पेष्ट पू] मक्श्में ने वेदन कान स्वित्रेट किंदि है वेदन वित्रेट किंदा है किंदन कान स्वित्रेट किंदि है वेदन वित्रेट किंदन कान स्वित्रेट किंदि है वेदन वित्रेट किंदन कान स्वित्रेट किंद किंदन किंदन कान स्वित्रेट कान कान स्वित्रेट किंदन किंदन किंदन कान स्वित्रेट किंदन किंदन कान स्वित्रेट कान कान स्वित्र कान	शिष्टुंद्र सो [नियुंति] भित्रांत, सास, शुरित; (त्रेया) प्राथ १६४) । १ सन मं स्थल्या, विकारणा (त्रुप) नेत सार्थों के एक साला, (क्षण)। १ एक एक नेत्र सार्थों के एक साला, (क्षण)। १ एक एक नेत्र सार्थों के एक साला, (क्षण)। १ एक एक नेत्र सार्थों के एक साला, (क्षण)। १ एक एक नेत्र (क्षण १)। आपप रि चित्रका विदेशिक व्याद्ध (क्षण १)। आपप रि चित्रका विदेशिक व्याद्ध (क्षण १)। आपप रि चित्रका विदेशिक व्याद्ध (क्षण १)। अस्परिक्त (क्षण क्षण)। सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वुद्ध (व्याव्या क्षण)। सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वुद्ध (व्याव्या क्षण)। सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वुद्ध (व्याव्या क्षण १) सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वुद्ध क्षण स्थान हिल्ह । सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वेद क्षण स्थान क्षण सिर्वेद क्षण १) सिर्व्युद्ध क्षण सिर्वेद क्षण स्थान क्षण सिर्वेद क्षण १) सिर्वेद क्षण सिर्वेद क्षण स्थान क्षण सारम्यस्थान (वर १६३) १ क्षण (वर्ष १) १ वर्ष वर्ष (वर्ष वर्ष १) सिर्वेद क्षण क्षण सिर्वेद १) क्षण क्षण सारम्यस्थान (वर १३ १३) सिर्वेद क्षण क्षण सार्वेद क्षण १ १ वर्ष वर्ष क्षण क्षण सिर्वेद १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष क्षण क्षण सिर्वेद १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष क्षण क्षण सिर्वेद १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष क्षण क्षण सिर्वेद सिर्वेद वर्ष क्षण १ वर्ष क्षण सिर्वेद सिर्वेद वर्ष क्षण १ वर्ष क्षण सिर्वेद सिर्वेद वर्ष क्षण सिर्वेद क्षण सिर्वेद क्षण सिर्वेद वर्ष क्षण सिर्वेद वर्ष क्षण सिर्वेद वर्ष क्षण सिर्वेद वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष क्षण सिर्वेद वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष ६ वर्ष वर्ष ६ १ वर्ष वर्ष ६ ६ वर्य वर्ष ६ १ वर्ष वर्ष ६ वर्ष वर्ष ६ १ वर्ष वर्ष ६ १ वर्ष वर्ष ६ १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष १ वर्ष वर्ष १ वर १ व	जिल्लेक्ट कह तिर्म पेट्र जिल्लेक्ट कह तिर्म पेट्र जिल्लेक्ट कह तिर्म पेट्र जिल्लेक्ट कह जिल्लेक्ट जिल्लेक्ट कहा जिल्लेकट कहा जिल	े पुरस्त र शिवस्तार (वें प्रमुद्धित स्पृतिवृत्त , स्पृद्धित (से १६, ६६) । मा. मार्गि (से १००१) । तिमान के कहा कर्मण्ड क कृति होई काम (सिर्म कुत सुना हुम । (सिर्म प्रमुद्धित (स्पृत्त) । प्रमुद्धित (स्पृत्त) । प्रमुद्धित (स्पृत्त) । होई से (सिर्म) । होई से (सिर्म) । होई से (सिर्म) । स्पृत्त (स्पृत्त) । होई से (सिर्म) । स्पृत्त (स्पृत्त) । होई से (सिर्म) । होई से (सिर्म) । हुई (स्पृत्त) ।

```
रिक्र कर के त्राहर तथा, रह १,३)१ दिस्स
['gr ] st [tt ] = 2 x ) 1
निवरत र [१९७७म ] ० प्रशेष्टरिया (मा १०० ।
 वर्ष , हर्ष कर कर राज्य स्टब्स, स्माप्त है) र
सित्तरत ५० वर १ वर है। १ लेंड , (स.६, ३८)।
सियम (हें दे हिन्दू सरहाता, विकास कि
जिल्लाक हो सम्बद्धा है। एक १०११
विसम वर [रिभारत ] गुरू । यह जिसमैतः
 (सस्ता क्षा - सम्बद्ध (स्वाका विस्ता
 यित मेध, बित्रस्य १,५३ -४५ ६८, इस ( मण)।
निलमण स [ निरामन ] ४१०, मध्यत , (हे ९, १६६)
 सहय 🕽 👔
विमा देशे विविद्या कार्य-विमारिकतमाण, (सप)।
शिमक्दरा जिल्लाकाः (अर्डा)।
चित्रह देशे चित्रद ; (११)!
निषद्देश जिल्लाहः (पर्)ः
गिना सः [ निग"] ९ ग"र, गइ ; ( दुना , प्रांत ६६)
  ९ पेंग्रेंन का पर स, ति नाट. (उस) । "अर पुं ['कर] पन्त्र,
  र्षः;(१९, म: पर्)। अर्षु [ 'सर] गतनः
  (यम् ; ने १२, ६६) . "अर्द्द ३ [ चरेन्द्र ] सन्तर्जे
  का नपह, गनापी: (स.ण. १८): "नाह पुँ
  ['नाय] घयन ; ्या ४९६)। 'लার ন [लाउ]
  रिजानुबर, पोने क पन्म, हाहा ; (उन)। विश्व
  [पति] चल, चँर; (गतः)। इतः विति ।
 गिनाण गर [ नि+सामर् ] गान पा चाना, पैनाना,
   र्वेदर बामः। मह-निसानिक्रमः ( १९४३)।
 गिमाण न [ निशाण ] गान, एक प्रदेश की पश्चन, जिल्ल
   या ही बाग ते वे दिया हाता है ; ( यउड़ ; सुरा ९० )।
  गिनाणिय रि [निहागित] गान दिया हुमा, पनाया हुमा,
   रीतर विशाहमा ; ( सुन ६६ ) ।
  वियाम देश जिसमा दिशम्हः (नेहा)। वह--
   निमामेंतः ( सु ३, ३= )। मह -निवामिक्सम,
   गिनामित्ता ; ( महा ; इन २ )।
  णिलाम वि [ विःप्रवाम ] माडिस्य-प्रदेश, विमेंड ; (वे
    2,8031
   निमासभ देश निमसमः ( द्वा २३ ) ।-
   नियानित्र वि [ हे, निर्मान र ] ९ पुत्र, ब्रास्टीं र ( हे
    (, २०; प्राप्तः; गा २६)। १ टरनितः, द्याया हुमा;
```

अस्मित्रमा हुमा, संकंचित्रः, 'लिन्यानिमे क्यानोमी' (43%=)1 विमासिर वि [निगर्नियतु] मुन्ते वताः (मन्) । जिमाय ति [दे] म्हन ; (के ५३४) । चित्राय वि [निमान] मान दिया हुमा, तीहरीः (राम)। जिलाय पुं[निराद्] १ मण्डात ; (वे ४, ३६) । २ मार्-सिंगः (इ.४)। चिनार्यंत दि [दिशानान्द] नीत्र येर, बाडी : (गाम)। विमास यह [तिर्+भ्वापय्] तिःभाग दावता । वह-जिस्साम र तः (पत्रम ६१, ४३)। विमास देवः जासास ; (विव)। 🕟 😁 जिलि हेण जिला : (है ९, म: ७१ : पर्: महः हर १, २०)। "वालब (५ ["वालक] इन्द्र-स्टिंगः (स्य) । "सत्त न ["सक्त] राजिन्म जन ; - (मीर uma) । "श्रम व ['मुक्त] राविन्सेजन ; (मुरा ४६९) । चित्रित्र देनेः चित्तीत्र । दिविष्य ; '(गण ; धन)। मंह-निवास ; (सम)। जिलित वि [निशित] सान दिया हुमा, नील्य : (हे १, ४६ ; महा ३ हे ४, ३३०) s णिसिक्क मक [ति÷सिच्] प्रतेप काना, डाहना।. मंह -जिसिन्धित ; (प्राचा)। जिल्लिक्त देशे जिलक्ताः (दन : सन २४ : य ४,९) । ३ डा:बर, माबुमों का स्थान; (पंच ४) 1. ं . · ं . णिसिङ्बनाण देवः णिसेड्=नि÷शिर्। जिलिह दि [निलुष्ट] १ बाहर निरुत्ता हुमा; (मांत १०) । २ दल, प्रत्वः (प्रत्यः),। ३ मदुशतः (दृह २)। ४ बनाया हुमा । किथि, "माम रहारहे ...परमी निर्देश निनिह" दरप्तिर्" (दर ६८६ दो)। विस्तिद्ध वि [निविद्ध] प्रतिविद्ध , निराणि ; (वंच १२)। जिसिर मह [ति ÷सुज्] १ बाहर निहालना । १९ देशा, स्थान करना । ३ करना । दिलिए ; (मान k: सप)। "विद्याद्वाप । निवित्ति चे न वंडे, तेति हुमाविति निजार्गं " (मृर १४, १३४) । वर्म-निविधिका, निविधिका ; (विने ३६०)। वह--निसिरंत ; (वि २३१)। काह - निसिरिज्जनाण ; (विराह)। मह-विसिरिता; (विराह)। प्रया-निन्नार्वेतिः (वि ३३४)। .

482	पाइअसइमहण्णवी।	[जिमिरः 🗥
परिदे सिम्हान (निस्त केंग्री) निर्माण : स्था (श्या) , १ () । सिम्हान (स्था) , १ () । सिम्हान (स्था) है (सिम्हान) । सिम्हान (सिम्हान) सिम्हान (सिम्हान (सिम्हान) सिम्हान (सिम्हान) सिम्हान (सिम्हान) सिम्हान (सिम्हान) सिम्हान (सिम्हान (सिम्हान)	(जान १) । १ विम्हांसण न [निहार है है सार सलते ने नाज स्थार न है सार सार स्थार न है सार सार स्थार न है सार	ति प्रसंद, हमारद, हर्या द (सुम १, १, १) सा स्थान म्या ए इ इ स्व नियाति , स्याति , द देखी, (ई ४, १६० वे १) तत् । निड्रा ; (वर्ष) । (ई ४, १६० वे १) तत् । निड्रा ; (वर्ष) । (ई ४, १६० वे १) तत् । निड्रा ; (वर्ष) । सम्] मारता, मार क वि (ख १, १०) सम्] मारता, मार क वि (ख १, १०) सम्] मारता, मार क वि (ख १, १०) देवा मार कार्या देवा मार कार्या देवा मार कार्या देवा भी १०० वे १० व
तिमुंच १ [नितृत्त्व] १ स्क्तांस्ट्रण नेतृत्त (क्षत्र १, १६६ ; वर २५१ (पर १)	विकास निर्दार्थः "(व क गमः, वृद्ध प्रथाः - निर्देशकार्यन्तवाः । नृतः)। १ वेच विकाः - विकास नहः [विकासन् स्थाय कारः । विकासन् ।	२०) । १ कार सांग्र, मात्र व ^{रस}

मार्गः रा १४ वरा —शिमेशिक्षेत् चर १६ १३ १--निर्मेषणिइह (४ रण ३१) । लिमेज्य ६ [सियेयक,] १ वेट उन्हें राज्य ا إ داد شد ! السكويد निमेरि रि [नियेखिन् । या देवे , र म ९०) । निनेत्रिय कि [निदेखित] ९ गाँक, प्राद्द , ६ मानः । १ क्षण्येष्ट (१५ १०) । निमेर्ता [ति∗पियू] ध्या बाग, धिरात बाग । भिन्दा कि र १३० । वस् निविज्यमण . ' गुर ६४६ († फेर —नियेशियं । स.६८८ () ह " निर्मेरियाचा सर्वा क्या । समा ३४) १ निनेटपु[निदेश] १ प्रीत्य स्थित । १३४ , प्रद 151)(t with (# 7 % / 'सिनेटस व[निदेवन] स्वान्तः (मास) । निमेहणा मां [विदेववा] विषया । आव ५) । िणमेरिया देन जिलाहि श्रः=वेदी, दरः व सुनि, स र. रै समाप्तकानि : ३ बेटने का समान , ४ नितमा, द्वार रुगमेत्रकासमा;(शतः)। निम्म वि[निःस्य] निर्मत, यनवर्ति , । याम । । यस ति ['बार] १ तिर्हेन्सारह । २ वर्स का दा करने वालाः (माय १, ४, १) । निम्मंक हुं [हे] निर्मा, (हेर, ३३)। · निस्तंद्य ति [तिरसङ्ख्] ६ सङ्ख्य रहेत. १ खप २, ४ ३ स्ता) । २ व, सहक्षां का क्षतार ; (पता ६.) । निम्मंकिम वि [नि.शद्भित] १ गर्मान्धिः (मेह धिनाः तारा १,३)। २ त सर्द्या का यसत , (दन 25)1 निम्मंग (८) दि:मङ्ग] महम रहित ; (मुग ९४०) । क्षित् हर्यादा १, म हे । निम्भंजम ((निम्भंयम्) संदन-रहितः (पदन १८५४)। चिन्चन वि [नि:शास्त्र] प्रग्रान्य, प्रतिगत गान्य ; (गर्व)। निम्बंद देवी पासिंद : (कह १, १; सड-सानदी ४१): निम्सदेह वि [निम्सदेह] संदर्भन्ति, निःसंगव (श्रेट)। निम्पंति वि निम्सन्ति | सन्धर्मात्ते, सँवा हे रहित : (779,3)1 निम्संस वि [नशंस] हुर, वर्ध्व ; यह । । निष्मंस वि [तिःसंस] ज्यानंतर , । पट् ६, ६) ।

निम्बंस्य रि [सि:संशय] १ स्टब्स्टिस १ १स्टिस्नि:संस दर, निरुष्य ; । प्रसि १८४ : प्राप्त) । शिस्त्रत ३ [निःस्वत] नस, मपत : (वृत्र ५७.) । विमयम्य हि [ति.संत्र] । नंत्र-नंत्र : (सूम ५,४,५)! णिस्मन वि [निःमन्य] वेर्यन्ति, ग्लार्टणः (मृत्रा३४६)। जिल्पन्न देश जिस्तव ; (१५८ ४)। पिन्यस्म प्रद्व निर्भेश्रम् । वेद्याः यह—पिन्यस्थेतः (# E, 3=) 1 पिम्मर मर [निर्4मः] यहा निरुत्ता। विस्तदः; (मन) । यह -निस्तरंत : (लह-चैन ३=)। निम्मरण व [निःमरण] विर्मन्व, बाह्रा, निश्तना : (84.2)1 निम्मरण वि [निःशरण] कामगरित, जानवर्तितः (पडम् मा, १९) । । १ हर्न, ५० १ । शिममंदियं दि [दे] जला, निरास हमा रे रहि ४,७४०)। विक्सन्त्र हि [निःसस्य], सन्यन्ति : (१८४ ५३० हो ; ११०) १ णिम्बस घट [निर्÷ध्यम्] निःपान देना । निमानाः िस्डमॅन : (मग) । यह—जिस्स सिङजप्राणा;(रा१०)। जिस्सद वि [निःसद] यन्द्र, प्रगक्त : (हे १८१६ : ध्यः ; बुमा)। जिस्सा मां [निग्ना] ९ माउन्यन, माथव, नहारा ; (स्ट ६,३)। २ मर्गलतः ; (२२ ९३०,दी)। ,३ पदरतः (स्व ३)। णिल्लाण व [निधाण] निधा, मददस्यन ; (फर्ट् १,३)। पिय व [पिद्] मनत्द ; (बृह १)। पिम्सार गर [निर्+सारय्] बाइर निराउता । निस्ता-रा ; (यून ११४)। भिन्तंबार वि [ति:चंबार] सर्वन्नी १, यनगणनः : भिन्नार)वि [तिःसार] १ सान्देन, तिर्वह ; (अपु ; विम्मारग रेवम १,३ माच) ।२ दाँचं, पुगताः (माना)। जिल्लास्य वि [निःसारक] निष्टते वसा द (ड३ ५=०टी) ३ जिल्सारियमि [निःसारित] १ निष्टला हुमा; र बरनित, अर दिश हुमा ; (-ब्रम १, १४) । पिस्सास पुं [निःभ्यास] निःचन, नावा थान ; (मा)। व काल सन निष्ठेव : (इस्) १०३ प्रणालाकुः प्रथान (प्राप्त) । जिम्माहार वि [निज्वाबार] तिगवार, प्रातम्बन्धिः (平) 1

णीसल्ल वि [नि:शल्य] शल्य-र्गहन ; (भवि) । णोसच सक [नि + धावय्] निर्जरा हाना, सब हाना । वक् -नीसवमाण, (विमे २७४६)। णीसचग देशो णीसचय ; (झावम)।

णीसयस रि [निःसपरन] राष्ट्र-रहित, विरत्त-रहित . (मुच्छ क्षु नि १५६)। णीसयय वि [निधायक] निर्जरा करने वाला: (विने १७४६)। णीसस प्रक [निर्+ध्यम्] नीमात्र सेना, थान क्षे

नीचा हरना । योनसङ , (वर्)। वरु—णीससंत, णीससमाण, (गा ३३; कुञ ४३, बाबा २,२,३)। संक-णोससिष, णीससिऊण , (नाट ; महा)। णीससण न [नि भ्यसन] नि भास; (हुमा)।

णीससिक्ष व [नि:ध्यसित] नि थान ३ (से ३, ३८) । णीसह वि [नि.सह] मन्द, भगका , (है १,१३; इना)। णीसह वि [निःशास्त्र] सामा-एड्नि , (मा २३०)। णोस्ताक्षी[दे]पीननेकाप्ययः (दस १,१)। णीसा देखो णिस्सा , (कम)। णीसामण्य ो वि [नि सामान्य] १ जनाधारन , (वउड, णीलामन्न र्रिया ६९ । हे २, २१२) । २ छत् ,

(पाम)। णीसार सङ [निर्+सारय्] बाहर निडालना । वीनारह् , (मवि) । कर्म—नीयारिज्यहः ; (हुन्न १४०) । षीसार ९ [दे] मण्डप ; (दे ४, ४१)। णोसार वि [वि सार] सार-रहिन, फल्यु , (वे ३,४८) 1

णीसारण न [नि.सारण] निन्दानन, बाहर निहालना ; (5₹ 11 , ₹-₹) (णीसारय वि [नि सारक] बाह्य निकालने वाला, (से 1, 45)1

पीसारिय वि [नि सारित] विकासित; (पुर १,९००)। णीसास देखा णिस्सास ; (हे १; ६३ ; इमा ; शत्र)। णीमास } ति [नि रवास, कि] नि शत सेने बाता ; र्णामामय) (किं २५१६ ; २५१४)।

(दे४, ४२)। णीसेयम देखे णिम्सेयस ; (जेन १)। णीसेणि मा [नि:श्रेणि] मीती; (सुर १३, १३/ णीसेस देनो जिस्सेम ; (गउड ; इर)।

थीं हट्स "निशत का, (भाषा १, ६, २)। णीहड ■ [निर्हेत] १ निर्मन, निर्यान ; (माचा १, १ बहर निकाला हुमा; (कृत १; स्त)। मीहडिया की [निर्द निका] प्रस्य स्थान में हे गए ! इम्ब, (बृह ३)। पीड्स्स घड [निर्+ह्स्स] निव्हना । वीहम्म ; (¥, 5(2) 1

जीहम्मिश्र 🖪 [निर्हुम्मित] निर्गंत, नि मृत ; (दे ४,४) णीहर प्रक [निर्+ स्] १ शहर निवलना । वरि (हे ४, ७६)। वह-नीहरत ; (हम ४^{८२}) र्वह—पीहरिश्र; (निषृ ६)। ह—पीहरिवल (सुरा १६०)। व्यीहर घट [बा+कल्ट्] प्राफल्ट् इरना, विन्तर बीदरह , (हे ४, १३१)। षीहर मह [निर्+हट्ट] प्रतिजनिश्रता । वह-पीहरी

पीहरिजंत ; (हे १, ११ , १, ३१)। व्योहर सक [निर्+सारय्] बाहर निवातना। हेर-वर्ष रिचप, (भग १,४)। ह— जीहरियध्य, (ई 1 8=x णीहर मक [निर्+हः] पानाना जाना, पुरियोगर्ग इन्हें। नीहरह ; (हे ४, २६६)। णीहरण न [निस्सरण, निहरण] १ निर्गतन, निर्ण, ^{वर्ण}

निश्चलना " (विशा १,३, वाया १, १४)। र विन्यं (निदु १)। ३ मध्यन, (सूम २, २)। णीहरिअ देखो णीहर≔निर्+म्।

चीहरिज 🖩 (नि सुत) निर्मन, निर्मन , (मु १, ११), ३, ७६ ; पाम)। पी**इरिय** वि [निर्हृदित] प्रतिश्वतिन (र 1)

188)1

```
मार्गित स्टिने सार, माराह, गर्फे, ( हे र, ४६ ) ।
    यार्गोर्थन देश योगर=िंग 4-वर् ।
    र्रोत्तार पु (सीराष्ट्र) १ ति दुरगः (स्थ्य १६,
     राज ३६ (चमा) १९ विटा या सुत्र वा हर्मा । राम
     1031
    र्यातास्य ह [निस्मारण] विश्व च , ( श. १, १ ) ।
    भौतारि ६ [निटारिन् ] १ लिमले बला : १ पैलने
     क्षान , महोत्रामान्त्रीरका अंदर्ग । ब्राह्म , सम ६० १ ।
    पीटारि दि [ निर्शिष्टिन् ] याद कार्य याण, गुजरे याचा ;
      12 90 : TO YOU ) 1
   रपीहारिम देशे निहारिम , १० ९,४, भीर शासा १,९)।
  , पीट्टव वि [है] इंडिन्स्स, इत मा नहीं का सहते
      राहा ; "परदारतीपूरार्ग" ( मार्गात ७=० ) । देखी---
      पिहुछ ।
   ्रधिम[सु]क्ष मही का गुवह महार :-- व व्यंख
    , प्रति , रे बर्गाला ; (ग १४६ ) (३ वितर्ष , (सप्प ) ।
      ४ प्रान ; ६ विसम्प : ६ मनुनय , ७ हेतु, प्रमाणन ; ഫ
     मसमन, १, बादुस्य, बादुसय ; १० अवस्य, बहानर, (सटहः,
      ¥ 1, 29 0 ; 39# ) 1
     चुन्न रि [ झवा ] जानरण ; (शा ४०४ ) !
     पुरकार हुं [ जुरकार ] 'दुर्' एमा झावाड ; ( गय ) ।
     पुरितय दि [दे ] बन्द दिया हुमा, मुर्टित ; "बहिया देय
     दिग्या, मुजिबर्व में बयनां, जिल्ला द क्रमा<sup>3</sup> (स ६८६ ) ।
छन वि[नुन ] ९ द्रीतः ; २ जिला, वॉबा हुमा ; (से
; र्वे ३,९४) ।
      श्चमगृह [नि+अम्] स्वातन करना । शुन्हः (हे ४,
     188 ) 1
 भ शुम नद [ छाह्य् ] दक्ता, सारउ'ल करना ।
       ( X Y, 39 ) 1
   र्न पुनरत मर [ति + सट ] वेटता । गुनवर ; (वर् )।
      धुमस्त्र मह [ति+मस्त्र] हुब्बा । गुनस्त्रह ; (हे १,६४) ।
                                                           £2)1
   ुं चुनज्ज्ञण न [निमञ्जन] इक्ना ; ( राज्र ) ।
      शुमण्य वि [नियण्य] वेग्र हुमा, ट्यव्यः (यहः हे
        3, 900 } 1
       ग्रुमण्य ृ ६ [निमन्न ] इवा हुमा, तीन ; (हे ६,
       प्रमन्त ∫ ६४; १७४)।
                                                          विजातज्ञ े स्वायकुल, स्वायोदित ; " बेमाइमस्य मगस्य
      धुनिम वि [न्यस्त ]स्यापितः (वृना )।
                                                             हुई प्रत्याई वहु " ( सम १९ ; मीर ; एव २, १ )।
       पुषिम वि [ छादित ] दस हुमा ; ( दना )।
```

जुल्ट स्मा जील्ड । गुल्ड ; (वि २४४) । ण्यान वि[दे] सुन, मंग हुमा ; (३ ४, २६)। णुवच्या वि [निपयम] येष्ट हुमा, व्यक्तिः (गरहः ; गाया १,४; म १४२)। "पगम्म गुरगा" (टर ६४-ई)। मुख्य सङ [प्र+काराय्] प्रशन्ति वस्ता । गुन्मः ; (१ ८, ४६)। यह-णुखंत ; (एम)। जुमा सी [म्नुपा] पुत-वर, पुत्र ही नार्य ; (प्रची १०६)। क्षुत्रर देनो जित्रर=शुन ; (पर् ; हे ५, १२३)। जूज वि [स्यून] क्य, उस ; (त्र ४ ११६) । पूणा म [नृतम्] इत मर्गी का स्वर मन्तर ;-- १ णूर्णो किन्यम, बरवारम; ३ तर्न, विचान; ३ हेतु ; प्रयोजन; ४ उसान : १ प्रम्म : (हे १, २६ ; प्राप्त ; प्रमा ; मग ; प्रायः १२ । हुत १ ; भ्रा १२)। शुपर देनी गुउर ; (बार ११)। लूम मरु [छाइय्] १ इस्ता, जिसता । एसर ; (हे ४, १९)। गूर्मति ; (गाया १, १६)। वह--णूर्मत ; (गा⊂१६)। णूम व [छादत] ९ प्रवशस्त, विशता ; २ मनच, सूछ ; (पर; १, २) । ३ मायः, इत्तरः; (सन पर) । ४ प्रच्छन स्थान, गुरा वगैरः ; (सूम १, ३,३ ; सग १२, १) । १ सन्धरार, गाउ सन्धरार; (राज)। णुमित्र वि [छादित] उद्य हुमा, क्रिया हुमा ; (से ९, ३२ ; पाम ; दुना)। णुमित्र वि [दे] पेला स्या हुमा; (दा प्र ३६३)। णुला सी [दे] गाया, शत ; (दे ४, ४३)। ये म पार्याने में प्रयुक्त होता सम्पय ; (राज)। रोम देखी णाच्या । षोझ इंसो पी = नी। पोछ वि [नैक] धनंद, बहुत ; (पत्म ६४, ६९)। 'बिह वि ['बिघ] मनेह प्रहार हा ; (पहन ११३, चील म [नैय] नहीं ही, बदावि नहीं ; (से ४, ३० ; गा १३६ ; गडड ; सुर २, १८६ ; सप)। पोक्क देखों यो = नी I दोबाइअ) वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय हे म-वायित,

"उक्तानो नेथिनिसमें जमो मधिमा" (रा ६^६ ९०७) ३ ३ निवित्त शास का जानकार, (व्^{र १}।

थोडम म [दे निय] दुग्य, नर्ग, गमन , (वर '

योध्म देवा योग=नेम , (पन्द १, ४ ^{- कृत ६५} विरुद्ध 🛭 [नैरियक] १ अन्द्र नक्ती, मार्

म्ब (हे ९, ४६) । २ वू साइ दा भीर, सा

बेदल व [नेरवन] १ जुलान ह मनुतर सर्व स प्रण

(कर) । १ दि लिल राम सामाना (^(का 1)

न्द प्रची , (त्रद १ , रिसा १, १०) ! चेरहे की [मेंस्टीती] र'तय मेर बीव्य र रेप्ट

(50 ac . at 10) 1

४ व निमित्तशास, (स्र ६)। णेगी सी [नेमी] चड-पाग , (११, १०६)

110 }1

बाना चन-विरोण, वन-विरोण , (श +)। १ वर्तिन,

स्थापारी, "जिपाधानवादिश्वा न कवर्त बामको वालाकोति । नेमाधर (राज्यों, बेम क्या प्राप्ता गरियों " (शा ३०)।

मैन्द्रय र [नैवरिक] कल का भागा।, (का s)।

बेनाल्य 🗎 [नैम्परिक] निम्कता-प्रतः निमकी १

बैंक्स्टेन वि [नैप्यत्] की कहण हुमा : (हेस ३०१) । बेरियार में [मैथियत] इच्छा का बरेशन, बर्मानर्थन ,

बेट्रिय है | बैट्रिय | कॉल्प्स्डी ; (का. १, १)।

केंग्राफी को [हैं] जिस साम्प्याधित , (हे र,रह)।

बेद क्ट जिट्ट (इस , है 1, १०६)।

१ व ब्लगर धान्यत्र (शला १, १, १) । बेग्युग्या व [नैर्मुण्य] दिग्बंग, दिशास्त्र , (वप १६३)।

₹\$, (\$A 151) |

(2 Y 3) I

j-1, 1 22 32 31

ا بيسمينياندسسيد

و الرقاع المنظمة المسلمة المسلم المنظمين المنظم g - Bygggwill garacta y garacta y garacta ويها المساء المستال المستاع المستاح me des Emerchandes (en est 1 %

Set & B. S. Same Same I Fig. At the case of the c ्रस्त र्रेक कार्यात्रीत र्याके स्टब्स्य र

in the first district from the state of ا و و به در میست شو موج

والمعالم المناه المناه الم ang bu hayang je se naje a a je se s

- F q-- 1

المشام المراجع المستعداء والأمام المشاكم المستثناء and the first of the second

काम्य व (किम्पन मा) ६ जना कार्य व कमाग, यस वी Bank Comment of a fight and Carlo as man and

3,550,000,000,053,53

क्राम्यक्ता क (हि) है त्य राजा, सम्मान्त्र संस्था का साम्यान, र स्ट्रा) ह किर्णालाम के [संपर्धित्यम] किर्मात अब अवा की ही का म्मुरानेवर स्थाप (रिका के व रे रे

देवपुर दि [मिपालिक] विलाग जिल्ला अस्त, सामा met, (the energe) 1 क्रेयाल शु [केप्सल] १ तक अन्तर्भ प्रदेश, ज्यान १ (यर

पू १६१ , हम नहर्ष है। अर्थन क्रिकेट कर्माम १ वस्स

हेरिक (मिरिया) देवल व बारी थरा हुआ काल Rute | 1 milte (el 489 , of 48) 1 रंगम रेगी जिल्लाल जीतींट , (इन्से ; सु ६, ३०,

tarr) 1 देख्य देल चित्रुम , (टा +1 - री)।

'हेन्द्रा देल किएड , (इर अद्दर्श)।

क्रमित्वय हेले जिल्लीताय , (लुद ६)। हैमाझ रि [मैपय] भाग्य-रिग्य में उर्राष्ट : (यह ६ ४;

, निर्माष्ट्रम ([नर्माच्ड] अस देनी : (८ १, ९ ;

देमतिय १ [दे] वर्टम् मन्त्री, वर्टर् प्रश्नन, (द व्हुप्रव) ।

भेपनिया । भेरा [नेप्रिकी, मेशिमकी] १ नियंत्र, शोवस्य है [दे] मनेता, मृत्र ; (पिय)। ्राह्मकार्यकाः, प्राप्ता वर्णा वर्णान्यः, प्राप्तित्र दण्ये प्रीत्रिकः (शत)। १०००

क्षेत्राच्या पु (क्षेत्राचे) विद्यार्थिक संदर्भ सामा का एक الأوالية والمعالمة والمناطقة والمناط

Fert 3 [8] 15, 15 . (8 4, 14): freeling for freezy - freezy i and fit

हेन्द्र हुए (हि.) क झेला हुए, के हीता पन स्थितर प्राप्त المستريخ (عليه) المسترسين المعرب (عليه) ()

हैं के क्षार्य निवस्ता का स्थाप है । विवस्ता किस्तार है (\$ 0, 40; V, 206, 500 } l

وَ وَ وَ مِنْ فُولِو . (جَمَّ هُ وَ إِنْ الْمُ

स्मार् (स्वारा) स्टर्भेष (हर्त)।

स्रिक्क दि (क्येक्स्यू) स्टेश्यूकर, ध्याप , (हे १,७३१)।

tige & fiege } & terlein, en eini en i a mit المنت فيسرا عاسر إلى المام أ أ منس كا م - مده ه ١) !

को का [सी] दश करी का संबंध कारण. १ लिए. हरिसेषे, समाव : (हा १ ; बार : लहा) १ र जिल्ला,

किसी : "मेल्स विकासिक" (जिस् ६०)। १ रेस. क्षमा, क्षमा, दिल्ला , (दिर लगाता) हे प करपाण, जिल्हा : (शह) । आतम पु (आतम] १ जातम द्या करण्यः, १ कारम ६ साथ मिथयः, १ कारम् ६

ल्ड क्रीए : (क्राप्स : स्मिप्ट : १०; १९)। प वत्तर्थं बर क्रान्टिकन ३६ गरि) । "इंदिय न [इन्द्रिय]

बार, बानाबाद, विर्णा (बार् नाम १९) हा १६४ रों)। 'कमाय ५ ('कपाय) बगत है उतिह

इन्स्य बरेगः तह परार्थ, ह ये हे इन्न्हास्य, गी. ब्राह्न, शीब, मन, जारुमा, पुंदद, मीनेद मीन

वर्षुप्तरेदः, (कम्म ९,९०; छ ६)। 'केवलनाण व[केशन्यवान] भारि भीर मनापर्व इन ; (हा

२,१)। 'शार पुं (कार] 'मं मन्द ; (राज)। भुण वि[गुण]म-मनार्व, म-बन्द्रीकः (मए)। जीव

वुं िजीय] १ जीन मीर मजीर म जिल्ल परार्थ, मजानी : १ प्रजेष, निर्वत ; १ जीव का प्रदेश; (विमे)। निह वि

[भय] जा बंगा हो न हो ; (स ४,२)।

```
[ . .
नंबोलिय ९ [ साम्बुटिक ] क्लोली, पन <sup>बेसे प</sup>
 (शा १२)।
तंबोली भी [तास्वृतो] धन का गाउ ; (११ ; 🗥
```

१-१थसद्भहण्याते।

. दुश्ने इत वर्षे ्र र का भ असम्ब , (देश, प)। ... (।सा1१,९३८)। २ सम्बद्-ो ्रास्ता । धेवतित्रय न [°वैचारिक] । (नतमः, (व्यक्तिः) । (१८न । तथ प् [तरपूर्वीयक] बनम्पति-विशेष ; (कथ १)। तबुलम तला तिवृत्तय , (सुर १३, १६७) । तंत । [रलस्य] तृवादि का गुष्का ; (हे १, ४६ , दुमा)। मंद म [माघ्र] ९ घातु-विरोष, सींवा ; (विशा १, ६ : है १, १४)। १ पु वर्ष-रिशेव ; ३ दि अस्य वर्ष वाला, (काल १० ; मीर)। "धूल ५ ["चूड] इन्डट, सुर्गा, (तुर १, ६१)। "वण्यो सी ["पणीं] एक नही का नाम । (करा) । °सिंह पुं [°शिख] कुनकुट, मुनाँ, (पाछ) १ लंबकरोड पुन हि] तात्र वर्ग वाला इच्य-क्रिय, (पन्य १४)। **शंचिकति ९ [**र्दे] कीट-विशेष, इन्द्रयोप; (दे १, ६; वर्)। तंबकुसुम पुन [दे] इस-विरोध, इरवड, क्टमरेवा ; (दे k, ६, वर्)। १ कुरस्टक इस , (वह)। संबद्धका न [दे] बाय-विशेष , अवाहबर्तपक्षकम् बर्जनम् (ती १६)। नंशिष्टियाद्वियासी [दे] नाम वर्ष दा शन्य-वितेष ; (PFE 14) | नंबद्धकारी सी [है] शेक्षतिहा, पुष्य प्रधान लगा-विगेष , (thy): नंबरभी भी दि गेहैं में ब्युम की छारा ; (दे ६, १) । र्मचाओं [दे] गी, चेनु, गैसाः (दे ६,९३ सा ४६०; पाम ; काजा ३४) । र्मदाय र् [नामाक] मान्यव धाम-शिव । (राज) । मंबिस पुत्री | नाग्नस्य] मरुवण, हैशर श्रद्रशा । (वउ४) । मंशियन [मास्रिक] परिशामक द्या पहलने द्या एक उत्त-इरव ; (भीर)। मंशिर मि दि तान वर्ष कला ; (६ १,६६; गउप; मवि)। त्रविरा [दे] देनी त्रवरकी ; (दे ६, ६)। मंद्रका न[दे] वाच-रिकेंद, "नुहार्तुत्रकर्तुत्रकर" (नुता ६ =)।

मेरेग्स वं [स्वारेश्म] हन्त्रो, हाबा: (उर प्र १९७) । संबेद्दी भी [दे] प्राप्त प्रचान इच-निरोध, शेधतिहा , (दे

मंबाल में [ताम्ब्द] पर, (दे १, १९४ ; इसा) s

t, r)1

र्नसदेवार्यमः (११)। तेंस वि [त्र्यन्त्र] विन्होश, तेन होन हाँ २६ ; सउट , टा ९ _१ सा ९० ; प्राप्त ; सार तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, मनुसन र करना । तहकमि, (मै १३)। तंह -तहिकी तक्क न [तक] नज, छोउः (सोन ८०; उप वृ ११६) । त्तरक ई [तर्क] १ विमर्ग, भिवार, महरूपन १२; द्रा ६)। २ न्याय-राम ; (स्या तक्कणा सो [दे] रच्या, मनिजाप ; (रे) सक्कय दि [त केंक] तर्क करने वाता ; (तंत्रकर ९ [तस्कर] चोर : (हे ६ ४) ह तक्किल) सी [दे] वलगाकार दूस-विरोध वक्कलो 🕽 तक्का सी [तर्क] देनो तक्क = तर्द, (ह १, १ 3 श्रे भाषा) । तक्काल किव [तत्काल] वनी सन्द ; (इने) निकास वि [तार्किक] तह शास हा अनहरें। 1-1) 1 मिक्स्यार्थ देलो तकक=ार्ड्। तरुरु इं[सर्कु] सून बनाने का यन्त्र, तहता, हैं

तक्त नक [सस्] जितनः, काना । तन्यः (हें थ, १६४) । दर्ग -शृह्यमा ; (इर १ **१६--म**श्लमाण , (मष्ठ)। तक्स वं [तार्ह्य] गहर बता, (पाम)। तक्या प्रं [तसन्] १ शहरो बारने वाना, गरे । क्यों, तित्यो विरोप, (हे ३, १६, वर्)। वि ["शिला] श्राचीन ऐतिहानिक नगर, जो पाने गु राजधानी को, यह नगर एंजाब में है . (पान प 34 42) 1 तक्ता इं[तक्ता] १-२ कार देवा। १ व्हर

लगै-राज, (३प ६२४) ।

सम्बुख पु [दे] स्थापन-पर्गः, मसम्माविदा गर्पनः

संदिवा नायरका, परिमानिमा तरक्यववा लि" (हार

(१ २, 1) (

```
तबका र [मन्सण ] १ तन्त्रान, हवी कर , । झ ४,
 ४)। २ विवे, गीप्र, तुग्न्त ; (पाम )।
तेस्त्य देशो नस्थ्या : (स २०६ ; कुप १३० )।
नवसाण केने सवस्य=तल्लुः (हे ३,४६; पर् ।।
नगर देखे दसर ; ( पाद २, १ )।
तगरा सी [ नगरा ] संनिवेश-विगेषः । स ४६= ) ।
हम्म न [दे] स्वन्दद्वण, धाम का बंदरा . (दे ४, १.
, यहह )।
नर्गाधिय वि [ नदुगनि एकः ] दनमः समान वंध बादाः :
· (সালু ই৮) I
नच्च वि [ तृतीय ] तीमगः ( सम २, इवा )।
नेच्च न [ तर्य ] सर, परमार्थ ; ( माचा ; मारा १९४)।
 भियाय है [ 'बाद ] १ तत्य-बार, गरमध्य-चर्चा । २ ईटि-
 बार, जैन झर्ग-प्रत्य विशेष, ( टा १० )।
नेच्चन [तटप] १ सय, सवार्ट, (हे १,२१ ; डन
 १८)। २ वि. वास्तविष्ठ, सन्य , (उनः ३)। तथा पुं
ं [पर्य] मन्य हर्तकतः; (पडम ३, १३ )। विद्याय पु
 [बाद् ] देश कर भियाय ; ( टा १० )।
वर्ष्चं म [ ब्रि: ] तीन बार ; ( मग ; सुर २, २६ )।
वेञ्चित वि [ नञ्चित ] इसी में जिसहा मन देगा हो बहे,
 विचेत ; (बिग १, २)।
निष्छ तर [नःस् ] छितना, बाटना। नष्ट्यः (हे ४,
 १६४; पर्) । संक—तब्छिय; (सूम १, ४,१) । व्यक्-
 तिच्छित्रतंत ; ( सु १, २८ )।
वैच्छपा मीन [सङ्गण] हिल्ला, धर्नन ; ( पङ्ग १. १)।
की-णाः (दासा १, १३)।
विच्छिंड वि [ हे ] बराल, भर्मक्रा ; (वे k, ३ ) ।
नच्छित्रजेन द्वं। तच्छ ।
इच्छिल हि [ है ] तत्या ; ( पर् )।
क्ता देखा तया≕लव् ; ( दे १, १११ ) ।
क्ति सह [ सर्जय् ] तर्हन करना, मर्चन करना। तबहः; :
(मिने)। तहने(; (याया १, १८)। वह--तहनेत,
नोडेंद्रन तडजयंन, तडजमाण, तडजेमाण; (महि; सुर 🚶
 भेरे, रेस्स, दाया १, म, गाव; तिरा १, १—१व ११) । तडफंड 🕽 तदमदा ; (इमा ; हे ४, २६६ ; विवे
<sup>ब्दरु</sup>—तक्तिक्झंत ; (टाप्ट १३४ ; टा १४६ टॉ)।
विद्याप न [तर्जन ] मर्ल्बन, निस्स्टर ; (ब्रॉन; डव ; पटन
 Ek, k3)1
```

```
तज्ज्ञणा सी [ नर्जना ] जार देखे: (पाट् २,१ ; सुना १)।
  नरजणी माँ [ तर्जनी ] प्रयम मंगुनी ; ( मुपा १ ; दुमा )।
  तजाय वि [ तजात ] मनन जाति वाता, तुल्य-जातीय :
   ( मान ८ ) 1
  तहताबिश्र ) वि [ तर्जित ] तर्जित, मन्धित ;( स १२२;
            ी सुपा २६३ ; मिति )।
  नहिञ्जन
  तश्चित्रज्ञेत
                देखी तज्ज ।
 तरज्ञेमाण
 तदृष्ट न [ हे ] मामरण, माभूष्ण ;
   " मरियं सरियं बातक्तामो नगुवाइं तहनहाइं ।
     मदर्गित निवासमा हाँग्ड रहस्मि खिन्लंतां"
                               (ध्या३६६)।
 तहो माँ [दे] इति, बह ; (दे ४, १)।
 तह वि [ बस्त ] १ डरा हुमा, मीत ; (हे २, १३६ ;
   बुना )। २ न. सुहुर्व-विदेव, ; ( सन ४१)।
 तह वि [ तप्र] छिता हुमा ; ( सुम १, ७ )।
 तहुव न [ अस्तप ] सुहर्त-किंग्रेग ; ( सम ११ )।
 तिहि ) वृं [ स्वप्यू ] १ तज्ञक, विश्ववर्गा ; ( गड्ड ) । २
 सह र्र नत्त्रन विशेष का मिरिशक्ट देव ; ( ठा २, ३ ) ।
 मड मह [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तव्ह ; (हे
   8, 930)1
 तह पुन निट किनारा, नीर ; ( पाम ; उमा )। दिय वि
  िस्था न मध्यस्य, पत्तपात-हीत ; २ समीर स्थित; (हुमा:
  दे ३, ६० )।
तडउडा [ दे ] देखे तडबडा ; ( जोर ३; वं १).।
तडकडिय दि दि ] मनास्थित ; ( यह )।
तडक्कार १ [ नटस्कार] चनद्यतः "तदिनदक्कारे "(स्वा
  933 ) 1
सडतडा मक [तडतडाय्] तः तः भावात कृता । वक्-
 तहतहंत, तहनहेंत, नहपहंत ; ( गत्र ; यादा १.
 ६ ; सुरा १५६ ) ।
तडतडा मी [ नहतडा ] तह तह मानाव; ( म २६० )।
नडफाड) मह [दे] दहरत, दहरहाता, बाउट होता।
 १०२ )। तटहरति ; (सुर ३, १४=)। वह—नहप्स-
 डंत, तडफड़ेन ; ( स ४६८ टो ; मु १२, १६४ :
 सुरा १०६ ; इन १६)।
```

```
• नर्जंबर ५ [ गर्मन ] राज भग हर
    . - ) स्तीय पृत्ते ग्रिक्ट
  . संद्र्यो 🚶 💝 समूर्त
    रामुद्रीका ∫
    रेख में [सह ] स्थेप, द्यार । सं अबच क्या ५ में ।
     १ केप्रारमण्यामध्येत्, ततः । व्यक्ति हो
    है बेर्डियो हो हाल्प्स्स , के दूर रहेब । युव । एवं इत
   िस्तरा में [ 'सत्तरा ] देव प्राप्ताण रामवः हीयरें , दिन
   ीर सुरुष प्रांच असी है, है रहारीयाचा । स्था कर १३ सह
    हिंग किया किया राम १० व्या १३ १ हर १०
   नवृष्य देशे नचुरनः । १००
   मेपीय (बार) क्रांटिंग, सम्बंद के र, १३८ दूसा ।
   नोमि है हि कि कार्य । ११ १ १ वर ।
   निरुप्त (निर्माण) वन, ब्हर : यम न ५३ ;
    53: ) i
ै निष्णाय हि [है ] झाडी, हिला 🕟 ह 🚓 🤊 प्राप्त , गाउ
    £ 3, 35 : 55, 590 11
  निष्या की [तृष्या ] १ प्यान विषय , १ पाम ११ व
  िहा, करा । हा १, ३, भीर १३ छु, छुन्न विश्वित् ]
  हिंगा देग्या, धामा, "ममागहाल"(क्स ८,८०, ८, ४०)।
  नत देशो तय=तः , ( ४: ४, ४ ०)
  नेंद्र २ [तस्य ] एवं स्वस्य, दृष्य, यसार्थ . (हर ४९८
   री: पुर ३६०)। बीष्ट[तस्] बस्तुत
  ्रम् । प्राप्ति । जिल्लाका जनसम्
   511
  नन दि [नन्त ] गाम दिश हुमा . ( गम ६२४ , दिश ५,
   र्द है ५, ५०४ )। असामा ['असा] नगै-विदेय ;
   (23, 2)1
  तन म [तब] यो। भव, 'होंत ि [ भवत् ] एव
   कि बार; (सि १३३, बलि १६)।
 नित मी [ नृति ] तृति, मंता, ( क्या ; का २६ ) । तस
   वि [ भन्] हनिश्वः ; ( गज )।
 नीन सी [है] १ माउँग, हुस्स ; (हे ४,२० ; स्प)।
  २ लगातः ; ( द ४, २० ) । ३ चिन्तः, विचारः (गा २;
   १९ ; २०३ म ; सुन २३० ; २≂० ) । ४ वर्ष्ट, बाट;
   (ग २ ; दब्बा२ ) । ४ इन्दं, प्रदोलन ; (पळ १,
  रे;दर १)।
```

निनय वि [नायन्] इन्हाः (प्रयू १४६) ।

निम्म । वि दि निमः (प्राः देश, ३, गा ४४ १ प्राय निमन्द । .: 11 तम् । इस देशे सन्य चरार (हे ६, ८०८, हम्)। नमुंडिएल न [हे] मृत्य, गंमार १ दे ४, १)। मनस्य ५ [है] र्गन्ता. (पर्) । ननो हम नहीं ; (इस , ही २६) । मुह दि [सुरर्व] जिसमा सुँदै इस त्यन हा १९ । (सुर १, १३४)। नतोह्न न [दे] नाभिषुण, उपर गमने ; (गड़ा)। नत्य म [नव] की, इसमें , (हे २, १६५)। अस्य ति[स्वत] हा ऐते मा; (ति २६१)। यति [स्य] की का महने बना , (दा १६ १ दी)। नत्य रि [प्रस्त] संत ; (हे १, १६९ ; रूमा)। नत्यरि पु [प्रस्तिरि] तद-विरोध , "तापरिनाण द्विमा गोरङ मान पुरे" (प्रस्तु ८)। नडा देली नया ⇔तता , (सा ६६६)। नदीय नि [त्यदीय] दुन्यान ; (मन)। नदो हमः तथी : (हे २, ५१०)। महिसचय न [दे] हय, नाय ; (दे k, =) । नहिञ्च) व [दे]प्रतिश्व, मतुरेत, हसीतः (दे नहिमसिस } १, में ; गडा; पाम)। नदिय पु [नदित] १ व्यवस्थान्त्रमितः प्रन्यवनीरोपः (पद ६,१; सिं १००३)। १ तदित प्रचय की प्रति का कार्यभूत प्रयं : (प्रयु)। नघा देनी नहा : (हा ३, १ ; ७) । नन्तय देशो नषणय ; (मुर १४, १०४) । मन्दा देवी नण्हा; (सुर १, २०३ ; दूसा । । नच्य सङ्किष्] १ ता इल्ला १ मङ्गाम इला। दनाः, दर्वति ; (विन ; प्राप्ते ११)। नन्य नर [तर्यथ्] तृत्व कवा। वह -नत्यमाण ; (हार १६, १६)। हेह-- "न इनी जीरी महुद्दी तनेहें दानती-र्वेहिं" (मार १०)। इ-नियंबच्य ; (तुरा २३२)। तण न [तल्य] सन्यः, विज्ञतः; (पाम)। विदि [भ] राष्या पर जाने बादा, सेले बादा : (पर १, २)। तस्य कुन [नम] दोनी, होटी मीहा ; (प्रस् १, १ ; सिं 30E) 1 तच्यविषय वि[नत्यासिक] इत पत वा ; (भ्रा. १२) । दम्पन्न न [नाटार्य] तत्सर्व ; (गद) ।

(4 316)1

सर्वे दना, (ग्रा४, १)।

नया म [तद्दा] ३० खबर , (दुमा) । तया मॉ [स्वयु] १ स्त्रम, ६:०, वनर्ग ; (मन् ३६

तप^{*} देखे तया≂चन् । "बनाय हि ['मार] ^{तर}

१ इप्पर्नेतः ; (सन ४९)। 'सैन हि ['सन्] '

नमा व दि] ब्रेटा, विभि माध स्त का क्षेत्रे की अपी

समित पुरी [दे] १ सुक देव ३० सूर्व, बुद्ध-सिंध की

तमप व [तमन्] मन्यक्ष्यः "तस्य व दिया

£ q: : (₹ £, ₹)!

E7. (\$ 2, 20)1

4" (TR 31 =) |

The transfer of the figure of the first of t

्राप्त के किल्ला के किल्ला नगर नियम है । वैस्तः (प्रदेश स्व ३४६ । र्फ व्हार ११व ज्यान, सीटा : (किसे ६०३३) ह و به پیشد ارتخواجه वर्गत इ. विर्णय है । इसं, स्वे : (इस १) २ स्टब्स न्यान्तर व [स्ट्रान्टर्स] हत्व सह . येत्र । रीतः । पर्यासी कार्येष , अ क्षर्य एत, क्रमान पर ; रपति । इत्रीरपतिम् हे स्टब्स्य दिस्सा १०० 7 9, 39 1 1 सामान्त्री है देवद्र है । न्यतम वि[नानम] स्ट्रारीम, "कामक्रेगपुरेवि" (क्रम्)। निरम्मा है [नवसुन] एक बसला कर हा मरमापा देशः मर≖र । 1224, 4, 611 नाम वि निगम विषय, पार : (गाउ , पाम : दान् , टी का (स्वर) स्वर क्या श्रा , जिल्ह का बाबू हर । स्वा १०४ । स्व १, मह 🕽 (सर कर (शहर) स्वर्ण शक्त राज्य । एक .(४ ८, २४ । नाम मा [मालय] धंवर बाबा, वित्त बाबा । ताला; रा-मान, कर १०१ । (एड: १) वह नग्सेन ; (गुर १४०) । साराज [सु] लेका ६ लाउ । इर ४ पर्य १ वर्ष । परिचयः मगरज म [नगरन] तात समा, दिलमा ; " स्थापीरी रोष, के ४, ३३० , १९ १० १ वर्ग नर्गन, नरमान, ्रम, स्रा १०० । देश-स्वीरात, सरीते राजा १,१४, कुर रा कुरतरात्वर "। सम्)। नामाविध दि [नामिन] चंदर चिन हुमा, चरायसन हेश्यक्त । इ.—सन्दित्य व्यापन हरण १००१ रिशाह्या : (गड़ा : म्बि)। नर व [नरस्] १ देश १ ६७, पालन । मिल्ट प नगरि हि [नगरिन्] दिनने गता ; (बन्)। [फेल्स्] १ हेन साथ १३ सन साथ । प्रेलिकायन नगरित्र में [वरस्ति] चयर स्थि हुमा . (सा 🖘 ; ी [किल्डिल्यम] रूट द्रा । भी ।। वर हु ३३ : सार्च ११४)। रुसंग्रह[साहु] १ कालात, क्षीर, (पार्ट १, १, नायह है [दें] यह सिरोप, यहाद, पनाद, पराप ; (दें धीर । 'बांडवा न [मन्द्रन] हा सिंग , (रेस ३)। मानि १ [मानिन्] स्ट्रां स्ट्रां । राम ।। धाँ £, £ ; 578 } 1 नाम = दि | सन ; (दे ६, ४) । मं ['सर्ना] ९ एवं बर्न्सना : ३ वस व्यव किंत्र . नरमा हा[नरमा] राँछ, करो ; (हर ६८१) । (20 2) 1 तम को [स्वरा] बन्हों, गीजर : (पाप) । वर्गनि वि[वरित्र] अवस्तुरः । वहः , रम् ।। मिन्नप्रय देन्द्रे सर = १। निर्मित्र वि [नर्गहन] स्थान्तर । । स्वर : मे स्थाः नरिक्रन न हि) दहा, एक कर की छोड़ी नीक; (दे ४,४)। इर १३४) । 'बार ३[बाय] स्ट्रा, स्वर . (बस निष्ठि दि [नरीन्] नैस्ने बाहर ३(क्लि १०२०) । 398 31 महिला को [नाहियाँ] नहें, महिना: (प्राप्त ६६ ; तरिंड देखे तर≈ह । त्ररिया की [है] देश मादि का गर, मराई ; (प्रमा ६३)। स्वयः : सूर्वः ३३८) । वरिति म [वर्षि] हे, का ; (पर ५,४३३ ; ११,७१) । माँड 🚶 😉 [माण्ड, कि.] होती, में हा, (हा १४% नरी मी [तरी] मैंदा, दोगी; (दुर १९१); हे ६, नर्देहच 🕽 ३०० ; सुर ८, ९०१ ; दुन्ह ९०१) । 110:54 16) 1 नाग हि [नग् क [तेले बला : । दा ४, ४] । तर पुंतिह देश, येह, यह : (को १४ : प्रान् २६)। नान्छ देन [नास] पार बन्द-चित्, मात्र की एक नरम हि [नरण] जान, सन स्परातः; (राम १,९६०)। र्वोत । प्रति १, १ तमा १,१ (स. १६०) । सी---नराम) वि [तरपक] यत्रह, व्यांत ; । सूत्र ५, ३, च्छी: (११९३)। 'सन्दर्का सन्दर्का सन्दर्का नक्यमं) ४ ११ १ र स्ति, रुग ; (स्य १४) । सी-बन्दु-सिप ; (पान ८२, १२)। तरहा । को हि । प्राप्त को ; "न्होर हार्द कि क्रो ंग्लिम, 'पिया : (क्रांच २, १) I तरुपाइस ईत [है] गेद, दिन गे ; (मेल १३६)। ताही) तही (इस् : इप १६६) । "स्रोब स्वयस नक्षित हुंना [नक्षितम्] यील, उतनी ; (इट)। कालगामे एको" (हा ११)।

भाः वीह्मसङ्	महण्याची । तिस्त्री
सम्मा के [सम्मा] प्राप्त को साह सम्मा महामा। सम्मा (सर्) प्राप्त कुमा, प्रमा, प्राम्न महामा। सम्मा (पर) पर मुम्म (स्वा के अक्षा सर्वेश किया (स्वा के अक्षा सर्वेश किया किया किया किया किया किया किया किया	सवारे सी [सहामिका] जेता तथा (का) सवाय हेव [सहाम] तथा (का) सवाय हेव [सहाम] तथा (का) स्वाय हेव [सहाम] तथा (का) रे हे रे हे रहा हुए का हे है है रे हे रहा का हुए का हो है है रे हे रहा का हुए का हो है है रे हे रहा का हुए का हो है है रे हे रहा का हुए का हो है है रे है है का हुए का हो है है है रे है स्वाय से तो साम हुए है है है स्वाय से तो साम हुए है
प्राचीत्रको है है है जानार । ते कुछ असी । ह एक कर्ष निरम्भ है में भाग जनाव ने स्वरूप र सूर्य भाग क्या जानावृत्त र सर २००३ है।	त्य के स्मित्त के तकता समार्थन के का स्थान कर्मा का क्षेत्र के तुक्का का कर्मा कि व वित्र कि का कि का क्षासाम के कि व महत्त्र कि का कि का कर्मा कर्मा कि की

नके उन नमी , (उना) ।

व्हर्भ , स्त्र १६) इ

नवी बला तब =त्यन् । विस्मान [किसेन्] ताः करत

ंस १० । धन ३ [धन] ही, ही, (प्रर.)।

°बर १ (घर] तस्त्री, हुन ; (रहन१०, १६४ ; १०३,

॰॰= . वण न[यन] र्घाटा मध्य ; । इत

, 1

तेषु देखे तडः; (पटने १९८, ८ । ।

स्पान्तिको स्पर्यस्य स्व स सं , बार् १६ १। । सम्बन्धः (सम्बन्धः पर द्विमा Ribb bereit biergiene finge die सिंहा वहाँ मा हाई हरता। STATE: भ्यापान ('दापा) र सादर्ग, स जार र्मु इर ीरे १ में मुख्यान क्षेत्र परवर्त व सक्त ण्यः, स्वर्गेषा शास्त्र शासाच ५,१,१६ । व्यवस्यि दि [भाषित] कावा क्रम बाका हा है। हर्म संयो । नियदेशी शयः (हि ० ४६ , यर् १) तेषमा १ [नयमें] भा ते लेक भा तर व याँच मतर । 'परिमाणि न ['मरिमाचिन] नाधर्ननांत्र, ।गय। । नवम इं [तरन] १ मुर्व, मुख्य , । टा १०३१ ई. इंग् २१६) । १ संबंध का एक प्रशन सुनद , । स १३, म्हे)। ३ म् विमानसिंख , ६ देख । । वेषणा सी [तरता] झाडास्टा , । रणा ४५३) । त्रयणिज्ञ न [तर्पनीय] सुर्वः, गानः , (पदः ६, ४ . ET 20) 1 नयमी मी [है] १ भट्या, सल्या-योग्य करा आहि : (है १, ९ ; सुरा १८८ , सम्बाहर)। र धान्य की देन से कार कर अधार सान्य बनाने की किया , (सुपा १४६)। उत्तर,पृष्टाध्याः पद्यने का पानः, (द 1, 12)1 नवणीय देगा तर्वाणझ , (सुरा 🖘) । त्रयमाण देशी सब=तर् । वयय वि [दे] ब्याह्म, दिनी नार्य में लगा हुमा ; (व 4.311 नियम पुं [सरका] तथा, मुनदे का भारत , (विस १, ३; हुन १९८ : पाम) । वयस्ति नि [तरस्तित] ९ तस्ता धने गडा ; (सन १९; स्र मध्य हो) । १९ मध्य, मृति, व्यवि , (स्वन्धम)। वैधित्र वि [तत] तरा हुमा, गरम ; (१ २, १०४; पाम)। निवित्र वि [तापित] १ गम हिदा हुमा , २ मंतरित ; "एकाए को न तरियो, जर्मन सच्चीए सन्दर्भ" (स्वा ३०४ : महा ; विंग)। नवित्रा सी [तापिका] ना स हास; (दे ५, ५६३) ।

नव्यन्तिय वि [दे] संगत, सीत, युद्धनार्गत हा अनुवार्या : जन्मियातः विषे विकासक्ष्यस्यसम्बरम्बरियः । (सि 3-69 11 नव्यन्तिय वि [हे नृतोययधिक] तृतेय प्रथम में न्यितः । इत्र ह १६८) (निव्यष्ट नि [निव्यष्ट] उमी प्रसार हः ; (माम) । नस प्रदृष्टिम्] इस्त, यसपाता । तकः ; (हेर, १६८) । र निस्पय्यः (दर ३३६ टो)। तम हं [चम] १ स्पर्य-इन्डिय में प्रविष्ठ इन्डिय बाला जीव. इंग्टिंग्य कारिप्राणी ; । जीत १ ; जो २) । २ एक स्थान में दुने स्थान में जाने माने को गरित काता प्राची : (निवृ १२)। "फार्य वुं ['कायिक] बंगन प्राची, हॉन्डि-बादि जीत ; (पछ१, १)। 'काय पुं ['काय] १ सत्त-मनदः (टार, १) । २ जंगन प्राचीः (माया) । "बाम, 'नाम न [नामन्] दर्भ-तियोग, जिलके प्रभाव ने जीव सम-बान में उत्पन्न हाता है ; (करन १ ; सन ६०) । 'रेणु ९ दिया परिमाय-विगेष, बनांत हजार मात भी मुस्स्ट पर-मालुमों का एक परिवास ; (मालु परश्य)। 'बाह्या मी [पादिका] कीन्त्रिय जन्तु-तिगेर ; (जीर १)। तसण न [चसन] १ स्वत्रन, यतन, दिवन ; (राज) । २ पटापन ; (नुझ १, ७) । तसर देशी टसर ; (स्यू)। तसिश्र वि [दे] गुन्ह, स्वा ; (द ६, ३)। तिसंध वि [नृषित] तृराचर, निगलित ह (एवण २४)। तसिभ वि [शस्त] भीत, दग हुमा ; (जीव ३ ; महा)। तसियव्य देशे नस=३५ | तसेयर वि [त्रसेतर] एंडेन्डिय जॅल, स्थावर प्राची; (सुपा तह म [तथा] १ दशे तह ; (उमा; प्राच्या ; स्वप्राः)। २ और, तथा ; (हे १,६०)। १ पार-पूर्ति में प्रयुक्त दिया जन्म सन्तय ; (निनृ १)। 'सकार पुं ['कार] 'तथा' मन्द्रका उच्चारमः (इत २६)। 'णाण वि

```
[तर्-८%
                                         पाइअसद्दमहण्णयो ।
433
                                                   तात्र देवा नाय≔गपः (गा ब्र.बः, मारः रेमःश्री
 [°द्यान ] प्रत के उत्तर को जानने कला; (टा ६) । २
 न सल्य शन : (ठा ९०)। 'ति म [इति ] स्वीधर-
                                                   नाम पु[नान] १ तात्र, विशं, नावः (शु १,११६)
 दांतक प्रध्यय, वैगा हो ( जेमा भाष कमाने हैं ) ; (नावा
                                                     उत १४)। २ ९४, वऱ्य , (गूम १, ३, २)।
                                                   नाञ मह [ त्रे ] रवच काना । ह--मायन्य :( यश)ः
 १,१)। 'य म ['चं] १ उन्त मर्यदी दुश्ता-सुबद
                                                   ताइ मि [ स्थाबिन् ] साग करने वाहा ; ( ग २१॰)।
 भ्रष्यय ; १ समुब्दय-मध्क भ्रव्यय , (पंचा १)। "त्रि स
 ['पि तो भी : (गड़ः)। 'बिह नि ['यिघा दिन
                                                   तार नि [ तायिन् ] स्टब्स, परिपत्तर ; ( उन ८)।
                                                   साइ वि [सापिन् ] शप-पुन्तः ( गूम १, ११)।
 प्रशास्त्रा, (सुपा ४४६)। देगो तहा।
                                                   ताइ वि [ त्रायिन् ] ग्हक, रहण रूने बनाः ( !
सह वि [ शध्य ] तय्य, मत्य, सच्या, (सुम १, १३ )।
तह प्र [ तथ ] माल-कारक, दान, नीकर , (अ४, २--पत्र
                                                     29, 22 ) 1
  293)1
                                                   ताइम 🖟 [ बात ] रहित ; (उर)।
तह देशो तह=तथा ( झीप )।
                                                   ताउं ( इव ) देख ताय=तवत् ; ( कुमा )।
सहरी स्त्री [ वे ] पर्क वाली मुग , ( वे ४, २ )।
                                                   ताडा ( चूरे ) देनो दाढा ; (हे ४, ३२६)। -
तर्राहरूया सो [ दे] गो-बाट, गौमां का बाडा ; (दे१, ⊏)।
                                                   ताड सक [ताड्य्] १ ताइन करना, पीटना। १ प्रेर
तहाँ इसे तह=न्या , (इमा , गउड , भाषा : मुर ३, २७)।
                                                     काना, प्रापात करता । ३ गुवाकर क्रमा । टाम ,(१
  भिय पुं[ीनर] १ सुरुर भ्रान्मा , २ सर्वंत्र ; (भ्राचा )।
                                                     ४,२७)। सरि—तात्रहर्मः; (पि२४०)। सं
  "भूष वि["भूत] इस प्रकारका, (पद्म १२, ६६)।
                                                     ताहितः (बार )। वाह-साहित्रमाण, ताहीरी
  'कब नि ['कर] उन प्रकार का, (शग १६)। 'बि नि
                                                     ताडोगमाण ; ( स्ता २६ ; पि २४० ; प्रति १११)।
  [ 'घिन्] १ निरुष, चनुर, २ ९, सर्वतः; (सुभ१, ४,१)।
                                                     ইচ−বাহিত , (হনু । 'চ⊷বাহিম ; (লাং))
  'दिम [°हि] यह इस प्रकार ; (उप ६८६ टो ) ;
                                                   ताइ दु[ताल ]ताइ क् (स २६६) ।
तहि देलो तहच्चत्वा ;( मा === , उन ६ )।
                                                   ताउंक पु [ताउडू ( क्या का धामूर्य-विरेप, इसी।
तिहि) ब [तत्र ] बहां, उनमें , (गा १०६ : प्राप्त , वा
                                                     (दे६,६३; रूपा, इसा)।
दिहि १३४, कर १०६)।
                                                   ताहण न [ताहन ] १ ताहन, पोटना ; ( उप ६०५ है.
त्रहिय दि [तथ्य] मन्य, मञ्चा, वास्त्रदिक , (गावा १, १२)।
                                                     बा १४६)। १ बेरखा, मापान, (हे ११, म१)।
 सहिर्द म [ तम ] वहां, उपमें , ( विमे १०८ )।
                                                   ताङायिय वि [ ताडिन ] पीटवाया गया । ( धुन र<sup>द्धार</sup>
 तहेय) म[तथैय] उपी तरह, उपी प्रकार, (शुमा;
                                                   ताडिभ देखी साप्र=ताउव ।
तदेवर्र वर्)।
                                                   ताडिअ रि [ताडित] १ जिन्हा ताइन दिया गमा है है.
 नाम [सह] दमने, इन कारव से ; (हे ४, २७०८ , बा
                                                     पीटा हुमा ; (पास ) । २ जिमहा गुकाकार हिरा दर है
  Y& : ( प : दर ) ।
                                                     बह, "इस्टानीई सा करककारकाणुनदनादिमा होर" (धर)।
 ता देशो ताय=१४१ ; ( हे १, १७१ ; या१४१ , २०१)।
                                                   ताडियय न [ दे ] राहन, रोना , ( रे ४,१० )।
 ता म [तदा] तन, उन्न मनवः (रंभाः; कुमाः, सखः)।
                                                   ताडिउजमाण देखां ताष्ठ = ताह्य ।
 ना भ [नर्हि] तो, तब, (शमा, कुमा)।
 नासी[ता] खरमो ; (सुर १६, ४००)।
                                                   ताडी सी [ ताडी ] इत-विरोप , ( गउँ )।
 ता" स [तदु] बहा "गीध वुं [ "सन्ध ] ९ उसका सन्ध ,
                                                   ताष्ट्रीर्जत
                                                              ो देखा नाउ≔ाऽय्।
   २ उपेंद्र गरुप के समान गरुप, ( प्राया १७ )। 'फास्स प्र
                                                   ताद्वीयमाण 🕽
   [ 'स्परों] १ उनका स्पर्ग ; २ बैसा स्पर्ग ; ( फला १७) |
                                                   साण न [ श्राण ] ९ सस्ब, रह्नच कर्ना, ( मुन १०४)।
   'रम पु ['रम] १ वह स्पर्ग, २ वेंगा स्पर्ग; ( क्ला३७)।
                                                     २ रचकः (सम १९)।
   'क्य न कियों ६ वह ब्यं, २ वैमा इय ; ( युव्य ६७---
                                                    ताण पुँ [सान ] भयोत-प्रशिद स्वर-विगेष, 'तादा शारी
   पत्र ११२)।
                                                     क्वामं" ( झणु)।
```

```
नापित्र—ताल ]
  र ः विचित्र वि [ नानित ] तना हुमा ; ( वी ६६ ) ।
                                                 पाइञसद्दमहण्या ।
 क्ष्म विदेश हैं नारिस ; (का अहेद , ब्राव्ह हैं र )।
                                                       नारता १ [ है ] सूर्त ; ( दे ४, १० )।
 ्ष नाम देवो तस्म=तम्। दसह , (या =१३)।
                                                       नास्य हेन्ते तास्म ; ( सन १; प्रायु १०१ )। ।
र रंगी नाम (मा) देखी ताम=त्वतु , (हर, ४०१ , सवि)।
                                                        क्लिंग ; ( दिंग ) ।
- गरेर निमार सि [है] सन्द, मुन्दर ; (हे ४, ९० , प्रमा)।
                                                      नास्या इत्वे तास्मा। ३ मीत की दन।
 मित्स र [तामरस] इनउ, पट्न, ( दे १, १०, प्रम)।
                                                       # 3x= : 58x ) 1
        मिरस न दें] पानी में स्वयन्त होने बादा पुत्राः (दे१,१०)।
                                                      तास की [तास] १ मैंस की पुतरी ; (मा ११९ ;
        मिल ई [तामिल ] स्वत्यसम्बद्धः एव तास्य , ( सम
                                                       र नचकः ( इ. १, १ ; हे १,३४ )। १ सुप्रीतः
                                                      ( ते १, ३४ )। ४ समून परवर्गी की माना ; (सन
        रिनित्त की [ताम्रलिति] एवं अवीन नवरी, विग देश द्व
                                                      १ नर्तिकेंद्र : ( य १० )। ( बीदों के शास
        र्षेत् राज्ञवानी : ( दर ६== ; मग ३, १; परव १ )।
                                                      (इन ४८२)। 'उर न ['पुर] उत्पा
        लिविया मी [ताचलितिका] देन मुनिनंग से एक
                                                     (इन ४४२)। चंद्र हं [चन्द्र] एक राजनु
        五:(至二)1
                                                     (यन्त्र वर ही)। तिषय प्रं [ तनय]
्ता नामस (वि नामस ) क्येंद्रच बता , (पडन म, १० :
                                                     विटेर, मह्यदः (स्१३, १०)। यह व [पय] मा
     हर ४२=)! दियं न [फिल] हरर वर्ष के समावितेन,
                                                    क्ता : ( क्यु )। चहु ई [ असु ] चन्द्रमा : ( ता
     (527 =, 60) 1
                                                    दो)। मैची हा [मैबी] निःखर्य मिकाः (इः
     ामहि) (मन) देखें तास=उक्त्, (यद्; मनि; नि
                                                    थ्या न [ थन ] क्रोनिश हा चतुना, मीन ही पुत्रती
     महि] २६१; हे ४, ४०६)।
                                                    हिटन, भागं तारावचं नियह" ( द्वार १८० )। 'दा
     विचीसम हं [बायस्त्रिंशक] गुरुन्थनीर वेन-अदि ,
                                                   [पिति] बलका, (यहर )।
     三3,1,至四)1
                                                  वारिम वि [वारिम ] दर्गन्त, देखे बांग्य ; (.साव ६३)
     पत्तोता सी [ प्रयक्ति शत् ] १ संस्कानिये, वेतन ,
                                                 तारिय हि [ तारिन ] का उद्याग हुमा; ( मनि)।
     देवेन मंन्या बाला, हेवेन, "ताववेना संत्याला" (हः,
                                                 नारिया मा [नारिका ] द्वार हे महा ही एड प्रहार ह
्षिकार स्वयः ।
                                                  विन्ता, दिख्ती, दिख्ता ; "तिविकारंबदारियात्रना" (सु
ं नायम्य केलं ताम=वै।
तिर वि [ नार ] १ लिमेंड, स्वच्छ ; (में ६, ४१) । १
                                                नारिस वि [ नाइरा ] हैक, वन त्यह का ; (क्य ; बाद,
  कार, देशनमन ; (पस )। ३ मनि द्वारा (ने
                                                 इन्त)। मी -सी; (शह ११४)।
र (, ४)। ४ मेर्ड केंबा स्वर ; ( रास ; बा रहर)। ३
                                               नारूच्य ] व [ नारूच्य] सरदा, दीत ; (यह: ; हारू:
हे व व्यक्ति ; (दी व) । ६ दें. बालग्रिकोस : (से वे, ३८) ।
                                               नारूल ∫क्त ; इस ११६)।
याँ मां [ यनी ] गमन्यः ; (मनु ४)।
                                              नाल देना ताड=हरम् । तहेर ; (मि १४०)। सर्-
नेतंत्र व [नारक्ष] नांगच्या ; (मे ६, ११)।
                                               तालेमाम ; (सिंग १, १)। स्वरं-वालिस्बंब,
वासा वि [नारक] नगरे बाहा, पर दलाने बाहा , (दर
                                               वालिस्डनाम , (परव ११०, १० ; ति १८० )।
१११) । २ ई दर-विटेश, दिवेड प्रतिस्त्रीयः, (पान
                                             नाल क [नालयू] हजा स्त्रज्ञ, इन्द्र स्त्रः। हेरू-
रे, ११() । स्ट्रीम के मा मह ; (यह) । देने नारव ।
                                               नाटेवि ; (इर भ्रः )।
तिसका । १ वसकः (वसकः १)।
                                             नाल ६ [ताल] १ इस्टिंगः (एस १,४)। १
े पर स्टाएं, हर्नमञ्चार हत है एर परार्थ ; (ए ४,
                                              रण्याचे क्षेत्रः (पर १,१)। १ तत्रः (दन
।)। देखें कारदा ।
                                              १)। ४ बन्दा, त्यकः (है। ११)। १ वटः
ग्य व [तारव ] १ पर स्थान : (सुर १६०)। १
                                             क्तां (ग्रा)। (क्रांस्य साथ प्राप्तः)
(टलेंब्झ ; (हर ४१०)।
                                             (मादार) । वह माना हा बल् सके से छह
      23
                                             (तमा)। व्यक्तकारः
```

महादेव, शिव ; (शा २८ ; पउम १, १२२ ; पिंग) । 'लोअपुच्च पुं['लोकपूज्य] धानक्षमङ के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव , (पडम ७६,३१)। "लोई सी [°लोकी] देखा °लोज ; (गउड ; मत १४२) । °लोग देखो "लोअ: (उप १३)। "वर्ड स्रो ["पदी] १ तीन परों का समृद्द । २ भूमि में तीन बार पाँव का न्यास : (भीप)। ३ गति-विरोप; (अंत १६)। "वस्य प्र ियतं । १ धर्म, वर्ष चौर काम वे तीन पुरशर्य ; (टा Y, ४---पत्र १८३ (स ७०३ (ट्राप्ट १०७) । २ लोड, वेद और समय इन नीन का वर्ष, ३ लूब, अर्थ और उन दोनों का समृद् ; (झाचू १ , आवम)। "धण्ण ९ ["पर्ण] पतारा इत ; (इमा)। 'चरिस वि ['वर्ष] तीन वर्ष की मदस्था वाला ; (दन ३)। "चलि सी चिलि] वमडी की तीन रेखाएं , (इन्यू) । "यस्तिय वि ["यस्तिक] तीन रेखा बाला , (राव) । "चली देनो "चलि ; (गा १७८, भीप)। 'यह वु ['पृष्ठ] अस्तवेत्र के आशे नवम बामुदेव , (तम १६४) । "घय न ["पद] तीन पींव बाला , (दे न, १)। "बहुआ भी ["पर्यगा] गमानदी, (से ६,८; भन्तु३)। विशेषणासी ["पातना] देलो "पायण ; (ज्ह १, १)। "बिंह , "विदर् ("पृष्ठ, "विद्] मरतहेत में उत्पन्न प्रवम वर्ष नक-. क्यीं राजा दर माम ; (सम ६८८ ; पडम ६, १६६) । 'खिह 🗎 [°िया] तीन प्रकारका; (उदा; औः १०; नद 1)। "विदार इं ["विदार] शत्रा इमारपात का बनवाया हुमा.शांटच का एक जैन मन्दिर , (इय १४४)। 'संक प ['शाक्र] सूर्यवंशीय एक शवा ; '(प्राप्त ८१)। 'सम्द न ['सम्बव] प्रभाग, मध्यक्ष भीर .सार्यकाल का समय ३. (मुर ११, १०६)। "सह 'ति ['पष्ट] तैनळती, (३ थीं ; (फटम ६३, ७३)। 'स्महि मां [चिष्टि] तेलक, ६३ , (मनि)। "सत्ता वि व ['सप्तन्] एक्शनः (धा६)। 'सत्तगुत्ती प्र ['सप्तरूट्यम्] एक्टीन वार ; (बावा १, ६ , शुरा ccs.) ('समस्य नि.['सामयिक] तोन समय में उत्पन्न होने बादा, तील समय की अवधि बादा; (या 1, v)। "मरवन["मरक]तन वर्ष वाला हार; (बादा १, १ ; मीर ; महा) । १ बाद-विशेष ; (वज्य ६१, үү)। 'सर्ग साँ ['सरा] शन्दी फारने ही

(बुमा ; प्रान् ८६ ; सं ५) । "छोअण पुं ["लोचन]

[अप्रिका] छोटा मिग्ल ; (मृप्र १, ६, १) हतर वि [समत] तिहत्तरवी, ४३ वी; (गम भी) द्दाम [धा] तैन प्रधार थे; (विशशाःम) "हुअण, "हुण,"हुयण न ['भुयन] १ तीन आह. (र्न, र भीर पाताल लोक ; (कुमा ; हर १, ८ ; प्रान् ४६ ; भी १६) । १ राजा तुमारगाल के पिता का नव। (१४४)। 'हुमणपाल वुं ['भुवनपाल] । व हैं रपाल का फिना; (इप १४४)। दुमगालका [सुयनालंकार] रावच के परहन्ती का नमः (व =२, १११)। 'हुणविहार ५['भ्रुवनविहार] गु" पाटच में राजा कुमारपाल का बनवाया हुमा एक केंद्र है^{न्द्र} (इप्र १४४)। देखो से '। 'ति देखो इअ=इति । (इमा ; कम १, ११; ११) तिम न [किक] १ तीन का समुदाय ; (मा १ , त भी टी) १ वंद जनह जहाँ भीन रास्ते मितते हों, [१, (१) । "संजम पुं ["संयत] एक राजीं । १, ११)। देसो निग। तिम वि [विज] तीन से उपन्न होने शहा ; (हर) तिअंकर वे [त्रिकंकर] स्वनाम-स्थान एक केन दुन (र् तिश्रम व [श्रिकक] तीन का समुदाय ; (विने दार्ग) निजडा सी [त्रिजटा] स्वनाम-स्थान एक रावणी, (11, =>) [निवर्मणी सी [विमही] एन्द-रिएंद : (रिप)। तिअय न [त्रितय] तीन का समृह ; (विषे १४३३)। निबद्धक्क } व[श्री सोक्य] तेन जानू—सर्व, वर्ष तिञ्ञाय) पाताल होक ; (घर्मा (•, हर्नुम 1)। तिबस ई [बिद्या] देव, देवता ; (इमा : 5र %) भित्र वृं भित्र]। ऐसक्त हायी, रूट का हुनी

है, ६१)। "ताह पु ["ताम] इन्द्र : (बार^{म्}

त्रण ४४)। "पद्र ३ ["ममु] इन्द्र देव सम्बन्धि

जात-निग्य ; (शिंग १,८)। 'मरिय र ['सर्ग्य

१ तीन सग वाला हार; (इप्प)। १ दानित

(पत्रम ११३, ११)। ३ वि. बार्गियन

(पत्रम १०२, १२३)। "सीस ६ ['र्गारं] हे

किलेप ; (दीन)। "सूल न ['शूल] रक्तेण

(यउम १२, ३४; स (६६)। "स्लपाणि ई हिन

पोणि] १ सहादेव, सिव । १ जिस्त व हवने लं

बाला सुभट; (पत्रम ६६, ३६)। 'सुलिया ब

["कुट्टी] तित की बनी हुई एड में उब कर्यू , (धर्म

(म.ए., भग १४, १), "निविध सर्वतेण्याली दीवसम्-हार्च मार्भ मार्भक लेकेव अनुहोंने दीने" (कान)! मार् मी[°गिनि] १ तिर्दग्-मानि, (≡ ६,३)। २ वक गति, देड़ी चाल, कृटिल गमन , (चंद २)। "जंभग पुं [°ज़म्भक] दर्नो दी एक जाति ; (इटन)। "जौणि मी [°योनि] पगु, पत्नो भादि का उत्पति-स्वान ; (महा)। "जोणिअ वि ["योनिकः] निर्वय्-योनि में डल्परन , (सम २ ; सम ; ओव १ ; टा ३, ९)। 'जोणिणों सो [°योंनिका) तिर्यंग्-योनि में उत्पन्न सी जन्तु, निर्यक्की : (पश्य ९७—थब १०३)। °हिमा दिस्ति सी ['दिस्] पूर्व मादि हिगा; (बावम; उवा) 1 "पब्यय वं ["पर्यन] क्षोच में पड़ता चहाड, मार्गावरोचड पर्वतः (भग १४, १)। °मित्ति मो [°मित्ति] बोच की मींत ; (ब्राचा)। "लोग ९ ["लोक] सर्व संत्र, मध्य लोकः (ठा १,३)। धनसः स्रो [धन्सिनि] तिर्यम्-योनि , (पल्द १, १) १ निरिच्छ वि [निरक्ष्यीन] १ निर्यम् गः; (राज)। २ निर्वह-सबन्धी ; (उन २१, १६)। निरिच्छि हेनां निरिम ; (हे २, १४३ , बर्)। निरिष्ठो स्रो [निरएयो] निर्वक्सी; (इमा)। निरिड वं [दे] एड बानि का येड, निमित इस: (दे ६, ११)। निरिडिअवि[दे] । निनिर-युक्त; १ विवन, (दं १, १९)। निरिष्टि हुं [दे] उत्त्व बात, गरम पदन ; (दे ४, १२) 1 निरिश्च (मा) देवं निरिन्छ ; (हे ४, २६१)। निरोड पुन [किरीट] सुइड, सिर का मानुवय ; (कह 1, ४ ; सम १६३) । तिरोड ९ [तिरोट] इस-विशेष ; (बृह २) । "पहुर न [पट्टका] इस-नितेश की छाल का बना हुआ। कपका ; (a t, 1-44 11=)1 निरोडि म [किरोटिन्] मुद्रश्-पुष्क, मुद्रश्-विमृष्टि ; (उन E, (+) | निरोमाय पु [निरोमाय] सय, मन्तवान ; (निषे २६६६)। निरोधर वि [दें] इति में मन्दर्शत, बाह से व्यवस्ति : (दें 1. 12)1 निरोहिष वि [निरोहिन] क्रनॉईन, ब्रान्डार्ट्न ; (सड)। तिल पुं [तिल] १ स्वन'म-प्रतिद्व मन्त्र-विरोप ; (शा ६६ १ मार्था १, १ ; प्रश्व ३४; १०८)। २ ज्यो-रिन्द दव-विरोध, मह-विरोध ; (य १, १)। विद्वी की

"पर्याडिया मो ["पर्देटिका] तित्र ही सी हूँ स क्षोत्र ; (वश्य १)। "बुटफ्रवण्य वं ['बुपर ज्यादिन्क देव-विशेष ; गट्र-विरोप ; (छ २, ३)। में सी [मिल्ली] एक शास बस्तु; (वर्ष "संगलिया बी ["संगलिका] दित की क्षेत्र "सब्दुन्दिया हो ["शकुन्दिका]^{[ह} बनो हुई साथ बन्तु-विशेष: (शक्र)। निलक्ष नि [तिलकित] निज्ञ हो गए शरीद दित ; " जयजवमहतिलङ्गो सगलजन्सी " (धरी निलंग हुं [तिलहू] देश-विगेष, एव भागीय रहियां (इमा : इड)। तिलय } प्रितिलक] १ इज्ञ-विशेर ; (सन ११) निलय ∫ भौर; इप्य; बाबा १,६; डा ६० वै। १६) । २ एक प्रतिवासुदेव राजा, मन्तदेव में ट^ब पहला प्रत्वासुदेव: (सम ११४)। ३ ही^{.कीत}ः समुद्र-विशेष ; (राज)। ६ न् पुण्य-विशेष, (इस ६ टीका, खलाट में किया जाता चन्द्र प्रादि स विर,(ह यर्थ ६) । ७ एक विदाधर-मार; (१६)। तिन्तिनिलय पु [दे] अन-अन्तु विरोप; (रूप)। तिस्त्रिम् सीन [दे] शाप-विशेषः (सुन १४१; न सी—"मा (तुर ३, ६८)। . तिलुक्क न [बैलोक्य] स्वर्ग, मर्च और वलात हरू। 23) तिलेल्ड व [तिलतैल] नित का तेन ; (💵)। निल्डोक्क देखे निल्डुक्क ; (सुर १, ६९)। निलीसमा भी [निलोसमा] एक स्वर्गम प्र^{मा}ः ७६⊏ दी ; महा) : निस्रोदग)व [निस्रोदक] तित का भीतः (भर निसोद्य∫ इप)। निल्ल न [रील] नैल, तेल , (मुक्त ३६, इप^{३६०)।} निब्द्ध व [तिब्द्ध] छन्द-विरोध ; (पिम) । निरुद्धा [[तीलक] तेल बचने वाता ; (वृह १)। निस्टोदा सो [तैरोदा | नरी-विराप : (निष् 1)। निर्व (भप) देशो तहाः (हे ४, ३६४)।

निवण्णी भी [त्रिवणीं] एक महीर्था, (तो १)।

निविद्यी सी [दे] पुटिका, क्षेत्रा पुरसः; (दे ६, ११)

तिथिद्वा सी [दे] स्त्री, स्र्हे ; (दे ४, १२)।

वति[तीव] १ प्रवर्, प्रवाद, टक्बर; । नग ११; षा) । २ गीड, सवानह ; (सुप्त १, ४, १) । ३ माउ, षे ; (पद १, १) । ४ तिहर, ब्युक्स ; (संग ६, ४)। १ प्रदे प्रकृतिस्तः (यादा १,१--५३ ४)। विभि [दे सीव] १ हुन्छ, साक्तिता में स्टाही े। (१ ४,११; सम १,३,३ ; ९, ६, ९; २,६; म.च)। मज्य महिन्नु भएवं : (दे ६, १९; हर्म २ ; मीर ; ३१,३,६४ १६; सप ६; उन)। उना की [बिहाला] मनवान् महावीर की माना का नीम: न १४१)। सुन्न हं [सुत] मन्तर कार्ततः पत्रम् १, ३३) t रा मी [तुवा] पान, तिल्लाः (हर ६, २०६; ች **ነ** ነ नाइय) ति [नृपित] तृपतुर, पादा : (नहा ; बा ; मिय 🕽 🚓 १, ४ ; हुर ९, १६६ 🕽 🛚 सिर हुं वु [विशिष्म्] १ देव-विशेषः (पटन ६८) । थे)। १ र्षु हा-स्तिव ; (पत्न ६६, ४६) । ३ एवए का ≅ पुद्र ; (में वेर, ४६)। स्त्रगुत्त देही तीसपुत्त ; (गद)। ६(६२) हेर्छः सहा ; (६मा)। दि ऐसी [तिथि] पंचका चल-चला ने तुन्त चार, दिन, र्गितः (इंद ५० : वि १००) । म दि [तृतीय] रीलग ; (उन ११०; विजि १०)। व दि [मर्तात] १ ग्रहरा हुमा, बीटा हुमा; (हुत ४४६; ल)।२९ं स्टब्ड; (ट३,४)। अन पुं[वैदिल] ब्लंजिन्डाब्द बरफ-स्टिप ; (सि :3x= }1 मन न [तीमन] बहै, रायक्तिम : (हरे, १४ :क्न)। मित्र वि [वॉमित] मार्ट, गीता ; (इत ३७३)। रिक्ट [शक्] स्वर्ष हेना। देख ; (हेथ, मा)। रिवट[तीर्य्] स्मात कार, प्रीट्र कारा। देख, रिंद ; (हेर, मः ; स्व) । मह—सीरिता ; (राम) । म हे [वीर] स्टिस, व्ह, दर ; (स्ट्र १९६ ; प्रद ֥ ; ৫ ४, ৭ ; হন) । मेंग्स वि[तीर्यंगर] गत-गर्ना ; (मानः)। र्गिय व । वोरिव कारिय परिस् स्थि हमा;

तीरिया व [दे] यर स्तर्ने का थैटा, बाववि (?); "बहिस्सोर पान्यं बहुतरं, संविमोर्तरियानो" (सश्क्ष्र)। नीम न [त्रिशन्] १ रंख्य विधेन, तंत्र ; १ देत-संस्मा बदा ; (महा :मदि)। तीसवा) सी [विश्वत्] का देखे ; (वीर ११)। नीसह) विस्तिति विषी किन वर्ष से स्त्र छ ; (एडम २, २८)। नीसहम वि [बिंश] ६ तत्नों ; (पत्न ३०, ६८)। २ त्यातर चौरह दिनों का काराक ; (याया १, १)। तीसगुत्त पुं [तिष्यगुन] एठ प्राचेल मायार्थ-विटेप, दिउने ब्रन्टिन प्रदेश में जीत की स्ता का पत्य पदाया था: (20)। तीसमह पुं [निष्यमद्र] एक जैन सुनि : (हम)। र्तासम हि बिश्व (र्तन्सी ; (मति)। तीसा की देखे वीस ; (है १, ६२)। तीसिया की [बि'रिका] नीत वर्ष के उन्न की मी: (बर)। तु म [तु] इत मदीं का सुबंध मन्ययः- १ मिल्ला, मेट, किरेक्स : (धा २७ : दिने ३०३६)। २ मन्या-रद, निश्वप : (सुम १, २, २)। ३ ग्रमुक्दप : (सूम १, १, १)। ४ कार, हेत्र ; (निदू १ ")। ५ पार्ट-पुरक मन्दर ; (विमे ३०३४ ; पंचा ४)। तुल क्ट [तुहु] ध्यम करा, मीहा करता । दुमहः (पर्)। प्रमे, संह--सुपावश्ता; (ग्र.१,१)। तुबर इं[तुबर] यत्य-स्टिय, रहर : (-बं १) । तुबर मह [स्वर्] त्वग इस्ता । तुमर ; (मा ६०६) । तुंत वि[तुङ्ग] १ जैवा, उच्य ; (या १४६ ; मीर)। १ ई इन्ह-स्थित ; (सिंग)। र्नुगार १ [तुष्ट्रार] मनि द्येय द्य पत्त ; (मन्नम)। र्नुगिम दुंगी [मुहिमन्] के बाई, उनक्य ; (हुए १२४; बाहा ११० ; बन् ; स्त्) । नुंनिय इं [नुद्धिक] १ मम-विदेश ; (माम)। १ र्चांकविरेत्र, "तुरे नुस्थितिसे रात् किलं तां कार्" (इप १-१) । १ इंगी, गीव-किय में दल्पन : "जलना प्रस्ति देश" (संदि) ह र्नुनिया को [तुद्धिया] न्यते-वितेष ; (मय)। नुर्तियायम् न [सुद्धिकायन] एव ग्रेन वा नम ; (ब्रम्न): तुंगी सी [दे] १ रहि, सह (हे ६,१४)। महानीरेकः "महिरामुद्देश्रीतंत्रः--" (🖙 🖰 र्नुगोप ई [तुर्दोच] अंड-मिन : 🕻 🗰

(42 8)1

34=) I

312) 1

नुकत्त[दे] रूप-सिनेष, (सिन्दर्ग)।

```
तुरक्त न [ सुरूष्क ] मुर्धन्य द्रम्य-विशेष, जो धूप बरने में
 श्म धाप है, सिएड , (सम १३४ , बाबां १, १ ,पप्रम
 ١ ( الآم . ١٩ . ١
स्टब्की सी [म्टन्टी ] दिवि-वित्य : ( विमे ४६४ डी )।
मुश्मणी मी [ दे ] नगरी लिए ( मन ६३ )।
         । दमा सुर ।
मुरेग्राम ।
गुप्त श्रीस्थृ] ५ सीलना। २ उन्ना; ३ ठीक २
 'बरण र दरना । टुलइ, टुलेइ , ( हे ४, ६६ ; छर ; बरुना
  १६८), करू—नुरुत , (५०) । गह—नुलेऊण ; ( दूर
  1)। इ∽तुलेशय, (ग६,३६)।
मुख देशामुखाः (तुशास्त्र)।
मुख्या १५ मुख्या । क्या ६०)।
लागम महिरी बाद्यालीय नवाय . (वे ६, १६ : से ४,
  109
मुलगा को [ रें ] बहुद्धा, ब्वेरिना,स्वेच्छा , ( कि व रे)।
मुख्या व [ मुख्य ] लेल्या, तत्त्व , (बण्ड ; बण्डा १६७)।
 मुख्याकी [मुख्या] तीतन, तेतन, (बाद्य २०४ ।
  4 (119 ) |
मुख्य रि [मोरका ] नीति वाता , (तुता ५६७ ) ।
 हाण्यिक्षां को [ हालियक ] नोव क्या ३ ( कुमा ) ।
 तुरुमी भी { देनुरुमा } जन्म-विवेध दुरुगो । ( दे ध,
  १४, पथा १, स म ; पश )।
 हारा बी [ सुंदा ] १ । रविनीतेत्र , (ला ३६ ) ६ । २
  सण्यु न तरे थ स्थान । ( सुद्र ३६० , मा १६१ ) । ३
   प्यट, तद्या, (मूद १, ६)। "सम वि["सम]
  84 4 4 561, # 94 ; ( 58 6 ) 1
 मुन्तिय रे। [तुन्तित] १ डप्रका हुवा, अवा दिशा हुवा , (व
   ६.२०) । ९ तेन्य कृष्य, (प्रमा) । ३ युटा हुष्या, (राम) ।
 महिकार ६६ त्र ।
 हाल है। [हुन्य ] स्थान, स्रोताः ; (अस : प्राम् ५२ :
```

मुपर बद [त्यार्] त्यार काना, श्रीप्रश्च काना है। मुख्य :

मुचा 🖵 [मुचा] १ स्मार्थन, बदवान; (३६,

१६) १६ ति, करशास सन्त, कीन्त, (केंद्र, ११) है,

हे र, र र) क्य-मुक्ति (१ र, १००) । प्रये शुक्त-स्वराजेष (४८ - ४१ - ४०)।

तुसकी सी [दे] धान्य विशेष ; "तं क्यों है हैं बादह सो स्थितित वस्तीयं " (हुगा ६४६), "हि खंतीत तुरम्स तुलसी मणुरवाया '' (तुरा ११ है)। तुम्नार व [तुपार] दिव, वर्षः (यत्र)। ^{वर्ष} [°कार] चन्त्र, चन्त्रमा ; (शुगा ११)। तुस्तिणिय) वि [तुर्प्णीक] मैनी, इर, रहार् तुग्तिणीय) (शाया १, १-पन १८ । व १,१)। तुनिय ५ [तुनित] होहालिङ देशें हो ए ही. (वाया १, ५ ; सम ८) । तुरनेशालेश न [दे] बाद, लड़वी, बान्ड : (दे 1, 16) तुम्गेदच] व [तुगोदक] वंदि मारि वार्थन छ। सुमोद्य ∫ (सन्। रूप)। तुस्त देगो तूम=तुर्। तुम्म । (भि ६३१)। तुद्दं न [स्थन्] तुन । "नजय । ['संबरिश्रे तुमने संबन्ध रतने बाला, (शुप्त ४१३)।

तुहार (भग) हि [स्वदीय] इन्हान : (१ र.ग)

तुवरी क्री [तुवरी] मन-विरोत्त, मग्दर ; (मा १०,१

तुम हुं [तुप] १ बोल बादि तुच्छ घान्म : (४ ६)

१ धान्य का दिलका, भूगी ; (दे १, १६)।

तुरिण न [तुहिन] दिन, तुपार ; (पात्र)। है ['विदि] दिवालन पर्वन ; (मउड) । 'कर ! । 'व कारता ; (कामू) । 'तिरि वेनी 'शिर ; (नार्') "राज्य वं ["राज्य] रिमानव वर्ग । (मृत ट्रा) नुष वं [दे] ईन का काम काने माना ३ (हे हे, प्) तूम कुर [तूम] १५६, आया, तरस्य , (३ ५.1" वर् : युवा) । कुणकुल्ल वं [कूणायत्] मूला-असर क्षण वर्षः र (पहण्डा प्रति। स्था)। तुमा } भी [मूमा] १ बच मिन । (१व . रू.) न्भि'∫ शुध्क, संपाः (त्र ३; ति ९६०) ! तूर देना तुरव। त्रा ; (हे ४, १०१ : गर्)। व मुन्त, मूर्गत, मुख्याण, मृत्याण, (हे १,६००)

रह दृश[त्रुवं] कव, कक्ष ३ (हे २, ११) क्रें

चर व [चिति] बरी बा इन्ति । (११ १)।

261:4831

```
المنافعة ( علما : فتط تها له ) إ
                                                                        ्रा पार : (मृत (kx))। प्तीम, प्तीम मंत्र
                                                स्रार्थसम्बद्धाः ।
                                                                         [प्रयोग्य नात ] नेतंत्रम्, तीर क्रेंस तीतः ( मार ; गम १८)।
                                                                           मः न्याः (ह १, १६३ , वि ४४३ )। न्तीलस्य
                                                                            ि (वर्षात्वेत ) को से । (पान ३३, १८८)। विदि
                                                                              गां [ पारि ] कितार गाउँ होंग नीत : (ति १६४ )।
युग्य, युग्य मंत्र (प्राच्यामार्) येष्य, व्याम मेर
                                                                                 न्त , (१ ३, ११४; ११; हन ११)। स्तरि
红花花女】 如
                                                                                  म [ मजित्र ] सिन् । (ति १६४)। जात
                                                                                   क्षेत्र [ प्रयोचिश्रामि ] नेहेन, वृत्र ध्रोत होना ( गम ४२ )
我[]我] 你不知明我
                                                                                    र १, १११)। चील, चीलान वि [प्रयोचिया]
                                                                                      हित्त्वीः (यहम २०, ८०; २३, १६, हार )।
अनुसर न (यहम्बर ) प्रतः, मन्त्र होते सर्ववात का
र हेती सुर=पूर्व ।
F. F. [ F. ] 25, F. ... Str. 167, F. ...
                                                                                         ल्या ( प्राप्त ६ , १९ )। अति स्रो ( अति हि )
स्रो अति स्रो ( अति स्रो ( अति हि )
والمراج والمراج المراج والمراج المراجع المراجع
                                                                                            विरामी, ब्रमी बीर नेल : ( सम म्ह : बल )। सीरम
 हुलिया मी [ मूलिया ] वृहती मा माम स्टिंग,
     नाः (रेरे, १९)। वर्ताः स्त्यकः स्ट्रा
                                                                                            नेप्र कृष्ट (नेत्रण् ) वेत्र काना, वेताना, वेत्रण काना।
    मुक्तियां मी दिने क्यार्यक्तियां मान्यती के देह , (ह
                                                                                                तेय प् तिज्ञम् ] । हानि, दीति, प्रश्चा, प्रमा ; ( टन ;
                                                                                               तेम देनां तर्भ नर्निसः (रंभा)।
     मुक्तिक रि मिलिकाल्यम् । तार्वतः बनानं को बन्न बानाः
                                                                                                   मा ; दूना ; रा = ) १ ३ तम, मनियाप ; (तुना ;
                                                                                                     मूख १, १,१)। १ प्रताय ; ४ माहात्म्य, प्रसाय: १ वर्षः,
           हतो हो [ मूर्ती ] देलं सुलिखा ; ( मु २, ८२ ; पत्न
                                                                                                      कारमा (वना)। भूत वि (वित्र) तेत्र वाला, प्रमानुष्ठः
                                                                                                        (स्टू २, ४)। श्वीरिय पं विषये अत बस्तर्ग के प्रयोग
                                                                                                         कारीय, जिससे मार्ग-नाम में कार्यहम हुमा था; (य
                       मं तुवरः (रिंग १, १ - पन १६)।
               31. 34: 24. 365)1
                       क [ तुर्व ] सुन होता। तूना, तूना; (ह ४.
4
                       ( । व्यति १६ वर् ) । ह - मृतियक्ष : (व्यत् १,६)।
                                                                                                        त्रेल व[स्त्रेय]वार्गः (मगः )।
                       हत्तं तित्य ; (ह १,९०४; १,७२; इना , ह ४,९६) । |
                                                                                                          तें अस्ति वि[ते जीवन ] तेत्र माठा, तेत्र गुंद ; (में
                                                                                                         तेय देखीं तेथयं ; (मग)।
                        ल वं [ हे ] इस्त कारनी : ( हे १, १०)।
                                                                                                               उत्तर ४ ; मृत ; सहा ; सम ११२ ; पटम १०२, १४
                       क्तं नि=ि। आतीन मेन ( क्ल्यारियन् )
                         कृत्या किए। बार्टिन सीर तेन की संस्था है वे तेना.
                                                                                                               क्षेत्रणा व [केंत्रम ] १ तेव करना, वेनाना ; १ व
                         रीत की गील्या बहुता । (सम (६)) व्यालीसहम् वि
                                                                                                              तेभग देगों तेभय ; (जीन १)।
                                                                                                                   (हर, १०४)। ३ वि स्ते क्लि बले बाला ।
                           [ बन्यास्य ] नमलात्याः (बन्य ४३, ४६) ]
                             'वासी की [ क्योंनि ] भारता किए, करनी कीर
                                                                                                                  तिस्य व [तीज्ञस ] जातान्त्रवर्गा मूटन गरी
                             त्तः , शत्मां की मंदन्तं जाताः (वि ४४६)।
                               'शासीइम वि[ 'अर्थातितम ] निर्मानी ; (स्म न्द्र)
                                                                                                                    तेमलिए तिसलित ११ महम्य जाति विषेष
                                वस दर, १४)। व्यस्ति व (व्यस्तिते स्मा,
                                                                                                                        क्र)। १ क मन्त्री के तिया सामा क्रिकेट
                                   इस इत तर इत वंश इत्या प्रती । ( स राष
                                                                                                                          धुत १ (पुत्र ) राजा क्लराय का
                                    सं १७)। 'जीय पुं िश्चीजम् ] विम्न राजि कीयः
                                     (स ४,३)। फडर सी [नवित ] स्तिनं, नवि
                                                                                  ° जाउय वि [ ° नचत ] ।
                                      द्यीर दोल, हरे ; (त्रन हर )।
```

44.6

```
, राजंन, धरपराजमाण, धरधरेंत ; (क्रीन ४०० ; नि
१६८; नड-मालती १४ ; पडन ३१, ४४ ) ।
घष्ट्रिय वि [ हे ] कम्मि ; ( दे ४, २० ; मवि ; दुर १,
, <sup>७</sup>; डार २१ ; जब १० ) १
पर ई [ देस्सर ] खड्ग-इंडि ; ( दे k, २४ )।
यरुगिण पुं [यरुकिन] १ देश-विरोप; २ पुंची, उस देश का
, निरमो । स्रो-°तिणिआ; ( इक )।
यह न [स्यल] १ भृति, जगद, सूखी जनीत ; ( कुना ;
हा ६८६ हो) । २ प्राप्त खेते यसव गुचे हुए मुँह को फॉक्
पुंदे हुए मुँद की खाली जगह; (वर v) 1 'इल्ल वि ['वत]
भाउ पुरत ; (गउड)। 'कुफ्कुडियंड न [ 'कुक्कु-
ट्यण्ड] ब्रच-प्रचेर के लिए खुड़ा हुमा मुख; ( वन ७ )।
चार इं[चार] जमीन में चतना; ( प्राचा ) । निलिणी
सी [ निस्ति ] जमीन में हाने वाला कनत का गाउ;
(इसा)। च वि [ ज ] जर्मान में उत्पन्न हाने वाला :
(परा १; पडम १२, ३७)। 'यर वि [ 'चर] १ जनीन
प पडने वाला ; २ जमीन पर चलने वाला पंचेन्द्रिय तिर्धव
प्रापी; (जीत ३; जी २०; भीर )। स्त्री—"री; (जीव ३)।
पञ्ज इं[दे] मंहन, नृपाहि-निर्मित एह; (दे k, २k)।
घनहिंगा रे स्त्री [दे ] मृतकस्मारक, शवको गाह कर टा
परादिया) पर किया जाना एक प्रकार का चर्तरा; (स
uff : afa ) !
येकी सी [स्यक्ती ] जत-सून्य मू-माग; (इमा ; पाम)।
'योडर पुं [ 'घोटक ] पगु-विरोत; ( वव ७ )।
पिल्लिया सी [देस्यालिका] धतिया, छेटा थाल, मोक्न
हरते दा बरतन ; (पडम २०, ९६६ ) ।
पव सक [स्तु] स्त्रतिकरना। वह-धर्वतः ( नाट)।
पद देखी थय=हड़द; (हे २, ४६ ; सुग ४४६ )।
यव पुं [दे ] पगु, जानवर ; (दे १, २४)।
थवर इं[स्थपति] वर्षकि, वर्द्ध ; ( दे २, २२ )।
पवर्ष वि [स्तविकत] स्तवक बाता, शुन्छ-पुक्तः, (दाया
ी। १; भीर)।
पवाल्ट वि [वे] जॉव कैता कर बैठा हुमा ; (वे ४,२६)।
यवत्रक वं [ दे ] योक, सनूह, जन्या; " सन्नव कुलवहुनुरः
यास्त्रमा स्थलकोस्टलचं" ( बज्बा ६६ )।
यवण देखी थयण ; ( भाव र )।
थ्यमिया स्त्री [स्थापनिका ] न्यास, बना रखी हुई बन्तु :
"क्न्ननेनुमानिनपश्चितमनहारक्टन्निनगर्व" (दुना २०४) । ,
```

```
पाम ) १
धविभा सी [दे] प्रमेनिका, नीया के मन्त में लगाया जाता
  होटा काष्ट-किरोप ; ( दे २, २१ )।
थविय वि [स्थापित ] न्यतः, निहितः ; ( भवि )।
थविय वि [स्तुत] जिनको स्तुनि की गई हो वह, रताधित :
  ( इस ३४३ )।
थवी [दे]देसो थवित्राः (दे २,२४)।
थस }वि[दे] विस्तीर्ध ; (दे १, २१)।
यसल)
यह पुं[दे] निजय, माध्रय, स्थान; (दे ४, २४)।
था देखों ठा। धार; (मनि )। मनि--धाहिर; (नि४२४)।
 वक्र-धंत ; (पउम १४, १३४ ; मवि)। संक्र-धाऊण ;
 ( Ex, 9E ) 1
धाइ वि [स्यायिन् ] रहने शता। "णो स्ती ["नी] वर्ष
 वर्ष पर प्रस्त करने वाली घोड़ी ; ( राज ) ।
थाण देखे ठाण ; ( हेर, १६ ; विने१८६६ ; टरपृ३३२)।
थाणय न [स्यानक ] मातवान, कियारी ; ( दे४,२७ )।
थाणय न दि । चौहो, पहरा ; "नवायवा अहरि ति निवि-
 हाई याखगाई", "तमो बहुवेलियाए ग्यापीए याखयनिविदा तुरि-
 क्तुरिवनागरा संत्रपुरिसा" (स १३०; १४६)। १ व्
 चीकीशर, चीकी करने वाला भाइमी; "पहायसमए य निम्नंत-
 रिएमुं बाबएमुंग ( म १३७ )।
थाणिङ्ज वि [ दे ] गौरविङ, सन्तानिङ ; ( दे ४, ४ )।
थाणोय वि [स्थानौय ]स्वानाक्नः ( स ६६० )।
थाणु वृं[ स्थाणु ] १ महादेव, शिव ; ( हे १, ७ ;वुमा ;
 पाम)। २ हम इस ; ( गा २३२; पाम ), "दपदब्दपाणु-
 बर्सिं" (इत्र १०२)। १ क्वीडा; ४ लम्मः
 (सब)।
थाणेसर न [स्थानेध्वर] सदुद के दिनारे पर का एक शहर;
 ( द्य ४१८ दी ; स १४८ )।
थाम वि [दे] विलाजं; (दे १, २६)।
धाम न [स्यामन् ] १ बड, बंचं, वराध्य ; (हर, २६०;
 य के १)। र दि वजनुस्य ; (निष्टु ११)। चिकि
 [ 'धन्] बदरान् ; ( दन ३ )।
धात न[देडाण] स्थान, बन्द ; ( हॉस ४२ ; स ४६ :
 भरे)। 'मेरादिरमून्तरे हिल्लुम्बदा २ पनरम्मि"
 (573, 304)1
```

थवय पुं [स्तयक] फूल मादि का गुच्छ ; (दे२, १०३ ;

बर -विविधियेत (विशः १, ०)।

न्त्रा व्यक्तिस्य । -- ५० . महार्थ करते हुम्मा करते । १ स्वरूपा _ह to the first the first to the द्राः विषद्] कार्यन्ताः 神 [南] 和 , 西一, 一 P 2, 32% \$5. 23 3 1 ्रियोग विरुद्धः केत्रकः द्वारं स्था দিহিম[খুডি] ১৮ ১৮ ১৮ भारतकार्ध्य भूषित (विशेषकार् रिक्त हराम , ("किया है। "किया " राजनी हिंग A Promotion to the side 🗜 विव्यवस्थात्राक्षात्रः , 🕬 🦮 । किंग[स्तुत] रिक्टर्स्ट र राह र सार्थित (李元明4:100 \$4, \$2.4) • हिर्ण [स्तुति] स्था, ग्राप्ट रिंग , इस , हेर १३ = \$ \$0, 503) 1 रिवेद्दर [सूत्रकृति । स्टब्स । व सह (ताल्या परन) इतिहास, क्यान हे साद किहारता । गुस्तह, , दाव ^{र स}े। रहि-शुक्तिकास , । इन ३४३ ०० इस्क र [भून्यत] एम, बर, मारर : हे ४, ४९)। 'स्किर १ [भूनकार] लिल्ला , । सर '। ं स्थार एक [धून्यास्य्] तिल्का कर । का " पृश्कारिस्त्रमाण ; (वि ४२३)। ' इकिम्म सि [दे] स्टब्स् डॉबर , (१४, १८)। प^{्रक्रिक} वि<mark>युन्द्रत्] युद्य हुमा, प्रदेश, ३८० हिस</mark> 356.71 की र हि सर्ही रुव का सर्ग, 'चंगीर केवा का देव होते (हार अन्य । अस्त)। - शहारेमार न [न्द्र] रोपनुसर बच्न ; (पम)। डिहिंगन [दे] १ मन-इतिर हरे वा संबद, योहा कि सिर्देश हैं। बार । १ मेंने, अपी (दें । 1. 25 94 खुरोर र [दे] चसर ; (दे ६, १८)। 'किस [मु] मुर्र हर, इत्वरंत सन्। इसः

२७ १ स्ट धोर्च ; (त्रिक्ट १४) । ह—युख, धारार । सीर, चैच ३१ ; स १६०) । धाम व । सरम्ब | कुन्सेक्रे, स्ट्रीत (कुन्न ४१)। धानको (स्थातु) स्तुति सने बता (इ.स.) । श्या प हि] इन मिलानी , (दे ४, २०)। थम = ' म्लोब | मृति, मृतिनाः, (मी)। मुख्यमान्य व [धुदुन्मानि] प्राप्ता हुम, रिएस्स, क्रावर्षातः स्वि।। यदकार ५ [युगुनहार] जिल्हर , (स्वी ५१)। ध्रापुरस्ताव व [है] सम्म, निर्मेग ; (है ई, १८)। युक्त ५ [हे] का हुई, बंह, बन-हुई, बर्ग-बह्न ; (दे E. 2=) 1 धुन्य है। [है] पीर्य है, यहर हुमा ; (है ४, ५०)। जुल्ल वि [स्थुल] सेंदा ; (हे २, ६६ ; प्रामा) । धुवन वि[स्वायक] स्तृति समे वेता; (है 1, ०१)। धुवन व [स्तवन]स्दृति,स्ता ; (३० ३४१)। धुष्य । देलं ध्याः धुः धंत } थु मा किया-सुबर मन्दर , "पू किन्ताओं होमी" (ई व, १०० : <u>इस्</u> है। धून ९ [दे] मथ, पोद्य , (दे ४, २६) । धूम देशो नेम≕र्जन ; (हे २, १४०)। धूना मी [स्थूना] कन, गुर्वे; (गर्; गराध)। थुपाम हं [स्युपाक] हन्तिहेश-दिशे, धन-स्थितः (मान)। थून हैं [स्नूप] यहा, दोटा, हह, स्तरि लग्न ; (विहे ६६८; हुत २०६, हुए १६४: माना २, १, १)। वृतिया)मं [स्तृतिका] १ टेंबल्हा ; (मेररहा ; धृतियामा) माँग)। १ वंडा रिक्त ; (स्ता१०)। धूरी मी [है] तन्द्रकार का एक बनसर ; (है।, १८)। धृद देखे धृत्यः (पमः पत्र १६, ११३ : दशः)। 'नह हैं [नद] एवं इरविद देन नहीं ; (है।, १११ ; 5 धृतयोप हैं [दे] दश, बार ; (दे १, २६)। युव) देले धून ; (दे ण, ४० ; इते १, ६=)। युद्द) (हे १, ३४१) । वर्न-इन्छ, दुरिन्डा; (हे ४, ३४३)। िं सुगंत ; (स्व)। इत्त-युक्तंत, युक्तमान ; । यूह ६ [दे] १ प्रत्यद के नियः ; (दे ४, ३) िक्षा 🖛 हुए (६६) सं २०६)। संह —धीडाप 📄 १ पत्रव पत्नी ; १ बर्लाव } (हे ६,३१ 🗟

```
थेभ वि[स्थेय] १ रहरे यंस्य , २ वो व्ह गज्जा हो ; ३
 पु. कैसला करने वाला, न्यायाधील ; (हे ४, २६७३) ।
धेग ९ [दे] कन्द-विशेष , (धा २० ; औ ६ )।
थेज्ज न [स्थैर्य] हियरताः (विते १४)।
थेउन देलां थेभ , (बन ३)।
थेण पु [स्तेन ] पार, तन्तर ; (हे १, १४७)।
धेणित्स्त्रिय वि[दे] १ इत, छीना हुमा ; १ मीन, इस
 हुमा; (दे १, ३२)।
थेरप देसो थिरप । देवाइ ; (गि २०७ , सन्नि ३४ )।
थेर वि [स्थविर ] १ दृढ, दृहा. (हे १, १६६; २, ८८;
 मग ६, ३३)। २ ५ क्षेत्र सानु, ( ब्रॉप १७ ; कप्प )।
 'कप्प g ['करुप] १ जैन सुनिमों का बाचार-विरोध, यक्क
 में रहने वाले जैन मुनिमी का मनुशन ; २ भाषार-विरोप का
 प्रतिपादक मन्य , ( ठा ३, ४ , ओप ६७० )। "काप्यिय
 इं["करिएक ] झाचार विशेष दा झाश्रव करने वाला, गच्छ
 में गहने बाला जैन मुनि; ( वन ७०)। "अृमि सो ['अृमि]
 स्यविर का पर : ( छ ३, ६ )। ीचलि ५ [ीचलि ]
 ९ जैन मुनियों का समृह , २ तम से जैन मुनि-नवा के परित्र
 का प्रतिरादक मन्ध-विशेष ; ( सदि ; कम्प ) ।
थेर पुं [ हे, स्थविर ]बज्ञा, निरामा ;( दे १, २६; पाम)।
थेरासण न [ दे ] पर्म, इमल, (दे १, ३६)।
धेरित्र न [स्देयं] स्थिता; ( हुमा )।
थेरिया ) सी [स्थविरा ] १ वृदा, वृद्धिया ; ( पान्र १
थेरी क्रीप २९ टी)। २ जैन साम्बी; (इस्प)।
धेरोसण न [दे] बस्दुज, दमन, पर्म, ( पर् )।
थैष प्र[दे] विन्तुः (दे ६, २६ ; प्राप्न, बङ्)।
थैय देखों थीय; (हे २, १२४; णझ, सुर १, १८१)।
 'कालिय दि [ 'कालिक ] बल बात तक रहने बाता ३
 (सुप्ता ३७६)।
धैयरिभ न [दे] जन्म-ममय में बजादा जाता बाय ; ( दं
 1, 38 )1
योज देखे थीय; (ह २, १२६; मा ४६; मउड; नहि ९)।
योभ पुं दि ] १ रवह, पंतो, २ मृतक, मृता, कट्द-तिरो ह,
 ( $ 1, 27) 1
योभस्य १ देखे, युण ।
थोऊण
         देखे घोष ; (दे १, १२६ ; जो १ )।
```

घोषा देनो धूषा ; (ह १, १२६)। थोत्त व [स्तोत्र] मुति, स्ता ; (हर, ४६; ग्रा थोर्स् देवा धुण। थोम) वुं स्त्रोम, को 'न', 'ने' माहि निर्मं ह थोमय प्रयोग: "उय-दिशाग ही य महारा हुनि" (बृह १ ; बिमे ६६६ टी)। धोर देनां थुम्ल ; (हे१, १६६ ; १, ६६ , एम से १०, ४२)। थोर वि [दे] ध्य से किल्तीर्थ प्रम व गोत, (दे। बन्बा १६)। थोल पुं [दे] बग्र का एक देत : (दे ४, ३०)। योव) नि[स्त्रोक] १ मन, पोगः (१५ थोयाग∫ टव;धारण;भोगर६६.;विनं रे∘ी २ पुसना का एक परिमाय ; (छ २, ६ ; मण) थोह न [दे] बत, पराकन ; (दे ६, ३०)। थोहर पुन्नी [रे] बन्त्यति-विरोप, मृहर बापेर, हेर्री। १०३)। सी—ेरी ; (टा१०३१ ≣ । मी १०; ध इम निरिपाइअसङ्महण्णवस्मि थयाराइन्एन चउव्योगहमा तरगं सम्तो। _--द ५ [दे] दन्त स्थानीय व्यप्त्रन-वर्ष विग्रे १ ; (१४) द्अच्छर पु [दे] बाम स्वामो, गौव 🕅 घरिटी। 4, 26) 1 दमरी सी [दे] सुरा, महिरा, दारू ; (देश, १४)। दह सी [द्वति] मणक, वर्म-निर्मित जल-पात्र ; (होर्स : दश्म वि [दे] रहित ; (दे ६, २६)। दश्य वि [दियत] १ प्रिय, प्रेम-पात, "आमो स्ट्रिन

दामा" (सर १, १८३)। र समीट, वान्ति, मार्

मचोदहर्व दंसवायति हुल्लाई मन्ने" (सर १, १६८)। वं. पति, स्वामी, मर्चा ; (बाम; बुमा)। धर्म वि [रू]

है में लगा दिया, के दु चरित्राणी (यामा रूप देव है। रामार' [स्थिता] सी, दिस, पर्य P 8, 592 J 1 द्याच्या ६ हिन्द्र विराम, समूर के १, १६० रक)। सुर दे दिन दिन दक । र होन्त ह [देख] रीवर, सर्वपार द्वाप क्षेत्र विद्या हिंदा अगान, क्षाण, प्रणवा, द्वांन्य वर्ण , (हे १, १६३ ; हुमा , मार्ग , पाल १२,६० १। "मार्ग र्देक्ति कार द्वांग्रं हिं हरण सहरण है (शुर प, १४) । ेरद, प्रमु ६ ['हा] कोति क्योर साम बा विद्वाय . (हे १, =1 : वह) । देशन देख=देव । ्दायय म [दैयत] देव, देवता, (पदार,१ , हे १, १४१, <u>₹</u>₹ } (• देशीम हि [दैविकः] देवनांकर्यः, दिन्यः , । सः 🖘 🤃 · दान्य देशं: हदय ; (हे ५, ५६३ , ३,६६ : दुना . 93F 5.8, Y) (ं देउदर [व [दक्तीदर] रोग-विकार, जलोरर, पत्री हे केंद्र का ं देनीदर 🌖 पूछना ; (हाया ९, १३ , विता ९, १)। देशीमास 🐧 [दकायभास] तरदनद्वर में स्दिर वैजंधर-नामगंत्र का एक भाराम-पर्वेत ; (इक)। रिंडा देखें हा**डा : (** बाद—मालवी ६६)। देंडि वि [देंच्यिन] बढ़े शेत बाला, हिंगर जन्तु. (बाद --वेदी २४) । देंड एक [द्रण्डय्] महा काना, निष्द काना। वन्ह-देविहानंतः (प्रत्य ६६)। देंड ई [दण्ट] १ व्यव-हिमा, प्राय-नाग , (स्म१ ; याया ं ी भ हार) । २ इतरामी को मतराम के मनुसार ग्रासीरिक , मा मार्थिक दगड, खजा, निमह, दमन, (टा ३,३; प्राप्त ६३; रे १, १२७) । ३ लाई, बरि : (दर ४३० दी : प्राप्त पर)। ४ ट्राय-जनक, पन्तिप-जनक; (माचा)। र मा, रचन भीर शरीर का भगुन व्यापार ; (उन १६ ; है ४६)। ६ टन्ट्-विरोप; (निर्म)। ७ एक दीन टरासक का नाम; (नेंबा (१)। ८ परिमाय-विशेष, १६२ मध्त का एक र्भः (स्र) । ६ माद्यः ; (स ६, ६) । १० पुंत् हैन्य, ^{ताहर} ; (पद्र १, ४ ; रा १, ३) । बिल पुँ [किल] न्दिशिय (तिंग)। 'जुल्म न [युद्ध] महिनुद, (माया) । "णायम व ['मायक] १ दण्ड-दाना, मनराय-

दिचार-इसी । १ ईनापति, हेनानी, प्रतिनियत केन्य का नायक,

(बा ९,४, भीर, समः; सकः १,१)। चिह्निसी िनीति] नीतिनिय, महुद्याल ; (ह ६)। पह हु िषय] मर्ग-विनेष, मीपा मार्ग ; (सुम १, १३)। पासि ३ (पार्रिवं न्, 'पारिन्] १ का का; २ को-तरत . (गत . था २१)। विद्यापाय न [मीञ्च-नक] राहास्य माह ; (जं ४)। भी वि भी] बार में दाने बाता, बार भीत ; (माना)। 'स्त्रेसिय हि [न्टान] टब्ट नेने बना : (यत १) । 'बार पुं[पिति] मननं . मना-पाँर (पुरा ३१३) । चासिस, "वासिय प [दाण्डपाशिक] कतान, (इप १४४; म १६४; स १०३१ टी) । चिरिय हुँ [चीर्य] गजा मल के वंग का एक गता, जिल्हों बादर्ग-पूर्व में केवलहान सपन हमा था: (स =)। 'राम ई ['रास] एक प्रकार का नाय, (क्ष्यू) । "इय वि ['।यन] इण्ड की दग्द समा: (क्ष्य: भीत)। "विद्य नि [वियनिक] पेर को इस्त की तरह लम्बर फेंटाने कटा, (मीर, क्य; य ६, १)। "(रक्षिया दुं ["ार-सिका दिस्य-पारी प्रतीहार ; (निवृ ६)। "रिपण न िंगरण्य] देवित मान्त का एक प्रतिद्व जंगत : (परम ४१, १: ७६, ४)। भसणिय वि[भितिक] दगः को नगढ पेर पैला इस बैधने वाला ; (कस) । देखी देखगा, हद्य । इंडम) १ (इण्डक) १ कर्य-उठात कार का एक स्रजा: दंडय ∫ (पटन १. १६)। २ दरहाकार बाक्य-पद्धति, धन्यांग-विरोपः (राज)। ३ मतनाति भारि चौतीत दरहरू, पर-विरोध : (वं ९) । ४ म दक्षिण मारत का एक प्रसिद्ध जंग्ड ; (पडन ३१, ३१) । "गिरि वुं ["गिरि] पर्वत-क्लिंग (पडम ४२, १४)। देखे दंड ; (त्र ८६१ : बुद्द १ ; सूम २, २ ; पटन ४०, १३)। दंडायण न [दण्डन] सवा स्राना, निमह स्राना ; (भा 18)1 इंडाविश वि [दण्डित] दिनको रुव दिलाय गया हो बह : (भोष ६६७ टी)। दंडि वि [दण्डिन्] १ रव्यनुष्ट । २ पुं. रव्यासी प्रतिहारः (दुना; 🕫 🤾) । 'दंडि देखो दंडी; (इम ४४)। र्देडिम नि [दण्डित] क्लिस समा दी गई हो वह ; (हुन XE3) [र्टेडिय वि [दण्डिक] १ दछ बला । २ वुं सका, दूर :

दृश्रुआण

```
र्द्ध [ "मञ्चक] स्कटिक रत्न का सन्तः; (जं१)।
"मंडच र्ड ["मण्डप]। १ मवज्य-विरोष, जिल्लमें पानी
टपकना हो ; (परह १, ६)। १ एड.टिक इत्न का बनाया
हुमा मगडप, (जं १)। "महिया, "मही सी ["मृत्तिका] १
पानी वाली मिही ; (बुद ४ : पडि ) । २ कला-विरोव :
( थ १ )। "रम्खस ३ ["राक्षस ] अत-मातुर के
के माकार का अंद्र-विरोप : (सम १, ७)। "दय इंत
'रजस् ] उरह-विन्दु, अल-हविद्या; ( हप्प)। 'वण्ण
र्ष [ "यणे ] ज्योतिक मह-विशेष: ( सुरम १० )।
'बारग, 'बारय पुं [ 'बारक'] पानी का छोटा वश ;
 (राव; वाबा १, २)। "सीम इं ["सीमकृ]
 बैर्लंबर नागराज का एक मानास-पर्नत : ( राज ) ।
दच्या देशो दा।
द्ष्य देवो दक्क=रूत् । मनि-रच्छं, दच्छिन, दच्छिहितिः
 ( प्राप्तः वत ११, ४४; मा =१६ )।
द्रष्ठा देशो द्रश्य=दत्तः; "रोगमगद्रव्धं बीगई" (उप
 ण्यूच दो ; पद्ध ४, २—पत्र ४१ ; हे २, १४ )·; ·
द्घ्य 🖪 [दे] शीरण, तेत्र; (दे ६, ३३)।
द्मानंत }े देशो दह≕ह्।
दरक्षमाण 🕽
दहु N [ दूर ] जिलको दाँत से काटा गया हो वह ; (वह ;
 मता)।
दह वि [इष्ट] देशा हुमा, विलेकित ; (राष्ट्र)।
दहुतिय नि [दार्शन्तिक ] क्षित्र पर कुणन्त दिया गया हो
 बह मर्थ : ( दर प्र १४३ )।
दर्ज्य } देशो दक्का≔्क ।
दर्दु वि [ द्रप्टू ] देखने बला, प्रेचक् ( विते १८६६)।
```

द्रगन [द्रक] ९ पानी, जल ; (सं १९ ; दं३४ ; क्रय)।

२ पु गइ विरोप, महाथिष्टायक देव-विरोप ; (टा २, ३)।

३ शवय-समुद्र में स्थित एक मात्राय-पर्वत ; (सम ६८)।

भिभा पं भिर्म निम्न बारतः (स ४, ४)। °त् ई ई

[°तुण्ड] पीत-विशेष ; (एवड १, १)। °धँखवन्न पुं

["पऽचवर्ण] ज्योतिहरू देव-विशेष, एक बद का नाम; (य

१, १)। "पासाय ९ "प्रासाद] शादिक रत्न का का

हुमा गहल, (त्र १)। "पिप्पली सी "पिप्पली] वन-

स्पति-विशेष , (वण्ड १)। "भास पुं ["भास] वेख-

न्यर नागराज का एक भाकाय -पर्वत, (सम ७३)। "संख्या

दर्द देखो दुक्स≔रुग्र । दर्दूण दर्द्रणं व्डवड वं [दे]। बाडी, म्बन्बन्द ; (दे ध्र १६:हे४ ४२१ : मनि) ! १ शीज, जतरी ; (चंड) ! दृष्टि सी [दे] शाय-विशेष ३ (मदि)। दङ्ग वि [दग्य] जना हुमा ; (हे १, ११४। मा)। दुइालि सी [दे] दर-मार्ग ; (वर्) । द्ड नि [इंड] ९ सप्तर्र, बतवान्, फेहा । (मीर; है: ६०)। १ किरचल, स्थिर, निष्कार ; (सुप १,४,1 था १८) । ३ सनर्व, क्षम ३ (सूम १, ६, १)। १ चति-निविड, प्रवाड; (राष)। १ क्येर, क्रीन, (^{(र} ४)। ६ किरि मतिग्रंथ, मत्यन्तः (पंच १:*) किंड इं [किंतु] ऐरहन क्षेत्र के एक मानो जिन्ही। बासः; (पर ७)। °मैमि देशे °नैसिः;(ए≀) 'धणु उं ['धनुप्] १ ऐरतर देन के एक मानी इरहा ! नाम ; (सम १६३)। १ मरत-वेत्र के एक नामी हरी का नाम ; (राज) १ °घरम ति [°घर्मर्] । धर्म में निरचत हो ; (नृह १)। १ देव विशेष हो। (बारम)। धिर्मिति (धृतिक]। शीहर बालाः (पडम १६, २१)। निमि इं [निमि]र समुद्रविषय का एक पुत्र, जिनने मगशन् नेप्रेनाव हे ह दीका ली थी और सिदायत पर्यन पर सुधि धर्म थी। १४): "परण्या दि ["प्रतिष्ठ] १ हियर-पनिष्ठ, हर-।" २ पुं. सुर्वाभ देव का धागामी जन्म में हाने क्या टी (सब)। "ध्यहारि 🗓 ["प्रहारिन्] ! वर्ग प्रहार करने वाला ; २ पुं. जैन मुनि-विरोप, जी सरे र का नायक था घाँर पाँड़े हे दोला लेकर मुक हुआ वा, (१,९८; सहा) । "मृत्रि स्रो ["मृत्रि] गाँव का नाम ; (कारम)। "मृह वि [भूर]है न्त मृत्री (दे १,४)। 'रह मृहित्य] १ ए म पुरुष का नाम ; (सम १६०)। १ मगरान थी गीन नायजी के लिया का नाम; (सम १११)। रही ["स्था] शोक्याल बादि देवों के मन महिष्मी देव वरिषर् । (स ३, १—वर १२०)। १३९ हिर्

मधवान् महावीर के समय में तीर्घकर्-नामक्त्र उराईन हरे

हाता पर हाहत (शाह क्या होते) र के रागा हैय g and tamp, dealers dien an tamp " (atte of to) i र्धिक वि[र्काण] राजिन हरू , (इस १) 📆 }ें वे [स्तुर] हैय,हारा, (हे ६, १६०, बारा, हेट्डी पर)। पेंड, चंद ५ (हेन्ट्र) १ डाम्यों के की ्रिं (राम , हे ५, ५) । व बार्सा, संश्वान्यां , (यस्य धा, १०)। विष्य हैं ['यनि] रेगर होते, (पान १,

1; "t, (+ , mm vi) i देश वि [देश] १ डियाहुमा, दाल विध्या हुमा, विडिये , . (हे ९,४६) । व स्याप, स्याधित , (अं १) व ३ पु सम्मन्तराहर भी द्वा (द्वाध्य, यह हो)। र झाल बर्च क एक आदी मुल्या दुग्य, (शम १४३) १४ ्र वेपूर्व बन्देर वे पूर्व जनम बन्ताम, (तम १४३)। इ मार्चपत्र में रापान ग्रं अर्थ-परवर्त राजा, ग्रं बार्याप : (ग्न (१)) । ध माननीय में अशीत वाननियां बाता में रणस्य एवं क्रिकेट्व ; (एवं क) । या एक वित सुनि , (भाव)। व द्यानियादा (निया १, ७)। १० एक जेन भवार्यः (द्वम ६)। ११ म् दान, रामार्गः, (सा१)। देख न [दाक्र] शोरी; यस काटने का हैनिया, (देश, 28)1

्दिति की [दिनि] एट बार में जिल्ला दान दिया जाय बह, म-दिन्त्रित हम में जिल्ली निष्टा दी जाम यह, (स मे, १; विका १=)। , देतिय पुर्मा [दिसिका] कार देशो ; " संगा दितरमा "

ा(का इ.) ।

ः देनिय पुं [द्विषा] बायु-पूर्ण चर्मः; (शत्र) । देतिया भी [दात्रिका] १ छोटी दौनी, पान काटने का गस-चिंदेर ; (राज) । ६ देने बाती स्वी, दान करने बाती स्वी; (सहर्)। रेत्यर वृ [दे] हल-माटह, बन्माटह; (हे १, ३४)।

देहत देशों द्या। देर वि [देददर] १ पना, प्रचुर, भायन्त, 'गोर्नोपनस्य-मिषंतार्गित्यांषंगुनिकरा " (सम १३०)। २ पुं पेन्स, हल-नंत का भाषत , (सम १३७ ; भीर ; याया | दुव्सियायण) का गान ; (इक ; सुरुव १०)। त्रं " (पाक १, १)। ४ वनतटाव , (पद १, ३— वर्म-दम्मद ; (टर)। वनह-दम्मंत ; (टव)।

पा रर)। ॥ तंत्रव्यक्षि, संग्ने ; (त्स १३०)। १ दाः सिंग , (जं २)। बद्धिया न्त्रं [है हुईंगिका] १ प्रान, मारा ; (यान ५ ६) । २ वयःसितः ; (गयः) ।

बद ५ [बद्र] या, एउ बालींग ; (मा ४,६)। इदर ३ [इस्र्रेर] १ मेर, मेरर ; (हुर १०, १८० ; प्रत् ४४ ।। २ फ्लंबे में मालद मुद्दियाता करना; (कह २, ४) । ३ देव-स्मिन ; (गाया १, १३) । ४ गतु, हारू-बिराय ; (मुरुष १६.) । ४ पर्वतन्त्रिरीय; (द्याना १, १६)। ६ बाय-विरोधः (हे ४, ६९; गउद)। ७ स. इर्रर देव द्या विद्याल ; (दाव १,११) । "यद्विसय म [ोयनंसक] टेब जिसन विरोध, सीरमी देवतीक का एक विमान : (याचा 1, 12) 1

दहुरी नवी [दद्रिरी] नवी-मेरह, मेही (काया १, १३)। इपि देनो इदि ; (गम ७३ ; रि ३७६)। इद देखी दृष्टः (गुर १, ११२; ति १११)। दप्प हुं [दुपें] १ महंबार, भनिमान, गर्भ; (प्रान् १३१)। २ बन, पगुरुम, और ; (से ४, ३)। ३ ध्रष्टा, निटर्स ; (सय १२, १)। ४ झर्राच से काम का आसेवनः (निवृ 1)1 दृष्यण वं [दर्वण] १ काव, शांगा, मार्स्यः (याना १,१;

प्रापः १६१)। २ वि. दर्ग-जनहः (पदः १,४)। द्रप्यणिङ्क वि [द्र्येणीय] बत-जनह, पुष्टि-हारक ; (पाया १, १ ; पञ्च १० ; भीर ; रूप)।

दिष्पि वि [दर्षिन्] मनिमानी, गर्विष्ट ; (रुण्)। दिप्पन्न वि [दिपिक] दर्ग-वन्ति ; (स्वर १३१)। दिप्पन्न वि [दिपित] मनियानी, गवित ; (हुर ७, २०० ;

फ्ट 1, Y) I दप्पिट्ट वि [दर्षिष्ठ] मन्यन्त महंबारी ; (हुना २२)। दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] घहंबार बला; (ह २,१६६; वर्)।

दम्म वं [दर्म] तृष-विशेष, हाम, हारा, बुना ; (ह १, २१०)। 'पुष्फ पुं ['पुष्प] साँव की एक जाति ; (पन्द १, १— पत्र =)। द्य्भायण) न [दार्भायन, दाम्यायन] चित्रा-नत्तत्र

ै, ८)। 3 बायात, इहार, " पायदराग्य कंप्यतंत्र मेहिय- | दम मक [दमय्] निवह करना । दमेर ; (स २८६)।

र्संक--दमिऊण ; (द्वय ३६३) । क--दमियञ्य, द्रम्म, दमेयञ्च ; (बात ; मानार, ४, २; उन) ।

दम इं [दम] १ दमन, नियहः १ इन्दिय-नियहः बल्य यति का निरोध : (पनः २, ४ ; चंदि)। "धोसः वं ["धोप] चेदि देश के एक राजा का नाम; (बाया १, १६)। देत वृ [दन्त] १ इस्तिगीरंड नगर के एड राजा का

माम ; (तप ६४८ टी)। १ एक जैन मुनि, (मिन २०६६)। धर इं[धर] एक जैन सुनि का नाम् ; (पउस १०, १६३)।

दमग देनो दमय; (याया १, १६ ; इता १८१ ; वह १ ;

दमण न [दमन] ६ निप्रह, दान्ति, २ वस में दरवा, दाबू

में करना ; "पॅरिडियरमचपरा" (बार४०)। ३ उन्हाप,

पीता; (परह १,३)। ४ फ्युमों को दी जाती विचा;

दमणक) पुन [दमनक] १ दौना, मुगन्धिन पन बाजी

दमय वि [देनमक] दिल, स्टूब, वर्गन ; (देश, ३४;

दमयती सी [दमयन्ती] एता नव ही फ्ली का नाम;

दामञ N [दमित] निग्रईतः, (बा ८२३, इप ४८)।

दमिल पुं [द्रविष्ठ] १ एक मारतीय देश 🕫 ९ पुत्रों, स्वकं

निवाणी मनुत्ता, (इप १०२; इक; मीर)। सी-सी;

दम्भ वं [दम्म] साने का सिक्झ, सोना-मोहर, (दव पृ १८०;

द्य सङ [द्य] १ रक्षय बस्ता । १ इना करना । १ कहना ।

४ देता। दबरः (काकः)। वकः—दक्षीत, दशसाया।

बनस्पति-विरोध : (काह २, १ ; वश्च १ ;

गउड)। १ छन्द-विशेष , (पिंग)। ३

दुम्ग वि [दमक] इसन दरने वाला; (निदृ ६)।

निवृ १६ : बुद् १ ; उद) :

(पडम १०३, ७१)।

गन्ध-द्रव्य-निरोव , (राज)।

दमरमामद । (ह १, १३८) ।

(याया १, १ (१६) और)।

दमयाय । दिला दम=रमय्।

£ 4, 465)1"

दम्म न देवा दम=रमय् ।

(Als! 23 fa! f() !

द्मदमा मङ [द्मद्माय्] बाउम्बर करना ।

दमि । [दीमेन्] जितिन्त्यः (अत्तरर)।

पाँगः सम (८)।

द्या सी [द्या] बस्ता, प्रतुक्ता, इर, (श ६ 🎙

द्य न [देदक] जा, रनो ; (दे १, १) हा। "सीम वुं ["सीमन्] सत्रव गुरू में हिंदा एक म्प दय न [दे] संग्र, भक्तोत, दिउनीते ; (दे १, ११)। द्य देश्यं व्य≔राः (सं १, ४१ ; ११, ६६)। दिय वि [दिय] देने बला: (क्य ; धर)।

चर हि [पर] दशनु ; (वजनेश्, ४० ; हाशुर्धा

द्यालु नि [द्यालु] दवा वाजा, बहुव (है 1,1%)

द्यायण } वि [है] दील, गरीव, रंडा (है है।।।।

१८० ; पडम १६, ३१ ; गुरा ३४० ; भा १()।

द्यारम नि [दे] स्ता ; (दे ६, ११)।

द्यायम्त र्रं भति : पर्जम ३३, मा रे ।

दर्श्देर इं [दे] बल्डाम ; (हेर, १४)।

दरपलिभ वि [दे] तर् उभा ; (इमा)।

मन्य: (हे १, १११)।

គ្គ៖) រ

(दे १. ११)।

दर सक [ङ्व] बाहर करना । दरदः (वर्)।

दर्शि [दर] मर, बर, (हमा)। १ म (ए।

दर न [दे] मर्ड, आधाः (६१,३३, मी। है १.॥

द्रसत्ता सी [दे] बहात्वार, अवस्ता। (दे धा १०)

इरमल सह [मर्न्य | १ वर्ष करता, विशाला। '१ हैं। काना । दरमतर: (मनि)। यह - दरमलंगः (गी द्रमलिय वि [मर्दित] माइन, नर्थिन ; (भी)।

दरघटल वं [दे] प्राय-स्वानी, गौर का मुखिया। (है), ११)

"चिह्न्द्रण न[दे] गुन्व वह, माली बर, (देश, १७)। व व

वं दि । दक्ति, तिय, (वे १, १५)। र इत्र, मरा

(वर्)। विदर वि [वे] । को, वासा । लि

वरि° देखे दरी। "अर १ ["चर] हिन्द (वे ६ भ)

वृरिम 🖟 [हुस] वर्षित, प्रभिनानी ; (है 1, १४४ ; १३) द्श्मि [दीण] १ दस हुमा, मोत ; (डमा हुम

६४६) । र फाड़ा हुमा, निदारित : (मंत प)।

द्वित (क्य) व [द्वित] छन्द वितेष ; (विर्ग)।

गरीन ; (चाम ; शस २३ , दण्) !

वरिमा सी [दरिका] इन्दरा, गुरा, (बार-विकटा)

वृध्दि 🖩 [वृद्धि] । निधंत, तिःख, धन-दि।; । (प

[इस−स्त्रे

(वे १६, (४ : ३, ११ ; प्रति ११)।

पाइयमद्वमद्वणको ।

रिपेर् } वि [दतिदित्, कि] कर देता ' करे देनिदेश) दरिदेशे, बर्स दिस्तरमेरेते रस्ता या दूर्व केमा" (सा;स्य;ति १६०)। र्रेजिंदर वि [दरिद्धित] हुन्दिरा, जो जन-जेत हुम हो : (स्कार्क १६४)। रिविद्यिति [दिविद्योगन] जो नियंन हमा हो . (हा 3, 5 31 इति सह [हर्षेषु] विगतन, बरतन । दरेख, दरिया, (दे ४, ३६ ; इस ; मरा)। वह -दरिसंग : (हर भि)। ह—इरिस्तिवड्ड, इत्वियंच ,ं भेर , व \$\$\$ \$\$\$ \$*, E } 1 रित्यम देशो इसाम=दर्ग ; (है २,९०४ । पुर न [पुर] नार-विदेश: (इक्) ('आयरणी स्त्री ['खरणी] विष-धिर : (राम १६, ४०)। रिनिवित्व) देखे दरिम । २ न् नेद बार ५ 'गरिका रैरिनमोर 🕽 इस्तिरोहर्सनो रहनो दुउ'' (स. १०,६) । रैतेनाय देशे दरिस । रह—दरिसावंत, (डा ६ १≔ं। ^{हुरिलाद} हैं [हर्शन] हर्गन, शहान्धर, "एलोब नहमा स्थ-मानेद दरिहार राज्य परिनियदा" (सह.) , "स्वेददा र्वे व्यक्तिहरित्तवं प्रचेति महिच्छेत्व "(प्रन १९४० रिवायम र [दर्शन] १ दर्शन, सामाज्याय (मन १)। रेति, झाँड, दिखलाने बला ; (सर्व)। दिविति दिक्षित्। देखते बाडा; (झा; वि १३४; स २२४)। हिन्सिम ति [द्रिमित] दिवतपाहुमा ; (इस : स)। रेंगें के [स्वे] इस, स्टल; (दम ६ ६ हे ६ प्राह्महर्यः ।। राज्यक्षिति है] म. हिंदर ; (हे ६,३०)। हेंट स [दा] हेट, इन करा, प्रांट करा । हरा; (बन, मा)। "बंदल गोर्ल का दानी" (बारा। 🖏 क-इन्मान, इहेमान; (६न, यम १, १६) — ^{हेर} रेण्य ; इ.४, २--स २१६)। इंह--दविद्या ; (==) हिमं[दर्]। किला १ स्टन, गरेत हैंन, रिक्ता। "प्रतिप्राधिग्राधिग्रांग्युविष् ददा प्रतः क्री" (रा ४६६) , "हार्य दश्र" (इस)। वह---देवेत ; (वे ६, ६०) । देन हा (दस्य) कुर्व करा, इसो १ करा, विराना। ि"टिन्हें इन्सामी सरकर्तृत्विक्टी (ज

वर । बाह-इतिहासत ; (मे ६, ६२)। दन्तिका . (इस) । इच न [द है] १ बेन्य, तरहरः, (कुना)। २ पन, पतीः "तुर-बन्दहर महिन मति महा निरायक्तद्रहा" (हैस 21: m 4; 1m+; 12+; 341; 411; 411; हुत १३=) । १ घर, सम्बद्धिः ४ स्ट्रुट, स्ट्रुट्स्य ; (द्वत ६३=); १ खाउ, मान, भेंग्र ; (में ६. ६१) द्चम न [द्चन] १ योला, दुर्बन ; (दुरावण ; ६१६)। १ में, दुर्व करने दाडा; (हरा१३४; ४६७, इप्र १३२;३०३)। द्यमाण देनो द्ल≔श दलनाम देखे दुद≕दुद्र । इलमच देख इरमछ। वह---इलमछंत ; (स्व)। दच्य देखे दर≕स । दत्यकः (भीत)। सीन—इत्तर-लति ;(भीत)। क्ल-दनग्रमण ; (कार्याः, १--पर १० ; हा १, १--पत्र १९०) । वंह -द्वर्ता , (1) 1 इच्य सह[द्रापय्] दिलला । दलक्षः (इस) । दुरुबहुदेशः दुष्मरु । इद्वरहरू; (स्वि)। दलबहिप देशो दलमलिय ; (वर्षि)। द्काब वह [दापर्] दिवला । दवावेह ; (नि १६२)। दह – इलावेमाच ; (ट ४, १) । इन्डिम ति [दन्तित] १ तिबन्दः (हे १२, १)। २ पीडा हुमा ; (ए.म.) । "दश्चिमत स्वर्वितं हृतपारानि महात्र रहेंद्र" (मा ६६९) । ३ निरतिय स्वित्तः (देश,१६६ : हुर ४, १६२)। इटिम व (इटिक) भीड, सन्द्र, क्या: (मीर १६), 'ब्हु' बंग्यमिति इतिह सम्प्रीम न धीरा परिस्ते'' (दिने 4638) 1 दन्तिय वि दि] १ निह्येशक, विशेष देश नवर की ही बद्दः २ मृहंबद्दीः (दे ६, ६९)। ३ कप्त, तद्दीः (इ.६, १२,६४) दस्तिवंत देशे द्रस≔्टर । दन्दिइ देने: दुद्धिः; (३ १, १६४ ; स.२६०)। दिन्द्रा मह [दर्षिता] दुर्वदेन्द, र्द्य हेन । रहिता : (१ ५, १६४)। सूच-स्टिएरीमं; (इंदि ११)। दलिल वि [दलात्] दलपुल, स्व बरा ; (हप)। टलेमाय देखें दल≔र ।

1(10

(विषे ३८)।

२ वन, जंगल । "रिय पु विशि] अंगल का कति, (हे १, १५७ : प्राप्त) । इस १ दियी १ परिहान : (दे ४,३१)। ९ प्रजी, जल : (पंचत १)। ३ पनीली बन्द्रा, रमीली चींत्र : (विषे १०००)। ४ देग : "दशददवारी" (सम३७)। k संवम, विरिने : (बाचा) । कर वि कर] परिहाम-हारह : (भग ६, ३३)। °कारी, 'गारी सी ['कारी] एक प्रकार की दानी, जिल्हा काम परिहान-जनह बार्ने कर औ बहुलाना होता है ; (भग ११, ११ ; बाग्यो१, १ टी---पत्र ४३)। द्वण म [द्यन] यान, बाहन ; (सुम १, ५)। द्यणय देखे दमणय ; (भनि) । द्यद्यां सी [द्रयद्रया] केन काली ननि ; "नाउल्ड वर्ग सुहियं नयरज्ञयो घाविमा दरस्ताए" (पडम क, १७३) 1° इयर प्र[द] १ तन्तु, शंरा, धागा ; (देश्, ३१ ; भावम)। ३ रज्जु, रस्मी ; (कावा १, ८)। द्वपरिया सी [दे] छोटी रस्ती ; (बिते) । ें इयदुत्त न [दे] प्रीत्म-मुल, शीत्म शाल का प्रारम्भ ; (दे 631)1 इवाय सद [दापयु] दिलामा । दनावेंद्र हें (सहा)। वह-द्वायिमाण : (वायात, १४) 1 वह-देशेथिअण: (महा)। हेक्-द्यायेतपः (का)। "

द्यायण न [दापन] दिलाना; (निवू २)।

स १६६ : महा : उर प्र ३८६ : ७२८ टो ।।

(सम १, ८)। "लुओन ५ जिन्योग । क्सर्व-

विचार, वस्तु को मीमोना ; (ठा १०) । दखे दुख्य । द्वित्र नि [द्विक] संका कला, संयम्शुक्त ; (बापा) ।

द्विश्र वि [द्विति] इत्युक्त, क्लीली क्लु (ब्रोस)।

ŧ)ı १-- पत्र ३४) । दब्यि देखे दब्बी ; (वर्)। दिव्यदिश व [इस्पेन्द्रिय] स्वृत इन्द्रिय ; (अप)। दृश्यो श्रो [द्यों] १ वर्डी, चनवी, देई ३ (वाम)। सीप की कन ; (देश, १०)। भर, कर दिल सींप, सर्व ; (दे ६, ३७ ; यस्य १)। वृद्ध्यों को [दे] बनप्यति विशेष : (पर्व्य १--पर्व १४ द्यायित्र मि [दापित] दिलाया हुमा ; (-लुच १३० ; दस हि.स. [दशत] इस, नत और एक ; (हे % १११) रे, १—पत्र ११६ ; सुग्र २६०) । 'तर व ['तुर्] ^ह द्वित्र पुन [द्रुष्य] ९ मन्त्रयी बन्तु, जीव' मादि मौतिक विशेष ; (विम २३०२) ३. "क्टंड डें["कण्ड] स पदार्थ, मृत बन्तु । (सम्म ६ ; विशे २०३१) । २ कन्तु, एक लंका-की, (वे १४, ११)। क्रांसर इंकिंग गुपान्तर पहार्थ , (भाषक , भाषत : भाग्य) । १ हि सहस्र, राजा रावच ; (गउड)। "कालिय न ['कालिक] मुक्ति के गोग्य ; (सूझ ९, २,९)। ४ अध्य, सुन्दर, जैन मायमधन्य ः (दमनि १)। "स न [क] ह गुद्र ; (मुझ १, १६) । ६, राम-द्रोप से निरहित, बीलाम :

को ही प्रधान मानने नाला पत्त. नय-निग्रेप; "राष्ट्री नव्यं स्वा प्रजुपननमंत्रियाः" (सम्म ११ ; विते ११० 'लिंग न ['लिहू] बाह्य देव, (पंचा ४)। हि [किहिन्] मेने बारी साप्त; (प 1º 'लेस्सा को ['लेश्या] सरीर आदि पेहरिक **र** का रग, ब्लं, (मप)। 'धेप दे ['बेर] दुस मी बाच बास्तर; (राज); "प्यरिय इं ['ग्रक्त ब-प्रशान भाषार्थ, माषार्थ के गुवाँ से एरिए माषार, (⁽ द्भ्यहलिया सो [द्रव्यहलिका] क्ल्पी-विगेर (!

द्विल वु [द्विष्ट] १ देश स्थित, इतिय देश स्थित, र

पुंची हवित्र देश का निकामी मनुत्य ; (एक् १, १०० "

द्य्य देशो द्यिभ=इमा; (सम्म ९९;सा; सिरे ९

मगु; उल ३८)। ६ धन, वैना, संपनि; (पंपा;

१२९) ३ ७ भूत वा मरियन क्लार्य का कारण ; (लि १

पंचा १)। ८ गीय, म-प्रधान । इ. बाह्य, मन्द्रम, (प

४;६)। 'ड्रिय इं['पिक, 'स्थित, 'स्वित, 'स्वित

समूह; (इं ३= ; वद १२)। 'गुण दि ['गुण |

कुना; (य १०)। मुणिश वि [भुणित] र^{व तृत}

(भव ; धा ९०)। 'ब्गीब पुं ['प्रीब] राय्पः (' ^७रु ८) । "दममिया सी ['द्रामिका]^{हेन हर्}

कि प्रतिष्ट महात. प्रीमानिकेष: (मा १००)। 'दिस्तिय दि [दियमिक] दर्ग जिला / एस १, िता १०)। दि हुं [किं] रहे, १, व्या १०, . भाग । भाषा हु भागूम् हिल्ला हैन के एड गरी इत्या प्राप्त ; (गम १४३)। धरमिय वि [मेरेगिष] दश करवा बाला : (हा १०) । पुर देशी ैंदर : (मर्रः)। 'युल्यि रि ('पृथ्विन ' स्व पूर्व कर्यो र भन्यामा ; (भीष १)। 'बरा वं ['बरा] सन्यान् कें।(एम;११,१११)। मिति[मि] १ व्यर्गेः ह (गर)। ३ चर दिनों का एकारण उपना : (मार्च ; र रेग ५ १ : सुर ४, ४४)। भन्नानिय वि भिन-क्तिक] पर दिनों बा एकात्रार उरसम बाने शहा : (एस , ५१)। भागिय दि [आयिक] दल मने क कैंड रिंड, इत माने का परिमाण काता : (कान्)। भी सी [मी]१ सप्ताः १ विध-सिप्तः (स्म १६)। , 'डेरियापांतम न ['सुद्रिकानन्तक] राथ के वर्णतमाँ ू भें स भंदियों , (भीर)। 'सुद इं ['सुरा] गवण, ^{असम्पर्}तिः (हे १, २६१ : प्राप्तः हेस्य १३४)। ्रे सुरसुम ई [मुखासुन] राग्य वा ५न, मेन्नार मारि ; (वे १२,६०)। यहेनी भा; (छ १०)। रेखन , [रेपव] दस राउ ; (दिसा ९, ३)। रेप्ट इं[रेप्य] ै निकासी के जिला का शाम ; (सम १६९ ; पटम १५ १म१)। १ प्रतीत रासपियी-काल में उत्पन्न एक ्राष्ट्र पुरस् (स. ६—एव ४४०)। "रहसुय प्र ्रियमुत्रो गत्रा इराध का पुत-राम, टनमध, मत्र मीर राज्यः (परम १६, ८०)। धिमण पुंचित्रनी िएक रावपः (से 10, १)। "बल देखी बल : (प्राप्त)। निह नि ['विध] द्व प्रकार का (इसा)। वैज्ञालिय विकालिक] जैन आमान्यन्य किंग्य, : (वसनि १ : ं, पीरे)। द्वाम [धा] स्व प्रधार्थः ; (बी२४)। ं जिल हैं जिन] सहस्थ मनद ; (से ३,६३)। ीहिया मां [पहिका] पुत्र-जन्म के टरटन्य में किया रिकास लिंग स एक टन्स ; (क्य)। इसण इं [इरान] १ होत, इन्त ; (मग: इना)। १ र टेंग, करना; (पर ३०)। 'कराय में [करद] होत. भरा : (पर १२, ११४)। १ देसच्या पुं [दशार्था] देश-विरोपः (हर २११ ही : क्या)।

हैंड न [क्ट] गियर-विगयः (भावन)। पुरन

[पुर] नार-सिंगः (छ १०)। भिद्र हैं [भिद्र] दगरोंतुर का एक दिल्लात सका, की भद्रितीय भाउनदर से मग-वान, महाबीर की बनान करने गया था और जितने मगरान महार्थि के पन दीवा ती थी; (पि) । घा पुं चिति] दमार्थं देश का गजा ; (हुमा) 1 इसनीय न [है] यान्य-स्मिर ; (एन्य १--पर १४) । दमन्त देशी दसण्य ; (मन ६० डी) । इमा मी [इसा] १ न्यिति, मनन्या ; (गाररण ; रव्यः प्रामु १९०)। १ सी दर्श के प्राची की दल १ दर्श की सदन्या : (दननिष्)। ३ वृत्रा मा कर का छोटा भीर पतना धागाः (मोपश्स) । ४ व, जैन मागम-प्रनय विग्रेप ; (मणु) । दसार पुं [दशाई] १ च्युवित्रप मादि दग गादव : (सम १९६ ; हे १, म्ह ; भेर १ ; याया १, ४--पत्र ६६)। १ बसुरेब, थीहरूय : (याथा १, १६)। ३ बस्टरेब : (कावन)। ४ राष्ट्रदेव की संत्रति ; (राज)। "णीउ पुं ['नेद्] थीरूय ;े (दर)। 'नाह पुं ['नाय] थीहन्दः (प्रम्)। "बर् पुं ["पति] श्रीहन्दः (রল:)। दसिया देगो दसा; (हुन (४१)। दस प्रं दि विशेष, दिलगोरी ; (दे ४, ३४)। दसुचरसय न [दशीचरशत] १ एक ही दग् । एड सी रहवाँ, ११० वाँ ; (पत्रन १९०, ४१)। दसेर 9ं [दे] स्व-धनक; (६ ४, १३)। दस्स देखे दंस≔दर्गंय् । इ---दस्सणीयः ; (स्तंर६४)। दस्सण देखे देसण : (मै २१)। दस्सु इं [दस्यू] चेत, दस्कर ; (धा १७)। दह सक [दहु] जलना, मत्म बरना । दहहू ; (महा)। कां-दिन्दः (हेर, २१६), दानदः (माना)। वह-दहंतः (धारः)। स्तह-दर्भंत, दरम्याणः (गाट-मालवी रेक् वि २२२)। दह पुं [द्रह] दूद, बड़ा अलागय, मंत्रेल, सरीतर ; (मंग ; दरा ; यादा १, ४--पत्र ६६ ; मुत्त १३०)। 'फुल्लिया क्षी [फुल्लिका] रच्लो विग्रेप; (फरा १)। "वर्ष् ीवर्षे सी ["वर्ता] नरी-विष्टेय; (द्वा २, ३—यत =० ; ਬੰਖ)। दह देखी दस ; (ह १, २६२ ; दें १२ ; वि २६३ ; पान ण्ड, रहे ; से १३, ६४ ; प्रत्य ; से १४, १६ ; ३, ११ ; १०, ४ ; पत्रम ८, ४४ ; प्राप्त)।

ವಿರಾಜಿಯ ಸರ್ವಾಣ ಚಾಲು ಸ

दयमद्भि १ गति करनाः २ छोड्ना। दर्ग : (विमे १८)। दय पं दियो। अंगत का मानि, वन का बानि : (दे ६, ३३)। २ दन, जंगना "स्मि पुं["क्रि] जंगल का मधि, (हे ৭, ৭৩০; রয়ে)। ह्य ५ (इ.स.) १ परिहास ; (दे ५,३३) । ९ पानी, बर , (पंचा ६)। ३ फ्लीमी मन्द्र, रमोली चीर्ज : (किने १३०७)। ४ वेग , "इक्द्रवनारी" (समरूप)। १ मंत्रन, रिरोते (प्राचा) । "कर वि ["कर] परिहास-बारक (मगध, ३३)। "कारी, "गारी सी ["कारी] एक प्रकार की नागी, जिल्हा काम परिवाय-अनक नाने कर जी बर्मान्स होता है; (मन ११, १९; वाया), ९ टी---99 78)1 द्याय न [दयन] यान, नाहन ; (सम ५, ५) । क्षणय हेश्रो दमगप ; (मति) । द्यर्चा बी [इयद्रया] बेग वाली गनि ; "नाउला नर्व मृदिवं अवस्थाची भाविमा दवदवाए" (पात्रम म. १७३) । : स्थर पु [दे] १ तन्तु, शंगा, चागा , (देश, ३१ ; बादम)। २ राष्ट्र, समी : (बाया १, ८)। द्वरिया बी [दे] होटी रन्मी ; (सिमे)। ्रे र **रवरूण व [वे]** प्रीत्म-तुन्त, ग्रीत्म बाल का शासमा ; (वे 6.31.)1 दशाय क्य. [दारपू] दिलना । दत्तवेंद्रे (महा) । क्ट--द्वायेमाण ; (वारा १, १४) । निष्ठ--दंबायेऊण, (ब्हा)। १५-- द्वापेनप, (ब्हा)। ' द्वाचण न [दायन] दिलागा; (निष् १)।

र्याच व [र्याप] शन्तुमा, कॉर्गः, कृतु (संच) ।

दवादिम मि [दापित] दिलावा हुम: ; (मुत्त ५३० ; व १६६, महा ; ३१ ४ १८६ , ७१८ ही)। र्वित्र पुन [दूष्य] १ मन्द्रयो कन्, और मादि सैनिक कार्य, मृत कन्तु । (समा ६ ; जिन २०३१) । २ कन्तु, नुराया परार्थ, (माप्त, भाषा ; क्या) । ३ वि अध्य, मुन्ति व बस्थ ; (सुव 1, १,१)। ४ अस्य, सुन्दर, नुद्र ; (मृष्ट १, ६६) १ ४ राम-द्रेष के निर्देश, बीलाना ; (वृष १, ८) । "सूम्योग १ [अनुयोग] वहार्व-विचर, क्यू संबंधना (व १०)। त्रवं त्रवा। रविश्व वि[द्रविष्य] संस्थान्यनः, स्वयन्त्रमः ; (सन्ता) ।

द्विण न [द्विण] धन, पेसा, संपत्ति ; (पम ; हर) द्विल पुं [द्विष्ट] १ देश-विरोप, दविष देश-विरो, १ पुंची, इतिक देश का निवासी मनुत्य ; (एक १,१-स 94)1 दरुष देखो द्विश≔ऱ्यः (सम्म १३ ; मगः; विः १०, मण्डः उत्त रू⊏)। ६ यन, पैसा, संग्रीतः (प्रष्टाः वि १२१)। ७ भूत या मनिय्य पदार्थ का कारव : (सि १५ पंचा ६) । य गीय, च-प्रचात : ६. बाग्र, सतव्य, (रंध ४३६)। "हिय इं ["धिंक, "स्थित, "स्वित, "स्वित को ही प्रधान मानने वाला पत्त, नय-विरोप, " रह्याँ स सर्व्य सया प्राणुप्पन्नमविवार्'" (सम्म १९ ; 🖬 ४१) °िलंहा व [°िल्हा] बाय बेर, (पंचा ४)। सिंब [किट्ठिन्] मेथे पारी साइ : (5 10)! 'लेस्मा को ['लेखा] तरीर मारि पेर्डिस्म कारव, तर, (अय)। "येय वृ["येर] प्राप्तानीह बाध बाह्यर ; (राज) । "प्यरिय ई ["लारी ध-प्रधान ज्ञाचार्य, ज्ञाचार्य के गुर्चों हे रहित ज्ञाचार, (^{(र} 1 1 द्व्यहलिया बी [द्वव्यहलिका] क्ल्यति विहेत् (स 9-44 38) 1 दथ्यि देखे दृश्यी ; (वर्)। वृध्यिदिम व [इस्पेन्द्रिय] स्वत इत्रियः (वर्ग)। द्रश्यों सो [द्यों] १ वर्डी, चमची, देई १ (वाम)।

दविड देखे दविल : (सुरा ६८०)।

द्विष्टो सी [दाघिडी] लिगि-विरोप : (विरे ४६४ दी)

नींग की कन ; (द १, ३०)। 'सर, 'कार ह ['बर] गींप, मर्व ; (दे ६, ३० ; बस्य १)। : दृथ्यों को [दे] बनव्यति वितेषः (पाप १-ना १) बार वि.व. [दसन्] रण, तर और एक ; (हे % शहर) रे, १-वन ११६ ; सत १(४) । 'उरन [प्रा]# निराप ; (तिम १३०३)। "बाँड ड ['बाग्ड] ग्रह ण्ड शंबर-वरि, (मे १६, ६९)। 'कंपर रे किंग राजा राख्य ; (यद्वर)। "कालिय व ["बालिब]व प्रैत क्रमण सन्त । (रणीत १)। भाव [क]।र्स लमूद ; (र ३= ३ वर ११)। गुजाव [गुन | ह

इत ; (य १०)। 'गुनिम हि ['गुनिह] रहें

(ला; था १०)। माति पुं[मीत] स्लाः(व

"% =)। "दममिया की ['द्रामिया] अ नी

न हैं [दशार्थ] देश-विशेष, (टर १९९ डी: इस)।

इ न [क्ट] गिला-विग्रेयः (मावन) [

[भुग] न्यानीय र (स १०)। भइ ई [भद्र] दरायंत्र का एक विल्यान सजा, यो भदिनीय भाइन्यर से संग-वात् महवार को बनाव काने गया था और जिसने मरावात्। महार्थन के पान दीजा की थी; (पीट)। घर वं [पिति] दमार्ग देग का गडा ; (कुमा) । इमनीय ह [दे] बल्य-स्टिंद ; (फ्ला १—पत ३४) । दमन हेग्री दसण्य ; (मन (० ही) ; इसा मी [दशा] १ न्वित, मान्या ; (गारशण ; १००४) प्रानु११०)। १ मी वर्ष के प्राची की दन १ वर्ष की मस्त्या : (इन्नि१) । ३ द्वा या वन का छोटा और पतला घागाः (मोप ११) । ह व् जैन मानस-प्रत्य तिरोद ; (मार्)। इसार पुं [इशार्द] १ स्प्रानिवय मारि इस बाहत ; (सन १९६ ; हे १, ८४ ; भंत १ ; याया १, ४--या ६६)। २ बाउरेव, थीहरूय ; (याया १, १६)। ३ बाउरेव ; (मान्स)। ४ रचुरेंद की संतिति ; (राज)। भीउ इं[निद्] थोहन्य ; (टर)। "नाद इं[नाय] थाहान्य: (पाम)। "बह पुं ["पति] थीहान्य: (इनः)। दसिया दंशे दसा; (शुन ६४१)। दस ९ [दे] गोह, विज्ञात ; (दे ६, ३४)। दस्तरसय न [दशीतरशत] १ एक ही दग। १ वि एक सी दस्त्री, ११० वीं ; (पड़न १९०, ४१)। दसेर इं[दे]स्त-स्तह; (दे ६, २३)। दस्स देखी देम=दर्गय । ह—दस्सणीय ; (स्वंह६)। दस्सण देखे देसण ; (मै ११)। दस्स इं [दस्यू] चेत, टस्बर ; (धा १७)। वृद्द सङ [दहु] बडना, मस्य करना । दहर ; (महा)। कर्न-इदिवारः (हे४, २६६), दम्काः (माना)। बह--दहतः (धार=)। स्वह--दल्यंत, दल्यमाणः (गट-मटडी ३०; नि २३३)। दह पुं [इह] दूद, बड़ा बजारम, मरेज, सरोतर ; (मंग ; त्वा ; याया १, ४---थत ६६ ; सुत्त १३७)। 'फुल्लिया की ['फ़ल्टिका] बन्ती विगेष; (परा १)। 'याँ, ीवर्ष सी [विती] नदी-विटेप; (ठा.२, ३--पर =+ ; ₹x}[-. दह देखी दम ; (हे १, २६ ्र⁴ २६२े ; पटन ण्ड, २६ ; में १३, EV १०, ४ ; परम ८, १

بالرسال المصافيته

```
३१)। "वासुवा सी [ "वासुका ] कल्लिकिके ;
 (जीव १)। "याहण ९ ["याहन ] इन्निवेशः
 (महा)। 'सर पु [ 'सर ] साच-तत्र्य-विरोप ; ( दे ३,
 RE; 4, 74)
द्राहिउप्पत न [दे] नवनीन, मक्कन ; ( दे ६, ३ k ) ।
दिहि इं [ दे ] यूत्त-विरोप, कविश्व , ( दे ६, ३६ )।
इहिण देतो दाहिण । (शाद-वेशी ६७)।
वहित्यर ) में दि दिभन्द, साय-विरोप, ( दे हैं, ३६ Å।
वहिल्यार र्
दहिमुद्द पु [दे] कपि, वानर : (दे ६, ४४)।
दहिय पं [ दे ] पन्नि विरोधः "जं सावयति किरिद्रहिवमीरं मान
 रिति महोस वि के वि धोर" ( कुप ४२४ )।
दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ : ( मदि : हे
  र, र॰६; माचा; महा ; क्य ) । भवि —्राहं, शहाबि,
  वादिमि, (हे १, १४०; आया) । कर्म--रिज्ञह : (हे४,
  YIC) । रह-दित, देंत, ददंत, देयमाण; ( हुरं १,
  १९९; गा ११;४६४; हे ४, ३०६; बूद १; बावा
  १, १४ -पत्र १८६)। इत्तर-दिख्यंत, दिख्यमाण,
  वीजमाण : ( गा १०९ ; सर ३, ४६ ; १५,१; सम ३६;
  द्या १०१; मा ११)। मह-न्युच्या, वार्ड, बाऊण :
  (बिस १, १ ; № ६८० ; इमा ; ३४ ) । हेह-दार्ड ;
   (का)। रू-दायव्य, देय : (बुर १, ११०; हुत रहेश;
   प्रश्न: FIR )। हेह-देर्न (मर); (हे में, प्रश्न ) 1
 दा देखी ता - तवनुः (वे ३,१००) ह
 दाम देखे दाय=रर्गय्। राष्ट्र, (वितृ ८४४)। सर्व-
   रारम्यः ( सि ४६ -) । ब्लह-दाइरतमाण, (क्रम्)ः
```

दहण ⊪ [दहन] १ दाह, स≔नोइग्ख; ९ ५ूँ प्रनि, वढि;

(पाइ १, १ : उप पूरे १ . न्या ४०४ : आ रू⊏)।

दहणी सी [दहनी] दिश विशेष । (पाम ७ १३८) ।

दहयोंन्की सी.[दे] नगतो, बनिया ; (दे ६, ३६)।

वहिन [व्या] व्हो, दूर का शिशर : (अ इ, ९ : बावा ৭, ৭ , সাম)। "ঘদা গুঁ["ঘন] বুলি লিার, খনিয়ৰ

जमा हुमा दही; (फाख १७--पत्र १२६)। "मुद्द वं [मुख]

१ द्वीप-विरोप; (पटम ६१, १)। १ एक नगर; (पडम

kn, n)। ३ पर्यत-विरोध ; (शज) । "दाण्ण, "घन्य पु [पर्ण] १ एक राजा, द्रा-विशेष ; (द्राप्त ६६) । ९

पत्त-विरोष, (मीप;सम ११२; पत्रच ९—पत

दहासण दि [दाहर] जलाने बाला ; (सव)।

दाउ रि [दान्] दाग्र, देने बाला, (महा; सं १, मा १६१) दाउँ देशो दा=शा. दाभोपरिय 🖪 [दाकदिरिक] बर्तनर ऐन स्प (तिस, १, ♥) । ∙ दाच देखे दाह: (हे १, २६४)। दाडिम न [दाडिन) चन्नियो; सनार ((महा)) दाडिमो सी [दाडिमो] मनर स देः।(पिराः) दाडा सी [.इंट्यू] बा दाँन, दन्ति होर ; (हेर १३० : गउर)। दाढि वि [दंप्यून्] १ दात करा, १ ई, दिल प (वेकी ४६)। , ३ स्मर, बराइ ; "हिं हारेनसर्व नियर्ग गुरुं केमरी रियष्" (पडम 🛂 🍱)। वादिमा सी [दे] दाती, मुल है : नीये का मान, मा हुर्दी के नीचे के बास ; (दे २, १०९)। दान्द्रभाति } सी [दंद्यिकायति] । राग्ने से ली द्। दियालि 🕽 ९ वस-विशेषः (दूर १ ; वी १)। दाप्य पुन [दान] १ दान, उत्तर्म, साम । पर ही दावा" (पत्रम १४, १४, सम्प : प्राप्त ४८। ६४; १०६) १ हावी का सर; (पाम ; वर्: गउर)। १ वे प्र जान बर: (वजर)। "पिरप वं [चिरत) स्मूर्त (तुरा १००)। साजा सो [शाला] मनापार। (मेर दाणंतराथ न [दानान्तराय] क्रमें खिन, क्षिन हरी दान देने को इच्छा नहीं होती है ; (राय). दाणव वं [दानव] देत्य, मनुदं, रनुव ; (३ १ 1" मन्यु ४१ ; प्रास् ५१) १ दाणविंद इं [दानवेन्द्र] मनुरों हा लागे : (वर्ष) .=; प्राप ६२, ३६ ; प्राप् १०४) ! दाणि सी [दे] । गुन्द, पुनो । (गुन ३६० । धूनी दाणि | म [इदानीम] इस सनव, मनी; (प्री) दाणि | स्वा २०३३ १/२६/४, १४४) हेर्

दाणीं) स्वत्र ३३)।

दाञ पुं [वाय] सन, उन्तर्न ; (वास १, १-पर्न ए) दाइ वि [दाविर्] दाग, देन कता ; (ता र १११)

दाहम दि [दर्शित] दिवताचा दुमा; (विवे १०११) दाश्य पुं [दायक] १ पेतृह गंरीत का हिलाए। (स ४७, सहा) ३ ९ वं जिंह, समान-गंतीय, (सम)! दाइङ्जमाय देशादाम=रर्गर्।

```
राय है। [हातम्य ] २ इन मा विरा ।
                                   السينة أده
2000 : ( 5 ( 32 ) )
महिल्लासं है। संपूर्ण, इंट्ली (है।, असी।
विकास [ क्षापन ] जिल्ला , " क्रम्युवारी क्षेत्री करणी
में माराम्या (सन् १३ हो )।
तिमत् [समत् ] १ साम, सह । साम १, ४, इस ) ।
रेग्ड्र, स्टब्रेड् (स्ट १४१ , इ. १,३१ )।
हैरावर सकार का एक मागानारी, (गत )। येन
ति[°वर्] सला राजा ; ( इसा ) ।
<sup>[मिद्रि</sup> हं [दोमिन्य] मीर्स देशता के इन्स्र क दूरक
गैन क क्षीति देश ( इस )।
मिट्टि दें [दामिद्धे] बार हेया, (हा ४,९—पर ३०३ )।
मिन व [दे] बन्दव, प्युक्तीका क्ष्मी के निष्यय ;
(=: := );
मिणी मो [दामनी] १ पटुमो हा बौधने बी समी. (सन १६,
६), ६ मगरम् हुन्युनाय ही मुग्य शिल्या; (तित्य)। ३ सी
में दूर का कार्ट के माका क्ला एक राम तलाए, (कार
हे, हा-तर दर, पार हे, ४-नद (दः ०६; ई है)।
मिणाको [दे] १ प्रता, प्रदृति , २ नदन, कौंगः;
( हे है, हेरे ) |
मिय रि [दामिन] संयभित, नियन्तितः, (सर्ग)।
मिनो क [हाविडी] हीत हेग को लिनि में निन्द
एक सन्त्र-विद्याः (सूच २, २)।
मों मों [दामी ] हिनि-शिष ; (सम ३४ )।
मिलर ह [हामोदर] १ थीएन्ट बाइंबा; (वी ४)।
े मात रक्षियां काल में मान-केंत्र में रक्षक नवती |
बिन्देश ( पर ७ )।
पेग वि [दायक ] दारा, देने कहा; (दन ७१० टी;
<sup>महा</sup> ; द्वा २, ४४ ; द्वा ३७= ) ।
पण न [दान] देना; "शबरे म निरूप म मन्द्रागिति
म्बं<sup>त</sup> (सन २१)।
                     <sup>4</sup>तवं,विहार्यं तह हायहान ( ?
वे } मी" ( सम २६ ) ।
पिया क्री [दापना] १८ मर्व की ब्यास्का; (विते
```

पिय देखा दायमा ; "महिम्धतिग्यम हुँत में जिन्हार

दासद ९ [दायाद] पैद्दूर मंति हा मर्गाप्ता ; (27 7 1 1 दायार वि [दायार] सन्बद्ध प्राची ; (इस)। द्रार सर [द्रारय्] विकास, केंड्क, पूर्व इस्ता । पर— दार्ग : (इसा)। द्यार पु [दे] कही-युत्र, कींची ; (हे ६, ३०)। द्दार हुन [हार] बहुर, मी, महिला; (स्म k+ ; स १३० ; हर १, १०१: प्राच ६१), "इसेय समझई गहिया बेनावि होंद्र परवर"' (सुप्त १८०)। दार न [हार] दरवारा, निस्तने हा मार्ग ; (भीव ; हुन १६०)। 'माला मी ['ार्मला] इखाने का मागत : (गा ३२१)। है, त्य वि [स्य] १ इत में स्थित १ र पुँ, दरबान, प्रतीहरू; (बूह ५; वे २, १२)। 'पाल, °बाल हुं['पाल] दखन, हार-संस्क ; (दर १३० ही ; इ^र १॰, १३६; महा) । "बालय, "बालिय पु [पालक, पालिक] दलान, प्रनंदार ; (पडम १७, १६; द्वा ८६६)। दार) पुं [दारक] शिगु, यासर, वया; (टा पृ ३०=; दारग 🖟 सर १४, १२६ ; दम) । देखे दाग्य । दारदंता सां [दे] देश, संदर्ह ; (दे ४, ३०)। दारय नि [दारक] १ निशास्य करने वाला, विश्वलंदर : (इन १३०)। १ देखें दारग; (इप्य)। दारिज ति [दारित] तिदारित, छड़ा हुमा, (पाम)। दारिमा मां [दारिका] तहाँ ; (स्वर १६ ; पाना १, १६ : महा)। दारिमा श्री [दे] वेरस, वार्यपना; (दे १, ३८)। दारिह न [दारिद्वय] १ निर्यनतः ; १ ईनतः ; (गा६७९ ; नहा : प्राच १७३)। ३ मातस्य ; (प्रामा)। दारिहिय वि [दारिदिन] दिवा-प्राप्त, दिव ; (पदम kt, 2t) 1 दारु व [दारु] बाठ, टबर्ड, (सन ३६; इन १०४; स्वत ७०)। भगाम वुं [आम] प्रान्सिरंगः (परम २०, ६०)। दिंदय क्ल [देण्डक] बाएन्स्ड, सांदुमी का एक उत्तराह, (बन) । 'पञ्चय वुं ['पर्चत] पर्वत-विरोप ; (श्रीवः) । 'पाय न ['पात्र] इ.ष्ट का इन्न हुमान बन : (टा३, ३)। पुत्तय हं [पूत्रक] बद्धाला ; (मन्तु ८२)। भड वं भिड़ी भारत देव है एहं मादी जिन देव है पूर्व सन्म

क्सा" (क्रांब ३४)।

3533) 1

दाम वुं [दाय]दान, उन्मनं ; (वाया १, १--११:

दाइ वि [दाविन्] दान, देने बाता ; (बाह ११

दम्ब वि [दर्शित]- दिवतावा हुमा, (रिरे १०१--

दाइम वुं [-दायिक] १ पेनुइ संगति का दिनेता, (*

दाइउजमाण देशं दाम=राग् ।

४७; सहा) । २ संक्षिक, समान-नोत्रीय, (कस्) 📁

```
म्हण न [दहन] १ इन्द्र, सन्मोहाखः १ पुं अनि, वहिः
 ( पर १, १ ; संबु २२ , सूस ४७४ ; आर २८ )।
दहणी सी [ इहनी ] किम किटेन ३ ( पडम ७ १३८ )।
दर्गोल्डी सी [दे] न्यानी, धनिया : (दे ६, ३६)।
रहायण नि ( दाइ रु ) अताने वाता , ( सव ) ।
वृद्धित [ वृद्धि ] रहां, रहा का निशार : ( या १, १ ; वावा
  १, १, प्रार । रिम से [ धन ] दरि लिए, अतिहय
  बक्त हुमा दश, (फला १४-पन ६२६)। भु र ई [भुज
  ९ (पारित्रः (पार १९, ९)। १ एक सन्तः (पार
  45, १ )। ३ फॉर-रिहेत ; (शत ) । "वरण, वनत
  प्रभी १ एक राजा, ब्रान्शिव, (द्वय ६६) । ९
  इच-लिए: (भीर:सम १६३, पांच १--पन
  ११)। वासुवा मी [ वासुका ] कव्यतिनिके।
  (क्षेत्र १)। "वाहण ९ ["वाहन ] हानीगेर।
  (स्तः)। 'सरपु ['सर] वाय-स्थ-वियेपः ( दे ३,
   74 1 t. 16 ) 1
 इतिप्रधारः व [ है ] नार्नात, प्रतमन , ( वे ६, १६ )।
 र्रान्द्र तुं [ दे ] वृत्त-लिंग, क्लिब , ( दे ४, ३४ ) ।
 इदिया देशो दाहिण । ( नाट -वेकी ६७ )।
  रद्वित्यर ∤५ [ है] वील्लर, साप लिल, ( वे ४, ३६ )।
  बडिल्यार र्र
  हरिमुद्र वुं [ है ] की, कार ; (दे ३, ४४ ) s
  बहिष पु [ दे ] बाब-रिगेन, "जे सानवीन निरिद्दिनमार्र श-
   र्शन कहन से क नि चेत'' (कुन ४९४)।
  का वद [ दा ] देना, अनुर्व काना । दाइ, देह ; ( मरि ; हे
    १, १०६ ; अन्यः, मदा ; का ) । मति—हाई, वाहानि,
    र'वि, (दे ३, १००, मामा) । धर्म-शिक्ष : (दे ४,
    ा )। क -दिन, दंन, दर्न, देवमाण, ( सुर ५,
    १९२ : सारदे ; ४६४ ; हे ४, ३०६ ; बूर १ ; कारा
    १, १४ - भा १८६) । इ.स. --दिश्वंत, दिश्वमाण,
    हीक्षमाण ह ( या १०१ ; सुर ३, व्हा ; १०,१; स्म १६;
    इच १०१ ; मा ३३)। शह-न्यवा, दाई, दांडाथ ;
    ( विष ९, ५ ; वि ६८० ; इस ; ३१) ३ हेह -हाई ;
     (का) इ—रायाय, देव ; (पुर १, ११०, द्वत १३३;
     ere, $17 ); $5--$1 (m), ($ v, xxq ) |
    का केले ला करवत् ; (वे ३,१०)।
    राम वेश्व राष्ट्रजर्गर् । राष्ट्र, (शिर व्यक्त ) । वर्ज — !
     रप्रस्य ; ( श्रि रह् •) हं बाह्र —दारुक्तांस, (कार् | दासी ) सब ३३ ) ह
```

दाउ वि [दान्] दाग, देने वाजा;(महा, सं १) हैं। १। दाउँ देशो दा≔ग !. दाओयरिय वि [दाके दरिक] बडोहर ऐव 👡 (शिंग ५/४)। बाध देवी बाह ; (हे १, २६४)। दाडिम न [दाडिन) कत-निरोग, मनार ६ (मा)। दाडियो सी [दाडिमी] बतार का वेर : (श रा वाडा सी [ब्द्यू] बग दौत, दल्तीवेगः (११०: वत्र)। वाडि मि [वंप्युत्] १ शहा गांवा ; १ ई. विना ! (वेची ४() । ३ मूमर, बराहः "हिं होतन नियमं पुत्रं केवरी रियद् " (पत्रम ७, ९८)। दाडिया सी [दे] दारी, मुनं के शोरे सा मण, है दुर्भी के बीचे के बाल ; (दे २, १०१)। दा द्वानि } सी [देव्हिकायित] १ गी से ले दादिवालि 🕽 १ वस-विशेष । (कृष १ ; जी)। दाज र्थ [दात] १ रात, उत्पर्ग, साग । "११ 🍍 दावा" (बास १४, १४; सम्ब मात् ४म। 👫 👫 १ दावी का सरः (पासः वरः त्याः)। । वेहे बाव बहु: (वड़ा)। "विरव ई ['विरात] स हैं (इस १००) । "साजा सी ["शाला] सहसर । (* दार्जनराय न [दानानतराय] वर्ज लिए, किए तर्ग दान देने की इच्छा नहीं होती है ; (रावें 1. दाजय वं [दानय] देख, म्युर, स्तुम ; (रे १, १ मन्तु ४१ : प्रान् ८६) । दानविंद ई [दान्येग्द्र] , बंदुर्श क स्त्रजो ; (बर र हः दान ६१, ३६ । प्रान् १००)। वालिको [व] हुन्त, पुंती ; (तृत १६०) भरी दापि । म [इरानीम्] हव कार, मनीः (डी हैं दार्जि ला १० ३ है भू १६ ५ में १०० होते हैं

```
गन्त ; १ जीलमा देश ; " सर्गाम दाहिएको " ( पटन
१९. १३ )। 'पुरन्यिम रि [ 'पुर्वीय ] इतिग झीर पूर्व
सितं दे बीच वर साग, सित-प्रेग्य : ( सग ) । "स्थल वि
[यर्त ] इंक्टिट से सावर्ग याना (जंग मादि ) . (हा ४,
3-92 298 ) 1
(हिंदा देनो द्विपाया : (टा ६ ; गुज्ज १०)।
रिहिणिक्ट देनं। द्वतिराणिक्ट ; (पत्रम ७,९७ ; विस
1, 10 ) 1
राहिणी छ। [ हरिस्पा ] दक्तिम दिमा ६ ( क्या ) ।
दिविहर (हिं) हो, हो की संख्या याला। (हे % हर है
1, 12)1
र्दि देगो दिग्दा ; ( m =(६ ) । घकरि इं [ ध्वस्ति ]
हिंग्-हर्मा; (बुमा ) । 'साईद धुं [ 'बाजेन्द्र ] हिंग्-हर्मा;
(गरः) ( 'साय वुं [ 'राज ] दिग्-हन्मी ; ( स ११३ ) ।
चनकरनार न [°चन्नानार] विद्यापारी का एक नगर; (इक)।
भगोर वं [ भगेर ] दिशा-धम ; (शा मन्द )। देखो
दिमा ।
दिस पुंत [दे] दिवग, दिन; (दे ६, ३६ ), " राइंदि-
 माइ' ' (काम )।
दिस पुं [ द्विज ] १ बाह्मण, विष्णः, (कुमाः, पामः; उप प्रदूष
 दों)। १ दन्त, दौत ; ३ मायण मादि तीन वर्ष-नावाण,
 प्तिय और वैश्य; भ अवडज, अवंड से स्टब्स्न होने वाला
 शाणी; ६ पत्ती; ६ पत्त-विराय, दिवस् का पेह; (हे %,
 ६४)। 'राय पुं [ 'राज] १ उत्तम द्वित्र ; २ चन्द्रमा; (सुपा
 ४१९; इस १६.)।
दिक इं [ खिका ] काक, कीमा ; ( उप पहन्दी ) ।
दिम इं [ दिए ] इस्ती, हाथी; (हे ९, ७६)।
दिय न [ दिय] स्वर्ग, देवलांक, ( पिंग ) । "लीय, "लीग
  र्ड [ 'लोक ] स्वर्ग, इंवर्लाक ; ( यडम २२, ४४; सर ७,
  1)1
दिय वि [ हत ] हत, मार डाला हुमा ; "चंदेण व दियराएण
  जेव मागंदियं मुनशं" (कुप्र १६)।
 दियंत वुं [दिगन्त ] दिशा का प्रान्त भागः (महा ) ।
दिअंबर वि [ दिगम्बर ] १ नम्, वस-गहित ; २ पुं. एक
  जैन संप्रदाय; (सवि ; उत्तर १२२; कुप्र ४४३)।
 दिवारम पुं [दे ] मुत्रर्णकार, सोनार ; ( हे k, ३६ )।
 दिश्युत्त पुं[दे] काक, कीमा ; (दे ४, ४१)।
```

```
दिवर पुं [देवर ] पनि का छोटा माई ; ( गा ३४ ; प्राप्त :
 पाम ; हे १, १४६ ; सुपा ४८७ )।
दिजलिय वि [ है ] मूर्ग, भजानी ; ( दे १, ३६ )।
दिवारी मी [दे] स्वृषा, गंगा, गँटी ; (पाम )।
दिशस पुन [ दिवस ] दिन, दिनग ; (गउड ; पि २६४) ।
 °कर पुं[ °कर ] सुर्य, रवि ; ( से १, १३ ) । °नाह पुं
 ['नाय] सर्वं, सन्ज ; ( पडम १४, ८३ )। 'यर देखे
  °कर, (पाम )। देखे दिवस ।
द्विजसिस न [दे] १ सदाभीजन ; (दे ६, ४०)। १
  श्रमुदिन, प्रतिदिन ; (दे k, ४० ; पाम ) t
दिशह देखी दिशस ; (प्राप्त ; पाम )।
दिअहुन्त न दि ] पूर्वांदृष का भोजन, दुपहर का भोजन ; (दे
  8. Ye ) 1
दिखा म [दिया] दिन, दिवस ; (पाम ; गा ६६ ; सन
  १६ ; पडम २६, २६ )। 'णिस न [ 'निश ] दिन-रात,
  सदा; (पंग) । दाअ न [ दात्र ] दिन-रात, सर्वदा; (सुपा
  39८ ) । देखो दिखा ।
 विकाहम पुं [दे] मास पत्ती ; (दे ४, ३६)।
 दिआइ हेलो दुबाइ ; (पाम )।
 दिइ म्हो [ द्वति ] मसक, चमड़े का जल-पास ; ( मतु ६;
  इत्र १४६ ) !
 दिउण वि [ द्विगुण ] द्ता, दुगुना; ( पि १६८ ) ।
 दिंत देखो दा≔रा।
 दिककाण वुं [ द्वेष्काण ] मेथ मादि लमों का दसवाँ हिस्सा;
  ( राज ) ।
 दियस्य सक [दीक्ष् ] दीक्षा देना, प्रवज्या देना, संन्यास देना.
  शिष्य करना । दिक्खे ; ( वन ) । वक्-दिपखंत ; ( सुपा
   १२६)।
 दियात देखो देखाता दिवना ; (पि ६६)।
 दिक्खा सी [दीक्षा ] १ प्रवज्या देना, दीत्तण; ( भ्रोप ७
  भा )। २ प्रवज्या, संन्याम ; ( धर्म २ )।
 दिविखा वि दिक्तित ] जिसको प्रवज्या दी गई हो पह,
   जो साधु बनाया गया हो वह : ( उव ) ।
 दिगंछा देखो दिगिंछा; (पि ७४)।
 हिर्मवर देखो दिअंवर; (१६ ; मावन )।
 दिगिंछा सी [ जिघत्सा ] युमुत्ता, भूस ; (सम ४० ; विषे
   २१६४ ; उन २ ; भावृ )।
```

456	पाद्वसहमहण्णयां ।	[दास्य-दर्ग
हा नात ; (हान१६४)। "संक्तम हा नात ; (हान१६४)। "संक्तम हा नात हुमा पृष्ठ, होत्र , (माथा)। त्रावल शु (हारहर्ष) न भोड़त्य नाहों से नात हुमा पृष्ठ, होत्र , (माथा)। त्रावल शु (हारहर्ष) न भोड़त्य नाहों से नात होता हो हर से नात हो	व का एड पुत्र, किस्ते उन्नम यी प्रण को एड कार्यव ; (बाब, 'एउन प., ट)। 'ही में ही में को वा प्रण हों 'एउन प., ट)। 'ही में हा मार्च के दि मार्च के हिए पूर्ण के हिए	रक-विगेर ; (गारा १, 1) र-निरंग , तंरता द्वर । १ वें त्र (१ (2 प.) १ - १ १ १) हित मात्र कर १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

```
' ४, २)। ४ गोव-सन्त, गोकातुर; (विश १, ३. मग) ।
गर पुं [ दीनार ] सोने का एक निक्का : ( कप्प ; टर प्ट
४ ; १६७ टी 🕽 ।
                      [दीपक] जन्द-विरोप;
क } ( भा )
               पुन
क्क∫(पिंग)।
य देखो दिच≕दित् । वह—"मस्येहिं इन्त्रेनिहें दीवर्षं ;
दुम १, २, २,२३ )।
व सक् [दीपण्] ९ दीपाना, शोमाना। २ जलाना। ३
व दरता। ४ ५क्ट दरना। १ निवेदन दरना। देविइ ;
(मेंग ४१४)। दीवेद ; (महा)। वह-दीवर्यंत ;
(रूप)। संकु—दीवेचा; (क्रांप ४३४;कर)।
ह—दीवणिङ्ज; ( दम )।
वि इं[दीप] १ प्रदीन, दिवा, आलोकः ( चारु १६ :
पता १, १ ) । २ इत्यान की एक जाति, प्रदीर का कार्य
रूने शता रूत्यात ; (स्म१७ )। 'वंषय न ['चम्पक]
दियां का ट्कना, दीय-नियान; ( मग ८, ६ )।
[ीर्छा ] १ दीर-पड्कित ; २ दीवार्डी, पर्व-विरोप, कार्निक
र्षदे म्यास ; (दे ३,४३)। ीयली मी [ीयली]
शिंत हो प्रयं; (ता १८)।
रीय ९ [डीप] १ जिल्हे चारों में। जल सग हो ऐसा
मूचिनाग ; (सन १९ ; छ१०)। १ मक्तरति देवों की
एड जाति, द्वांस्तुमार देव ; (पण्ट १, ४ : मीर )।
क्ला; ( यंत्र )। 'कुमार पुं ['कुमार ] एक देव-
रति; (भग १६, १३)। 'एमु वि [ 'झ ] ईस के
 मर्ग का जानदार ; ( टर १६१ )। स्तानगपन्न मी
 ['सागरप्रक्रिति ] जैन-प्रत्य-क्यिन, जिनमें द्वीरी स्रीर
 चित्रें का वर्षत है ; ( छ ३, २---गत १२६ )।
दीवम पुं[हे] इकटान, गिरिंग्ट ; ( हे १, ४९ )।
रीयम ५ [दीपक] १ प्रदीन, दिया, मालीक ; (गारवर)
 मरा )। १ वि. दीसह, प्रहाराव, गामा-कारक ; (बुमा)।
  रेण, प्रन्द-शिंग्य ; ( मजि २६ )।
रीयंग पुं [ दीपाङ्ग ] प्रशेष का कम देने बाउं कालाहत की
 एड रति : (य go ) I
 रीयन देखे दीवश्र=रीस ; (धा (; मावम )।
 रीयड ५ [ दे ] यह-यन्त्र स्टिपः "कुर्र-विनियमंपुरं समेत-
  मेनांगः" (सुर १०, १==)।
र दीवण न [दीपन] प्रदारनः (क्रोर <sup>अक्र</sup>)।
```

```
दीवणा थी [ दीवना ] प्रकार ; "दुमी संस्तुपर्दतगाहि"
 (महण्डे)।
दीवणिस्त वि [ दोपनीय ] १ जरगिव की बहाने वाता ;
 ( गावा ९, ९--पत्र१६ )। र ग्रामावमान, देशीत्यमान ;
  ( পদ্ম ৭৩ ) ৷
द्वीवयं देखां दीव=दिन् ।
द्वियंत देखे द्वि द्विन्दीम् ।
दीचायण पुं [ द्वीपायन, द्वैपायन ] एक प्राचीन ऋपि,
  जिसने द्वारका नगरी जलाने का निहान किया था, भीर जो
  मानानी इन्यपियों चाल में भरत नेत्र में एक तीर्थकर होगा;
  ( संत १६ ;सम १६४; इप्र ६३)।
 होचि ) पुं [ द्वीपिन् ] व्याप्र को एक जाति, चिता ; ( गा
 दीविञ्ज 🕽 ७६९ ; दावा ९, ९—पत्र५६ ; फह ९, ९ ) ।
 दीवित्र वि [ दीपित ] १ जलाया हुमा; (पटन २२, १५)।
   २ प्रकाशितः ( भोष )।
 दीविभंग पुं [दीपिकाङ्ग] ब्ल्प-पृत कीग्क जाति जो भन्य-
   कार को दूर करता है ; ( पडम १०२, १२४ )।
 दीविधा सी [ दे ] १ टाइहिस, सुद हॉट-स्टिंग ; १ व्याप
   ह्य इनिर्दा, जो दूनर इस्टिंग के झारक्षीय करने के लिए स्मी
   दाती है ; (दे ४, ४३)। ३ व्याध-मन्दर्गा विंतर्हे में
   भग्रा हुमा नितिर पत्नी ; ( याया १, १७—पत्र २३१ )।
  दीवित्रा मी [दीपिका] छोटा दिया, तपुप्रदीत; (बीतर)।
  दीविद्याति [हीप्य ] होत में रूपन्न ; (याया १, ११---
    पत्र १७१)।
  दीयी (मा) देखी देखी ; (रमा)।
   दीवों सी [दीविका ] टउ प्रदेत : "रीव म टंप इंदी"
    (গা ৭६) ।
   दीवृसय हं [दीपोत्सव ] दर्तिद वरि म्यास, रीवली ;
    (市9年)1
   द्येसीत ) देशो दक्स्य≕स्स्।
   र्दासमाप 🕽
   दीह वि [दीर्थ] १ मयद, तमा ; (स ५,३ ; मन ;
     इस )। १६ दो सवा बाटा स्वान्तर्गः (सिंग)। ३
     क्षेत्रत देश का एक गरा; ( द्वा प्र १८ )। कारियो
     सो [ कालिको ] मंत्र-सिक, इदिनिये, जिले हरीर्र
     मुखान की बातों को समाद और सुदर्भ महिला का विचार
     विता का महत्त है ; (इं ३२; सिंग ६०म) । क्लालिय हि
     [ कालिक] १ इंदर्भ कार है। इन्तर, विरंतर ; "ईरसा-
```

देशो 'डाह; (मय ३,७)। 'दि पुं['मर्हि

दिखी दिखी १ स्वर्ग-मक्त्री, स्वर्गन (स १ :

490

```
बेह पर्दन, (नुम्बर)। 'देवया की ['देवना]देश पे पं
द्या ३, ३) । १ उलम, मुन्दर, मनाइर ; (पत्रम ८, १६१ ;
                                                     स्त्रती देवी; (रंगा) । °घोक्पित ई ['प्रोफ़िन्द]एक प्रस
 मुर २, १४१ ; प्रानु ११८ ) । ३ प्रधान, मुख्य ; (कीप)।
                                                     बानप्रस्य ; (भीप)। भाष ५ [भाग] हिन्स
 < देश-गन्बन्धी ; ( दार, ४ ; सूझ १, २, २ )।   १ न्
                                                     (सन, भीत; कप्पू; तिरा १, १) ! भत्त व[मा
 गरंथ शिव, भागा दी गुद्ध के लिए दिवा अला मधि-अवेश
                                                     बन्यल्प, सक्तिपः; (उप ४०६)। "मोद्दर्श[मोद
 मारि, (दर ८०४)। ६ प्रापीत काल में, मपुश्व राजा
                                                     हिसादाअस ; (तितृ १६)। "यतासी [पार
 दी मृत्यु हो जान पर जिम चय-दार-जनह घटना से राज-मही
                                                     देशाटन, मुनाफिरी; (स १६६) । 'यन्ति.
 के निए रिसी सनुत्य का निर्माचन होता वा वह इस्ति-गर्वन,
                                                     [ 'यात्रिक] दिगाओं में फिन्ने बाला ; ( रण )। 'हे
 सप देना स रि सर्ने हिर प्रमाण, (उप१०३१टो)। "सं पुरूत
                                                     पु [°भाळोक] दिशाका प्रकाराः (विसः ५६)
 न [ प्रानुष ] देव धीर मनुष्य संबन्धी इडीवर्जों का जिलमें
                                                     "यह ९ [ "पथ ] दिला-स्य मार्ग ३ ( मान १० ९००)
 बर्गन हो ऐसी बधानम्यु ; ( म २ ) ।
                                                     "वाल द ["पान ] दिक्यत, दिशा का क्या
दिष्य देगी दर्घ , (मृत १६१)।
                                                     (स १६६)। 'बैरमण न ['बिरमण] मेंन ही
रिष्य श्रेर देव, "बमंद रिपर्गवंति" (इप १९६)।
                                                     को पालने का एक नियम—दिगा में जाने भाने का दौर
रिन्साम ९ (दिल्याक ) तर्र की एउ जाते ३ (पश्च १ )।
                                                     काता; (धर्मर)। 'ब्यय व ['क्रत]रे
दिध्यामा 🗐 [ दे ] बाजुल्ला, देवो विशेष : ( वे६, ३६) ।
                                                     °वेरमण्। (बीप)। °सोरियय ५ [ 'स्वन्तिक निर्दे
हिम मह [ दिशा ] ९ बहना । २ प्रतिग्रहन बनना । दिशह :
                                                     तिरंप ; (भीप) । सोयन्त्रिय इं [मीर्यान
 (गाँ)। य ह—दिस्समाणः (राज)।
                                                      ९ स्वस्तिक शिव द्विवास्त्रं स्वस्तिकः ( पर ६४)
दिग में [ दिश्य ] दिगा में उत्पन्न, ( से a, k+ )।
                                                     ३ जुएक देश दिमान ३ (सम. २००)। ३ रण्ड मी
रिगमा भी [इगर् ] क्चर, सरख ; ( वर् ) ।
                                                     एड निन्म; (य =)। "हिन्स दु ["हिन्तर] िं
दिन्स भी [दिस्] १ रिमा, १र्व मादि दश दिमाएँ ३
दिन्दि ( गरह , शासु ११३ . सहा : तुस १६७ ;
                                                     रियाओं में स्थित ग्रेस्वन आदि आइ हम्ती । 'हम्बिक्ड
         ( नरह , प्रान् ११३ , महा : लगा २६७ :
                                                     ['हिन्तिकृट] दिशा में दिवन एनी है बाहार बात है।
रिमी') क्या, ४, ४३१, अस्) । २ जीता सी ;
                                                     निगेप, वे बाट हैं --वर्मोगर, मीलवन्त, मुरानी, बन्तर्क
 (वे १, १६)। "अवक व [चक] दिशाओं वा तपृह,
                                                     इमुर, क्लाम, ब्रह्मंग बीर राष्ट्राविरि ; ( व ४ )।
 (म ६३०)। "प्रमरी सी ("प्रमारी दिश-शितः
                                                    दिसंभ ई [ दिगिम ] दिगाम, दिग् स्थी, ( गा )।
 (ज्ञा ४०)। "इमार ई [ 'कुमार ] अन्तरी देवीं
 बी न्द्र बार्ट , (स्पर , बीप) , 'कुमारी देखे 'कुमरी,
                                                    रिस्म
 (सर; दुरार) । "सत्र पु [ ग्रह] हिन्-इन्ती :
                                                               है देशो र्चल = १ग्।
                                                    रिम्मं
  (ब ६, १, १०, १६) । भारत ई [भाजेन्द्र] दिग्-
                                                    हिस्मग्राण )
  रूपी , (ति १३६) । 'सक्त त्या 'अक्स : (स्त
                                                    दिम्समाण देखं दिस ।
  ६६३, स्") ; 'चनकापाल व [ खकापाल ] १ हिलाओं
                                                    दिस्सा देशे दक्ता=१०।
  बा समूर , ३ टर स्ट्रिंप , ( जिल्हें ) । "खर हुं [ 'खर]
                                                    दिहा म [दिया ] श प्रकण ; (हे १,६०)।
  देशाय्त्र दारे दाना मन्त , ( मन ११ )। "जाना तेनां
                                                    दिदि को [धूनि] चेवं, चरतः (१ र. १११) में
  यमा , (श •६=रा)। जनिय वन्ते विनिय :
                                                     "म नि [ "मनु ] चेर्च जाभी, चीत ; ( हमी ) !
  (बर)। बाद १ [बाद] दिल्लों में होने हत्या वृक्
                                                    दीम देशा दीय = रंग ; ( मा १३६ ; ६८०)।
  एए स प्रधार, कियें तेन प्रध्यक्त की उस प्रधान
                                                    दीनन देशं, दीवयः ; (शा १३६) ।
  र्रका है, या अभी उदारों का शुक्त है ; ( जन १, ४) इ
                                                    दीश्यमात्र देशो द्रा≔श ।
  'गुराय ५ [ 'सनुरात ] हिटा बा ब्लूचब, ( कर १) ।
                                                    दीय है [दीन] १ रह, गर्प ; (प्रमूपा)।
  देति इ [ देनिक् ] हेन्-रान्दे , (१९४८)। 'इहर
                                                     इत्तिः, दुल्बः (बाया १,१)। ३ 🚧
```

इल्बेगी , (तुर ३,३, छ ३९) । "दमाओव ["दशा] जैन मन्य-विरोप : (य १०)। 'दिहि वि । 'द्रिशि] १ दुरदर्शी, दुरम्देगी । १ स्त्री वीर्ण-दर्शिता, (धर्म१)। 'पट्ट पु ['पृष्ठ] १ सर्व, माँव, (उप १ २२) । २ दवराज का एक मन्त्री, (गूर १)। 'पास मुं ['पार्थ्य] एतल केत के सोलहर्वे भावी जिन-दंद, (पत v)। 'पेहि दि कि सिन्] दर-दर्शी, (पडम २६, २२; ३१, १०६)। 'वाष्ट्र बुं ियाह्] १ भरत-क्षेत्र में इंति वाला तीमरा वासुदेव : (सम १४४)। ९ सम्बान् चन्द्रप्रम का पूर्व-जन्मीय नाम : (सम १४१)। 'भड़ ई ['भड़्ड] एड जैन मुनि : (इ.य)। भिन्न 🖟 विभय हिम्सा सस्ता बाला : (साया १, १८: 🛮 २, १; १, २--पत्र २४०)। भद्ध वि भिद्धी दीर्प काल से गरंग, (टा ४,२---पत्र २४०)। 'साउ न 'प्यिपी सम्बं मानुष्यः (दा १०)। 'रस, 'राय प्रत ।' राज] १ सम्बी रात, २ वह रानि वाला किर-काष : (शक्ति ९७: रात्र)। 'राय ५ ['राज] एड शत्रा; (महा)। 'रुप्रैग र्द्ध (क्लोक) बनम्पति का जीव : (भाषा)। 'स्टोगसत्थ न ['छोक्तशुरुष] भ्रमि, बहिन : (भ्राचा) । 'सैयङ प्र ['धैताद् प] स्वनाम-न्यान पर्वत, (श २, ३--एव ६६)। 'सुरान ['सूत्र] १ वडालूगः; (निवृ १)। २ मालस्य, "मा इयम् दीश्मुण पण्डम्ब सीयलं परिगर्धनी" (पाम २०,६) 1 °सेण ९ [सेन] १ व्यान-वेरलोड-गामी मुनि विगय; (मनु २) ।२ इन समापिंथी काल में उत्पन्न एं। वर चैत्र के मारलें जिल-देव ; (पर ७)। "ाउ, "। उप वि ['ग्रुप्, 'ग्रुप्क] सम्बी उन्न बाला, बडी बाबु बाला, बिर-प्रीती ; (दे १, २०; टा ३, १ : पत्रम १४, ३०)। 'सिण न ['भिन] शब्बा ; (अं १)। वाह देना दिअह: (दुमा)। द्रीहंच वि [दियमाञ्च] दिन को देवले में कावर्व: " र्शनं-था दीलपा " (प्रत्मृ १ वर्ष्) । दीहजीद ३ [दें । संब ; (दें ६, ४१)।

लिएण रोगार्नकव" (टा ३, ९)। २ दीर्र राज-भैवन्धी :

(ब्रायम)) "जलामो [यात्रा | १ लंबो मध्या ३

मन्त्रा, मौत, (स ७२६)। 'डक्क वि ['द्र्ष्ट] जिल-

का शाँप ने काटा हा वट, (निवृत्त) । 'शिद्दा को ['निद्रा | मरण, मीत . (राज) । 'दंत वं ['दरन] १ मारनार्थ

के एक भाषी पनवर्ष राजा: (सम १६४)। ३ एक

श्रेत सुनि , (भ्रत)। "देखि वि ["दर्शिन्] दुरहर्गी,

प्रानु ११३)। 'च्छ वि ['श्री समी मीन वर्ष, ह नेत्र वाला; (ध्रुस १४४)। दीइरिय नि दिधित का स्मा हम : (रा) दीहिया भी [दोधिका] बार्ग, बतारा-विगर; (हा) (\$, Ecd) ! दीहोकर यह [दीघीं+क] समा बला । वंदीप्रेदि 🛱 दु देनो दय=दु । कर्म=दुवर ; (विते १०)। हु नि.म. [दि] दी, संस्था-निरोध बाता, (ई ९,६४, 🛱 १ : उदा } : दुर्व[द्र] २ इत, वेड़, गाउ; (डर १)। १^{सा}। नामान्य : (सिमे १८)। दुम [द्विस्] दो शर, दो श्या; (सुर १६,६६) । दुम [दुर्] इन मदौं का सुचक सम्पर ; । । हरी २ दुष्टा, नगरी, ३ सुरिकती, कॉलाई, ४ निमा, (११ २१० : बाल्, १६= : खार १४३ । बासा १, १ ;व्हें)। बुझ व [हिक] बुगल, बुगल; (स १९९)। दुम वि [दुन] १ पीडिन, हैरान किया हुमा । (श)। टी) । २ वय-दुक, ३ ब्रिटि, सीज, जल्हों, (स १०,५०६ भणु)। °विलंबिम त ['विलम्बित] १ क्यारित। स्रभिनय-रिशेष १ (शय) । दुअक्लर पुं [है] क्ल, नपुंतक ; (रे १, ४१) । दुश्चनसर वि [इ.यक्सर] १ महान, मूर्व, धारह, (ग १२६ टी) १ २ पुनी, दाल, नीडर ; (११४)। 'रिया; (मावर) ! दुअणुअ १ [म यगुक] हो प्रमाणुमी हा स्वन्द। (स 1 (5325 दुबबन्त व [दुकूल] १ वस, इपदा ; १ महित वर्ग, ^{हुन} वस ; (है १, ११६; प्राप्त) । देखें दुकूल । दुआइ पु [द्विजाति] माग्रव, सनिय और है।इ वेगर क्रष्टी : (हे १, ६४ ; २, ५६)। दुमारक्ल नि [दुसल्येय] इ.स हे ध्रत्रे मेन्य, (ग्री १-पत्र २६६) । दुआर न [ह्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग (हे १,४८) !

दुभाराह नि [दुरायाध्य] जिलहा प्रातावन क्षेत्रहें हैं

दुआरिमा स्री [ग्रास्कित] १ छेटा झाः १ प्रीरी

संदे बद, (वष्ट १,४) १

मदार; (याया १,३)।

```
बुरमाद वि [ दुर्गेट ] को कुछ में हो मंत्र पर, स्ट्रामान्य ;
                                    पाट्यसहम्बद्धमान्ययो ।
                                               कुरवित्र मि [ दुर्वदित ] १ दुःसम् नंगुकः । २ स्तरम
हुक्तित्तिकः ]
주[국] ٩ 작고, <sup>교교</sup>, (중 ३,४३, <sup>교</sup>원, <sup>교교 </sup> 1,
                                                 ्रेश ने प्ला हुमा; 'पुनिहमनेषमल' व नो गो पामगड-
१ २ वरी, चर्म ; चि ४, १३ । ३ वन, वसन,
। महस्य प्रतिसंदुर्गः (सर्वः)।
निहिंद्शी र जर्म द्वार में प्रकार कर कर
                                                  ١ ( ١١ ١١ ١ ١ ١ ١ ١
क्रिकार्ता (स्त १,६ हिला १,३ । ३ च हुन
क्टनालासकः (स्व के १०५ ।। व पुन् हिर्मे
ल, यह ; ( हुना; गृत १४= )। नायत ह [नायक]
                                                   दुग्बोह रेपर् ; मीर )।
हुमाइ हो [ दु. ति ] १ वृगीः, लार माः हीला येतिः
 (23, 2; k, 1; 27 3, 9=, mon. 1 > 1219, 319,
  ् हर्देशा, यो सम्पाः ४ हमाण्यित् हेन्द्रशः, ( पार १,
   १ | महा ; ह ३ | ४ ; गण्ड २ )।
  हुमहि मी [ हुर्य हिया ] हम् प्रीन्य : ( वि ३३३ ।।
्रुमात्र दं [ दुमन्य ] १ तमव मन्य , १ वि समय मन्य
    बला, हास्ति ; ( हा = -पन ४९=, मुन ४९ ; महा)।
    हुमांचि नि [दुर्गिन्यन्] हर्गन्य वाना ; ( दुर्ग ४८०)।
हुणान हे वि दुर्गम है १ वर्ग दुःव में प्रवेश क्या वा
     हुगाम्म ) गृह पर ; (पडम ४०, १३ ; भाव ७१ मा )।
       "प्रत्मक्तिरहुगाम" (सुर ६, १३१) । २ न, बर्रि
       हुगाप मि [हुगोत ] १ होई, धनर्टन ; (छ ३,३ ;
-- "
        गः १=)। २ इ.सी, विक्तिसला ; (पाम ; छ ४,९--
         पुगाह वि [ दुर्म ह ] लिक प्रत्य दुः उने हा के पह ।
          दुगा को [दुर्गा] १ पर्दनी, गेरी, जिबसकी ; (पाय)
            हुत १४=) । १ देवीनीयोगः (चंड) । १ पतिनीयोगः ।
                         म्बं [दुर्गाहेबी] १ वर्तती, निवसली,
                         गाँगी ; व हेर्गाविता ; (पर् ; हे १,३००)
                        ु इसा)। दमना पुं निमण] नहत्त्व,
             दुग्नाणेवी
                लिल्क वि [दुर्बा शुर्व है] जिल्हा महत्त दुःख ने हो संह
                हुमाइ वि [ दुर्गाह ] अल्ला मुन, अनि प्रचलन ; (दर ७)।
                दुर्गाङम्द देखे दुर्गिजम्मः ; (मे १, ३)।
                 कुण्यही [इस्ट] जिल्हा आन्दाल इस्त ने हो से बहु
                  भ्वत्यवाद्यसम्बद्धनम्पद्धसम्बद्धाः (पद्ध १,३ —पत्र ६४)।
```

```
हुत्तान [ दुर्गृह ] दुरुपर ; (मीर )।
कुराम ९ [ दुर्याम ] दुर्भन, महत्त्व ; ( हुर ३ )।
इंच्ह रें [रें] इस्तें, हार्या, करीं ; (रें रें, पर ;
  दुचन १ [ दुचन ] एवं प्रकार का सुरुगा, नॉनरी, सुरैगत ;
   हुचरक न [हिचक ] गाही, शब्द ; ( मान ३=३ मा )।
     चर पं िपति ] गाड़ी का प्रतिनि ; (प्रीप व्यवस्मा)।
    दुन्तिपण देखा दुन्तियण ; (नि ३४० ; मीन)।
     बुच्च न [ दीत्यं ] दूत-वर्ग, सम्मचर पर्वंचन व्यं क्रयं ;
      हुक्य रेलो दोक्य=दिगीय , दिस् ; ( बल )।
       हुरसंडिअ वि [दे] १ दुर्जाता ; २ तुर्वरूप, दुःशिचित ;
        दुन्तंपाल वि [हे] १ ब्लुर-नित, मल्झावंर ; १
          हुरुर्वाल, हुरु भाषाय बाता ; १ पहा-माया ; (६ ४,४४)।
         दुरुच इस के वि [ तुम्ल्यस ] दुःव हे स्थागने बीम्यः (हमाः
          दुन्यर रेव [दुखर] १ जिल्में दुःस में जाना जाय पहः
          दुन्यम ) स प्रदर्श)।
           दुचनित्र)( झाचा )। २ दुःत में जो क्यि जाय बर
             ( उर ६४ = टो ; पड़्स ३२, ३० )। लाउ पुं [ लाउ
             हिता मान या देश जितन दुःच में जाया जा मेंह ; (माचा
             दुरुवरिश्र न [ दुख्वरित ] १ मत्त्र भाषाय, दुर वर्नन
               े (यद्म रूद्म, १२ ; हा हु १११ )। २ पि. हुगवारी ; (
               हुच्चार वि [ हुआर ] हुगुवती ; ( स्ति )।
               दुक्वारि वि [दुधारित ] दुगवारी, दुर मापाय व
                 (म१०३)। सी-ध्याः (मरा)।
                हुन्जितिय रि [हुजिन्तित] १ हुर्र हिन्ता ; (
                  १९५, ६७)। २ न. सन्त विन्त्र ( परि )।
                 दुर्विचिन्छ नि [दुर्विचित्स] व्यव प्रदेशस
                   वहादाः (मण्दर)।
```

3.

```
दुन्तो देनो दुक्तुसी ; ( रूप )।
दुबरा न [दे] जरन, सी इ उसर के पीड़े का मान , (दें
                                                    दुखुर वुं [ द्विञुर ] दी मुर वाता प्राची, मी, मेंद्र हो
 4, 82 ) |
दुवस बह दुपलाय ] १ दुसन, दर्दकना । २
                                                      ( দল ৭ ) 1
                                                    दुग व [दिक] दो, गुण्य, युगतः (ना १०; इं।
 मक् दु,सी करना। "निरंमें दुक्ताई" (स ३०४)।
 दुक्शामि; (मे ११, १२७)। दुक्पिनि, (सूम १, १,
                                                      १७. जी ३३ )।
                                                  । दुर्गंछ देखे दुर्गुछ । बह—दुर्गंडमाण । (तर
 kk ) |
                                                      १२)। ह--दुर्गछन्तिस्य ; ( स्न ११, १६, विम
बुक्खड देगो दुस्कर, (बाद १३)।
                                                    दुर्गंडमा सी [ जुगुप्पना ] ह्या, निन्दा ; (ग्रा
प्रकलिण न [दुरायन] दुराना, दर्र होना; (उप ७६९,
                                                      (k) !
 सम २, ३, ११)।
                                                    दुर्गठा स्त्रो [सुगुरमा] एवा, निया; (त.
तुक्सम वि [दुःक्षम ] १ जनमर्वं; २ जसक्व, (स्त
                                                      हुप४०७)। देशे दुर्गुछा।
  २०, ३१)।
                                                     दुर्गंध देवां दुरगंध ; ( परम ४१, १७ ) !
द्रपणर देखे द्रुवकर ; (स्वत ६६ )।
                                                     हुगच्छ | नव [जुगुटष्] पृत्रा प्रान, निग्र प्र
 हुक्करिय पु [ हुप्करिक ] दान, नौहर , ( नितु १६ )।
                                                     दुर्गुछ । दुनव्य, दुर्ग्य । (वर् । हे ४,४)। व.
 हुज्यरिया को [दुष्करिका] १ दाती, बौद्यानी,
                                                      दुर्गुर्दन, दुर्गुछनाय । ( न्या ; ति ४४ , १११)।
  (निषु १६)। २ वरया, बरागना ; (निजु १)।
                                                      वक् —दुर्नुद्धिई, (धर्म २ )। इ —दुर्नु उपीर,।ह
 इक्टरिस्स (भा) वि [इ स्थित] इ.स.-युक्त, ( भवि ) ।
 दुक्लियिश वि [दुःखितः] दुःसो विया हुमा, (उप
                                                      ¥€, €₹ ) [
                                                     दुर्गुंछम वि [ जुगुप्तमक ] एका बारे वाता, (द्वारी)
   ६३४, भनि )।
                                                     दुर्दुछण व [ जुपुत्मत ] क्या, शन्मः (ति पर)।
 दुपलाय मक [ दु लय् ] दु:ख डरजाना, दु:खो बरना।
                                                     दुर्गुछणा देशो दुर्गछणा , ( प्रापा )।
   हुरक्षावेद्द , (पि ४१६)। वह-पुत्रशार्वेत ; (पडन
                                                     हर् छा देखे हर्यछा ; (सग)। 'काम व['दर्ग
   ६८, १८) । कत्रु—दुक्लाधिक्जंत , ( प्राथम ) ।
                                                       देखो पीते का सर्वः (स. १०)। भीर<sup>मी</sup>
 दुक्लायणया नी [ दुःचना ] दु ती करना, दर्र उपनाना :
                                                      [ भोहनीय:] कर्म-शिंग, तिरोह दश है जी है?
   (भग ३, ३)।
                                                       बन्तु पर प्रवा इतो है ; ( इस्म १ )।
  दुवित्व रि [ दुःखिन् ] दुःयी, दु च-पुरत , ( भावा )।
                                                      दुर्गुछिय वि [जुगुप्सिन ] पृथित, विन्त्र, (वेरी)
  दुस्खिम वि [ दु.चित ] दुःख-युरा, दुरिया ; (हे १,
                                                     दुगुंदुग १ [ द्रामुन्दुक ] एक मन्द्र-शाही है। , (
   ७२.; प्राप्त ; प्रास् ६३ ; महा ; छर ३, १६१ ) ।
 दुरशंतर 🖟 दि:होतार ] जो इ.स ने पर किया जाय,
                                                       ३१८)।
                                                     दुसुरु देलं दुर्गुछ। दुगुन्य । (हे ४,४।व)
   जिलको पार करने में विद्याई 🚻 ; (पाई ९, ९ )।
                                                       वह-दुगुच्छेत ; (पत्रम १०१, ७१)। ह
  दुषर् तुस्तो म [ द्विम् ] दो बार, दो दश ; ( य १, ६--
                                                       ध्यकीय ; ( पत्रम ८०, १० ) I
   पत ३०⊂ }।
                                                      हुगुण देवो हुउण ; ( ठा २, ४ ; वागा १, १, ५
  हुबसुर देशो दुसुर ; (११ ४३६ )।
  दुषर्ज्ञ देखी दुनकुरु, ( भनि ११ )।
                                                       सुर ३, २९६ ) ।
                                                      दुसुण 🗝 [हिसुणय्] दुपुना हाना। 🕏
  दुक्लोइ वं [ दु स्त्रीय ] दु स-एशि ; ( पत्रम १०३,१६६;
    मुग १६१)।
                                                       ( 33 625 ) 1
   दुसपोद वि [दुःशोध ] बद्र-चोम्ब, सुस्विर ; ( सुना
                                                      दुर्गाणय देखं दुउणित्र ; (१मः) ।
                                                      दुगुन्ल } देखे दुश्रन्त ; ( हे 1, 11£ ; <sup>[न</sup> ; <sup>‡</sup>
    989; (34 ) 1
   दुगंड रि [दिसण्ड ] दो दुक्ते वाला ३ ( स्म ६८६ टी,
                                                      द्रगुष ∫ ⊏०;वं२)।
                                                      दुगोता सी [ दिगे.त्रा ] 'बरती रिप : (पार्व र
    मनि )।
```

पाइअगद्मद्दष्णजो ।

498

[**दुश्य-दु**

क्रम वि [दुस्थितिस] ^{मुल्यह} हो हुन हे जन

वि[दुन्तर] रुवाचीर, दुर्वनः (न १०:

हो सी [दुस्तरी] गाए किया , (एसा १०००) ख दि [दुस्तर] का संतर्त राग, इस में करें राज

नार ११ [दुम्लार] दुःग हे पा वर्ण पंज्य, दुःगः .

हुति म[दे] र्योप, लच्ची ; (हेश, ४९, दाम)।

दुनित्वाकत र्वातां दुनितियातः (माना ; गत)।

दुनुंद ५ [दुन्तुण्ड] दुनंत, दुनंत ; (मुन २ ४=) । दुनिनिवल 🕽

दुत्तीस है [दुस्तोप] सित्रहें मंतूर करने किन हो वह ; दुत्यन [दे] जन्म, भी को बमा के नीचे का माग ; (द

ं दुन्य हि [दुःह्य] हुनेन दुन्हितः (हा ३, ३ । निय)। दुत्य न [द्रास्त्य] दुर्गात, दुस्यतः ; (चुन २४४)।

प्टर विग्रमहाना हुनि दुन्दिनि चीरा" (कुन ६४)। रित्यम वि [दुःस्थित] १ हुनैन, विनित्यन्त ; (स्वयण्यः र्ताः ; सप)। २ सिर्वन, गरीनः (कुन १४६)।

त्युरदंड पुंची [हे] समझलेत, बटर नीत ; (दे १, ٧٠) ١ من و على (﴿ وَ وَ وَ مِن) ١ दुल्योत्र ५ [हे] दुर्मण, अनल्ण ; (द ६, ४३)। दुर्न वि [दुर्शन] ज्यन, दनन करने का मगकर, दुर्ग ;

भीनवपत्रता दुरियदिया देहिया बहुवें (दुर =, १३= ; दुर्स वि [दुर्श्य] दुर्ग्लाह, से ब्हेम्बई वे देवा दा वह ; दुर्सण वि [अर्दर्शन] जिल्हा दर्शन दुर्शन हो वह ;

दुद्व रि [दुर्दम] १ दुर्दम, दुर्दिवर ; (हुन २४)। "दुसहर्त" (आ ११)। १९ सम प्रवृत्त का एव

तुरम 9 [रे] देवर, पति का छेट नरे हैं १, ४४ । दुरिद्वि [दुइ ष] १ इसे तरह न इन हुँ । दुर दर्गन वाला , (फर १, १ - व्ह ३६ ...

हुद्यि न [हुद्दिन]बहर्तो व प्रतादिताः (मेन्स्र)। जुदेयाः [बुद्देय] दुरा में देने चेत्यः (डा ६२४)

हुद्दोलना सं [हे] मी, मेवा (पर्)। ुदोकी मी [है] इत्यंतिः, (हेर्, ४३ ; पाम)। हुद = [दुरच] दूर, चीर , (दिया १, १)। "जाइ मी [जानि] मेरा-पिंग, विस्ता सार रव के बेसा होत है , (क्तं :)। समुद्दं (समुद्र] क्तंर महार

जित्तर पनी द्वां की नाइ स्वाद्धि हैं ; (ना ३०००)। दुदंस वि [दुव्यंस] विस्ता नाग सुनिस्ता हे हा ; (स दुद्धनंविममुह पं हि] बड,वियु, छंटा डहरः; (दे६,४०)।

दुद्धगंधियमुरी मी [रे] छंडी तर्दी; (पाम)। दुब्दहों रे मी [दे] १ प्रदुति के बाद तेन दिन तक का गी-वुद्धहीं) हुन्य : (पना ३२)। २ मही एउ हे निजन

दुद्धर वि [दुर्घर] १ दुर्गर, जिनस निर्मार मुस्किती से हो संक वह ; (पान १ - पत्र ४ ; सुर्१२, ११)। २ गहन,

वितनः (टा६ः सरि)। ३ दुर्तयः (बुमा)। ४ ५. राज्य का एक सुनद ; (पड़न १६, ३०)। दुद्धासि वि [दुर्यथे] १ विज्ञ वानना बर्टलना वे हा वेंक, र्जानं को मरास्य ; (पन्ह २, ६ ; कम)।

दुद्धयलेही मी [दे] चारत का मात्रा ठात कर पहाना जाना हुत ; (पा ४. -नापा २२८)।

दुदसाडी श्री [रे] अब मिता व्य पहला जाता रा ; दुर्दिय न [रे] बहुर, लोहें; गुजरानी में 'यूपी'; (पाम)। दुद्धिणिया हेरी १ तेल मारि खने हा माला ।

बुद्धियों । वृद्धयोः (दे ४, ४४)। दुद्धोत्रहि । वृ [दुर्गादित] मनुरुक्तिम, जिनक पर्न दुद्धोत्रहि । दुर्ग की स्पर्क स्वतिम है, सीर-मनुर ; (र दुद्धोलणी वी [है] में निर्णेत, तित्रको एक बत देहने

क्ति की देहन दिया जा ग्रंड ऐसी गाम, (दे ४, ४६) दुधा देखे दुहा : (प्रति १६९)। दुनिमित्त द्या दुवियमित , भा २० । र्दुन्तय ६ [दुर्तय] १ इर नेन्त्र, कृत्नेत्र १ मन्त्र

बटा बन्दु के दूर्त तह है धर्म के मण का प्रत्य । र्नम् स्ति रच पन (समार ।

```
पाइअसइमहण्यवी ।
                                                                                    [ दुव्यिका-दुन
48
दुन्यिग्य न [ दुर्खीर्ष ] १ - दुष्ट बानरण, दुश्वरित ; १ | दुरम्धोनस्य वि [दुर्जीय] जिल्ही हेगा बन्द हे हे हो हैं।
 दुर वर्न - दिना भारि। १ वि दुन्त संचित, एइवित की हुई । ( भाषा ) ।
 इष्ट रण्ड , ( दिया १, १ , श्रामा १,१६ ) १
                                                     दुरकोसय वि [दुःश्य] जिल्हा राग क्य-गण रे द
पुरुवेद्विय न [ युक्ते दिन ] सत्तर नेच्छा; सार्वेदेक दुव्ह |
                                                      (মাঝ )।
                                                      दुक्कोमिय हि [ दुक्कॅदिर ] दुःव से वेदेर ; ( मर):
 माधाय , ( पाँड, दूर ६, २३३ ) ।
                                                      दुइन्होंसिथ हि [ दु-भूपित ] कार हे गरिए,(१९)।
दुवराजक वि [द्विपर्क] बारह प्रहार का :
                                                     हुद् वि [ दुष्ट] दीव-तुक, द्वित, (म.व ११६; प्रम, मन)।
  " मूर्च हार" पदाचं, मादारो मादव निदी।
                                                       "च्य वुं["त्यम्] द्वः और, पर्लाक्रवी; (चा।
 दुष्पारतारणीर प्राच्यामा, सम्मर्ग परिश्चिनियं " (था ६ )।
उपयोग्य नि [ दुरसेद ] जियस देश्न कुल से ही बड़ बह
                                                       932;41,92) [
  ्याम३५, ६६.३ ६
                                                     हुड़ वि [देखिए] इंक्युक, (भीप पर्ण वि
                                                       " महार्ड्डल " ( क्रुप्र ३७१ )।
पुष्णक श्वा पुष्पत्रका, (वर्ण १)।
                                                      दुहाण न [ दुःस्थान ] इथ जार ; ( मा १५ १)।
पुत्रश्चित्रं [ जिलिटिन् ] उदानित्र देवनीवरोप, एक सहायहः
                                                      हुरुदु म [हुषु ] सराव, मनुत्रर ; (दा ११० में, ह
  (87,1):
                                                       १, १ ; मुता ११८ ; हे ४, ४०१ )।
पुत्रम देशा पुरत्नम : ( महा ) ।
                                                      दुष्णय देशो दुखर ; (दिङ १७ ; मास्त)।
पुश्रीर वृ [ दिसिहय] व सर्व, छीत ; व दुर्वन, सन पुरव ;
                                                      दुण्याम व [दुनरेमन्] १ भारति, भारत। १ दिन
  । गाउँ ६३ , इसा ३३
                                                       नराव बारूबा । ३ एइ प्रसर को गर्ने ; (भग १२, १)
पुरतन राग पुरितंत , ( शह )।
                                                      दुष्णित्र दि [ दून ] पंहित, दु वितः । ( मा ११)।
द्वातम १ [ दुर्तन ] सन, नूट बनुव्य, ( प्रमू ६० ; ४०,
                                                      पुण्णिय देतां इतितय : ( राज ) ।
  5411
                                                      दुण्णित्रत्य व [दे] १ जत्रन पर स्था पम। १ वर्ग
पुरतप्रसि [पूर्तप] को बच्च ने जीता जा छोड़ ( हा
                                                       मी के दूसर के नीव का माथ ; (दे ६, ६६)।
  १ रहा दी, इर १६, १६८, इस १६)।
                                                      दुविवासक हि [ है ] दुधरित, दुराबारी, (दे रे, गरे
पुरवाप न [दे] वरान, बाट, दु म, उराहा ; (दे हे,
                                                      दुव्जिक्सम हि (दुलिक्समें) अही में निश्तन कर स्थ
  vr, 4 12, 11, 88)1
                                                       बह ; ( भग ७, ६ ) 1
बुरजाय है [ बुजार ] दूःच से निवतने बोरद ; { से १२,
                                                      दुण्णिस्थित हि दि] १ दुगक्ती, १ बद में में <sup>दुर्व</sup>
  41)1
                                                       HE: { 2 1, xt } 1
                                                      दुनियानीय वि [ दुनिक्षेत्र ] इ.ग हे स्वपन करें हैं।
 पुरजाय व [पूर्णात] पुरत भारत, कृत्यात गरित, ( जाना )।
 दुरिजेन ई [दुर्यन्त] एक प्राचीन जैन पुनि ; ( क्या )।
                                                       (# 15x)1
 द्वार्भाष व ( दुनीव) भार विद्या का मर, ( दिने १०११)।
                                                      दुविषयोह देनां दुन्तियोह, ( राप्र )।
 दुश्भीद देशो दुर्जीद ; ( बाजा १४० ) ।
                                                      द्राण्यमित्र वि [दुर्नियोजिन ] दुन्तरे कंग रूप (
 कुरतेय वि [ कुर्वे र ] कुछ से बोलन काय, ( सुता १८८,
                                                        32,21 )1,
  F(")1
                                                     दुण्णिमस व [दुर्विमित्र] सराव छात्र, मर्दम, भे
 दुरमेरण १ [दुर्गोनन] श्लान्त्र का अंतर पुन ; (ध
                                                       v+, $}1
                                                      द्रिण्याविद्व वि [ दुनिविद्य ] दुराव्यो ; ( निर् ११ )।
   4, 3 ) (
                                                      दुन्तिमी[साहा[दुनियम] कर-अधानम
 मुल्करि [सीम्य ] हरिने बोन्य ; (हे १, ७)।
 दुल्याम न [दुर्गात ] दूर कि.स ; (धर्म १)।
                                                       { 9x 3, 2 })
  दुरमाप में [बुध्यांत] जिल्हा निवा में कुछ फिल्हा किया
                                                      कुल्पेयति[कुर्वेष) शिक्षक्त कानुनाहे हैं
   ≪बहरू (क्षंद्र}।
                                                       ( व्हार ११= ; टर ११= )।
```

```
Later - [ martin ] , and here
                                                                                                                                                                                        Something the state of the stat
gene from the sent
                                                                                                                                                                ह नर्यत्र १ ( हन्त्रकत्र ] — त्रंत ; ( हर्यः) ।
والمستعمل والمستعمل والمستعمل
                                                                                                                                                                   न प्रिय (१ (स्थापीया) त्यो वर्तान प्रवस्त व स्थापत
1 ----
Frederick ( ) the first part of the contract o
                                                                                                                                                                                  ज्याचा १०० प्रमान १३० १० व्यावस्थ स्मानस्थ ।
                                                                                                                                                                              · AT 11 ( TT ) TITE STATE HOTEL : (777), 3-
production of the section of the section of
والمراجع والمنطوع والمراجع والمناطقة
أمني سؤسمة إن في مشهمتيسياسته أن - - سن درده - سن شه
                                                                                                                                                                              च्यापा विक्तित्व विषय ग्रीत्र ग्राम में हीने पात
                                                                                                                                                                                   the control of the said of the control
to exment the games
ه منطقت معمد المار المنطقة الم
                                                                                                                                                                                 स्त्रास्य ११ वृहेंसे हुए गुण्यामान रिक्तान स्त्रा गर
                                                                                                                                                                                        क्त (जा निर्देश विषयित वार्ष )।
المستهول مايع (دل سنساليا مل و در المايع والمايع وي در
                                                                                                                                                                                     मूल्यांस ११ दिला प्रेम ] रित्र मत्त वस्त्रिये से हो गई
   Andreagues () Commentates ) a great for an
                                                                                                                                                                                             बर ( क्ला के कड़ , यर कार )।
                                                                                                                                                                                          मूर्यम्ब (१ ( मू म्याम्य) प्रश्न, मृत्ये : (लावा १, १८)।
                                                                                                                                                                                            बुल्का प्रविद्या दिल्ला (का मार्का मी)।
       Martin (Canal Jak Can de ela)
          हुश्चित्रक : म स्थित्रक , ( मुर १, ६ , पुर ६१ )।
            हलाइस्मा में क्रियारिन देश व मार्ग्य पान कर
                                                                                                                                                                                                कृत्यिय रि [ सुरित्रय ] स्थित । "दत्तास्य रि [ 'सार्थित् ]
                 कुलमिरिक्टम रिक्टिम्बारिजन रे मान्त्र मही ।
                                                                                                                                                                                                    दुर्जुत हर, मुनुत, (रहम १०४, ४२; गाँउ, दुन ४०४)।
                                                                                                                                                                                                       क्षरियन्त्रियः ( गुत्र ३१४)।
                                                                                                                                                                                                      हुन्तूर हि [ हुँ हुँर] जा राजाई ने पूरा किया जा गंक ;
                       ten get , (mp. (50) )
                     कुल्य क्षेत्र क्षेत्र-द्विष । (तत १०)।
                       कुल्यार रि मिल्यामर् जिल्ला प्रमान एट माना जार है
                                                                                                                                                                                                              1 ( *** 1)
                                                                                                                                                                                                         बुलीमत हता बुवेच्छ ; ( मन )।
                                                                                                                                                                                                            हुत्त्वेशमणिज्ञ वि [तृत्त्वेश्तणीय] कट के दर्शनीय; (नाट---
                           हुल्यभनेत में [ हुल्यस्थान्त ] युर्ग सन्तमे बारना ।
                                हुलारिशकर रिहिने १ बागस्य र (१ १, १४ र वाम र
                                                                                                                                                                                                                  वर्णा २४ )।
                                                                                                                                                                                                                बुलेक्ट देती बुल्क्ट, (मन )।
                                      इ ८, २६ ; ६, १८ ; मा १२१ )। २ जिला, द्रांता ; १
                                                                                                                                                                                                                  हुत्योतिय देश हुत्यडितिशः ( श्रा २०)।
                                                                                                                                                                                                                   हुटकरिम
हुटकरिम
हुटकरिम
हुटकरिम
                                       करायान, मन्यायमध्य ; (ह १, ११)।
                                     हुणात्या [ हुणात्यत्र ]स्तावित (वश्व, १३)।
                                        तुर्याः ज्याप देशे दुर्याः च्या ; ( ३५ ८ )।
                                                                                                                                                                                                                    हुपास । [रिनार्श ] स्निय मीर शीन मारि मंदिर
                                                                                                                                                                                                                        दुराम ) भग)।
                                            कृत्परिणाम वि द्विश्वरिणाम ] देशवा प्रशाम माप्यहे,
                                                                                                                                                                                                                                स्पतीं में पुरा ; ( भग )।
                                                 दुणितमान १ [ दुणितम् ] वर्मान्य स्पर्व वाला ;
                                                                                                                                                                                                                              हुदयङ रि [ दुः उ ] तराव रांति व देंपा हुमा ; (
                                                                                                                                                                                                                                         . 3 11
                                                   हुत्यात्मनण देती दृष्यत्मिनण ; (तेर् )।
                                                       (18 8, 28) 1
                                                    हराफिल रि [ है ] दुसमां, " माजिदम दुर्पान्यीरा
```

```
बुक्डोबार हि [किंक्ष्मकार] कर देती।(बन्धी)
दुष्पद्रिकेट वि [दुष्यनिकेश ] जार्टक वन वैका जा
 सके बहु (पा = ४)।
                                                      द्वामहित्रय दे के दूरप्रमहित्रय , ( गुर (१० )।
दुग्पडिलेहण न [ दुग्पनि देखन ] डोह ९ नहीं देवना ;
                                                      कुषय वि [ जिस्ह ] ५ स वेंग्यता. १ ई मान, (गरं
                                                        ९, ⊏, मुख व०६) ६ ६ व, गारी, गस्ट, (मेंत २०१ वरे
 ( शाव ¥ ) I
                                                      दुवय में [दूबर] ब्रोटिन्यून का एक राजा. ( यात १३१)
  बाला, झन्याय-कारा . ( उत्त ७६० डी )। विक्रारि वि
                                                      दुर्गात्नाय है। [ दुर्गारमात ] हुन्छ, हुन है है
 [ "कारिन् ] भन्याय गरने बाता , ( गुरा ३४६ ) ।
                                                        देता । ( सा ४६८ ही : राग १४ )।
दुरिनगार रि (दुर्निप्रद) जिल्हा निमान में है। मेह बह
                                                      दुविक्ववयोव वि [ दुर्गात्यवतीय, दुर्गराय
 भनिवार्ष, (उप पृ १३३)।
                                                       कार देश ; (कार )।
हुन्नियोह वि [दुर्तियोधा] ९ दुल स जानने थेला ; ३
  दुर्लग, (सुम १, ११, १६)।
                                                       नुबब्ध देवी मुल्यस्य ३ ( ≡ ६, १—या १६६)।
पुल्लिमित्त देवो दुण्णिमित्त, ( धा १७ )।
                                                      दुवृत हं [ दुरदुव ] इहर, बर्ग ; ( पान १६, ११)।
                                                      दुरेव्ड वि [दुव्येत ] दुर्रत, मर्गतीय, (मी)।
दुनितय न [दुनीत] हुए कर्म, दुन्हुन, "बंबिट वेरी) य दुन्नि
  याचि" (सूच १, ७,४) ।
                                                       दुल(इं[दुलनि] दुः सम्मे ; (मी)।
                                                      बुष्पत्रस हि [बुष्पतुस्त] १ दुरुगाव कार्व रहा, (इ %
दुन्तियम्थ दे [दे] दिः का भेर बाजा, निम्रतीर बेर को
                                                        १—पन १६) । २ जिल्हा दुसारेल क्रिया गण हा में,
  धारण करने वाला, केवत जरन पा ही बप्र-पट्टिना हुमा ;
  <sup>4</sup>'लोए दि कुर्गनम्गोरिः जख डुन्निय-बमइराज्यं निरह<sup>**</sup>
                                                         ( भव १, १ )।
                                                       चुप्पउलिय ] ी [बुप्पाप्यतिष ] बोह १ वहीं वह हाँ,
  ( डव ) ∤
दुन्निरक्य वि[दुर्निरीक्ष] आ बज्जिई न देना जा संड बहु
                                                       दुरबद्धान र सरामा ; ( उस ; पंचा १ )।
                                                       दुष्पभोव वं [ दुष्पयोग ] दुरायेव : ( दम ४ )।
  (क्प्प; भवि)।
                                                       दुष्पभौतिति [दुष्प्रयोगिन्] दुष्परेत सर्वे र र
दुन्नियार वि [ दुर्नियार] संक्रने के जिए जनस्य, ज्यास
                                                        (पद्ध १, १-विष ७)।
  विवारण मुस्किली न हो गरेर वह; ( मुत ९६३ : महा ) ।
                                                       दुष्परक रि [ दुष्परय ] देनो दुष्पडन्त, (तर ४०५)।
 तुन्तियारणीअवि{ दुर्नियारणीय, दुर्निवार ] कार देना;
                                                       दुष्परमाल रि [दुष्पंसाल] विका प्रवास
  ( E 545 1 044 ) |
 दुनिसरण वि [दुर्निपण्ण ] स्तव रीनि से बेटा हुना ;
                                                        साध्य हो दह , ( सुपा ६०८ )।
                                                       दुरवच्युव्वेशिययं नि [बुच्यान्युरमे शिन] क्री । वर्ति नेव
  ( दा ४, २--पत्र ३९२ )।
 दुप देतो दिश = दिप ; ( शज )
                                                        हुमा, (पन १)।
                                                       दुष्पत्रीवि रि [दुष्पत्रीयिन्] दुःम ने जीने बातः (रा
 द्रपणसारि द्विप्रदेशी १ दी मारा वालाः ६ ई.
                                                       हुप्पडिकरंत थि [ हुप्पतिकारन ] विनश प्रार<sup>ीता</sup>
  इयणुकः ( वस १ )।
 दुपएसिय वि [ द्विप्रदेशिया ] शे प्रदेश बाला , ( सब ६,
                                                        २ न किया गया हो नइ , (रिस १, १)।
                                                       दुर्णाडमर हि [दुर्जानकर] जिल्ला प्रोक्सी
   v ) [
 दुपरख पु [ दुष्पश ] दुष्ट पत्त ; (सुध १,३,३) ।
                                                        क्रिया जासकः ( हुई ३ )।
                                                       दुष्पडिपूर वि [ दुष्पतिपूर] पूले के जिए महारा ही
  दुपप्रलान [द्विपक्ष ] १ दो पच ; (सूम १, २, ३)।
                                                       दुष्पदियाणंद नि [दुष्पत्यानम्द] १ वं वि
   २ वि. दो पत्त बाला; (सूभ १, ९२, ६)।
                                                        संतुष्ट न क्या जा सक् ; र मनि क्य से तेलाने ।
 दुपडिन्मह न [द्विप्रिनिष्ठह ] दिश्लद का एक सुत्र; ( सन
   180)1
                                                        ٩, ٩-- ٩३ ٩٩ ; ٥٤ ٧, ₹ ) ا
                                                       दुष्पदियार वि [ दुष्प्रतिकार ] जिल्हा प्रीहर हैं
  दुपडोशार N [ द्विपदायतार ] दो स्थानों में जिलस
                                                        हो संक बद्ध (स रे.१--पत्र ११०, ११६, स १८४, <sup>हा</sup>
   समावेश हो संदे बहु; (ठा २, १)।
```

पाइअमहमद्भयारे ।

496

[दुन्तिगार-दुर्गारम

```
. इनुहर रेके दुरनुह=दुनंत्र ; (ति ३४०)।
ह्यद्वा के [ दुर्मुह रे ] गत्व पूर्ट्न, दुट नार ; ( पुर
. २३७)।
हुमीतन वि [ दुर्मीस ] जा दुःत ने छोडा जा संहे ; ( तृम
19, 52 ) 1
हुम्म देख दृम=दाबर्। दुम्मरः (मचे)। दुम्मीति,
्रहर्मान् । (गा १७०; ३४०)। कर्म -्युन्मियसः ;
(4732+)1
हुन्मर वि [ दुर्मति ] दुर्दु दि, दुन्द वृद्धि व छा ; ( था२७ ;
्रीक्षण ३६५ ) ।
 हुम्मरची मी [दे] मगडायीर शीः (दे४,४० : पर्)।
 हुन्मण दि [दुर्मतम् ] १ दुर्मनः, विस्त-मनस्य, विहिन-विवा
 (दरम ; (दिस्ता, १; तुर ३, १४०)। १ दीन, दीनका-
  इस ; ३ द्विन्न, द्वेष-पुरत ; ( छ ३, २—नव १३० )।
 दुन्नन पर [ दुर्मनाय् ] टड्रिन हेला, टरान हेला । वह---
दुम्मणात्रंत, दुःमणायमाणः, (शह-सहार्वे ६६,
ं मन्दर्भ १२८ : रदाय ७६ ) ।
ीं दुम्मनिम न [ हीर्मनस्य] दहाती, दहेगा (दत ६, ३ ) I
  हुन्नहिना सो [ दुर्महिना ] हुन सी; (माप ४६४ टी) ।
  [डुम्माण हुं [ हुर्मान ] मृत्य मनिमान, निन्ति गर्न ; (मन्तु
  Er) 1
  द्रम्मार ई [दुर्मार] विकास र, मसर्वर राइन : "दुन्नतेय
ं, समें सकिं" (धा १२)।
  हुन्नारुप हुं [ दुर्मास्त ] रुष्ट रस्त ; ( मर्दि )।
 दुम्मित्र हि [ दून ] इत्ताति, पीहेत ; ( गान्थ ; २२४ ;
  (४२३ : सर्वे: इटल ३०)।
   र्ज़िमल संत [दुर्मिल] एन्द्-सिरेग। सी—'ला;
    (रिंग)।
⊭ंहिन्तुर केले हुनुद्र=दिनुगः; ( नहा )।
   डेन्सुर इं [ दुर्म ल ] बडरेन का पत्रको देनों ने उन्तन एक
    3º, दिले मगरान् मेमिनाय के पात्र दीवा देशर मुस्ति पार्दे
    मी, (मंत्र ३ ; फद्दा, ४ ) ।
्र , उप्पुर वं [ दे ] वर्ष्ट, बला, बन्दा ; ( दे ४, ४४ ) ।
    रुमेर् वि [ दुर्मेवस् ] दुर्गेद, दुर्गति ; ( पद १, १ )।
   उन्मोत्र वि [ दुर्मीक ] दुःय वे छोड़ाने चेत्य ; ( मनि
     18 31
    उपकल ने [ दुरतिका] हुईन्य, दिनस ब्ल्डंफ दुस-
     ीन है दर ; ( प्राच )।
```

74

```
दुरद्वकर्तिकत वि [ दुरितकमणीय] कर देखे; (गास
 3, 2 ) 1
दुर्गन वि [ दुरम्न ] १ जिल्हा परियम—विराठ खराव हो
 बुर, जिल्हा पर्यन्त दुन्द्र द्वा बह ; (यावा १, = ; पह
  १, ४—पत्र ६१ ; स ७१० ; डवा )। १ तिसका क्लिस
  ब्दनाध्य हो वह ; (तंडु )।
ब्रंब्र वि [दे] इ.च ने टर्जर्ग ; (दे ४, ४६ )।
दुरक्षन हि [दुरस ] जिन्ही रत्ता रूना करिन हो वह ;
  ( मुस १४३ )।
इरक्सर वि [ दुरसर] पश, स्टंर ( यपन ) ; ( मवि )।
 इसमह वं [ दुराप्रह ] स्तमह ; ( इन १७६ )।
 हरज्बवसिय न [ दुरध्यवसित ] इन्ट विन्तन ; ( स्ता
  300)1
 दूरणुचर वि [दुरनुचर ] विक्स मनुजन करिनता ने ही
  मंड बहु, दुन्हर ; "एनी जर्देय बन्नी दुरपुत्रसे मंदनतय"
  ( सुर १४, ३१ ; द्ध १, १--पत्र २६६ ; याचा १, १ )।
 हुरणुपाल नि [ दुरनुपाल ] दिल्हा पाटन कर-मान्य हा
   बहः (इन २३)।
  दुरूष हुं [दुरादमन्] हुर मात्मा, दुर्वनः (वनः
   न्य 🕽 🛚
  दुरव्यास ई [दुरव्यास] सगर मातः; (डा
   952)1
  दुर्शन देखे दुन्नि ; ( मंद्र ; पहन २६,४०; १०२,४४ ;
   पह २, १ : मादा ) ।
  दुरभिगम वि [दुर्यमगम] १ रही दुःय से मनत हा
   मंत्रे वर, कानम्म ; (स २, ४)। २ दुनीर, का ने
   बी बाता वा मेंहे ; (गाव )।
  दुरमञ्च ई [ दुरमास्य ] दुर मंत्री ; ( दुर २६१ ) ।
  दुरवगम वि [दुरवगम ] दुर्वेष : (इय ४८)।
  दुरवनाह वि [दुरवनाह ]दुन्त्रवेग, उहाँ प्रवेग कना
    र्याज हो वह ; (हे १, २६ ; स्म १४६ ) !
  दुरम नि [दूरस ] काव सत् राजा ; (मप : एपा
    1, 12; 2 = ) [
  दुरसमाई [द्विरसन] १ माँ, गी ; १ दुर्रन, इर
    मदुन्द : ( हुता १६७ )।
  दुर्राह देले दुर्गन ; ( हा पर्म हो ; हों )।
 दुर्राह्ताम देखे दुर्रामियम ; (म्न १४४। सि ६०६ )।
```

मनिष्ट, (परह १, २, ब्राह्य ९४३) । "णास," नाम व ['नामन्] वर्म-रिगेप, जिमके उद्य से उपहार करने बाला भी कोगों को क्षत्रिय इता है , (वस्म ९ . सम ६४)। "करा सी ["करा] दुर्भग बनाने वाली विधा-निरोप ; (सम २, २)। दुष्भरणि सी [दुर्भरणि] दु न ने निर्वंद , "द्वांड प्रजयबी तेमि हुभ्भग्यी पड्ड तदुदरस्मानि" (सुरा १७०)। बुष्भाय ५ [बुर्भाय] १ हेव वहार्व ; (वडन ८६, ६६)। १ मनर् भाव, सराय धगर, "पिमुलेख द जेख दक्षा तुष्मारी" (57 %, 9%) (बुष्माय हुं [क्रिमाय] विभाग, जराई ; (तर ३, ५६)। दुध्मासिय व [दुर्मायन] सराव दक्त , (पान १९८, €4, q(₹) i बुक्ति पुन [बुरिन] १ शराव गन्ध , (सम ४१)। १ मगुभ, खराब, म-मुन्दर । (टा १) । ३ वि. खराब गन्ध याला, दुर्गन्थि , (प्राचा) । "गध ["यन्ध] क्रॉस्त ही मर्थ; (टा १ , माथा ; वाया १, १२)। "सह पु ["शस्द] सराव शब्द ; (वावा १, १२)। दुव्भिक्स पुन [दुर्भिक्ष] १ दुष्यान, महात, कृष्टि का प्रमाद, (सम ६०, मुपा ३६८), "भागन्ने रवरगे, मुद्रे संते तन्त्र बुब्भिक्ते । जरम मुद्दं जोइउजइ, सो पुरिसो मदीक्ते विस्तो" (रवस ३२)। २ भिक्ताका सभाव, (टाई, २)। ३ वि बढी पर भिक्ता न मिर सके बढ़ देश मादि ; (ठा३,९—प∉ १९⊏)। दुव्यिक्त देखे दुष्भेक्त ; (पत्रम ८०, ६) ।

दुष्पृद्द सी [दुर्मृति] भ-शिव, ध-मनतं; (बूद ३)।

दुम्यल हि [दुर्यल] निर्धल, बन होन, (शिरा १, ७; गुरा

दुर्गल को मरद करने बाला ; (दा ६)।

जैन बाचार्य, (रा ७, त) ७)।

द्रभा देलो दृह=दृह्।

धराभ दुदि, दुष्ट नियत , (था १४)।

दुश्योलन पु वि वेदालम्म, उनहमा । (दे ४, ४२)।

१०३ , प्रत्य १३)। "पञ्चत्रमिल धन [अयदमिन्य] कीर, (मन ३, १) १२ न, प्रतिष, मर्मनत ,(बेरी दुओरत वि [दुर्भेय] गार्ने से मगरा ; (वियर, ध दुष्यलिय नि [दुर्यन्तिक] दुर्वत, भिवंत , (भग १२, । नह-पुष्य १११ ।। २) । "पुस्तिस ५ [पुर्यामत्र] स्ताम-शीद एक दुन्नेय नि [दुर्मेंद्] अप्र देगो ; (एप)। दुमग देनो दुम्भग , (सा ११)। दुमार व [दिमाय] बांबान भीर मालमी बन्द, "हुनी दुरयुद्धि नि [दुर्युद्धि] १ दुर बुद्धि बाता, शगव निर्म बाला, (दर ४६८, बुग ४४, ३४६)। इ.सी. सब्बं" (धर ६४)। दुभाय दु [दिभाय] माधा, प्रर्प ; (सन ४, ६)। दुस तह [चकरप्] १ सहर काना। १ चन ही पेंडमा । दुसह ; (हे ४, २४) । दुसद ; (सामा दुष्प्रमा 🖥 [दुर्भग] ९ दमल्यीय, क्रमाना , २ क्रांटिइ, बह--दुर्मन ; (दुमा) । दुम दुं[दूम] १ इस, पेड, गाउ ; (इमा ; वानू ६; १गी ९ वर्मन्द के परशि-मैन्य का एक प्रशिशी ; (ब t. ! पष १०९; इक) । ३ राजा श्रेषिक का एक पुर, हि मणशन् बदारीर के पार दोशा से मनुपर देशता की प्रशासी यो ३ (मनुर) । ४ न एक देव किन्ना (१६) । "कंत न ["साम्त] एक विद्यापानगर, (19 पित न [पत्र] १ इत ही पती ; २ उनान्यमन् एक क्रप्यरन ; (उन १०)। 'पुरिकामा को पु^{रिका} द्रारेडातिक सूत्र का पहला मध्याल । (इन १)। " ५ ["राज] उनम १व ; (बर, ४)। "सेन ५ [हे १ राजा थे बिक का एक पुत्र, जिनने भगवान महारेर व प् दीला सेवर अलुत्तर देशते कमें यनि प्राप्त की वी , (र्घ) २ नववे बलदव और बासुदेव के पूर्व-जनम के पर्म-गुरु १६३ ; पउन२०, १७७) । दुमंतय र् [दे] क्रा बन्ध, पम्मिन्स ; (दे ध, ¹³) दुमण न [धयलन] पुरा मारि हे लेक, रहर इस (988 3, 3) 1 दुमणी सी [दे] मुत्रा, मधान मारि पोतने श बंड र विरोप ; (दे ६, ४४)। दुमत 🏿 [दिमात्र] हो मात्रा बाला स्वर-वर्णः (१९४१ दुमासिय वि [द्वीमासिक] दो मान का, दो मान स (सव)। दुमिय वि [घवलित] चुना मादि से पोना हुमा, स्टेर हुशा; (शा ७४७ ; सुत्रव १०)।

दुमिल देखो दुम्मिल 🛊 (थिंग)।

दुमुह ५ [हिमुख] एव रावधि । (उत्त ६)।

बुध्यूय ईन [बुर्मून] १ तुध्यान धने राज ब्यो-

हुत्यम न [ह्रायन] उक्तम, पेहन ; (पर १, २)। हुचण्ण हे वि [दुर्बण] खराब रूप बतला ; (मण; ठा =)। हुचय ५ं [दुषद] एक सजा, हैनदी का दिला ; (राजा १, १६, इर १४= हो) भ्रिया हो [भ्रुता] पातव पत्नी, हुच्यंगया को [हुपदाङ्गजा] राजा हुपर की लड़की, डीसी, फाउवों की पत्नी ; (स १४= ही)। हुबवंगन्स सं [हुपदाहुन्स] क्या देने;(टा १४=१)। हुवयण न [हुर्चवन] जनव बदन, दुष्ट हर्तिः (पडन ३६, हुचुयूज् न [हिपचन] हो हा दोवह व्याहरायमृहिद प्रस्त, हो मंत्र्या की वापक विमन्ति ; (हे 9, ६४; टा ३, ४--हुचार हे हेनो हुबार ; (हे २, १९२ ; प्रति ४१ ; हुन दुवाराय) ४=०)। " एतदुवाराए " (इत्र)। चाल ई ियाली दावल, प्रतिहार ; (सर १, १३४ ; ३, १४=)। च्वाहा क्रॉ [चाहा] इत्यामा; (माबा २, १, ६)। दुचारि वि [द्वारित] १ इत बाता । २ ई. दरवन, प्रतंहार, त बहुतीवाने पत्ते रामहुवारी टिहें बरदो " (हुना २६६)। दुवारिम वि [झारिक] दावामा बाह्य; म झबंगुमहुवारिए" दुवारिय ह [दीवारिक] शवान, द्वारमण्डः (हे १, १६०: हुवालस विव [झाररात्] बाग्द, १२; (हम ; इन)। ्मुहुचित्र वि सुहतिकी बाद्य सुहीं का कीमाय बन्ताः अर्थ । विद्य वि [विषय] बार प्रकार का ; (सन २१)। हाम [धा] बाह प्रस्तः (सा १४, ६९)। "चल न [चलने] बारह मानने बाडा बन्दन, दुवाटसंत मीत [हाद्याही] बन्द बेन बन्त-मन्य, इत्तर्ते करि बरह सुवक्त्य ; (स्त्र १; हे १, २१४)। दुवालम्मि वि [हादग्रादिन्] बाह बायल्ये ब अन दुवालनम वि [हादस] १ बल्ह्यों ; १ मनातर पी हिनों का टररन ; (कार्या ; राजा १,१; रा १,०० म्। - भी; (रचा १, ६)।

५८२ - वाह्य	सद्महण्णवी । [दुरहिगम-दुगे
द्वरियामा है [द्वरिमास्य] इन्य से आपने सेम्स, द्वर्षे "मन्दर्य से मा सरस्यव्यवस्थायित द्वरिमामा" (श. ११) । द्वरियास कि [द्वरध्यास, द्वरिसस]द्वरस्थायाः (श. ११) । द्वरप्यास कि [द्वरध्यास, द्वरिसस]द्वरस्थायाः (श. ११) हो । द्वरप्यास [द्वरप्यास, द्वरिसस]द्वरस्था । द्वरप्यास विद्वर्यत कि विकास वंग्र सा एक राज्ञ (या १, ११) हो । द्वरप्यास विद्वरप्यास] के प्रमार (स. १, १०) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास] के प्रमार (स. १, १०) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास] के प्रमार (स. १, १०) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास] के प्रमार (स. १, १०) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास]के प्रमार कि । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास]के प्रमार कि । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास]के प्रमार (स. १५) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास]के प्रमार (स. १५) । द्वरप्यास कि [द्वरप्यास कि)	त, द्विस्त्व कि [द्वरोग्न] देवने के मामल (द्वरोग्न) दुरुबक कि [दे] वोहा तेवा हुमा है के र दो है हुमा (मामा दे ,)) । दुरुबक कि [दे] वोहा तेवा हुमा है के र दो है हुमा (मामा दे ,)) । दुरुबक्त कह [म्रा] १ मामा करता, दुस्ता । ११ वर्ष की की की की में मूणता । ११ वर्ष की की की की में मूणता । ११ वर्ष की
द्वाग्य में [द्वाया] द्वाया का हा (यह १३) द्वाग्य है [द्वाया] दुन ने किला साम कि स तर यह मान्य की संग्रह (यह १, ३ व्य १) द्वाग्य में [द्वाग्यह] १ दुन्य, दुन्य ; १ दुर्य ; ६ न्हुं (स ४, १, १ स)।	। १, १, १, १, १४ १ । १ । १ । १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
दुरिय न [दुरित] बार ; (बार : क्रूस १४३) १ दुरिय न [दे] हुन, श्रीय, मन्ती ; (बहू) । दुरियारि सो [दुरितारि]मानत संस्कार सी श्राम देते ; (सी ६) ।	दुस्त्रण व [आरोहण] सीररेहण, क्रार वा "
	the state of the first

```
4,64
                                               ९, ३३, वर १४) । 'साम, 'नाम न [ 'नामन् ] उन्तर
                                 पारशसहमन्द्रणाची ।
                                               च दारान्या रसं, (पंत ; गम ६०)।
                                              द्रम्यक हि [द्रःशल ] दुर्गतीन, सरियोन ; (हुन १)।
हेली जुड़मार (हि.१,९९४) वर १२,९३७ .
                                               दुरुवार वि [ युरुवार ] जा दृश्य में महत्र हा गाँक, मन्या ह
                                                 ( soft 32 , 79, 93, 992; 93 ) 1
त्री द्वाराप्री देशान्यः क्यान्यः , ( राज म्ह
                                                 हुस्मितियी [हुस्म ह ] हुन व गल हिल हुमा (यम
क्तिमान्न रि [दुर्सिहित्र] दुर्रिहम्म , (पाम ०४,
                                                  दुरमान्यण पुं [ दुःशासन ] दुर्वेश का एक छंत्रा माई,
                                                    कुन्त-सिंग ; ( चन १०, वर्षा १०० )।
                                                   हुम्मार है [ हुस्यंहन ] हुन्त म एवंत्रित हिला हुमा ;
                                                    ा कुम्महर धर्ष हिच्या बहु गींचितिया (वीं (इल ५,८)।
हाराज्यात व हिंदे तन या सम्पन्तात्त्व (म ०६)।
                                                    दुरमाहित वि [दी:माधिक] दुःगाप्य सर्व का वरले
कुत्त्वत्तः [ वित्र ] देव बन्ता । वश-तुत्त्वसाण , (त्रव
                                                     हुत्मिका वि [ दुःशिक्ष ] दुःर नित्ता बाता, दुःशितित.
 हमनरण न [ दुःशहुल ] बातारून , ( ट्ये २० )।
 हुम्मानर वि (दुरमांचर) जहाँ दुन म अमाजा मह, दुन्म,
                                                        द्वित्य, ( हा १४६ हो ; कुन २८३ )।
                                                       दुरिस्सिक्तिस वि [ दुःश्चिस्ति ] कस देगाः (गा ६०३)।
                                                        दुरिस्तरज्ञा मी [ दुःशास्या ] मात्र राम्या ; ( दरा ८ )।
  इस्मेगार वि [ दुरमंगार] कर रेगा। (सर १,८६ )।
                                                        दुरिन्निल्ह रि (दुःस्तिष्ट) व्यत्तित अव बाजाः (रि ११६)।
   हुम्मंत पुं[हुरम्ल] चन्द्रांशीय एक शहा, शहला
                                                         दुस्मील है [ दुंशील ] १ हुए स्तमान वाला ; १ आभि-
                                                           बती; (कह १,१;स्त १९०)। सी-ला;
      श पत्रे । (स ३१६)।
    हुम्मयोह नि [हुम्मयोध ] दुर्वीत्र, (भाषा )।
      हामकर वि [ दुरमाध्य ] हुन्तः ; (मृता द ; kee)।
                                                           दुस्सुनिण पुन [दुःस्यम ] दुर स्यम, स्ताव स्वम ; ( पन्न
      हुत्मकाण देना हुमन्त्रण , ( हूर ४ )।
      हिस्मत वि [ दुःसंस्य ] दुशमा, हुन्द्र जीव ,(पाम ८०,
                                                            दुस्तर्यन [ दुःधुत ] १ दुर ग्राप्त । १ वि. धुतिन्द्रः
        दुव्यन्त्य वंगो दुस्त्नयः ( हम )।
         हुत्यमदुस्तमा मां [ दुल्यमदुल्यमा ] बात-विगेप, गर्वा-
                                                             दुस्सेन्ना देवा दुस्सिन्ना ; ( वन )।
        पा कल , मस्तरिया कात का छल्ली और वल्लिपिया कात
                                                              हुद सक [ दुह् ] दूरना, दूर निश्चना।
                                                                ( महा )। कर्म - दुहिनत्तर, हुस्तहः (हे ४, २४४
           हा परता आग, इनमें मय पदावों के मुगों की मधीलए हानि
           हाता ह, इसका पीमाय एककीन हजार वर्षी का है; (उर १)
                                                                मनि-जुहिहिंद, दुन्निहिंद्, (हे ४, २४६) १
                                                                दुह देखा दोह =दंह ; ( राज )।
                                                                उद हेला दुकाव=दुःस ; (हे १, ७२ ; प्राप्त, १६ ;
           दुस्पमसुन्तमा स्री [ दुल्यम नुष्मा ] वेपालीव इजार कर
                                                                  १६२) । असि दि । दुःस देने बाला, इस्त
              एक बताहारि सागरायम का परिमाध बाजा काल-दिशेषः
                                                                  (स्ता ४३४)। व्हिति [ शते ] इस ने पीति ;
              मार्जी जो बात का बतुर्व और उत्वर्षियों काउ का तीनरा
                                                                   १,१ : सम्बद्धः)। व्हिष्यि [वर्गिता]
                                                                   प्रतिव ; ( ब्रीय ) । "हुं पृष्टि ] नाक-स्थान
              दुरुपमा सी [ दुर्गमा ] १ दुरु काल । २ एकोउ हुआ
              भ्राताः (वन्तः इह)।
                                                                     १,१,१)। भारेता हैं;(सप्पः अर
                वर्शे क परिमाय बाला काल-शिरे, बार्गियों कल का
                                                                     क्तास १ [ क्यरों ] इस्त-जनक स्पर्तः ( चामा १
                 पोचवीं भीर टनावियों काल का दूसा आता; (टाइ४०; इठ)।
                                                                     °मानि वि [ °मानिन् ] इःव में मनीदाः, ( स
                 उम्मर ५ [ कुम्बर ] । खाव भावान, कुरिना का ; र
                 दुम्ममाण देखे दुस्स ।
                   बर्न निरोप, जिसके उदम है स्वर कर्यन्छ हैना है ; (कस्न
```

হুর্ত গর

```
Agent and Colors and Colors
                                                                                     11/23
                                            [ क्लिंग ] मुस्त्र मने, (समा )। क्लिय वृ [ लय]
                              न्तरप्रवदमान्यायो ।
                                             १ स्टिया मार्थाः १ मेलाः १ मुलि का मार्गः (माला) ।
                                            हुन्तहत्र हेन्ते सूर् नाह्य : (कीर)।
                                             इंतरिय रिह्मालीनी स्वल्यानाः (ताः १८)।
7
मुनाय मा विसाय] स्मिना की नाह मानून हेना, रेल्ली
स्म) केले बुड्या ( ( होता ) ।
इति [है] १ क्रान्य । १ न्याप् नाम .
                                               म तुम परता । पर-कृत्ययमाण ; ( गडा )।
                                              हुरोक्य वि [हरीस्य] स विवाहमाः (आ २=)।
कें [ दूरराष्ट्र ] कारण, शास्ति शास्त्र । व्यास्त्र पुरस्क
                                               हुर्रोहल नि हिरीम्त्रों जो सहमा है। (सुरा १६८)।
                                                द्रान्त विद्यापनी सन्तिष् सन्तीः (अत ४)।
सहा पर्यासक व कुण्डली" (आ ९०) ।
मा हेली हुरुमा । ( रूप्या १, १६ - पर १२६ )।
म्मान [हीसीत्य] गुरु साच, लाव लाव , ( इर ह
                                                हुन्तर देगां दुन्तर ; (गीत १०)।
                                                 हुम्म मार [इस् ] रीत होना, विहन होना । हारा ( ह ४,
ह्म सर [हु, ब्राययू] परिवाद बरवा, गंताय दरवा । दसहः,
                                                  हून मरु (हुनम्) दावित करता, हुग्य संगाता। सुसदः, (अपि),
(Fix ; (Fix = ; KIA, K Y, 23 ) ; 4A - Fix 128 ;
(成) 1 年一世初, (前10, (2))
                                                    हुम न हिल्ली १ वल, काडा, (मन १४९; कल)। २
                                                     त्व प्रवृत्ते (हरू, रूट)। "मणि पुं [मणिन्] एक जैन
  वृत्तिक्षतंत ; (सुरा वहह )।
                                                      भाषार्थ ; (गिरि)। प्रित पुं[मित्र] मीर्थरण के नाग
 दूम देनो हुम=स्पन् ; (१ ४, १८)।
 हुमक े वि [ दायक ] उत्तर्य-प्रतक, पंहा-प्रतक ; (पर
                                                       होने वर वाटिएप में मीभिंग्स्न एक राजाः (राज )। हर
   हुमण न [ रुवन, हायन ] वंधतुल, वंहन; ( वळ१, १)।
  हुमग रे १,३; राज )।
                                                        व [गृह] नंबू, पर-वृत्रीः (म २६०)।
                                                       हुस्सअ वि [हुपक] देंग प्रकट करने वाला। (वन्ता ६८ ) ।
    कृमण न [ ध्ययणन ] संबद्ध बरना ; (बर ४)।
                                                        हुम्मा वि [हूपक] दृत्ति करने बाताः (सुगर०६ः सं१२४)।
    इसण देगा हुस्सण=रुस्तम् ; (मृष्ट १, २, १)।
     दूमणारम वि [ दुर्मनाचिन ] जो दरान हुमा हो, दिहा-
                                                        हुसण न [दूराण] १ दोष, झरापः, १ कतद्व, दागः, (नंद)।
                                                           ३ वं राख की मीर्ण का लहका ; (वजन १६, १४)। ४
      दूमिय वि दून, क्वित ] वंतिता, वीहतः (स्ता १०)
                                                           वि, दीपन करने वाला ; (स १२८)।
                                                          हुसम वि [दु:पम] १ सराब, दुळ; १ पुं. काल विरोप, पाँचर
       वृत्तिम् वि [ ध्यतिहरू ] गरेन्द किया हुमा ; (ह ४, २४ ;
                                                            बाता ; "दूसमें काले" (सिंह १४६)। व्हूसमा देखे
                                                             दुस्समदुस्समा ; (सम १६ ; छ १ ; ६ )। सुसम
         ट्याकार न [है] कहा विंग्र ; (म ६०३)।
         हर न [ दूर] १ अनिराट, अन्मिरिः "सेन्व जला दिनी गया
                                                             हेतां दुस्तमसुसमा ; ( हा २, ३ ; सम ६४ )।
      ्रां (इमा )। ३ अतिनय, अत्यन्त : ध्वमहर्ग दर्गते
                                                            हृतमा देशो दुस्तमा ; (सम३६; उप=३३टी; वं३४
             (ल्यां)। ३ वि. शु. रियन, अन्तर्मार वर्तीः (सम्र १, १)।
            ४ व्यवतित, मन्तरितः ( गडः )। भा वि [ भा ] इर-वर्ती,
                                                             हूसर देशों दुस्सर ; (रात्र )।
                                                              दूसल वि दि दुर्भग, भ्रमागा; (द ६, ४३; गड्)।
             इ.म्म्लिस्यः ( त्य ६४० टाः, कुमा )। वाह, वाह्य वि
                                                              हूसह रेतो हुस्सह ; (हे १, १३ ; ११४)।
              ['गितिक ] ९ स जाने बाडा ; २ सीवर्म भारि देवडीक में
                                                               दूसहणीअ वि [ दुस्सहनीय ] दुम्म, मन्त्र ; (विश्ष
              इत्यन रान बाजा; (य =)। त्तराम वि तरी
                                                               हूसासण हेली दुस्सासण ; (हे १, ४३)।
               मक्त दः (क्य १०)। 'त्य वि [ स्य ] स-व्यतः
                                                                हुसि पुं [ हुपिन] न्तंभक का एक मेर, "रोगी
                स्वर्ता ; (ब्रमा )। धाविय पं [ भन्य ] दर्म हाल में
                मुन्ति को प्राप्त करने की योग्यता वाला जीव ; ( उन ७३८
                                                                  सन्तर् हुमी" (इह ४)।
                 रा)। "य देनो "म; (सम १, ६, २)। "वस्ति वि
                 [ चिनिन् ] हा में रहने बाताः (पि ६४)। 'तिहरूप वि
```

मच्चु ३ [सुन्यु] सरहन्तु, सहन तीत् । (सुन् ६३). 'विवास वु' 'विवास वुं 'विवास

```
्रमूचि ] १ मर्ग, जारोप ; १ मरा, एउँ , " घर
क्षत्यः (तम् १) , १८८) (तुनः (त्वने)
                                                क्षा व कि किल्का विक्तिम्प वर्षा ( मूर्व ४ मा)।
स्वतिकार के करा, (स्तेर)। वृहर्ग वर्षे
                                                भारतम् पृ [ महामह ] त्वरूप का मरिएक देवः (आ
क्लिक ( (रिंग्स्) ) । जीवपु [ चल्हें ] 👵 हैल
                                                     ् मताया पु मित्ताया ] हेर-नमः गहर का
क्रमाण करणाम १ (तम्म १३० ) । व प्रमृत्य १८ प्रम
क्रमाण करणाम १ (तम्म १३० ) । व प्रमृत्य १८ प्रमृत्य
क्रमाण करणाम १
 المستعدد والمستعدد المستعدد المستعدد والمستعدد
 , बाद्यमी ( वृत्रे पत्ते , त्राचक्ष )।
 ्रित्रका विकास का सामान ( जीव वे व्यव ) ।
  ोलम पु [ समाम ] नाम देन सूचि । ( इन १ - रहा
   इत्र)। 'लाण ह [ यान ] जन मा मान , (पना
    है)। 'जिला पु (जिला ] एक अपने निम्नान का नाम .
    (या )। हिन्तोहियहि (हा है है बात )।
     क्तायम वृ (क्तायक) कर्म सर्व ( मन् देश)।
      च्यार दिनाम ] १ इन्ह । १ वन्त्रनाः, वामान्ताः ,
      (म्लु १७)। 'तम व ['तमन ] रह प्रधा व
       इत्ता ( १४,३)। ह्या, धर मी [स्तुति]
       स्य म प्रान्तारः (प्राप्ते)। द्वत्य [ स्वते ] व्यक्तिः
        मण्डतमः (दणः , तिः विशेषः )। देला शी
        [ दना ] व्यक्तिन गणक सम , (विर १,१, टा १०)।
         हित्य न [ शहरमी हेव्यावन्यो हत्य , (ब्राम १, ४६)।
       ्दार [ कार ] देश-एए विनेश का वर्षीय हुए, निका-
          चल का एक इतः ( हा ४,२)। हातः हु [ दाक ]
          वृत्त-विरोध, देशका या पह ; (पटन १३, ०६)।
            'हाहो मी [ 'हालो ] बननानि विगय, गहिन्दी : (पा)
            १३-पत्र १३.)। °हिल्ला, °हिल्ला पुं [ दल ]
             दर्शन्यवह नाम, एटमार्थवह नुष, (राष, गावा १,१ -
              रा = 3 )। दीव वृ [ होष ] दीनिये : ( जीन
              :)। दूसन[क्ट्रप] देवन का वस, दिन्य वस ;
              (जंत ३)। 'देव पु दिव] १ पानावा, पानावा,
               (सुर १००)। व्हन्द्र, देवीं का स्वामी , (आवु १)।
                'निटिया मी [ 'निर्मिका ] नावने वाली दर्वी, देव-नर्टी ,
                 ( ग्रांत ३९ ।। नयरी मं [ नगरी ] ग्रामान्ती,
                 स्कान्ता, (पडम ३०,३४) विडिश्चोम पु [प्रतिसोम]
                  देश विदिक्षाम. अ<sup>त ६,१</sup> , वृह्यय १ (वर्षत)
                   प्संतर्भक्तप्, (र २३ - व = ० । त्यमाय पु विमाद)
                   सङ कुमारपाल क निरामः के नाम, हुन है। फालिह
                    तु (परिच्य ) तमन्द्र<sup>त्य</sup>, झत्यक<sup>र</sup> , अस्तः, १७
```

क रूप हें हर है से पेर , (जोर १ ; इन)। बहु पुं [यति] हरू गर , (सन १२२)। ध्यापतु [क्यू] गरान-वजाय एहं भाग-कुला (पहल १, ९१६) । प्रतान [तरवय] स्नारम्य, मन्द्रम्यः (दा ४,२)। वसवान[रसवा। व मैंसार्जनी नारी के एक उपानः (विशा १, ४)। व गतः का एक दणन, (पदम ४६,१४)। आय पु [साज] इन्हा (पान २, ३०, १८, ३६)। तिस प्रीमिति। त्रवर मृति । (पदम १९, ६८ ; उद, १०)। लोज, क्तांस प्रशिक] १ स्वर्गः (भगः यानां १,४ : ह्या १९४ : थर १६)। २ हेर-जारि : "वडरिया से मेरी देरलेगा पराना ? गोपना चडरियद्रा देवतीमा पराना, त जहा-भाग्यानी, वादमानता, जाइनिया, वनादियां (अग ४, ६)। छोगगमण व [स्टोकगमन] स्वर्ग में जन्मीनः " क्योदनम् प्रदे व्यवीगतम् प्रदे मुख्यस्यापाता पुरो व दिलामा" (मन १४२)। "वर व [वर] देशनामध्य मनुः वा अधित्यक एक देव : (जीते ?)। चहु स [व्यव] देशहराता, देवी : (अति ३०)। वसणा र्का [भेनतिन] १ देव-एल प्रतिरोधः १ देवता क प्रतिर यम ती हुर दोला; (य ९० —पत्र ४७३)। °संणिय वु[स्तियात] १ दव-मनागन ; (हा २,१)। ्रेव-समूद्र ; 3 देवाँ की मीड़ ; (राय) । व्सम्म पुं[मंत्र] १ इस नाम का एक जाइता ; (महा)। रो क्षेत्र में उत्पन्त एक क्षितेत्वः (सन १६३)। °स [शाल] एक नगर का नाम, (उप अहम टी)। व र्क [मुन्दरी] देवाद्याना, देवी , (प्राप्त २८) वर्षे स्मुण (पा)। सेण ३ सिन्] हुर नगर का एक रण्या जिसका दूसरा नाम महा (= - पत्र (१६) । १ तम्बन हेत्र कार्य व १ । व भाग नेय के एक भाषा जिल्हा कंतम, ती १६ । (भावन् नेमितायका ्र प्रस्कृत मुनि प्रति) सम्म न [स्व]त्व-रूप्य _{=बन्ध} का ं_{वचा ।} समुख ९ श्रुन

THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

'करना सी ('सन्या) देश-पुत्री, (वास १,८)। 'सार

हुत वृं [कहकहक] देशामी वा बेलावा, (शा ।)

किल्मिन ई [किल्मिन] कारामध्यमे में में

(य ४, ४)। 'किलिमिय पु 'किलिकि।

भाग देव-जाति ; (मण ६, ३३)। ° विकास व

["किल्स्सिया] इसं देवकिल्यिनया, (हु ।)

'बूस क' ['कुरा] चेन रिटर, वर्ग हिंद , (t)

भूरत पुं [भूर] की मरे ; (कर १, १ वर "

१६)। कुल रेवो जल; (ति १६८, ४१)

देशो 'उल्लिया ; (इर १४४) १ 'गा में' ('गांव)!"

वर्ति : (स ६,३)। मिनिया को [मिनिया]

केर, बन्तः ; (बाबा १, १६) । फिर ४ 🟋

नुरक्रांन व ब्रह्महार्थ" (दाना ११६)।

#ह —≷स्मित्र , (प्रश्नि १६६) <u>।</u>

kg t-c feg = € ; (25 00) ;

(PT == #) !

देव देव रूपा श

341,3000)1

(Tr 1, 12") \$

हेप्रतिक्ष वि [देवहुरिक] देव स्थान का परिवासकः

है।जिला के [देशपुरिका] छेता देश-वान ; (वर प्र

केंच्य सर्व (द्वारा विकार, जवतीका कामा । देशस्य ;

(६४, १२) । स्ट्र-देश्यंतः (व्यत्र १०)।

देक्नादित्र वि [दर्शित]िकाय हुमा, बक्राया हुमा ;

देश्वं (बर}दर देल्य। देखः (सी)।

रेज्य कर साथ, (रद १,१-६/३३)।

```
પદે
                                      पाइबसद्महण्याची ।
                                                 ३ प्रतित, प्रश्च में गला हुमा; (सुर १०, १६२)।
                                                 °महा सी [ °सवा ] धर्मगुला; (तः १ १११ ) ।
देसंनीत्य-दोम्बर ]
्रिपति ] प्रयद्धः स्थातक, जैनः दृहत्यः, । काल २ टी;
                                                 ट्रेसिय देश देशियम् "गडम्बने हेनिम नग्" (बाँड ;
 भड़)। प्या ति अति देशकी नियनि के लग्ने बता ;
(ता १०६ हो)। भारता हो [भारता ] देश हो
विद्योत (यह )। भारता है [भारता] एक हेन्द्र
                                                 हेसिन्जा देवा हैसिंश = देख ; ( दूर १ )।
 किले : (इत् ६)। भूतवा है भूतवा ] तह हात-
                                                  हेर्नी का [हेराो ] मन्त्र सिंग्य, मलन प्राचीन प्राप्ता नाम
 ं कर्त महर्तिः (पान १६, १२१)। व्याल पुँ [व्झाल ]
                                                    त एड मेर; (रे % ४)। भासा श्री भाषा]
प्रति, सर्गा, बेल्प समेर्स (पटन १९, ६३ )। शास वि
                                                    वहीं मर्यः ( द्या १, १; मीर )।
   [राज] देत का राज ; (इस ३४१)। वसासित देख
                                                   हेस्या व [हेरान] इउ स्म, मंग्र संस्मी वटा ।
   ीवतासिय ; ( मुत १६६ )। °विदर् को [ °विदर्ति ]
                                                    हेस्स वि [हर्य] १ देकी योग्य; १ देखने के ग्रस्य;
श्चार मन, भेन रहत्व का मा, बहुत्व, दिंश करि ख
    क्रिके समाइ (पंच १०) ।
    [चित्र] धारह, उर.छक: २ मृ पाँचरी पुर न्यानक :
                                                     हेर्ट देशे हैक्स । देहरी, देहर ; ( इस १६, ६, ति ६६)।
    : (प्र २२)। 'विसहय हि ('विरायक) हत आदि
                                                       बर्-नेश्माण ; (स्व ६, ३३)।
्रिक करिक कृत्य साति बाटाः ( मन न, ६ )। विराहि ।
                                                      हेह ईन [रेहा] १ जनेन, कर्प ; (जी २०; इत्र १६३:
    हि [ 'विस्थित ] बही मई ; (सामा १, ११ - पत
                                                        प्रम् ६१) । १ स्वित्वनिकातः (१६; कल १)। 'दय न
      भा)। विमास = (भवतार) अवह श एउ वा ;
                                                        [रत] वेदुन ; (बड्डा १०=)।
      (इट १६२)। 'विमासिय न[ 'विकाधिक ] व्हा
                                                       देहुंबलिया क्री [देहबलिका] निवारीय, मीत ब
          रं; (क्ता, इत १९६)। पहित्र ५ [पाँचर]
                                                         क्राअभिका ; (स्तान १, १६-पत्र १६६)।
          बा; (पान १६, १३)। शहिबा ५ [ शिवारि ]
                                                        वेहरपी की [वे] पंड, करंब, बारा ; (हे k, v=)।
                                                         नेहरण (मा) न [देवगृहक] देवनान्ताः ( दवा १०=
          संदरिय रि [ देशान्दरिक ] मिल देश हा, दिरेशी ;
                                                         देहली की [देहली ] चीत्र, इत के बांब की तक
          ( हर १०३१ हो; द्वाप्तर्थे )।
                                                           ( जा १२६ ; दे १, ६६; इत १=३)।
                                                          वृद्धि इं [देहिन ] मतम, तेन ; (म १६४)।
          देसन न (देशन ) इदन, टर्डर, प्रस्तः ; (इ.१)।
                                                          नेहर ( भर ) न [ देशकुन ] देशन्यन, मन्दर ; (न
            १ दि त्रहेटह, इस्वह । न्यी-व्यो ; (दन ०)।
                                                           क्षेत्र [दिया] से प्रकर में, हो ताद : ( हम र
           सिया मा [देशता ] हरेग, प्रस्काः ( राज )।
            हेमय वि [हैराक] व टरहरू इस्तकः (स्त १)।
                                                            हो दि हैं दि हो, उनय, दुन्म ; (हे 1, ६४
             १ रिवर्डान बाटा, बउडान बाटा ; (द्वार १८६)।
                                                            हो ५ [दोम्] हाव, बाहु ; (हिंठ ११३ ; र्रहा;
            दीन वि [ इ. पित् ] देव काले वाता ; ( व्यूप १६ )।
            बेलि कि [वितित् ] १ मंत्री, मितिहा मान बटा ।
                                                            दोबाँ की [दिस्ते] क्रानित ; (विन)।
             देनिय )(विते १२४३) । २ दिवडाले बटा; ३ ठवरेग्रङ।
                                                             होजाल पुँ [है] शन, रेत : (हे हे, पर )।
                                                             होर देखे हो=द्वितः ( हुत् १ )।
              देतिय ति [ देहर्य, देतिक ] देश में उत्पन्त, देश-स्वन्यीः
                                                              होंडर [है] को दोडर : (बर्)।
               (त ग्रही; मनु ६)। सद्दुं (श्रह् विके
                                                              होसिय है [दिस्ति] एवं हे स्मार्ने हा है
                                                                म्लाकं मने बता ; (४०)।
                मण स रुद्धः (दवा ६)।
                                                २ ट्राइटिंग ह
               क्षेत्रम हि [ वेशित ] १ इतिह वर्षिः
                                                             देशकर देले दुस्कर ; (मी)।
                                                             । होक्सर इं [दिन्ससर ] पा, गुला ; (सू
                 ( ₹ ₹₹ ; <sup>$</sup>₹ } ; ¶₹$ } !
                श्रीसम्र । [श्रीप्रक] ९ र्प्यक, नुर्लनः, (यान १४,
                  १६: सप् ११४)। र इसेक, पुरः ( हो १४२४ )।
```

के छात्रें भावो जिन-देव ; (सम १६३)। "हर व शिट्ट]

देव-मन्दिर: (वर ४११)। "श्दीय इं ["तिहेव]

मर्टन देव, जिन भगतान् ; (मग १९, ६)। "पर्धद र्वु ['तनन्द] ऐरहन क्षेत्र में मागामो उत्पर्तिको काल में उत्पन्न

होने वाले चौदीमवे जिनदेव ; (सम १६४) । "ाणंदा सी

[ीनन्दा] १ मगरान् महाबीर को प्रथम माता । (माना १, १४, १)। १ पत्र की पनस्हर्गों सनि का नाम : (कम्प)।

भणुष्पिय पुं [भनुप्रिय] भद्र, महाराव, महानुवाद, सरल-

प्रश्ति, (ग्रीप, दिना १,१; महा)। "यम्बि वुं ["चार्य] एड पुर्वाद जैन ग्राचार्य, (गु ७)। "रचन देख "रचन ;

(मग ६, ६)। २ देवीं का कोग-स्वान , (जो ६)।

ीलय पुन [''लय] स्वर्ग, (उन २६४ टा)। 'हिर्देव

र्ष ["प्रिदेश] परमेश्र, परमात्मा, जिनदेन ; (सम ४३,

र्ष १)। "हिपद ९ ["विपति] इन्द्र, देर-नायक ;(सूत्र

450

1, () 1

151 11

41-

वैष वेले ब्राय ; (डा १६६ वी । सात है 9, १६१ है)।

महा हि [जा जाति-साम का जानवार, (द्वा १०९)।

मरा हि [पी मान का हा ध्रहा रक्ते माना , (इा १०९)।

वैष्री की [वैषकी] भोड़न्य का साथ, मामाने क्यानिक्षेत्र का माने का किया है।

वैष्री की [वैषकी] भोड़न्य का साथ, मामाने क्यानिक्षेत्र का में होने नावे पह सावकर १० हा है मा है किया है।

वैष्री का हि वैषकी है। अपने हुए मा कत , (१६ ४४)।

वैष्री वैष्री वा=रा।

वैष्री मा हि देशियाहा] देशक वस ; (उर ४६)।

वैष्री मामा हु देशियालकार] निवित्तिकार ; (अ ४२)।

वैष्री किया देशियालकार] देशक वस हो उस विष्री का तिस्तिकार देशियालकार] विष्रा साथ हो व्यक्तिकार है।

वैष्री कियानिकार देशियालकार] विष्रा किया हो विष्री क्षेत्र का है।

वैष्री कियानिकार देशियालकार | विष्रा कियानिकार हो है।

वैष्री कियानिकार देशियालकार | विष्रा कियानिकार हो है।

वैष्री कियानिकारिकारी हो विष्री विष्री है।

वैष्री कियानिकारिकारी हो विष्री है।

वैष्री कियानिकारिकारी हो विष्री है।

भागम देश-योनि में उत्पति का कारख है ; (छ ४,४)।

देशको देशा देशह । "लंदण वं [नन्दन] श्रीकृष्य, विश्री

देयया सी [देवता] १ देर, सम्बन्धः (सन्दि १९७ ; सञ्जू)। १ परमेपन, समतमा ; (वंचा १) ।

देशय न [बैदन] देर, देरग : (मृग १६७) :

देवय देशो देव=देव ; (मरा, कारा १, १८)।

देवर देवो दिसर;(हे १, १८६ , इस ४८१)।

देवराया देश देवराया, (दे १, ३१)।

६३६ ; सुपा ४१६)। देवसिया हो [देवसिका] एक पीतरा हो, सिए नाम देवनेना या ; (पुण्ड ६०)। देविंद ५ [देवेन्द्र] १ देशें का खानो, १४: (१६२ ; बाबा १, ८ ; प्रानु १००) : १ए : जैनापार्व मौर अन्यद्यर; (मात २१)। 'स्रिं ३ [प एक प्रसिद्ध जैनावार्व भीर प्रत्यकार ; (इस्म १, १४ देविड्डि सी [देविद्धे] १ देव का वैमा, १ ई. छ ! जैन भावार्य भीर मन्यकार : (हम)। दैविय नि [दैविक] देव-मंबन्धी ; (5" भ, ११ देखों सो [देखी] १ देव-सो ; (पंतार)। । राजनान्ती ३ (विशा १,१३१)। रहाँ, र (कर्)। ४ शलारे बकानी मीर मग्ररहाँ मिनी बलाः (सन १६१; १६६)। १६८^{हे दस} जय-गर्दशी; (सम १६२)। १ एक विशास (पउम ६, ४)। देवीकय 🛚 [देवीहत] देव बनाया हुमा, "प्र^{दर्} को समझो और देशकमो लोमो" (गा १८२)। देयुरकलिमा सी [देयोटकलिका] देतीं की 🛝 मोद: (दा ४, ३)। देवेसर १ [देवेध्यर] इन्द्र, देवों का राजा ; (इन देवोद् पु [देवोद्] समुत्र-विरोप , (जीव १ ; १९) देवीयवाय ५ [नेबोपपात] भरतके व में मानी बी काल में होने वांचे हेर्देगवें जिनन्देन , (स्म ११ देव्य देखो दिव्य=ित्व , (इर ६८६ ही)। देव्य देखो दर्घ , (गा १३१ ; महा : डा ११, १ ०९७), अपूर्वा व देव्यो बाम प्रकाराहरूमी में (व ११८) । "उज, "वण, "वणु वि [४] व्योतिष-शास्त्र को जानने वाला , (वर् क्यू)। देस सह [देशप्] १ बहना, उपरेग देना। १ व बक्र—देसर्यतः (ध्या ४८१ ,धा ११,१४ संह-देसिसा ; (हे १, 🖙)। देस मुं [देश] १ वर, मान ; (छ १, १ हिन देश, अनगर ; (छ १, १ , इल , प्रम् ११) भरपर ; (जी २०६३) । ४ स्थान, जगह ,(व रे "कहा सो ["कया] जनारनाणं (हा प **ब**ाल देखे "याळ , (विदे २०६३)।

देवसित्र दि [दैवसिक] दिश-संस्मी, (मेरे १'

```
चारञ्चहत्तर हो।
                                                               होता है। के होसीन : (००३,४)।
                                                                ज्ञातिका [क्षे] क्ले क्ले ; (ज्ञ व (क्ले क्षे)) क्ल
                                                                   क्षी का के क्सानी (१८,३) हह।
--- 1
· [17] 1 17 17
                                                                   क्षेत्रिको में हि दोरिको क्रिक्स, क्रान्स्टरः (१४.
हा [ कोरावमान ] २ १००० हुम , ३ रोगव
                                                                       (4. (3=)1
                                                                     रोमियण्य न [रोविकाल ] वर्त प्रत्न ; ( नर )।
1 ( per 350 ; per 1)
                                                                      होसिन्द रि [होरवत्] होर्दुः (यन १० हो )।
产<del>业</del>研:(5-1, 11)
[कंतित्ति] क्लं क्लं हर्ने )।
                                                                       इतिमाल में हिने देवतुल देवे (स्तिवता)।
                                                                        द्रीयोग व [है] सम्बद्ध हम्म ; (च्यू ३, ४ : ह
部门中一十八一八
- [ र्ह्मप्रेसी ] रूप सुर्य रूप करण, पर्याय रूप ह
                                                                          क्राम्बेल्ड वि इ [ क्रिकेडरान ] क्रम्मः ( हम् )।
- 4, 98 ; FR ( YE $1 , FS ) 1
त देने हुस्यक्त नार्यक्त (१९५६) हुन्य ।
                                                                           होत दे [ देत ] रूल , (दे २, १४)।
                                                                             केर विशिष्ण केरे केर (माना)।
(मा)कं ह्यार, (मा)।
निवास वे दिनियासिय विकासम्म , स्टून्स, इन्स्टून,
                                                                             歌:[本][本, ] (50; 元)
                                                                              होला = [ रामाण ] दः नाम, दुरुः, ब्यान्ताः ; (स्ट
तिय है (जिन्द क्षेत्र १, १, १, १, १)
                                                                                  1, Y, 5 3, 13K; 5 393) 1
                                                                                होहिन हैं [ दोनीनिन् ] दुरु मन्प्यत्या, बल्लाद, सन्
चिर केने दुविह ; ( दन ३ ; मा ३ )।
निकी में [वे ] मार्थित का मेर्यन , (वे १,१०)।
                                                                                  होहन ह ( होहन ) हेर्नुहा, हर निकलना : ( पहा, १)।
क्तिया हेरी द्रीरियण ; (मे ४, ४३ ; =, =) ।
रोम को रूम = रम ( मेंग ; ज अ = रो)।
                                                                                     चाडण व [ पहन ] क्रांत-चन्त्र (हिन्दू २)।
हेम ( दिल्ल ) रहा , हुई में , न्ह : (ईन : हुईन), का ;
                                                                                    दोरणहारी की [दे] १ केल बनी की ; (देश, १००)
   = 10 ; 5 = 93 ) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 1 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 = 1) | 10 = 16 [ 17] 2.10 = 17 ( 200 =
                                                                                       १. १६)। व स्ट्रिक्त, एक सले वर्टी मी; (वे ६,
                                                                                       बोहाली मी [के] पह इस्म, इस्म (देश (=)।
    भव्यान देखाँ देखाँ हुई (हुई १३१)।
   होस दं [ है] १ मा, मना (१ ४, १६) 1 ? केंग्र. केंग्र.
                                                                                        दोहरा वि [दोहक] हे हे बता; (नाम्हर)।
       ($1, 14; et.) 1: $2, 27; ($1; ett.)
                                                                                         रोहण है [ द्रोहक ] रंग कर बटा, स्टिंड ( का श
   1; 57 4; 54 9, 14; 4772 ; 573, 22; 575;
                                                                                           होतल है [ केरद ] महिंदीकी के करेला ; (हा, रा
     देल है (होस्) इष, त्ल, बहु ; (हे ३, १)।
      स्मानारम वृहित्र वस्ता स्टब्स ( ११, ११)।
                                                                                             होरा म [दिया] के प्रका ; (हे १, ६०)।
                                                                                              होराहम है [ द्विचारत ] जिल्हा है। एउ हिला ह
      होमा मं [होता] रेज, रहा (इ ६, ३१)।
        होसाकरण व हिं ] इंत. कंत : (ह १, १९)।
            क्षेत्राणिय वि [ दे ] निर्मण किया हुमा ; (हे ६,६१)।
                                                                                                होरासल म [में ] ब्यं न्य, बन्द ; (में १, १०)।
          होमायर १ [हाराकर ] १ वन्द्र, बेर्ट, (हर उर्म ही ।
                                                                                                 शहित दिवेंहियों कर बक्त, इसमें बक्त (ता (१६)।
                इत २११) । २ इत्ते ई सुक, दुर ; (इत १११) ।
                                                                                                  क्ति हि [ द्रोतित् ] स्टब्स्ट कर (स्व )।
               होमारक्रन ५ [हेद्रीपारल] कर, की, (पर्)।
                                                                                                   शहित ३ (शहित्र) स्टब्ट हा सह , (शह, 102
                होनामय ५ [दोवाप्रय] सर्युल, हृद् (स्वत्रावन, १६)।
                 शीम ([ शीमन ] केर बड़ा, कर्म । उन ४३= )।
                                                                                                       ET 368)
                  शीनव ऽ [ शिष्पिक ] क ब ब वर्षे
                      बार १६२ )।
```

ते दहरे हिये गर्व हों दोणी सी दि	[३] नगा, गुमानी (१६॥
शता (विषय)। गाः (पण थ)। वेदाशियः (डाण वेदाशियः (डाण)	ति [बोर्मनियक] गिन, ग्रांडण त्र १९१)। ति [प्रीमासिक] ता मान का, (क. १
त्य के के कि तर साम के स्थापन के स्	ान १५ () है [ज्याने का में नाम (गू.)) [ज्याने का में नाम (गू.) है [ज्याने का में नाम वाना, हो लग हर्ग (गू.)) हि [ज्याने का माम वाना, हो लग हर्ग (गू.)) हि [ज्याने का माम वाना, हो लग हर्ग (गू.)) हि [ज्याने का माम वाना, हर्ग (गू.)) हर्ग हर्ग वीम व्याना वाना (गू.) (
	विद्यासिय (अप) पर , पर) । (रि परे । पर) ह पर हाज वा नामा । ह पर ह ह पर ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह

```
The state of the s
                                                      पाइस्यहरू जाते।
                                                                          ET, ET; 877; 57 9, 901; ET 03; ET =2;
, स्तर रिक्स स्वार (स्ट १,९५)
                                                                           क्षांत्रिम हि [ प्रस्य] प्रस्मार हे इत्त्व, झ्लंझेन, ह्यूंतर
                                                                            ÷13. ₹19, ₹13; ₹(£19)1
न वह (१त ०,१)। चयर इ ( प्रयर )
                                                                             त्र । अ जुल्ला विश्वत्या सुप्रकेत निर्देश वर्गाल्य क्रियंत्रस्य म
مَنْ (مَنْ ) المُعَمَّدُ وَالْمُعَمَّى المُعَمَّدُ المُعَمَّى المُعَمَّدُ المُعَمَّى المُعَمَّدُ المُعَمَّى ا
क्र प्रदेश (राज्य १, १=) । केर बहुत्य (स्प्रमा
                                                                               ( परंत १६, २६ ; मन्तु ४२ )।
                                                                              स्रोतिका की [रे] १ किन, मार्च, स्पर्ने ; (रे ४, ४८,
[ " ATT ] BILLET & L. S. STELLE, ( 211 ) 1
                                                                                 क्षा क्षेत्री। १ एक, सुन्या ही; (स्)।
م سيسر أ [ سم] من سيسم ( المر و م و و و و
                                                                                चिन्ति को [चनिया] नत्त्र हिन : (मन १० ; १३:
रो। मिलदं [मिल्यं] एक केन सुक्त, (व्यत १००९ १९)।
م ع ( ايم ) و الم المستوم ( (المبد الم ) ) و المد المبدود
                                                                                  क्षणी हों [हे] १ मर्च, कर्च, १ पर्चनः १ के वेप
रम् हेर्म स्टब्स्ट्रें हेर्म हा सरह है । (पानी
                                                                                      हुमा हेर्न के में म्यूक्टर हो हर ; (१४,६१),
११४) । १ वृत्रेषः (मर.) । ४ ति सूत्र देते बन्ताः ध्यापकः
                                                                                       ور شابعة بالحديد الدين لا وحدر عمل (فك المحد) (
स्टेंबर (स्टार)। स्तार ६[ शिला]
                                                                                      ब्यु झ [ब्रमुर्] १ वहुर वर, इनंब ; (वर् ; हे १,
  en with & te 2. ( en 1, 1= ) !
                                                                                          ११)। १ बर इत्व का पीलपा (माउ : जी १६)।
   क्ट्रदं विति ) व द्वार ( क्ट्रें १, ४ क्यू ६६ ।
                                                                                           रेड क्लार्लंड हेर्ने डीएड जाते; (मा १६)।
    218 120; 31 32 ) 1 3 Lt singue; ( fer 3,
                                                                                            कुहिल व [कुलिलयतुर्गे] वह पतुर ; ( राप )। व्याह
 १) विहं को [ व्यर्ग] एक कर्तरपुर्ताः (१ व १)।
                                                                                            वृश्चितः (दूर)। दूरवं श्वितः
वृश्चितः (दूर)। दूरविष्यां दुर्वन्तं
कृतिकः ४८)।
      क्षेत्र, वाल देशा क्षेत्र, (१ ३, ९१६) वर )। व्यह प्र
        [ 25] 4 LE 25. (44 4) 1 5 LE E. T. ( [ Let 5 , 5 ) 1
                                                                                               न्ति, परुषः (रावः स्टबः, न्यः)। दिष्टं व
         च्यान देती चाल । १ शता झेल के समझ देव एक जैन
                                                                                                [ पृष्ठ ] १ वता व हर्नाः १ वता व कंत व हरा
          कार की (पर १०)। भाषामा की (भीषामा) एवं
इसकी (पर १०)। भाषामा की (भीषामा) एवं वेरहा
                                                                                                 र प्रतियो की प्रियंक्तियां की प्रियंक्तियः
           क्ला करिए। ( हार )। असम्म दं [कामेर] एड क्टिहः
                                                                                                  का ] का, गला : (का १) । वित्र, क्लेम इं
            (न्य १)। सिरी की (भी) एक विस्तुनिर्देश ।
                                                                                                   [ चर ] पर्दर्वपानीयह राज्य, स्तुन्त्रमः ; ( हा धन्ध
             (क्रम् )। भीमाई [भीमी एक गमा (शम ४)।
                                                                                                    क्षे : डरा २४० ; व २ )। श्रूर देख धर ; ( मति )।
              भारति[ चन् रेटरं : (इन्.) । माद ति [ भारती
                १ सन के बात करने बाता, वर्त । १ दें एक केंग्री; (रेंड
                                                                                                   क्युस्क ट्रेज्यर देखें ; (बंदिः मर्डः हे १, ११ ; इस.)
                                                                                                     चनुति की [चनुत् ] कर्न का भिन्नामी व बनुत्रमी त्रवस
                 A) 15 Le size : ( [ett 3 5 5 ) !
                 मंग्राय है विस्तरहरे । व बहुत, सम्मा द्यार, विद्या
                   ११०) । १ वर्षे, क्रीतः १ वर्षे क्रियः ४ वर्षे क्रियः
                                                                                                    धगुर् )
                                                                                                        हर्म स्पर्कारतामा (ब्राम्बर स रेटा )।
                                                                                                       घटेसर हैं [घत्रेखर] एक प्रतिह जैन हुनि मेर मन्य
                       THE WAY : $ THE STORE ( 8 9, 944; 2,944)
                       र्)। १ ट्रन्स महत्त्वा न्यून हर स्ति : (क)। प
                                                                                                           (2: 9, 325; 36, 360)1
                       त्व बा नर्से दिन (क्रिक)। व्यक्तिकार्याः (क्रिक
                                                                                                         बद्य है वियो १ एक देन हुँने; १ फ्रिक्सेरपर्टिन
                                                                                                             स्व स्टब्स्सलं (स्ट १)।
                       वर्ता इ [स्त्रांत ] रूस, स्त्रात ; (ति १६०)।
                        Y) 12 TE TO ; ( F. 44) 1
                                                                                                              (स्ति १,२)। ४ में स्त्रापं १ मन सम ह
                        यांच की [प्रति] १६ने स्टूब : (क्रि.) । १
                                                                                                               و ويوام بدي يهن سينس و بديدي وي المستوام و
                           इति दलन इते हे ग्रीट ।
                                                                                                              चन्न देखे घरन्यात्मः ; (का १८: ८१, ३; व
                           प्रांचिति (प्रांचित्र) प्रांचित्र प्रांचित्र (हे 3, 962)।
                            प्रतिम हि [ घरिकी १ देवता, वर्ता ; (दे १, १४न)।
                                २ दूं मन्त्रिक हार्मि ; (भ्र. १४)।
```

पन्तः(स्य 1,१,1)। पशिरः(स्थ १०)ः चंमार कः [मुख्] यात्र कृत्व दोवतः। वंत्रासः;

(tv, 41)1

[देख] १ एक वार्वत्रद्धः र तृशेष वाहरेत क हो हत नाम ; (क्य १६३ , वंदि ; मात्म)। देव इ

क्ष वार्षेत्र, बीरक-गरा वा विशे । (इस्ते इ

```
1) १ क्ष्य म्वर्केट व प्रदुव (एक्ष १, १८) व्यक्तिय न [३] मक्त्र, स्ट, स्ट्रिंग्स (१४, ४८) सेत्र
                                                   मत , महा बन ; स १, १०४ , मन परे , दल्य मरे ;
[ النشاء كنابك
                                                    व्यक्तित्र वि [ प्रस्य] प्रत्यातः हे दाव, प्रतंत्रतेत, स्त्रीतः
 भारत का (सि , ))। चेत्र वं प्रवर्ते
                                                     पत्र : " ज्ञान प्रतिदस्स पुर्मा निष्दंति राजीस्स प्रतिसामा "
 एक भेटी : (महा)। चाल दें [चाल] मन्य कार्य-
   रह रा व हुए, (रूप १, १=)। हेर्न भ्यान (स्प्रमा
                                                       ( पट्टम १६, २६ ; मन्तु ४२ )।
                                                     र्ज्जाजना सी [रे] ९ जिनः, मार्जं, कर्नाः (रे ४, ४८५
   को [ 'ममा ] बलारम द्वीर की साम्यानी; (जीर) ।
                                                       हा १०० ; मेरी)। १ एटमा, स्नृतिनाव मी; (पर्)।
    भन, मन रि (सन् प्रत् प्रत् प्रत् (स्ताहरे १, ११६)
1
                                                       व्यक्तिहा हो [ व्यतिष्ठा ] नत्त्रप्रक्तिय ; (गन १० ; १३;
     er)। मिना ( [मिन्स] एक के मुनि, (पास २०,१ अ१)।
     व्यंतिक्षे शह मार्चितः (स्ता ४००) । र स्टिन्यितः
                                                        खर्ची हो [हे] १ मार्च, वर्ची ;१ पर्नीतः १ जो वैषा
     शर् हो शरा शता की मेंगी हो स्वका थी ; (प्रामण्ड
                                                          हुमा रंत पर भी अपरित हो दह: (दे ४, ६२),
       ११४)। १ वृत्ताः (सरा)। ४ वि. यत हेने व ताः ध्यापती
                                                           ा मर्स्तेव मंहर्येस पर्यास ते इंड्यो बढी" (हुन १८१)।
       स्टिंचमार " (स्त्य )=)। स्तिमाय वं [ श्रीसत]
                                                          चलु दंव [चलुण्] १ वलुण, बल, समंद्र ; (वर् ; हे १
        क्ल मर्पत्र का एक पुत्रः (कला १,१=)।
                                                            ११)। १ बार हाय का पीमायः (म्रायुः जी २६)
        'चर दे [ 'पनि ] १ दुंग. ( द्रामा १, ४ प्य ६६ ३
                                                             १ पू पनायानिक देवों की एक जानि ; (सम १६)
         टा पृ १८०; सुर ३८ )। १ एक राज मुना, (वित १,
                                                              कुडिल व [कुटिलपतुर] बह घटुन ; (राव)। पर
          () । चर् मी व्यनी ] एक मार्चनर प्रनीः (देन १)।
                                                              वृ ( शह ) बड़कीयः ( हर १ )। व्हर्य वृ ( व्हर
           चंत्र, यस देशा भागा, (हे १, ९१६) चंद )। चंद प्र
           [ TE STE ( ( 29 9 ) 1 3 TE STATE ( TEL 8, 3) ]
                                                               नितुष, बाहुन्क ; (राज ; परन (, ८०)। वि
            चाल हेरों चाल । १ शता मेत के समहातिक एक जैन
                                                               नुभिन्तः यः)।
                                                                [ पृष्ठ ] १ घटा हा एउसात ; २ घटा हे पीठ हे
              हारि ; (यद १०)। भगपा की [ भन्या] एक
              रिक् महिला ( महा )। असम दं [शामेत] एक वर्ष्ट्र
                                                                 बाता बन्नः ( स्म ७३)। 'पुहत्तिया सी विषय
              (गच १)। निर्दी भी (भी) एक बीट्यू महिता ।
                                                                 का ] क्षेत्र, गल्या ; (क्ला १) । चेन्न, व
               (कार )। व्हेन दं [व्हेन] एक राजा । (रेन ४)।
                                                                  [ चर ] पर्वियानीयक गाल, रपुनाल ; (
                नल वि[ चन् ] धनी ; (प्राप्त ) । भग्नह वि [ भग्नह ]
                                                                   द्या १५० वि १)। हर रेवा चरः
                १ पन को चारच करने दाता, धनी । २ प्रे एक केटी; (रेव
                                                                  चणुस्क ट्रेक्स देतो ; (बंदि; मणुः हे १, २२
                 श्रम तय वं [ श्रम्भाग ] १ महून मन्दम पावान, (वटी
                 ४)। ३ एड राजाः (दिस २<sub>१२</sub>)।
                                                                   भणुदी सी [यलुप ] कार्न्कः 'वनामी व भएदी
                  ११०)। २ बदि, सनिः ३ सर्रे किए ; ४ बस्त किए।
                                                                      क्रीवियनपुर्वितामी" (क्रुप्पप्र; स वृत्त )
                   रागान्याची परम ; १ वृत्त-विरोपः (ह १, १५७; २,१८८)
                                                                     धरोसर पुं [घनेम्बर] एक प्रतिद जेन सुनि
                    वर्)। ६ उता आदारा नद्य का गांत ; (१६)। ७
                    पत का नार्वी दिन ; (जो ४)। व्यक्तिनिरोप; (काल
                                                                       ( It 9, 8xE; 96, 280) 1
                                                                      चक्क पुं [ चन्य] १ एक जेन मुनि; १ 'मर्ज
                                                                        स्व का एक मञ्चल ; (मल २)।
                     प्रति १ [ ध्वति ] गुन्द, क्षात्राव ; (ति १६०)।
                                                                         (विचार, २)। ४ वि. हतायी १ घन
                     र्माण सं[भ्राणि] १ वृत्ति, सन्द्रायः (स्त्रेय) । १
                       कर्ति दल्ला करने की ग्रांक : अनिनिप्तिक्षणाई "
                                                                         ६ स्तुनि-मात्र, प्रतंस्तीय, ७ मतस्याडी, म
                                                                          १; इम्प ; द्वीर )।
                       र्घाण वि[ चितित् ] प्रतिह, प्रतात् : ( हे २, १६६ )।
                                                                         घणा देखी चल्र=पान्य ; ( था १८; य
                        घणिय वि [ घरिक) १ वैज्ञात, धर्ती ; (दे १, १४=)।
                          २ पूं मार्जिक हामी; (आ १४)।
```

v, E*4.

होदिसी थी [येदियी] सहकी को सन्धी। (जारा)। रोहम इंदि है] सर, याक, प्रास्ता (है के, पर.)। 'होस देशे दोसा = (१), "गीम्बरागारोगों" (इन्दर-)। द्रयनक (बना) न [द. अय] जब, बर, मोर्गे, (हे ४, ४६१)। द्रदे हिंदि] बरा जतातव ; (हे २, =-, इत्या)। दे दें दिंदि जारा मो [इंदि] जनदा, (हे ४, ४२१)। ग्रीह देनों होंदि—ोंदा; (नि १६८)।

इम निरिवाइक्षसः इमहण्य रहितः वृक्षराङ्ग्युवं बत्रको पंचर्यनाको तरमो नमनी ।

ध

ध इं[ध] दन्त-त्यानीय स्वस्त्रत वर्द-विदेव ; (ब्राव ; प्रामा)। धभ देलो धव ; (गा १०)।

चंख द्वीध्याद्दशी कार, कीमा। (तर ८६) वंश १९)। 'चंग द्वीरी असर, ममर, (दे १, १७)। चंत म [ध्यान्त] मन्यका ; (सर १, १६; क १९)।

ध्येत न [वे] मति, भनितन, भन्यत्त , "श्वेषि सम्बद्धिया" (पप २६; विते २०३६; वृष १)। ध्येत वि[ध्मान] ९ भन्नि में लावा हुआ; (थाना १, ९; भीप; परण १; ९०; निते २०२६; स्रवि १४)।

२ सम्पुत्र, सन्ति , (शि)। पोपा स्त्री है] तम्बा, स्त्रस्त , (हे ६, ६७)। पोपुत्रस्त्रप्त व [प्रस्तुत्रस्त प्रतान का एक वन्त, वो स्नाव स्त्रपोपुत्रां नाम ने प्रति है (बुल ६६८, कृष २०)। पोपोलिय (स्त्र) ॥ [स्रोमिन] सुनाव हुसा , (स्व)।

हत पंत्रपूर्ण नाम में प्रतिक है, (ब्रुल १६८, ब्रुव १०)।
पंत्रीतिक (पन) || [धिमिन] प्रताब हुमा , (स्त्र)।
पंत्र तक [प्रतिक्ष] निव्ह होना । पंत्र, पंत्र १, (बर्षु)।
पंत्र तक [प्रतिक्ष] १ नाम करना । १ ए करना पत्रपुर (सन १,१,५)। पत्रिष्ठ (सन १०)।
पंत्र तक [प्रतिक्ष] में प्रताब । चेनाडित है [मुक्त] परेपक ; (क्य) । चेनाडित्र है [है] क्लार, तर (दे हे, हरे)। चारत कहीं चारतार] क्षण्यत् कार कर करत, की हर करता । क्र—प्रत्येत, (कर १ ; क्या १ ए, हर) और) । चारताहर है [चारताहर] च् ब्राक्तार

धनवनाइम हि (चन स्तादित) वर् वर् महार (कन)। धनसम्म देश चाउर । वर्-स्तरम्बर (ति ४६=)। धनसम्बर्धा हि (है) अक्स हुन मध्यापति। व धनसम्बर्धा व्यवस्थित स्तापति।

प्रज्ञ के प्रयान्त्रज्ञ (इन)। पढ़ देशां त्रिड़ , (दे १, १२०, वास ४१,६१) १,६६) पढ़ातुल } वु [भूटयुस्य] तास द्वार क त पढ़ातुल्ल } (दे २,६४ । कार १,११।इन,१ स १५८)। पढ़ातुल्ल है] वर, वड़े हे तीदे का वर्रों, (यर ११)

घड व [व] बा, यहे के नी के सारों, (व मा में घडडडिय व [व] व रिम, निरा, स्वारा-त्रेयन कर्माः क्षाया व [धव] व रिम, निरा, स्वारा-त्रेयन कर्माः क्षाया व [धव] व रिम, निरा, स्वारा-त्रेयन कर्माः क्षाये के कर-विका-योग्य परार्थः, (का) । १.5 याने क्षाये क्षाये कर्मायः व रार्थः, (का) । १.5 याने क्षाये क्षाये क्षाये व रार्थः, (का) । १.5 याने क्षाये क्षाये क्षाये क्षाये क्षाये क्षाये (क्षाये क्षा

ं वेदरमं द्वारं वचवरी मश्वर (१ (दन १)) पि दी निजि विज्ञान, सर्गार, (ज १, १)। दिव [गेरिन] पन का करिजापो. (दव १-)। दर [चेरा] कहा वार्तवाद, र दोरेन गोदेश ह र देव नाम, (अन १११, वीर, मारत)। देव ही एक वार्तवाद, अविस्त-वक्षर का शिगः (स

सुनिः (कल)। "णीर पुन्नो ["नन्दि] पुना रेग

(t v, e1) 1

```
The state of the s
                                                                                                                                                                                                        سيند = ( مَنْ السيم، مسرية من رات ، الترافي).
                                                                                                                                                                                                                 4. 3. 5. 4. 5. 3 . 5. 62. 4. 1. 1
                                                                                                                                                                                                                 منتها والمتعلق المتعلق والمتعلق والمتعل
المستران والمرابع المرابع المر
                                                                                                                                                                                                                         The first state of the same to the same
BUT BY MANY TO FAMILY OF THE PROPERTY CONTRACTOR
                                                                                                                                                                                                                              6. ( . mil. ) - mil. ( . mil.) 1
                                                                                                                                                                                                                                  En 1 = 2 ( E. 4) | 3 circle = 2 Extrato 2 Ext. ( 45.) |
      عالم و الله الما المناطق الما الما الما الما المناطقة الم
          هذا إيساد في يسبع من جد قديد (مستو م مردم في
             12 2 (2) 8 ms might (mm 8 ms) 1 s ms grains
                                                                                                                                                                                                                                      عَسَرًا إِنَّا الْمُ أَاءُ لِمُسَاءً عُسُوا وَ مُنْكُمُ الْمُ الْمُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ
                Arrest on their demand to the state of the state of
                                                                                                                                                                                                                                              दुक्त राहे के की कर रोहत ही गर , (११,६९).
                    من و (مورد) ، منهم حد مند . (مورد ).
                         the section of the section ( section ) !
                                                                                                                                                                                                                                                        ११)। १ वर द्यं की दीमान, (मान हो १६)।
                           الملا ال المام ) و الأند ( المسلم ، م سمه دو :
                                                                                                                                                                                                                                                           र दें जनारमंद सी दी त अरि (स्म रहे)।
                              til der te for for the sending (fire of
                                                                                                                                                                                                                                                            क्रीहरू व्हिल्लकर्तु । दर गद्रा : ( राद )। मात्र
                                  () विषे के (कर्ता) मा मार्गर प्रती, (रेत १)।
                                                                                                                                                                                                                                                               विकास हर्ता (द्रा)। ज्या विकास
विकास हर्ता (द्रा)। ज्या विकास
विकास हर्ता
                                    भित्र मान देला आते (१ ४, ५)६, बंद )। बार प्र
                                        [ tits ] & Lie My ( (4) 4) 1 & Lie a. 2. ( (4) 4 1) 1
                                                                                                                                                                                                                                                                    المراد، والمراد ( ويم : ويم ( , ده ) ا " الرو
                                           क्यान देने प्राप्त है है असल हो लेखे सामग्रीन्य एक लेख
                                             स्त्वार ( पर १० )। असमा श्री असमा ] ग्र
                                                                                                                                                                                                                                                                        ितिती । तथा हा के सता । इता ह क्षेत्र ह सा
                                                                                                                                                                                                                                                                          र र है (स र)। पुनतिया ही प्रयसि
                                  र्ट्यमंग्ल, (कार)। क्लाम ३ (कामम्) एव व्यंटर.
                                                                                                                                                                                                                                                                             बा क्ला तला : (बला १) । चिम, छो
                                                   (न्या ) । निर्मा की [ 'थी ] त्व ब्रेंट्यु मरण ।
                                                                                                                                                                                                                                                                               [ यह ] प्रशंदानाम गाम, रहनाम ; ( वर
                                                     (सन्प)। क्रेन दे [ क्रिन) एवं राजा । (हेन ०)।
                                                                                                                                                                                                                                                                                  ही। बता १५० : वं १)। श्रेर हेना धार ; (म
                                                      भारत ( यर ) एनं , (इन्हें) । भारत हि [ भारत ]
                                                             १ एक बरे प्राप्त बनन होता, हरी। १ दें एक हेर्टी, (देश
                                                                                                                                                                                                                                                                                धनुस्क वितर देती ; (बरि; मनुः हे १, ११ : इ
                                                                घर तय है [ चन्द्रत ] १ क्यूंड म्यूय क्यूंड (बर्ट)
                                                                                                                                                                                                                                                                                      धमुदी सी [धनुर] कार्नेक, चिमामी व वसुरीमी
                                                                     १९०) । वे बहि, बांसे, १ सर्वे रिकेट । ४ बाउरिकेट
                                                                                                                                                                                                                                                                                              कारियमार्डिनामा (क्रारथप, स रूपन)।
                                                                        हारिक्या वहत , ६ वट-रिलेव, (६ १, १४०) व, १८६,
                                                                                                                                                                                                                                                                                           चर्तमा १ (चनेम्बा ) एवं वर्तनं जैन मुनि मीत
                                                                           बर्)। ६ तमा सामा ज्यम का साम ।। इक । व
                                                                                                                                                                                                                                                                                                     ( B. d. see , 18, 280 ) 1
                                                                            सत का नार्रीत (जार)। व घीत सिया, कार
                                                                                                                                                                                                                                                                                                धरण । [ धन्य] । एक देन मुनि । 'महन्यां
                                                                                                                                                                                                                                                                                                        हुत की एक प्रत्यन्त प्रत्यु ।
                                                                                  क्षाद्याः स्टब्स् । ।
                                                                              प्रांत पु [ ध्यांत ] तथ क्रताय , ( कि १६०
                                                                                 र्मान की (मरित) देश सम्भाव (की ) है
                                                                                                                                                                                                                                                                                                               ् ब्लुप्त राज्ञ प्रस्तानेत्त् , भरव्यत्रास्त्रः, सारक
                                                                                          कर्ति देन्द्रम कर है है जात , के मूर्ति कर कर है
                                                                                         জনি হিছিল ক্ষ্মি ক্ষ্মি ক্ষ্মি হিছিল ক্ষ্মি হিছিল ক্ষ্মি হৈছিল ক্ষমি হৈছিল ক্
                                                                                                                                                                                                                                                                                                              च्याच देना च्याच्याल . आ १० ठ ४,
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       ----
```

```
नम-स्यान वैष , (विम १, ८) ।
       ा धना श्वास सा गृह सन् घनता सी [घर्या ] एह मी स तन् , (ता
 (सर१)।
                                   ३ दब बैद, धम एक [धमा] १ धमना, भाग में ताना । १ रा
धण्याउस ति [दे] । जिमक्षे मालीर्सर दिया जना हो
                                                हे बायु पूर्वा ह प्रवाह, (सहा ) ह यतेह , (इर
बहु; १ वु मागोवीद , (दे १, ६०)।
घन वि [दे] । विदेन, स्थापिन ; (भावम )। २ पू
                                               वरु—धर्मत, (निष्टु १)। हारु—धानमाण,
यमप्यति-मिरोपः ( जीपः )।
                                               वावा १, ६ )।
                                             धमग नि [,धमायक ] धमने माता , (सीत)।
ति [ पात ] निति, स्वाति, (सव)।
लिहा १ [धार्नराष्ट्रका ] इन को एक जानि, जिनके
                                             धनजन [धनन] १ माग में ताला, (प्रक
पुढ़ धीर वाँच बाने हान है , (काद 3, 3) ;
                                              ३, ०)। ३ बायु-वृत्तः ( कार १, १)। १ हिः
तों की [ पात्री ] १ थाई, वस्ताना , ( स्टब्न १३१ )।
                                             धमनी , (राज् )।
                                            धमिकि सो [धमिन, नी ] १ ममा, पमनी, १३
र्षकी, मूर्जि, ३ मामउदी-इस , (हेर, ८१);
                                           घमणो } विशः (विशः १, १, उसः , ४४ १०)।
                                           चमचम बह [चमचमाय्] धम् पम् मनाम हत
र द [धनूर] १ इस विशेष, खनूर; ६ न सङ्ग्रा
                                            "धनस्मर निरं यश्चितं जावर सुत्रीर मक्त् सिं।
रेम वि [ धासूरिक ] विगन बन्ता का नेना हिना हा
                                           ( डार ६०३ ) । वह-प्यमध्येन, प्रमयमार्थन,
                                           धमवर्मेन, (नुवा १९४, नाट-मानुरी १९६; याचा १६)
                                         धमान ३ [धमाल ] इम-तिगेर, (फार १०)।
रि ( ध्यम्म ) व्यवस्थान् सह , (हे ३, ०६,
                                         धमित्र नि [धमातः] जनमं बाबु मर दिवा वता ही हा।
                                          "पनिया समा" (इप १८६ )।
हेना धरण=परव . ( दूसा , प्रान १३ : ८४,
                                        थतम पुन [धर्म] १ शुभ वर्म, कृशव-त्रवह प्रदुशन, वहला,
[भान्य] । पान, सनाज, सन्त्र , (३४) , नुर
                                         (अ १) तम १,२६ मानाः सम १,६, प्रान् १२, ११४ व
                                        १०) १ दे तुत्र, सहर, (तुर १,६४, मार ४
)। १ थन्य-शिंग । "इत्र-व न्यः प्रत्नेव क्यांचा"
                                        प्रहाते, (चित्र १०)। र ग्रम, प्रशंप, (ग्रः
१६)१ १ वनेना, (नर्न ६)। कोड पू
                                       सम्यो प्राथं, का जोन का सनि-किया में महार
] बाज में क्षाने कता कार, कार-विवेद, (जा
विदि पूर्वी [ निधि ] यत्र स्तान का वर,
                                       है, (तर १)। ६ वर्गमन मानरियो क
( व १, १ )। क्यात ३ [ चलाक]
                                       यसाहर्व जिल देव , (सम ४३, वर्ष्ड)। ,
                                      ( ३१ ०२ = ४१ ) १ = हेर्स्स, सर्वता, ( सार
क नार, (यह १)। रिक्रम व [ गिटक]
                                      पत्र, समह, (तुर १, १४, पास )। १.
इ मण, (बर १)। पृतिय व प्रितिनः
                                      मुन ' ( बळा )। ३३ ,संबहतारेस., सब हा धर
ए दिना हुमा सनाज, सं ४, ४३० विकित्यन
नवान्य ] विष्टनं स्तात्र . (४० ४)।
                                     (सत्र ४२)। १२ झन्तार, र्गन, उत्तरण , (
                                     देल १ [ युत्र] ति.व. (शह) । उर न [ युः
< [ विक्तिकात्रामय ] क्षु म ब्रहण हुमा
                                    'कार ( १४ १ ) । वंशित्र ५ ( वर्ग
· ः) । सर्वात्व ( सर्वात्रवास )
                                    मं का बाह कवा, भव । कहा म किया
क्षेत्र में क्षेत्र वह राज्य , ( व र व र
                                    ल्द्रकृत वर्ष , क्या , सम् १३ . वर्ष ३
ल्यान ] इस्तर, एक म्यून के इस
                                   '[इतिन्] संदर राजकन सर राज
                                     स्थारतम् भः ) कासवित् क्या
Lad the mandadistra
                                   स इ. ब.च. ब.च. वात १ ( कात ) न ।
                                   ल्बन अन्य दिकः । कृति ।
                                 िक्शियित । १९०० है।
```

```
e ș,
                                               (मन २२२)। विवासय वि विवासको पर्न क
                                   पार्थसहमहत्त्रवो ।
                                               <sub>निग</sub> प्यतः ; ( नग )। 'पियासिय वे [ पिपासित ]
                                                धर्म को ध्यम काउर, (तेंटू)। 'पुरिम ३ [ पुरुष]
प्राति] पर्ने नेरुपानि बला, प्रनेत्मः (ग्रीवः । सुरुः पु
                                                वर्त-प्रतिक पुरुष: ( हाँ ३, १)। वरुज्ञण वि
गुरु] वर्नवर्णक गुरु, वर्नवर्णः (११) ।
                                                 [ प्रस्तुत ] इते में मानना ( गाना १, १८)।
[सुर] धर्न गलक ; (यर)। घोम पु । छोप
                                                  च्यवाइ वि [ प्रवादित ] धर्मीत्रवाक ; ( मानानि
होत केन मुने भीर भागपी के जाम ; (भाव १: ने
                                                  १, ४, १)। 'लाह वुं प्रम] एह जैन मावार्य ;
कुम्पदर मृग ११, १९)। व्यक्त त [व्यक्त]
                                                   (न्यन १८)। प्याचाउपवि [ प्राचादुक] यमंत्रवदः।
क्लिनेत का पर्म-प्रकारक पर : (पत्र ४० , सुना ६० )।
                                                   वर्मारकेगर ; (मायानि १, १४, १ )। श्रुद्धि ।।
'सरकपटि पं [ सक्तर्यतिन् ] हिन्देर, ( सायु १ )।
                                                    [ वुद्धि ] वार्निक, वर्ननित ; २ वं. एक गजा का नान ;
 चिकित हैं [ चिकित् ] जिन मगदन्त, ( कुन्मा ३० ) ।
                                                     (डर ४२= हो)। 'प्रिस पुं ['प्रिन्त्र ] भगवन् पट्न-
'अग्नी मा ['अननी पर्न के प्राप्ति करने वर्ता मी, वर्त-
                                                     प्रमुका पूर्वमक्तिय नाम ; (सम १११)। य वि [वि]
  केरिक ; (पंचा १६)। 'जस पुं ियरान् ] जैन हर्नि
                                                      धर्म दला, धर्म न्द्रगर ; (मन १)। रह स्रो [क्रीच]
  किंप वा नामः (भाव ४)। जागरिया मी [जागर्या]
                                                       १६र्न मिनिः (धर्म २)। २ वि. धर्म में हिंच वाटाः
   ु पर्न-विन्द्रन के लिए किया जाना जनामा, (सम १३, १)।
                                                       (छ १०)। १ ५, गृह जैन सुनिः ( निमा १, १; उम ६४=
    र जनमंत्र छात्र दिन में दिया जना एक इन्सर ; ( इन्स )।
                                                       ही)। ध्वाराजनी का एक राजा; (मानन)। लाम पुं लिस)
                                                        १ धर्म की प्राप्ति : १ जैन मानु द्वारा दिया जाना आगीतर :
     इन्द्र-ब्दन, (गप)। र हेन्द्रन केन्न के पांचने
                                                         (सु ८, १०६)। 'ल्लामिय वि [ 'ल्लामित] जिसको
     क्तिय वं िञ्चती
     मर्था जिनन्द्रव : (मन १५४)। उन्ह्राण न [स्त्रान]
                                                         धर्मतान कर आगोर्शद दिया गया हो वहा (म ८६)।
      यमं रिजन्दन, गुन व्यान-विशेष; (मन ६)। उन्हें पि
                                                          'छाह देखों 'छाभः (म ३६)। 'छाहण न ['छामन]
      वि [ ध्यानित्] धर्न ध्यान ने पुण्डः ( मात्र ४ )।
```

(म ६६)। लाहिय वेता लामिय ; (म १४म)।

चंत वि [वत्] धर्म बाजाः (माचा)। वय पं [व्यय

र्यायं रान, धनाराः (सुरा ६९३)। वी, विदेश । प्रतियं रान, धनाराः (सुरा ६९३)। विदेश । विदेश प्रति विदेश ।

[बीय] यनंवर्ष ; (वंबन ६)। 'स्त्रय देनो 'यय

(दुन ६१७)। 'सदा मी ['भ्रदा] धर्म-रिन्वतः, (र

१६)। स्तवना हेर्से सन्ता; (मा ५,६)। स

व [शाला] धर्म-प्रतिसद्द नाम ; (रम ४)। स

मी [संग्रा] १ पर्न निजान ; १ पर्न सुदि ; (प

३)। सार्यह पु [सार्यि] पर्नेष हा प्रानंह,

केर्य (पट २३; पीरे)। भारत मी [शास्त्र]

स्यतः (कर १३)। सील वि [शील] प

(चूम २, २)। निहि वृं िसिंह] १ नतन

जन्म का पर्वमारिय नमा ; (मम १११)। २

वृति ; (व्या ६६)। सने पु [सेन] ए ह

विनाम नन् (नन ११३)। भागर हि [भ

इन का प्रयम व्यक्त, ज मु विक्रान्त्र, (समे र)।

धर्मेडाम-स्य भागीवीर देनाः

हित [परिन्] धर्म का समितायों ; (सम १,२,२)।

पायम वि लियक] १ वर्ष का जनाः (सन १ १

(रेन ४)। 'एगु वि[जी वर्म का ज्ञातः ; (रंग ४)।

नित्यपर १ तियंकर के जिन भगवन् ; (दन के) परि)। त्यान[पत्र] सम्बन्धि, एवं प्रकारका

हिंदगरं (पड़म ७९, ६३)। हिंद देशों हिंद

(रवा ४)। हिवकाय ५ शिहनकाय । गनिनिक्या

में महायत पर्व जाने बाता गृह बस्सी पहार्य; (मंग) । दिय

दि [द्य] यमें की प्रति करने बाटा, समें देगक ; (नत)।

'दार न [बार] वन कः टनन ; (रा ४,८)। दार।

इंद [दार] धर्म-पनाः (क्ष्म्) । दास पं [इस्स] ।

नामन् महत्वारं का एक शियनः मीर उपने मन्त्रा का कर्न ।

(स)। देयपुं दिय] एक प्रतिक जेन मायार्थ ;

(मर्प =)। द्रिस्ता, द्रेस्तव वि[देशक] धर्म

चा अरेग करने बड़ा; (राज : नग ; पटि)। (धुरा)

नं[भुरा] वर्त स्व पुन (टावा १,=) "नायम

क्तं 'सायम, (स्त) । 'विडिमा मी ['प्रतिमा] १ वर्न

के प्रतिका , र पर्म का सापन भाग गरीन ; (छ ९)। प्रवित्त मी अतिति] मर्ने ही प्रमन्ता , (इस)। पदियों (जी) मं [यन्त्री] यनंत्रकी, मं, सर्या

```
" । पुरान ] यन का भानत्त्व, (यम 1)। ° श्युक्त
                                                   पार्वसद्मद्वणयो ।
          ति [ भनुत ] धर्म का मनुसाहत करने वाला ; (सुम १,
          रे। रास १, १८)। भेषाय वि [भाग ] पर्न स
                                                           घव दुन्ती [ध्वज] ध्वजा, वताह्म (हे १,१४,
         न्त्रात्य करने कता ; (भीत ) । "यस्यि 3 [ "वार्य]
                                                            १६ ; फह १, ४; मा १४)। सी-था ; (११
         पन्रा पर (स्व ११०) । विताय ३ [ वाद ] १
                                                           ३[ चट] व्वज्ञ क वस ; (उसा)।
        पर्न-एकः, १ बादहाँ जैन संय-सन्त, दृष्टिकारः (अ १०)।
                                                          ध्य व [ है ] नर, असः ( हे ६, ६०)।
        वितारनिय वुं शिवकरियक न्यायाचीन न्यायः
                                                         धयण न [दे] रह, मः ; (दे ६,६०)।
       रणं, (पता ११७ )। भेहिगारि वि [ भेविकारित् ]
                                                        धयरह वं [ धूनराष्ट्र ] हन वजी, (वाम )।
       वर्ष-स्त्य के मोग्य, (वर्ष १)।
                                                       धर सड [धू] १ मारण करना । १ पहाना । शय, श्व
     पाम रि [पार्थ] पर्न-दुश्य धर्म-मंगर् , " व' पुण तुर्व
                                                        ४, २३४; ११६) । को चरित्रह, (ते ११४)। हर
     धरेति तमा पाम " (महानि ४ , ३ ४१)।
                                                        घरत, घरमाण, (वण, माने, मा जुर)। बरा-ना
   याममण पृक्षि वित्रक्तित्व १०३१ सी । वस्म
                                                       घरत, घरित्रतंत, घरित्रजनाण, (वे ११, ११०)।
                                                   द्रशः राज , कह १, ४ , भीर) । संह - परितं (प्रार्थ)
  धाममाण हेते धम।
                                                      ह—चरियञ्च, (जा १७३)।
  घमाय ४ [ है ] १ कार अंग्रुत का हम्मनय, र कारो देवी
                                                  । घर छह [ घरव् ] ईविशे स्व वाजन हता । सुः
पित है [ पर्मिन] १ वर्म-नुष्क, इच्च, परार्थ । २ वार्मिक,
                                                   घरन[दे]तन, सं. (दे १, १०)।
 वर्ष-नावव । (द्वा २६, ३३६ , १०६ , काता १०६ )।
                                                घर व [घर] १ मनमन् पस्ताम हा निना, (का ११
चिमम } वि [ चामिक] १ वर्म-नगर, वर्म-मायव, (ग
                                                   र मनुरा कारी हा एक राजा , ( वासा
प्रतिमा रे १६०। तर व्हर, कहर, ०)। २ वर्ग
                                                  वर्षन, व्हार , (में ८, ६३ , वाम )।
ग्रामकारी । (तर १६४, पंचा ६) । १ वासिक नांबन्धी ,(टा
                                                चर वि [ चर ] पारण करने वाला , (
                                                घरमा ३ [ दे ] कतन् , (दे १, १=)।
मिंह वि[ प्रामिष्ठ ] ब्रांभव पार्मह, ( बीव , तुव
                                               घरण १ [ घरण ] १ नाग-इनार देती का
                                                स्द , ( स २, ३ , धीव ) । र गानगोर
महि वि [ घर्में र ] वर्ष-दिय, ( बीत) ।
                                               हत्त्व सा एक पुत्र , ( धन १ )। १ गाँउ।
महिति [ प्रमीदि ] क्यंह जन का तिन । ( बीत ) ।
                                               व्हत्त्री, बुग ११६)। वस पान हर
कार हिन [प्रस्तिक ] १ मना हम, हैं से हमा हम,
                                              है। नार्थ (, कामा ४=)। ४ वोजर ने
ल्ड ) ( बचा बड़, मींस ३) । १ ई एक केन सुच ,
                                             <sup>प्रतिमाच</sup>, (जार), ( धरना इन, ह
                                             बर्रोगन , (का १२)। + ग्रानने वा गामन, (
तर इ[ यसेंग्यर ] मन्त्र उन्मर्वकीनान् में सन्त
                                            न वि बारव काने काना , (शना)। एस है।
                                            धार्षेन्त्र का तन्त्रन् वर्षन् , ( ग्र १० ) ;
क्यान एक जिल्ला , ( वर ०)।
                                          धरणा हो [धरणा ] देना धारणा, याँद)।
ति [प्रामंतर] । कृतं, तृतों से क्षेत्र , (बाजू
                                         घानि मी [घानि] १ मनि, वृतिहें, मीद हरें)
الر وي مدود منشش وساله به و و و و و و و و و و و و
                                          ममन् मन्त्रम् सं गणनं हो , (मनि १०/। है
ना। व [पर्नार्शनह] यर्थ व जांग इत
                                         बन् बनाम हो शक्त विन्ता , क्या १८३ , ता ।
नय) बाहा (माना १,१६, व्हार १०३, वर्मही
                                         मीत वृह्मित्र] वर वर्ग , युव , व्य
थें। रत राम, स्त्र रच राम। रह पर्यंत,
                                        [सर] मृत्र (गल १०१, ८)
                                       ियर ] । सार, परव , स्वा । । वर्ष
                                       कर्ण बालह वृद्धवस्य एक (स्थार स्ट्री)
                                       धानवर [ धानवर ] वर वर टा
```

```
1, 8 8
                                         श्चरम न [ श्वायन ] चैन, नत्त शत्कि च चल्ला
                               पाइअसहमहण्याची ।
                                           भ्रवन दं [वे] स्वज्ञत्त्रे में उन्म ; (वे ४, ४०)।
्रं ['क्राप्ति] मेर पर्वत ; ( क्रान्त १ ३) । °श्रता
                                           अवल मि चिवली १ करा, मेत ; (राम ; चुना १००६)।
धरा] मगरन् विन्तरनाय की प्रथम हिन्ना इ
                                             २ पुं टन्स बेतः (सा ६३=)। ३ पुन जन्मितः (सित्र)।
१६१)। भन्न र नित्र मेनित्र, मन्तरः
                                              भिति हैं [ निर्दि ] हेउन पीर ; ( की पर ) । जेह
क्षात्।। चर्षं [चिति] नरी, गतः
                                              व [ भीत ] प्रसार, बर्ज ; ( रूबा )। व्यंत्र वुं चिन्ही
त्राप्ते। वह न (युष्ट) महत्त्राह्न हुन्ति हुन्त
                                               एक देन दुने ; (१४०)। 'स्व पुं [ स्व ] नगड-
                                                ग्रेतः (द्वा १६१)। हर न [ गृह ] प्राप्तरं, मस्त ;
हा)। 'हर देवों 'दर ; (म ६, ३६)।
निंद हुं [ घरनेस्ट्र ] माग-त्रमारी का दिल्या दिला क
                                                चयल गर [चयलम् ] मंदर काना । घरतरः (ति ६६७) ।
न्नी हेते. घरनिः; (प्राप्त २३, वि ४३; ने २, २४, |
                                                 घवलस्क न [घवलार्क] प्रमानिकान, जो मानव्य
यत सं [ घरा ] इतिही, मूनि ; ( तहा ; दुन २०१ )।
                                                  . चंतरक " नाम से सुनता में प्रतिद है ; ( ती ३ ) !
चर हर वं [ श्वर] वर्षेत्र, वहाड ; (मेंह, कर्
                                                  श्यक्ण न [ ध्वलन ] मंदर करता, भेरीनकाय ; (कुमा)।
                                                   चचलसंडण पुं[रे] हेंच ; (रे ४, ४६ ; पाम )।
 ो= ; म १६६ ; ७०३ ; इत ज्ह्ह हो )।
 चर्णावन वि [ चारित ] पहत हुमा ; ( म १०६ ; मुक
                                                    चत्रला की [ चवला ] ती, तैया ; ( ता ६३= )।
  ३३८ : मंति ३४)। १ स्वानिकः " ब्रावितं मञ्च"
                                                  चयलाम मह चियलाया मंदर हेला। बह -चयलामंतः
                                                     चयलार्य हि चिचलायित ] १ टलम हैत हो तह जिनने
  योग्न ति (धून) १ यास हिया हुमा; ( ता१०१ , स्ता
                                                       कर्त किया हो वह ; ३ न हतम हुमन की ताह मानाय ;
     १२२)। व गेहा हुमा ; (स २०६)।
                                                       चवलिम देनी [चवलिमन्] संस्तृत, गुरुवा ; (स्त
    चित्रदंत देवा घर=१।
     यरियां सं [ श्ररियों ] इंदियां, मृतिः ( पान )।
      घरिम न [घरिम] १ जो नगर में तैन कर देवा जायबरः।
                                                        वयस्य वि[ वयस्ति] संदर्गिया हुना ; (अवि)।
     चरित्रमाण 🕽
       (भ्रा १८; याचा १, ८)। १ सह, इरजा; (याचा
                                                         घवली मी [घपली] दलन मी, भेर मेपा; (महर)।
        १,1)। १एट लह का बार, नीतः (को २)।
                                                         धन्य पुं[रू] वेग ; (रू k, k')।
                                                          चल मरु चिल्] १ पला। १ तेने जाता। १ प्रेश
        परिस मह पृथा। मंदा हेला, महिता हेला। २ प्रान्नतः
        घरियञ्च देतं. घर=५ ।
          इन्स, प्रियं काला १ निजना, संदद हेला । ४ मक हिंता
                                                           चल १ [ चल्] ' पत् ' हला माराज, तिले का माराज
           कता, मरत । १ अमर्थ करता, महता नहीं करता। घरिन्छ।
                                                             अ अ L करें के प्रतिक्रों में ( नहां ; क्रांस १, १ --
           भ्रतिस्त व [ धर्मण ] १ परिनन, भ्रतिसनः २ महिन, स्त्रहरी
                                                             श्रसकत पुं वि देश की परगरर के कावाल, पुत्र
             े कन्ते, कर्रहरूकाः, ४ हिनाः १ वन्त्रतः, वीतनः, (निवृ
                                                              मू क्यांची । अने अपहिम्यास्यां (आ १४) इत्रहत्र
             १ ; राव ) । ६ प्रान्तवन, इत्युक्त, घंत्रवर्ष ; ( क्रीर ) ।
                                                              श्वसंक्रित्र हि [ है ] स्त बताज हुमः; (आ १४
                                                               धसरु हि [है] हिन्तु ; (हे ४,४=)।
             प्य र्व [ प्य ] १ पन, ज्वला ; ( यूटा १, १ ; व्य )।
                                                               बाल [बा] बाद सर। दर, दम, द
             घरत देखें, घर=१।
               १ वद किया ( परा १ ; हा १०३१ हो ; कीस ) ।
                                                                  ( q. ) 1 fina ( fix ) 1
              श्चक्क प्रव [ दे] पहंदर, नव हे व्यक्त हेला, पुरुद्धा-
                प्यक्तिस्यवि शिवस्य हुमा, भवते व्यक्त वन हुमा, स्वि
```

```
(मिति पह्)।
                  ्राची वान काना, विन्तुत्र काना। धार्मानं
                                                   . पाइअमहमहण्णयो ।
            धा एह [धाव् ] १ ही ह्या । ३ गुदकरना, याना । धाद,
                                                             थाडिय नि [ नि मृत ] बदर निहता हुम
             पायर, (ह ४, २४०)। मनि पादिर , ( पर्)।
           ाम वि[ धामित ] होत हुमा, (सं ८, ६८, मति)।
                                                             धाडिम पुं [ ने ] मागम, बगोना ; ( रे ४,
          धारतमृद्ध देवो धायह-सङ, (महा)।
                                                           घाडिम नि [निस्मारित ] निर्मित, रहा
         पारं देशो धनी; (हे के द्व, ज १४)। ४ णाई वा
                                                            ( बज्य १०१, १०। म १६= ; व्य ४१= वो
          बाम करने से प्राप्त को हुई मिला ( टा ३, ४ )। ६ छन्
                                                          घाडी सी [घाडी]। १ कहमी क स्व ; (
         वितेत , (तिम )। विंड दु विवड ] यह का काम कर
                                                           प्राप्त )। २ हमना, माहमण, पाना ; ( हन् )।
         मात की हुई मिला, ( पन (७)।
                                                         घाल देखी घरणाच्यान्य , ( वजा ६०)।
       धार् देवो धायहं . ( उप (४८ हो ) ,
                                                        घाणा मी [धाना ] धनेना, एह जान हा ह
      धात १ [ चात्] १ मंत्रा, बाँसं, नाबा, तोगा, सँमा, संना
       भीर जल्ला वे सात बन्दा (जो ३)। २ गेर, सननित्र भारि
                                                       घाणुरक दि [ घानुतक ] वनुरंद, बनुरंदा में हि
      पार्व, (वर, ४, वल १,२)। ३ सार-बाट क्यु —हत्
                                                       (का हत्, का 11, शहर वेची शार, का मा
      बात, विस, रत, रक्त, मीत, मेर, पाहिब, मञ्जा धीर गुक्त.
                                                     धाव्यक्ति म [दे] क्वभंद, (दे १, (०)।
     (घोन, इत १६८) । ४ शिक्ती, जल, तेत्र घोर बालु वे बार ।
     मवाम्हा, (द्वार १,१,१)। १ व्याहरकनानिक संवर्तकाल, व्यू
                                                     थाम न [थामन्] कन, पगत्रम् , (भागः १२; नव)।
    प्रव ' ब्राहित ( ब्राया) । १ त्कासन, ब्रह्मिन, ( ख १४१ ) ।
                                                    घाय वि [घात] १ तृप, मनुद्र , ( मोत ४० मा, इ
    ण नाट्य-शास-प्रीम्ब मात्तितहा-विरोव ; (इना २, ६६ )।
                                                     २,६०)। २ व समित्र, सहाब, (सुर ६)।
   'य वि [ज] १ यत्र हे बत्काः, २ वस-विगेषः (वक्ताः)।
                                                  वायहरू) मा [ वानको] रज्ञ-निम, पर बा रेग ; (पर
  रे नाम, गुरुद्द (मणु)। "बाद्दम नि [ "वादिक]
                                                  वार्यो ) १, प्रम ६३,४६, हा १,६, मा १६१)। संह
  मार्श्य साहिक योग छ तात्र साहि का मोना क्षेर कनाने
                                                  व [ स्वयञ्च] स्वनास-एयान एवं होत , ( वा १, १
 बाला, विभियागरः (इय २६७)।
                                                  ैसंड पु [ 'पण्ड ] स्काम-स्थान एक होर , ( ब
धाउ ३ [धाषु ] क्लान्त्रनामह ब्यून्तर देवों का एक इन्द
                                                 42.88)1
                                               धार वह (धारव) १ धारव काना १२ करवा रामा १६
गढ पत [निर्+स] बाहर निकाला । पावद , (ह v.
                                               (महा)। वह—धारसं, धारअन, धारमाण, धारस
                                               धारित , (म. ३. १८१ , बार-विक १०६; मा।
ह गढ़ [निर्+सारव] शहर निश्चना विह—धाहि-
१६०, १६०)। हेर-धारित, धारितय, धारितय,
                                              (वि १०१, हर, स १,१)। ह -धारणिश्म, धारम
व १, ४, १) । काह-पाडीयतः ( वह १, १— पार हि [ दे ] ता. तेशः ( द ६,१६ ) ।
म नि [निस्मारित] शहर निराला हुमा, निरानित्
                                        धारम नि [ धारक ] थाम्म करन वाला . ( ६४१ ,
दें ] निस्न, निगहर , (दें ६, ६६)।
                                       धारण न [धारण] । पानन हो महत्त्व , १ वर्ग ,
                                       रत्तव, रहाना , ४ परियान स्थान', ४ महनस्वन
                                       य ३,३)।
```

3,63

```
when I - strains
the state of the s
ery, bell by the
                                                                                                                                      المواس مومع يبدانها أأديه كداراه يستني أأدا للمستعدد
                                                                                     ----
and the second
                                                                                                                                          المعتبرة الم
المتواطع للمنتوع المتحاط فالمتواط
                                                                                                                                          magnetic for the state of the state of
والمستند أأر والمناوية بمناك أأراء المالو والمناوة
                                                                                                                                           and the state of a service of the contract of
                                                                                                                                               والمعقورة والترس يتستم والروادي
# Har 5787 --
                                                                                                                                            مها و بهالها المساليات بند الله که ۱۰ المستودي د المستودي د
e fragginte for more services and the services
                                                                                                                                              The state of the s
to thought to the more than yet
and grown growing and grown and an array
                                                                                                                                              tyremen vir finger frem vir vir vir vir vir vir 11
maje mil titel
                                                                                                                                              The state of the
                                                                                                                                              करिक र किरिक है ने हम । भी है।
" C STARRY ( # -5 ) AT
                                                                                                                                              सर्वतः विकित्ते विकास्याः व्याप्ति १०१।
then he glist stad.
                                                                                                                                               भूताक्षेत्र पर विश्वति । विश्वति
4,500 30 31,400 4
                                                                                                                                                काला र [व] प्रणः प्रापः विकासन , र्याम हो।
The grant of the second of the
                                                                                                                                                     1. 18.00 344 344 4
                                                                                                                                                धार्तादय (१) घर, प्रण, वि चरा, (१ मनः,
distribution of the transfer
k mong belief e barbat kana ketili
                                                                                                                                                     erain sit. in 1
. महर्ग रत्य गटन १ . भटन १ स्वेचेंबर
                                                                                                                                                 प्राणिय (स्टि) पर्नाट, जन्म हुमा, (पाम १९ हो)।
प्रको बन्दा संसद प्रदेश के बार्ड से फरना प्रतान है
                                                                                                                                                 दिव्य दिस् ] (स्थार, हे । देश ) ।
                                                                                                                                                 बिर को [पूर्ति ] १ वेर्ड, व्यव , ( यूम १, म, बर् )।
्रिवान् [चर] ००, १०० ४-६१३ । वस्ति व

    भागा, द्वारत । ३ भागा, द्वार नियर का अन्यिमानः

यहिंदी पार के स्टेंग २००० से १०० वर्ग है
                                                                                                                                                       . falt र प्रत् महरूव, (यूम १,१९)।
तिय हैं [ साहिता ] को चारा साथ अहिरण हो है।
                                                                                                                                                        ्र प्रतिकार प्रति १,९११६ धेर्य को प्रतिविद्या देवी :
लकारीक क्यांक [ हम]का विवेता
                                                                                                                                                         अपने की प्रीप्त किए , ( सह , काम ५, ९  हो-स्प
राष्ट्र । ।    इस देश्त प्रदेश है शह कहे, केर र है 1

    ) । = लिलीया अर्थ की मीरिक्सिक देवी ; (इस । ता

प्यास पुक्ति । २४, ००३ . ( व.३.३३ वर् १३
                                                                                                                                                          १३) । 'कृद न [ 'कृद ] धीन्देश का मरिन्दा निरम-
म्पः स्टिश्<sub>र</sub> १९५१
                                                                                                                                                         सिन, (त रो। चरे दें चिरों १ एवं मलाइ मार्गि १
रेस्स् प्रास्ति । एका बर्ग स्था स्था स्था । स्था ।
                                                                                                                                                          'धन्तर-रेगा' सूत्र का एक सन्यरमः ( संत १=)। 'स,
निर्दे≃ धार≕स्याः
                                                                                                                                                          'मत ति [ 'मत्] धीरत दात' ; ( इ. ८; पर्थ, ४ )।
                                                                                                                                               . चित्रस्य विशिवस्त । श्रीसद्य हुमः (बर १)।
रिकेटिक बारको : (भी १०६
<sup>पिता ३०</sup> धार=राष् ।
                                                                                                                                                          १ व, विस्था, विस्था, (पूर १)।
रियाप [पारित] पार हिरा हुमा, (क्या)
                                                                                                                                                 विस्थाण न [विस्थरण] तिल्हा, विद्वार न राज
1 ( 3
                                                                                                                                                      1, 15 ) 1
में कि धनी ; (हे के, मा )।
                                                                                                                                                                                                                                                                                            123) 1
                                                                                                                                                       विस्कृति हि [विस्कृते ] किला
मिंडिनेधारा, (दुसा)।
```

1 --- 1 -- 1

```
विक्तार पुं [चिक्तार ] १ विकार, निस्तार ; ( क्यू
                                                  पाइअसइमहण्याची ।
            १, १, इ १३ है। इ सुम्मिक मजनों के समय को एक दशक.
                                                                                   िधिकतार-
           र्नीः (य कन्या रेहद् )।
                                                           घीर बह [घीरव्] १ पोरव एका । १ स
         विस्तार एक [जिस्+कारय्] विस्टारन, जिल्ह्यर
                                                           बाधानन देना । धीरेनि ; (गउड़ )।
           राजः। राष्ट्र-धिरकारित्रज्ञमाणः (ति १६३)।
                                                          घोर वि [घोर ] १ धेर्व काला, प्रस्थित, म क
        शिव व [ चेरे] पोरव, पूरे, (हे १, ६४)।
                                                           ४, ३० इसा ३६७ , टा४, १)। १५%
        रिश्त मि [ घेष ] मारच काने वान्य . ( बावा १,१ )।
                                                          विद्यान् , (वर पर्=दो ; पर्म १)। । वि
        रिशक्त । (ध्येष ] च्यन-वस्य, विनानीय । ( वादाण, 1)।
                                                         (त्म १, ७)। ४ सहिन्तुः (त्म १, १, ४)।।
       रिशमा वंशी [जिनानि, जिस्तानि] नायन, स्ति।
                                                         रस, प्रामान्या, जिल-देव, । गरापर-देव, (माचा, ।
        भे भारत महा अप जिल्लाहको (सातम )।
                                                       घोर न [ धेर्व ] घोरज, घोरना । ( हे १, १४, इ
      रिश्वतस्य १ वृधी [दिवानिक, विस्तानीय ] बाह्य,
                                                       घोरय गढ [घोरय] सान्त्वन हरना, दिनाना हेना।
      चिरवारिय) तिर. (मार. वर १२६ , माह १)।
                                                        योरिनिम्बनि : ( इम १४१ )।
     विश्वादिय व [ विस्वादित ] निन्दनार जोका , ( सुप
                                                      घीरवण न [घोरण] पीरज देना, साल्दन ; (न
                                                     घीरियय वि [घीरित] जिनही ताल्यन हिंता नेता है
    दिहु हि [भूद] योद, जाग्य , १ निर्देश, समास ,
                                                      मानानिषः ( न ६०४ )।
                                                    चौराभ मह [ चीराय् ] बीर हेला, बीरत पना। क
     ($ 2, 22+, m 2, 2, m 42+, m 20);
   रिद्वारतम्य दशा पद्वारतम्य ; ( वि २००० ) ;
                                                     थोरात्रंत , (व १२, ५०)।
                                                   चीराविभ रेना घोरविव। (वि ११६)।
   विदेश वेता [ भूरत्य ] माना, वासहे , ( वेस १४० ) ।
  विको । म [चिक् चिक् ] हो हो , ( ३१, वे ६१, ४४) ।
                                                   घोरित्र वेना घोर=वेर्ग , (हे २, १००)।
  Farafr (
                                                   चीरित्र देखं चीरवित्र , ( मनि )।
                                                  थीरिम पुश्री [पीरन्य] धेर्म, पीन्त्र, (सा १६
 धिण्य बद [दीप्] रंजा, बनवना । धन्तव्, (हे
                                                   उता १०६ , महि. इत १६० )।
                                                 चीवर वु चिनेवर] १ मध्योलर, जानजीरी, (इस. इर ११)
विनिया नि [ वीता ] वाध्यमन, वमर्थना , ( वृता )।
                                                 र हि उस्त वृद्धि बाला, (३१ श्वरी हुए १४०)।
Tan [ fan ] feren, er , "ag fir fin ufen"
                                                चुत्र हेना चुक=सन्। पुनर, (ना ११०)।
                                               पुत्र नहि पु । १ देशना । १ देशना । १ रता । १ रता
तिमन्तु म [जिगब्तु ] स्थान हो , (बारा, १, १६ ,
                                                क गुममाण (म १४, ११)।
भए ४७)।
भेगम १ [रिशम] कुल्ले कुल्ला , (शम)।
                                              युम १ र पुष - प्रमु (बीत)। हम निता।
                                              युम वि [ युन ] १ बीला , ( वा क्ल , हे १, १।
र्वत्त स [ रिक् ] शिक्षण, द्वाः, ( कुरा ३६४ , नक्तः ) ।
                                               र तान , (बीन)। १ उपयोग , (से ४,४)
क [या] इ.ट. बट्ट (अस कता 3'3ई हैंद्र 335
                                              न वर्षे, (सम ,
१० हम् १० । यम वि [ यन] १ वृहतन्त्र विद्यु
                                              (यम १, ०)। १ वस्य, शंग-याम, संबद्ध (
रिश्वका एका, संस्टूट में, प्रेनित
                                             १, २, २, मचा । याप १ ( यार ) कंटन
Ma | disame para" + ( Store = 1) and hall !
                                             हारम् । ( सम्बर् ) ।
* (far) 'mer, g., (m, 8 ee )
                                           पुष्पात्य १ [ हे ] अस, वाता, (१ ०, १०,१४)।
| 41 [ Tirm] = 44, 44, ( Tell 1-2 %
                                          प्रमाय प्र[ रे ] CP कर . ( पर ) .
                                          यु युवार १ (युग्युवार ) १०/००
Ja. 8. [4] Jan. (4 212)
                                         य पुनाम के [ के ] इन्त्या नवा १ . १०)।
                                         Saatitan ne fami ) eine it in in ia it
                                          444 (4. 921)!
```

सिद्धुत्र) वि [दे] बन्डनित, बन्डामनुसा ; (दे खिद्युगित्र)े १,६०)। स्तिषुत्र रेगो ध्रवकाधुवकः। यह—धुवकुपुत्रंतः; (===)1 क्रोडिअन [दे] संगय, मीरह ; (बला ६०)। हिंचुन मह [चुगधुनाय्] धुन् धुन् मात्रज्ञ बस्ता। वह --भुगुनंत ; (कह १, ३—पव४४)। हुम हेलं पुरुषुम । पुरुष्म ; (हे ४, ३६१)। मेनव [धू] १ बॅगना, हिलाना । १ दूर बरना, हटाना । . राज्या । पुण्ड, पुण्ड ; (ह ४, ४६ ; मावा ; नि ११०)। वर्न-पुगर, धुवितहर ; (हर, २४२)। वह-धुनंतः (द्वतः १८१)। मंह—धुणिऊण, धुणिया, चुनेकण ; (पट् ; दस ६, ३)। हरु-धुणित्तव ; (६६१,६,२)। ह—खुपेडज ; (माबू १)। हुन्य न [धूनन] १ भरनपन ; १ परिन्याम ; (राज) । युनना मी [धूनन] कमन ; (मीन १६१ मा)। पुनाय नद्द [यूनेय] हँगाना, हिलाना। पुदाबह; (बज्जाह)। हुनावित्र वि [घूनित] श्रीया हुमा ; (टर प्र= टो)। युनि हेर्छ। झिणि ; (पर्)। धुनिकण १ देखे धुण। धनित्वय ∫ विनिय दि [धूत] कम्पत, हिलाया हुमा ; 'मन्यय पुचियं'' (ध्रा ३२०; २०१)। ष्ट्रिया १ देखी श्रुण । धनेका 🕽 हुन्त वि[घाव्य] १ दा करने केंग्य ; १ न, पत ; १ कर्म ; (इन ६, १ ; इसा ६)। हुत ति [धूर्त] १ टम, बन्बट, प्रतास्क ; (प्राप्त ४० ; भा १२) । २ जुमा सेवन बाता; ३ ई धरोर का पेड़; ४ हैं दे बाबाह, ह तहए विरोप, एक प्रकार का नीन ; (ह २, रित दि [दे] १ विस्तर्त्त ; (दे १, १८)। २ ब्राह्मतः; (पर्)। हुन } चह [यूर्वय्] राजा । धुतारति ; (प्रा ११४)। धुनार । बह-धुत्तवंत ; (आ १२)। धुनारिञ नि [धृतित] स्माहुमा, बन्नितः (टा वर्प्स्ती)। हुनि सं [पूर्नि] दग, सुराग ; (राव)।

ष्टुतित्र वि [घूर्तित] बन्त्रित, प्रतानितः (द्वार ३२८; धा १२)। धुत्तिम पुंची [धूर्नत्व] दूर्तना, यूर्नमन, गाई , (है।, १४; बुना; था १२)। धुत्ती सी [घूर्ना] दूर्न सी, (रहा १०६)। धुत्तोख न [घत्त्रक] धर्त् क पुत्रः (कन्ना १०६)। पुरुषुम (मा) मह [श्रन्थाय] मातात करना । पुरुष्मरः (E x, 35 k) 1 घुम्न इं [घुम्र] १ धृन. पंभा । २ वर्च-विरोत, शांत-वर्च; रे वि कात वर्ष बाडा । किस उं ['स्त] एक राजव ; (9 12, 60) 1 धुर न, देखी धुरा ; (दर १ ६३)। धुर वुं [धुर] १ ज्योतिक मह-विरोप ; (हा २,३)। २ कर्जहार, ऋगी; ' जस्त कठनाम्न बहियालंडाई दस्त पुरवगं टक्नं, पुरानि देडं धुतार्यं" (तुरा ४२६)। धुरंबर ति [धुरन्बर] १ मार को वहन करते में समर्थ, क्ति कर्य को पार पर्डु चाने में शक्तिमान्, मार-बाहक; (में 3, ३६)। २ नेता, मुलिया, मगुमा ; (सप ; उत्तर२०)। ३ पुं गाड़ी, इत मादि खींचने बाता बैत ; (द 🖙, 🗤)। घुरा सी [घुरु] १ गाडी वर्गेनः का मन मान, धुरी ; (दव)। १ मार, बांन्ध; ३ चिन्दा; (हे १, १६)। धार वि [धार] धुग हो वहन करने वाला, धुरन्धर : (पहन ७, ९७१)। घुरो सी [घुरी] मन, घुर, गाड़ी का जमा ; (मणु)। धुव सक [धाव्] योना, गुद करना । धुनइ, धुवंति ; (ह ४, २३८ ; गा ४२२ ; विंहर८) । वह--धुयंत ; (१८. १०२)। ब्वर-पुद्धतं, पुद्धमाण ; (गा १६३; से ६, ४४; बज्जा २४; वि ४३= घुव मह [घू] हॅगना, हिलाना । छार ; (हेर, १६ ; पर्)। क्नं—घुव्यहः (इनः)। कार—घुव्यंतः (दुनः)। धुव वि [भूव] १ नियत, स्वित ; (बीत ३) । १ निय, गायत, सर्वता-स्थायो ; (डा४, ३; स्मर, ४) । ३ मान्य-माबी ; (सुम ३, १)। ४ दिथित, विरव ; (माचा)। १ दे मध के गरीर का बाहर्ष ; (हुना)। ६ मील, सुन्ति ; . ७ संयम, इन्द्रियादि-निप्रहः (सुम १, ४, १)। = संग्रहः, (मद्)। ६न इति वा दार, मोतनार्गः (मारा)। १॰ को ; (मए)। ११ मत्यन्त, प्रतिरय, "पुरसोतिरत्"



शुरुमर्गः (प्रेत १४ हो)। विस्मितः विर्यो धूर देवां; (बाल)। धूरन शही वर्ग हा में लाई दोन हो पूल दाया काले हैं बदा (हा १६७ हो । ुक्तियह ई [दे] मथ, योहा ; (ह ४, ६६)। विनद[स्वय] ध्रकना । ध्रेक्टन ; (सावा १, ११)। यह-पूर्वतः (ति ३६७)। वि ई श्विर है। सम्बद्ध हम ने उपना पन : र समन्य रास्तिवेष, जो देशमुका भारि में कहाया जाता है : (गाया ि १: पुर २, ६६)। धिडा सी (धिर्दी) प्रत्य पूर्व मरोही कालो : (वं १)। "जीव व ['चन्त्र] भूतनात्र ; (हे ३, ३६) । [बन व [खूपन] ९ घुर देवा; १ घुन-पन, रोग की निप्रति हे तिए दिसे बात धूम का भागः भवूगी तियमी व बन्धीः वर्नागरो" (दा ३,६)। 'बहि मी['विति] प्ति के को हुई वर्तिहा, करावनी ; (कन्)। विन दि [भूदिन] १ ठावित, गाम किया हुमा; २ िग महिने टींट हुमा; (चर ≰)। ३ घूर दिया हुन ; (धीर ; सम्ब ५)। रूमर ई [चूमर]: १ इतदा वाँदा रंग, ईपन् वावह वर्जे: २ ति, मूनर रंग बाता, ईनर पायद वर्ष वाता ; (प्रास् नर ; व्यव्यक्षः में ६, वर्)। विविद्य वि [श्रूमिरित] धून की कड़ा ; (क्रम ; 可言); देग्ड [या] पाएट कला। घेर; (संति ३३)। 'देह बंग्ने' (इप्र १००)। वेत्र (वि[ध्येष] प्लान-केन्यः (मति १४ ; याचा बेटल र्र १,१)। देरह ६ [चेव] याण करने केंग्य ; (याचा १,१)। वैक्त न [श्रीर्थ] घंडर, यंत्रकः; (पर, २,२)। वेचुर्मा [धेनु] १ नवयद्यार्थी; २ स्वत्वारी; ३ द्वार गान ; (हे ३, १६; चंड)। थेर हेरी घीर≔रेवें ; (कि ९०)। धेवप हं [चैवन] स्वरुक्तिम : "वेरस्कान्वराण मर्वति बर्गिका" (हा ४--वत्र ३६३)। घोत्र मह [घात्] घोता, सुद काना, पताता । घोएत्वा ;

(मद)। यह चोयंत ; (डा दर)।

घोष रि [घीन] दोना हुला, प्रहाति : (से १,२४) 0, 20 , 57 362) 1 घोला वि घिषक । १ पतंत्र यहा , १ दु पतं , (हा 9 222 } घेश्रम हि [घायत] येल, प्रताल , (भारू , स्या 9= : #13 38 3) 1 धोदय देका घोष=की ; (मा ५=)। घोडत वि [धुर्व]। धुरंत्र, मण्याहरू , २ मनुमा, नेता. प्रान्या : (बर १)। घोरण न दि , गीननातुर्व : (मीन)। घोरणि) मां [घोरणि, यां] पर्न्ड, क्या ; (इस घोरणी) ४६ ; मबि ; पर्)। घोटिय देता घोडत ; (हुम २८०)। घोहनिणी सी [घोडिकनिका] देग-विगेर में उत्तन स्ती; (याया १, १--पत्र ३०) र धोरेय वि [धीरेय] देखे घोडज; (हव ६६०)। श्रीच देती श्रीम≕पात्। यत्रः (६ ११०; ति ०००)। शंदेरजा : (बाना) । वह-धार्यतः (मनि) । यवह-घोव्यंत, घोव्यमाण, (परम १०, ४४ : टावा १, ८) । ह-चोर्गियः (राज १, १६)। घोषय देखे घोषम ; (दे ८, ३६) । श्रव (इस) श्र[ध्रवम्] मन्त्र, नियः (हे ४,४१८)। इय टिरिगाइअसहमहण्गयन्ति धमाराद-सहबंद्धदयी छन्दीखमी तरको स्वता ।

न देखे स्पै।

१ प्रकृत साम में सहस्मारितय महस्यहमारि हात है, सर्मन् स्मार्थ के स्थान में निय मा रिहल्य से 'य' होनेहा क्याहरणों का मानात्म नियम है; (प्राय १,४१ ; दे ६,६३ डो ; हे १, १९६ ; पर् १, १, १४), स्नीर प्रकृतमारित नात्मों में दोनों नाह के प्रमान पर का तात्में हैं। इसने मेने साम प्रकृत के प्रकृत पर्म मा जाने से मार्ग पर का मार्ग के प्रकृत का जाने से मार्ग पर का मार्ग के प्रकृत का कोड़ा बहुना हीचा नार्मित का मार्ग के । पर का प्रकृत का कोड़ा बहुना हीचा नार्मित मार्ग के । पर का प्रकृत का कोड़ा बहुना हीचा नार्मित मार्ग के । पर का प्रकृत का कोड़ा बहुना हीचा नार्मित के पर ' के स्थान में मार्ग मार्ग के । यहा बार्य है हि नहार्ग हमार्थ हमी इन्नार पर सार्थ हमी

(शाः), काम्मय वं [कार्मिक] लेलार माहि गिल्गी, (वर्ष)।
क्वारि वि [क्वारित्] सुन्ननु, सुन्ति का क्रिनिश्योः;
(माचा)। क्यारित् वं [क्विप्रः] मान्युक, मान्य

Éou

भागी बुश्चिम्पर्तं, संहस्त्यार्थः (सृष्टः १, ४, १)।
"याद् दुर्विद्धः विषयः (स्व १६)। "युव्या दु "यात् दुर्विद्धः विषयः १ स्व १६ स्व १६ स्व १६ स्व (स्तर्या)। देशो पुत्रस्त्रभूवः पुर्वाणा विषयतः । १ प्रचालकः (स्वायः ११४५) म १५१)। १ दि स्वयः नाता, दिलावे वालाः स्वो— "मी, (द्वाणः)।

च्या, (इस)। पुत्र्यं केषे पुर=धान् । कुलहा (सित ३६)। पुरुष्यंत केषे पप =धा पुरुष्यंत १ वेसो पुथ=धान् । पुरुषमाण } पुरुषमाण }

तुवन ति [पुत्र ति पुष्त चुनः (कावा ;दन ३,१३ ; ति ११९ , १६२ ,तृष १, ५, १) । धूष देलो पूष=पूप , (तृता ६१०) । पूषा को [दुदिय] तनकी, पुषो : (हे ६, १२६ , प्रायू

1 (¥3 धुणे पु[दे] सत्र, हाथीः (देश, ६०)। ध्यित वि [धूनित] इत्यत , (एव ६०)। भूम ९ [भूम] १ धूम, धूँमा, ब्रॉन्न-विन्ह, (गउड)। २ इषि, मन्प्रीति, (पाद्य ६, ५)। ईमाल प्रव [फ्रार] इंप और तम, (आप २००० मा)। पु [केनु] । नशतिक पर्विते ; (दा १, १ : कह १, इ. मीप)। २ वरिंट, मिन, मान ; (उप१२)। ३ मनुभ रूपन का मुक्क नाग-पुन्त्र, (गउर)। "स्वारण ९ [चारण] धून है धरतन्त्रन म महहारा में बनन करने की शक्ति कला मुनिनिशेष , (गन्छ १)। "ज्ञोणि युं ियोनि विरुत्त, मेर, (फाम)। "उम्बद देनो "द्धय, (राज)। 'दोम ५ ('दोप) निजा का एव होप, इंब से भोजन करना , (झपा १, १, ३)। "द्वय पु [ध्वत] वर्ष, मन्ति, (धम, ठा १०३१ डी)। 'धाना, 'धादा सी ['प्रमा] शवरी नग्द-पृथिती , (ग्र

प्रम)। लेकि[सि] बुक्त करना, (उप २६४)

"चक्क हि "चक्की प्रभार वर्ष नाताः (यान ५,1% किता जो "दिवास ग्रेष्ट का मनागः, (उ.५ ६ ५, ६%) है पुर्वता व [है] अना, तमा : (१ ६, ६%) है पुरवता न [पुरवन] पुरवता : (गूम २,५)। पुरवहार न [है] नाता, नातान : (१ ६,६५)। पुरवहार व [है] नाता, ततान : १ महिन् में (१ ६,६१)।

चूमद्भयमहिस्ती मो व [दे] हनिहा नेतन : (दे

is Si धूमपल्याम 🖪 [हे] वर्ग में बार्च ,कर , मान समने भा जो रूप्ता रह जाय बहुः (निदृ १६)। धूमगृहिन्ती को [दे] बोहार, इस्त, इस्ता । (रे ६१ : पाम)। धूमरी सा [रे] १ संहार, इहासा ; (दे ४, ६९) । तहिन, दिम ; (पष्ट्)। भूमसिहा | सो [दे] मोहत, दशमाः (दें के ⁽ 1 210)1 भूमाञ्च बरु [भूमाय्] १ भूमा वन्ता । १ वडाता। धून की नगर अप्याना । धून मति ; (स. म.) बडड)। वह—भूमायंतः ; (बडडः म १) ^क चूमाता मा [चूमाओ] वीवहीं माह प्रति हैं (' 48.84)1 घूनिश्र दि [घूनित] १ धून-पुन्तः (रिंड)। १। हुमा (शारु माहि); (दे (, यम)।

हुमा (वार मारि); (दे ६, क्ल)।
प्रमित्रा मी [दे] नेदेए, दुराग ; (दे ६, ६३) व्
अ १० ; स्म १, ण ; म्म ४, ।
प्रित्म सि [दे] गैरी, सतता ; (दे ६, ६३) ।
प्रतिक्ष सि [दे] गैरी, सतता ; (दे ६, ६३) ।
प्रतिक्ष सि [दे] गैरी, सतता ; (दे ६, ६३) ।
प्रतिक्ष सि [प्रति, क्लो पुरित ; १४, ४३१) ।
प्रतिक्ष सि [प्रति, क्लो पुरित ; १४, ४३१) ।
प्रतिक्ष सि [प्रति, क्लो पुरित ; १४, ४३१) ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।
भि [प्रतिक्ष सि विकास स्वत्म सि विकास स्वत्म वा ; १४। ।

एड सर्वः (सेन १४ हो)। विस्ति ३ [वर्ष] इ.चंबां;(मज)। इतत[सूह] बांधा है एके तोच है धूर राष्ट्र करने हैं पर (स्व १६० हो)। कृतिवर्द्ध[दे] म्य. येहः ; (हे १, ११)। कृत्य[पृष्य] स्वत्य । कृत्य ;(स्व ३,

भ)। ग-पूर्वनः(ति भः)। पृत्र हैं [यूर] १ क्लिन इस ने क्लम धून ; १ क्लिन मन किया, हो, देव मुझा माहि में जलाया जाता है ; (राजा भे कि कु के सिना चिडा सी [चेटी] एउड़ फूरे मंगे हुई बरगे : (जं १)। जिंद स ['क्न्स] शूनक; (हे ३, ३१)।

पुरत र [पूरत] ९ ह्य हेना; ९ ह्मूनवत, रोग ही निर्वत है हैं। इस बार पून का पत्र "पूर्ण निवसी व दन्यों क्तिको" (दा ३,६)। "बहि का ["बर्ति] एकं को हाँ कोंब, बावतो ; (क्यू)।

हिन है [भूतित] १ तहेत , गम दिया हुमा ; १ ैं करिने केंद्र हुका; (बर ६)। ३ व्हा दिसा ि।(में। एका १)।

पुन्त है [बूनार]ति हत्या दीता रंग, हेमर् पारह वर्षः २ ी कून की बाजा, हेरर करह कर्म बच्च ; (प्रस्टबर ; F *** ; = 2, =2);

निनित्रीः [सूनिरित] धून की बडा; (सप्र; *)

देस [या] इस्ट इन्हा थेर; (सिंद ३३)। (5x doo) 1

वेत) वि[च्येष] म्यन्तीयः (मति १४ ; यस TEE 1 9, 9) 1

विद्विष् विष्य । असे केले केल : (याचा १,१)। विषे विषे विषय । कार : (पर २, १)। देश विद्यो । सन्दर्भ सं १ सन्दर्भ । १

रिकार (है के उद्देश)। में के प्रतिकार (हिंह १०)।

विक्ति] न्यानिके : "वेक्सल्यांकारा स्वीते ا (وَعَوْ فِلُسُمُ لِنَّ) سِنْلِيْنُو

े व्ह [धाव्] धंता, गुद्र करन, पराना । बोह्न्द्रा , (हरू ।। हरू-प्राचीन , (हर हर)।

घोष ६ [घोन] या हमा, स्टारिकः मे १, १६; ण, १७ , या ३६३ है। घोत्रन नि [घात्रम | १ करवरा , १५, ५७ , ५ झ

घेन्नन है [घावन] त्मा, त्याहन , (धा १० , स्वर १म : मार ३४० है। घोरअ देल घो स≈रित् रंग ६० ।

घोडा ५ [धुई]१ उगा, संस्तरह , १ सहस, नेत. प्रान्स ; (यह १)। घोरण न दि गीन्वतुर्व : (मीन)। घोगनि) मी [धोरनि, यां] गी्ड, इतः : (हत

घोरणी) ४६ ; मी ; पर्)। घोरिय देनो घोरत ; (हुन २०२) । घोर्यनियों मी [घोर्यक्रिनिका] उग्र-तिरेप में इन्स्न मी; (यमा १, १-पत्र ३०); घोरेव ति [घाँरेव] देशे घोडा; (हत ६१०)।

घोब देशं घोम=बार्। बका; (७११०; विण=)। षांदेरदा ; (माचा)। दरु—धार्यतः; (मपि)। दरह-घोव्यंत, घोव्यमाणः (प्राम १०, ४४ , राया १, ८) ।

ह-चोविषय ; (राय १, १६)। धोवप देनो घोवग ; (दे ८, ३६)। भ्रम् (धर) म[भ्रम्] मन्द्र, निरः, (हे ४,४१०)।

इम विरेशास्त्रतहमहण्ययनि धमारा-बार्ड ब्रह्मी धनी खनी दर्गी स्वतः ।

न देखें गांै।

९ बहुद नामा में नहारहित्स राहरहार होते हैं। मन्द्रे मिर ह नहा है स्वन में निय द विरम्प है 'द' हतेख कारायों रासमन्य तियम है : (ग्राव २,४२ : देश हो को है १, २२६ ; पर् १, ३, ४३), में प्रकासदिकाची में देनी तह के धांच पदे जते हैं। इसमें ऐसे स्वयंग्य गरण है आहर में मादने ने की पा प्रमानि का बर्द में तुत्रद्व का करेग करना संविद्यनहीं करना गरा है। बाहरू राप रहार के प्रकार में मारि के 'र ' के स्वान में सर्वत चीलवर्ते। स्रोक्स्पने हिनसम्बन्धी कृती ब्रमाय यहनादि हाला में ही विदेशदाही।

ुहर्माः (क्री. २४ हो)। "वरिम १ [वर्षे] इत्हें मां; (माम)। इत्तर मृत्] वर्ष मा मैं लाई होता को घुट हा घर बन में हैं। यह, (टर ४६७ हो)। नीवहर्ड [दे] मन, मोहा ; (दे ४, ६१)। विष्ट[पूर्वि] इत्रामा । धूनेत्व ; (माका २, १३)। दह-पूर्वेत;(वि ३६७)। प ५ [पूर] १ मृतिब हार में उत्पन्न धून ; १ मृतिब मि विष्य, यो देवसूत्रा मादि में जलाया जाता है ; (गाया भी: पर के ६६)। ध्रेडा की [धरी] स्वयः, स्वं मगे हुई कानो ; (वं १)। "तीन न [चन्त्र] भूत्याव ; (दे ३, ३६)। 🎮 र [भूपन] ९ घूर देश; १ धून-पन, रोग की निर्शत हति। दिस जाता धून का धनः, "धूनो तियनो स दायी क्लीको" (सन् १,६)। "वहि सी["वति] एके बनी हुई वर्तिहा, प्रागयनी ; (वन्)। विश्वति [धूपिन] १ तति , सम्ब किया हुमा ; ३ िंग महिने टॉट हुमा; (चर ६)। ३ घून दिना हिः(भैगः गच्छ १)। लर हं [यूलर]:१ इतक पीठा रंग, देवन् पारद् वर्णः २ है पूल रंगे बाजा, हेरद पारट बर्ग बाजा ; (प्राय न्य ; F 336; 5 8, 53)1 मिरिज मि [श्रूसिंगत] धून गर्र बाहा ; (पाम ; ا (ئىد कि [बा] पाग्य कला। घेर ; (संति ३३)। mis and (Ex doo) 1 [म] ति [ध्येष] ध्यान-पोन्य ; (क्रजि १४ ; याना 1 (7, 9) हिंद विश्विष विषय करने केला; (यात १, १)। स्ति र चिर्षे विस्ता, चेतता; (पार १,१)। गुना [भेनु] । ना-प्रच्या गी; २ स्त्रणा गी; ३ क्षात्र (हे हे रह बड़)। में रेजे बीम≕वेर्ष ; (विक्र ९०)। वेदर है (चैवत) स्तर-विशेष ; "विकास्तरनंत्राण सर्वति क्ष्मिन्"(य ४-पत्र ३६३)। हेन्द्र =ह [याच्] यंता, गुद्र काना, प्रजारना । योद्ध्या ;

(मार)। वह-बोयंत ; (हर मध्)।

घोत्र वि [घीन] दोदा हुना, प्रशादितः; (ने ५, १४; v. 30 . ## 34#) 1 घोष्टम नि विविध । १ यन बना ; १ १ पार्च ; (इर g 333) घे अग वि [घावन] रेल, प्रवाहन , (धा २० , स्या १०: सार ३४०)। घोदम इतं धे मन्त्रीत : (गा १८)। घोडत दि [धुर्व]१ पुरंद, सर-बद्ध ; २ अपुमा, नेता, घुन्नर ; (बर १)। घोरण न [दे] गी-वातुर्य : (मीर)। घोरणि) मां [धोरणि, 'यो] परिष, बता । (हरा घोरणी 🕽 ४६ ; मनि ; पर्)। घोरिय हेसं, घोड़त ; (हुन २८२)। घोडनियाँ सी [घोडकिनिका] देग-स्टिप में उत्पन सी; (राया १, १-पन ३०) : घोरंच हि [र्घारेच] इंता घोड्ज; (हुन ६४०)। घोच देखें घोम=गर्। घंतर ; (स ११० ; ति ७०)। वं,वेज्ञा ; (भ्राचा) । वह-न्यार्थत; (मनि) । स्वह--घोटवंत, घोट्यमाण; (परम १०, ४४ ; यामा १, ८) । कृ—चोत्रणिय ; (राजः १, १६) । धोषय देवां धोषम ; (दे ८, ३६)। भ्रुषु (इत) अ [भ्रूयम्] बद्द, स्विगः (हे ४,४१८)।

न देखें गा ।

इम विरिवार्थसद्मर्ण्यवस्मि धनरार-

महर्वे बड़ यो। छन्दी तहनी। वर्षनी हमना।

१ प्रदल कावा में नहारिश ना गार पहारिश होते हैं, कार्य काश के नहार के स्थान में निय वा शिक्स से 'य' हिन्हा क्याहरायों का मानान्य नियम है; (प्राप्त २,४११; हे १,६३ हो; हे १,१२६; घर् १,१,१,१,१ भीर प्राप्त-नाहित-प्रस्थों में हेनों नाह के प्रस्थ पर्य बते हैं। इसने ऐसे ना गार पहार के प्रस्थ में मा बाने से बारों पर प्रतारोंने कर प्रार्थ में मा बाने से बारों पर प्रतारोंने कर प्रार्थ में प्रतार का कहता बहुता होता हों स्मार गार है। प्रदार का प्रकार में मार करें प्रकार में मार के प्रकार मार के प्रकार में मार के प्रकार में मार के प्रकार में मार के प्रकार मार के प्रकार में मार के प्रकार मार मार के प्रकार मार मार के प्रकार मार मार के प्रका

बहुत मर्ग; (मान २४ टां)। "वरिम पु विर्यं] पूट को वर्ग; (मान)। "हर न [सूट] वर्ग मह में लड़ि लोग को पून लाका करते हैं वर; (दर ४६० टां.) पूर्णियट हं [दे] मन, वोहा; (टं ४, ६१)। पूर्ण गर [पूर्ण] पुरकरमा। पूर्वेच्य ; (माना २, ११)। वर--पूर्णेन; (ति ३६०)। पूर्ण हे [स्वप्] १ माहित हरा में स्टास्ट प्रमान

धून इं[धूम] १ मुगनिन इन्स से उत्पन्न धून; १ मुगनिन इन्स रिगेन, को देन मूझा मादि में जलावा जाता हैं; (छाना १, १: मुर ३, ६४)। ध्यक्टा की [ध्यदी] धून में, धूर में मरी हुई कतनो ; (जं १)। ध्यन न [धनम] धून मरी हुई कतनो ; (जं १)।

यूपण त [यूपन] ९ प्र डेता, १ घ्म-पन, रोग को निश्ति के जिए किया जाता धूम का घन; "धूरो तिवसरो य बन्धी कम्मिनियो" (दन ३, ६)। "यहि सी [वर्षि] भू की बनी हुई वर्षिया, समस्यती ; (दन्दू)।

यूबिश वि [यूबित] ९ तानि ९ , गम किया हुमा; २ रिंग मारि में डींडा हुमा; (यार ६) । ३ घून दिवा हुमा; (मीत ; गच्ड ९) ।

रूपर वं चित्रसर]:१ हरका वंजा रंग, हेरन् वावटु वर्ण: २ वि. पूरा रंग वाला, हेरन् वालटु वर्ण बाला ; (प्रास् मार ; वा १००४ ; से ६, ८२)।

मरित्र वि [धूनवित] धूनर वर्ण वाला ; (पाम ;

सर [धा] धारण करना। धेर ; (संजि ३३)। वेर्ड भोनने" (इप १००)।

े हि [ध्येष] ध्यान-योग्य; (मति १४; यासा त) १,१)।

रिवि[धेय] पारच करने केंग्य; (यावा १,१)। रिव[थिये] धीरान, पोनवा; (पार १,१)।

ति [श्रेषे] धीरन, पीन्ना; (पाइ १,१)। सी [थेनु] १ नर-प्रदुश सी; २ स्वच्छासी;३ "सन;(हे ३,२६;चंट)।

त्यं भार≕पेर्व ; (किह १०)।

पुँचित] स्वर-विवेष । "वेष्यस्यम्बरण महीति निक्र" (स ॥—पत्र १६३) ।

क्ष [**धाव्**]क्षण, गुद्ध कमा, २००मा । बाएका , र । । वह-स्वीर्धन , । हर २४ *। ।* घोत्र वि [र्घात] धोबा हुमा, प्रवाति । (से १,२६) ज,२०, गा ३६६)। घोत्रम वि [घाबक] । धाने बला . २९, पंगे : (टा पु ३३३)

र्घे अगि वि िधावत] योला, प्रतापन , (प्रा २० , स्यप - ९≈ , भार ३४०) । -

घोइन देवा घोन=पीत ; (वा ५=)।

घोड़ज वि [धुर्ष]१ घुगा, मास्त्रदहः २ मगुमा, नेता, घुरस्यः ; (सर १)।

घोरण न [हें] गति-वातुर्व ; (मीर) । घोरणि | सो [घोरणि, 'णा] परि्क, ब्लार ; (सार घोरणी | ४६ ; मवि ; पर्व) ।

घोरिय देशे घोड़ा ; (हुग १-१)।

घोहितिणों सी [घोहितिका] देश-दिशेष में उत्पन्त सी; (पास १, १—पत्र ३७) । घोरिय हि [चॅरिय] देशों घोड़त; (सुत्र ६४०)।

घोष देवी घोश=घात् । योवर ; (त १६० ; रि ७०) । योदेण्या ; (माना) । वरु—घायंत; (मति) । यनरु— घोष्यंत, घोष्ट्यमाण, (वरम १०, ४४ ; याया १,०) ।

कु—कोवणियः (राजः १, १६)। कोवयं देशो कोवगः (दे ८, १६)। छतु (इतः) क्रियुवस्] कटल, स्थिः (हे ४,४१८)।

> इत्र निरिज्ञहासस्मारण्यवन्ति धनाराह-महांबदायी छानोनानी तरणी छनता ।

न देखे सारी।

१ प्रश्त मापा में नरायदिनय गाव्य यहागादि हीते हैं, सर्पात् मादि के नहार के स्थान में नियं या दिहार से 'या' होनेहा क्यांकारों का सामान्य नियम है, (प्राप्त १,४१ ; हे ४,६६ टी ; है १,१२६ ; यू १, १,४१), मीर प्राप्त मादित-मापी में होनों तगद के प्रतीत पांच जाति हैं। इसने ऐसे सब गाव्य पहार के प्रकार में सा जाने से यहाँ पर पुनाहित कर कार्य में पुन्तक का कहेदा बहुता हो देश मादित सम्प्राप्त है। प्राप्त पांच का कहेदा बहुता हो है। प्राप्त का प्रदेश कर मादित स्था है। प्राप्त पांच का कार्य से मादित है पर है। प्राप्त का सामान्य है। यह है। प्राप्त से मादित है। यह है। यह है। यह सामान्य सामान्य स्था के सामान्य सामा

शुद्ध मर्ग ; (ब्रोन २४ टी)। विरिक्त वुं - विर्षे] धूट की बतें ; (मान)। दिर न चित्र विशेष्ट्र में लाउँ होग दो घर हाथा बनती हैं बहुः (इन १६७ डो.)। भूनीबर्ट इंदि मिन, चेहा ; (दे १, ६१)। यूम नव [यूनय] प्रकाल । यूनेवन ; (माना २, ११)। यह-पूर्वेत ; (ति १६७)। पूर्व ई [यूर्व] १ हान्यि इस हे उत्पन्न यून : १ हर्गन्य हरन रिवेप, हो देवसूत्रा महि में बताया जाता है : (गाया भ भ: पर २, ६४)। धिडा की [धिटी] ध्नद, ध्रमे मगे हुई बनतो : (वं १)। 'वंत न ['यस्त्र] शूनाव ; (दे ३, ३६)। पूपन न [घूपन] १ वृत देश; २ वृत-यन, रोत की निर्देत है हिए दियों आहे पून का पन; ''क्रूगे तिक्सी व दर्गी धन्तिको" (यन १,६)। "वटि सो ["वर्ति] ए वें को हाँ वर्षेद्ध, क्रमावर्ग ; (इप्)। पृषित्र वि [घूरित] ९ तति , गम क्या हुमा ; २ ति महिने टींट हमा; (चर €)। ३ घूर दिना रि; (मेर; गण्ड १)। पूनर हं [यूनर]:१ हराह वेटा रंग, हेरर् पारटु वर्ष: २ दि भूग की बाजा, हैंगर करतु कर्त बाजा ; (प्राव्ह कर ; T var ; # :, = ?) 1 वृमन्त्रिति [धूमरित] धून को करा; (पम; F(3)1 षेतः [घा] भाग्य कला। चेदः (हिंदः ११)। भिन्ने भागनी (इप १००) । वेज) ति [ध्येष] फाल्सीस ; (प्रति १४ ; वास पेड्स 🤰 १, १ 🕽 । वेस्त सि [चेद] पान इस्ते कीय; (गास १,१)। बेहर व विषे विकास प्रत्य : (पर १,३)। पेतु सं[पेतु] १ लाजदार में १ २ काला सै १३ राग गार ; (हे ३, १६; चंड)। धेर डेले घोर≕रैंचें ; (कि. ९०) ।

पेरर ई (प्रदेश) नाम्योतः । "अवस्तानंताः नदीः

भीत हर [साब्] हे म, गुद्र करना, दशका । सीएका ,

'मरि]। रह-बोर्चन, (हर ६४)।

ا (وعو ديم يد) سنلتودي

घोत्र वि चिति विवाहमा, प्रशादिकः (मे १, २४; U, 20 , 177 3 (E) [घोलग मि शिवको । बले बता , १९ पंती, (हा 2 333 1 घे अग नि [धादन] रोता, प्रतासन ; (धा २० , स्या 4=; MR 3¥3)1 घोडम देखें घोष=तीर ; (गा १८)। घोड़क वि चित्री १ वर्गण, मान्यत्वः १ मनुमा, नेगः, धान्या: (वर १)। घोरण न हिं , यनिनात्र : (मीर)। घोरणि) मा | घोरणि, 'वो | वीर्ण, क्ता । (हा घौरणी) ४६ : मनि : पर)। घोरिय देलं घोडत : (हत २८०)। घोरुनियो हो [घोरुकिनिका] उन-निर्देश में उन्न सी (रामा १, १--पन ३०) ह थोरेय है [धीरेय] इन्हें घोड़ज, (मुह ६६०)। घोच देने धोअ=पात् । घत्र ; (न ११० ; वि ४८)। घं,वेज्ञा : (माचा) । वरु--ग्राचंन; (मी) । परह--श्रीव्यंत, श्रीव्यमाण, (प्राम १०, ४४ : पाण १, ८) । क-शोग्रपिय : (यन १, १६)। धोवय देनां घोवन ; (दे ८, ३६)। ध्रमु (घर) म[ध्रम्] महत, निरः (१ ५८१२)। इस विदेशाहसमहमहण्याचीम धनायह-सरवक्टवी छनीयनी दर्ग सक्त ।

न के गा

१ वहां सथा से नमादिता गावनस्वादि हार्दे हैं। सर्बाद स्वित ह नहां ह नाम से निय प दिश्य है था। होता स्वाहारी सा मानान नियम है, (प्राव १,४१), हे है, है है है, है १, १९६; पर् १, १, १, ४१), मेर प्रावनीदिनाओं से होगे तो है। द्वार पर्व जीते हैं। इनके निते गरवास महान के प्राव से स्वाहत हैं। इनके निते गरवास महान के प्राव से स्वाहत हैं। इनके निते गरवास महान के प्राव से स्वाहत हैं। इनके नित्र है। स्वाहत है। स्वाहत गरवास के प्रस्तात से सार्व के पे के न्याहत से प्राव माना स्वाहत से स्वाहत है। सार्व व्याहत से से माना स्वाहत से सार्व है। है। सार्व है।

a, 30 , # 3(E) 1

गुरमर्गः (मोत १४ टो)। धारिस पु धिर्मे] धार्चनां;(धान)। द्वार[गृह] वर्षस्य

में लड़ेंड डोग हो पूर साधा बनते हैं यह (दर १६० दा । भून्यीयष्ट ई [है] मध, यंज्ञ ; (वे १, ६१)। भूम गर भूमय । भूम राज्य : (माना १,

११)। यह-भूबेन;(वि ३६७)। पूर्व हैं [चूर] १ मुर्गनेय हाथ में उत्पन्त पून ; र मुर्गनेय हरक विदेश, है। देशमूल ब्राहि में लहाबा लाना है : (माबा

भे भे भारत, ६६ ।। भिद्रा सी विद्री ध्रावत, प्रावे मगे हुई इत्रतो : (वं १)। विते व

['यस्य] धृत्यत्र ; (दे ३, ३१) । पूरा न [भूपन] १ पूर हेरा, १ पूर्व न, रोग की निर्देश के दिए दिया बाटा पून का भाग, "भूगों तियमों य पन्यों धनरियाँ" (इन ३, ६)। "बहि गर्ग [वर्ति]

धा को बनी हुई वर्षे हा, बनायको ; (कन्)। पृथिन वि[भूषित] १ तथि , गम दिया हुमा ; ३ रिंग माहि में डॉस हुमा; (चल ६)। ३ जून दिया;

र्मः : (चीर : गव्ड १)। भूनर हं [पूनर]:१ हरहा चंडा रंग, देवर् चन्दु वर्ण: २ ति, बूतर रोग बाडा, हैरद पारह वर्ग, बाडा ; (प्राम् 🖙 ;

17 var : # 2, =2)1 धूमरित्र वि [धूमरित] बून को बाटा ; (पाप्र ; ने । भेनर [धा] कारम बरना। भेर; (संजि ३३)।

घेत्र } वि[ध्येय] व्यान-ग्रीय; (मति १४; दादा चेन्त्र र १,१)। घेडत ति [श्रेथ] धारच करने चीत्रव ; (चावा १,१)।

क्षितिमान (स्मापका)।

घेटत न [धेर्य] घारा, घाटता; (पार १,२)। घेषु सं[धेनु] । सन्प्रद्यार्गी; २ क्लालागी; ३ द्वार गात ; (हे ३, २६; चंड)। चेर हेन्ते चीर≕वेर्च ; (विह १०)।

घेवय हं [घेवन] स्वर-विगेर 🕫 "विकास्तरवंतराः सर्वेति बर्ज्यमा" (ह्र ७--पत्र ३६३)।

घोत्र ६६ [घात्] वंता, गुद कता, फारता। घोर्ज्ञा ; (भाषा)। यह-बोर्यन ; (हरा =१)।

g 223) घे अग ति [घावन] चेल, प्रज्ञारन ; (प्र. १० , ग्या १न : मान ३४०)। घोड्स देन: घोस्टर्सन : (गा १२) ।

घोष वि [घीन] दोता हुमा, ब्रह्मतित, (मे त, २४;

घोष्टर हि [घाषक] १ यते यता , १ ९, पर्ट ; (झ

घोडज वि [धुर्व] । पुरंत्र, भग्नात्वर, १ मनुमा, नेता. पुल्या ; (वर १)। घोरण न [है] यी-बातुर्व ; (मीर)। घोरणि) नां [धोरणि, णां] पर्क, का ; (हा। घोरणी 🕽 ४६ ; सर्व , पट्ट)।

घोरिय देता घोडत ; (सुरा १८२)।

घोषय देखे घोषग : (दे ८, ३६) ।

घोदनियां सा [घोदिकिनिका] देश-विधेय में उपल सी; (दावा १, १-पन ३०) ; घोरेय हि [घाँरेय] हेको घोड़ज; (हुन ६६०) । थोब देखे घोम≕गत्। पत्यः ; (स १४० ; नि ०००)। घोडेज्या : (माना) । वह-धार्यतः (मीर) । यवह-घोटबंन, घोटबमाण; (परम १०, ४४; यापा १, ८)। क्र—घोत्रणिय ; (दाना १, १६)।

भ्रम् (इन) म भ्रियम्] भरत, न्यिः, (हे ४,४१२)। इस टिरिशास्त्रसहमहण्याचीम धमागाइ-बहवक्द्रयो छन्दीन्त्रमं। वरंगो स्वतः ।

न देखे सारी

१ प्रदान मापा में नरागारि सब साथ एकागारि होते हैं. मर्दत् महि हे नहर हे स्थान में निय वा विहम्म है 'य' हतेहा व्याहरणे हा समन्य तियम है , (प्राप्त २,४२ ; દેશ દર ટોર્ટમ, સરદ : ૧૨ મ, ક, કરો, भीर प्राष्ट्रत-नाडिय-प्रन्यों में दोनी तरह के पदे बार्व हैं। इसने ऐसे सर गान यह र के प्रशास में माजले ने दहाँ पर इतगरी कर कर्य में परत्रह का कड़ेगा बटना डॉवत नहीं समन्य गर है । पाठध-राज राहर के प्रहाद में भारि के 'या ' के स्थान में सर्वत्र भ' समक लें। यही बहरूप है कि नहागादि रहतों हु भी प्रसाद राज्यादि राज्ये में ही दिये गये हैं ।

(टा६)। कमिय वं िकमिको लेहार माहि तिन्यी: विवशी। °चारिति (°चारिनी समज्ञ, मस्ति का अभिजायोः (माचा)। "णियाह थं ["निग्नह] मानरव ह. महत्व बाने योग्य सनगत-विशेषः (अग्रे)। भागा प िमार्गी मस्ति-मार्ग, मोद्य-मार्ग, (सम १, ४,१)। "राह प "राह] राह-तिरोप (सम २६)। "यण्ण पं िधर्णी १ मेथमः २ सोज्ञा, सुक्तिः ३ गार्थन यगः (क्राचा)। देशो घअं≃प्रवा च्यण न [धायन] १ प्रतानन : (श्रीव ४१ . ३४० . म २०१)। २ वि केंगने बाला, दिलाने वाला। स्वी-'णी: (इसा)। घ्रय देलें:घुर≃पत् । पुत्रकः (नंति ३६)। श्चित देखे ध्या = ध्। चुर्यत }्रमा चुय=पार्। श्रायमाण 🕽 धुरभ नि [दे] पुरस्तन, वाले किया हमा ; (यह)। ध्रम ा [ध्रत] रूप ध्रम चप्राः (भाषा ,दम ३,९३ , ति ३५२ , ३६२ , सूत्र १, ४,२) । भूम देनो भूग=पूर , (सुश ६६७)। धुमा को [दृदिन्] लको, पुत्रो ; (हे २, १२६ , प्राप् EY) 1 धुम पुदि गिरु, हाबी , (हे ६, ६०) ; धनिय विधिनिती किन्ता, (त्र ६०)। घुम वुं[घुम] ९ धूम, धूँ*मा, भन्ति-विन्ह, (गउट*) । २ हुव, भ-प्रीति, (यण्द २, ५)। 'हुंगास्त्र पु व ["द्वार] हेव भीरतान, (आप २००० मा)। 'केड ९ ['वेदु] १ स्थनिक बद्र निते । (≅ १, ६ : कल् ९, ४; भीष)। २ वन्दि, अनि, आनः, (तन१२)। हे संनुभ रूपान का मुनक नाग-पुन्त्र, (सहत) । च्हारण ९ ['खारण] यून के महत्रवन से मन्दात में नजन करने दी महित देवा मुनिन्धिष्ठ, (बच्छ २)। "जोवि पु ['योनि]बरून, मेन, (प्राप्त) । ''उच्यय देशो 'ग्रह्मय, (राष्ट्र)। 'दौसापु ['दोष] शिवा काण्ड दोष्ट्र देव से मीक्त करना ;(ब्राना ६, ६, ३)। "द्धव हुं [च्चतः] स्ट, मन्द; (यम; उन १०३१ टी)। पाना, पादा का [पाना] प्रवर्ग नग्दर्शनी , (हा र. मर) । किंदि [कि] धूमा बल, (उप १६०)

हो) । विद्वल वंद विद्वली धम-मन्द्र (हे २, १६८)। °वण्या हि विद्यार्थ | पार्वडर वर्ध बाला: (याया १, १३)। °सिहा सो [°शिखा] घुँए का मनभाग, (राय, १) घारेग प्रदि] असर, समय ; (दे १, १०)। धेमण न धिमन विषयान । (नम २,१)। धमहत्र न दि । नगत्र, वाताका : (दे ६, ६१)। घमद्भव पृद्धि । तहान, तहात ; । महिन, मैं (4 4, 63) 1 धमद्भवमहिसी मीन [है] इतिहा नत्त्र ; (१ £2)1 चुमपलियाम नि [दे] नर्ग में शत कर माय त्रपारे मा जो कल्ला रह बाद बढ़, (निदृ9 ६)। धूमराहिसी सो [दे] बाहार, कुरग, दुशमा । (१ ६१. शम)। धूमरी मा [दे] १ नोहार, क्रशंना ; (दे ४, ६१) तुदिन, हिम , (यह)। जुमसिंहा) सो [दे] बोहार, बुदासा ; (दे ६) 1 (190) 1 भूमाभ सरु [भूमाय्] १ थूँमा इन्ना । ९ जनानी। धून की बाद आवाना । धूनामति , (म फ्रा गउड)। वह-ध्यायंत , (गउर ; म ९, ^ह चूमाबा मा [चूमाबी] वाँची नक १विनी । (1 48,80)1 घुमिश्र वि [घूमिन] १ धूम-युक्तः (विंड)। १। हुमा (शारु भारि), (दे६, ==)। धूमिओं सी [दे] नोहण, बुशना , (देश री । व टा १० ; तम ३, ७ , घगु । । भृतित्र ति [दे] दोर्ग, सन्ता , (दे ४, ६२)। घृरिजयहुतु [दे] अथ, शहा, (१४, १९)। घूटडिआ (सर) देनो घूलि, (हेर 🗥 🗥 घूलि } मा [घूलि, 'लो] भूत, रत, रह, (ग घूळी) प्रमुख्ये, यह)। 'ब्रिव, 'कारव र विस बोज्न ख्यु में विद्याने राजा बहरूव रण , (हमा)। ति ["जलू] क्रिके पौत्र से भूत लगा ग^तर १०)। 'धूमरि ['धूमर] भूत म 'ना ००४, मरा)। "घोत्र मि [घोत्] (त. इ.) कने बाता, (तुता ३३६)। योग तु (यग]।

```
धूजीवह-भृषु ]
                                                                                                                                                                   पाइवसद्भद्धनावी ।
                                     रुष्ट कर्च ; (फ्राँच २४ टॉ )। चिरिस पु. [चिर्ष]
                                    धारीतां; (मान)। दिरन[गुर] कांस्त
                                                                                                                                                                                            घोत्र दि [ घीन ] योदा हुमा, उल्लिख, १ मे
             77
                                   में नहें होंग की घून बामा बनते हैं बदः (का १६० हो।
                                                                                                                                                                                               o, 30 , 47 3(E.) 1
                              युक्तिवह ई[रे] मद, देहा; (हे ४, ६१)।
                                                                                                                                                                                         घोबन मि [घाबक] १ पते वता . १३, देवी
                              युव गर [ पूरव] धूरकाला । युवेरव ; ( सका १,
                                                                                                                                                                                            g 323 )
::
                                ११)। यह-मूचन ; (ति ३६७)।
                                                                                                                                                                                      र्षेत्रमः हि [ भाषन ] गेल, प्रशासनः, ( भार र र
                           पूर्व हैं [ घूर ] ९ मुल्लिब इस्त में उत्तरन धून ; ९ मुल्लिब
                                                                                                                                                                                          1=; FR 283 );
                             हात लिया, को देवसूबा बारि में क्लाबा जाता है। (नावा
                                                                                                                                                                                     घोद्भ देना घे भन्ती : ं स ५० ०।
                             १, १: कु. ३, ६१।। धडा की [धडी]
                                                                                                                                                                                   घोन्ज हि [धुई] भागा, सम्बन्ह, भागा,
                           प्ति , प्रांत मने हुई कहनी ; (वं १)। वंत न
                                                                                                                                                                                     पुन्ताः (यर १)।
                          [ 'क्न्ब] श्लाम ; (दे ३, ३४)।
                                                                                                                                                                                 घोरण न हिं गीनवारी , ( मीर )।
                                                                                                                                                                                घोरणि हेर्स [घोरणि, मा] रहेल, कार ११ ह
                      धूरम न [ धूरम ] ९ धूर हैन; १ धूमपान, रोग की निश्ति
                         है हिन हिनों करने धूम का धना, ध्यूनों तिसकी व दल्यी
                                                                                                                                                                               घोग्ली ) रह, मी , बर् )।
                       हिन से (हा है, हो)। "महि सो ("वर्ति]
                                                                                                                                                                              घोरिय हेन्ते घोडत ; ( हत १८० १)
                       ए के को ही वर्षक, क्याक्ते । (क्यू )।
                                                                                                                                                                               घोर्यक्षियों सी [घर्यस्तिका] सार्वाचे में इक्त
                  पृतिम मि [पृतित ] १ तमित्र, राम स्थित हुमा ; ३
                                                                                                                                                                                 की, (बचा १, १ - स्व ३० );
                                                                                                                                                                           घोरव नि [ घीरव ] हेन घोरत, ( राज ११० )।
                    ति महिमे धेर हमा; (बर ६)। १ ध्रे दिस
                                                                                                                                                                            घोष देतं घोमन्याद्। यसः, (१९४२, वि १००)
                    E : ( FT; TE3 9 ) 1
                                                                                                                                                                            ष्टेंच्या ( बाष्) । यह-त्र्य यंत् । बार ) । यहा -
                घुमर हुं [खूमर ]:१ हत्रक्ष चीता हंग, देवह चारहु क्टी १
                                                                                                                                                                             घोट्यन, घोष्यम,घ, । सम १०, ४८ ; गाण १, ८, ।
                 है भून की याजा, देवर परह कर्र केटर है ( केन्द्र सक्त है
                                                                                                                                                                             १ -घोषस्य , ( गर ५, ५; १)
                 - sar ; = +, =+ )1
                                                                                                                                                                     घोषप हेर धोषम , (इ.स. १
             पृत्तिक रि [पृत्तिति ] भूति वर्ग वन्तः (प्रसः
                                                                                                                                                                    भृषु ( मा । मध्ययम् ) मार हता, । हे दुरुवा, ।
                                                                                                                                                                                        इस विवेत्रसम्बद्धस्यम्बद्धस्य ध्रास्यः
          घेट [था] बाद कर। घेट (सीर ३३)।
                                                                                                                                                                                              रहाहमी क्रमेक्स सन्दर्भ
             Sec. 62. 62. 60. 1 1
        धेत । वि[ध्येष] यान्यांनः ( इति १४ : हार
        धेरह है के के हैं।
                                                                                                                                                                                                                 न रेट सार्ग
      भेडि (भेर) पन करें सेंगः (राम १,१)।
                                                                                                                                                                               والإراع والساد والمادي والمساورة والمادي والمادي والمادي
      भेक्ट (येर) हेन्स, क्ला (क्लेश्राश)।
                                                                                                                                                                 मरीह महिन सराव में वनक में किए से पेतनक में कि
    なると「我有」なるかないで、ことのか一点、さ
                                                                                                                                                               والمراجع والمراجع والمناطق والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج
      ( 1 minus 1 1 minus 1
                                                                                                                                                               京教教 原序文·2017、文字文·2017年
    धित हेल प्रांत्र क्षेत्र हैं। (ग्रंत १०)।
                                                                                                                                                              and the sample which is the same of the
  पेंदर ६ (विद्रत ] सम्बद्धान । अधिकारणा स्वरीत
                                                                                                                                                            पर करे हैं। इस्कें के तरकार तता कहा क
                                                                                                                                                           हिंद्या है है
     हात्रा का करेवा करता उपन्ती एक राजा के विश्व करत
 المعتسدة ( ملك عدد المعالم المعلم ) معالم معالم معالم المعالم معالم المعالم ال
                                                                                                                                                          र्यस्था र प्रस्टे में ब्यार से हैं। इस्ट्रेस में
         म्या मं वंदर । न्या
                                                                                                                                                           Partie of the state of the stat
                                                                                                                                                          Francisco de la constanta
```

```
(य()) किंगिय पु किर्मिक] केंद्रार मारिनियों, (११९)।
                                               ं वाइअपदमहण्णजी ।
         'वारि वि [ 'वारिन् ] अपन् अन्ति का धनिजाते;
         (माना)। "जिलाह वु ["निवड्ड] मानरवर, मान्य
                                                          हो)। अङ्ग्र कुन [पहल] धून-मूर्ट (हे १, १
        करने बोध्य अनुसन-विमेद , (अनु)।
                                                          विषय वि विष्यं ] पानुहर वर्ष वाना, ( गावा १,
       [°मार्ग ] मुश्ति-मार्ग, मोझ-मार्ग , (सूथ १, ४, १)।
                                                         ैसिहा सो [ ैरिना ] धूँ ए का मनमान, ( या,
       राष्ट्र ३ [ राष्ट्र ] सङ्कालेष , (सम २६ ) । " "जनम व
                                                       मुसंग व [दे] अन्य, अन्य ; (दे ४, ४०)।
     ियर्च) १ मयम , १ माल, मुन्ति , १ माना वग .
                                                      भूमण न [धूमन] धून-वान : (मूम १,१)।
    पुरेषा न [धायन] १ प्रतालन ; ( मोव ७२ . ३४७ ,
                                                      चुमहार व [दे] गाम, बाताम ; (११, (१)।
    म २७२) । १ वि बेंगाने बाला, दिलाने बाला। मी-
                                                     घूमद्भव व [दे] १ तहाम, मनाव ; १ महिर, मैंन
    'विते ; (क्या )।
  पुष्य केना पुरान्तात् । प्रनाः (सन्ति १६)।
                                                   धूमस्यमहिनो मो ब [दे] हनिया नवर ; (हे ।,
 धुन्यंत देखां घव = धू।
 धुन्तंत }देशं धुव=पार्।
                                                  घूमप्तियाम वि [ दे ] वर्ग में डान कर मान उनाने ह
                                                   ना जो ६०वा रह बाय वह, (निष् ११)।
धुव्यमाण र्
                                                 धूमगढिसी मा [ दे ] बोहार, बहरा, बहामां,
पुदम नि[रे] पुरस्तुन, माने किया हुमा; ( पह्)।
भूभ वि [ धून ] देना धुम च्युन, ( माना, दम ३,१३,
                                                चूमरी मा [ है ] १ नीहर, दशमा ; ( है ६, ६१
ति रशरे , रहर । तथा १, ४, २)।
[म देनो धूच=पूष, (सुपा (१७)।
भा सी [डुबिट ] तारही, पुत्री , (हे र, १२६ , वानू
                                              चूमिलिहर } सो [दे] नोहल, इहाना , ( हे ६,
                                             भूमाम मह [ घूमाव् ] १ धूमा करना । २ जनना।
उ [ दे] गा, राषी . ( दे १, ६० ) ;
वि वि चिनित्र विदेशन , (१४ ६०)।
                                              भून की पाह में चाना। पून मि , (स न, १६
                                             वडड)। वह—युमायंत , (वडड , व १, ६)
[धूम] १ मून, धूँमा, भारत-विल्ह, ( नउ० ) । २
                                           घूमामा मा [धूमामा] शंबरी नाइ-श्विती, (धम
मनीति (शह १, १)। देगाल पु व
ार ] इव सीर राग, ( माप १८८ मा )। किउ
                                          चूमित्र वि [ यूमिन ] १ धूम-पुना ( वि )।१ हर
हेतु ] १ व्यानिक यह सिने १ , ( द्वा १, १ , वल्ह्
                                          हैमा (साह माहि). (दें।, ==)।
मीप )। १ वन्ति, माति, बाल , ( उन३२ )।
                                         प्रमिमा को [दे] बोहार, ब्रह्मना , (१३, ११, ११
व पान का मुक्त नारा-तुन्त्र, ( मउड )। धारण
                                         ही १० : अग १, ७ , झगु । ,
रण ] धूम के मनत्रवन म माशात में गनन करने
                                       पृतिम ति [दे] होर्न, तस्त्रा , (१८, (१)।
बला सुनिश्चित्र, (गन्छ १)। जीणि पु
                                       यूरिमनह १ [रे] मन, योहा , (र ४, ११)।
वित्त, मेन, (बाम)। जिस्त हमा दिया,
                                      घुन्निमा ( मप ) रेगा घूलि , ( हे ४, १३२ ।।
दोस पु [दोप ] भिना का एक दाण, देव से
                                      पूजि ) सी [पुत्रि, शो] पून, रह, रनु , (सा;
ना , (माथा र, १, ३)। दिय g
                                     बाली ) बाब कर, दर)। क्षेत्र, करव १ (क्सम)
कि, मन्त्र, (याम, उर १०३१ में)।
                                      बीन क्यु में विद्यान काना करूब रून (वर )। अप
हा भी ( प्रमा ] क्वती नाव द्वती , ( न
                                     मि [ जिस् ] जिलह पूज म दूर नगा र स
 लीति ही भूमा बला ( अ १६०
                                     १०)। धुमर वि (धुमर) वृत्त म अ
                                    रेड, दर्ह)। धाउषि घात्। सर स
                                   केन कना , । मुता १,६)। वारा १ (का १)
```

```
पाद्यमहमदस्याची ।
घूतीवह-ध्रुषु ]
                                                                                             £ 0'4
                                                  घोष वि[धीत] दोदा हुमा, प्रशाहित ; (ने १, २४;
 गुडमर्पः (क्री १४ शि)। विस्मि पु विषे ]
 पूर के पर्न ; (काम)। दिस्त शिहा वर्ग हा
                                                   2, 20 , 77 356 ) 1
 में दक्षि होत हो घुट पाया बनने हैं यह (दम १६७ हाँ ।
                                                  घोष्रम हि [घाषक] १ यन बना , १ पू. फेसे , ( इस
भूकीवर हं [दे] मद, पहा; (देश, ६१)।
                                                   333 )
मूच मह चित्रय | धूनकहरू । धूनेवत : ( मचा १,
                                                 र्घेश्रम वि िधावन विज्ञा, प्रज्ञारत , (भारक, स्वय
 ११)। यह--भूचेतः (वि ३३७)।
                                                   গন : দায় ৫৮০ 🕽।
                                                 घोड्स देनः घे भ=रतः ( गः ५= )।
भूव ई [ भूव ] ६ मृतिय अया में उत्थान यून ; ९ मृतिय
                                                 घोडन ५ [धुई]। पूर्ण, सरवर्ष, २ मपुमा, नेता.
 इस-विरेष, हो देवसूता करि में लहाया जाता है ; (गापा
 १, १; मु: ३, ६६)। धडा मी [धडी]
                                                  घुरना , (यर १)।
                                                 घोरण न [ दे ़ै वनि-चानुर्व : । मीन )।
 स्वव, स्वतं मणे हुई कतने : (जं १)। "और न
                                                 घोरणि । सा [धोरणि, यो ] प्रत्य, कार : ( हरा
 [ 'यस्य ] शून्य : ( दे ३, ३६ )।
                                                 घोरणी ) ४६ ; मति ; ५३ )।
भूगन र [ भूगन ] ९ भूग देना; १ भूमन्यन, गेंग की निर्मत
                                                 घोरिय देगं। घोड़त ; ( सुरा १८२ )।
 हे ति हिमा बता धूम हा भनः भ्यूनी तियमी य बच्यी
                                                  घोर्सिणो हो [घोर्सिनिका] देश-विरोप में उत्स्व
 इन्तियों" (दन ३,६)। "यहि यो ("वर्ति )।
                                                   मी: ( राया १, १--पत्र ३३ ) र
 श्वर्षं को ही वर्षेच, कारको ; (क्यू)।
                                                 घोरेय हि [ घीरेय ] देता घोडता; ( हुन ६३० ) ।
युविभ वि [ सूरित ] १ तरित , गाम किया हुमा ; २
                                                  घोच देखें घोअ≔पात्। घंतर; (स ११०; मि ४०)।
 ीय महिसे ठींहा हुमा; (चर ≰)। ३ धून दिया
                                                  धोदेण्या : ( माका) । बरु-धार्यन; ( मनि ) । प्यरु-
 हुमा : (बीर : गर्ड १)।
                                                   थोद्यंत, घोद्यमाणः (पदम ६०, ४४ : पाना १, ८) ।
भुतर हं [यूनर] '१ हरास पीता रंग, हेंपन् पायर वर्षी: १ ।
                                                   ह-चोत्रपिय : ( राय १, १६ )।
 ति, बुला रंग बाटा, ईनर् पातरु वर्ट बटा ; ( प्राक्ष पर ;
                                                 धोषय देवां घोषग , (३८,३६)।
 क्ष प्रथ ; में ६, व्यर् )।
                                                 धुबु ( इन ) म [धूबम् ] मदर, स्पिन (हे ४,४१८)।
पुनितिम रि [ घूनरित ] वृत्त वर्ष वादा ; (यम ;
                                                       इस विरिवाहबसहम्हण्यविम धमागद-
                                                          नत्तं बदयो छन्दी सनी नर्गी स्तना ।
घेनर [घा] घल्य कना। घर; (नीत ३३)।
 म्हिद्दं स्थानं (स्म १००)।
                                                                 न देखे साै।
घेत्र (वि[ध्येष]ध्यान-संत्यः (मति १४ ; राया
                                                      ९ अज्य मारा में नमागृह स्व मध्य एसगृह होते हैं.
घेडा 🕽 १, १)।
                                                  मर्द्र महिन तरह है स्थान में तिहास विस्ता है 'य'
घेडड वि [धेय] पास्य करते. दोल्य ; (यमा १,१)।
                                                  हातेका ब्याक्टवों का सामान्य नियम है , ( यात २,४२ ;
घेडत र [चैर्य] धेरत, चंग्यः; (परः १,१)।
                                                  देश, ६३ टी: हे ९ , २२६ ; पट् ९, ३ , १३ ),
षेगुर्स [धेतु] १ सन्द्रका गी; २ स्वचा गी; ३
                                                  ग्रींत प्राप्तत-साहिय-प्रन्थों में देलों तगर के
 क्षत्या ; (हे ३, २६; चंद्र)।
                                                  पदे बदे हैं। इसने ऐसे सब शब्द ग्रहण के प्रहान
चेर डेनं। चीर≔वैर्ष ; (विरू १०)।
                                                  में बा बने से को पर पनगानि कर कर्ण में
घेषव हैं चिंबत ] सार्विटेंग : "विकास संविद्या
                                                  इन्सर का क्षेत्रम बहना हरिता नहीं गमना गमा है । पाहरू-
 ا ( ١٤٤ له-م ١٤ ) الكيادة
                                                  बच रहार के प्रकृत में बाहि के 'र ' के स्थान में सहित
 घोत्र स्ट [ धात् ] क्रांना, सुद करना, पत्रस्ता । क्रीस्ट्या ;
                                                  'न' स्मक्ती। यही कारच दे कि नवगरियासी के मी
  (मार )। यह-म्रोयंत ; (मुस न्ध् )।
                                                  प्रसाद चहाराति शब्दों में ही तिये गये हैं।
```

```
ξog
                  (तार)। कास्मय पु किसिंक] संहार माहिति गी. (वरर)।
                                                        ं वाह्यपद्गहण्णात्री ।
  i
                  'चारि वि [ 'चारिन् ] सत्रम् सम्मिन का व्यवनार्थाः
                 (याचा)। "जिलाहु वु [ "निवर् ] मारावर, मारव
                                                                   हो)। वहर पुन [पहन] पुनगम्
                बरने गोल मनुगन-विशेष (मनु)। "मध्य पु
                                                                  'यक्त वि ['यक् ] पान वर्ष वाता,
                [ मार्ग ] मुन्ति-मार्ग, मास-मार्ग , (सूम १, ४, १)।
                                                                 °निहा मो [°ितिया] भूर हा मा
               राहु वृ िराहु ] सङ्गीतेल , (सम २६ )। "भवम वु
                                                               चुर्दन वु [दे] असर, असरा ; (वे ४, ४
               ियमं ] १ सवम , १ माछ, मुन्ति , ३ माधन वम ,
              (मामा)। देगो धुअ=धुव।
                                                               धूमण न [धूमन] धूमनन । (गूम १,
                                                              धूमहार म [दे] गराम, बनावन , (दे।
            युवन न [धावन] १ वज्ञातन ; (धाव ४३ . ३४४)
             स १७२) २ वि वैताने बाजा, दिलाने बाना। यो-
                                                             घुमद्भव वृहिते । तहाम, ततान ; १
            धीं , (इमा)।
          पुष्य देशे पुर्य=धान् । अन्तरः (मंति ३६)।
                                                            धूमस्यमहिमी मो व [वे] हतिहा नगर
          धुष्यंत देखे घव = धू।
         धुन्तंत वेता धुय=मार्।
                                                           चूमविन्याम हि [ दे ] वर्ग में बान कर मा
                                                           भा जा करना रह जाय नह , ( निष् ११)।
         धुव्यमाण ∫
                                                         पूमगढिसी मा [ हे ] गहार, दशर, दशरा,
        पुद्म वि [ वे ] पुरत्हन, माने विश्व हुमा , ( पर् )।
       धूम व [ धून ] देना धुम = धुन, ( माना , देन ३,१३,
                                                        भूमरी मा [ है ] १ नाहा, बुद्दाना ; (वे ४, ११
      मूम देवां धूच=पूर , ( तुन ११० ) ।
     पूजा को [डिस्टि] लब्बो, पुत्रों , (हे रे, १२६ , शब्
                                                       वृमसिंहा } सो [है] बोला, इराणा, (है १, (
    यून व [ के] तम, हावी : ( के है, (०) !
                                                     भूमाम मह [ भूमाय् ] १ थूँमा बरता । २ जनारा
   भूमिय वि [ भूमिन ] किन्त्र , ( वृद ६८ )।
                                                      धून की नहिं संचाना । धून माने , (स ५ ११
                                                     वडा)। वह-जूमायंत . (वडा ; व १ =)।
   पूम इ [ चूम] १ धूम, धूँमा, मानन-विन्ह, ( नवर ) । १
                                                   धूमाता मा [ पूमामा ] वांचरी नरस्थियों, (बाम
   हैंप, मन्त्रानि, (पाइ है, १)। वंसाल द व
   िहार देव और राग, (भाग १०० मा)। केंद्र
                                                  युमेश वि [ पूमित ] १ यून-पुना : (तर)।१ क्य
  व [ केंगु ] १ ज्यातिक सर्विते १ ( स १, १ , कह
                                                   हमा (साह माहि), (२६, ८०)।
  १, ४, मीर )। १ बन्दि, मानि, मान , (जन१२)।
                                                 भूमिओं सो [ वे ] नोहार, करामा . ( व र. ११ , सब , ]
 हे प्रमुख रूपान का सबह नारा-तुन्त, ( यहर )। चारण
 व िचारण ] धून के मातान्त्र में मादात में बनन कार
                                                पूरित्र वि [ रे ] दोरं, लच्चा , (१ र. ११)।
ही गामिन वाला सुनि-वितेर, (मन्त र )। "जोणि वु
                                               धृरिमन्द्रव[दे] मथ् यहा , ( र १, ११)।
ियोनि ] बादल, मेर, (पाम )। क्रम्य देशो ब्ह्यू
(तात्र)। दोस व दिनेय ] भिना का एक होए, देव से
                                              प्रशिक्षा (मा) हैमा पुलि , (हे र, तर)
                                              युनि ) को [ यूनि, लो ] थ्न. न्त. न्तु (
भोजन करना (साचा रे, १,३)। देख पु
                                             घुलो ) शास रूप । पर । कर , करत । कि
ध्यम ] वह, मन्ति, (वास, तव १०३१ डी)।
                                              योज स्त में निहाने वाला रहम्ब स्त , (स्म )।
रामा, 'पहा सी [ 'प्रमा ] पन्ती सम्मुखिती . ( य
( 28 ) ( 28 ) ( 28 ) ( 29 ) ( 29 ) ( 29 ) ( 29 ) ( 29 )
                                             नि ( के के के कियह पाँव म पूज लगा म बर
                                             10)। पुनर वि (धुनर) पुत्र म अस
                                             विक १ वर्ष )। श्रीर के । वर्ष
                                            धरने वाना
```

(चीयह—ध्रुषु]

क्षिः (स्रीः स्टार्)।

1 (F= , 5 Ff; YEO T

व्हर्षेक्या (इत्र १००)।

हण्या है है के अनुबन्ध

Car Jan 24 42 513

FF 11 4723

IR) 4 9 11

115



पाइञ्चलहमहण्याचे ।

8 355)

धुग्नर ; (यर १)।

घोत्र वि [घील] क्षेत्रा हुमा , प्रजाति ; (मे १, २४; ७, २० . सा ३६६ 🕽 । घोञग । [घायक] १ यते बला, १ दुर्पनी, (झ

£ 0%

मृत्यां वर्षः (व्याम)। "हर न (मृह) वर्ण का में तहेंहे दोन दो घुन शापर बनाते हैं बहा (टन १६० हो)।

भूकीबर्ट ९ [दे] मद, क्षेत्र ; (दे ४, ६१)। धूम वर [धूमम्] धून कला। धूनेस्त ; (माना १. १३)। यह-यूर्वेत;(ति ३६७)।

धूम ई [भूम] १ मृगन्धि इस्म से उत्पन्न धून ; १ सुगन्धि दग-विते, जो देव-पूजा झादि में जलादा जाना हैं ; (गाया

ी 1: इर ३, ६४)। "घडा मी [घटी] पानव, प्रते मर्ग हुई बडका : (वं १)। "वंत न ['चन्त्र] सूनगत ; (दे ३, ३४)।

के लिए दिया जाता धून का धनः, 'धूरो तिथनो य बन्धी धर्मानको" (दन ३,६)। "यहि मी [वर्ति] प्रकेदनी हुई वर्षेद्य, प्रगण्यमी ; (इस्)। पृतिभ वि [घृरित] १ तानित , गम्म किया हुमा ; ३ िग महिने छोट हुमा; (वर ६)। ३ घुन दिवा

पूत्रम न [धूपन] १ धून देन; २ धून-यन, रोन की निश्ति

हमाः (भीतः सन्दर्भ)। घुनर हुं [घुनर]:१ इउस रोटा रंग, ईनन् पारट् वर्ण: २ हि, बूना रोग बाजा, ईसर् पानड् वर्ष बाजा ; (प्रास् = ४ ; क्ष वज्य : में इ, बर्)।

पुनरित्र रि [घूनरित] धून की बाता ; (फन ; माने)।

घेन्त [प्रा] भाग कना। घेरः (संजि ११)। म्द्रियोगनी (ह्म १००)। षेम } वि[क्ष्मैय]कान-केन्य;(क्रवितः प्रदास

घेडत ति [धेथ] धारा करते केल ; (याच १,१)। घैडा न [थैर्य] धीरत, योग्ता; (परहर, २)। षेतु सं[धेतु] १ सन्प्रदश सी, २ स्वत्वासी; ३

धेंद्रत र १,१)।

द्वार गयः ; (हे ३, १६; चंड)। घेर देनो घोर≔धेर्व ; (विट ९०)।

घेषय ([घेषत] स्वर-विरेषः "वेशस्वरणेशणः सर्वति | हर्जान, (भ नन्तर ३९३)।

धोत्र हर [धात्] वे.स. सुद्र कन. २००न । घाएटा , मार ।। यह-धोर्यत , (हर =k)।

घे अग वि [घावन] यंता, प्रवासन ; (प्रा २० , स्या १८; सार ३४०)। घोद्देश देखा घेभ्र≂रीत ; (गा ९८)। घोडन दि [धुर्व]१ पुरेत, माननार्ड ; १ प्रमुपा, नेता,

घोरण न दि तिनन्तर्व : (मीर)। घोरणि) ना [धोरणि, या] पार्क, कता । (प्रा घोरणी 🕽 ४६ : मति : पट्)। घोरिय देखे घोडत : (हुम २८०)।

की; (राजा १, १--पत्र ३३) : घोरिय वि [घीरिय] देखं घोडजः (हुत ६६०)। घोष देखे घोभ≕षड् । घं,दर् ; (स ११० ; नि ५=)। धोबेब्दा ; (माका) । वह-धार्थतः (मनि) । काह-घोरबंत, घोव्यमाण, (पाम १०, ४४ ; एपा १, ८) । ह—घोष्णय ; (टावा १, १६)।

घोरितणी सी [घोर्डिकनिका] दंग-तिरेप में उत्सन

ध्रुबु (झर) म[ध्रुयम्] मब्द, तिरः; (हे ४,८१८) । इम विरेशास्त्रसहमहण्णयानिम धमाराह-स्टबंबरची ध्रमीक्रमी तरही समुद्र ।

धोषय देवी धोषग , (दे ८, ३६)।

न देखे स्वी

९ प्रदेश नामा में नरागरि सर मान गामारि हार्ड हैं। मर्बंद मारि र नहार के स्थान में निच वा विहास में 'ल' हतिहा ब्याकारों वा सामान्य तियम है , (प्राप्त २,४१ : देश हैं। शेंद्रेष, श्रद्ध : पर् १, ३, १३), बीर प्राप्त-प्रशिवनाओं में देशे तर के धीत पदे बर्द हैं। इसने ऐसे सब ग्रंग रहण है। इसर में मादने ने दहें क स्मानि का बड़े हैं पुन्तर का करेशा बदला टॉवर लगी रमला गरा है । पाइस-रय दरार स प्रस्ताद में मारि स' द ' व स्वान में लॉस न स्पर है। यहा बाग्य है कि नशार किया है स

जनाय प्राथमित स्वता न ता विकास है ।

```
(तर्)। कारिमय दुं [कार्मिक] सहार मादि निन्नी, (कार)।
                                             ं वाद्यसद्महण्णयो ।
        ेचारि वि [ °चारिन् ] सम्बन् सुनित्त का अवितासी,
       (माना)। वीजामह पु [विसर्] मानवर, मानव
                                                        रो)। चडर के [पडल] धूमनम्ह, (हे रे, १६
      वरने योग्य अनुगुन-विशेष, (धनु)।
                                                        "यज्ज नि ["यजं] पानुर वर्ष बाना, (शाम १, १
      [ भार्म ] मुन्ति-मार्ग, मोल-मार्ग , (सुम १, ४,१)।
                                                       ैसिट्टा मो [ "तिका ] धूँ ए का धन माग, ( टार, र
      राहु १ [ राहु ] राहु निशेष , (मम २६ )। "वणण पु
                                                     चुक्ता वृ [ हे ] असर, असरा ; (वे ४, ४०)।
     िवर्ण] । मेनम ११ मोल, मुन्ति, १ माधा वग,
                                                    धूमण व [धूमन]धूमनाव (पूम १,१)।
    (माना)। देखो पुथ=प्रव।
                                                    धूमदार न [दे] गरान, वानावन ; (दे १, ११)।
  षुवण न [धावन] १ प्रतालन , (धार ४२: ३४० ,
                                                   चूमस्य वृहि । वस्त, मजाव , । महर, वैन
   III २ घर) । २ रि केंगने वाला, दिलाने वाला। गौ—
 प्राप्त हतां पुरुष्पार् । प्रत्यः ( वीच ३६ )।
                                                  धूमद्धपमहिमा मोन [दे] हर्नम नवन : (-
धुन्यंत देलां घव = ध्।
                                                 धूमपल्याम हि [ दे ] वर्ग में उत्तर कर मान उ
        देवां धुव=धाव्।
                                                 मा जो दल्का नह जान वह , ( निरू ११)।
धुःवमाण ∫
                                               चुमाहिस्तां मा [ हे ] बाहार, इत्रा, इरामा । (
इंदम वि [ दे ] प्रत्कृत, माने किया हुमा , ( पह् ) ;
म वि [ पून ] दलं धुन - पुनः ( माना , दन रे, १३)
                                              भूमरी मा [ दे ] १ नोहार, दशाना , (दे ४, ६१)।
3 505 , 355 ' 484 6' 8' 5) 1
प देखां भूग=भूग ; ( तुना ६१७ ) ।
                                             युमितिहा } मां [री] नोगा, इराया , (रे ६, ११
त को [देखिट ] लब्से, दुवो · (हं २, १२६ , आसू
                                           घूमाम मह [धूमाव्] १ थूँबा करना । २ मजना
व [वे] गम, हाथी . ( हे k, ६० ) ;
                                            धून की नाह संस्थाता । धूनमानि , (हं न, १
वि[पूनिन] बहुन, (१२ (८))
                                           गडा)। वह-जमायंत , (गडा , व १, व
[ घूम] १ जूम, धूँमा, महिन-बिन्ह, ( नवर ) । ३
                                          घूमाना मा [ घूमामा ] गंगा नक रूपिते, (त
मनीति, (पाइ १, १)। 'ईगाल पुत्र
रि] इव मीर तम, (माव रूट मा)। केउ
                                         भूमित्र वि [ यूमिन ] १ ध्य-पुरु ( लिह ) १ १ हेण
उ] १ ज्योतिक महनितेर , ( दा २, ३ , णह
                                         हैमा (साह माहि) . (२६, ==)।
मीप )। १ वन्ति, मान, मान, ( उन१२)।
                                       पुनिया मो [रे] नोहार, कृशना , ( र ४, ६१ , १॥
उपान हा मुक्ड गारा-गुन्द, ( गउर )। चारण
                                        स १० , भग १, ७ , महु।।
ण ] भूम के मनगदन न मानात में गनन काने
                                      पूरिम वि [दे] दीर्व, तस्त्रा , (१६,११)।
गला मुनिनिनेन , (गन्छ १)। "जोणि पु
                                      पृतिमग्रह्य [ दे ] मन, वादा , ( दे ६, ६१ )।
बार्ल, मेर, (बाम )। उन्हर देशी दिया
                                     धूनिक्रमा (सर) देगा चूलि , (हे ४, तार ।।
दोस वु दिनेय ] निना का एक दोष, इंच सं
                                     युन्ति | मी [युन्ति, लो ] युन, रत, राष (सार,
(माबा रं, १, ३)। देव व
                                    पूजी ) तास कर (CV)। करेंग, करवा (कराम)
र्व, मान्त्र (यम , जर १०३१ डी)।
                                     त्रोन स्त्र में कियने बाता ब्यूप्य रत , (अम )। अप
त सी [ मना ] पावति नगर-प्रविची , ( य
                                    नि [ "जङ्कि ] जिसक पाँच में धून लगा इ स
लि विश्वासना (अरहर
                                    १०)। भूमर वि (भूमर) वृत्र म नम
                                   पंडर, दरहे)। धोउनि [धोत] सर नर
                                  व्यतं कता , (पुता ३३६)। वया १ वया १ . .
```

बहुत सर्व ; (प्रीत २४ टो)। 'बरिस १ ['वर्ष] १८ छी दर्ग ; (प्राता)। 'हर त [गृह] वर्ष स्व में त्राहे टोत दो पून छा पा कतने हैं वह (टन ४६० छो । पूनीपट १ [दे] प्रश्न होता । पूनेपता ; (प्राप्ता २, पूनेपह [पूनेप] पूने काल । पूनेपता ; (प्राप्ता २,

5१)। यह-स्यूचेत ; (वि १६७)।
पूच ई [यूर] १ कान्ति इस वे उसका धून ; १ कुनिय इस किंग्रेस, यो देश्यूजा कार्य में जडावा जाता है : (यावा १, १ : कुर १, ६४)। ध्युडा माँ [ध्युडी] प्रात में, धून में माँ हुई करतो : (ये १)। ध्रुजेत व [ध्युजे] सुरुवाय : (हे १, १४)।

यूवन न [यूपन] १ ध्रा देता; १ ध्रम-पन, गंग की निहति है ति हिला जाता ध्रम का धन; "यूरो ति दनते व दन्धी धन्मित्दो" (द्य ३,६)। "यहि गाँ [धिर्चि] धूर्ण मनी हुर्र वर्षित, कानवनी ; (चन्दू)। धूर्षिम दि [धूरिन] १ तावित्र, गम्म किया हुमा; १ गिम महिं में होंट हुमा; (चन्द्र ६)। १ धूर्य दिवा हैण; (भीन; गच्छ १)।

यूनर दे [यूनर]:१ हरझ पंज रंग, हेरन् पारह वर्षः १ वि. पूनर रंग याजा, हेरन् पारह वर्षः बाजाः ; (प्रान्नः मा १) । या १०४४ ; मे ६, मार्)।

पुनित्रिति [घूसिनि] धून वर्ष बाडा ; (यम ; मी)। घेणा [घा] बाल बस्त । घेर ; (सिंट ३३)।

निष्क (या) भारत करता । यह (साल ११)। पिट पिन्ने' (इन १००)। येत } वि[ध्येय] प्यान-केम्प (श्रीत १४ ; यान येतत) १.१)।

पेरत है [थिय] पाना धरते केंग्य; (पाना १.१)। पेरत है थियें] पोन्ड, पोन्डा; (पान १.१)।

षेतु माँ षितु] १ कानका थी । २ काका भी , ३ कार मार ; (१ ३, २६, वंट) । पिर देशे पीर=पैर्व ; (१७३ १३) ।

घेषपर्व [घेष्ठमा] स्थान्तिकः । विद्यास्त्रसम्य स्वतिः स्ट्रांसर्वे १८१ ।

घोत्र वह [घाषु] याना गुढ कामा, प्राप्त , बापता मार्च () बहु-स्वाद्यंत , (त्या वर घोल नि [र्घान] घोना हुमा, प्रतादितः (मे १,२६; ०,२०,गा ३६६)। घोलाम नि [घायक] । पाने बता, १९, पंगे, (बा १९३३) घोलाम नि [धायन] पंता, प्रतादनः (था २०, स्या

घोरण न [दें] गीन गतुर्य ; (मीन)। घोरणि) स्ते [घोरणि, 'गो] गीत्म, बनार ; (मुना घोरणी) ४६ ; सवि ; वर्ष)। घोरिय देले घोडन ; (मुना १८२)।

घोडिहिणी की [घोडिकिनिका] डेग-विरोप में उन्स्ल मी; (एसा १, १—पत्र ३०)। घोटेख रि [घीडिय] डेमो घोडिस; (हरा ६६०)। घोडिय देती घोडिस्साह । बोडिस; (स. १६०; रिण्स)।

होहेरहा ; (हाला)। वह-स्थावंत, (क्षि)। बहर-घोडचंत, घोडचंत्रापा, (वहत १०,४४ ; टाया १,८)। इ.स्थावंतिय ; (यहा १,९६)।

घोवय देनां घोषमः (दे न, ३६) । श्रुषु (घर) म [घुषम्] मन्त्र, निगः (हे ४,४१न) । इम निरंगाधमहमरणयमिम घमनम्

महत्त्वहरूदो छन्दोत्तरमं गर्पे स्मनः।

न देशं ग्रा

१ प्रकृत मारा में तरणिह सर सम्पर्धनाह देते हैं, सर्वेत महि क नहर के स्थान में निया पा हिस्सा है था। हते हा व्याहरणों का मानास्त्र नियम है, (प्राप्त १,४६), है १,६३ को हते १,९२६ : पर् १,३,४३), मैंग प्रकृतनाहितनात्त्रों में देना नार है प्राप्त पद बार्ड हैं। इसन गर्ने स्वाहार दहार का शहर में बा बन से बहुँ पा स्थापन का स्वाहत में उन्हार का हरेश मारा है। पाइत गर देश पर में मारा नार में गर्म सामान बहु से एंड नार में मारा सामान बहु से एंड नार मारा है।



```
<sup>हीबह</sup>—भृबु]
                                               पाइञ्जदमहण्यञ्जो ।
        ह नर्गः (फ्रांत २४ हो )। चिरिस ९ [धर्म]
                                                                                                   É0'
        द बोबरों; (ब्राम्)। हिस्त [शुरु] वर्ग क्ल
                                                       घोज वि [ घीन ] योगा हुमा , प्रतादित ; (मे १, २४;
        तहें होंग दो घून का पर बनाते हैं बहा (हर १६० दा ।
                                                        ١ ( ١٤٤ ) ، ١ ( ١٠٠٠)
        विहर्ष [दे] मन, पंझ ; (हे १, ६१)।
                                                      घोळग नि [ घायक ] १ याने वज्ञा , १ ९, पाने ; ( टा
        वह [युरम् ] धूर करना । धूरेवन ; (माचा १,
                                                      थे अम नि [ धायन ] येता, प्रतादन ; (धा २० , स्या
         )। वह-यूचेन; (ति ३६७)।
        ैं [ श्रूप ] १ मुगन्दि इस्त में उत्पन्न धूम ; २ मुगन्दि
                                                       १=; मत ३४३ )।
    --- निर्मेष, हो देव-पूजा मादि में जलाया जाता है ; ( गाया
                                                     घोइन देना घोन=पीन ; (ना १०)।
    ९, ९: पुर ३, ६१)। °घडां सी [°घटी]
                                                     घोडत रि [ धुर्व ]१ पुरंत्र, मल-बर्ह ; १ मगुमा, नेता,
    ध्यान इ. धूर्म मगे हुई बततो ; (तं १)। जिन न
                                                     घुन्नाः ; (बर १)।
    ियन्त्र ] भूत्यत्र ; (हे ३, ३१)।
                                                    घोरण न [ दे ] गनि-मातुर्य ; ( मीर )।
                                                    घोरणि ) मां [घोरणि, णां ] पर्द्रिक, बतार ; ( द्वार
  घूबण न [ घूषन ] १ घूर देनः, २ घूस-पन, रोग की निर्दत्त
   है लिए किया बाता धूम का धन, 'धूमी तिसकी व दन्यों
                                                   घोरणी 🕽 ४६ ; मति ; पट् )।
                                                   घोरिय देलं घोड्ड ; ( हुन २८० )।
   क्रमानिक" (इस है, हो)। "बहि सी["वर्ति]
                                                   घोरुनिणों सी [घोरुकिनिका] देन-स्टिप में उत्तन
   धु की बनी हुई बर्निका, अमाजनी ; (कन्यू )।
 वृषित्र वि [ घूनित ] १ ताति , सम्ब स्थि। हुमा ; २
                                                    स्तीः ( रामा १, १-पत्र ३० ) :
                                                  घोरेय नि [ घारिय ] देखा घोरजः ( हम ६१० )।
  रिगमहिमे श्रीट हुमा; (वर t)। ३ घून दिवा
                                                  घोब देखे घोश=यात्। धंबर; (स ११०; वि ०=)।
  हुमा; (मीत; बच्छ १)।
                                                   षांवेड्डा ; ( माचा)। वह-स्थायत, ( मनि )। प्राह-
घूनर हुं [घूनर ]:१ हतस फेता रंग, हेरन् पावडु वर्छः २
                                                   घोटवंत, घोटवमाण, (पटम १०, ४४ : एया १, ८)।
 ति, बून्त रेंगे बाडा, इंबर् पारडु वर्ष बडा ; ( प्राच् म्४ ;
                                                   ह—श्रोत्रणियः; (सामः १, १६)।
 मा ७४४ ; में ६, महे }।
                                                घोवय देनां घोवन ; ( दे =, ३६ )।
युमितिस्र हि [सूमितित ] धूम वर्ष वाटा ; (सम ;
                                                भृतु ( ध्न ) म[भूवम् ] मन्त्र, स्याः (हे ४,८१८)।
                                                       इम विरिवाहससहमर्गणवनिम धमाराह-
पें<sub>गर</sub> [बा] करून करना चेंद्र; (संजि ३३)।
                                                         न्दर्वेष्ट्रयो दर्गहामी दर्गये स्नता ।
प्ति पंत्रते (इन १००)।
वेष }िवि[ध्येष]ध्यत-सोमः;(प्रति १४; रासा
                                                               न देगं: गा ।
रेज वि[श्रेष] परम इस्ते प्रेंग्पः (यक्ता १,१)।
                                                    ९ प्रकृत साथा में नरकारि सर गार दरकारि हाते हैं।
का म [ विषे ] धंगा, पाना , (पार १,१)।
                                               मर्बाद मारि र नरण के स्वान में नियं या विराय है। 'स्व
                                               हमेश व्यासन्देश समस्य निया है। १८१,८५,
उस्त [धेनु] १ सन्दर्भ सं २ लाल से, ३
ST 47 . ( F 3, 26 45 )
                                               हर, ६३ डो हे ५ , ३३८ वर वर १, १३ ),
देल घोरच्येर , (रिक् १०) ।
                                               मेर रहतमाहियानस्य म १० १ व भाग
विद्वति ] स्वर्णकोतः । "व्यवस्थानका स्वर्णः
                                              रद बन हैं. इ≃र -
                                                                      41. ET # . ET
                                              समाजन में देश र जारत के प्राप्त
र्शनर" न र नव । ।
                                              रू<sup>बह</sup> से स्वक्षा प्रदेश । .........
<sup>र वह [</sup> घावु ] ४ व हुई छन उत्तर प्राप्त
                                              रदाराहर इ.स.स.च ॥
मक् । यह -धार्यतः । स्य =/
                                             ATT THE STORY OF
```

ŧοs.	'वाहअल्ड्महण्याने ।	[चुरग-]
(21) 'प्रामित्र युं 'फिलिक' लेकर सारिकः 'चारि में 'चारित वे प्रश्न प्रकार सारिकः 'चारि में 'चारित वे प्रश्न प्रकार मारिकः 'चार प्रितार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार कर प्रकार के प्रक	श्री. (का)) विश्व ते [वरत] प्रमान् स्विति हो ; वर्ष प्रमान विश्व हो हिर्म हो दिला है है का स्वाद है है है का स्वाद है	(\$2,152, (\$72,52) (\$72,52) (\$72,52) (\$72,52) (\$2,51) (\$2,51) (\$2,51) (\$2,51) (\$2,51) (\$2,51) (\$2,51) (\$3,51) (

बहुत मर्त ; (मीत २४ टो)। "चरिस पुं-["वर्ष] घुटको बर्ग ; (सात्म)। "हर न [मृह] पर्म सतु में दक्के होग को घुन का घर बनाते हैं। बढ़: (हम १६७ टो.)। धूरतियह इं [दे] मद, बीड़ा; (दे ४, ६१)। धूव नः [युवय्] धूनकाना । धूनेवन ; (नावा १, १३)। यह-धूबॅन; (ति ३६७)।

धूब हैं [घूप] १ सुगन्धि इस में उत्तन्त धून ; १ सुगन्धि इन्द-भिराप, जो देव-पूजा मादि में जलाया जाना है : (याया ी, १: स: ३, ६४)। "घडो सी ["घटी] प्रनव, प्रार्व मरी हुई कतनी : (वं १)। "वंत न ['चन्त्र] धृरनाव ; (दे ३, ३४)।

घूवण न [घूपन] ९ घून देना; १ धूम-यन, गॅन की निरुत्ति हे निए किया जाता धूम का धान; "धूमी तियमी य बत्यी-धर्मानवी" (सा १,६)। "वहि साँ ["वर्ति] पूर को बनी हुई वर्तिका, सगम्बनी ; (प्रन्यू)।

यूविश्र वि [भूषित] १ तानित्र, गम दिया हुमा; १ विंग माहि में छीता हुमा; (चार ६)। ३ घूर दिना हुमा ; (सीत ; गस्त १)।

घूमर वुं [खूमर] त इडस केंडा रंग, ईपन् पानद कर्ण: २ वि, भूतर रंग बाला, हैरन पागडु वर्च बाला ; (प्रास् 🖙 ; मा पवद ; में ह, दर)।

पूनिरिश वि [घूनतिहित] धूनर पर्व बादा ; (पाम ; F. () 1

धेनड [धा] पारत काना। भेदः (तंति ३३)। ध्यति योग्ने" (स्म १००)।

घेत } वि[ध्येष] व्याननात्त्वः (प्रति १४ ; यान धेक्त । १,१)।

घेडत हि [धेव] पाग्य करने योग्य ; (याबा १,१)। घेडत न [चैर्च] धीरत, घीरता; (माइ ३, २)।

षेणु सो [चेतु] १ ना-प्रदुता सी; २ स्वच्या सी; ३ द्वार काय ; (हे १, १६; चंड) ।

थेर होते थीर्≃वेर्ष ; (िक १०)।

घेषण (धियन] स्वर-विवेष ; "वेदनस्वरणस्यकः नवति क्टरनिरा" (स ४--पन ३६३)।

घोत्र मृट [धाव्] बं.ना, गुद कना, पदास्ता । बाएउदा ,

(मनः)। नक-चोर्यतः, (नुसः=४)।

घोत्र वि [घीत] घोदा हुमा , प्रतादित हा (मे १, २६; U, २० ; शा ३६६) । घोञग नि [घायक] ३ वले वडा; २ पु. पंता; (टा £ 355) धे अग ति [धावन] धेला, प्रजाउन ; (प्रा २० , ग्या १८ ; मार ३४०)।

घोइत्र देवा घोश=पीत ; (गा १८)। घोड़ज वि [धुर्व] १ पुर्गे ३, भार-बाह्र ६ ; २ अगुमा, नेता, धुरनगर ; (वर १)। धोरण न [दे] गति-वातुर्व ; (मीत)। घोरणि) सा [घोरणि, 'णां] पर्ष्ट, स्तार । (ह्या घोरणी । ४६; मनि; पर्)।

घोरिय डेला घोडत ; (तुम २८२)। घोरिंगी यी [घोरिकिनिका] देश-रिशेष में उत्तन्त स्ती; (यावा १, १--पव ३७) र घोरेय ६ [घीरेय] देखां घोडज; (हुना ६६०) ।

घोष देशो घोश=घात्। घंतर; (२ १६०; वि ५=)। घांबेज्जा ; (माना)। वह-धार्बत; (मनि)। प्राह-घोष्यंत, घोष्यमःणः (पडम १०, ४४ : दावा १, ८) । ह-श्रीयणिय ; (गाया १, १६)।

घोवय देनो घोवग ; (दे =, ३६) । भ्रष्टु (सा) म [भ्रुवम्] महत्र, स्पिः, (हे ४,४१८)। इम निरिजाइअसइमर्ण्णयस्मि धमाराह-सदर्बक्डपो छन्द्रोन्डमी तरंगी समना ।

म देनी सारी।

१ प्रज्य मापा में नशराहि एवं मध्य एशागहि होते हैं. मर्बेद महि के नरद के स्थान में निय वा शिरूप के 'व' हेलेका व्याकारों का मामान्य नियम है , (प्राप्त १,४१ ; देश, ६२ टी, हे १, ३२६, वर् १, ३, ४३). मीर बाहत-बाहिय-बन्धा में इत रह ह धरेन पार्व जाने हैं। इसर पर नार राज्य राज्य के दूधना में का बता में बर्ट व दूसरात संबद्धा स प्रनाह को करेशा पटन अपनित राज्य गाउँ है। पाइक क्ष प्रशास प्रवास से साथ कर है अन्यान से स्रोत न ल्या र त्या १ वर्ष वर्षा श्राप्त हुना जनाय यहराष्ट्रिकाल मार् अवस्त्री ।